MUKTA MAR-MAY 1975 G.K.U.

मुक्ता
युवकयुवतियों की पत्रिका
मार्च (प्रथम) 1975
2 रुपए

अजी-साठे
माल्टएक्स
तना स्वादिष्ट
ोगा ही!
समें
माल्ट है न!
ज़ा, करारा व स्वाद में अनोखा—वाह!
स अनोखे स्वाद का कारण है मॉल्ट,
ो इस बिस्कुट में भरपूर है।
चने मे हलका व पोषक सत्वों से भरपूर
ह बिस्कुट चाहे जितने भी खायें,
ौर खाने को जी चाहता है।
सलिये कि इसमे मॉल्ट है!
IS:1011
ISI
आई. एस. आई मुहर वाले
माल्टएक्स का मतलब है अच्छी
किस्म की गारंटी वाले बिस्कुट
साठे माल्टएक्स बिस्कुट
SATHE MALTex BISCUITS
SATHE MALTex BISCUITS
साठे बिस्कुट
heros' SBC-53A HIN

ताज़गी की बहार
सिन्थॉल की फुहार
CINTHOL
LUXURY
सिन्थॉल ट्वायलेट पाउडर आपको शरीर की दुर्गंध से संरक्षण देता है और गर्म से गर्म मौसम में भी आपको दिन भर तरोताज़ा रखता है। इसकी भीनी-भीनी खुश्बू आपको हर समय मनमोहक रखती है।
गोदरेज निर्मित
सिन्थॉल

या साहित्य

ारावाहिक उपन्यास

विता

तंभ

आवरण : सतीशचंद्र

मूल्य: एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए, दो वर्ष: 75.00 रुपए.
विदेश में (समुद्री डाक से): एक वर्ष 60.00 रुपए, दो वर्ष: 115.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

मार्च (प्रथम) 1975
अंक 207

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

हम कितने सभ्य हैं?—पृष्ठ 22

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.
दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में मुद्रित व प्रकाशित.
मुक्ता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

Cadbury
Bournvita

आराम की ऊंचाइयां
bajaj
heros' BE-198
बजाज बहार
डीलक्स पंखों से
बिना आवाज़ चलनेवाले।
अधिकतम हवा देनेवाले।
नवीनतम डिज़ाइनों में।
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरिमन रोड, बम्बई-४०००२३
भारत भर में शाखाएँ
यूनीवर्सल पंखा
ब्यूटी पंखा

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of

CARAVAN & WOMAN'S ERA

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.

niq gift for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only
One Year Rs 10 only

Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to :

CHAMPAK
Delhi Press Building,
Jhandewala, New Delhi - 55.

जनवरी (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत एन. सी. सी. के विषय में प्रकाशित आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. (भूल से आप ने एन. सी. सी. को हिंदी में राष्ट्रीय सेवा योजना लिख दिया है. एन. सी. सी. व राष्ट्रीय सेवा योजना दो भिन्न योजनाएं हैं.) वर्तमान परिस्थितियों में एन सी. सी. की अनिवार्यता का कोई औचित्य नहीं रहा.

काफी अधिक संख्या में विद्यार्थी एन. सी. सी. विषय मात्र इसलिए लेते हैं कि यह अनिवार्य है तथा एन. सी. सी. की परेडों में 75 प्रतिशत से कम उपस्थिति होने पर उन्हें परीक्षा में बैठने से रोके जाने का भय रहता है.

इस विषय में एक छात्र ने कहा, "हम तो एन. सी. सी. की यूनिफार्म ले जा कर रख लेंगे. उसे फिर तभी उठाएंगे जब वापस करनी होगी." एक अन्य छात्र ने कहा, "हमें कौन सा सेना में जाना है? केवल 75 प्रतिशत उपस्थिति पूरी करनी है. सो जैसेतैसे कर देंगे." इस प्रकार काफी अधिक छात्र इस में रुचि नहीं लेते, इसे बोझ समझ कर पूरा करते हैं. उन के हृदय में एन. सी. सी. के प्रति कोई लगन नहीं होती. कुछ सीखने का उद्देश्य नहीं होता.

एन. सी. सी. की अनिवार्यता से राष्ट्र को लाभ ही क्या हो रहा है? छात्रों के समय व राष्ट्र के धन की बरबादी हो रही है.

—विजयकुमार 'बजाज', जबलपुर

✦

जनवरी (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत उल्लिखित 'बड़े तमाशबीन' वास्तव में भेड़चाल चलने वालों से कम नहीं हैं. जिधर देखो, उधर कान से ट्रांजिस्टर चिपकाए 'कमेंट्री' सुन रहे हैं. यह खेल प्रेमी होने का दिखावा नहीं तो क्या है? आप ने ठीक ही फरमाया. इन्हें असली खिलाड़ी भी नहीं कहा जा सकता. वास्तव में इन का दर्जा सर्कस में तमाशा दिखाने वालों का है.

'मर्म' (कहानी : अरनी राबर्ट्स) वास्तव में दुराचारी मनुष्य की आंखें खोलने वाली ठोस व मर्मस्पर्शी कहानी है.

—म. फैयाज खान, जोधपुर

✦

दिसंबर (द्वितीय) में प्रकाशित 'आइए मिलिए रेजर ब्लेड से' (लेख : मुकुलचंद पांडेय) पढ़ा. पृष्ठ 22 पर लेखक की गणना से मैं सहमत नहीं हूं. चेहरे पर लगभग 25,000 बाल होते हैं तथा उन के बढ़ने की गति $\frac{1}{10}$ इंच प्रति 24 घंटे की होती है. इस हिसाब से 24 घंटों में $25,000 \times \frac{1}{10}$ अर्थात 2500 इंच बाल बढ़ने चाहिए. इन की लंबाई 2500 इंच अर्थात 62.5 मीटर होनी चाहिए, न कि 6.25 मीटर. वास्तविकता क्या है? कृपया सुधार करें.

—विनोदकुमार छाजेड़, जोधपुर

✦

जनवरी (प्रथम) में प्रकाशित 'अल्लाह मियां की मर्जी' (कहानी : अजीज अफसर राही) पसंद आई. लेकिन लेखक ने शाहिदा व अजीत की शादी का जो रास्ता दिखाया, वह सही नहीं है. यह

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

जरूरी नहीं है कि प्रत्येक लड़की को तमन्ना जैसी सहेली मिल जाए और न ही प्रत्येक मौलवी का चरित्र गिरा हुआ होता है.

—अमिला कपूर, झांसी

✦

दिसंबर (प्रथम) में प्रकाशित 'आज का छात्र किधर?' (लेख : अशोककुमार मोंगा) में लेखक ने तीखे सत्य को उभारा है.

आज विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विद्यालयों की गिरती हालत देख कर छात्रों पर तरस आता है. मैं स्वयं इलाहाबाद विश्वविद्यालय का छात्र हूं और आए दिन आंदोलनों, हड़तालों और तोड़फोड़ को देखता रहता हूं.

राजनीतिक नेताओं का विश्वविद्यालयों में पदार्पण एक आम बात हो गई है. ऐसा केवल दिल्ली विश्वविद्यालय में ही नहीं, लगभग सभी विश्वविद्यालयों में है.

हमारे अभिभावक तथा मातापिता जब तक स्वयं छात्रों की तरफ ध्यान नहीं देते, तब उन का सही तथा उत्तम दिशानिर्धारण असंभव है.

'समकालीन राजनीति और युवा' (लेख : ओमप्रकाश) में भी लेखक ने हमारा ध्यान राजनीतिबाजों की स्वार्थ भावना की ओर खींचा है. हम छात्र उन के हाथों के मोहरे बने हुए हैं और वे शतरंज की बाजी मार ले जाते हैं. वस्तुत: छात्रों में सही जागरूकता का अभाव है, जो उन्हें उचित मार्ग पर अग्रसर नहीं होने देता.

—विश्वनाथ वर्मा, इलाहाबाद

✦

दिसंबर (द्वितीय) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'भ्रष्ट नेताओं का सम्मान क्यों?' में प्रकाशित विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. जिन भ्रष्ट नेताओं पर अनेक आरोप लगाए जा रहे हैं, वे किस कारण सम्मान प्राप्त करने के योग्य हैं?

भ्रष्ट नेतागण येनकेनप्रकारेण गद्दी प्राप्त कर के अपने मातहतों पर दबाव डाल कर भी अपना सम्मान करवाते हैं. भ्रष्ट नेताओं के स्वागतसम्मान से निस्संदेह उन लोगों पर प्रभाव पड़ता है जो ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ हैं. अत: जनता को, खासकर शिक्षा संस्थानों को अपने उत्सवों में किसी भी नेता को न बुला कर केवल महान शिक्षाशास्त्रियों को ही आमंत्रित करना चाहिए.

—अशोक खंडेलवाल 'आशु', जबलपुर

✦

केंद्रीय सरकार ने 'नेशनल मैरिट स्कालरशिप' योजना को बंद कर दिया है तथा कोई अन्य सहायता देने से भी इनकार कर दिया है.

यह छात्रवृत्ति पंजाब में हर साल लगभग 100 विद्यार्थियों को दी जाती है, बशर्ते कि विद्यार्थी परीक्षाओं में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करता रहता है, और यह प्रथम डिग्री मिलने तक जारी रहती है. यह मैट्रिक में प्राप्त अंकों के आधार पर शुरू होती है.

पिछले दो सालों से सरकार इसे टालती आ रही थी और अब उस ने घोषणा कर दी है कि इसे बंद किया जा रहा है. बाकी सभी प्रदेशों की सरकारों ने अपने कोष से इसे देना मंजूर कर लिया है लेकिन पंजाब की सरकार इस से इनकार कर रही है. अब प्रश्न यह है कि जो विद्यार्थी केवल इसी हौसले पर पढ़ाई जारी रख रहे थे कि उन्हें यह छात्रवृत्ति मिलती है, अब भविष्य में उन का क्या होगा?

फिर हमारे जैसे उन विद्यार्थियों के लिए तो और भी मुश्किल हो गई है जिन्होंने इस छात्रवृत्ति के कारण ही अन्य छात्रवृत्तियों तथा कर्जों के लिए आवेदन ही नहीं किया था.

हम सरकार के इस कदम का विरोध करते हैं तथा प्रार्थना करते हैं कि अगर यह स्कालरशिप बंद ही करना है तो शुरू से बंद किया जाए. जिन का स्कालरशिप एक बार शुरू कर दिया गया है, उन को तो मिलना ही चाहिए.

—दलीपकुमार, पटियाला

वाते हैं.
निस्सं-
है जो
जनता
अपने
ुला कर
ी आमं-

जबलपुर

मैरिट
दिया
से भी

र साल
ाती है,
प्रति-
ौर यह
ती है.
र पर

र इसे
उस ने
या जा
रकारों
लिया
ी इन-
के जो
पढ़ाई
त्रवृत्ति
ा क्या

यों के
ाई है
अन्य
ावेदन

विरोध
अगर
शुरू
रशिप
न को

ला •

मुक्त विचार

सरकारी खैरात

कुछ राज्य सरकारें स्वतंत्रता सेनानियों के पुत्रों को सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता देने पर विचार कर रही हैं. एकदो राज्य सरकारों ने तो इस संबंध में आवेदनपत्र भी मंगा लिए हैं.

स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के लिए बहुत कुछ किया था, इस में संदेह नहीं. पर इस का यह अर्थ नहीं कि उन्हें हर तरीके से सरकारी खैरात मिलती रहे, और वह भी पुश्त दर पुश्त. निःस्वार्थ भाव से किए गए कार्य को हमारी सरकार जमींदारी में परिवर्तित कर रही है. जिन लोगों ने वास्तव में देश के लिए बलिदान किए हैं, उन से यह आशा नहीं की जा सकती कि वे झोली फैलाएंगे, जिलाधीशों, पुलिस अफसरों, सरकारी नौकरशाही के आगेपीछे फिरते रहेंगे. वास्तव में ऐसे लोग आत्मसम्मानी होते हैं.

सरकार आज इन लोगों के नाम पर जो खैरात बांट रही है वह तो असलियत में अपने पार्टी के सदस्यों को खुश करने की चाल है. पहले मंत्रियों व दल के राजनीतिबाजों के इशारे पर उन लोगों को पेंशन व ताम्रपत्र दे दिए गए जिन्होंने चुनावों में या अन्यथा कांग्रेस के लिए कुछ किया था. जितनों को पेंशन दी जा सकती थी, दे दी गई है. अब वे लोग अपनी सेवा की और अधिक कीमत मांगने लगे हैं. इसलिए कांग्रेस उन के बच्चों के नाम पर अपने चेलोंचांटों को बिना योग्यता के भी नौकरी दिलवाना चाहती है.

जिस तरह सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों का नाम बदनाम किया है, उस से कम से कम यह तो सिद्ध हो गया है कि कांग्रेस के राज में चमचागिरी ही चल सकती है. सेवा व बलिदान की भावना को समाप्त करने में यह सरकार पूरी तरह सफल रही है.

पाकिस्तान का हौवा

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने एक बार फिर भारत की शत्रुता का हौवा खड़ा करना शुरू कर दिया है. हाल की अमरीकी यात्रा में उन्होंने अमरीकी नेताओं को भारत के परमाणु बम और बढ़ती आर्थिक शक्ति का डर दिखा कर पाकिस्तान को मुफ्त आधुनिक हथियार देने पर राजी कर लिया है. यही नहीं, देश में आपात स्थिति लागू कर के और विरोधी दलों को खत्म कर के उन्होंने युद्ध की तैयारी करना भी शुरू कर दिया है. सब से बड़ी बात; उन्होंने सभी पाकिस्तानी युवकों के लिए सैनिक प्रशिक्षण भी अनिवार्य कर दिया है.

जहां पाकिस्तान इतनी जोरशोर से

तैयारी कर रहा है, हमारे नेता अपनी गद्दी बचाने के चक्कर में अपना समय जयप्रकाश नारायण को गाली देने में तथा अगले चुनावों को जीतने की उधेड़बुन में लगे हैं.

बढ़ती हुई महंगाई के कारण भारतीय सेनाओं की स्थिति खराब होने लगी है. चूंकि सरकार अब अधिक पैसा इस मद में नहीं दे सकती, सेनाओं में नई भरती बंद हो गई है और नए हथियार भी नहीं आ रहे हैं. जो पैसा पहले मिलता था, उस का 75 प्रतिशत अब केवल वेतन देने और अन्य सुविधाएं जुटाने में खर्च होने लगा है. युवकयुवतियों को अनिवार्य रूप से सैनिक प्रशिक्षण देने की बात करना तो बेकार की ही बातें लगती हैं.

ऐसी स्थिति में एक बार फिर भारत-पाक युद्ध हो जाए तो क्या होगा? दो बार युद्ध जीतने का यह अर्थ नहीं कि तीसरी बार भी हम अवश्य ही जीतेंगे. हम संख्या में अधिक होते हुए भी पिछले दो हजार सालों में सैकड़ों बार हार चुके हैं. यह बात फिर दुबारा हो सकती है. यदि हमारे नेता जल्दी नहीं जागे तो देश को बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है.

पुरुषों की बराबरी

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले प्रथम महिला दल की सदस्यों ने आधार कैंप पर अपने शृंगार प्रसाधनों को छोड़ते हुए कहा कि अब उन्हें इस की जरूरत नहीं रहेगी. ये वे स्त्रियां हैं जो पुरुषों से मुकाबला कर रही हैं और हर वह काम कर दिखाना चाहती हैं जो अब तक पुरुषों के एकाधिकार में था.

शृंगार प्रसाधन स्त्री के पुरुष से बराबरी करने में सब से बड़ी अड़चन हैं. शृंगार प्रसाधनों के इस्तेमाल का मतलब ही यह है कि स्त्रियां पुरुष को आकर्षित करना चाहती हैं ताकि वे उन्हें अपना लें. वे मान लेती हैं कि उन का भाग्य विधाता पुरुष ही है और उस के संरक्षण के बिना वे कुछ नहीं कर सकतीं.

जितना समय स्त्रियां अपने बनाव शृंगार व कपड़ों पर खर्च करती हैं उस से आधा भी वे अन्य क्षेत्रों में करें तो वे पुरुषों की बराबरी आसानी से कर सकती हैं. स्त्रियां आम तौर पर समान कार्य के लिए समान वेतन की मांग करती हैं पर बहुधा स्त्रियां पुरुष के समान कार्य ही नहीं कर पातीं. स्त्रियों को वैसे ही बहुत सारा समय तो प्राकृतिक बाधाओं, जैसे मासिक धर्म, गर्भावस्था आदि, में बेकार करना पड़ता है. इस के अतिरिक्त वे हर रोज दोढाई घंटे अतिरिक्त शृंगार व कपड़ों पर खर्च कर के अपना कीमती समय बेकार करती हैं. पुरुष इस समय का सदुपयोग सामाजिक व्यवहार या अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने में लगाता है.

लगता है, स्त्रियों को बनासंवार कर रखना भी पुरुष की एक चाल है, जिस में स्त्रियां हजारों वर्षों से फंसती आ रही हैं. निम्न वर्गों में जहां स्त्रियां अपने बनावशृंगार में इतना समय खर्च न कर परिवार की आय बढ़ाने में खर्च करती हैं, वे काफी प्रभावशाली होती हैं. ऐसी स्थिति में यदि वे पुरुष से दबती हैं तो केवल उस से बाहरी दुनिया से संरक्षण प्राप्त करने के लिए.

साफसुंदर बने रहने में कोई हर्ज नहीं है. पर शीशे के सामने हर रोज घंटों खड़े रहने के बाद स्त्रियां पुरुषों से बराबरी का दावा नहीं कर सकतीं.

बेचारी शिक्षा पद्धति!

शिक्षा पद्धति में सुधार के लिए गोष्ठियां और सेमिनार बुलाना आजकल फैशन हो गया है. कालिज की स्थापना दिवस हो या छात्र संस्था की रजत जयंती, समारोह में शिक्षा पद्धति में सुधार विषय पर आसानी से भाषण झाड़े जा सकते हैं. पहले दसपंद्रह आदमी पुराने तर्क दोहराएंगे, दिखावे के लिए आपसी छीनाझपटी करेंगे और फिर इस बात पर सहमत हो जाएंगे

क शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन होने चाहिए. कैसे, कौन से परिवर्तन होने चाहिए, कोई निश्चित रूप से नहीं बताएगा, और फिर सब चाय पी कर घर चले जाएंगे. बेचारी शिक्षा पद्धति फिर वैसी की वैसी ही रह जाएगी.

मजे की बात यह है कि राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालय आयोग के अध्यक्ष, वाइस चांसलर आदि सब यही कहेंगे, "शिक्षा पद्धति में सुधार करो," "शिक्षा पद्धति पुरानी है," "शिक्षा पद्धति केवल क्लर्क बनाती है," इत्यादि, पर स्वयं कोई कुछ न करेगा.

बीसियों वर्षों के वादविवाद के बाद हाल ही में शिक्षा पद्धति में सुधार के नाम पर कुछ हुआ है तो सिर्फ इतना : स्कूली शिक्षा को ग्यारह वर्ष से बढ़ा कर बारह वर्ष का कर दिया गया है.

सच तो यह है कि आज जिन के हाथ में शिक्षा की बागडोर है वे शिक्षा पद्धति में परिवर्तन के इच्छुक ही नहीं हैं. वे एक ढर्रे में ढले हुए हैं और किसी भी परिवर्तन का मतलब है कि उन में से बहुत से नई पद्धति के लिए अयोग्य सिद्ध हो जाएंगे और शेष को बहुत कुछ नए सिरे से सीखना होगा. ये मठाधीश जानते हैं कि ज्ञान का क्षेत्र लगातार तेजी से बढ़ रहा है और वे स्वयं पीछे फिसटते जा रहे हैं. यदि कुछ सुधार हुए तो उन सब की योग्यता जांची जाएगी और, यदि यह हुआ तो वे कहीं के न रहेंगे. इसी लिए ये सब सुधार का शोर ही मचाते हैं पर करते कुछ नहीं.

अच्छा यही हो कि इस शोरशराबे को छोड़ कर इसी वर्तमान पद्धति को चलने दिया जाए. जैसी शिक्षा आज मिल रही है, उसी से देश का काफी भला हो सकता है. यदि आज शिक्षित बेकार अधिक हो गए हैं तो इस का कारण हर व्यक्ति को, चाहे वह योग्य हो या न हो, कालिजों में भरती होने की सुविधा दे देना है. नौकरियों के लिए डिग्री की अनिवार्यता समाप्त कर के कालिजों के दरवाजे केवल एक चौथाई के लिए रहने दिए जाएं. फिर देखिए बेकारी भी समाप्त हो जाएगी और छात्रों की योग्यता भी बढ़ जाएगी.

तानाशाही की ओर

पाकिस्तान से युद्ध हुए चार साल हो चुके हैं और इस समय न पाकिस्तान के और न ही चीन के हमले की कोई आशंका है. फिर भी भारत सरकार ने आपातकालीन स्थिति घोषित कर रखी है. जब भी नेताओं से इस बारे में पूछा जाता है तो वे कह देते हैं कि पाकिस्तान हथियार जमा कर रहा है या चीन के माओ साहब की मुसकान अभी बढ़ी नहीं है.

सरकार ने आपात स्थिति इसलिए जारी कर रखी है कि उस में आम नागरिकों को संविधान द्वारा दिए गए बहुत से मूल अधिकार स्थगित हो जाते हैं. कांग्रेसी नेता वैसे तो श्री जयप्रकाश नारायण के आंदोलन को लोकतंत्र विरोधी कहते हैं, पर उन्होंने स्वयं ही लोकतंत्र को नाम मात्र का बना कर रख छोड़ा है.

केवल वोट देने का अधिकार ही लोकतंत्र नहीं होता है. लोकतंत्र का यह अर्थ है कि आम नागरिकों को अपनी इच्छानुसार घूमनेफिरने, काम करने, पैसा कमाने, अपने विचार प्रकट करने आदि की स्वतंत्रता हो. कांग्रेस ने समाजवाद के नाम पर वैसे ही इन स्वतंत्रताओं को संविधान में संशोधन करकर के बहुत संकुचित कर दिया है और जो थोड़ीबहुत बची हैं, उन्हें मनमरजी से समाप्त करने के लिए देश में आपात स्थिति जारी रखी है.

श्री जयप्रकाश नारायण ने आपात स्थिति समाप्त करने के लिए जो आंदोलन करने का फैसला किया है, वह सराहनीय है. यदि सरकार को इस प्रकार की ढील दी जाती रही तो कांग्रेसी नेता जल्दी ही यहां भी बंगला देश या पाकिस्तान की तरह तानाशाही लागू करने से नहीं चूकेंगे. ●
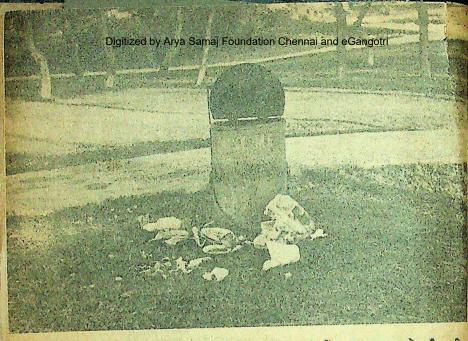
कूड़ेदानी का प्रयोग न कर के उस के आसपास कूड़ा फेंक कर स्थान को और भी गंदा कर दिया जाता है.

हम कितने सभ्य

सड़कों के किनारे पेशाब कर के सभ्यता के किस रूप का परिचय दिया जाता है?

"क्या हमें किसी ऐसी शक्ति का वर दान मिलेगा जो हमें स्वयं क उसी रूप में देखने में समर्थ करेगी, जि रूप में अन्य हमें देखते हैं?" विदेशी लो भारतीयों को किस रूप में देख हैं? जब कोई विदेशी भारत आता तो उसे सब से पहले क्या ची प्रभावित करती है? अनेक विदेशी, जि से यह प्रश्न किया जाता है, भारत लोगों के मैत्रीपूर्ण व्यवहार और अति सत्कार, सदा चमकती रहने वाली धू अद्भुत स्थापत्य कला और प्राच स्मारकों, सुंदर स्त्रियों और उन आकर्षक पोशाक, साड़ी इत्यादि नम्रतापूर्वक उल्लेख करते हैं. यह सही है. हमारे पक्ष में पड़ने वाली ब को भुलाया नहीं जा सकता. विक्री वृद्धि अर्थात विदेशी यात्रियों की सं

में वृद्धि के लिए उन का अकसर बढ़ा-चढ़ा कर प्रचार किया जाता है.

लेकिन जिन बातों का यात्री उल्लेख नहीं करता तथा जिन का वह अपने घर वापस जा कर निस्संदेह घृणापूर्वक वर्णन करता है, वे हैं हमारे विपरीत पड़ने वाली बातें. हम स्वयं न तो उन्हें देखते हैं और न उन की परवा करते हैं. लेकिन फिर भी जब कोई विदेशी उन के बारे में कहता या लिखता है, तब हम क्रुद्ध होते हैं. जब कोई निष्पक्ष लेकिन स्पष्टवक्ता विदेशी, जैसे लुई माल या वी. एस. नैपाल हमें अपने संपूर्ण रूप में देखता है और उस पर जो कुछ भी प्रभाव पड़ता है उसे लिपिबद्ध करता है तो हम उस के कथनों को बेबुनियाद, मनगढ़ंत और भारत-विरोधी कह कर बिना झिझक निंदा करते हैं. तीन पवित्र बंदरों की भांति हम ने

शादीब्याह के अवसर पर नाचगाने और हुड़दंग से रास्ता ही बंद कर दिया जाता है.

हैं?

लेख
पुष्पा सुंदर

हम सभ्यता की लीक पीटते नहीं थकते, लेकिन वास्तव में हम सभ्यता के कितने निकट और कितने दूर हैं?

पार्क में कूड़े का ढेर लगा कर पार्क की उपयोगिता ही समाप्त कर दी जाती है.

अपनी आंखें, कान और दिमाग अपने भीतर की बुराई के प्रति बंद कर लिए हैं तथा हम इस बात को मानने से बिलकुल इनकार कर देते हैं कि हमें स्वयं में कुछ सुधार करना चाहिए. इस से भी अधिक बुरी बात यह है कि हमें अपनी कमजोरियों में आनंद आता है अथवा हम उन के प्रति पूर्णतया उदासीन रहते हैं.

गंदगी और कचरा

हम अपनी गरीबी का गुणगान करते हैं क्योंकि इस से हमें संतोष का अनुभव होता है. अपने ग्रंथ 'अंधकार का क्षेत्र' में वी. एस. नैपाल कहते हैं, "भारतीयों के लिए गरीबी क्रुद्ध होने वाली चीज या अपने में सुधार के लिए प्रेरित करने वाली वस्तु नहीं है, बल्कि गरीबी आंसुओं का कभी न सूखने वाला स्रोत, बुद्धिमत्ता का चिह्न है." विदेशी न केवल गरीबी पर आश्चर्य करते हैं, बल्कि उस गंदगी और कचरे पर भी जिसे वे सभी जगह पाते हैं, उन बीमारियों पर भी, जिन्हें हम सहन करते हैं. इस के अतिरिक्त हम अपने साथी नागरिकों और उन के अधिकारों की जिस प्रकार अवहेलना करते हैं और केवल अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सुविधाओं का ध्यान रखते हैं, उस पर भी उन्हें आश्चर्य होता है. संक्षेप में वे हम में एक अच्छा नागरिक बनने की भावना के अभाव पर आश्चर्य करते हैं.

आज हमें निश्चय ही ऐसे राष्ट्रों में से एक कहा जाना चाहिए, जिन में यह नागरवृत्ति निम्नतम है. इंगलैंड तथा अन्य देशों में कोई भी व्यक्ति शोर करते हुए रेडियो, चिल्लाते हुए बच्चों इत्यादि की आवाज को सहन नहीं करेगा, न केवल अपने घर में बल्कि पड़ोस में भी, न ही गंदे सार्वजनिक शौचालयों अथवा सड़कों पर थूकने और मूत्रत्याग को सहन किया जाता है. हमारे इस नागरवृत्ति विरोधी कार्यों को सहने पर वे विस्मित होते हैं.

यदि कोई भी समाज ठीक प्रकार या कुशलतापूर्वक कार्य करना चाहता है तो अत्यंत विकसित नागरवृत्ति आवश्यक है. यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने ही बारे में सोचे और अपने लिए ही जीवित रहे तो निश्चय ही समाज अस्तव्यस्त हो जाएगा क्योंकि एक समूह के सदस्य के रूप में उस के कार्यों की अन्य लोगों के जीवन पर प्रतिक्रिया होती है और बाद में स्वयं उस का भी जीवन प्रभावित होता है.

नागरवृत्ति न केवल अन्य लोगों के हित के लिए आवश्यक है बल्कि हमारे अपने हित में भी है. जब कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के घर में लगी आग को बुझाता है या आग बुझाने में उस की सहायता करता है तो वह ऐसा केवल स्वयं को एक अच्छा पड़ोसी सिद्ध करने के लिए ही नहीं करता. इस का कारण यह भी है कि यह उस के हित में है, क्योंकि वह आग उस के अपने घर में भी फैल सकती है. इस प्रकार वह मौलिक सिद्धांत, जिस के द्वारा समाज में किसी व्यक्ति का व्यवहार निर्धारित होना चाहिए, यह है : "दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि तुम उन से अपने प्रति किया जाना चाहते हो." कोई समाज उचित तथा भली प्रकार जीवन तभी व्यतीत कर सकता है जब कि उस के सदस्यों को अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का भी उतना ही ध्यान रहता है, जितना कि अपने अधिकारों का.

सफाई के प्रति हमारा रुख

एक क्षेत्र, जिस में हम नागरवृत्ति का सब से अधिक अभाव प्रदर्शित करते हैं, वह है स्वास्थ्य, स्वच्छता और सफाई के प्रति हमारा रुख. एक राष्ट्र के रूप में हम व्यक्तिगत स्वच्छता का बहुत अधिक ध्यान रखते हैं. इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि पश्चिमी देशों में लोग नित्य प्रति न तो स्नान करते हैं और न वस्त्र बदलते हैं और जब वे नहाते हैं तो टब में बारबार एक ही पानी का प्रयोग करते हैं, तथा पानी इत्यादि की बजाय 'टायलेट पेपर' का प्रयोग करते हैं. जब कि हमारे शास्त्रों ने सफाई को एक धार्मिक कार्य बना दिया है, कुछ कार्यों के

सड़क की पटरियों पर रास्ता घेर कर दुकानें लगा कर बैठ जाना आम बात हो गई है, लेकिन आनेजाने वालों की परेशानी को क्यों नजरअंदाज किया जाता है?

अस्वच्छ कह कर निषेध किया गया है और कुछ कार्यों का स्वच्छ कह कर विधान किया गया है. जैसे शौच के बाद केवल बाएं हाथ से सफाई का विधान किया गया है.

इस के बावजूद, अपने सार्वजनिक जीवन में हम विश्व के सब से गंदे लोगों में से हैं, यद्यपि हम व्यक्तिगत सफाई पर बहुत अधिक बल देते हैं. कचरा घर से बाहर सड़क पर फेंकते हुए गृहिणी को बिलकुल भी झिझक नहीं होती. वह इस बात को पूर्णतया भुला देती है कि उस कूड़ेकचरे पर जो मक्खियां और कीटपतंगे बैठेंगे, वे उस के घर में घुसेंगे और जिन बीमारियों को दूर करने के लिए उस ने सफाई की थी, वे फिर भी हो जाएंगी.

सारा संसार थूकदान

अपने पड़ोस से बाहर के सारे संसार को हम थूकदान समझते हैं और दीवारों, सड़कों, रेलवे के डब्बों तथा सिनेमाघरों इत्यादि में हम थूकते हैं. हम हर कहीं पेशाब करते हैं और गंदगी फैलाते हैं. इस बात का बिलकुल भी ध्यान नहीं रखते कि वह स्थान इस के लिए उपयुक्त है या नहीं अथवा अन्य लोगों को कहीं कोई दिक्कत तो नहीं होगी. नैपाल के शब्दों में, ''भारतीय हर कहीं गंदगी फैलाते हैं. सब से अधिक वे रेलवे लाइनों को खराब करते हैं. लेकिन वे समुद्रतटों, पहाड़ियों और नदियों के तटों को भी गंदा करते हैं. वे ढकी जगह ढूंढ़ने का कभी प्रयास नहीं करते.''

सुबह का दृश्य

अनेक विदेशी और भारतीय सड़क या रेल से प्रभात काल में बंबई पहुंचते हैं. वे देखते हैं कि लोग खुले में बैठेबैठे मल त्याग कर रहे हैं. लेकिन हम इस के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि यह हमें एक आम बात प्रतीत होती है. हम तनिक भी चिंता नहीं करते कि यह एक ऐसी स्थिति है जिस का तुरंत कोई समाधान ढूंढ़ा जाना चाहिए.

इस में कोई आश्चर्य नहीं कि लोग मलमूत्र त्याग अकसर खुले स्थानों में करते हैं, क्योंकि जहां पर सार्वजनिक सुविधाएं और शौचालय उपलब्ध हैं, वहां

पर भी वे इतने अधिक गंदे, बदबूदार और व्यस्त हैं कि तुरंत मितली आने लगती है. लोग दूसरों के हित को दृष्टि में रखते हुए इन सुविधाओं का उचित रीति से प्रयोग नहीं करते और स्थान को साफ और सूखा बनाए रखने के लिए फ्लश का प्रयोग करने की थोड़ी सी भी कठिनाई नहीं उठाते. थोड़ी सी भी दिक्कत उठाने की इसी अनिच्छा के कारण हमारे सार्वजनिक नल हर समय चलते रहते हैं, यद्यपि पानी हमारे देश में एक अत्यंत कीमती वस्तु है और उस का अधिकतर सावधानीपूर्वक प्रयोग किया जाना चाहिए. नल को बंद करना उस का अधिकार प्रयोग करने वाले बहुत दिक्कततलब मानते हैं.

हम इतने सहनशील लोग हैं कि गाय, बैल, बकरियां, गधे, ऊंट और आवारा कुत्ते हमारी सड़कों पर पूरी स्वतंत्रता के साथ घूमते फिरते हैं. वे यातायात रोक देते हैं, जगहजगह गंदगी फैलाते हैं और बाजार में सब्जियां खाते हैं. उन्हें सड़कों पर मरने और कारों द्वारा कुचले जाने की पूरी स्वतंत्रता है. उन से बचने के लिए कारों को भयानक मोड़ लेने पड़ते हैं और अनेक व्यक्तियों की जीवन लीला समाप्त हो जाती है. हम में से अनेक व्यक्ति, जो अहिंसा को परम धर्म मानते हैं, आवारा कुत्तों को पकड़ने के नगरपालिका के प्रयासों का विरोध करते हैं. उन्हें इस बात की तनिक भी चिंता नहीं होती कि उन की इस धार्मिक भावना से अनेक मनुष्यों को पागल कुत्तों के काट खाने पर, अत्यंत कष्ट के साथ मरना पड़ सकता है. वे अपने इस कार्य से पुण्य कमा लेते हैं. शेष की उन्हें तनिक भी चिंता नहीं होती.

अब तक यह बात भली प्रकार प्रतिपादित हो चुकी है कि अधिक शोरशराबा सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर खतरा है. इस के बावजूद, लोग पूरी आवाज के साथ रेडियो, लाउडस्पीकर इत्यादि चलाते हैं. उन्हें इस बात की चिंता नहीं रहती कि बूढ़ों, बीमारों, बच्चों और छात्रों को शांति और मौन की आवश्यकता हो सकती है.

शामियानों से असुविधा

इसी प्रकार विवाह तथा अन्य समारोहों के लिए सड़कों पर शामियाने लगा देने से पूरी सड़कों का यातायात रुक जाता है और काफी असुविधा होती है. अन्यों को होने वाली असुविधा का ध्यान रखे बिना प्रत्येक व्यक्ति स्वयं मजा लूटना चाहता है.

बंबई के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर लाइन लगाने की आदत नहीं है. देहली में बस में चढ़ना अत्यंत कठिन है, क्योंकि बल सही बात से अधिक शक्तिशाली सिद्ध होता है. लेकिन यदि बंबई वाले लाइन लगाना सीख सकते हैं और ठीक प्रकार व्यवहार कर सकते हैं तो दूसरों के लिए भी उन का अनुसरण करना संभव हो सकता है.

लापरवाही का उदाहरण

लापरवाही का एक अन्य उदाहरण है दिवाली तथा अन्य त्योहारों पर आतिशबाजी का प्रयोग. गंभीर दुर्घटना, आग लगने के खतरे तथा प्रत्येक व्यक्ति को शोर से परेशानी होने की संभावना के बावजूद लोग प्रति वर्ष आतिशबाजी पर अपार धनराशि व्यय करते हैं, जिस से न केवल हमारे लाड़लो को, बल्कि बूढ़ों, बीमारों और असमर्थ लोगों की कठिनाइयों में भी वृद्धि हो सकती है. एक बार हमारे नगर ने इस बात पर गर्व का अनुभव किया था कि उस में बहुत अच्छी आतिशबाजी की गई थी जो पूरे मार्ग पर एक श्रृंखला में छूटी थी और लगभग एक घंटे तक निरंतर छूटती रही थी. छोड़े गए पटाखों का यातायात पर क्या प्रभाव हो सकता है, इस बात की चिंता किए बिना व्यस्त राजमार्गों के बीच आतिशबाजी की जाती है. यदि कार चालक के निकट कोई पटाखा छोड़ा जाता है तो उस का वाहन पर नियंत्रण शिथिल हो सकता है, जिस से किसी का

जीवन नष्ट हो सकता है. आतिशबाजी निश्चय ही राजधानी से दूर की जानी चाहिए और केवल कुछ नियत क्षेत्रों में ऐसा करने की अनुमति दी जानी चाहिए.

नगरों में कठिनाई उत्पन्न होने का एक कारण यह भी है कि यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों से बहुत से लोग आए हैं और उन्होंने स्वयं को शहरी जीवन के कुछ पक्षों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है, तथापि उन का ग्रामीणपन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है.

किसी ग्रामीण क्षेत्र में जो आदतें बिलकुल ठीक हो सकती हैं वे ही नगरों के लिए बिलकुल अनुपयुक्त हो सकती हैं.

इस प्रकार हम देखते हैं कि खुले खेत बिना अधिक नुकसान किए लोगों द्वारा फैलाई गई गंदगी को खपा सकते हैं. लेकिन नगर में उसे खपा सकने वाली कोई चीज नहीं होती. इस के अतिरिक्त, खुले विस्तृत खेत और दूरदूर स्थित मकान बिना नुकसान किए काफी अधिक शोर को पचा सकते हैं, पासपास स्थित और गगनचुंबी इमारतों वाले शहरी क्षेत्र नहीं. कंक्रीट की विस्तीर्ण सतह से आवाज गंजने और कांपने लगती है, जिस से ध्वनि प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन जाता है.

इन पापों के अतिरिक्त हम कुछ भूलों के भी इतने ही दोषी हैं. उच्च श्रेणी के समृद्ध और शिक्षित व्यक्ति से ले कर सड़कों पर घूमने वाले निर्धन और बेरोजगार व्यक्ति तक प्रत्येक अपनी सारी परेशानियों के लिए सरकार और पुलिस को दोष देता है. इस ओर केवल थोड़े से ही व्यक्ति ध्यान देते हैं कि सरकार और विशेष रूप से पुलिस, जनता के थोड़ा और अधिक सहयोग से अधिक कुशलतापूर्वक कार्य कर सकती है. अब भी, जब कि पुलिस किसी विदेशी सरकार के अत्याचार का उपकरण नहीं रह गई है, उस के संपर्क में आने से लोग डरते हैं, यद्यिप न्याय की रक्षा और अन्य लोगों की सहायता के लिए उस के संपर्क में आना आवश्यक है.

कुछ दिन पूर्व, हमारे नगर के एक व्यस्त क्षेत्र में एक मोटर चालक ने एक पैदल यात्री को धक्का मारा, जिस से वह गंभीर रूप से घायल हो गया, लेकिन वह कुछ भी परवा न कर के और उस व्यक्ति को उस के भाग्य के भरोसे छोड़ कर भाग गया. उस समय दोपहर का समय था और सड़क खचाखच भरी थी. इस घटना के गवाहों की कोई कमी नहीं थी. इन में सड़क के दोनों ओर के दुकानदार भी शामिल थे. इस के बावजूद जब पुलिस द्वारा पूछताछ की गई तो सब ने इस बात से इनकार कर दिया कि उन्होंने यह दुर्घटना देखी है. वे कार के बारे में कोई भी सूचना देने के अनिच्छुक थे. किसी ने भी अपना थोड़ा सा समय लगा कर न्याय की रक्षा के लिए थोड़ी सी शक्ति भी खर्च नहीं की.

महंगाईग्रस्त गृहणियों के लिए

ब्रुसेल्स (बेल्जियम) के वृद्धरोग विशेषज्ञ डाक्टर अल्फ्रेड नेसन ने कहा है कि गृहिणियों को बढ़ती हुई कीमतों का स्वागत करना चाहिए.

डाक्टर अल्फ्रेड का कहना है कि महंगाई के कारण आप ज्यादा खाने व अपनी तथा परिवार की कब्रें जल्दी खोदने से बचेंगी.

उन के अनुसार यदि स्वास्थ्यवर्धक उत्पादनों की कीमतें आप की क्रय शक्ति की पहुंच से बाहर हो जाएं तो आप यह उम्मीद कर लीजिए की आप 100 साल तक जिंदा रह सकते हैं.

एक अन्य घटना यह है कि एक मित्र ने, जो निकट ही रहती हैं और जिन का मकान नदी के किनारे है, एक दिन मुझे फोन किया. वह बहुत अधिक चिंतित थीं. एक शव उन के मकान के समीप तट पर आ कर लगा था. उन्होंने दो दिन तक उस की परवा नहीं की, यहां तक कि उस की दुर्गंध असहनीय हो गई. "मैं क्या करूं, मैं उस को कैसे हटवाऊं?" उन्होंने क्रोध में पूछा. मैं ने यह सुझाव दिया कि उन्हें पुलिस को सूचित कर देना चाहिए, शेष काम पुलिस स्वयं कर लेगी. वह बहुत डरीं, "मैं पुलिस के चक्कर में नहीं फंसना चाहती," उन्होंने चिंता के साथ कहा, "यही कारण है कि मैं इतने समय तक चुप रही. वे आएंगे और बयान लेंगे. मुझे जाना पड़ेगा और गवाही देनी पड़ेगी. यह बड़ा झंझट है." अंत में मैं ने ही पुलिस को सूचना दी और उस शव को वहां से हटवा दिया.

या तो फंस जाने के इस डर से अथवा अन्य लोगों के प्रति लापरवाही मात्र के कारण हम इस गैरजिम्मेदार ढंग से व्यवहार करते हैं. हम शायद यह बात भूल जाते हैं कि यदि अंत में किसी एक व्यक्ति की हिलडुल से नौका डूब जाती है तो हम सब डूबेंगे.

निस्संदेह, यह सत्य है कि यदि किसी व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करने वाले वातावरण में कोई अंतर नहीं आता तो वह गैरजिम्मेदार ढंग से व्यवहार करता रहेगा. उदाहरणार्थ यदि नागरिक प्रशासन अधिकारियों द्वारा कूड़ेदानों का प्रबंध नहीं किया जाता तो किसी व्यक्ति से कूड़ा सड़क पर जगहजगह न फेंक कर केवल कूड़ेदान में फेंकने के लिए कहना हास्यास्पद होगा. यदि लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त बसें नहीं हैं तो यही बात बसों में चढ़ने के लिए सीधी लाइन लगाने के बारे में है. जब विवाह इत्यादि अवसरों पर सस्ती दर पर किराए पर दिए जाने के लिए पर्याप्त भवन नहीं हैं तो विवाह इत्यादि सड़कों से दूर आयोजित करने की लोगों से आशा करना भी व्यर्थ है.

यह नितांत स्पष्ट है कि यदि नागरिक प्रशासन अधिकारी अपना कर्तव्य कुशलतापूर्वक और ईमानदारी के साथ करते हैं तभी लोग अपने नागरिक उत्तरदायित्व भली प्रकार पूरे कर सकते हैं. प्रत्येक व्यक्ति एक पृथक प्राणी के रूप में अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के बारे में न सोचे और स्वयं को सिर्फ जटिल समाज की एक इकाई मान कर प्रशासन को दोष देता रहे. व्यक्तिगत उत्तरदायित्व तथा सामाजिक उत्तरदायित्व—दोनों के निर्वाह से ही राष्ट्रीय जीवन के स्वरूप में सुधार हो सकता है. ●

ये रात की रानियां

हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि फ्रांस में वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों में कम उमर की लड़कियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है. इसी उद्देश्य से सड़क पर घूमने वाली 30,000 लड़कियों में से अधिकतर 13 और 16 वर्ष के आयु वर्ग की थीं.

एक और अध्ययन के अनुसार 100 में से 65 'रात की रानियां' किसी न किसी के संरक्षण में थीं. इस अध्ययन से यह भी पता चला कि इस व्यवसाय में आने से पहले 56 प्रतिशत पेरिस में ही रहती थीं और शेष 44 प्रतिशत अपनी किस्मत आजमाने के लिए फ्रांस की राजधानी में आई थीं. ये 44 प्रतिशत लड़कियां पेरिस पहुंचने के छः महीने के अंदरअंदर वेश्याएं बन चुकी थीं.

लेख • उर्मिला मिश्र
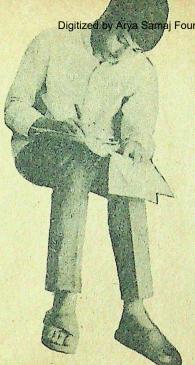
परीक्षा में बारबार असफलता क्यों?

कई विद्यार्थी एक ही कक्षा में कई बार फेल होने से पढ़ाई से ही खीझ जाते हैं, लेकिन इस असफलता का कारण क्या है?

उस दिन यह सुन कर कि संजय इस वर्ष फिर बी. एससी. की परीक्षा में असफल हो गया, मैं चौंकी नहीं, बल्कि मेरे सामने एक संजय का ही नहीं अनेक उन छात्रछात्राओं के चित्र घूम गए जो एक ही परीक्षा में कई वर्ष निकाल देते हैं. जहां तक संजय का प्रश्न है, उस की असफलता के कारण स्पष्ट हैं.

जहां तक मेरा विचार है, संजय की पढ़ाई का अपना कोई लक्ष्य नहीं. पिछले वर्ष तथा इस वर्ष वह एक नहीं, अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं में भी बैठा जो कि मुझे जंचा नहीं. क्योंकि जिस क्षेत्र में स्वयं की विशेष रुचि हो, उसी से संबंधित परीक्षाओं में बैठना उचित है. दूसरी बात यह भी है कि कई परीक्षाओं में बैठने की अपेक्षा यदि एक या दो में अच्छी तैयारी कर के बैठा जाए तो सफलता की अधिक आशा रहती है. तीसरी बात यह कि ये परीक्षाएं अधिकतर मईजून में होती हैं जब कि मुख्य परीक्षा भी निकट होती है. अतएव प्रतियोगी परीक्षाओं के चक्कर में मुख्य परीक्षा की तैयारी भी मारी जाती है. चौथी बात यह कि प्रतियोगी परीक्षाएं यदि सफलता न दिला सकीं तो भविष्य के लिए इस का प्रभाव आत्मविश्वास क्षीण करने की दिशा में पड़ता है या फिर केवल एक राह बचती है कि जैसे भी हो, जो क्षेत्र मिल जाए उस में ही प्रवेश किया जाए. तब अपनी रुचि का प्रश्न भूलना पड़ता है.

संजय की बारबार की असफलता के ये ही कारण हैं जिन से सभी अवगत हैं. किंतु एक बार ठोकर खा कर भी उस ने

किसी की न मानी, केवल अपनी योग्यता की डींग हांकने के लिए ही अनेक प्रति-

योगी परीक्षाओं में बैठा. नतीजा यह हुआ कि न वह उन में सफल हुआ और न अपनी मुख्य परीक्षा में ही.

दुख की बात है कि युवा पीढ़ी में अपनी गलती से कुछ सीखने की प्रवृत्ति नहीं उभर रही. वे प्राय: असफलता जैसी बातों को भी हलकेपन से लेते हैं. अपनी असफलता के लिए कभी परिस्थितियों को, कभी अभिभावकों को, कभी शिक्षको को, तो कभी अन्य बहुत सी बातों को दोषी ठहरा कर संतुष्ट हो लेते हैं. यदि एक बार वे स्वयं को टटोलें तो उन्हें यही समझ में आएगा कि उन की लापरवाही, अनियमितता, असावधानी भी उन की असफलता का कारण है.

घरेलू परिस्थितियां : मां की दीर्घकालीन अस्वस्थता, खर्च की डावांडोल स्थिति, पिता का बढ़ता हुआ मानसिक तनाव, तीन छोटे भाईबहनों की जिम्मेदारी झेलता हुआ एक युवक दो वर्ष से एक ही कक्षा में फेल हो रहा है. वह असफलता के कारणों से अवगत है तो भी ये परिस्थितियां उस की बेड़ियां हैं, जिन से पलायन करना संभव नहीं. अतएव उस की विवशता ही असफलता का कारण है जिस का अन्य विकल्प नहीं. दूसरी ओर एक परिवार में घर के कलहपूर्ण वातावरण से ऊबी हुई, विमाता द्वारा प्रताड़ित, तीन छोटे भाईबहनों की पीड़ा को भी स्वयं झेलती हुई एक युवती केवल रात्रि के कुछ घंटे पढ़ कर जब अपने श्रम की सफलता सामने लाती है तो अन्य लोग चकित तथा विमाता और अधिक ईर्ष्यालु हो उठती है. फिर भी उस के मन में केवल यही लक्ष्य है कि वह किसी प्रकार अपने पैरों पर खड़ी हो कर अपने छोटे भाईबहनों को विमाता के क्रूर शासन से हटा कर उन का भविष्य सुधार सके. पिता से अधिक कदाचित उसे इन बच्चों की चिंता है. और उस का यही दृढ़ संकल्प उस को प्रति वर्ष मिलने वाली सफलता का सच्चा सहयोगी है अन्यथा उस विषम पारिवारिक परिस्थितियों के बीच पढ़ाई करना बहुत कठिन है.

अतएव, घरेलू परिस्थितियां अथवा वातावरण शिक्षा पर प्रभाव डालते अवश्य हैं पर ये परिस्थितियां सब के साथ समान रूप से जटिल हैं, तथा ये ही असफलता का एकमात्र कारण हैं, ऐसी बातें तर्कसंगत नहीं. शिक्षा का कोई लक्ष्य हो और मन में दृढ़ता हो तो सफलता निश्चित है.

उचित मार्गदर्शन का अभाव : परीक्षा में बारबार असफल होने का कारण उचित मार्गदर्शन का अभाव भी बताया जाता है. आजकल स्कूलकालिजों में अधिकांश शिक्षक केवल समय काटने के लिए तथा घर पर पढ़ने आने के लिए विद्यार्थियों को जबरन तैयार करने के लिए आते हैं. वे अपने छात्रों का न मानसिक स्तर पहचानते हैं न रुचियां और न ही उन की प्रतिभाओं को विकास की राह दिखाते हैं, जो कि शिक्षकों का एक मुख्य कर्तव्य है. इस प्रकार जिन विद्यार्थियों के पास साधन नहीं हैं, अध्यापकों के घर पर पढ़ने जाने के लिए धन नहीं है. वे बेचारे बारबार असफल होते हैं.

अध्यापकों को शिक्षा के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना ही अनुचित है, क्योंकि महंगाई की समस्या तो सभी के लिए है. कक्षा में न पढ़ा कर अपने घर पर छात्रों को बुला कर पास करवाने का लालच दे कर ट्यूशन पढ़ाना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार है. कई अध्यापकों ने इसी के बल पर कोठियां खड़ी कर ली हैं. विशेषकर विज्ञान के विषयों में शिक्षकों की यह धांधली अति पर है जहां परीक्षार्थियों की प्रयोगात्मक परीक्षाओं के अंक उन के ही हाथों में होते हैं. उन्हें चाहिए कि अपने पद के गौरव को बढ़ाएं तथा जिन छात्रों को उन की सहायता की आवश्यकता हो उन्हें अपेक्षित सहयोग दें. जिन विद्यार्थियों को साधनों की कमी का अनुभव जान पड़े वे पड़ोसियों, परिचितों, पुस्तकालयों का भी सहारा ले सकते हैं. यदि विज्ञान के विषय नहीं सध पाते हैं तो कला के विषय ही
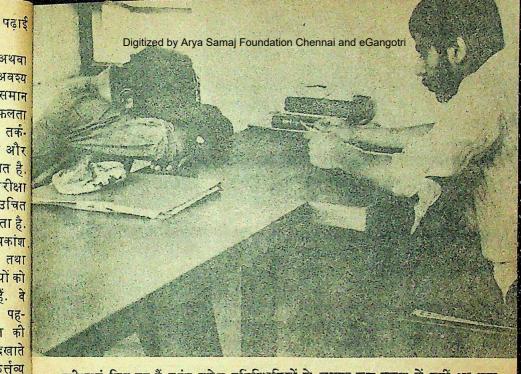
परीक्षाएं सिर पर हैं परंतु घरेलू परिस्थितियों के कारण कुछ समझ में नहीं आ रहा.

पढ़ें. वे तो अपनेआप भी पढ़ जा सकते हैं. यदि मन में सफलता की आकांक्षा हो तो आगे का मार्ग प्रशस्त होता जाएगा.

एक मोटर मेकैनिक को मैं जानती हूं जो अपने परिवार के छः सदस्यों का पेट भरता है. उस के पिता की मृत्यु हो चुकी है. उस ने आधीआधी रात तक लालटेन की रोशनी में पढ़ कर व प्राइवेट तरीके से परीक्षा दे कर प्रथम श्रेणी प्राप्त की है. समयसमय पर उस की सेवाएं लेने जो व्यक्ति आते थे, उन में से वह कुछ व्यक्तियों को खोज लेता था जो उस की कुछ सहायता कर सकें. उन का काम कुछ रियायत से करने पर उसे कितनी ही पुस्तकें तथा नोटिस मिल गए. अब उस के मालिक ने उस की आगे की शिक्षा का प्रबंध स्वयं किया है. किंतु उस ने अपना कार्य छोड़ा नहीं, सुबहशाम काम करता है. में दिन कालिज जाता है और रात्रि को पढ़ाई. अतएव ऐसे उदाहरणों से उन युवकों को प्रेरणा लेनी चाहिए जो उचित मार्गदर्शन की शिकायत करते हैं तथा भरपूर साधन तथा सुविधाएं होने पर भी अपनी असफलता के लिए औरों को दोषी ठहराते हैं और स्वयं की ओर ध्यान नही देते. अगले दिन पढ़ाया जाने वाला पाठ रात्रि को पढ़ कर तैयार करें तथा नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहें. अवसर पाते ही अध्यापक से कुछ पूछने के लिए तैयार रहें तो असफलता का प्रश्न नहीं उठता.

'सोर्स,' एवं परीक्षा पास करने के 'शार्टकटों' का प्रयोग तथा अनुचित साधन अपनाने की प्रवृत्ति : कुछ युवक-युवतियों को, जिन को आरम्भ से किसी सोर्स' के बल पर परीक्षाएं पास करने की आदत हो जाती है, नकल करने की आदत होती है, तथा साल भर जो आवारागर्दी करते हैं और परीक्षा के समय ही केवल परीक्षा पास करने के सहज रास्तों (कुंजियां, गैसपेपर, एटमबम) आदि का सहारा ले कर परीक्षा पास करते हैं, उन को या तो सफलता मिलती ही नहीं है या यदि मिलती भी है तो यह सफलता

असफलता से कम नहीं होती. क्योंकि इस प्रकार परीक्षा पास [illegible] 'तिकड़म' लेना होता है. दूसरे, इस से केवल डिग्री मिल जाती है, अपेक्षित ज्ञान नहीं होता. कितने ही ऐसे युवकयुवतियां एम. ए., बी. ए. में पढ़ने के बावजूद न सामान्य ज्ञान के प्रश्नों का सही उत्तर दे पाते हैं और न ही अंगरेजी में सही बोल या लिख सकते हैं. इस प्रकार मुफ्त में डिग्रियों की चाह करने वाले यदि बारबार एक ही कक्षा में फेल होते हैं तो उन्हें भले ही यह असफलता विशेष बात न लगे, लेकिन उन के अभिभावकों पर क्या बीतती है जो अनेक कष्ट उठा कर अपने बच्चों को शिक्षा की सुविधाएं जुटाते हैं, यह भी वे नहीं सोच पाते.

लक्ष्य से भटकना : ऐसे युवकयुवतियां भी कम नहीं जो शिक्षा काल में ही बड़ी-बड़ी डींग हांकते हैं, अनेक प्रतियोगिताओं में बैठ कर अपनी योग्यता का दिखावा करते हैं, जैसा कि संजय ने किया. उन के मातापिता भी अपने बच्चों की असाधारण योग्यता का बखान करते हैं, फिर भी जब वे प्रत्येक क्षेत्र में असफल होते हैं तो अपनी असफलता का दोष 'हार्ड मार्किंग', परीक्षकों का पक्षपात, शिक्षकों के मन में बदले की भावना आदि बातों पर मढ़ते हैं.

ऐसे अनेक विशेष 'व्यक्तित्व' मेरे परिचय में आए हैं जिन पर विचार कर के यही निर्णय समझ में आया कि जो वास्तव में कुछ नहीं जानते, वे ही सब से बढ़ कर जानने का दिखावा करते हैं. उन की 'सुपीरियारिटी कांप्लेक्स' उन की हीनता की भावना का परिणाम होती है. सच तो यह है कि शिक्षा काल में केवल यही कहना चाहिए कि 'मुझ में पर्याप्त आत्मविश्वास है', इस से अधिक कुछ नहीं कहना चाहिए. जो कुछ वास्तविकता होगी, परीक्षा परिणाम सामने लाएगा. निश्चय ही, जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं. बहुत बढ़बढ़ कर बातें करना, परिश्रम से दूर भागना और अपने लक्ष्य को निर्धारित करने में विश्वास न रखना भी अधिकतर असफलता की राह दिखाता है.

मातापिता अथवा किसी एक की व्यस्तता का लाभ उठाना : आजकल घरघर पतिपत्नी—दोनों ही जीविका कमाने के चक्कर में हैं. बड़े हो रहे बच्चों का भविष्य वे उन पर ही छोड़ कर आश्वस्त हो जाते हैं, किंतु ये संतानें मातापिता के विश्वास की रक्षा नहीं कर पातीं. बच्चे उन की व्यस्तता का अनुचित लाभ उठाते हैं. वे यह नहीं जानते कि इस प्रकार मातापिता को नहीं बल्कि स्वयं को ही धोखा दे रहे हैं. यदि दोनों ही कार्यक्षेत्र में नहीं हैं, केवल पिता ही अति व्यस्त रहते हैं, तो भी विशेषकर युवा बेटे अधिक उद्दंड हो जाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उन के पिता के पास उन की गतिविधियों पर दृष्टि रखने का समय नहीं है. मां को वे कुछ समझते नहीं.

इस प्रकार पिता का धन वे ऐशोआराम तथा गलत कार्यों में खर्च कर के परीक्षा में केवल औपचारिकता निभाने के लिए बैठ जाते हैं. असफलता का दुख उन्हें इसलिए नहीं होता क्योंकि उन्होंने परिश्रम तो किया नहीं था. साथ ही उन में यह विश्वास भी रहता है कि अगले वर्ष भी उन्हें उन के पिता एक और अवसर दे देंगे.

ऐसे विवेकहीन पुत्रों के प्रति पिता को बहुत कड़ा रुख अपनाना चाहिए. यदि वे समय और धन का मूल्य इस प्रकार चुकाते हैं तो उचित यही है कि मातापिता उन की ओर से कुछ उदासीन दृष्टिकोण अपना लें. एक समय आएगा जब वे स्वयं ही अपने किए पर पछताएंगे और उस बीते हुए समय के लिए रोएंगे जो अब कभी वापस नहीं मिलेगा.

अध्यापकों पर असफलता का दोष मढ़ना : भले ही यह सच हो कि कुछ अध्यापक अपने दायित्वों के प्रति सजग नहीं हैं, तो भी ऐसे भी छात्र हैं जो अपनी शिष्टता, सौजन्य तथा विनम्रता द्वारा शिक्षकों का मन आकर्षित कर लेते हैं और उन के ज्ञान का लाभ उठाते हैं. सभी शिक्षक भी इस श्रेणी में नहीं आते. ऐसे

भी शिक्षक हैं जो उन छात्रों को आवश्यक सहयोग देते हैं जो उन्हें गुरु का सम्मान देते हैं, जो वास्तव में पढ़ने वाले हैं. किंतु ये छात्र वे ही होते हैं जिन के होंठों से अध्यापकों के प्रति कोई बेहूदी बात नहीं निकलती, जो संस्था के अनुशासन का पूर्णतया पालन करते हैं. अन्यथा अधिकांश छात्र तो अध्यापकों के बेहूदे नाम रखते हैं, उन का उपहास करते हैं. फिर परीक्षा के समय यदि ये शिक्षक उन छात्रों को अंक देने में कृपणता बरतते हैं तो इस में शिक्षकों का नहीं, छात्रों का अपना दोष है.

सफलता

जीवन में सफलता पाना प्रतिभा और अवसर की अपेक्षा एकाग्रता और निरंतर प्रयास पर कहीं अधिक अवलंबित है.

—सी. डब्ल्यू. वेंडेल

✦

जिन्होंने जीवन में कभी सफलता नहीं पाई है, उन के लिए सफलता का मूल्यांकन मधुरतम होता है.

—इमली डिकंस

यह कहना कि छात्रों को शिक्षक सही ढंग से नहीं पढ़ाते, अध्यापकों पर अपनी असफलता का दोष मढ़ना है. यह समस्या एक की नहीं, उन बहुतों की भी है जो उन्हीं शिक्षकों के पढ़ाने से बढ़िया तरीके से पास भी हो जाते हैं. बारबार असफल होने वाले छात्र एक बार सफल होने वाले छात्रों से यदि कुछ सीखें तो शायद वे यह समझ जाएंगे कि सफलता के लिए अध्यापक का सहयोग तो बस एक माध्यम है, वास्तविक बात तो अपना परिश्रम, अध्यवसाय तथा मनोबल है.

अवकाश के समय का दुरुपयोग : खाली घंटे, खाली दिन तथा खाली समय में युवक आवारागर्दी करते देखे जाते हैं. पढ़ने वाले युवक ऐसा समय लाइब्रेरी में बिताते हैं. घर से बाहर जा कर होस्टल में रह कर कुछ विद्यार्थी वह स्वप्न भुला देते हैं जिसे घर से ले कर चले थे और गलत आदतों, गलत संगति में पड़ कर अपने को बिगाड़ लेते हैं.

कई मेधावी छात्र होस्टल में जा कर बिगड़े हैं. उन में अधिकांश ऐसे ही हैं जो पीरियड छोड़ कर सिनेमा जाते हैं, चरस, गांजा, एल. एस. डी. की गोलियों के चक्कर में पड़ कर न स्वयं पढ़ते हैं, न दूसरों को पढ़ने देते हैं.

अवकाश के दिनों में तो कुछ युवक पुस्तकें न छूने की जैसे सौगंध ही ले लेते हैं. फिर, ये ही लोग कक्षा में जा कर पढ़ाई नहीं करते और पढ़ाई के समय फर्श पर चप्पलें घिसते हैं, भेड़बिल्ली की बोली बोल कर अध्यापक को कक्षा छोड़ने के लिए विवश कर देते हैं. ऐसे बिगड़े हुए छात्र अपने को स्वयं ही संभाल सकते हैं अन्यथा उन की असफलता उन्हें बारबार गले लगाएगी. भले ही कभी किसी 'सोर्स' के बल पर परीक्षा पास कर लें, ज्ञान के क्षेत्र में वे सदा पीछे रहेंगे. ये दुर्गुण उन के किसी काम नहीं आएंगे, केवल जीवन बिगाड़ देंगे.

अतएव उपर्युक्त कारणों में से कोई कारण हो या अन्य कोई भी कारण हो, बारबार फेल होने वाले छात्र अपनी कमियों को स्वयं पहचानें तथा यह न भूलें कि जीवन का यही समय ऐसा है जब उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए नींव खोदी जाती है. यदि ये सुनहरे वर्ष निकल गए तो आगे उन का कोई साथ नहीं देगा. अपना सब से बड़ा साथी यही समय है, जो अनेक अवसर दे कर सफलता की राह दिखाने का काम करता है. समय की जटिलताएं देखते हुए हर क्षेत्र में प्रतियोगियों की भरमार है. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण युवक जहां दरदर भटकते हों वहां एक ही कक्षा में कईकई वर्ष यात्रा करने वाले छात्र क्या अपना भविष्य अपने हाथों नहीं चौपट कर रहे हैं? ●

स्वर्णिम वाक्य

● "हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहना मनुष्य के देहधर्म के विरुद्ध है. मनुष्य का मन पनचक्की के समान है. जब उस में गेहूं डालते जाओगे तब वह गेहूं को पीस कर आटा बना देगी. परंतु जब उस में गेहूं न डालोगे तब वह स्वयं अपनेआप को पीस कर क्षीण बना डालेगी."

—माधवराव सप्रे : योग्यता और व्यवसाय (प्रेषिका : इंदुकुमारी, त्रिपुरा)

● "कहा जाता है कि जीवन पथ पर चलना उतना ही दुष्कर है जितना तलवार की धार पर चलना. हमें विचार संयम की आवश्यकता है. हम को अपने विरोधियों को विनष्ट करने की बात नहीं सोचनी चाहिए. केवल उन की अभिवृत्तियों और उन के व्यवहारों को प्रभावित करने की चेष्टा करनी चाहिए. जो लोग हम से मतभेद रखते हैं, उन से अपनी बात मनवाने की चेष्टा हमें दो ही प्रकार से करनी चाहिए. एक, मिष्टभाषण से, दूसरे, अपने सहानुभूतिपूर्ण आचरण से."

—*डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन : नवयुवकों से (प्रेषक: निर्मल वर्मा, मोदीनगर)

● "गुलाम और आजाद में कुछ न कुछ अंतर अवश्य है. गुलाम सदा अपने मालिक का हित सोचता रहता है ओर जूतों के जोर से सोचता है, जब कि आजाद राष्ट्र का हित सोचता है और अपनी पूरी श्रद्धा के साथ सोचता है. गुलाम का स्वर्ग आकाश में रहता है और आजाद का स्वर्ग उस का अपना देश होता है—जिस मिट्टी में उस की काया बनी और जिस मिट्टी की गोद में वह अंतिम सांस लेगा."

—मोहनलाल महतो वियोगी : अजातशत्रु (प्रेषक : महेंद्रकुमार, बंबई)

● "कठिनाई यह है कि हम एक ऐसे कृत्रिम जीवन के अभ्यस्त हो गए हैं कि सीधी बात सहज भाव से कह या सुन ही नहीं सकते. यही कारण है कि 'सहज प्रेम' हमारे समझने में बड़ा कठिन हो जाता है. हम सत्य कहने में हिचकते हैं, न्याय को न्याय कहने के लिए तर्क और युक्ति की अपेक्षा रखते हैं. सहज प्रेम बहुत सहज है पर उस का पालन बहुत कठिन है. सीधी रेखा खींचना रेखा गणित का सब से कठिन कार्य है." **—हजारीप्रसाद द्विवेदी : मृत्युंजय रवींद्र (प्रेषिका : मंजुलता पांडेय, इलाहाबाद)**

● "स्नेह एक ऐसा चिकना और परिव्यापक भाव है कि उस में व्यक्तित्व नहीं रहते. स्नेही अपने स्नेहपात्र को कभी याद नहीं करता, क्योंकि वह उसे कभी भूलता नहीं, वह उस से इतना अभ्यस्त हो जाता है कि उसे कभी ध्यान नहीं होता कि इसे भी देखूं, इसे देखने के लिए एक अलग, एक विशिष्ट प्रयत्न करूं. जैसे एक भली भांति प्रकाशित दृश्य को देख कर हम प्रकाश को अलग नहीं देखते, किंतु एक अंधियारे दृश्य को देख कर हठात पूछ बैठते हैं कि इस का कौन सा अंश प्रकाशमान है.

—अज्ञेय : शेखर : एक जीवनी (प्रथम भाग) (प्रेषिका : देवेंद्री अरोरा, बंबई)

● "फैल जाओ इस देश के कोनेकोने में और फूंक डालो असत्य की काली चादर! बरस पड़ो कणकण में, इस तरह कि धरती पर से पीड़ा का कलंक धुल जाए. ऋषि, ब्राह्मण, परोपकारी वे नहीं जो साधु के वस्त्र मात्र धारण करते हैं. धरती ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है. अब तुम धरती को सच्चा मनुष्य दो, सुखी मनुष्य दो, यही हमारा धर्म और यही हमारा कर्त्तव्य है."

—श्री रघुवीरशरण 'मित्र' : आग और पानी (प्रेषक : गौतमकुमार कावड़िया, उदयपुर) ●

*पुरस्कृत स्वर्णिम वाक्य

एक जो हो तुम...

सब कुछ तो है
पर हो नहीं तुम, बस.
छू गए फिर आज
वही स्नेह भरे बादल.

भर गया आंगन
यादों की फुहारों से,
पर है सूनी नाव सी यह आंख
धुंधलके में बस तिर रही है.

पुलक से हिल उठा है
चीड़ बन,
बाहें हिलाते झूमते ये दरख्त
कहीं से पूछ आए हैं.
मौन हैं क्यों
कल तक के रक्तिम ये अधर

दौड़ कर लो लौट आया
मग मृगशावक.
अपने ही कोटर में
समय की बेरुखी पा कर.

—नरेंद्र चतुर्वेदी

खानदान

परवीन असमंजस में पड़ गई. उस के माथे पर पसीने की बड़ीबड़ी बूंदें झलक आईं. उस की समझ में नहीं आता था कि किस प्रकार आरंभ करे. परदे के उस ओर मास्टर कलीम कभी से बैठा इंतजार कर रहा था. वह 25 वर्ष का सुंदर नौजवान था. वह एक महीने से ट्यूशन पर आ रहा था. परवीन का खानदानी रिवाज था कि मांबाप अथवा पति की आज्ञा बिना किसी पराए पुरुष के सामने नहीं आना. यही कारण था कि कमरे के बीच में परदा पड़ा था. परदे के उस ओर मास्टर बैठता और दूसरी ओर परवीन तथा उस की दोनों छोटी बहनें रेहाना और मुश्फिका बैठतीं.

जब से परवीन ने कलीम को देखा था, उस के हृदय में तूफान मच रहा था. भला हो अल्ताफ का, जो हीरा ढूंढ लाया था. रेहाना और मुश्फिका आठवीं जमात में पढ़ती थीं. कलीम की उन्हीं के लिए ट्यूशन रखी गई थी. परंतु अल्ताफ के आग्रह पर वह भी साथ में बैठने लगी थी. वह कलीम को चुपकेचुपके परदा उठा कर देखती रहती, फिर भी उस का दिल नहीं भरता. तीनों बहनें हर रोज साथ-साथ पढ़ने बैठती थीं परंतु आज वह अकेली थी.

अंत में हिचकिचाते हुए उस ने कहा, "क्या पढ़ाइएगा, मास्टर साहब?"

कलीम, जो अभी तक अपने ही विचारों में खोया हुआ था, आवाज सुनते ही सचेत हो गया, "क्यों, क्या आप अपना सबक भी भूल गईं?"

"सबक खूब याद करती हूं लेकिन कमबख्त याद ही नहीं रहता."

कलीम परवीन का रोमांटिक मूड देख कर जरा चौंका, "आज खूब खुश नजर आती हैं आप?"

"देखिए न, आप की दोनों शागिर्द तो अनुपस्थित हैं आज," उस ने चहकते हुए कहा.

"क्यों, क्या हुआ उन्हें?"

"बीमार हैं."

"दोनों एक साथ? भई, सबक याद न किया हो तो कोई बात नहीं. पढ़ाई की हानि तो नहीं होनी चाहिए?"

"सचमुच बीमार हैं. बिस्तर पर पड़ी हैं."

"मुझे अफसोस है. अच्छा, लाइए, आप ने सबक याद किया है?"

परदा जरा बीच में से हटा और प्रति दिन की तरह नाजुक उंगलियों ने एक कापी उस की मेज पर रख दी. हर रोज इसी तरह कापियां रखी जाती थीं. कलीम हर एक की उंगलियां पहचान लेता था. आज कापी बंद कर के दी गई थी. कलीम

परवीन को अपने पति अल्ताफ में ऐसी कौन सी कमी नजर आई कि वह उसे छोड़ कलीम की ओर खिचती चली गई?

की नाक

कापी के पन्ने पलटने लगा. एक पन्ने पर लिखा था, ''मास्टर, जब से तुम्हें देखा है...'' कलीम जरा मुसकरा दिया. अंतिम पेज बिलकुल कोरा था. उस के बीच में सुंदर चित्रकारी में लिखा था : "कोरा कागज है जीवन मेरा.''

कलीम ठहरा मास्टर. मास्टर का शरीर ही आदर्शों के आवरण से लिपटा होता है. वह क्रोधावेश में अपनी कुरसी से उठ खड़ा हुआ, ''आप की भी तबीयत खराब मालूम होती है. छुट्टी ही रहने देते हैं आज.''

परवीन परदा खिसका कर उस के सामने आ खड़ी हुई. उस ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, ''मास्टर साहब, माफ कीजिए. मुझ से गलती हुई. आप का थोड़ी देर का संपर्क मेरे जीवन की सुनहरी घड़ी होता है. क्या आप...'' कलीम को एकटक अपनी ओर देखते हुए वह सकुचा गई.

कलीम जब से ट्यूशन पर लगा था, उसे यहां आना अच्छा लगता था. वह समझता था, जैसे वह परिस्तान में आ गया हो. यहां से जाने को उस का दिल नहीं चाहता था लेकिन मजबूरी होती थी. एक घंटे की ट्यूशन होते हुए भी वह कभी-कभी डेढ़डेढ़ घंटा बैठा रहता. अंत में उसे जाना ही पड़ता. यों तो उस ने परवीन की कई बार छुटपुट झलक देखी थी परंतु आज उसे अपने सामने देख कर
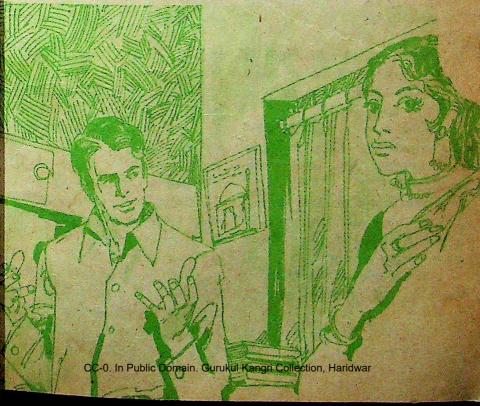
वह दंग रह गया. गौर वर्ण शरीर पर सब्ज रंग के आधुनिक फैशन के वस्त्र. शरीर तो जैसे कुदरत ने सांचे में ढाल कर बनाया हो. वह चकित नेत्रों से अपलक उसे देखता ही रह गया. झील जैसे उस के नेत्र और गुलाब की पंखुड़ियों जैसे उस के होंठ एक नवयुवक को मंत्रमुग्ध करने के लिए काफी थे. उस की अवस्था केवल 22 वर्ष की थी.

परवीन ने उसे शांत देख कर भर्राई हुई आवाज में कहा, ''मांबाप, भाईबहन, किसी को जिस पर तरस नहीं आता, पिंजरे में कैद पंक्षी की तरह जिस की आत्मा तड़प रही हो, यदि वह कुछ क्षणों के लिए खुशी की तलाश में ऐसी हरकत कर बैठी हो तो क्या आप क्षमा नहीं करेंगे?''

''लेकिन आप शादीशुदा हैं,'' कलीम ने उस के चेहरे से आंखें हटाते हुए कहा.

तीर की तरह उस का एकएक शब्द परवीन के कलेजे को छलनी कर रहा था. इन शब्दों में कितना तिरस्कार था उस के प्रति. उस के नेत्रों से अश्रु काजल छीन कर कपोल प्रदेश पर पतली रेखाएं अंकित कर रहे थे. कलीम को ऐसा लगा, जैसे ये रेखाएं तपे लोहे की सलाखें हों.

परवीन कांपती हुई बोली, ''यही तो एक धब्बा है इस कोरे कागज पर...दुर्भाग्य का एक धब्बा. क्या धब्बा इबारत हो सकता है?''

कलीम का हृदय द्रवित हो गया. उस ने हमदर्दी से कहा, ''पहले आप अपनी जगह बैठ जाइए, फिर इतमीनान से बातें कीजिए.''

''दिन भर की घुटन भरी दिनचर्या के पश्चात जब मैं आप के साथ यहां बैठती हूं तो राहत महसूस करती हूं,'' उस ने कुरसी पर बैठते हुए कहा.

''आप के पति क्या काम करते हैं?'' कलीम ने अपनी जगह बैठते हुए प्रश्न किया.

''मेरा विवाह हो चुका है, यह तो आप जानते हैं परंतु इस के आगे...'' वह एकदम चुप हो गई.

''इतना जानता हूं कि आप के पति अल्ताफ सुंदर हैं, जवान हैं, बलिष्ठ हैं, उन में एक नवयुवक के सब गुण विद्यमान हैं.''

''यह सच है. मेरा विवाह हुए एक वर्ष हुआ है. एक खानदानी बेटी के लिए एक खानदानी लड़का ही तो चाहिए. अल्ताफ मेरे चाचा का लड़का है. खून से खून मिलना चाहिए, हड्डी से हड्डी मिलनी चाहिए, इसी सिद्धांत पर मेरा विवाह हुआ है. मेरी दोनों बहनों के लिए यह बंधन नहीं है...''

''क्यों?'' कलीम ने उसे बीच में टोक कर पूछा.

''इसलिए कि वे मेरी छोटी मां की संतान हैं...छोटी मां, जो किसी समय हमारे यहां नौकरानी थी.''

''ठीक है, खानदानी के लिए खानदान की कैद. आप तो खुशनसीब हैं कि खानदानी लड़का मिला और हर प्रकार से योग्य.''

''माफ कीजिए. बाहरी दिखावा क्या संतोष का कारण हो सकता है? पुरुष में मर्दानगी न हो तो? मेरे संपर्क में आने वाला ही समझ सकेगा कि मैं पाक हूं.''

''मुझे अफसोस है. मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूं?'' कलीम ने बेरुखी से पूछा.

''मैं खुद नहीं जानती. बस, आप की हमदर्दी मेरे साथ रहे; इतना ही काफी है. जजबात में बह कर मैं न मालूम क्या कह बैठी. मुझे माफ कर दीजिए,'' कह कर परवीन उठी और परदे के उस ओर गहरे अंधकार में अदृश्य हो गई.

भोपाल के बड़े लोगों—खानदानी लोगों—के घरों में दोदो, तीनतीन पत्नियां हैं. ये लोग अपनी वासना तृप्ति के लिए हसीनों को घरों में डालने में ही फख्र समझते हैं. इन की अपनी संतान घरों में कैद, पक्षी की तरह तड़पती है. आज भी बहुत से घरों में ऐसी लड़कियां मौजूद हैं जो 30-35 वर्ष की हो कर भी कुंआरी बैठी हैं. जब कभी उन की शादी की मांग

अल्ताफ ने अपनी बीवी परवीन की खुशियों के लिए अपनी खुशियों का गला क्यों घोंट दिया?

आती तो कभी मांबाप लड़का पसंद नहीं करते, कभी लड़का खानदानी नहीं होता तो कभी लड़के के चालचलन अच्छे नहीं होते.

बात किसी हद तक ठीक भी है. कोई भी खानदानी युवक अपने को नवाबजादे या रईसजादे से कम नहीं समझता. जब थोड़ा जवान हुआ कि कोई न कोई लत लग गई. यहां के 'बाजिए' बहुत प्रसिद्ध हैं : कबूतरबाजी, बटेरबाजी, महफिलबाजी. खानदान की दास्तान ही निराली है. खानदानी युवकों के तो यही शगल हैं.

कलीम के अपने लिए भी उस का खुद का खानदान कुछ ऐसा ही था. आज से पांच वर्ष पहले वह घर से भाग निकला था, मां को साथ ले कर वह इधरउधर भटकता फिरा था. मां और बेटे केवल दो-दो कपड़े पहने घर से बाहर निकल आए थे. जेब में केवल दो सौ रुपए थे और वही उन का सहारा था.

वे भोपाल आ कर रुके और उन्होंने एक मकान किराए पर ले लिया. कलीम नौकरी की तलाश में मारामारा फिरता रहा लेकिन कोई नौकरी न मिली. अंत में उस ने किसी प्रकार ट्यूशनें करना शुरू कर दिया.

कलीम के पिता खानदानी व्यक्ति थे. हर रात को शराब पीना उन का नियम बन गया था. कलीम की मां इस से बड़ी परेशान थीं और अपने पति से दूर-दूर रहने लगी थीं. एक दिन कलीम के पिता ने अपनी हवस मिटाने के लिए दूसरा विवाह कर लिया. कलीम की छोटी मां उस से अवस्था में दो वर्ष ही बड़ी थी. बाल्यावस्था में दोनों साथसाथ खेलते थे.

एक दिन रात को शराब के नशे में कलीम के पिता ने धक्के दे कर उस की मां को घर से बाहर निकाल दिया. कलीम यह अपमान सहन न कर सका और मां को ले कर घर से निकल गया.

कलीम ने स्त्री जाति का दुख देखा था. उसे ऐसे खानदानी बनने से घृणा थी जहां पुरुष स्त्री पर नृशंसता का व्यवहार करता हो. फिर समाज की क्या मजाल जो उस पर उंगली भी उठा सके.

कलीम ने परवीन की मदद करने की ठान ली.

कलीम ट्यूशन पढ़ाने आता तो परवीन उसे बारबार परदा उठा कर देखती रहती. जब भी दोनों की आंखें चार होतीं, दोनों मुसकरा देते. कुछ दिनों तक यह क्रम चलता रहा. आहिस्ता-आहिस्ता प्रेम का रंग चढ़ने लगा.

कलीम अब बेचैन रहने लगा था. वह परवीन से बातें करने का मौका ढूंढ़ता रहता. कई दिनों से उसे उस से बातें करने का अवसर नहीं मिला था.

एक दिन परवीन ने अपनी दोनों बहनों को कहीं भेज दिया. अब वे दोनों कमरे में अकेले थे. दोनों के हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहे थे. कलीम संयम रखना चाहता था. वह ऐसी कोई हरकत नहीं होने देना चाहता था, जिस से उस के चरित्र पर दाग लगे.

थोड़ी देर तक दोनों ओर से खामोशी रही. अंत में कलीम ने कहा, "क्यों, कोरे कागज, आप का मिजाज तो ठीक है न?"

"रात मजे में गुजरती है, आप की यादों के साथ."

"ऐसा क्या देखा है आप ने मुझ में?" कलीम ने अपनी कुरसी उस के पास खिसकाते हुए पूछा.

"इनसान की शराफत, उस का भोलापन. आप मुझे बेहद अच्छे लगते हैं," परवीन ने अपनी गरदन झुका ली. उस के गालों पर सुर्खी दौड़ आई.

कलीम ने उस का एक हाथ अपने

हाथ में ले कर कहा, "यदि यह हाथ मैं अपने हाथ में थाम लूं?"

"अहोभाग्य है मेरा," उस की नसनस में एक बिजली दौड़ गई.

"लेकिन मेरा खानदान आप के आड़े आएगा."

"खानदान की धज्जियां तो मेरे वालिद ने पहले, बहुत पहले उड़ा कर रख दी हैं."

"फिर भी उन की तरफ से एतराज होगा."

"यदि आप का सहारा मिले तो मैं डट कर मुकाबला करूंगी," उस की आंखों में अलौकिक प्रकाश उतर आया था.

"यदि फिर भी न माने?"

"तो मैं चली आऊंगी अपना संसार बसाने."

"अच्छी तरह समझ लीजिए. मैं कायरता का कट्टर विरोधी हूं. लेकिन आप के पति का क्या होगा?"

उस ने हाथ खींच लिया, जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो. उस का शरीर क्रोध से कांपने लगा. उस ने तैश में आ कर कहा, "वह नामर्द क्या कर सकता है मेरा? उस में मेरा विरोध करने की हिम्मत ही नहीं हो सकती."

"फिर भी तलाक लेना आसान नहीं होता."

"तलाक? उस से तलाक तो बाएं हाथ का खेल है."

थोड़ी देर तक कलीम उस का क्रोधित रूप देखता रहा. विचारों का झंझावात उस के मस्तिष्क को झकझोरने लगा. कहीं ऐसा न हो कि वह बेवकूफी में कोई ऐसा कदम उठाए जो तमाशा बन कर रह जाए. तुरंत उसे विचार आया कि इस चक्कर से दूर रहना ही अच्छा है. अभी तो वह कुंआरा है, उसे कई अच्छी लड़कियां मिल सकती हैं. परंतु एक दूसरे विचार ने पहले को धर दबोचा. उसे इस तड़पते असहाय पंछी की मदद करनी चाहिए. कहीं यह कली बहार देखे बिना ही न मुरझा जाए.

"स्त्री और पुरुष का प्रेम एक शारी- रिक भूख है. जब तक यह भूख मिटती रहती है, प्रेम अमर रहता है. यदि यह प्रेम आत्मिक होता तो तुच्छ बातों को ले कर कभी झगड़े न हुआ करते, लोग रू के आशिक न होते, संसार के लाखों युगल तलाक पर आमादा न होते और अपने घरों को फूंक कर तमाशा न देखते," यह परवीन की क्षुधा से तड़पती आत्मा की आवाज थी. शायद यह उस के वैवाहि जीवन की संक्षिप्त झांकी थी.

कलीम यह सुन कर दंग रह गया फिर भी उस ने समझाने के भाव से कहा "आवेश रूपी बाढ़ तलाक को जन्म देती है और क्षणिक होती है. यदि ऐसे क्ष में इसे संभाल लिया जाए तो तलाक की नौबत ही न आए."

"इसी लिए तो कहती हूं कि प्रेम क आत्मा से संबंध होता तो तलाक रू अंकुर कभी न फूटता."

"यह शारीरिक भूख तो शनैः शनै अवस्था के साथ कम हो कर अंत में बु जाती है. फिर भी कौन सा बंधन है पतिपत्नी को बांधे रखता है?" कली ने प्रेम और वासना के अंतर को सम झाने के लिए प्रश्न किया.

परवीन ने अपने को संभाला, "वह स्नेह का बंधन—अपनी संतान बंधन."

"तो आप किस बंधन से बंध चाहती हैं मेरे साथ?"

"मेरे विचार स्वयं स्पष्ट हैं. प पत्नी का बंधन जीवन भर का बंधन है पहले शरीर का और फिर संतान यदि पहले ही पग पर सफलता न मि तो बंधन टूट ही जाता है. यही मेरी व मान स्थिति है और इसी लिए मैं स्व आप की ओर खिंची चली आई हूं."

"लेकिन मुझे इस के लिए सोचने अवसर तो दें," कलीम ने चिंतित से कहा.

"खूब सोचसमझ लें. यह जीवन सौदा है. खूब महंगा और अनमोल मास्टर साहब, यह किताबी ज्ञान नह

जब अल्ताफ ने परवीन को तलाक दे कर मास्टर कलीम से उस का दूसरा निकाह कराने का जिक्र छेड़ा तो नवाब साहब का चेहरा क्रोध से लाल हो उठा.

कि आप पढ़ाते फिरें. प्रेम का सबक तो मैं ही पढ़ा सकती हूं," उस ने कलीम का हाथ थाम लिया और वह जरा मुसकरा दी.

"मान गए, उस्ताद. लेकिन यह तो बताइए कि इस इल्म में आप का मास्टर कौन है?" कलीम ने गदगद भाव से उस की आंखों में झांकते हुए पूछा.

"ठोकर और जजबात. प्रेम की पाठशाला में उस्ताद और शागिर्द अलगअलग नहीं होते. इनसानी फितरत सब रास्ते निकाल लेती है."

"ठीक है. आप की तरह स्पष्ट कहने वाले बहुत ही कम मिलेंगे. प्रेम का ढोंग करने वाले लगभग सभी होते हैं. मैं तैयार हूं. परंतु अपने मांबाप की सम्मति भी आवश्यक है."

"ठीक है. परंतु मैं पूछती हूं कि क्या मांबाप का किया हुआ सब कार्म उचित होता है? यदि ऐसा होता तो आज मेरी यह स्थिति न होती. मास्टर साहब, निकाह में 'हां' कहने मांबाप नहीं आते, वह तो दूल्हादुलहन के इकरार पर ही होती है."

कलीम तड़प उठा. कितने विद्रोही विचार हैं परवीन के.

"मगर यह रिवाजों की दुनिया?" कलीम ने झिझकते हुए कहा.

"खत्म कर दो इस को."

"अच्छा तो, बस. मियांबीवी राजी तो क्या करेगा काजी," कलीम अपने जजबात पर अधिक देर तक काबू न रख सका. वह उठा और उस ने परवीन को अंक में भर लिया. परवीन ने अपना सिर कलीम की छाती में छिपा लिया. आनंद के उन क्षणों में दोनों अपनेआप को भूल गए थे.

अचानक कलीम ने परवीन को दूर

कर के उस के दोनों कंधों को मजबूती से पकड़ते हुए कहा, "मगर तलाक? तलाक के बगैर मैं आप को स्पर्श नहीं कर सकता, आप पर अपना हक नहीं समझता."

"वह भी हो जाएगा. आप इतमीनान रखिए. अब आप के बगैर एक मिनट भी रहना मेरे लिए दूभर है," परवीन ने कलीम के गले में अपनी बांहें डालते हुए कहा, "क्या आप मेरे वालिद साहब के पास आ सकते हैं?"

"यह कैसे हो सकता है? अभी तो आप परतंत्र हैं. आप के पैरों में अभी बेड़ियां पड़ी हैं. अभी तो आप के वालिद साहब का भी आप पर हक नहीं है. फिर यह मूर्खता मैं कैसे कर सकता हूं? पहले आप तलाक को निबटाइए. तब सब कुछ हो सकता है."

"अच्छा, तो आप देखेंगे कि कल आप जब यहां ट्यूशन पर आएंगे, तो उस से पहले मैं सब कुछ निबटा चुकी हूंगी," उस का चेहरा तमतमा गया था.

दूसरे दिन प्रातःकाल अल्ताफ परवीन को साथ ले कर मिर्जा साहब के दरबार में हाजिर हो गए. मिर्जा साहब चायनाश्ते से फारिग हो कर मसहरी पर बैठे पान की गिलौरियां चबा रहे थे. वह दोनों को अपने सामने नीची गरदन किए खड़ा देख कर चौंके.

"हां, बोलिए. कैसे तकलीफ की आप ने?" उन्होंने भौंहें चढ़ा कर पूछा.

"देखिए न, अब्बा हुजूर..." अल्ताफ बोलतेबोलते जरा हिचकिचाए.

"हां, बोलिए बरखुरदार. घबरा क्यों गए?"

"अब्बा हुजूर, मैं...मैं तलाक देना चाहता हूं," रूमाल से अपने चेहरे का पसीना पोंछते हुए अल्ताफ ने कहा.

"क्या? क्या कहा तुम ने? तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है?"

"मैं होश में हूं, अब्बा हुजूर."

"ऐसी क्या बुराई देखी तुम ने मेरी बेटी में? क्या तुम्हें खानेपीने की कोई तकलीफ है? पैसे के लिए तुम खुद दुकान के मालिक हो. क्या तुम्हें अपने अब्बाअम्मा की याद आ रही है?"

"मुझे कोई तकलीफ नहीं है. तकलीफ है परवीन को."

"क्या कहा, परवीन को? मांबाप का साया उस पर है. भाईबहन उस के साथ रहते हैं. और तुम हमेशा उस के साथ हो," फिर उन्होंने परवीन की तरफ देख कर पूछा, "क्या तकलीफ है तुम्हें?"

अल्ताफ अपनी पेशानी पर झलकती बूंदों को साफ करते हुए बोला, "आप को याद होगा, अब्बा हुजूर कि शादी के पहले मैं ने आप से और मियां हुजूर से अर्ज किया था कि मैं शादी नहीं करना चाहता लेकिन आप लोग नहीं माने. मैं ने भी सोचा, शायद जजबात की कमी के कारण यह सब कुछ होगा और शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा. मैं ने कई डाक्टरों और हकीमों से बहुत इलाज कराया मगर खुदा वह बख्शीश मुझे न लौटा सका जो हर नौजवान मर्द की मिल्कियत है और जिस पर हर बीवी को नाज होता है. आफरीं है परवीन, कि इस ने आज तक सब्र किया, उफ तक नहीं की. परंतु मेरे दिल का बोझ बढ़ता गया जो अब असह्य हो गया है. मुझे इस फर्ज से मुक्ति चाहिए."

मिर्जा साहब खामोश सुनते रहे. उन की आंखों के सामने अंधेरा सा छाने लगा. उन्होंने भरे हुए गले से कहा, "कमबख्तो, शादी हुए एक साल हो गया, तुम्हें अब होश आया. काश, तुम भी अपने मांबाप के साथ पाकिस्तान चले गए होते तो मुझे यह दिन न देखने पड़ते."

"अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, अब्बा हुजूर. जो बहार मैं परवीन के जीवन में न ला सका, उस के लिए हमें खुशी से इस का हाथ दूसरे के हाथ में दे देना चाहिए."

अब मिर्जा साहब क्रोध में आ कर बोले, "तुम्हारी यह मजाल, तुम इतना आगे बढ़ सकते हो, यह हमारे गुमान में भी नहीं था. जरा मैं भी सुनूं, किसे तजवीज किया है तुम ने?"

"कलीम," अल्ताफ के मुंह से नाम निकलते ही मिर्जा साहब जरा चौंके. अल्ताफ ने जब उन के चेहरे का रंग बदलते देखा तो कहा, "अपने यहां जो मास्टर साहब रेहाना और मुश्फिका को पढ़ाने आते हैं, वह बहुत ही नेक और हर तरह लायक हैं. आप भी तो उन की तारीफ करते नहीं थकते."

मिर्जा साहब ने माथा ठोक लिया और होंठों ही होंठों में बड़बड़ाए, "परवीन के लिए मेरा ख्वाब..." फिर नजर उठा कर उन्होंने दोनों को घूर कर देखा और क्रोध में आ कर बोले, "मास्टर, वह रास्ते का भिखारी, जिस की न जात का ठिकाना, न खानदान का. उस के हाथ में परवीन का हाथ...नामुमकिन."

"अब्बा जान," परवीन अब खामोश न रह सकी, "आप ने ही तो छोटी अम्मी के साथ निकाह कर के नामुमकिन को मुमकिन बना दिया है. क्या मर्दों को सब जायज है और औरतों को..."

उस के शब्द मिर्जा साहब को तीर की तरह लगे, "बदतमीज, बेहया, मैं तेरी जबान खींच लूंगा. बड़ों का अदब भी नहीं रहा तुम में. तुम लोग मेरी नाक काटने पर तुले हुए हो. दूर हो जाओ मेरी नजरों से. निकल जाओ यहां से."

"शांत हो जाइए, अब्बा जान," परवीन ने हिचकियां भरते हुए कहा, "हम जा रहे हैं. आप अपनी नाक सलामत रखिए." फिर उस ने अल्ताफ की तरफ

दरियाए हुस्न

हाथों को नाच में
जो मुकर्रर उठाइए.
दरियाए हुस्न आप का
बढ़ जाए चार हाथ.
—तासीर

मुड़ कर कहा, "आप तांगा ले आइए. तब तक मैं कपड़े बदल लेती हूं."

जब दोनों जाने लगे तो मिर्जा साहब ने चिल्ला कर कहा, "याद रखो, अब कभी इस दहलीज पर कदम मत रखना."

थोड़ी ही देर बाद एक तांगा कलीम के घर के सामने रुका. अल्ताफ उस में से उतर कर घर में घुस गया. कलीम उसे देखते ही चौंका, "आप?"

"हां, मैं. मैं आप को लेने आया हूं."

"खैरियत तो है? कहां जाना है?"

"अदालत में. कलीम, आप बहुत खुशनसीब हैं जो आप को परवीन जैसी बीवी मिल रही है. वह पढ़ीलिखी है, इंटर पास है. खूबसूरत है और बुद्धिमान भी."

"लेकिन वह तो आठवीं जमात..."

"हां, हां. मैं समझता हूं. पहले आप कपड़े बदलें. बाहर परवीन आप का इंतजार कर रही है. मैं ने ही उस से कहा था कि वह भी दोनों बहनों के साथ जा कर बैठ जाया करे. मैं ने ही मिर्जा साहब को आप के पास ट्यूशन के लिए भेजा था. ट्यूशन की फीस भी मैं ही चुकाता हूं. अब जरा जल्दी कीजिए, जनाब."

"परंतु हमें करना क्या है? यह तो..."

"हम अदालत में जा रहे हैं. मैं तलाक दूंगा और आप के गले में वरमाला पड़ जाएगी. मैं भी आज से इसी घर में अपने बहनबहनोई के साथ रहूंगा. आज से आप मेरे व्यापार में हिस्सेदार हैं. सब काम आज ही अदालत में पूरा करना है. जरा जल्दी कीजिए."

कलीम यह सब कुछ सुन कर दंग रह गया. उस की अक्ल ने उस का साथ देना छोड़ दिया था. मशीन की तरह वह तैयार हुआ और तांगे में जा कर बैठ गया.

दो घंटों के बाद जब वे लौटे तो बहुत खुश थे. अब परदा खुल गया था. स्वतंत्रता के पुजारी परदे की आड़ से निकल कर खुले आकाश में सांस ले रहे थे. ●

चित्रावली

● बाजीगरी का कमाल! जवाब नहीं इन का भी. पृष्ठभूमि मकानों के छत व गुंबज दिख रहे हैं न, उस से भी थोड़ी अधि ऊंचाई पर टिके हुए हैं [illegible] बाजीगर हेनरी रिचैटिम हेनरी रिचैटिम अपने आश्चर्यजनक करतबों के प्रदर्शन के लि प्रसिद्ध हैं. चित्र में रिचैटिम इंटरनेशनल प्रेस सेंटर (लंदन) 240 फुट ऊंची छत पर एक पर एक कुरसी रख कर दम साधे बैठे हैं. इंच भर संतुलन बिगड़ते ही वह मौत बांहों में समा सकते हैं. फ्रांस में 'मौत का बाजीगर' व 'सन हेनरी' के नाम से विख्यात रिचैटिम का अद्‌भुत प्रद लंदनवासियों के लिए एक नया व रोमांचक अनुभव था. आ के लिए भी है न?

पृष्ठभूमि
ोड़ी अधि
रिचैडि
न के लि
(लंदन)
कर
ह मौत
व 'सन
भुत प्रद
था. श
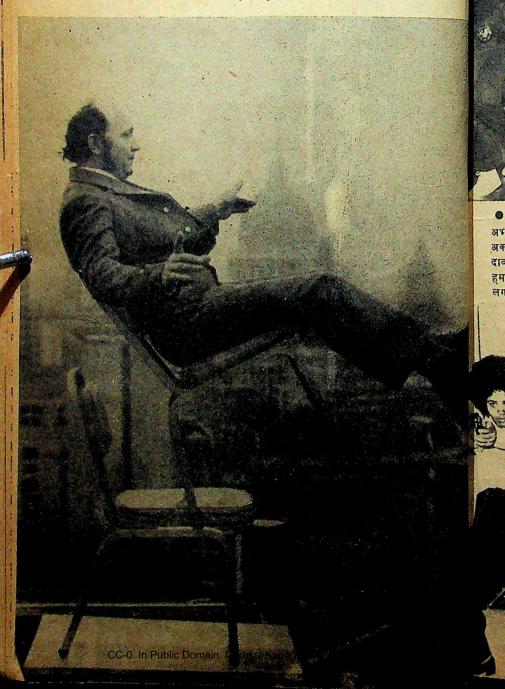
● पुरुषों से पीछे क्यों रहें! डरिए नहीं. ये पिस्तौल के निशाने आप पर नहीं बल्कि गोली चलाने के अभ्यास के दौरान अपने लक्ष्य पर साधे जा रहे हैं. ये महिलाएं हैं न्यूयार्क की, जो न्यूयार्क पुलिस अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद 'महिला पुलिस गश्ती दल' के रूप में कार्य करेंगी. इन का दावा है कि पुरुषों की अपेक्षा ये असामाजिक तत्वों, आतंकवादियों, शराबियों, षड्यंत्रकारियों एवं हमलावरों से निबट सकने में समर्थ होंगी. इन्हें आत्मरक्षा के लिए जूडो, द्वंद्व युद्ध, पिस्तौल से निशाना लगाने, बेंत एवं अन्य हथियार चलाने का अभ्यास व व्यायाम कराया जाता है.

एक और कांड

व्यंग्य • प्रकाश केवलिया

बात रामभरोसे कालिज की थी और बात को प्रिंसिपल रामपरशाद, एम. ए., ने छिपाया था. लेकिन कयामत की नजर रखते हैं नजर रखने वाले और बात पूरे शहर में फैल गई कि प्रिंसिपल की भैंस भाग गई है.

यह विवाद का विषय था कि भैंस के भागने का पता कैसे लगा. कुछ सूत्रों का कहना था कि भैंस के गायब होने का पता केवल दो ही व्यक्तियों को था. एक खुद प्रिंसिपल साहब को, दूसरे डगलारामजी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी यानी कि डगलू चपरासी को. डगलू क्योंकि प्रिंसिपल का खास आदमी है इसलिए निश्चित रूप से भैंस ही भागने से पूर्व कुछ ऐसे सुराग छोड़ गई थी कि बात फैल गई.

प्रिंसिपल साहब के विरोधी गुट ने फैलाया कि उन की भैंस अपने प्रेमी के साथ भाग गई है. स्थानीय दैनिक पत्र 'क्रांतिदूत' ने, जिस की कालिज एक भी प्रति नहीं मंगाता था, मुखपृष्ठ पर खबर को इस प्रकार छापा :

'भ्रष्ट प्रिंसिपल का पर्दाफाश—प्रिंसिपल की भैंस अपने प्रेमी के साथ फरार. दिनांक 5 दिसंबर, हमारे विशेष संवाददाता ने आज खबर दी है कि रामभरोसे कालिज के भ्रष्ट प्रिंसिपल की जवान भैंस कल रात को दो बजे मौका पा कर अपने अज्ञात प्रेमी के साथ फरार हो गई. प्रेमी की उम्र, जाति एवं ठिकाने की पड़ताल जारी है.

'जैसा कि यहां के सभ्य नागरिकों को मालूम है कि हमारे बालक, जो कालिज में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, भारत

देश के भावी कर्णधार हैं. उन के दिमाग रूपी गमलों में ज्ञान रूपी अंकुर प्रस्फुटित हो रहे हैं. इन में से कितने ही वीर जवाहर और रानी लक्ष्मीबाई बनेंगे. इन बालकों के चरित्र पर इस शर्मनाक घटना का निश्चित रूप से कुप्रभाव पड़ेगा. अत: दैनिक 'क्रांतिदूत' यहां की आम जनता की ओर से सरकार से यह अपील करता है कि इस भ्रष्ट प्रिंसिपल को इस पुण्य नगरी से निकाल बाहर करे.

'जनता को ध्यान रहे कि इस से पूर्व भी इसी प्रिंसिपल की एक आवारा बकरी अपनी बदचलनी की वजह से कुख्यात थी.

'जैसी कि कहावत है कि 'जैसी सास वैसी बहू,' वह इस घटना पर भी पूरी तरह से चरितार्थ होती है. अभिप्राय स्पष्ट है कि प्रिंसिपल रामपरशाद के चरित्र का प्रभाव उन की भैंस पर पड़ा है. हमारे संवाददाता के अनुसार भैंस एक अच्छे खानदान से थी. लेकिन जब से वह इस प्रिंसिपल के घर आई, उस के चरित्र में दिनबदिन गिरावट आती गई.'

दैनिक 'क्रांतिदूत' के उसी पृष्ठ पर खबर के नीचे एक आवश्यक सूचना छपी. वह इस प्रकार है :

'शहर के समस्त नागरिक बंधुओं को सूचित किया जाता है कि आज सायं सात बजे स्थानीय बालाजी चौक में एक विशाल

जलसे का आयोजन किया जा रहा है जिस में देश के महान क्रांतिकारी, दैनिक 'क्रांतिदूत' के संपादक श्री तिकड़मीप्रसाद भैंस कांड पर अपने ओजस्वी विचार जनता के सामने रखेंगे.

'नोट—माताओं और बहनों के बैठने की विशेष व्यवस्था की गई है.'

उसी दिन शाम को दैनिक 'जय जवान जय किसान' ने भैंस कांड पर अपना असाधारण अंक निकाला. दैनिक 'जय जवान जय किसान' की कालिज में दो प्रतियां आती हैं. एक लाइब्रेरी के लिए, दूसरी प्रिंसिपल के घर अंगीठी जलाने के लिए. अखबार ने घटना को इस प्रकार छापा :

'कालिज में सनसनीखेज घटना—प्रिंसिपल की जवान भैंस भगाई गई, गुंडों की छानबीन जारी. दिनांक 5 दिसंबर, हमारा विशेष संवाददाता भैंस कांड की गहराई में जा कर जो खबरें लाया है वे आम जनता की खिदमत में पेश हैं.

'जैसा कि जनता को ज्ञात है कि रामभरोसे कालिज के विद्वान प्रिंसिपल श्रद्धेय श्री रामपरशादजी, एम. ए. की साढ़े सात वर्षीय जवान भैंस को कुछ तथाकथित गुंडे दिनदहाड़े उड़ा कर ले गए हैं. हमारे संवाददाता ने प्रिंसिपल साहब से व्यक्तिगत इंटरव्यू लिया है, जिस से कुछ दिलचस्प बातें प्रकाश में आई हैं.

'प्रिंसिपल साहब ने बताया कि भैंस ने आज तक अकेले कभी भी कालिज के अहाते के बाहर कदम नहीं रखा है, अत: स्वाभाविक है कि वह शहर के रास्तों का ज्ञान नहीं रखती थी.

'प्रिंसिपल साहब ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने विरोधियों के सामने अपनी धाक जमाने के लिए इस बात को उड़ा दिया था कि भैंस सुबहशाम साढ़े पांच किलो गाढ़ा दूध देती है.

'भैंस के चरित्र के बारे में कालिज के एक प्रोफेसर मक्खनलाल जी ने, जो पिछले दो साल से प्रिंसिपल की भैंस को सुबह शाम नियमित रूप से दुहते रहे हैं, बताया कि भैंस अत्यंत लज्जालु एवं शांत प्रकृति की थी. उस ने दुहते वक्त लात मारना तो दूर रहा, कभी उन की तरफ आंख उठा कर भी नहीं देखा. उन्होंने यह भी बताया कि वह इस भैंस के गुणों का बखान अपनी पत्नी से हमेशा करते आए हैं. जिस से उन की पत्नी भी अब गुणवती हो गई है.

'ध्यान रहे, मक्खनलाल ने ही आज तक कालिज में जितने भी प्रिंसिपल आए हैं, उन की बकरी या उन की गाय या भैंस को बराबर दुहा है. अतः भैंस के चरित्र पर कलंक लगाने वाले स्वयं चरित्रहीन हैं. सुना गया है कि प्रोफेसर मक्खनलाल को भैंस के गुम होने का बड़ा सदमा पहुंचा है और उन्होंने पिछले 24 घंटों में न अन्न ग्रहण किया है, न जल.

'जहां तक प्रिंसिपल साहब के चरित्र की बात है वह गंगाजल की तरह पवित्र हैं. यह तो शहर की भक्त जनता जानती ही है कि हमारे प्रिंसिपल साहब रोजाना सवेरे पांच बजे उठ कर नित्यकर्म से निवृत्त हो कर लंगोट बांध कर हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं. तत्पश्चात अपने कर कमलों से प्रेमपूर्वक कबूतरों को 50 ग्राम शुद्ध शरबती गेहूं चुगने के लिए डालते हैं. गेहूं चाहे उन्हें ब्लैक में ही क्यों न खरीदना पड़े. शाम को प्रायः बालाजी के मंदिर में आरती के वक्त उन्हें भजन गाते हुए देखा जा सकता है.

'नगर की जनता से निवेदन है कि वह गुंडों के बहकावे में न आए. हमारे बालकों का भविष्य प्रभुभक्त प्रिंसिपल श्री रामपरशाद जी, एम. ए. के हाथ में सुरक्षित है.

'भैंस के गुम होने की खबर स्थानीय थाना इंचार्ज श्री खूंखारसिंह को लिखा दी गई है. और श्री खूंखारसिंह से मिलने पर ज्ञात हुआ है कि भैंस की खोज जोरशोर से जारी है.'

दूसरे दिन छात्र यूनियन ने प्रिंसिपल साहब के सामने अपना मांग-पत्र पेश किया : 'समस्त युवा समाज में भैंस को ले कर तरहतरह की अटकलें लगाई जा रही हैं. इस से छात्रों के दिमाग पर बड़ा बोझ आ पड़ा है. छात्र पिछले दो दिनों में अब तक का पढ़ाया सब कुछ भूल कर केवल भैंस कांड में उलझ गए हैं. अतः हम रामभरोसे कालिज के छात्र निम्नलिखित मांगें पेश करते हैं :

'हमारी सब की हाजिरी पूरी की जाए. हमारे परीक्षाफल इस कांड की वजह से बिगड़ने की पूरीपूरी संभावना है. अतः वार्षिक परीक्षा में नकल करने की सभी सुविधाएं प्रदान की जाएं. वरना हड़ताल का 24 घंटे का नोटिस दिया जाता है.'

उस दिन शहर में तनाव का वातावरण रहा. लेकिन तीसरे दिन सब ठीक हो गया. सुबह सवा सात बजे कांस्टेबल गीदड़सिंह भैंस को लाठी से हांकता जब कालिज के अहाते में दाखिल हुआ तो सब ठीक हो गया.

दैनिक 'जय जवान जय किसान' ने यह शुभ समाचार इन शब्दों में दिया : 'रामभरोसे कालिज के प्रिंसिपल श्रद्धेय श्री रामपरशादजी, एम. ए. की प्रिय भैंस रामदुलारी के मिलने पर यह पत्र उन्हें कोटिकोटि बधाई देता है.

'कल सात बजे जब चतुर कांस्टेबल श्री गीदड़सिंह भैंस को लाठी से हांकते कालिज के अहाते में दाखिल हुए तो उस वक्त हमारा संवाददाता वहां उपस्थित था. उस ने रिपोर्ट दी है कि वह दृश्य बड़ा ही मार्मिक था. प्रोफेसर मक्खनलाल सुबकसुबक कर भैंस से गले मिल रहे थे और प्रिंसिपल साहब खिलखिलाते हुए भैंस की पीठ पर हाथ फेर रहे थे.

'हमारे संवाददाता को कांस्टेबल गीदड़सिंह से मालूम हुआ है कि भैंस पास के किसी तालाब में शीतल जल से स्नान कर रही थी और किनारे पर उगी हरीहरी घास चर रही थी. इस से भैंस के प्रकृति प्रेमी होने की ही पुष्टि होती है, न कि चरित्रहीन होने की.

'वैसे हमारे प्रिंसिपल साहब भी बड़े ही प्रकृति प्रेमी हैं और कविता भी खासी करते हैं. भैंस के मिलने की खुशी में प्रिंसिपल साहब ने इस अखबार को अपनी दो ताजा कविताएं देने का वादा किया है, इसलिए पाठक अगले अंक की अपनी प्रति सुरक्षित करा लें और निराश होने से बचें.

'भैंस के मिलने की खुशी से प्रिंसिपल साहब ने झटपट कांस्टेबल गीदड़सिंह को इनाम में सुंदर सा टाइप किया हुआ वीरता का प्रमाण पत्र दिया है और कालिज की दो दिन की छुट्टी की घोषणा की है. धन्य हैं, हमारे प्रभुभक्त प्रिंसिपल! धन्य है यह नगरी, जहां ऐसे महापुरुष का प्रादुर्भाव हुआ है.' ●

वासंती हवा

वासंती हवा, चंदन छुआ रूमाल,
बचपन ने पाया, ज्यों सोलहवां साल.

कलियों से गंध उड़ी,
भंवरों का शोर.
कोयलिया बोल उठी,
खिल आए बौर.
प्यासे हो बहक उठे नजर के सवाल.
वासंती हवा, चंदन छुआ रूमाल.

प्यार भरी बातों सी,
कुनमुनी धूप.
अपनी परछाईं से,
शरमाए रूप.
अब तपसी मन की भी, बहक गई चा
वासंती हवा, चंदन छुआ रूमा

खो कर कुछ पाने को,
मचल गया मन.
ठुमक उठे पांव, हंसे,
पायल छनछन.
बंजारे मन की, क्या करें देखभाल,
वासंती हवा, चंदन छुआ रूमाल.

— सजीवन 'मयंक'

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● एक दिन हम कई दोस्त बाजार में घूम रहे थे कि हमारी नजर एक रिक्शे पर पड़ी, जिस पर एक बहुत ही सुंदर लड़की बैठी हुई थी. हम लोगों को शरारत सूझी और एक लड़के ने उस पर आवाज कसी, "वाह यार, आजकल रिक्शे वालों के भाग्य के क्या कहने."

इस पर लड़की तपाक से बोली, "तो फिर देर किस बात की है, आप लोग भी रिक्शा चलाइए."

सुनते ही हम लोग शर्म से पानीपानी हो गए.

—विमलकुमार, इलाहाबाद

✦

● एक दिन मैं बस में एक सीट पर बैठा था कि कुछ लड़कियां आ कर मेरे पास खड़ी हो गईं और अपने हावभाव से ऐसा दिखाने लगीं जैसे बहुत थकी हुई हों. यह देख कर मैं ने उन के लिए सीट खाली कर दी और उन से कुछ दूर हट कर खड़ा हो गया.

लड़कियां उस सीट पर बैठ गईं. कुछ ही देर बाद उन में से एक ने अपनी सहेली से कहा, "देखा, कैसा मूर्ख बनाया."

मुझे बड़ा गुस्सा आया. मैं घबराया हुआ सा उन के पास पहुंचा और बोला, "आप ने इधर कोई पर्स तो नहीं देखा?"

उन्होंने कहा, "जी नहीं."

मैं ने कहा, "एक मिनट के लिए यदि आप खड़ी हो जाएं तो आसपास देख लूं."

वे खड़ी हो गईं. जैसे ही वे खड़ी हुईं, मैं ने झट से सीट पर बैठते हुए कहा, "आप ने मुझे बहुत अच्छा मूर्ख बनाया था."

—सुरेशकांत, नई दिल्ली

✦

● जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर डिग्री कालिज, बांदा के लड़कों ने स्लेक्स व बुशर्ट वेशधारी छात्रा की दादागीरी से तंग आ कर 19 दिसंबर, 74 से अनिश्चितकालीन हड़ताल कर दी.

कालिज यूनियन के अध्यक्ष के नेतृत्व में लड़कों ने शिकायत की थी कि उक्त छात्रा आक्रामक और अत्यधिक आधुनिका है, अतः उस का नाम कालिज से काट दिया जाना चाहिए.

इस से पूर्व उक्त छात्रा ने बायोलोजी के एक छात्र को घसीटा और मारा था. उस लड़के ने उस छात्रा की बुशर्ट छू ली थी. छात्रों ने उक्त आरोप छात्रा पर लगाते हुए कालिज के प्रिंसिपल से उस का नाम काटने की मांग की थी किंतु प्रिंसिपल ने उसे नामंजूर कर दिया. छात्रों ने इस पर हड़ताल कर दी.

—इंदौर समाचार, इंदौर (प्रेषक : दिनेशकुमार, इंदौर) ●

रिक्शे वाले का

"ला, जल्दी चाय डाल दे. काम पर जाने को देर हो रही है. बच्चों को स्कूल जाने में देरी हो गई तो मुसीबत हो जाएगी."

जग्गी काम कर के लौटी थी. वह पहले ही झुंझला रही थी, उस की बात सुनते ही भड़क उठी :

"कितना मना किया था रे, तुझ से, यह बंधे टेम का झंझट मत पाल, मगर मेरी सुनता कौन है. चारचार घरों का काम कर के आती हूं तो आते ही इस का हुक्म, चाय डाल दे! अरे, मैं आदमी हूं कि मसीन, रे? यह स्कूलवस्कूल की मुसीबत न हो, तो मरजी माफिक रिक्शा ले जाओ ले आओ."

"ठीक है, ठीक है, यह लिक्चरबाजी रहने दे. मूरख कहीं की! चाय बना देने के लिए यह बड़ा लेक्चर दे मारा. अरे, जब साठ रुपए गिनेगी तो सोचेगी. कभी देखे भी हैं इतने रुपए एक साथ?"

"चलचल, बड़ा डींग हांकता है. रुपए लाएगा तो क्या, दारू पी जाएगा, मेरे हाथ क्या लगेगा?"

"हरामजादी, चाय तक तो बना कर देती नहीं, फिर यह दारू भी न पीऊं?" यह कहता हुआ रामू बाहर निकल गया. चाय वाली की झुग्गी के पास जा कर चाय पी और रिक्शा ले कर चल पड़ा.

सभी बच्चों को उन के घर से ले कर रामू स्कूल की तरफ चलने लगा. सवारियां तो न जाने उस ने कितनी इधर

जग्गी ने जिस छोटी ... ही पाला था और रा... इतना पढ़ाया था, फैक्टरी ... उन दोनों चीजों से बेहद ...

मो... जिस... नौ... बचे...

बेटा

झोपड़ी में गणेश को जन्म से
जिस रिश्ते को बदौलत उसे
नौकरी मिलते ही गणेश को
क्यों होने लगी?

उधर और उधर से इधर पहुंचाई होंगी, न्तु बच्चों को रिक्शे में बैठाते ही जैसे क्शा हलका हो कर उड़ने लगता था. न्हें देखते ही रामू की आंखों में अपना चपन तैर जाता था. एक सी ड्रेस पहने च्चों को स्कूल जाते देख उस की आंखों अनोखी चमक आ जाती थी, किंतु कूल जाने का सपना, सपना ही रह गया . उसे जग्गी पर गुस्सा आया, कुछ ी नहीं समझती. कमअक्ल जो ठहरी. पनी जिंदगी तो रिक्शा खींच कर टनी ही है, भला अपने बच्चों से भी क्शा ही खिंचाना है क्या? अभी से हनत नहीं की तो पैसा कैसे जमा होगा? ह दारू पीने की लत भी बहुत खराब . उस ने स्वयं को एक बड़ी सी गाली . यह लत भी छोड़नी ही पड़ेगी.

ग्गी ने बेटे को जन्म दिया तो खुशी से उस की आंखें छलक आईं. उस न शराब की दुकान से वह उलटे पैर टे आया था. गणेशजी शुभ के देवता इसलिए बेटे का गणेशपति नाम रख र वह जैसे उस के शुभ भविष्य के प्रति श्वस्त हो जाना चाहता था.

समय का चक्र चलता रहा और रामू णेश के लिए नित नए सपने संजोने लगा. ब पहली बार उस ने उसे स्कूल में खिल किया, तो खुशी से उस के पांव रती पर नहीं पड़ते थे. वह स्वयं स्कूल जा सका तो क्या, अपने बेटे को खूब ढ़ाएगा. गणेश के जन्म के बाद उस ने भी शराब छुई तक नहीं थी. एक तो टे की पढ़ाई के लिए पैसा बचाना था, र कितना भी अनपढ़ सही, क्या इतना नहीं समझता कि बेटे के सामने बाप रू पी कर आएगा तो बेटा क्या सोचेगा?

रामू के साथी मजाक करते, "वाह ई, वाह, बाप हो तो तेरे जैसा. बेटा ा हुआ तो रोज पीने वाले ने छूनी भी ड़ दी."

"अरे, मजाक है क्या बेटे को पढ़ाना-खाना? इस बेचारे की तो छुट्टी हो ई," दूसरा व्यंग्य से कहता.

"भइया, भाड़ में जाए पढ़ाईलिखाई. अपने से तो इतना कुछ होगा नहीं," तीसरा बोलता.

रामू सब की बात सुनता, किंतु चुप लगा जाता. 'हुं. . .मूरख हैं सब के सब. खुद तो रिक्शा खींचते ही हैं, औलाद से भी रिक्शा खिंचवाएंगे.'

गणेश ने भी रामू को निराश नहीं किया था. लालटेन की रोशनी में भी मन लगा कर पढ़ता. दूसरे बच्चे गिल्लीडंडा या गोलियां खेलते रहते, लेकिन वह अपने काम में व्यस्त रहता. वह उन सब के रहते हुए भी जैसे सब से अलग था. कितनी परेशानियां उठाता था यह छोटा सा परिवार. रूखीसूखी जो मिले, उस पर ही संतोष करना पड़ता था. गणेश के लिए पहनने लायक कपड़े जुटाने में ही रामू को एड़ीचोटी का जोर लगाना पड़ता था. फीस तो माफ ही थी, किताबों का जुगाड़ भी मुश्किल से ही हो पाता था. किंतु फिर भी गणेश खुश था कि उस के बाप ने उसे उस के दूसरे साथियों की तरह स्कूल से निकाल कर कहीं नौकर नहीं रखवा दिया था. बहुत प्रयत्न करने पर भी क्लास के दूसरे बच्चों के मुकाबले उस के कपड़े फटेपुराने ही रहते, और शायद अपनी शर्म छिपाने के लिए ही गणेश पढ़ाई में दिनरात लगा रहता था. इतनी मुश्किलों के बीच भी वह हर साल फर्स्ट आता था तो रामू और जग्गी के साथियों के बीच उस की इज्जत बढ़ने लगी थी. किसी रिक्शे वाले ने भला अपने लड़के को दसवीं भी कराई है, और गणेश तो अब बी. ए. में पढ़ रहा था.

रामू और जग्गी भी दिनरात सपने देखते, अब भला यह दुख की जिंदगी कितने दिन की है. जहां गणेश पढ़लिख कर अफसर बना कि सब दुखदरिद्रता मिट जाएगी.

एक दिन उस छोटी सी खोली पर भी समय को दया आई. गणेश ने बताया कि उसे एक फैक्टरी में एकाउंटेंट की

और एक दिन गणेश ने रामू और जग्गी की ममता की परवा किए बिना उस झोंपड़ी को छोड़ कर किसी दूसरे मकान में जाने का निश्चय कर लिया, लेकिन क्या वह वहां जा सका?

नौकरी मिल गई है. रामू शून्य में देखता बैठा रह गया. जो कुछ उस ने सुना, वह सच है या सपना, उस की समझ में कुछ न आया. जग्गी तो सुनते ही खुशी से रो पड़ी. इतनी खुशी उस ने जीवन में कभी देखी न थी. दिनरात घरबाहर काम करना, झिड़कियां सहना, यही ढर्रे से बंधी जिंदगी थी उस की. धीरेधीरे गणेश ने अपनी योजना उन्हें बतानी शुरू कर दी, "पहले महीने की पगार मिलते ही हम इस खोली को छोड़ कर दूसरे घर में चले जाएंगे. यह भी भला कोई जगह है रहने की, जहां आदमी जीवन भर सड़ता है, और फिर सड़सड़ कर मर जाता है."

जग्गी सुनते ही खुशी से नाच उठी, "अब तो उसी घर में ब्याहूंगी मैं अपने बेटे को. ऐसी सुंदर बहू ढूंढ़ कर लाऊंगी कि छूते ही मैली हो."

रामू को गणेश का अपनी खोली को सड़ागला कहना पसंद नहीं आया था. वह गणेश से तो कुछ नहीं कह सका, लेकिन जग्गी पर बरस पड़ा :

"अच्छाअच्छा, चुप रह. लाएगी बड़ी अच्छी ढूंढ़ कर. खुद बड़ी अच्छी शकल की है न!"

"ऐसा क्या कह दिया मैं ने, मुंह-जले? पहले अपना मुंह तो देख. मैं थी जो निभा लिया, नहीं तो जिंदगी भर अकेला पड़ा सड़ता."

"मूरख, औरत की जात!" कहता हुआ रामू उठा और कोठरी के बाहर निकल गया. गणेश देर तक भुनभुनाता रहा, "क्या मुसीबत है, सब कुत्तेबिल्ली की तरह झगड़ते रहते हैं."

बाहर निकल कर रामू को जैसे फिर होश आया. अगर सड़ीगली खोली को गणेश ने सड़ागला कह ही दिया तो भला लालपीला होने की क्या जरूरत थ पढ़ालिखा बेटा क्या सोच रहा होगा मांबाप भी कैसे गंवार हैं, जब देखो झगड़ते रहते हैं.

पूरी बस्ती में गणेश को नौक मिलने का समाचार फैल गया था. स रामू के भाग्य से ईर्ष्या कर रहे थे. र सब से गणेश की तारीफ करता थक नहीं था, "क्या बेटा दिया है भगवान बापदादों का नाम चमका दिया."

दूसरे दिन तड़के परिवार के ती सदस्य तैयारी में जुट गए. र रिक्शे को रगड़रगड़ कर चमका रहा उस में बिठा कर वह बेटे को आफिस जाएगा. जग्गी जल्दीजल्दी खानेपीने प्रबंध कर रही थी. गणेश अपने जाने तैयारी कर रहा था.

जग्गी ने जाते समय गणेश का मीठा कराया. रामू ने उसे ले जाने लिए रिक्शा निकाला, किंतु गणेश देखते ही बोला :

"तुम्हारी तो जिंदगी रिक्शा खीं बीती है, बापू. कम से कम आज आराम करो."

सुनते ही जग्गी की आंखें छलछ आईं, किंतु रामू तो अपनी ही धुन मगन था.

"तुझे बिठाने से मैं थकूंगा क्या रे.. तेरे बैठते ही यह रिक्शा फूल सा हल हो जाता है."

"आज उस के मन की ही कर ले जग्गी झुंझला कर बोली. उसे अ बहस करना अच्छा नहीं लग रहा था.

"अच्छा, तू कहती है तो नहीं जात रामू हार कर बोला. उस के बाद उस दिन न रामू ही काम पर गय

गी. दोनों अपनी कोठरी में बैठे सुनहरे पनों में खो गए थे. अपनी खुशी उन से भाले नहीं संभल रही थी.

गणेश ने रामू को लेने आने को मना किया था. "मैं खुद ही आ जाऊंगा, बापू," स ने कहा था. किंतु रामू स्वयं को मझा नहीं पा रहा था. 'पहले दिन तो आफिस गया है बेचारा. उस ने तो मेरा याल कर कह दिया, पर मेरा भी तो छ फर्ज है. फिर बेकार में पैसा खर्च रने से क्या फायदा है. मैं चला जाऊंगा तो किराए का खर्चा तो बचेगा.'

गणेश का दफ्तर पांच बजे छूटता था, किंतु रामू चार बजे ही रिक्शा कर उस के आफिस पहुंच गया. तीक्षा करते उस की आंखें थकने लगी कि गणेश अपने किसी सहकर्मी के थ बाहर निकला. वे दोनों धीरेधीरे तें करते चल रहे थे. रामू को लगा, भी गणेश भागता हुआ आएगा और उस लिपट जाएगा, जैसे स्कूल से पहली र आ कर लिपट गया था. लेकिन यह या, गणेश ने रामू को देखा तो था किंतु स के चेहरे पर मुसकान तक नहीं उभरी. ायद मन का भ्रम ही था, गणेश ने उसे खा ही नहीं.

"गणेश, गणेश!" रामू ने उसे दो वाजें दीं. गणेश ने एक क्षण के लिए से देखा, फिर ऐसे मुंह फेर लिया, जैसे हचाना ही न हो. रामू की समझ में कुछ हीं आया, उस का अपना बेटा ही उसे हीं पहचान रहा था.

वह उदास सा कुछ देर खड़ा रहा, फिर घर लौट आया. जग्गी भी कोठरी नहीं थी, नहीं तो उस से कुछ कह कर दिल हलका कर लेता.

कुछ देर बाद गणेश और जग्गी लग-ग साथ ही पहुंचे. रामू कुछ पूछ पाता स से पहले ही गणेश उस पर बरस पड़ा, मना किया था न, मुझे लेने मत आना, स्वयं आ जाऊंगा, लेकिन आप नहीं ने. आप चाहते हैं, मैं पूरी दुनिया में ढोरा पीट दूं कि मैं रिक्शे वाले का बेटा हूं. स्कूलकालिज में हमेशा मुझे सब चिढ़ाते रहे. आप चाहते हैं, अब भी मैं शांति से न रह सकूं. और यह रिक्शा भी अब बेच डालिए. इस की कोई जरूरत नहीं है."

रामू हतप्रभ हो गया था. उस के मुंह से बोल भी नहीं फूटा. अपने ही बेटे के सामने वह इतना दीनहीन कैसे हो गया था? जग्गी फटीफटी आंखों से कभी रामू को तो कभी बेटे को घूर रही थी.

उस के बाद रामू बिना एक शब्द बोले बाहर निकल गया. जग्गी कुछ देर बुत बनी खड़ी रही. फिर खानेपीने का इंतजाम करने लगी. उस ने खाना बना कर गणेश को खिला दिया और रामू की प्रतीक्षा करने लगी. धीरेधीरे रात गहराने लगी, किंतु रामू का कहीं पता न था. गणेश सो गया था, पर जग्गी को चैन न था. आसपास सभी सो गए थे. रात्रि के अंधकार ने उदासी की गहरी चादर डाल दी थी, जिस से घिर कर जग्गी को अपना दम घुटता सा लग रहा था.

दूर कहीं बारह के घंटे बजने की आवाज आई. दिन भर की थकान से जग्गी की आंखें मुंदने लगी थीं कि एक पदचाप उभरी.

"कौन...? कौन है, रे?" जग्गी चौंक कर उठ खड़ी हुई.

"हम हैं रामू," सामने लड़खड़ाता दीवार को थामे रामू खड़ा था.

सहसा शराब की तेज गंध का भभका जग्गी को विचलित कर गया.

"यह क्या, आज तू पी कर आया

है. तू ने तो मेरे बेटे की कसम खाई थी कि तू कभी नहीं पिएगा.''

''चोप! पिऊंगा, खूब पिऊंगा. कभी खाई थी कसम, लेकिन मेरा बेटा तो मर गया. वह सामने खाट पर जो पड़ा है वह मेरा बेटा नहीं है. उसे तो मुझे अपना बाप कहते शर्म आती है.''

''अरे, तूने तो अक्ल बेच खाई है. बड़े दफ्तर में काम करता है वह, उस की भी कुछ इज्जत है. जो कहता है ठीक ही कहता होगा,'' कहतेकहते जग्गी सुबकने लगी.

''हां. . .ठीक ही कहता होगा, लेकिन वह कौन है मेरा रिक्शा बेचने वाला? उस की कमाई से तो नहीं खरीदा था मैं ने. हम यह कोठरी भी नहीं छोड़ेंगे. सड़ी-गली है तो होने दो, हम तो यहीं रहेंगे.''

अब जग्गी फूटफूट कर रोने लगी. ''कितना मना किया था रे तुझे, मत पढ़ा इसे. लेकिन तू ही नहीं माना. बाबू साहब बनाएगा इसे! ले इस चक्कर में अपना बेटा भी हाथ से गया.''

अब रामू भी रोने लगा, ''तू ठीक कहती है. सब ने मुझे मना किया था. रामू, अपनी औकात मत भूल, किंतु मैं ही नहीं माना. नसीब जो फूटे थे. लेकिन तू क्यों रोती है? जब तक मैं हूं, यह रिक्शा है. तुझे क्या फिकर है?''

फिर वे दोनों ऐसे फूटफूट कर रोने लगे जैसे सचमुच ही उन का बेटा गुजर गया हो. शोरगुल सुन कर गणेश भी जाग गया था और हैरान हो कर रो रहे मातापिता को देख रहा था.

कुछ देर बाद रोधो, थकहार कर दोनों सो गए. दूसरे दिन सो कर उठे तो दोनों काफी हद तक सामान्य थे. किसी ने भी गणेश से कुछ नहीं कहा. सोचते रहे शायद गणेश ही कुछ कहे, किंतु उस ने भी कुछ नहीं कहा. गणेश तैयार हो कर आफिस जाने लगा तो रामू देर तक उसे जाते हुए देखता रहा. न जाने क्यों उसे हलकी सी आशा थी कि गणेश उसे आफिस छोड़ आने को कहेगा, किंतु जब वह बिना कुछ कहे चला गया तो रामू एक लंबी सांस ले कर बैठा रह गया. गणेश के जाने के बाद जब जग्गी ने उस के सामने चाय रखी तो जैसे उसे होश आया, ''देख लिए अपने सपूत के लच्छन?''

''हां, हां, देख लिए. सयाना लड़का है, उस से कुछ कहनासुनना ठीक नहीं है. फिर उस की बात भी ठीक है. अब वह हमेशा तेरे साथ चिपका तो नहीं घूमेगा.''

''तू नहीं समझेगी,'' रामू दार्शनिक अंदाज में बोला और चाय सुड़कने लगा. कुछ देर बाद वह मरेमरे कदमों से उठा और रिक्शा ले कर चल पड़ा. चौराहे पर जा कर फिर बैठ गया. न जाने कितनी सवारियां आईं और चली गईं. सभी रिक्शे वाले दोतीन चक्कर लगा चुके थे, किंतु रामू का तो हिलने को भी मन न हुआ.

''का भया रे, रामू, तेरी तबीयत तो ठीक है?'' सहसा गंगा ने तंबाकूचूना हथेली पर मलते हुए उसे आवाज दी.

रामू ने कहा, ''हां, ठीक है.

दाग वो तूने दिया है...

दाग वो तू ने दिया है कि छिपा भी न सकूं,
गर हो मंजूर दिखाना तो दिखा भी न सकूं,
क्या गजब है कि तुझे पास बुला भी न सकूं,
और तू मुझ को पुकारे तो मैं आ भी न सकूं.

—जगन्नाथ 'आजाद'

"फिर सवारियां क्यों नहीं ले जा रहा?"

रामू को लगा, उस की आंखें अनजाने ही भर आई हैं.

"गणेशी तो ठीकठाक है?" गंगा ने फिर प्रश्न किया.

"हां..."

"तो फिर तू यह रोनी सूरत क्यों बनाए बैठा है?" गंगा ने ठपठप कर के हथेली से तंबाकू की धूल उड़ाई और हथेली रामू के आगे कर दी.

रामू ने थोड़ी तंबाकू ले कर निचले होंठ के बीच दबाई व अपनी रामकहानी कहने को तैयार होने लगा.

"गंगा, अब तुझ से क्या छिपाना, तू तो हमारे भाई जैसा है. गणेशी को पढ़ा के हम तो भर पाए."

"काहे, का भया?"

"भैया, कल का छोकरा आज हम से सीधे मुंह बात नहीं करता. कहता है अगले महीने कोठरी छोड़ देंगे, तुम अपना रिक्शा भी बेच डालो. हम रिक्शा चलाते हैं तो उस की बेइज्जती होती है."

"अरे, तो इस में बैठ कर शोक करने की क्या बात है? अब तो राज कर तू, राज!"

"हां, हां, राज करूंगा मैं. अभी तो रिक्शा बेचने को कहता है, जब हम बेच-बाच कर हाथ पर हाथ धर कर बैठेंगे तो निकाल बाहर करेगा."

"अरे, तू तो बौखला गया है. हाथ पर हाथ धर के बैठने को किस ने कहा है, पर रिक्शा खींचने का काम ही रह गया है क्या? ठीक ही कहता है छोकरा, तू रिक्शा खींचता फिरेगा तो सभी उस की हंसी करेंगे. हम भी करेंगे." गंगा जोरजोर से हंसने लगा.

"अच्छा...हंसी करोगे तुम हमारी? तो पहले अपना रिक्शा बेच डालो. देख लेंगे हम भी तुम्हारी हिम्मत."

"अरे, भैया, हमारा रिक्शा कौन अपने बाप का है? दिन भर मजूरी करते हैं, शाम को उसे उस के मालिक के हवाले कर आते हैं," गंगा हंसा और रिक्शा ले कर चला गया.

एक दिन गणेश आफिस से लौटा तो बहुत खुश था. उस ने जेब से सौसौ के नोट निकाले. उसे पहली तनख्वाह मिली थी. कोठरी में केवल जग्गी ही थी.

"लो, मां, यह रखो. अब तुम काम पर भी मत जाया करो. मैं दोतीन दिन में मकान ढूंढ़ लूंगा. फिर हम यहां से चले जाएंगे."

जग्गी ने इतने रुपए एक साथ देखे तो आंखें भर आईं. लेने को हाथ बढ़ाया तो रामू की याद आ गई और उस ने हाथ पीछे खींच लिया, "तू ही रख, बेटा, एक ही बात है. पैसा कोई भी रखे, रहेगा तो घर में ही."

गणेश रुपए रख कर बाहर निकल गया तो जग्गी देर तक रोती रही. उसे बारबार एक ही खयाल आता, गणेश ने उस से रुपए रखने के लिए खुशामद क्यों नहीं की? 'हुं, रिक्शा चलाने नहीं जाना...काम क्या करने लगा हम पर हुक्म चलाता है!'

तीनचार दिन दौड़धूप कर के आखिर गणेश ने मकान ढूंढ़ ही लिया. गंदी बस्ती से छुटकारा पाने की खुशी में लगभग झूमता हुआ वह घर पहुंचा. घर में केवल जग्गी ही थी.

"मैं ने मकान ढूंढ़ लिया, मां," वह चहकता हुआ बोला.

"तो हमें क्या करना है!" जग्गी रूखी आवाज में बोली.

"लो, कुछ करना ही नहीं है. कल ही हमें यहां से जाना है. मैं तो मकान मालिक को एडवांस भी दे आया हूं," गणेश अपनी खुशी में इतना डूबा था कि जग्गी के रूखेपन पर उस का ध्यान ही नहीं गया.

"तो जा न, तुझे रोका किस ने है? फिर हम रोकने वाले होते ही कौन हैं?" जग्गी चीख कर बोली.

"क्या...तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है? कुछ बात भी है या यों ही चीखना शुरू कर दिया."

"हां, हां, तेरे जैसा सपूत जो पैदा हो गया है. फिर भला दिमाग कैसे ठिकाने होंगे?" कहती हुई जग्गी चीख-चीख कर रोने लगी.

आसपास के लोग उस का चीखना सुन कर इकट्ठे हो गए. जग्गी जो मुंह में आता था बके जा रही थी. रामू बाहर बैठा धूप सेंक रहा था. वह भी भागा आया. उसे देख कर सभी खिसकने लगे. गणेश तो अपमान और ग्लानि जैसे सहन ही न कर पा रहा था. वह भी गुस्से में बाहर निकल गया. रामू फटी आंखों से जग्गी को घूरता रहा और वह सुबक कर रोती रही और बोलती रही.

"अरे, वह कल का छोकरा हमारा दिमाग खराब बताता है! ऐही दिन के लिए पाला था न उसे?"

कुछ देर बाद जग्गी रोधो कर चुप हो गई और रामू उठ कर बाहर चला गया. वहां गंगा मिल गया.

"का भवा हो, रामू? आज तो भाभी बड़ी चीखपुकार किहिन."

"अरे, का बताएं तुम्हें हम, गणेशी को ई कोठरी की ही जिद हो गई. हम लोग तो खोली छोड़ेंगे नहीं."

"काहे नहीं छोड़ोगे?"

"हम से वह सब शान न देखी जाएगी."

"तुम से तो कुछ नहीं होगा. पहले गणेशी बेचारे पढ़ाई मा लगे रहे—आज खाए का नहीं है तो कल किताब नहीं है, कभी पहनने का कपड़ा नहीं है. अब कमाना शुरू किया तो तुम चैन न लेने देना उसे. अरे, उस का भी कुछ खयाल करो, उस के दिल पर क्या बीतेगी?"

रामू चुपचाप सुन कर लौट आया. गणेश घर नहीं लौटा था. जग्गी रोधो कर चुप हो गई थी. खाना बना रही थी. उस ने खाना बना कर रामू को खिला दिया, फिर भी गणेश नहीं आया. अब उसे स्वयं पर क्रोध आ रहा था. बेकार बात का बतंगड़ बना दिया. गणेश को तो होहल्ला वैसे ही पसंद नहीं है. वह घबराने लगी अब क्या होगा? पता नहीं गणेश घर लौटेगा कि नहीं.

"जरा जा कर देख आओ गणेश को," जब उस से नहीं रहा गया तो जग्गी रामू से बोली.

"खापी कर सो रह, आना होगा तो आ जाएगा. पहले तो चिल्ला कर पूरी बस्ती जमा कर ली. जा के सुन आ, सब बस्ती वाले कह रहे हैं कि मांबाप दोनों सठिया गए हैं," रामू गुस्से में था.

"किस की हिम्मत पड़ गई यह सब कहने की? जीभ खींच लूंगी. और तू क्या भाषण दे रहा है...पहले तो तू ने ही बातबात पर गणेशी को कहनासुनना शुरू किया था."

"ठीक है, पर तेरी तरह बस्ती नहीं इकट्ठा की थी. पढ़ालिखा लड़का है, कुछ इज्जत है कि नहीं उस की?"

जग्गी कुछ नहीं बोली. बस, शून्य में देखती बैठी रह गई.

गणेश घर से निकल कर बड़ी देर तक भटकता रहा. उस की समझ

अबू नबी और पिरामिड

मिस्र के अबू नबी 480 फुट ऊंचे पिरामिड पर पांच मिनट में चढ़ते ही नहीं थे बल्कि उतर भी जाते थे. अबू नबी का यह कमाल यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो ने देखा था और खुश हो कर उन्हें सोने का सिगरेट केस इनाम में दिया था.

में नहीं आ रहा था कि भला उस की नौकरी लगते ही मातापिता दोनों को क्या हो गया है. रामू दिनरात खांसता था, पर उस का कोई इलाज नहीं हो सका था.

जग्गी की हालत भी विशेष अच्छी न थी. अब जब वह उन्हें इस वातावरण से निकालना चाहता है तो न जाने उन्हें क्या जिद हो गई. उसे लगा रिक्शे की बात बीच में ला कर उस ने अच्छा नहीं किया है. कुछ भी हो, इस रिक्शे ने ही अब तक उस का पालनपोषण किया है. उसे लगा वास्तव में भूल उस से ही हुई है. कितनी खुशी से पहले दिन आफिस से बापू उसे लेने आया था, पर उस ने उधर ध्यान देने की ही आवश्यकता नहीं समझी थी. उस के बाद भी कितना अपमान किया था उस ने उन का. ऐसे में यदि उन का स्वाभिमान सिर उठा कर खड़ा हो गया है तो इस में दोष किस का है?

गणेश का हृदय स्वयं के प्रति ग्ला व क्षोभ से भर उठा. जिस मिट्टी सोंधी महक ने उसे महका दिया था, स को उस ने पैरों तले रौंदने की कोशि की. समाज के जिस वर्ग से वह सं रखता है उस के प्रति उस के मन सहानुभूति होनी चाहिए. पर पता क्यों वह अपने भाईबंधुओं, यहां तक मातापिता के प्रति भी लज्जा व घृणा भर उठा है. यदि किसी ने उसे 'रि वाले का बेटा' कह भी दिया तो बिगड़ गया? उसे तो अपने माता पर गर्व होना चाहिए कि ऐसी परिस्थि में भी वे हिम्मत नहीं हारे. गहरा अं उसे लीलने सा लगा था. लाख प्र करने पर भी कोई राह नहीं सूझ थी. बस, किसी प्रकार टटोल कर बढ़ना था.

एक बार तो उस के मन में आया, सब कुछ छोड़छाड़ कर कहीं जाए, सब झंझटों से छुटकारा जाएगा, पर फिर उस ने इस विचार झटक दिया. क्या वह इतना कायर कि जरा सी परेशानी आते ही खड़ा हो?

न जाने कितनी देर वह पार्क में बेंच पर बैठा रहा. जब ठंडी हवाएं में तीर की तरह चुभने लगीं तो उसे आया. लगभग आधी रात बीत चली वह उठ कर घर की ओर चल आसपास सभी सो गए थे. केवल उ खोली में ही रोशनी टिमटिमा रही उस ने जा कर देखा तो जग्गी बैठे ही ऊंघ रही थी,

दरवाजा उढ़का हुआ था. उस ने बहुत सावधानी से द्वार को ध किंतु हलकी सी आवाज से ही जग्गी गई. गणेश को देख कर जैसे उ जान में जान आई और वह खान करने लगी.

दूसरे दिन सुबह गणेश उठा काफी हलका था. जैसे उस ने कुछ कर लिया हो. कड़ाके की ठंड प

जग्गी ने चाय ... कर रामू और
...श को दी व स्वयं पीने लगी. चाय
... कर गणेश तैयार होने लगा और
...गी काम में लग गई. रामू ने बैठेबैठे
...डी सुलगा ली और सोच में डूब
...ा. कुछ देर बाद गणेश तैयार हो कर
...मू के सामने खड़ा हुआ तो उस की
...ा टूटी. "उठो बापू, मुझे आफिस
...ड़ने नहीं चलोगे?" गणेश बोला, तो
...े अपने कानों पर ही विश्वास नहीं हुआ.
...छ देर तो वह गणेश का मुंह ताकता
...ा.

"चलो बापू," गणेश ने फिर कहा.

"ना, मैं नहीं जाता, किसी ने तुझे ...रक्शे वाले का बेटा' कह दिया तो क्या ...गा?" रामू का मन अपमान की चोट अब भी कसक रहा था.

"अरे, उठो न बापू, अब कब तक यों गुस्सा करते रहोगे? मान लिया न ...ह मेरी भूल थी. मैं ने पढ़लिख कर ...यों को अपने ही लोगों से काट लेना ...हा था."

रामू चुपचाप बैठा गणेश को देख रहा था और गणेश अपनी ही धुन में ...ले जा रहा था :

"मुझे तो इस बस्ती में बसे सभी ...ईबंधुओं के उत्थान के लिए प्रयत्न ...रना चाहिए था, पर मैं तो स्वयं भी ...न्हीं सफेदपोश लोगों में शामिल हो कर ...न्हों के दुख भुलाने चल पड़ा था. अब ...मुझे अपनी भूल समझ में आ गई है." कहतेकहते गणेश की आंखें गीली हो ...ईं.

रामू तो हतप्रभ हो गया, क्या कहे ...या न कहे उस की समझ में कुछ नहीं आ ...रहा था.

कुछ देर बाद रामू गणेश को रिक्शे बिठाए ले जा रहा था और जग्गी आंखों ...आंसू भरे द्वार पर खड़ी थी. जब ...रिक्शा चौराहे से गुजरा तो गंगा रामू ...को गणेश को ले जाते देख पहले तो चौंक ...गया, फिर उस के मुख पर मीठी मुसकान ...फैल गई.

लेख • कुसुम गुप्ता

चटपटी चर्चाएं

आधारहीन अफवाहों और चर्चाओं... में रुचि लेने से पहले क्या हम इस से होने वाले भयंकर परिणामों पर ध्यान दे पाते हैं?

"**कमाल** है इन 10 नंबर वालों का. शादी हुए अभी 10 दिन भी नहीं हुए हैं और आपस में झगड़ना शुरू कर दिया. कल रात उन के घर से कितनी आवाजें आ रही थीं. मेरी तो महरी ने भी मियां को बीवी पर हाथ उठाते देखा था. हद कर दी इस आदमी ने. पढ़ालिखा हो कर भी पत्नी पर हाथ छोड़ता है."

"ओ, यार, अपने बास की नई पी. ए. ने चोपड़ा साहब पर वह जादू किया है कि बस, पूछो मत. आजकल तो दोनों साथसाथ खातेपीते हैं, कार में घूमते हैं, पिक्चरें देखते हैं."

"हाय, डाली! तुझे पता है, थर्ड ईयर की इला ने क्या गुल खिलाए हैं? कल रात भर होस्टल से गायब रही. सुना है, किसी फिल्मी एक्टर के साथ रात भर किसी होटल में रही. अब वह बंबई जाने ही वाली है. उसे हीरोइन बनने से कौन रोक सकता है?"

जहां दोचार औरतें, आदमी, लड़के या लड़कियां इकट्ठे हुए नहीं कि चटपटी
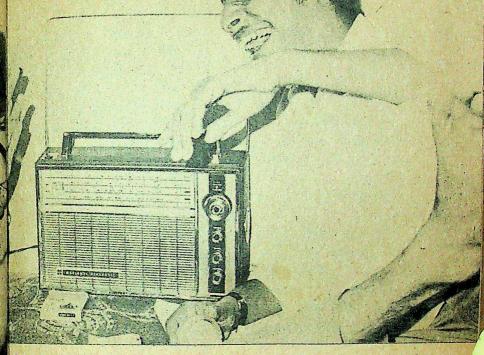
र्चाओं और गप्पों का ऐसा दौर चलता कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उस को वे भूल कर आसपास के तथ्यों को ड़मरोड़ कर पेश करने में बाजी मार जाते हैं.

गप्पें मारना हम सब की कमजोरी और हम में से अधिकांश व्यक्ति इस के कार भी होते हैं. गप्पों का जन्म उस य होता है जब आदमी के पास खाली य होता है और उस के पास मनोरंजन और कोई साधन नहीं होता.

आधारहीन चर्चाएं एक सामाजिक ाई है तथा व्यक्ति विशेष के लिए भशाप. युद्ध तथा अकाल की भांति पों के परिणाम भी कई बार बहुत कर होते हैं. इस से काफी विनाश की ावना रहती है. व्यक्ति मात्र की प्रतिष्ठा ट हो तो कोई बात नहीं, पर कई बार की भी इस से बड़ी हानि होती है.

मुझे द्वितीय महायुद्ध की एक घटना द आती है. एक सैनिक छुट्टी पर घर या. तभी युद्ध प्रारंभ हो गया. उसे एक ता गुप्त सूचना मिली : 'तुम्हारी छुट्टी रद्द हो गई है और तुम अमुक रेल से अमुक स्थान के लिए रवाना हो जाओ.' सैनिक चला गया.

सैनिक के जाते ही महल्ले भर में चर्चाएं शुरू हो गईं. लोग अंदाजा लगाने लगे कि वह इस अमुक रेल से कौन से युद्ध क्षेत्र में गया होगा. महल्ले में एक शत्रु का जासूस भी था. उस ने इन चर्चाओं का पूरा लाभ उठाया और एक महत्त्वपूर्ण सूचना अपने मुख्यालय भेज दी. बस, सैनिकों तथा सैनिक सामग्री से भरी वह ट्रेन दुश्मनों द्वारा उड़ा दी गई. युद्ध के दौरान इस तरह की अफवाहें राष्ट्र को बहुत नुकसान पहुंचाती हैं.

कई बार लोग सोचते हैं कि अफवाहें फैलाना, गप्पें मारना एक निर्दोष मनोरंजन है. जी नहीं, चर्चाएं कभी हानिरहित नहीं होतीं. चर्चाएं करने वाले ऐसा सोच कर अपनेआप को बहला लेते हैं. वे सोचते हैं कि दो मिनट दूसरों के बारे में बातें कर के हम अपना मन

बहला लेते हैं, इस से दूसरों का क्या नुकसान होता है? पर यह गलत विचारधारा है. जहां किसी के बारे में कोई अफवाह एक मुंह से दूसरे, तीसरे या चौथे मुंह तक पहुंची नहीं कि उस का रूप इतना विकृत हो जाता है कि उस से चर्चित व्यक्ति को हानि होना निश्चित है.

आधारहीन चर्चा

हर आधारहीन चर्चा में तीन पक्ष होते हैं : चर्चा करने वाला, चर्चा सुनने वाला, तथा चर्चित व्यक्ति. इन्हीं तीन दृष्टिकोणों से हम इस सामाजिक बुराई को दूर करने के संभावित उपायों पर विचार करेंगे.

सब से पहले हम चर्चित व्यक्ति को लेते हैं. यदि परोक्ष या अपरोक्ष रूप से लोग आप के विषय में चर्चाएं करते हैं तो आप इस के विषय में क्या कर सकते हैं? क्या आप चर्चा करने वालों से झगड़ा करेंगे? अथवा उन्हें सुनीअनसुनी कर देंगे? या उन के विरोध में दूसरी चर्चाएं फैलाएंगे?

एक बार चर्चाएं शुरू होने पर उन के बारे में कुछ करना बड़ा मुश्किल होता है. फिर भी चर्चित व्यक्ति को इस से बड़ी तकलीफ होती है, खास तौर से जब कि वह एकदम निराधार तथा भ्रामक चर्चा हो. हमें अपने विषय में चर्चाएं रोकने का प्रयत्न करना चाहिए.

चर्चाएं दो तरह से पैदा होती हैं. एक तो आप के जीवन में जो कुछ होता है, लोग उसे देखते हैं और अपने मन के अनुरूप उस का निष्कर्ष निकाल लेते हैं. उदाहरण के लिए, आप एक क्लर्क हैं और आप ने एक फ्रिज खरीद लिया. जिस दिन आप के घर फ्रिज आएगा, महल्ले के व्यक्ति इस तथ्य को ले कर अवश्य यह चर्चा करेंगे :

"अरे, शर्माजी तो एक मामूली से क्लर्क हैं, फिर भी तीन हजार का फ्रिज खरीद लिया. जरूर ऊपर की आमदनी होगी. बिना रिश्वत खाए कौन ऐसी चीज खरीद सकता है!"

चर्चाओं के होने का दूसरा क[...] है आप का दुनिया से अपने दुखड़ो[...] रोना. जहां आप ने अपना कोई [...] किसी को बताया, वह तोड़मरोड़[...] असंख्य लोगों को पेश कर दिया जात[...]

इसलिए यदि आप गलत रू[...] चर्चित नहीं होना चाहते, तो आ[...] निम्नलिखित कदम उठाने होंगे :

लोगों के सामने अपने कष्ट, अ[...] तथा परेशानियों की कहानियां मत [...] इए. सहानुभूति करने वाले कम हो[...] इन के आधार पर मनोरंजन करने [...] की कमी नहीं.

कई बार आप लोगों में विश्वास[...] के अपने रहस्यों को खोल देते हैं. [...] मत कीजिए. ये तथाकथित विश्वास[...] मित्र तथा सहयोगी विश्वासघात कर[...] नहीं चूकेंगे.

इस सब का यह अर्थ नहीं कि [...] समाज में रहें और होंठों को सी कर[...] यदि आप मौन रहेंगे, तो भी आप [...] का विषय बन जाएंगे. लोग आप के [...] में गलत निष्कर्ष निकालना शुरू कर[...] इसलिए लोगों से वार्तालाप कीजिए[...] उस में संयम तथा सतर्कता बरतिए.

यदि आप के विषय में कोई [...] उठ खड़ी हुई है तो उस की परवा[...] कीजिए. जहां आप ने उस का विरो[...] प्रतिरोध करने का प्रयत्न किया, वहीं [...] बवंडर खड़ा हो जाएगा.

अब हम चर्चाओं के सुनने वाल[...] आते हैं : चाहे महल्ले की औरतों [...] समूह हो या किसी दफ्तर में लंच के [...] कर्मचारियों का झुंड, एक कहने [...] होता है और दस सुनने वाले. [...] आनंद कहने वाले को आता है, उ[...] ज्यादा मजा सुनने वालों को आता [...]

चर्चाओं को सुनने वाले इस [...] जिक बुराई को दूर करने के लिए [...] लिखित कदम उठा सकते हैं :

यदि किसी व्यक्ति विशेष के [...] में चर्चा हो रही है तो वे वार्ताला[...] किसी और तरफ मोड़ सकते हैं. उद[...] के लिए, यदि लोग शर्माजी की [...]

किसी के विषय में छोटीमोटी बातों को भी नमकमिर्च लगा कर चर्चा का विषय बना दिया जाता है और उसे अनावश्यक रूप से उछाला जाता है.

खोरी के बारे में बातें कर रहे हों तो सुनने वाला मौसम या क्रिकेट के बारे में बातें शुरू कर सकता है.

यदि उस चर्चा के विषय में आप को कोई तथ्य मालूम हो तो उस का जिक्र कर के आप उस आधारहीन चर्चा की जड़ ही काट सकते हैं. लोग शर्माजी की रिश्वतखोरी की चर्चा कर रहे हैं, तभी आप सत्य का उद्घाटन कर सकते हैं कि 'भई, शर्माजी भ्रष्ट नहीं हैं. इस फ्रिज को उन्होंने अपने पैसे से खरीदा है. यह पैसा उन्होंने अपने प्रावीडेंट फंड (भविष्य निधि) से निकाला था.'

यदि आप ये पहली दो बातें नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो कर सकते हैं कि इन आधारहीन चर्चाओं को बेकार में न दोहराएं. यदि इन को आगे प्रसारित न किया जाए तो लगभग 40 प्रतिशत चर्चाएं यों ही समाप्त हो जाएंगी.

अंत में हम चर्चा करने वालों पर आते हैं. दूसरों के विषय में आधारहीन चर्चाएं कर के, अफवाहें फैला कर अपना सस्ता मनोरंजन करना अधिकांश लोगों की कमजोरी होती है. हमारी इस कमजोरी की तह में होती है हमारी खुद की असुरक्षा की भावना तथा भावनात्मक अपरिपक्वता.

कई बार हम अनजाने ही दूसरों को अफवाहों का शिकार बना कर उन का बहुत नुकसान कर देते हैं. अगर हम ऐसा करते हैं तो हमें अपने मन से ये प्रश्न पूछने चाहिए :

क्या मैं दूसरों के बारे में सुनी हुई कहानियों को आगे प्रसारित करता हूं?

क्या मैं हर वाक्य से पहले कहता हूं, क्या तुम ने सुना है...?

क्या मैं अन्य व्यक्तियों के बारे में जानने के लिए आवश्यकता से अधिक उत्सुक हूं?

क्या मुझे अन्य व्यक्तियों की समस्याओं और कमजोरियों के बारे में बातें करने में आनंद आता है?

यदि इन प्रश्नों का उत्तर 'हां' में है तो आप निश्चित रूप से उन में से एक हैं जो दूसरों के बारे में चर्चाएं कर के समाज

में अप्रियता का विष फैला रहे हैं. शायद आप के पास काफी खाली समय है और आप के पास कोई रचनात्मक काम नहीं है.

जो सचमुच व्यस्त हैं, उन के पास इस के लिए समय नहीं है. जो खुद बुरे हैं, अपने काम से जी चुरा कर अपने लिए खाली समय जुटा लेते हैं. वे इस धंधे में लगे रहते हैं.

इन चटपटी, अर्थहीन, आधारहीन तथा असंयत चर्चाओं से चर्चित व्यक्ति ही नहीं, चर्चा करने वाले का भी नुकसान होता है. देरसवेर चर्चित व्यक्ति को आप के बारे में पता चल ही जाता है. बस, इस के साथ एक मित्रता समाप्त हो जाती है, साधारण परिचय शत्रुता में बदल जाता है, सद्भावना कटुता में बदल जाती है. और इस से लाभ? कुछ क्षणों का अस्वस्थ तथा सस्ता मनोरंजन.

इस सामाजिक बुराई को दूर करने का प्रयत्न कीजिए. अपने मित्रों, पड़ोसियों, परिचितों, सहयोगियों की रक्षा कीजिए. चर्चाओं के विष की जगह प्रशंसा का अमृत दीजिए. फिर देखिए, आप को कितनी खुशी होती है...और यह खुशी अकेली नहीं होगी, इस के साथ होगा आप का एक स्थायी मित्र—वही जिस की आप ने प्रशंसा की थी.

अपने मित्रों से इस लेख की चर्चा अवश्य कीजिएगा.
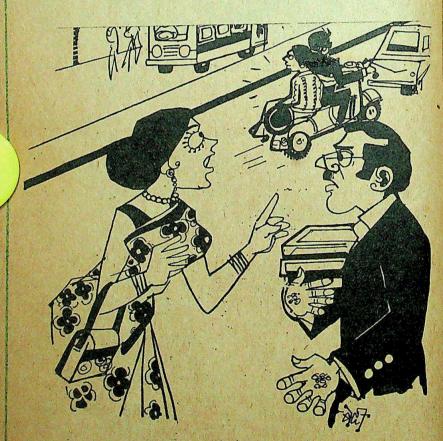
"इस स्कूटर का पीछा करने के लिए टैक्सी बुलाओ. मैं ने उस पर बैठी स्त्री के स्वेटर का नमूना उतारना है."

उषा राय की योजना अब लक्ष्य के बहुत करीब थी और वह अपनी सफलता पर मन ही मन हंस रही थी...लेकिन क्या उस की योजना सफल हो सकी?

आप पढ़ चुके हैं :

पिता का तार पा कर चित्रा पीली कोठी पहुंचती है तो वहां प्रतीक से मुलाकात होती है. वह उसे उस के पिता के पास चंडीगढ़ पहुंचा देता है. अगले दिन चित्रा उषा राय के घर जाती है, जहां वह किसी व्यक्ति को उषा राय का चुंबन लेते देखती है. घर आने पर पिता के मना करने के बावजूद वह प्रतीक से मिलने चली जाती है, जहां उसे पता चलता है कि प्रतीक का वास्तविक नाम डाक्टर सत्यप्रकाश है. इस के बाद उसे प्रतीक के अपराधी होने का संदेह होता है. एक दिन जब प्रतीक के साथ चित्रा पीली कोठी आ रही होती है तो प्रतीक को पुलिस पकड़ लेती है. चित्रा दूसरी टैक्सी से पीली कोठी पहुंच कर उषा राय से उलझ जाती है. उषा राय चित्रा की हत्या करने की कोशिश करती है. इसी दौरान कर्नल जगमोहन आ जाते हैं और चित्रा उषा राय के कई गुप्त भेद खोल देती है.

चित्रा ने लंबी सांस ली. उस के पिता के चेहरे का रंग उड़ गया था. "उषा, क्या तुम सचमुच विवाह नहीं कर सकतीं?" वह चिल्ला पड़ा, "तुम जानती हो कि मुझे तुम से कितना प्रेम है?" फिर वह चित्रा की ओर मुड़ गया, "अ

तुम ने देख लिया कि तुम ने क्या किया? तुम्हें शर्म नहीं आती?"

परंतु उषा ने सिसकियां भरते हुए, नम्रता से कहा, "उसे मत डांटो, कर्नल यह उस का दोष नहीं है. यही सब से अच्छा उपाय है. मैं तुम्हें अपनी विपत्तियों में सम्मिलित नहीं करना चाहती. हम चाहे जहां चले जाएं कोई न कोई मुझ पर उंगली उठाता रहेगा. नहीं, मैं इसे अकेले भोगूंगी."

"उषा!" उस ने उसे अपने निकट खींच लिया, "प्रिये उषा, ऐसी बातें न कहो. क्या तुम्हारे विचार में मुझे लोगों के कहने की चिंता है?"

"ओह, प्रिय." उस ने अकस्मात ही कर्नल की बांहों में अपने को समर्पित कर दिया. चित्रा उन की ओर बढ़ कर आगे आ गई.

"पिताजी, कृपया इस पर विश्वास न करें. यह झूठ बोल रही है. क्या आप को इतना भी दिखाई नहीं दे रहा है कि यह अभिनय कर रही है? यह आप से खेल रही है. आप को ज्ञात नहीं कि इस ने क्या किया है. इस ने जानबूझ कर उन दोनों तारों को मिला कर भिजवाया. इस ने मेरी हत्या करने का प्रयत्न किया," वह एक ही सांस में कहती गई, "पिताजी, मेरी बात मान लीजिए. आप मुझे नहीं देख रहे हैं कि मैं कितनी डरी हुई हूं."

"अपनी जबान बंद करो," उस के पिता ने कड़ा आदेश दिया, "क्या अभी भी तुम्हें तसल्ली नहीं हुई है?"

चित्रा ने भी उन की एक न सुनी. "आप थोड़ी देर और प्रतीक्षा कर लें. डाक्टर सत्यप्रकाश आता ही होगा. उस की बात भी सुन लें."

"मैं अब कुछ नहीं सुनना चाहता."

"परंतु, पिताजी, आप को मालूम है," चित्रा भय से कांपने लगी थी, "इस ने मुझे इसी सोफे पर गिरा कर मेरा गला घोंटने का प्रयत्न किया. अभी इस ने यह भी स्वीकार किया था कि इस ने पीली कोठी में हत्या करने का षड्यंत्र रचा था और वह सत्यप्रकाश को उस हत्या में फंसाना चाहती थी."

"चित्रा!" यह उषा का कातर स्वर था, "कर्नल!"

इस के उत्तर में कर्नल ने उषा के दोनों हाथ पकड़ कर उस का मुंह चूम लिया.

"चित्रा, चुपचाप बाहर जा कर कार में बैठ जाओ," उस ने बिना उस की ओर देखे कहा, "उषा, जाओ, मुंह धो लो. हम अभी विवाह करेंगे," कहते हुए कर्नल ने मेज पर रखी घंटी बजा दी. दूसरे ही क्षण वही सेविका अंदर आ गई. ऐसा मालूम दे रहा था कि वह पूरे समय दरवाजे पर खड़ी रही थी. उस ने सब से पहले चित्रा की ओर देखा.

कर्नल ने सेविका के भारी शरीर और मैली साड़ी को देखते हुए कहा, "बाहर जा कर ड्राइवर से कहो कि अपनी स्वामिनी का सामान उठा कर कार में रख दे."

सेविका बाहर चली गई.

उषा अपने सोने वाले कमरे में चली गई और दराजें खोल कर अपना सामान एकत्रित करने में जुट गई. कमरे में छोटा सफेद कुत्ता कभी चित्रा और कभी कर्नल के पास आ कर दुम हिला रहा था. चित्रा खिड़की के बाहर सड़क पर उत्सुक दृष्टि से देख रही थी.

चित्रा के मस्तिष्क में अनेक विचार आ रहे थे. प्रतीक का क्या हुआ होगा? वह क्यों नहीं आया? यदि वह जल्दी आ जाता... उसे सड़क पर छोड़े हुए आधा घंटे से भी अधिक समय बीत चुका है. वहां क्या हो गया होगा? उसे केवल पुलिस को अपना नाम और पता ही तो लिखवाना था. वह अब भी आ जाता तो वे मिल कर पिताजी को समझा देते कि उषा झूठ बोल रही है और वह जानबूझ कर खतरा मोल ले रहे हैं.

कर्नल जगमोहन ने उस छोटे सफेद कुत्ते को गोद में उठा लिया था और उसे थपथपा रहे थे. उन्होंने एक सिगरेट जला
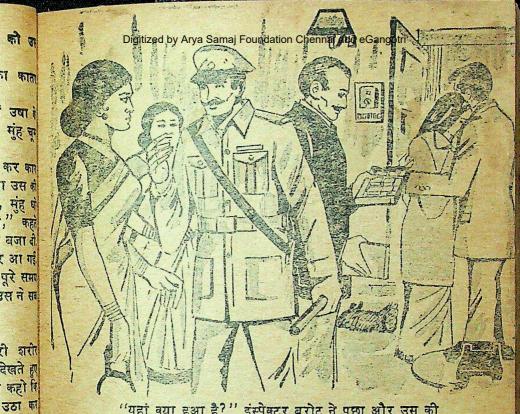
"यहां क्या हुआ है?" इंस्पेक्टर बरोट ने पूछा और उस की आंखें ऊषा राय पर टिक गईं.

ली. उन का ड्राइवर अंदर आ गया था. चित्रा ने भारी मन से उसे उषा का भारी ट्रंक उठा कर बाहर ले जाते देखा. थोड़ी ही देर में उस ने ड्राइवर को कार की छत पर उस ट्रंक को रखते देखा. सेविका कार में छोटामोटा सामान रख रही थी. कार के अंदर ड्राइवर की बगल वाली सीट पर एक स्त्री बैठी हुई थी जो कोई दूसरी सेविका प्रतीत हो रही थी. यह अधेड़ आयु की काले बालों वाली छरहरे बदन की स्त्री थी.

घड़ी की सुई के साथसाथ चित्रा का मन भी बैठता जा रहा था. वह मन ही मन कह रही थी, 'ओह, यदि वह आ जाता!' दो बार उसे नीली कारें दिखाई दीं, परंतु दोनों ही आगे चली गईं.

"क्या और सामान है, श्रीमान?"

"एक ट्रंक अंदर और है," उषा ने जोर से कहा. ड्राइवर उसे उठा कर ले जाने के लिए अंदर जा कर अदृश्य हो गया और फिर तुरंत ही ट्रंक उठाए हुए बाहर आ गया. उसी के पीछे गहनों का बक्सा हाथ में लिए उषा कर्नल के निकट आ कर खड़ी हो गई.

अब कर्नल जगमोहन ने चित्रा से कहा, "जाओ, कार के अंदर बैठ जाओ."

"मैं आप लोगों के साथ नहीं जाऊंगी," उस ने स्पष्ट उत्तर दिया.

कर्नल जगमोहन ने दरवाजा बंद कर दिया. उस ने अब कुछ धीमे शब्दों में कहा, "सुनो, चित्रा, मैं ने बहुतकुछ कह-सुन लिया है. तुम ने ऐसे मामले में हाथ डालने का प्रयत्न किया, जिस से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है. तुम्हारा उषा के प्रति बहुत कटु व्यवहार रहा है और मेरे प्रति भी. मैं नहीं जानता तुम्हें क्या हो गया है और यह तुम कैसा खेल खेल रही हो. हां, मैं एक बात अवश्य जानता हूं कि तुम्हें हमारे साथ जाना है और जो कुछ तुम से कहा जा रहा है, उसे करना है."

"मैं आप के साथ बिलकुल नहीं

जाऊंगी," उस ने फिर स्पष्टता से कहा. अब उस का हृदय जोरजोर से धड़कने लगा था. ओफ, प्रतीक क्यों नहीं आ रहा है?

"तुम मेरी बेटी हो और तुम्हारी आयु अभी छोटी है. तुम को वही करना पड़ेगा जो मैं कह रहा हूं, समझीं?"

"पिताजी, आप नहीं समझते. उस का मेरी हत्या कर देने का इरादा है. क्या देख नहीं रहे हैं? क्या आप अंधे हो गए हैं? जब तक मेरी मृत्यु न हो जाए तब तक उस को आप कोई रुपयापैसा नहीं दे सकते, इसी लिए उस ने पीली कोठी में मेरी हत्या करवाने का प्रयास किया... ओफ, आप समझते क्यों नहीं!"

वह खिड़की से हट कर दूसरी ओर खड़ी हो गई. उस के आंसू बहने लगे थे. उस ने अपने पिता की ओर अविश्वास से देखा, 'ओह, इन को समझाने से क्या लाभ होगा?' वह रोरो कर कहने लगी, "मैं ने आप को बचाने का प्रयत्न किया, परंतु आप सुनते ही नहीं हैं. मैं इतनी मूर्ख नहीं हूं कि उस के साथ चली जाऊं. आप के विचार में वह हम सब को उस होटल में क्यों ले जा रही है? वह व्यक्ति भी इसी विमान से जा रहा है. क्या आप देख नहीं रहे...? वह उस का प्रेमी है. उन्होंने पहले से मिल कर योजना बना रखी है. वहां कोई दुर्घटना हो जाएगी और मैं और आप... आप पांच मिनट प्रतीक्षा क्यों नहीं करते? प्रतीक अभी आ जाता है. वह आप को सब कुछ बता देगा."

"चुप रहो!" कर्नल ने अकस्मात ही चित्रा के मुंह पर हाथ रख दिया, "मैं तुम को ऐसी बातें कहने की अनुमति नहीं देना चाहता."

चित्रा ने उन से अपने को छुड़ा लिया और कुछ दूर जा कर खड़ी हो गई.

"आप क्या कहते हैं, मुझे इस की जरा भी चिंता नहीं है," वह चिल्ला पड़ी, "यदि आप जानबूझ कर जाल में फंसना चाहते हैं तो जाइए, मैं उस में कभी नहीं फंसूंगी. आप मुझे उस फंसने के लिए बाध्य नहीं कर सकते."

"मैं तुम्हें अवश्य ले जाऊंगा," [illegible] ने जोर दे कर कहा, "मैं तुम्हारी [illegible] कृतघ्नता सहन नहीं करूंगा."

वह उषा को क्षमायाचना की दृ[illegible] से देखता हुआ कहने लगा, "मैं न[illegible] जानता इस लड़की को क्या हो गया है."

उषा बनीठनी खड़ी हुई थी. उस [illegible] मुंह धो कर चेहरे पर पाउडर लगा लि[illegible] था. उस के चेहरे पर अब आंसुओं [illegible] कोई चिह्न नहीं था. उस ने शांत भा[illegible] से कहा, "यह सब उसी व्यक्ति की कर[illegible] है."

"सत्यप्रकाश की?" वह [illegible] व्याकुल दिखाई दे रहा था.

"हां, चित्रा आज सुबह से ही उस [illegible] साथ थी. संभवत: वह रात को उसी [illegible] कमरे में सोई है," उषा ने उसी प्रक[illegible] शांत भाव से कहा.

"चित्रा!" कर्नल ने चित्रा [illegible] धमकाते हुए कहा, "क्या तुम उस व्यक्ति के घर गई थीं?"

"हां, मैं आज सुबह वहां गई थी," चित्रा ने गर्व से स्वीकार किया, "[illegible] विचार में मुझे यह कहने की आवश्यक[illegible] नहीं है कि कल रात्रि के विषय में [illegible] सरासर झूठ बोल रही है. आप मे[illegible] विश्वास नहीं करेंगे, परंतु यदि आ[illegible] जानना ही चाहते हैं तो मेरी और सत्य[illegible]प्रकाश की मंगनी हो चुकी है."

उषा ने कर्नल की ओर विजयपूर्ण दृ[illegible] में देखा, मानो कह रही हो, 'दे[illegible] मैं ने पहले ही कह दिया था.' उस [illegible] दृष्टि से द्वेष झलक रहा था, परंतु उस [illegible] वाणी संतुलित थी. उस ने जोर से क[illegible] "मैं बताती हूं, कर्नल, उस ने चित्रा [illegible] सम्मोहित कर दिया है."

"ओह, यह बात है!" वह क्रो[illegible] में भर कर चित्रा को देखने लगा, "[illegible] कल रात घर से भाग कर उस के घर [illegible] थीं? ठीक है, मेरी बच्ची. इस से स्प[illegible] हो गया है कि तुम को अब घर में अके[illegible]

नहीं छोड़ा जा सकता."

"प्रिय, मैं ने इसी लिए कहा था कि मुझे चित्रा के लिए भय है," उषा की वाणी में मिठास थी, परंतु वह जा कर दरवाजे पर खड़ी हो गई थी, जिस से मार्ग अवरुद्ध हो गया था. "यह उस का पुराना खेल है. बिलकुल ऐसा ही उस ने उस बिलासपुर वाली युवती के साथ किया था. वह भी उस के पीछे इसी तरह पागल हो गई थी. उस ने भी किसी की बात नहीं सुनी. मैं ने उस की मां से कहा था कि वह उसे कहीं दूर ले कर चली जाए जहां उस का प्रभाव न पड़ सके, परंतु तब तक देर हो चुकी थी. बेचारी लड़की घर से भाग निकली और फिर उस का उस दिन से पता नहीं लगा."

"चिंता मत करो. चित्रा को हमारे साथ जाना पड़ेगा," कर्नल के स्वर में दृढ़ता थी.

"मैं नहीं जाऊंगी," चित्रा दीवार से सट गई. "तुम चाहे जितनी झूठी बातें बना लो, परंतु जब तक सत्यप्रकाश नहीं आ जाता, मैं यहां से नहीं हिलूंगी."

कर्नल जगमोहन चित्रा को पकड़ने के लिए आगे बढ़े, परंतु उषा ने उन को रोक दिया.

"तुम यहां से नहीं हिलोगी?" उषा ने पूछा, "फिर तो संभवतः तुम को महीनों यहीं खड़ा रहना पड़ेगा."

"तुम्हारा क्या मतलब है?" चित्रा ने पूछा.

उषा खिलखिला कर हंसने लगी.

"मेरा मतलब यह है कि उसे संभवतः गिरफ्तार कर लिया गया है," उस ने उत्तर दिया.

"मैं आज सुबह पुलिस हेडक्वार्टर गई थी और मैं ने तुम्हारे प्रतीक उर्फ सत्यप्रकाश के विषय में सारी बातें बता दीं. उस के पीली कोठी में जाने के विषय में भी."

"तुम ने पुलिस को बता दिया?" चित्रा के चेहरे का रंग उड़ गया था. "फिर तो तुम मुझे धोखा दे रही थीं. तुम जानबूझ कर झूठी प्रतिज्ञाएं करती रहीं."

"मुझे तुम्हें चुप कराना था," उषा ने उत्तर दिया. फिर वह कर्नल जगमोहन से कहने लगी, "चित्रा को अभी एक दौरा पड़ा था. वह भयानक दौरा था, प्रिय. मुझे उसे कुछ देर तक नीचे दबा कर रखना पड़ा था."

"तुम ने मुझे इसलिए दबाया था क्योंकि मैं ने कहा था, मैं पुलिस में रिपोर्ट देने जा रही हूं." चित्रा क्रोध से कांप रही थी, "तुम ने मुझ से झूठ बोला और पिताजी से भी झूठ बोला. ठीक है, पर अब तुम्हारी चाल सफल न हो सकेगी." उस ने लपक कर टेलीफोन उठा लिया.

"क्या कर रही हो?" उषा लपक कर आगे आ गई और उस से टेलीफोन छीनने का प्रयत्न करने लगी, परंतु चित्रा ने टेलीफोन हाथ से नहीं छोड़ा.

"मैं पुलिस को सूचित करना चाहती हूं."

"चित्रा!" उस के पिता भी उस की

दामन में छुपा कर...

तुम नाहक टुकड़े चुनचुन कर
दामन में छुपाए बैठे हो.
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाए बैठे हो.
—फैज

बगल में जा कर खड़े हो गए. "तुरंत टेलीफोन नीचे रख दो."

"मैं नहीं रखूंगी."

चित्रा दाहिने हाथ से टेलीफोन पकड़े हुए बाएं हाथ से टेलीफोन डायरेक्टरी में पुलिस हेडक्वार्टर का नंबर खोजने लगी.

"कर्नल, हम क्या कर रहे हैं?" उषा ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा, "हमें रजिस्ट्री दफ्तर जाने में पहले ही देर हो चुकी है और अब हमारा विमान भी निकल जाएगा."

"चित्रा!" कर्नल ने उसे धमकाते हुए कहा, "टेलीफोन नीचे रख दो और चुपचाप चली आओ, हमें जाना है."

"आप जाइए."

"पुलिस हेडक्वार्टर से बोल रहे हैं?"

"यह थाना है, पुलिस हेडक्वार्टर के लिए 1212 पर रिंग करो."

जब उस की उंगलियां डायल घुमा रही थीं तो उस ने उषा को अपने पिता से धीरे से कहते सुना, "इसे किसी तरह से विमान पर ले चलो, कर्नल, यह वहां बिलकुल ठीक हो जाएगी. हम श्रीनगर की अदालत में विवाह कर सकते हैं."

1212 नं. पर घंटी बज रही थी. किसी ने फोन उठाया, "हल्लो! पुलिस हेडक्वार्टर?"

किस से बात की जाए, चित्रा मन ही मन सोचने लगी. मेरा बयान कौन दर्ज करेगा? एक बार यदि वह बयान दे दे तो सुरक्षित रह सकेगी? पुलिस निश्चित रूप से उस का कश्मीर जाना रुकवा देगी. "हल्लो? जी... मैं रिपोर्ट देना चाहती हूं."

खट! रिसीवर चित्रा के हाथ से छूट कर स्टैंड पर गिर गया. उषा ने जोर से उस की कलाई पकड़ कर मरोड़ दी थी. पीड़ा से चित्रा चिल्ला पड़ी.

"चुप रहो! मूर्ख मत बनो." उषा ने मुंह से तो नम्रता से कहा पर चित्रा की कलाई और जोर से मरोड़ दी. "कर्नल प्रिय, इसे पकड़ो तो. तुम देख नहीं रहे हो? यह अपने आपे में नहीं है."

"मेरा हाथ छोड़ दो. मेरी कलाई में बहुत दर्द हो रहा है," चित्रा जल्दी-जल्दी सांस ले रही थी.

उस के पिता ने भी उस की कमर में हाथ डाल दिया था. उस के चेहरे का रंग उड़ गया था.

वह बोला, "चित्रा, होश में आओ."

"मुझे छोड़ दीजिए," चित्रा ने अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया. उस के पिता ने उसे कुरसी पर बिठा दिया तो उषा ने भी उस का हाथ छोड़ दिया.

"चुपचाप बैठी रहो," कर्नल जगमोहन ने आदेश दिया. चित्रा उठने का प्रयास कर रही थी.

"कर्नल, मैं बाहर जा कर दूसरी सेविका को ले कर आती हूं. तुम यहीं ठहरो." उषा दौड़ कर दरवाजे पर पहुंच गई.

"नहीं," चित्रा ने सिर झुकाए हुए कहा, "मुझे अकेला छोड़ दो."

वह अब सिसकियां भर रही थी और उस के पिता उसे करुणा भरी दृष्टि से देख रहे थे. "मेरी बच्ची, होश में आ जाओ," उन्होंने धीरे से कहा, "तुम ऐसा कर के अपनी ही हानि कर रही हो."

उस ने बड़ी कठिनाई से अपने को संतुलित किया और धीरे से कहा, "पिताजी, कृपया स्थिति को समझने का प्रयत्न करें. उषा ने प्रतीक पर आरोप लगा दिया है, हत्या का आरोप. क्या

संग्रह

एकएक बूंद से जैसे धीरेधीरे घड़ा भर जाता है, उसी तरह सभी विद्याओं, धर्म और धन का भी थोड़ाथोड़ा संचय करने से विशाल संग्रह हो जाता है.

—चाणक्य

आप समझ नहीं रहे हैं ? मुझे स्वयं जा कर पुलिस को बताना है कि यह झूठा लांछन है. मैं अभी चली जाती हूं. कृपया आप कुछ न कहिए, वरना वे समझेंगे कि उसी ने हत्या की है. आप को मेरी बात मान लेनी चाहिए."

कर्नल जगमोहन ने उषा की ओर देखा और बोले, "यह ठीक है. शायद इस से चित्रा के मन का भार उतर जाएगा और वह ठीक हो जाएगी."

"नहीं. यदि तुम इस तरह से उसे ढील दोगे तो वह सदा मनमानी करती रहेगी."

चित्रा ने पिता की बांह पकड़ते हुए कहा, "क्या आप अब भी नहीं समझ रहे हैं कि वह प्रतीक को फांसी पर चढ़वाना चाहती है? वह इस के विषय में सब कुछ जानता है."

"मूर्ख मत बनो. चित्रा, तुम वास्तव में बिगड़े हुए बालक के समान हठ कर रही हो," उषा ने मीठी धमकी दी और कर्नल के कान में धीरे से फुसफुसाते हुए कहा, "प्रिय, इस सत्यप्रकाश पर पुलिस को हत्या का संदेह है. क्या तुम चाहते हो कि चित्रा भी इस केस में फंस जाए?"

कर्नल हैरान था. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, वह अधर में लटका हुआ था. एक ओर पुत्री थी, जिस से उसे बहुत प्रेम था और दूसरी ओर उस की प्रेमिका उषा, जिसे वह बुद्धिमान स्त्री समझता था. उस की इस स्थिति का लाभ उठाते हुए उषा ने कहा, "ठहरो कर्नल, मैं सेविका को बुला कर लाती हूं. चित्रा को हमारे संरक्षण में छोड़ दो, हम उसे ठीक कर लेंगे. वास्तव में इस समय तुम तो उस की दशा सुधारने का प्रयास करने के बजाए बिगाड़ रहे हो."

"अच्छा, ठीक है," उस ने अटकते हुए उत्तर दिया. स्त्रियों के दौरे का वास्तव में उस के लिए नया अनुभव था. 'उषा स्त्री है, अतः वह स्त्री की

> **पोशाक**
>
> तुम्हारी पोशाक उतनी कीमती होनी चाहिए जितनी बनवाने की तुम्हारी योग्यता हो. वह बहुमूल्य तो हो पर भड़कीली न हो.
>
> —शेक्सपियर

दशा अच्छी तरह समझ सकती है,' उस सोचा.

उषा यह सुनते ही भागती हुई नी चली गई थी.

चित्रा कुरसी पर बैठी सिसकियां भ रही थी. वह अपने को असहाय तथ निराश अनुभव कर रही थी. दो बज में दस मिनट थे. प्रतीक को सड़क प छोड़े हुए पौन घंटा बीत चुका था. इ बार तो उषा ने निश्चय ही सच बात कह थी. उसे गिरफ्तार कर के जेल में ब कर दिया गया होगा अन्यथा वह य आधा घंटा पहले ही पहुंच जाता. व स्वयं उस की सहायता करने में असम थी. यदि वह यहां से भागने का प्रय करती है तो उस के पिता उसे पकड़ क बिठा देंगे और फिर उषा सेविका ले कर यहां पहुंच जाएगी. एक ब इन दोनों स्त्रियों के हाथ में पड़ जाने कुछ भी हो सकता है. वे किसी ऐसी वस्तु का इंजेक्शन दे देंगी, जिस वह अचेत हो जाएगी. फिर उस पिता को विमान द्वारा उसे कश्मीर जाने पर बाध्य कर देंगी. और फिर. उसे इतनी दूर पहुंच कर इन छूटने का अवसर नहीं मिल सकेगा. कोई पत्र भी नहीं लिखने दिया जाए

चित्रा की आंखों के सामने उषा अ अशरफअली का चित्र उभर आया, जि में वे गुप्त मंत्रणा करते हुए दिखाई रहे थे. उसे प्रतीक भी याद आ रहा जो इस समय कारावास में बंद था. पर हत्या का अभियोग था.

"पिताजी?" चित्रा ने अपना सुओं से भीगा हुआ मुख ऊपर उठाया, या आप कृपा कर के मुझे घर में ठहरने अनुमति नहीं देंगे? मैं प्रतिज्ञा करती कि मैं वही करूंगी जो आप कहेंगे. श्राम और जो भी आप चाहें. आप ने यहीं छोड़ दीजिए न."

व्यग्र, निराश तथा चिंतित पिता मर्मभेदी दृष्टि से अपनी पुत्री की ओर ा.

"पिताजी, मेरी प्रार्थना स्वीकार लीजिए न," चित्रा ने कातर स्वर कहा.

कर्नल को चित्रा से दृष्टि मिलाने साहस न हुआ. वह मुड़ कर छोटे े को थपथपाने लगा. एक क्षण के ु आंखों ही आंखों में चित्रा ने टेलीफोन दूरी नापी परंतु कर्नल जगमोहन उस अपेक्षा टेलीफोन के अधिक निकट थे. होंने बरफी का डब्बा उठा लिया और में बंधा हुआ फीता खोलने लगे. फोन तक पहुंचने का चित्रा को सर ही न मिला.

"पिताजी?" वह सोफे से उठ कर हो गई.

उस के पिता ने एक क्षण के लिए की ओर देखा और बरफी का डब्बा में लिए उस छोटे कुत्ते की ओर लगे जो कुछ पाने की आशा से ऊपर की ओर देख रहा था. "पिताजी, मुझे घर पर रहने की अनुमति नहीं " चित्रा ने अंतिम प्रयास किया.

कर्नल ने जल्दी से कहा, "नहीं, ा, तुम को मेरी बात मान लेनी ए."

चित्रा ने उषा तथा सेविका के आने पगध्वनि सुनी. वे दोनों दरवाजे पर गई थीं.

तरनाक गाड़ी चलाना, गिरफ्तारी से बचने की श और ड्यूटी वाले पुलिसमैन पर ा." पुलिस वाले ने प्रतीक को थाने में र इंस्पेक्टर को बताते हुए कहा.

इंस्पेक्टर ने रिपोर्ट लिख ली और बती की ओर देखा. "खतरनाक गाड़ी चलाना तो आजकल के युवकों की आदत बन गई है. कार का नंबर?" उस ने पूछा.

"जी. पी. 8271," पुलिस वाले ने बताया.

इंस्पेक्टर झुक कर नीचे वाली दराज में से कुछ कागज निकाल रहा था.

"नीले रंग की छोटी दो सीटों वाली कार है?" उस ने पूछा.

"हां, वही है," पुलिस वाले ने उत्तर दिया.

इंस्पेक्टर ने संतोष की सांस ली.

"पीली कोठी वाले मामले में इस कार की बहुत खोज की जा रही थी," उस ने बताया.

"क्या बात है?" प्रतीक ने निराशाभरे शब्दों में पूछा.

इंस्पेक्टर ने फिर उपरोक्त वाक्य दोहरा दिया.

"मैं अपने वकील को टेलीफोन करना चाहता हूं," प्रतीक ने दृढ़ता से कहा, "और मैं सिटी इंस्पेक्टर बरोट से भी संपर्क स्थापित करना चाहता हूं. वह संभवतः इस समय गुप्तचर विभाग में होंगे. वह मुझे अच्छी तरह से जानते हैं."

"तुम को उन से बातचीत करने का बहुत अवसर मिल जाएगा," इंस्पेक्टर ने कहा, "फिलहाल इसे हवालात में बंद कर दो, तेजसिंह, मैं हेडक्वार्टर को टेलीफोन कर रहा हूं."

प्रतीक को हवालात में बंद कर दिया गया. उस ने घड़ी की ओर देखा, उस समय सवा बज रहा था.

ठीक पंद्रह मिनट बाद एक कार थाने में आ कर रुकी. उस में से सिटी इंस्पेक्टर बरोट नीचे उतरा. उस ने इंस्पेक्टर का बयान सुना और फिर उस हवालात के कमरे में आ गया, जहां प्रतीक बेचैनी से टहल रहा था.

"बरोट !" उस ने संतोष की सांस ली. हवालात का ताला खुला और बरोट अंदर आ गया.

"डाक्टर, यह सब क्या है?" उस ने

छा, "तुम तो संकट में फंस गए हो," स ने बेंच पर बैठते हुए कहा, "यह सब आ कैसे?"

प्रतीक ने तेज गति से गाड़ी चलाने, रफ्तारी से बचने तथा पुलिस पर आक्रमण के बारे में अपना बयान तीन मनट में समाप्त कर दिया. उस ने ताया कि पुलिस वाले ने अभद्र शब्दों का योग किया था, जिस से किसी भी भले ादमी को क्रोध आना स्वाभाविक था.

"ठीक है, ठीक है," बरोट ने शांत ाव से कहा, "मैं तुम्हारी बात समझता . परंतु उस ने जो कुछ भी कहा उस का र्थ यह नहीं है कि तुम उसे धक्का दे र गिरा देते. यह तुम भी अच्छी तरह समझते हो और मैं भी."

"मैं समझता हूं, परंतु ... दरअसल बहुत जल्दी में था. मैं इस के लिए उस क्षमा मांग लूंगा, परंतु तुम मुझे बाहर नकाल सकते हो," प्रतीक ने जोर देते ए कहा, "मैं बताता हूं, बरोट, मेरा क्त सूख रहा है. वह युवती, जिस के षय में मैं ने तुम्हें बताया, जो मेरे साथ ी, सीधी श्रीमती शीला भाटिया के फ्लैट र गई है और ईश्वर ही जानता है कि हां क्या हो रहा होगा."

बरोट ने अपनी घड़ी देखी, दो बजने सत्ताइस मिनट थे. उस ने आश्वासन ते हुए कहा, "मुझे पहले तुम से कुछ प्रश्न छने हैं."

"जल्दीजल्दी संक्षेप में पूछो," प्रतीक निवेदन किया.

"अच्छा, मैं इस का प्रयत्न करूंगा," रोट ने उत्तर दिया, "स्थिति यह है क श्रीमती उषा राय या श्रीमती शीला ाटिया, जो भी वह हों, आज सवेरे हम से मिलने पुलिस हेडक्वार्टर में आईं. हम दोएक बार पहले भी उस से मिल चुके थे, उसी राजपुर वाली पीली कोठी के विषय में. देहरादून की पुलिस ने उस मामले को मेरे सुपुर्द कर दिया है, क्योंकि उस मृतक की जेब में से तुम्हारे नाम एक गुमनाम पत्र बरामद हुआ है. कागज बिलकुल वही था, लिखाई भी वही थी, सब कुछ वैसा ही था. श्रीमती उषा राय ने बताया कि उसे इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है. उस ने स्वीकार किया कि उस का सामान वहां से दूसरे दिन उस ने स्वयं उठवाया था, पर वह तहखाने के निकट भी नहीं गई. इस बात की पुष्टि सामान उठाने वालों ने भी की कि तहखाने के दरवाजे में ताला लगा हुआ था और चाबी गायब थी. कुछ भी हो, इस में कोई संदेह नहीं है कि वह घटनास्थल पर घटना होने के समय उपस्थित नहीं थी."

"क्या तुम निश्चयपूर्वक यह कह सकते हो?" प्रतीक ने पूछा.

"मुझे इस का पूर्ण निश्चय है," बरोट ने मुसकराते हुए उत्तर दिया. जब से तुम ने मुझे यह बताया था कि यही श्रीमती शीला भाटिया है, तब से ही मैं ने उस पर दृष्टि रखी थी और मैं ने इस की सावधानी से जांच कर ली है. उस रात्रि को वह कर्नल जगमोहन के साथ नीलम कैफे में डांस कर रही थी और अपनी एक सहेली के घर जा कर सो गई थी."

"ठीक है," प्रतीक की दृष्टि अपनी घड़ी पर लगी हुई थी, उसे पसीना आ रहा था.

"हां, तो आज सुबह वह यह बताने आई थी कि उसे नीली कार का नंबर

मेंढकों का युद्ध

थाईलैंड के एक नगर में 1968 में मेंढकों के दो समूहों में भयंकर युद्ध हुआ, जिस में हजारों मेंढक मारे गए. वहां के निवासी इसे अपशकुन मानते हैं.

ज्ञात हो गया है. उस ने बताया कि कोठी के माली ने सुबह साढ़े नौ बजे उस कार को कोठी में से निकलते देखा था और उस ने उसे पत्र लिख कर सूचित किया है. माली ने पत्र क्यों लिखा, यह मैं नहीं जानता. हमें अभी माली से मिलने का अवसर नहीं मिला है. कार का जो नंबर उस ने हमें बताया वह, डाक्टर, तुम्हारी ही कार का है. मैं तुम्हारी डिस्पेंसरी में अभी एक घंटे पहले गया था, परंतु तुम नहीं मिले. अब तुम को ज्ञात हो गया होगा कि इंस्पेक्टर ने तुम को हवालात में बंद कर के अपने कर्त्तव्य का ही पालन किया है."

"मैं समझ गया," प्रतीक ने उत्तर दिया, "मैं उस पर दोष नहीं लगा रहा हूं. तुम मुझ से क्या पूछना चाहते हो?"

"डाक्टर, क्या तुम बता सकते हो कि उस रात्रि को राजपुर में बनी उस पीली कोठी में तुम्हारी कार क्या कर रही थी?"

प्रतीक हिचकने लगा, "अधिकारी के रूप में तुम इस का उत्तर चाहते हो?" उस ने पूछा.

"हां," बरोट ने उत्तर दिया.

एक मिनट तक शांति छाई रही और फिर उन की आंखें मिलीं.

"मैं तुम को इस का उत्तर अधिकारी होने के नाते इस समय नहीं दे रहा हूं," प्रतीक ने कहा.

सिटी इंस्पेक्टर बरोट ने अपने जूतों की ओर देखा, उस ने इस समय पुलिस अफसर के बूट नहीं पहने हुए थे. उस ने मुसकराते हुए कहा, "अच्छी बात है, जैसी तुम्हारी इच्छा." फिर उस ने कुछ सोचते हुए कहा, "डाक्टर, यह न भूलो कि यह मामला बहुत गंभीर है."

प्रतीक ने घड़ी देखी, दो बजने में बीस मिनट थे. उस के माथे पर अब अधिक पसीने की बूंदें उभर आई थीं.

"क्या बात है, डाक्टर? क्या वह युवती इस केस में है?" बरोट ने संदेह व्यक्त करते हुए कहा.

उसे कोई उत्तर न मिला. प्रतीक ने घड़ी देखी और फिर रूमाल निकाल पसीना पोंछा. अब बरोट की गंभीरता से देखते हुए उस ने पूछा, "यह बताओ कि तुम्हारी पत्नी अब कैसी है?"

"उस की दशा दिनोंदिन अच होती जा रही है," बरोट ने उत्तर दि "परंतु यह मामला कोई खेल नहीं डाक्टर, यह मैं बताना चाहता हूं."

"मैं जानता हूं, यह खेल नहीं है," प्रतीक ने कहा, "परंतु एक मानव रूप में भी तो इस पर विचार करो."

बरोट ने दरवाजे और अपने बंदी की ओ देखा, परंतु उसे इस समय कु नहीं दिखाई पड़ा. उस के सामने अप स्त्री का चित्र उभर आया जो रोगी कर शैया पर पड़ी हुई थी. उस के ब की कोई आशा नहीं थी, तब इसी व्यक्ति ने उस के प्राण बचाए थे. इस ने उस आपरेशन किया था. प्रतीक के आ जाने का टैक्सी का बिल तक वह अ तक अदा नहीं कर पाया था. उस उपचार या दवा के लिए एक पैसा चार्ज नहीं किया था क्योंकि वे दोनों पुर मित्र थे. उन की मित्रता बचपन थी इसी लिए तो प्रतीक ने उसे उन गु नाम पत्रों के विषय में सब कुछ बता दि था.

"सब कुछ स्पष्ठ रूप से बता डाक्टर," बरोट ने कहा.

प्रतीक ने दोबारा उसे अपने को में पहुंचने और चित्रा से भेंट होने के सं में सब कुछ बता दिया. वह बारब घड़ी भी देखता जा रहा था.

बरोट ने बीच में एक बार भी न टोका और उस के चेहरे के भाव भी न बदले.

"क्या तुम ने स्वयं देखा था कि उ कोठी में तुम्हारे और उस युवती अलावा कोई और नहीं था?"

"कोई नहीं था," प्रतीक ने दृ से कहा.

"क्या तुम बता सकते हो कि तहख में तुम दोनों ने क्या किया?"

प्रतीक सोचने लगा.

"जहां तक मुझे याद है, चित्रा और मैं सावधानी से लालटेन का प्रकाश इधरउधर चमकाते हुए सभी कोनों को देख रहे थे तभी हमें मेन स्विच मिल गया और हम ने उसे आन कर दिया था."

"एक मिनट ठहरो, डाक्टर, तुम ने मेन स्विच आन करने से पहले कुछ नहीं किया? कोई सामान नहीं हटाया? किसी वस्तु को हाथ नहीं लगाया?"

"नहीं." प्रतीक उसे आश्चर्य से देख रहा था. "हम ने वहां की किसी भी वस्तु को हाथ नहीं लगाया. ओह! हां, वहां एक चीज थी."

"क्या ?" बरोट उस के मुख की ओर ध्यान से देख रहा था. वह एक सफल गुप्तचर था और अपने कार्य में बहुत रुचि लेता था. इस केस में तो वह और अधिक रुचि ले रहा था क्योंकि यह उस के एक पुराने मित्र से संबंधित था.

"वहां कोने में लिनोलियम का एक बड़ा बंडल कोने से टिका हुआ था," प्रतीक ने बताया, "वह बंडल अकस्मात गिर पड़ा था. हम ने उस पर हाथ भी नहीं लगाया था, पर वह स्वयं ही गिर पड़ा था और जब मैं बत्तियां जला रहा था तो उस में से एक चूहा निकल कर भागा था. मेरे विचार में वह डर कर भागा था. क्यों, क्या बात है?"

बरोट की आंखों में अब संतोष दिखाई दे रहा था. उस ने प्रतीक के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया पर उत्तर देने के बजाए प्रश्न किया, "क्या वह बंडल धीरे से नीचे गिरा था?"

चुटकी में उन की तीर...

चुटकी में उन की तीर
निगाहों में उन के कहर,
क्या जाने कितनी देर
हमारी कजा में है.
—दाग

"धीरे से? नहीं," प्रतीक ने उस की ओर आश्चर्य से देखा. "वह तो बड़े जोर के धमाके के साथ गिरा था. क्यों?"

"लिनोलियम भारी वस्तु होती है," बरोट ने कहा, "परंतु वह बहुत बड़ा बंडल तो नहीं था?"

प्रतीक ने उसे घूर कर देखा.

"बड़ा नहीं था? वह तो बहुत बड़ा बंडल था."

"ऊंचा था?"

"लगभग आठ फुट ऊंचा था."

"गोलाई का घेरा कितना था?" बरोट ने तुरंत ही प्रश्न किया.

प्रतीक ने हाथ फैलाते हुए कहा, "इतना, लगभग तीन फुट गोलाकार था. वह बहुत भारी बंडल था." फिर उस ने अकस्मात ही प्रश्न की परिभाषा समझते हुए कहा, "अरे, कहीं तुम्हारा अर्थ यह तो नहीं...?"

"मैं निश्चित रूप में कुछ नहीं कह सकता," बरोट ने कहा, "परंतु यह संभव है. तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हमें जो लिनोलियम का बंडल वहां से मिला, वह छोटा सा था. अच्छा, यह तो बताओ कि उस का रंग कैसा था."

"नीला, उस में लाल बड़ेबड़े फूल बने हुए थे."

"यह ठीक बात है, परंतु यदि वह तुम्हारे बताए गए आकार का होता तो चूहा उसे नहीं गिरा सकता था."

"तो क्या तुम्हारे विचार में वह व्यक्ति पूरे समय तहखाने में छिपा रहा था?" प्रतीक की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी.

बरोट ने सिर हिला दिया और बोला, "तहखाने में छिपने की संभावना अधिक थी. उस ने तुम्हारी पगध्वनि सुन ली होगी और उसे ज्ञात हो गया होगा कि तुम लोग तहखाने के अंदर आ रहे हो, सो उस ने लिनोलियम के बंडल के अंदर छिपने का प्रयास किया होगा. यह मेरा अनुमान है."

"परंतु यदि वह उस में छिपा तो बंडल उस के ऊपर कैसे गिर पड़ा?" प्रतीक का चेहरा लाल हो गया था.

"गिर सकता था," बरोट ने कहा, "क्या तुम ने वहां कोई स्टूल देखा था जो लगभग दो फुट ऊंचा था?"

"न...नहीं, नहीं. मैं ने वहां कोई स्टूल नहीं देखा."

"शव के साथ एक स्टूल भी वहां मिला था," बरोट ने बताया, "यह छोटा लोहे का स्टूल था. लगता है, उस व्यक्ति ने लिनोलियम के बंडल के अंदर यह स्टूल रखा और फिर उस पर खड़ा हो गया और लिनोलियम को अपने ऊपर ढंक लिया."

"तब तो बंडल असंतुलित हो गया होगा," प्रतीक ने कहा.

"बिलकुल यही हुआ. जब उस ने ऊपर से अपने को लिनोलियम से ढंक लिया तो वह बचाव के लिए हाथ भी बाहर नहीं निकाल सका. वह गिरते समय कुछ ऊपर अवश्य होगा."

"तो तुम्हारा आशय यह है कि वह इस प्रकार मारा गया?"

"यह संभव है. इस से दो बातें प्रकट होती हैं, जिन से हम व्याकुल हैं: उस की खोपड़ी की हड्डी चटक गई थी और सिर के पिछले भाग पर गहरा घाव था, जो नीचे पड़ी एक लोहे की छड़ से टकराने पर हुआ था...और इसी से उस की मृत्यु हुई. परंतु उस के दोनों हाथ बिलकुल सीधे थे और बगल से सटे हुए थे. मरने के बाद शरीर में आने वाली कड़ाहट क्या उसे इस अवस्था में रहने दे सकती थी? तुम स्वयं डाक्टर हो, अच्छी तरह जानते हो कि यदि मुर्दे को सीधा न कर दिया जाए तो वह अकड़ जाता है. इसी एक बात से यह मामला हत्या जैसा प्रतीत होता है, फिर तहखाने की चाबी भी गायब है."

"परंतु...मेरी समझ में नहीं आ रहा है," प्रतीक ने कहा, "लिनोलियम का बंडल नीचे फर्श पर गिरा, मैं ने स्वयं उसे गिरते देखा. यदि वह व्यक्ति उस के अंदर मरा पड़ा रहा तो उस का शरीर कैसे अकड़ सकता था? क्योंकि लिनोलियम उस के चारों ओर लिपटा हुआ था. मेरा आशय है कि भारी लिनोलियम में चारों ओर से शरीर के लिपटे होने के कारण अकड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता."

"ओह," बरोट ने उत्तर दिया, "परंतु जब उस का शव मिला तो वहां कोई लिनोलियम नहीं था. उस की बगल में स्टूल पड़ा हुआ था, और कुछ नहीं था. मैं तो कहूंगा कि बंडल वहां से हटा लिया गया. उस का सिर उसी स्थान पर था जहां वह गिरा था और लिनोलियम का छोटा बंडल मेन स्विच के पास उठा कर रख दिया गया था."

"मेन स्विच के निकट? परंतु पहले वहां कुछ नहीं था. मैं ने स्वयं बत्तियां जलाई थीं और चित्रा ने दूसरे दिन बत्तियां बुझाई थीं."

"यह बिलकुल ठीक है, डाक्टर," बरोट ने कहा, "तभी तो मुझे तुम्हारी बात का विश्वास है. यदि तुम झूठ बोलते तो तुम को अवश्य ही उन बातों का ध्यान होता."

"परंतु . . . परंतु यदि लिनोलियम का बंडल हटाया गया. . . ?"

"किस ने हटाया?" बरोट ने वाक्य पूरा कर दिया, "इसी बात का तो हमें पता लगाना है. यदि यह सत्य है तो किसी ने लिनोलियम का बंडल हटा कर मेन स्विच के पास ला कर खड़ा कर दिया. परंतु वह कौन है जिस की दुर्घटना को हत्या प्रमाणित करने में रुचि है? यह मैं तुम से पूछता हूं."

"यह मैं सरलता से बता सकता हूं," प्रतीक ने कहा, "परंतु भगवान के लिए पहले मुझे यहां से बाहर तो निकालो."

बरोट ने उस के व्याकुल तथा उत्सुक चेहरे पर दृष्टि डाली और वह उठ कर खड़ा हो गया.

"अच्छी बात है, डाक्टर. तुम यहीं ठहरो, मैं [illegible] से बात करता हूं."

परंतु उस ने दरवाजे की ओर एक बार फिर मुसकराते हुए देखा. "मैं तुम्हें अपनी कार में ले जाऊंगा," उस ने कहा, "हम नहीं चाहेंगे कि तुम किसी और पुलिस वाले को धक्का दे कर गिरा दो."

जब दरवाजा बंद हुआ तो प्रतीक ने घड़ी देखी. दो बजने में दस मिनट बाकी थे.

उषा आ गई. चित्रा उठ कर खड़ी हो गई. वह अपनी स्वतंत्रता के लिए अब उन का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गई थी. परंतु उषा पर दृष्टि पड़ते ही उस का शरीर कांपने लगा. सेविका दरवाजे को रोक कर खड़ी हुई थी.

"अच्छी बात है, कर्नल. अब तुम चले जाओ, इसे हम संभाल लेंगे," उषा शांत भाव से कह रही थी, "यह हमारी नई सेविका है, मुन्नी. चित्रा, यह अपने साथ तुम्हारे लिए आवश्यक दवाइयां भी लाई है. और कर्नल, आप वह बरफी न खाइए," वह भाग कर आगे आ गई.

कर्नल जगमोहन आश्चर्य से पीछे मुड़ कर उसे देखने लगे. उन्होंने डब्बे में से एक बरफी का टुकड़ा उठा लिया था और उसे मुंह में डालने जा रहे थे. अब उन का हाथ जहां का तहां रुक गया और वह चुपचाप खड़े हो गए.

उषा ने मुसकराते हुए जल्दीजल्दी कहा, "मुझे दुख है, यह मलाई वाली बरफी है. यह मैं ने विशेष रूप से चित्रा के लिए बनाई है. तुम्हें यह अच्छी नहीं लगेगी. मैं ने पिस्ते वाली बरफी तुम्हारे लिए बना कर रखी हुई है. वह डब्बा कार में है."

"ओह, अच्छी बात है," उन का हाथ नीचे आ गया.

उषा ने बरफी का वह टुकड़ा अपने हाथ में लेने का प्रयास किया, पर कुछ देर हो गई.

छोटा सफेद कुत्ता मिठाई की गंध सूंघता हुआ वहां आ पहुंचा था और कर्नल की ओर आशाभरी दृष्टि से देख

संदेह

संदेह पानी का बुलबुला नहीं है जो एक क्षण में भंग हो जाता है. संदेह तो धूमकेतु की रेखा है जो आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक फैली रहती है.

--डा. रामकुमार वर्मा

रहा था. उस ने वह बरफी का टुकड़ा कुत्ते के मुंह में डाल दिया.

"आओ, हमें बहुत देर हो गई. हमें जल्दी जाना है. मुन्नी, तुम चित्रा को उठा कर मेरे बिस्तर पर लिटा दो," उषा ने कड़कती आवाज में आदेश दिया.

पर उस की बात न किसी ने सुनी और न ही उस की आज्ञा का पालन हुआ.

वे तीनों नीचे पड़े कुत्ते को देख रहे थे. कुत्ते की गर्दन मुड़ गई थी और उस का मुंह खुला हुआ था. वह जल्दी जल्दी सांस लेता हुआ चक्कर काट रहा था, मानो पागल हो गया हो.

उषा के चेहरे का रंग पीला पड़ गया था. वह होंठ काटती हुई कहने लगी, "कर्नल, जल्दी चलो!"

परंतु कर्नल जगमोहन ने उस की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया. वह घुटनों के बल बैठ गया. वह भूमि पर लोटते हुए कुत्ते पर हाथ फेर रहा था जो अब अपने पिछले पैर हवा में उठाए कांप रहा था. तुरंत ही उस का कांपना रुक गया. उस के मुंह के किनारे बरफी का एक छोटा टुकड़ा चिपका हुआ था.

"साइनाइड..." कर्नल जगमोहन ने धीरे से कहा.

उस ने अब चित्रा के मुंह की ओर देखा और उन की आंखें मिलीं. चारों आंखों में आश्चर्य था.

"मुझे प्रसन्नता है कि तुम सुरक्षित हो."

चित्रा ने यह वाक्य सुन कर दरवा

पर प्रतीक को [illegible] भरती हुई जा कर उस के गले से लिपट गई.

एक व्यक्ति पुलिस की वर्दी पहने उस के पीछे खड़ा हुआ था, वह आगे बढ़ कर मरे हुए कुत्ते को देखने लगा.

"यहां क्या हुआ है?" उस ने पूछा और उस की आंखें उषा पर जा टिकीं.

वह पत्थर की भांति निश्चल अपने स्थान पर खड़ी हुई थी, जहां से उस ने सेविका को आदेश दिया था. अब वह जबरदस्ती हंसने का प्रयास कर रही थी.

"कुछ नहीं. कुत्ते को मिरगी का दौरा पड़ा है या कुछ और हो गया है."

"कुत्ते को विष दिया गया है," यह सूचना सेविका मुन्नी ने दी, "मैं नहीं जानती यहां क्या हो रहा है. मुझे श्रीमती उषा ने एक विकृत मस्तिष्क की युवती की देखभाल पर नियुक्त किया था, परंतु मुझे तो ऐसा दिखाई नहीं देता."

बरोट ने पैर से कुत्ते को हिलाया.

"यह तो पूरी तरह मर गया है," उस ने पुष्टि की. फिर उषा से कहा, "श्रीमती भाटिया?"

"जी हां." वह अब फिर शांत हो गई थी.

"मैं आप से कुछ प्रश्न करना चाहता हूं."

"मुझे देख रहे हैं, मैं अभी कश्मीर जा रही हूं. क्या आप पत्र नहीं लिख सकते? मैं इस विमान को छोड़ना नहीं चाहती."

"मुझे दुख है, यह विमान तो आप को छोड़ना ही पड़ेगा," इंस्पेक्टर बरोट ने कहा, "मुझे आप से कुछ आवश्यक प्रश्न करने हैं."

"चित्रा..." कर्नल ने धीरे से अपनी पुत्री की बांह पकड़ ली. उस का मुख प्रतीक की छाती से लगा हुआ था. "चलो बेटी," कहते हुए कर्नल चल दिया. उस ने चलते समय पीछे मुड़ कर नहीं देखा.

[illegible] का हाथ पकड़े उस के पीछे चल पड़ी.

कर्नल जगमोहन ने कार के अं[illegible] उन दोनों के लिए स्थान बना लि[illegible] अब उस ने ड्राइवर से श्रीमती शो[illegible] भाटिया का सामान नीचे उतार [illegible] रखने के लिए कहा और कार को सी[illegible] अपने मकान पर ले जाने का आदेश दि[illegible]

चित्रा को ड्राइवर की आंखों में संतो[illegible] की झलक दिखाई दे रही थी.

चित्रा और प्रतीक दोनों कार [illegible] एकदूसरे का हाथ पकड़े बैठे रहे जब त[illegible] कि कार उन के मकान पर नहीं पहुंच ग[illegible] वे परस्पर एकदूसरे के हाथ दबा [illegible]

> **हार**
>
> हार क्या है? शिक्षा के अतिरिक्त कुछ नहीं, एक अच्छी स्थिति के लिए केवल पहला कदम है.
>
> —वेंडेल फिलिप

अपनेअपने मन की बात प्रकट कर रहे [illegible] कर्नल जगमोहन के सम्मुख कुछ कहनेसुन[illegible] का प्रश्न ही नहीं उठता था.

जब कर्नल कार में से उतर कर नीचे खड़ा हो गया तो उस ने दोनों से कहा, "चलो, अंदर चलो."

वे उस के पीछेपीछे लाइब्रेरी में च[illegible] आए. कर्नल जलती हुई अंगीठी की ओर मुंह कर के खड़ा हो गया और उस ने बिना मुड़े हुए कहा, "चित्रा, मेरी बेटी, मैं क्षमा चाहता हूं..."

"ऐसा न कहिए, पिताजी. आप विचित्र असहाय स्थिति में फंस गए थे." वह उन के गले से लिपट कर रोने लगी. "ऐसा न कहिए..."

चित्रा का हाथ पकड़ कर उस ने प्रतीक की ओर देखा, जो चुपचाप खड़ा उन को देख रहा था.

"बैठो, मैं तुम से इस कहानी का अंत सुनना चाहता हूं. मैं...मैं इतना बूढ़ा हो कर भी मूर्ख बन गया था," उस ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा. उस ने फिर कुछ सोचते हुए कहा, "इस के अतिरिक्त मेरे विचार में तुम मुझ से शायद कुछ और भी तो कहना चाहोगे?"

चित्रा ने सिर ऊपर उठाया, प्रतीक ने उस की ओर देखा. उस ने भी मुसकराते हुए अपना सिर हिला दिया.

"यदि आप आज्ञा दें, श्रीमान..." प्रतीक ने उत्सुक हो कर कहा.

"अवश्य कहो," कर्नल ने कहा.

"मुझे लगता है कि मैं अब चित्रा की देखभाल करने योग्य नहीं रह गया हूं."

चित्रा ने लज्जा से सिर झुका लिया.

परंतु इस विषय पर अंतिम प्रकाश इंस्पेक्टर बरोट ने डाला. प्रतीक रात्रि के नौ बजे उसे अपने साथ कर्नल साहब की कोठी पर ले आया. इंस्पेक्टर चित्रा की कहानी सुनना चाहता था और उस को धन्यवाद भी देना चाहता था.

इंस्पेक्टर बरोट जब ड्यूटी पर नहीं होता था तो वह निस्संकोच बातें करता था. "तुम बालबाल बच गईं. यहां तक कि उस कमरे में भी तुम बाल-बाल बचीं. उस ने वह बरफी तुम्हारे ही लिए तैयार कर के रखी थी, इस में जरा भी संदेह नहीं है."

"इस बात के लिए तुम उसे गिर-फ्तार कर सकते हो?" प्रतीक ने प्रश्न किया.

परंतु इंस्पेक्टर बरोट ने सिर हिला दिया, "नहीं, डाक्टर, मुझे अफसोस है कि उस को इस कारण गिरफ्तार नहीं किया जा सकेगा. इस को प्रमाणित करने के लिए साक्षी चाहिए."

"क्या आप प्रमाणित कर सकते हैं कि पत्र उस ने ही लिखे थे?" चित्रा ने चिल्ला कर कहा.

इंस्पेक्टर बोला, "वह बहुत चालाक औरत है. जब हमें उस मृतक की जेब से पत्र मिला था तो उस पर तुम्हारा पता लिखा था. उस पर चित्रा नाम लिखा हुआ था और उस में तुम को डाक्टर सत्यप्रकाश से सावधान रहने की चेतावनी दी गई थी. इस में संदेह नहीं कि वह डाक्टर को दोषी ठहराने के उद्देश्य से लिखा गया था. जब मैं ने वह पत्र देखा तो मैं समझ गया कि गुमनाम पत्र लिखने वाला व्यक्ति मेरी पकड़ में आ गया है...किंतु तब तक मैं ने उस व्यक्ति का शव ठीक से नहीं देखा था," इंस्पेक्टर यह कह कर चुप हो गया और उन की ओर देखने लगा.

चित्रा ने तुरंत पूछा, "जब तक शव ठीक से नहीं देखा था, इस का क्या अर्थ है?"

"जब मैं ने शव को गौर से देखा तो मुझे ज्ञात हो गया कि वह व्यक्ति लिखने का कार्य नहीं कर सकता था," इंस्पेक्टर बरोट ने व्यंग्य करते हुए कहा, "मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि उस के हाथ और सब कुछ करने के लिए ठीक थे पर कलम पकड़ने योग्य नहीं थे. जी हां, वह कोढ़ी था...वह वास्तव में एक जीतीजागती लाश थी."

"कोढ़ी!" चित्रा चौंक पड़ी.

"तुम ने उसे पहचाना कि वह कौन था?" प्रतीक ने पूछा.

"हां, डाक्टर, इस का पता आज लगा है. वह पाकिस्तानी नागरिक था और किसी प्रकार बिना पासपोर्ट के यहां आ गया था. शायद वह कोई पुराना अपराधी था, नाम था अली."

"अली?" वे दोनों एक साथ चिल्ला पड़े और एकदूसरे का मुंह देखने लगे.

"क्या आप के विचार में...?"

"अशरफअली का भाई या संबंधी था," प्रतीक ने बताया, "तभी तो श्रीमती शीला भाटिया उसे अपनी ओर करने में सफल हुईं."

"आप लोग उसे जानते हैं?" इंस्पेक्टर ने पूछा.

"मैं...? हां, हम दोनों अशरफ-अली नाम के व्यक्ति को जानते हैं. यह कर्मचारी था और शीला भाटिया का

मी था," प्रतीक ने बताया. "परंतु आगे बताओ, कहानी रोचक होती जा रही है."

"अब अधिक बताने योग्य कुछ नहीं रहा," इंस्पेक्टर ने कहा, "उस की मृत्यु उसी रात्रि को हुई जब आप दोनों वहां थे, क्योंकि दूसरे दिन दोपहर बाद तहखाने से कोयला निकाल कर बाहर एकत्रित किया गया. जिस किसी ने भी लिनोलियम का बंडल वहां से हटाया, उस ने तुम लोगों के जाने के बाद और सामान उठाने वालों के कार्य समाप्त करने के बीच किसी समय यह कार्य किया, क्योंकि इस के बाद चाबियां नए मकान मालिक को दे दी गई थीं. यह सरल कार्य भी नहीं था. इतना भारी बंडल खींच कर वहां से हटाना और मेन स्विच के निकट खड़ा करना कठिन काम था. हम ने उंगलियों के निशान विशेषज्ञों के पास भेज दिए हैं. यदि हमें यह मालूम हो जाता है कि श्रीमती शीला भाटिया ने लिनोलियम का बंडल छुआ था, तो इस के अर्थ यह होंगे कि वह स्वयं तहखाने के अंदर गई थी. इस से हमें उस से पूछने का अवसर मिल जाएगा कि उस ने पुलिस को गलत बयान क्यों दिए थे और उस ने मृतक की सूचना समय पर क्यों नहीं दी. मेरे विचार में इन प्रश्नों का उत्तर देना उस के लिए कठिन होगा."

"उस का फिर क्या होगा?" चित्रा ने पूछा.

"कुछ नहीं होगा," इंस्पेक्टर ने कहा, "यदि हम इस सच्चाई को प्रमाणित कर दें कि उस ने तुम को गलत तार दे कर वहां भेजा और उस कोढ़ी को तुम्हारी प्रतीक्षा करने और उस के पश्चात तुम्हारी हत्या करने के उद्देश्य से वहां भेजा और डाक्टर को भी उस ने इस उद्देश्य से वहां भिजवाया कि तुम्हारी हत्या का अभियोग उस पर लगेगा तो फिर संभवतः कुछ हो सकता है. यदि हम यह भी प्रमाणित कर दें कि उस ने बरफी में विष मि[illegible] तुम्हें समाप्त करने की योजना थी, क्योंकि तुम्हारे नाम पर जम[illegible] तुम्हारे पिता को मिले और फिर क[illegible] प्राप्त हो जाए तो उस पर मुकदमा च[illegible] जा सकता है. परंतु अब तो [illegible] ही दूसरी मालूम दे रही है," उस ने ठंडी सांस ली.

"तब तो इस का अर्थ है कि तु[illegible] लगाया गया अभियोग मिट [illegible] पाएगा," उस ने प्रतीक से कहा, "[illegible] आशय उन गुमनाम पत्रों के विष[illegible] है."

"नहीं, उस का स्पष्टीकरण सं[illegible] नहीं हो पाएगा, परंतु इस से तुम[illegible] कोई प्रभाव पड़ता है?"

चित्रा खिलखिला कर हंसने [illegible]

"तुम जानते हो, इस से मुझ[illegible] कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा."

"अब तुम्हारे पिता ने मुझे [illegible] जीवन नए तौर से आरंभ करने [illegible] अवसर दे दिया है. मैं पिछली [illegible] को भूल जाना चाहता हूं."

इंस्पेक्टर बरोट उठ कर खड़ा गया.

"डाक्टर, अब तुम निश्चिंत [illegible]" उस ने आश्वासन दिया. "श्रीमती उषा उर्फ शीला भाटिया अब आप लोगों [illegible] परेशान नहीं करेंगी. वह आज [illegible] विमान द्वारा पाकिस्तान चली गई [illegible] परंतु उस ने दुख प्रकट करते हुए [illegible] "मुझे बहुत दुख है. उसे कम से [illegible] दस वर्ष का कारावास तो होना चाहिए था."

जब वह चला गया और चित्रा [illegible] प्रतीक अकेले रह गए तो चित्रा ने [illegible] से कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि श्री[illegible] शीला भाटिया भाग गई. मैं [illegible] धन्यवाद देना चाहती हूं."

"हां, यदि वह न होती तो [illegible] कैसे मिलते?"

"हां."

वे एकदूसरे की ओर देख [illegible] मुसकराने लगे.

—स[illegible]

फागुन तक आ जाना

चैत बड़ी दूर है,
फागुन तक आ जाना.

याद करूं भी तो क्या,
सपने कितने उजड़े.
समय बीत जाता है,
देहरी पर खड़ेखड़े.
अब न सहा जाएगा,
महुए का गदराना.

नईनई कलियों में,
लो, उछाह जगता अब
मेरे सूने मन को,
भला नहीं लगता अब,
षोडशी हवाओं का
टेसू से बतियाना.

मदमाते भौरों को
कौन बरज सकता है.
काश, समझ पाते तुम
अर्थ बहुत रखता है,
अमुवा की डाल का
मुसका कर झुक जाना.

—इंदिरा परमार

लेख

आशारानी व्होरा

किशोरियों के लिए केश सज्जा - शैग शैली

कंधों तक झूलते खुले 'शोल्डर कट' बाल आज तरुणियों व युवतियों की खास पसंद है. पर प्रथम, द्वितीय वर्ष में पढ़ने वाली अल्हड़ कालिजिएट किशोरियां तो नित्य नवीनता की तलाश में रहती हैं. उन के द्वारा अपनाई गई नवीनतम शैलियों में 'शैग' शैली भी 'यु कट' शैली की तरह आजकल बहुत लोकप्रिय है.

इस में बालों को तीन किनारों में काटा जाता है. चित्र नं. 1 के अनुसार मध्य के एक तिहाई बाल पीछे की ओर इतने लंबे रखे जाते हैं कि गर्दन से नीचे पीठ पर गिरें. दूसरी कतार इन्हीं बालों में नीचे से तीनचार इंच की ऊंचाई पर रखी जाती है. अगलबगल के शेष सारे बाल तथा मध्य के बाल भी फिर तीसरी कतार में पूरी गोलाई में समानांतर काटे जाते हैं. यह कतार लंबाई में कानों के निचले भाग तक होती है.

यह तो रही 'शैग' शैली की सामान्य कटाई, जो दैनिक उपयोग की मानी जाती है. विशेष अवसरों के लिए इसी कट में बालों को दो और शैलियों में सजाया जा सकता है.

चित्र नं. 2 में देखिए, सामने के दोनों तरफ के छोटे बाल छोड़ कर पिछले लंबे बालों को दो भागों में बांट कर गर्दन पर दो रोल बना कर पिनों से टांक दिया गया है.

चित्र नं. 3 में दिखाई गई शैली में पिछले सारे बालों को गीला कर के 'रोलर्स' पर चढ़ा कर सुखाया गया है, जिस से निचली कतार के गर्दन वाले बाल नीचे से गोलाई में रोल हो गए हैं और देखने में सीधे कटे बालों की अपेक्षा अधिक सुंदर लग रहे हैं.

इस तरह 'शैग' शैली में कटे बालों की आप तीनचार तरह से सज्जा कर सकती हैं. पर बेलबाटम, पैंट, जीन, स्कर्ट आदि पोशाक में सजी चुस्त, अल्हड़ किशोरियों के लिए ही रौल विशेष रूप से उपयुक्त है.

केश सज्जा प्रदर्शन—
'मोनालिसा,' वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली.
छाया : अनिल सूद

अगले अंक में केश सज्जा की 'शार्ट रिलेट्स' शैली के बारे में पढ़ें.

गुलाबी ठंड और आप की पोशाक

गुलाबी ठंड में किशोरियों के लिए शानदार, निराले परिधान. इंद्रधनुषी रंगों वाली इन नरम, गरम व फैशनेबल पोशाकों में आप का रूप खिल उठेगा. इन हलकीफुलकी पोशाकों में खूबसूरती और कलात्मकता का अनूठा मेल है.

• शकु

घुटनों तक लंबा यह ऊनी टाप बैंगनी मखमली शर्ट के साथ पहना [illegible] है. इस के साथ काली पैंट और सिर पर बांकी टोपी. बस, क्या कहने! (बाएं). बांका फैशन, निराली अदा! कोशिए से बुनी गई नाजुक जाकेट जामनी कार्डीगन और हरी टेरीवूल की पैंट के साथ कैसी खिल उठी है. आंखें एक बार ठहर गईं तो फिर उठने का नाम ही नहीं लेंगी (दाएं).

लाल और पीले रंग से बुनी हुई कुरती के साथ सुहावनी गुलाबी पैंट की जोड़ी...वाह, एक बेमिसाल पोशाक! जो बस, आप के लिए ही है

नीले, लाल व सफेद रंगों से बनाया गया ऊंचे बंद गले का स्वेटर, भूरी ऊनी पेंट. साथ में छोटी बांहों का चटकीला लाल आरामदेह कार्डीगन, जिस की बांहों पर स्वेटर जैसी धारियां. मन को लुभाने वाला रूप सौंदर्य!

ऊन का बुना हुआ सफेद झकझक करता पेंटसूट. गहरी मूंगिया टोपी और उस से मैच करता मफलर. मफलर के दोनों किनारों पर चौड़ी सफेद पट्टी. सादगी और सौंदर्य का अनूठा मेल.

भड़कीले रंग का सुंदर पुलोवर और टेरीवूल की पैंट. इन के साथ क्रोशिए से बुनी फैशनेबल बंद ऊंची जाकेट व ठाठदार टोपी. इस के साथ क्रोशिए से बुना एक और खूबसूरत स्वेटर. लाल हरी व सफेद धारियों वाले इस बिना बांहों के स्वेटर के नीचे गहरे नीले रंग की शर्ट पहनें. साथ में गुलाबी रंग की पैंट व स्वेटर के रंग से मेल खाती फैशनेबल टोपी पहनना न भूलें.

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता राकेशकुमार सिंह, वाराणसी, हैं.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

- एक छोटा बच्चा अपने घर की छत पर खड़ा हुआ था कि डाकिया तेजी से आ कर चिट्ठी फेंक कर आगे बढ़ने लगा. चिट्ठी पास वाली नाली में जा गिरी.

बच्चा चिट्ठी लिए दौड़ा हुआ डाकिए के पास गया और बोला, "हमारी यह चिट्ठी पास वाली नाली में गिर कर खराब हो गई थी. इसे आप बदल दीजिए."

—आशारा

- प्रेमिका : झूठ बोलना अपराध है.

प्रेमी : सिर्फ लड़कों के लिए. प्रेमियों के लिए तो यह कला है और नेताओं के लिए राजनीति.

- देवर : आज की चाय तो बहुत अच्छी बनी है, भाभीजी.

भाभी : देवरजी, चाय और भी अच्छी बनती, मगर क्या करूं निगोड़ी बिल्ली दूध की सारी मलाई चाट गई.

—प्रकाश सुखाणी 'प्रेमी', बीकानेर

- थाने में घुस कर उस ने थानेदार से पूछा, "क्या मैं उस आदमी को देख सकता हूं जिसे कल आप लोगों ने मेरे कमरे में घुसते हुए पकड़ा है?"

"हां, देख सकते हैं, मगर क्या काम है आप को उस से?"

"मैं उस से सिर्फ एक सवाल करना चाहता हूं कि वह किस प्रकार कमरे के अंदर घुसा कि मेरी पत्नी की नींद नहीं खुली. मैं तो चाहे जितना चुपके से आऊं, वह जरूर उठ कर पूछने लगती थी, 'कौन है?'"

- एक अमीर कह रहा था, "जब मैं अपने गांव से निकला था तो मेरे पास कुल पांच रुपए थे. आज लाखों रुपए मेरे पास हैं."

सुन कर दूसरा बोला, "मैं जब घर से निकला तो मेरी हालत तुम से भी बदतर थी. मुझ पर पांच सौ रुपया कर्जा था."

कोई पूछ बैठा, "और अब?"

तुरंत जवाब मिला, "आज मुझ पर पांच लाख रुपया कर्जा है, इतनी तरक्की मेरी हो गई है अब."

—राकेशकुमार सिंह, वाराणसी

- एक बार एक अनुभवी चोर एवं एक नौसिखिया चोर एक व्यक्ति के घर चोरी करने गए. घर में घुसने से पहले उन्होंने बिजली बंद कर दी. पहले अनुभवी चोर अंदर गया. तभी वह किसी वस्तु से टकरा गया. मालिक की आंख खुल गई. उस ने कड़कदार आवाज में पूछा, "कौन है?"

चोर ने धीरे से कहा, "म्याऊं."

उस के पश्चात दूसरा चोर भी अंदर घुसा और किसी चीज से टकरा गया. मालिक फिर उठा और पूछा, "कौन है?"

यह सुन कर कच्चा चोर बहुत घबराया. उस ने हिचकते हुए कहा, "दूसरी बिल्ली."

—संजयकुमार, इंदौर
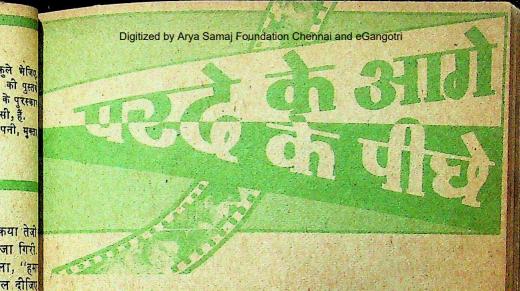
भारतपाक में फिल्मों का विनिमय

पाकिस्तान में 1965 से भारतीय फिल्मों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया था. इतना ही नहीं, पहले से ही पाकिस्तान में उपलब्ध भारतीय फिल्मों के प्रदर्शन पर भी रोक लगा दी गई थी. पिछले दिनों भारत और पाक में हुई व्यापार वार्ता से आशा बंधी है कि संभवतः दोनों देशों में फिल्मों का विनिमय भी आरंभ हो जाएगा, हालांकि अभी तक ऐसा कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिला है.

अभी तक ऐसी कोई विधिवत घोषणा तो नहीं की गई और न ही अभी तक यह बताया गया है कि इस व्यापार का आधार क्या होगा, लेकिन ऐसी संभावना है कि दोनों देशों में फिल्मों का परस्पर विनिमय ही इस व्यापार का आधार होगा. पाकिस्तान भारत से उतनी ही फिल्में आयात करेगा, जितनी उसे निर्यात करेगा.

यह भी आशा की जा रही है कि पाकिस्तान में बंद पड़ी फिल्मों पर से भी प्रदर्शन संबंधी प्रतिबंध उठा लिया जाएगा. पाकिस्तान के फिल्म वितरक इस दिशा में इतने आशावान हैं कि उन्होंने उन फिल्मों के प्रदर्शन के संबंध में तैयारियां भी शुरू कर दी हैं, केवल आदेश की प्रतीक्षा की जा रही है. पाकिस्तान भारतीय फिल्मों की बहुत अच्छी मार्कीट है.

पाकिस्तान में जहां विदेशी फिल्मों के वितरक खुश नजर आ रहे हैं, वहां पाकिस्तानी फिल्मों के वितरक इस प्रयत्न को आशंका की दृष्टि से देख रहे हैं. वे जानते हैं कि भारतीय फिल्मों के सामने पाकिस्तानी फिल्में टिक नहीं सकतीं और भारतीय फिल्मों के आयात से उन्हें घाटा रहेगा. इसी लिए वे इस का विरोध कर रहे हैं और यह तर्क दे रहे हैं कि पाकिस्तान में ही अब उच्च स्तर की फिल्में बनने लगी हैं. इसलिए भारतीय फिल्मों के आयात की कोई आवश्यकता नहीं. दूसरे, भारतीय फिल्मों के आयात से पाकिस्तानी फिल्म उद्योग को हानि पहुंचेगी.

पाकिस्तान का एक और वर्ग भी इस भावी समझौते से नाखुश है. इस समय लाहौर के अनेक रेस्टोरेंटों में शाम होते ही टेलीविजन सेटों के सामने कुर्सियां रख कर होटल को एक छोटे से सिनेमा हाल में

बदल दिया जाता है और होटलों के मालिक भारतीय फिल्म दिखाने के लिए एकएक व्यक्ति से दोदो, चारचार रुपए वसूल करते हैं. यह उसी दिन होता है, जिस दिन अमृतसर से टेलीविजन पर कोई भारतीय फिल्म दिखाई जाती है. अगर फिल्म अच्छी हो तो और भी ऊंचे दाम वसूल किए जाते हैं. अगर भारतीय फिल्मों का आयात आरंभ हो गया तो इन लोगों का व्यापार भी ठप्प हो जाएगा.

जो भी हो, अगर भारतपाक में कोई ऐसा समझौता होता है, तो उस का स्वागत किया जाना चाहिए. इस से भी दोनों देशों में संबंध सुधरने में मदद मिलेगी.

'मेरे पति की पत्नी'

भाग्यश्री प्राडक्शन की फिल्म 'मेरे पति की पत्नी' का निर्देशन ब. स. थापा कर रहे हैं. गीत इंदीवर ने लिखे हैं तथा फोटोग्राफी रामचंद्र की है. फिल्म संगीत कल्याणजी आनंदजी ने दिया मुख्य कलाकार सुनील दत्त, जरीना वहाब रेखा तथा राधा सलूजा हैं.

'छैला बाबू'

जाय मुखर्जी फिल्म 'छैला बाबू' निर्माण कर रहा है. इस फिल्म में नायक और नायिका की भूमिका राजेश खन्ना व जीनत अमान ने निभाई है. अन्य कलाकार रंजीत, पद्मा खन्ना, मनमोहन गुलशन अरोड़ा हैं.

मनोरंजन कर में वृद्धि

दिल्ली निगम ने सिनेमा टिकटों पर मनोरंजन कर बढ़ाने का निर्णय किया है. इस समय यह 60 प्रतिशत है यानी एक रुपए की टिकट एक रुपया साठ पैसे में बिकती है. नए निर्णय के अनुसार

(नीचे) 'छैला बाबू' में राजेश खन्ना और जीनत अमान, (दाएं) 'मेरे पति की पत्नी' में सुनील दत्त और जरीना वहाब.

मनोरंजन कर शत प्रतिशत कर दिया जाएगा और एक रुपए की टिकट के लिए दर्शकों को दो रुपए देने पड़ेंगे.
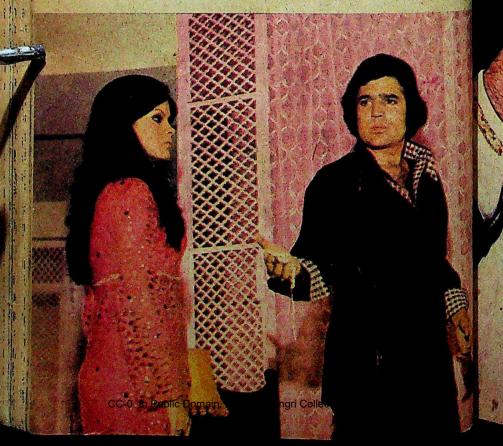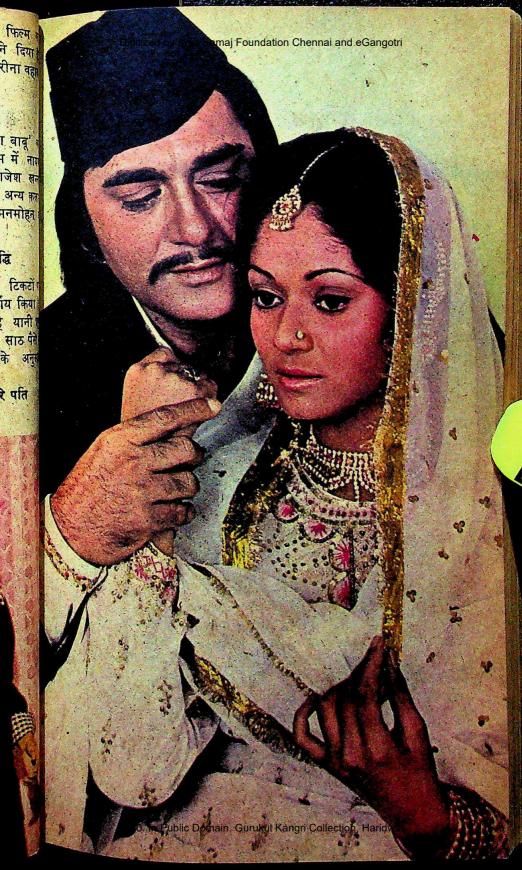
भारी मनोरंजन कर के कारण दर्शक पहले ही चीख रहे हैं, उस पर दिल्ली निगम पैसा बटोरने के चक्कर में मनोरंजन कर और बढ़ा रहा है. यह अन्याय ही नहीं, अत्याचार है कि एक व्यक्ति लाखों रुपए लगा कर और हानिलाभ का जोखिम उठा कर एक रुपया ले और निगम बिना कुछ किए, बिना किसी प्रकार का जोखिम उठाए एक रुपए की टिकट के साथ एक रुपया मुफ्त में ले जाए. फिर इस रकम में से सिनेमा-उद्योग के कल्याण पर एक पैसा भी खर्च नहीं होता, बल्कि फिजूलखर्ची में उड़ा दिया जाता है. अब जब कि 60 प्रतिशत में निगम की फिजूलखर्ची पूरी नहीं हो रही तो कर बढ़ा कर शत प्रतिशत किया जा रहा है. लेकिन यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कर बढ़ जाने से और कोई लाभ नहीं होगा, केवल निगम में लंबेचौड़े बजट बनने के साथसाथ फिजूलखर्ची और भी बढ़ जाएगी.

इस समय निगम में जनसंघ का प्रशासन है, जो देश में एक विरोधी दल है. मनोरंजन कर बढ़ा कर वह अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है. वह कांग्रेस द्वारा लगाए गए भारी करों का तो विरोध करता है और स्वयं भारी कर लगाता है तो इस कथनी और करनी में अंतर देख कर कौन नागरिक उस की नीति पर विश्वास करेगा?

एक तरफ भारत है, जहां मनोरंजन कर का बोझ दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है, और उधर जापान में इन्हीं दिनों निम्न दर की सिनेमा टिकटों पर मनोरंजन कर पूर्णतः समाप्त कर दिया गया है. याद रहे, वहां पहले ही पांच या दस प्रतिशत कर लागू है. हमारे प्रशासन जापान की उन्नति देख कर तो प्रभावित व चकित होते हैं, लेकिन वहां की सरकार द्वारा अपनाई गई जनकल्याणकारी नीतियों की तरफ नहीं देखते.

फिल्मी कलाकारों द्वारा पत्रिकाओं विरुद्ध कदम

बंबई में फिल्म कलाकारों ने ऐसे पत्रपत्रिकाओं के विरुद्ध कदम उठाने का निश्चय किया है, जो अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए मनगढ़ंत सच्चीझूठी खबरें छापते रहते हैं और उन्हें बदनाम करने में लगे रहते हैं.

उन्होंने यह भी निर्णय किया है कि ऐसे पत्रों के प्रतिनिधियों को न तो शूटिंग के दौरान स्टुडियो आदि में घुसने दिया जाए और न ही कोई कलाकार उन्हें इंटरव्यू दे. ऐसी पत्रिकाओं में छापने के लिए फोटोग्राफ देने से भी उन्हें मना कर दिया जाए.

इस संबंध में पहल दिलीपकुमार की तरफ से की गई है. क्योंकि उसे और सायरा बानो को ले कर अनेक प्रकार की अफवाहें उड़ाई जा रही हैं. इस में फिल्म क्षेत्र के सभी पक्षों और सभी प्रकार के फिल्मी संगठनों ने पूर्ण आश्वासन व विश्वास दिलाया है.

सब से पहले बंबई की एक फिल्म पत्रिका के विरुद्ध कदम उठाने का निर्णय किया जा रहा है. उपरोक्त पत्रिका द्वारा एक समारोह का आयोजन किया जा रहा था, जिस का फिल्मी क्षेत्र द्वारा पूर्ण बहिष्कार किया गया.

निःसंदेह अफवाहों और गपशप की पत्रकारिता बंद होनी चाहिए, लेकिन इस के लिए भी स्वयं फिल्मी कलाकार जिम्मेदार हैं. कुछ कलाकार ऐसे हैं, जो हर प्रकार से पत्रिकाओं में समाचारों का विषय बने रहना चाहते हैं, चाहे उन के बारे में कुछ भी छाप दिया जाए. वे समझते हैं कि इसी प्रकार उन का फिल्मी भविष्य सुरक्षित रह सकता है कि वे चर्चा का विषय बने रहें.

दूसरे, सच्चीझूठी खबरें भी पूर्णतः मेज पर बैठ कर गढ़ी नहीं जातीं, उन में भी सच्चाई का कुछ अंश जरूर होता है. प्रश्न उठता है कि इन फिल्मी संवाद-दाताओं तक ये झूठीसच्ची खबरें कैसे

'जमीर' में अमिताभ बच्चन और शशि कपूर.

पहुंचती हैं? वास्तव में कलाकारों में भी परस्पर ईर्ष्याद्वेष की भावना रहती है. एकदूसरे के बारे में अफवाहें फैलाने में भी इन्हीं कलाकारों का हाथ रहता है. इस प्रकार जब तक स्वयं फिल्म वाले ऐसी बातों से बाज नहीं आएंगे और जब तक अफवाहों पर पलने वाले कलाकार रहेंगे, ऐसी गपशप के कालम चलते ही रहेंगे.

बलदेवराज चोपड़ा का 'जमीर'

निर्माता बलदेवराज चोपड़ा फिल्म 'जमीर' का निर्माण कर रहे हैं. गीत साहिर के हैं और संगीत सपन चक्रवर्ती का है. मुख्य कलाकार अमिताभ बच्चन, सायरा बानो, शशि कपूर और शम्मी कपूर हैं.
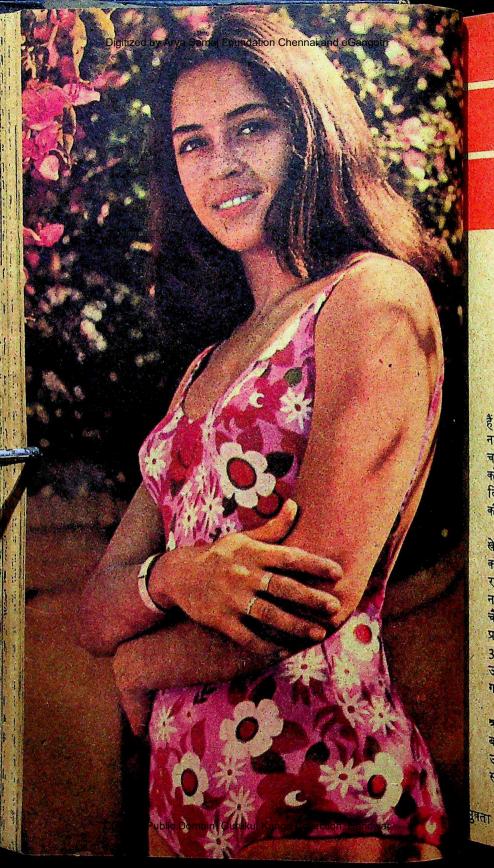
उभरती प्रतिभाएं

नफीसा अली

17 वर्षीया नफीसा अली हुगली जिले के एक समृद्ध घराने से संबंध रखती हैं. छः वर्ष की आयु में ही पिता द्वारा तैराकी का प्रशिक्षण ले कर कुमारी नफीसा अली ने पश्चिम बंगाल के तैराकी क्षेत्र में अनेक रिकार्ड तोड़ कर हलचल सी मचा दी. उस के अभिभावकों ने अद्भुत प्रतिभा देख कर नफीसा को पश्चिम बंगाल के 'इंडियन लाइफ सेविंग सोसाइटी' में विशिष्ट शिक्षा के लिए दाखिला दिलाया. वहां बंगाल के सुप्रसिद्ध तैराक अनिल दास गुप्ता ने उस की प्रखर योग्यता देख उसे तैराकी का विशेष प्रशिक्षण दिया.

14 वर्ष की आयु में ही नफीसा ने राष्ट्रीय तैराकी संघ की 40 वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में 4×50 मीटर मेडले में भारत की दक्ष तैराक गीता डे को पराजित कर सब को आश्चर्यचकित कर दिया. इस बीच उस ने धीरेधीरे राज्य के विभिन्न पदक एवं ट्राफियां जीत लीं. हाई स्कूल में पढ़ रही नफीसा ने 1972 में राष्ट्रीय स्कूल खेलकूद प्रतियोगिता में एवं राष्ट्रीय एक्वेटिक चैंपियनशिप में कई पदक जीते, जिस में दो स्वर्ण पदक भी थे. 1973 में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उस ने श्रीलंका के विरुद्ध 200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में 3 मिनट 24.1 सेकंड का समय लिया जो पूर्व रिकार्ड से अच्छा था. इस कम उमर में ही नफीसा ने राज्य की महिला तैराकी टीम का नेतृत्व कर अनेक बार गौरव का परिचय दिया.

उस के परिवार वालों ने नफीसा के फिल्मों में काम करने के भावी कार्यक्रम को अफवाह बताया. नफीसा की अनेक अभिरुचियां हैं, जैसे—फोटोग्राफी, बागवानी, विभिन्न खेलों में भाग लेना तथा फैशन व माडलिंग का काम करना. उस की महत्वाकांक्षा विश्व की प्रसिद्ध तैराक बनने की है. नफीसा कमरे की साजसज्जा करने की कला में भी निपुण है. ●

रमा (शर्मिला) और इंद्रजीत (संजीव) प्यार करते हैं, पर परिस्थितियोंवश बिछुड़ जाते हैं.

पखवाड़े की फिल्म

चरित्रहीन

'चरित्रहीन' में कोई नई समस्या नहीं उठाई गई, लेकिन निर्देशक शक्ति सामंत ने समाज की ठुकराई हुई एक स्त्री की कहानी को इतने प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है कि फिल्म का उद्देश्य पक्ष तो उभरता ही है, अनेक भावपूर्ण स्थलों के कारण हृदय-स्पर्शी भी बन गई है. निर्देशक शक्ति सामंत को एक बात का श्रेय जरूर जाता है, उस ने एक पतित स्त्री की कहानी हाथ में ली है, किंतु परदे पर सेक्स या अश्लीलता नहीं आने दी. कहानी का स्तर ऊंचा उठा रहता है. शक्ति सामंत अनेक स्थलों पर अनावश्यक विस्तार में जाने से बचा है और कई दृश्यों को बड़े ही संक्षिप्त किंतु प्रभावी रूपों में प्रस्तुत कर गया है.

हमारी आम बंबईया फिल्मों की परिपाटी से हट कर बनी फिल्मों में एक दोष बहुत उभर कर आ जाता है कि उन में कहानी का विशेष महत्त्व नहीं रहता. मुख्यत: घटनाओं का ही चक्र चलता रहता है. हाल ही में बनी 'रजनीगंधा' इस उदाहरण है. 'चरित्रहीन' न केवल घटनाओं से बल्कि कहानी की दृष्टि से सफल फिल्म है. सभी घटनाएं एकदूसरी गुंथी हुई हैं. फिल्म के आरंभिक भाग कुछ बिखराव और शिथिलता अवश्य किंतु मध्यांतर के बाद कहानी में और वेग आ जाता है, जो दर्शकों अपने प्रवाह के साथ बहा ले जाता है.

परदे पर अधिकतर भले ही इंद्र मुखर्जी (संजीवकुमार) रहा हो, कहानी का केंद्रबिंदु रमा (शर्मिला टैगो है. वह एक लंबी अवधि तक परदे गायब रहती है. अंत में प्रकट होती तो एक विस्फोट की तरह, जो समाज व्याप्त बुराइयों को एक ही सांस में उ कर रख देती है.

रमा इंद्रजीत से प्यार करती है उस की शादी एक लंपट शराबी (मनमोहन) से हो जाती है. के जुल्मों से तंग गर्भवती रमा को अपने घर ले आता है. पर यहां उस

मां रमा को चुपचाप निकाल देती है पर रमा के गहने इंद्रजीत के पास रह जाते हैं, जिन के सहारे वह एक बहुत बड़ा कारखानेदार बन जाता है और कमला (योगिता बाली) से शादी कर लेता है.

इंद्र व्यापार के सिलसिले में दिल्ली जाता है, जहां उस की भेंट रमा उर्फ रोजी से होती है जो शरीर बेच कर ठाठ से रहती है. क्या वास्तव में कालगर्ल इतना पैसा कमा सकती है जितना कि बंबई फिल्म वाले दिखाते हैं? उस की बेटी भी है जो शिमला में पढ़ती है. उधर उसी दौरान कमला का भाई अविनाश (मदन पुरी) कारखाने से लाखों रुपए का गबन कर लेता है. इतना ही नहीं, कमला और इंद्र के छोटे भाई जयदेव (असरानी) को भी इंद्र के खिलाफ भड़का कर उन के घर में कलह का वातावरण पैदा कर देता है.

अंत में सारी स्थिति स्पष्ट होती है तो इंद्र व कमला रमा की बेटी को अपना लेते हैं और रमा अपने जीवन की लीला समाप्त कर लेती है.

रमा की समस्या के साथ लेखक 'चरित्रहीन' में कई अन्य समस्याएं भी उठा गया है. बताया गया है कि व्यापार में बिना परखे किसी का भी विश्वास नहीं करना चाहिए, इंद्रजीत अपने साले अविनाश (मदन पुरी) पर विश्वास कर के सारा कारोबार उस पर छोड़ देता है, जो तीन लाख रुपए का गबन कर के उस का व्यापार चौपट कर देता है.

अनमेल विवाह की हानियां भी सामने आती हैं. रमा का पिता बूढ़ा हो कर भी एक जवान स्त्री से शादी करता है, जिस के दबाव में आ कर वह अपनी बेटी रमा का विवाह एक बूढ़े विधुर से करने को

रमा (शर्मिला) का पति अजीत (मनमोहन) उस पर अत्याचार करता है. इंद्रजीत (संजीव) गर्भवती रमा को अपने घर ले जाता है, जहां से इंद्रजीत की मां रमा को चुपके से भगा देती है.
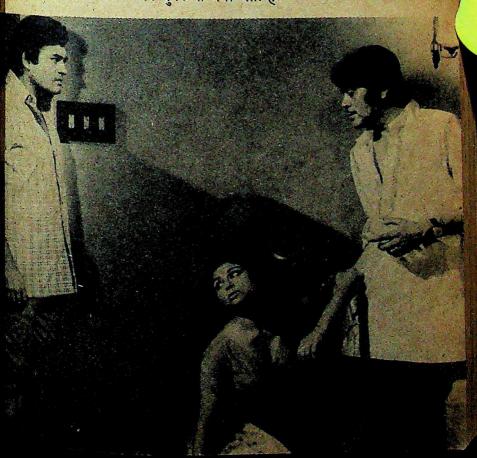
तैयार हो जाता है. बचने के लिए रमा एक युवक अजीत से शादी कर लेती है, जो बाद में एक शराबी बदमाश निकलता है और रमा का जीवन तबाह हो कर रह जाता है. ऐसी ही और भी अनेक छोटीमोटी समस्याएं सामने आती हैं, कमला का अपने पति पर विश्वास न कर के और वास्तविकता जाने बिना अपने भाई के बहकावे में आना आदि हमारे आम जीवन की समस्याएं हैं.

समाज से ठुकराई स्त्री की समस्या एक चिरंतन समस्या है. लेकिन ऐसी स्त्री का जितना विवशतापूर्ण चित्र शक्ति सामंत ने प्रस्तुत किया है, बहुत कम देखने को मिलता है. सब से बड़ी बात तो यह है कि उस के प्रति सहानुभूति का रुख अपनाया गया है. कदमकदम पर यह स्पष्ट किया गया है कि जो समाज उसे चरित्रहीन समझता है, वही समाज उसे चरित्रहीन बनाने के लिए जिम्मेदार है. वह तो मजबूर थी. समाज ने ही उस की मजबूरी का अनुचित लाभ उठा कर उसे चरित्रहीन बनाया. इस का सब से बड़ा प्रमाण यह भी है कि वह अपनी बेटी को इस कीचड़ से दूर रखना चाहती है, इस के लिए वह बलिदान भी करती है. उस की मां बनने का अधिकार तक छोड़ देती है और उसी की आंटी बन कर रहती है. निर्देशक ने जितने सुंदर रूप में समस्या को उठाया है, उतने ही सुंदर रूप में हल भी कर गया है.

कहानी के अनेक स्थल हृदय की गहराई में उतर जाते हैं. रमा इंद्र के साथ अपनी बेटी से मिलने शिमला जाती है. वहां पता चलता है कि उस ने स्कूल में बेटी के पिता का नाम इंद्रजीत मुखर्जी लिखवा रखा है. यहां पर इंद्र और रमा के कुछ संवाद दिल को छू जाते हैं.

भाई से जायदाद में हिस्सा बंटाने के लिए जयदेव मुखर्जी (असरानी) इंद्र पर मुकदमा कर देता है. वहां अदालत में आ कर रमा जो बयान देती है, वह भले ही कुछ नाटकीय हो गया हो और यथार्थ के धरातल पर सही न उतरता हो, लेकिन यही फिल्म का [illegible] भावपूर्ण स्थल है. शर्मिला [illegible] शाट जितने सुंदर रूप में दिया है, [illegible] ही बनता है. यह एक दृश्य ही फि[illegible] पूरे उद्देश्य को उजागर कर गया है.

शक्ति सामंत ने फिल्म का [illegible] बड़े सुंदर रूप में किया है. अंत में [illegible] की मृत्यु न दिखा कर फिल्म को नाटकीयता से बचा लिया गया है [illegible] और कमला रमा से मिलने हो[illegible] उस के कमरे में जाते हैं. कमरे में [illegible] की बेटी के अतिरिक्त उन्हें एक [illegible] मिलती है, जिस में आत्महत्या का [illegible] मात्र कर दिया गया है. इस प्रकार [illegible] को पूर्णतः दुखांत होने से भी बचा [illegible] गया है. दर्शक दुखसुख की अजी[illegible] अनुभूति के साथ हाल छोड़ता है. 'चरित्रहीन' की विशेषता है.

फिल्म की एक ही कमजोरी है, [illegible] बख्शी के गीत और राहुल का [illegible] गीत नीरस हैं और व्यर्थ में ठूंसे गए हैं. अगर गीत काट दिए जाते तो [illegible] और भी अच्छी बन सकती थी.

अभिनय पक्ष से शर्मिला फि[illegible] छाई हुई है. रमा की कठिन भूमि[illegible] बड़ी ही कुशलता से निभा कर [illegible] अपने कुशल अभिनेत्री रूप को सि[illegible] दिया है.

इस भूमिका में उसे प्रेमि[illegible] ले कर कार्ल गर्ल और मां आदि [illegible] रूपों में परदे पर आना पड़ा है औ[illegible] सभी रूपों में एक से एक बढ़ कर [illegible] रही है.

उस की भूमिका की सब से [illegible] विशेषता यह है कि चरित्रहीन हो [illegible] उसे उच्च चरित्र का दिखाया है. [illegible] से उसे कष्ट ही मिलते हैं, फिर [illegible] समाज में दुख नहीं, सुख ही बांट[illegible] इंद्र उसी के गहने बेच कर अमीर कार[illegible] दार बनता है. अंत में भी वही अ[illegible] में प्रकट हो कर और अपने चरि[illegible] स्वयं कीचड़ उछाल कर भी वह [illegible] घर में नष्ट हुई शांति दोबारा दे[illegible] है. वह फिल्म का सब से पतित [illegible]

दोब[illegible]

कितु [illegible] कहीं [illegible] पीछे [illegible] छिपा [illegible] चरित्र [illegible] कि वे [illegible] इस क[illegible] अभिन[illegible] निर्देश[illegible]

क[illegible] एक गृ[illegible] और [illegible] इंद्रजीत [illegible] साधार[illegible] होता [illegible] मुकला[illegible]
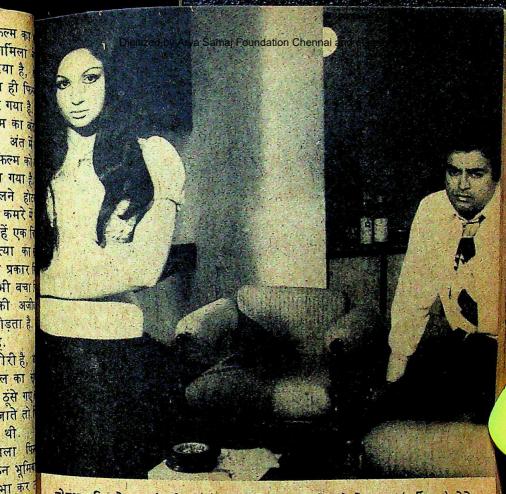
दोबारा मिलने पर इंद्रजीत (संजीव) को पता चलता है कि रमा (शर्मिला) ऐसे मार्ग पर चल रही है, जिस से सभी उसे चरित्रहीन समझते हैं.

किंतु उस में अन्य सभी से इनसानियत कहीं अधिक है. उस के हर कार्यकलाप के पीछे इनसानियत का कोई न कोई पहलू छिपा है. इन्हीं सब बातों ने रमा का चरित्र इतना सहानुभूतिपूर्ण बना दिया है कि वे कष्ट दर्शक के अपने बन जाते हैं. इस का सारा श्रेय शर्मिला टैगोर के सफल अभिनय और शक्ति सामंत के प्रभावी निर्देशन को जाता है.

कमला के रूप में योगिता बाली को एक गृहिणी की भूमिका निभानी पड़ी है और वह भी असफल नहीं रही. नायक इंद्रजीत की भूमिका में संजीवकुमार साधारण रहा है. वह दिन ब दिन मोटा होता जा रहा है. और जब वह पतली-दुबली कम उमर वाली लड़कियों से प्रेम करता है तो बड़ा बेतुका लगता है. वैसे भी कहानी में नायक इंद्रजीत इतना बेजान है कि वह हर परिस्थिति के सामने घुटने टेक देता है, कहीं भी साहस का परिचय नहीं देता.

असरानी, मनमोहन, उत्पल दत्त, चंद्रशेखर, अपर्णा चौधरी, नंदिता ठाकुर, सुजीतकुमार, मदन पुरी, रजा मुराद, असित सेन आदि अनेक प्रसिद्ध कलाकार फिल्म में काम करते हैं और अपनी भूमिकाएं सुंदर रूप में निभा गए हैं.

फिल्म के संवाद अत्यंत भावपूर्ण हैं. पटकथा को और भी सुधारा जा सकता था. फोटोग्राफी सुंदर है. ●

कहानी • म. प. मंविचार

ईमानदार धोखा

बीस हजार का धोखा खाने के बाद नवाब जामनखां को र
और जब रमेश उन की साख पर भी उंगली उठाने लगा

लेटर बक्स में पड़े लिफाफे पर लिखा हुआ था : 'श्री एम. खान, जामन मेंशन...' नवाब साहब गुस्सा आ गया और उन्होंने पत्र को भग फेंक दिया.

"बुरा हुआ," उन्होंने धीरे से "यह मेरा नाम है...स्मृतियां कि अल्पकालिक और नुकसानदेह हो स हैं...जब मैं सत्तारूढ़ था तब मुझे प्रकार कौन संबोधित कर सकता था

सचिव, जो उन से अधिक दूर था, उन के पास आया.
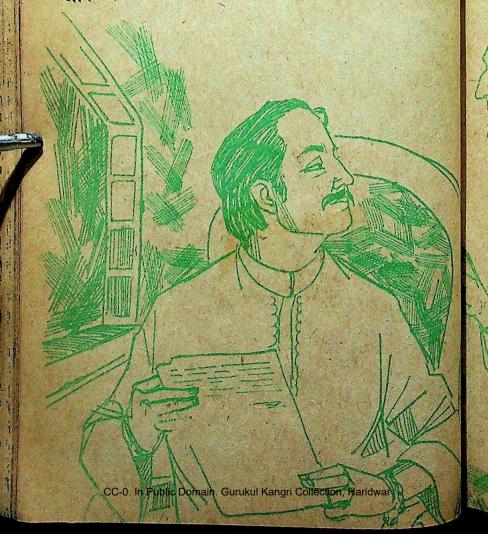
"सरकार, उसे मुझे खोलने दीजिए," उस ने कहा, "[illegible] धन के लिए प्रार्थनापत्र."

नवाब ने लिफाफा उलटा और प्रेषक का नाम पढ़ा : 'रमेश आटो सेल्स.'

"उस बूढ़े चालबाज का पत्र कौन पढ़ना चाहेगा," पत्र सचिव को देते हुए नवाब ने कहा.

"यह कैसा आदमी है! केवल तीन वर्ष पूर्व आए उस के पत्रों की मुझे अच्छी तरह याद है. उन पर उपाधियों सहित तीन लाइनों वाला नाम लिखा होता था

के नाम से चिढ़ होने लगी थी... वह क्रोध से फुंकार उठे...

और आप के सारे खिताबों का उल्लेख रखता था. अब वह आप का इस प्रकार उल्लेख करता है मानो आप कोई क्लर्क हों," सचिव ने कहा.

"व्यक्तिगत रूप से मैं इन बातों की बहुत अधिक परवा नहीं करता, लेकिन यह पत्र क्योंकि एक ऐसे कपटी का है जिस ने मुझे 'राल्स' के मामले में बीस हजार रुपए का धोखा दिया था, अत्यंत आपत्तिजनक प्रतीत होता है. जरा सोचिए, जब फ्रांसीसी और रूसी कुलीन व्यक्तियों को अपनी उपाधियों का प्रयोग करने दिया जाता है तो पता नहीं क्यों हमारी उपाधियों और खिताबों को उन लोगों के द्वारा छीना जा रहा है जिन्होंने उन को नहीं दिया है."

इसी बीच सचिव ने पत्र पढ़ा. "वह यह जानना चाहता है कि क्या आप के पास बिक्री के लिए अच्छी किस्म की कारें हैं," उस ने बताया.

"वह नीच यह सोच रहा होगा कि मुझे 'राल्स' के मामले में उस के द्वारा दिए गए धोखे का पता नहीं चला. यदि उस ने उसे मुझ से खरीदा होता और उचित लाभ के साथ बेचा होता तो मुझे कोई शिकायत न होती. लेकिन मुझ से यह वादा कर के कि उस की जो कुछ भी अधिक से अधिक कीमत मिलेगी, उस का वह केवल 10 प्रतिशत लेगा, उसे मेरी जिम्मेदारी पर अपने पास रखना और तब 10 प्रतिशत के अतिरिक्त बीस हजार रुपए और ऐंठ लेना अनैतिक कार्य है और उस के इस कार्य को धोखा ही कहा जाएगा—और विशेष रूप से आजकल जब कि पुराने दिनों के विपरीत मुझे धन की अत्यधिक आवश्यकता है."

"धन पैदा करने के मामले में इन लोगों को कोई झिझक नहीं होती है. वे नैतिकता की परवा नहीं करते. उन की नजर केवल धन पर रहती है," सचिव ने टिप्पणी की, "जहां तक मुझे पता है, वृद्ध रमेश अब व्यापार नहीं कर रहा है. अब उस का लड़का, जिस का नाम भी रमेश है, व्यापार चला रहा है."

"अरे, उस का लड़का भी है, क्या यह बात सच है? उस से तो यह आशा की जाती है कि वह धन कमाएगा, यहां तक कि विवाह के द्वारा भी."

"सरकार, उस ने हमें एक अच्छा पाठ पढ़ाया है," सचिव ने धीरे से कहा.

"हां आजकल हमें पाठ ही प्राप्त होते हैं, पाठ और उन की कीमत."

"हवा बदल गई है," सचिव ने कहा, "सरकार, इन पाठों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए."

"ठीक है. हवा बदलने इत्यादि के मामले में मुझे राय देने वाले क्योंकि एकमात्र तुम ही हो, इसलिए अपनी इस अपार संपत्ति से थोड़ा साधन प्राप्त करने के बारे में तुम मुझे कोई सुझाव क्यों नहीं देते? मुझे यह अनुभव होने लगा है कि हम पक्षपातपूर्ण लोकतंत्र में रह रहे हैं. वह सत्तारूढ़ लोगों का पक्षपाती है."

"सरकार, आप एक दार्शनिक और कवि हैं तथा इस पुरानी कहावत की सत्यता जानते हैं कि एक न एक दिन सब की किस्मत जागती है. यह समाजवाद का एक लगभग अखंड नियम है. फिर भी यदि आप मेरे साथ सहयोग करें तो मेरी रमेश से कुछ धन वापस लेने की योजना है."

"उस चालबाज से धन खींचने के लिए तुम्हें और मुझे मिला कर भी अधिक बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यकता है. मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि उस का पुत्र उस से कम बुद्धिमान होगा. यदि तुम्हारी और अधिक विनियोग की कोई योजना है तो उसे भूल जाओ. धोखा खा जाने के बाद और अधिक धन लुटाना बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य नहीं है."

"आप 10 वर्ष से भी अधिक समय से रमेश से नहीं मिले हैं. आप की वित्तीय स्थिति के बारे में उस की राय उस से कहीं खराब होगी, जैसी कि वह वास्तव में है."

"अच्छा, तब तो यदि मैं उस से कहूं तो वह मुझे टैक्सी का किराया भी उधार नहीं देगा. इस तरह कैसे बात बनेगी?"

"सरकार, आप सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए, मैं ने सारी योजना बना ली है और वह असफल नहीं हो सकती. हमें सीधे बंबई जाना चाहिए. मैं सब कुछ आप को समझा दूंगा."

"सावधान रहना अधिक अच्छा है. अपने घनिष्ठ मित्र और वकील के सीनियर के कांड के बाद से मैं किसी पर भी विश्वास नहीं करता."

सचिव ने अपनी योजना की गहराई के बारे में नवाब साहब को आश्वस्त कर दिया और वे अगले ही दिन बंबई के लिए चल पड़े.

नवाब और उन के सचिव टैक्सी से बाहर आए और 'रमेश आटो सेल्स' के विशाल शो रूम में प्रविष्ट हुए. एक फुर्तीले सेल्समैन ने उन का स्वागत किया.

"मुझे अच्छे किस्म की एक आयातित कार की आवश्यकता है. मैं ने सुना है कि तुम ने कुछ कारें बिक्री के लिए स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन से प्राप्त की हैं."

सेल्समैन उन्हें जनरल मैनेजर रमेश जूनियर के पास ले गया. परस्पर अभिवादन और कुछ जलपान के बाद रमेश जूनियर उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ 'कार मर्सीडीज स्पोर्ट्स स्पेशल' के पास ले गया.

"हम ने इसे दो लाख रुपयों में खरीदा है," रमेश जूनियर ने कहा, "लेकिन हमारी आशाओं के विपरीत इस प्रकार की कारों की मांग कम हो गई है, विशेष रूप से सरकार द्वारा हाल ही में अधिकतम सीमा निर्धारित कर देने के बाद."

"अच्छा. लेकिन एक कार के लिए यह कीमत कुछ अधिक है, यद्यपि शायद 'राल्स' या 'बैंटले' के लिए नहीं," नवाब ने टिप्पणी की.

"श्रीमानजी, आप की 'राल्स' अब उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं रही जितनी कि पहले कभी थी. क्या आप ने नवीनतम समाचार नहीं सुना है? उन का बाजार कम हो गया है क्योंकि एक अमरीकी

धोखा दे कर रमेश चैन से बैठे, यह नवाब साहब बरदाश्त नहीं कर सके और एक दिन उन्होंने रमेश से अनोखा बदला लेने की ठान ली...

के साथ किए गए अनुबंध पर अमल नहीं किया जा सका. फिर भी उन का निर्माण कुछ संख्या में हो रहा है."

"यह मैं जानता हूं. जब यह हुआ, उस समय मैं इंगलैंड में था. फिर भी मुझे इस कार की कम से कम कीमत बताओ," रमेश जूनियर की बिक्री संबंधी बात को बीच में काटते हुए नवाब ने अपनी बात कही.

रमेश, जिस ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि नवाब जैसा पुराना रईस इतनी कीमती चीज खरीद सकता है, आश्चर्यचकित रह गया. उस ने कीमत को थोड़ा कम करने का निश्चय किया. आखिर वह सवा लाख रुपए में खरीदी गई थी और यदि रुका हुआ धन प्राप्त हो जाता तो कम लाभ में भी कोई चोट न पहुंचती. "नवाब साहब, जैसा कि मैं ने आप से कहा है, इस कार की कीमत दो लाख रुपए है. इस के बावजूद हम उसे आप जैसे ग्राहक को खरीद की कीमत पर बेचने के लिए तैयार हैं," कह कर उस ने नवाब साहब की ओर तेज निगाहों से देखा और उन की आंखों में बिलकुल भी उत्साह न देख कर फिर कहा, "यदि आप की वास्तव में बहुत अधिक इच्छा है तो हम इसे कुछ हानि के साथ भी बेच सकते हैं," उस ने मुसकरा कर आगे कहा, "लेकिन एक कार में इतना अधिक धन लगा देना उचित नहीं."

"ठीक है," नवाब ने उत्तर दिया, "मैं कल फिर आऊंगा. तब मैं यह आशा करूंगा कि तुम मुझे इस कार की कम से कम कीमत बताओगे."

जैसे ही नवाब चले गए, रमेश ने अपने पिता को टेलीफोन किया.

"मैं पार्टी को जानता हूं. लेकिन उस से कुछ बनताबिगड़ता नहीं. पुराने दिनों में उन के पास अनेक कारें हुआ करती थीं और सिर्फ एक गाने के लिए वह अपनी पुरानी कारें फेंक दिया करते थे. अब उन्होंने कुछ मितव्ययिता आरंभ कर दी है. समाजवादी कानूनों ने अधिकारों और संपत्ति को समाप्तप्राय कर दिया है," पिता ने कहा.

"लेकिन उन्होंने यह सौदा पूरा करने के लिए कल आने का वादा किया है."

"तुम उस के बारे में इतने परेशान क्यों होते हो? कैश में उसे सवा लाख रुपए से जितना अधिक हो सके उतनी कीमत में बेच दो."

"कैश? कैश से आप का क्या मतलब है? ऐसा धन किस के पास होता है? वह तो चैक ही देंगे और मैं केवल यह पता लगाना चाहता हूं कि क्या इतनी बड़ी धनराशि के लिए मुझे उन का चैक स्वीकार करना चाहिए?"

"बाहर के किसी स्थान का चैक नहीं, बल्कि मैं तो यह सुझाव दूंगा कि तुम क्योंकि केवल मैनेजर हो इसलिए तुम्हें इस बात का अधिकार है कि कार तभी दो जब कि चैक कैश हो जाए. यदि वह कोई स्थानीय चैक दें तो अपने अकाउंटेंट के द्वारा बैंक को फोन करा लेना और उस की सच्चाई का पता लगा लेना."

"बेशक, डैडी, मैं यही करूंगा," जूनियर ने उत्तर दिया. तब यह अनुभव करते हुए कि उस के साथ एक स्कूली बच्चे की भांति व्यवहार किया गया है जिस ने चैकों और उन्हें काम में लाने के तरीकों के बारे में सुना तक नहीं, उस ने कहा, "वास्तव में मैं इस बात का पता लगाना चाहता था कि यदि आप उन्हें अच्छी तरह जानते हैं...मेरा मतलब है कि क्या उन की 'राल्स' की बिक्री के मामले में कोई ऐसी बात हुई है, जिस से हम मैं

बहुत अधिक धन एकत्र कर लिया हो?"

"क्या तुम यह समझते हो कि मैं उतना ही कच्चा हूं जितने कि तुम? हमारी खरीदफरोख्त और लाभ का उन्हें कैसे पता चल सकता है?" पिता ने झिड़का, जिन्हें ऐसे प्रश्न पसंद नहीं थे.

अगले दिन नवाब अकेले आए, इधर-उधर घूमे और अन्य अच्छी कारों का मुआयना किया. उन में से एक को वह ट्रायल के लिए ले गए और तीसरे पहर कुछ देर से लौटे. रमेश पर इस का वह पहला असर तरोताजा हो गया कि नवाब अपने स्रोतों के कम हो जाने के कारण इतनी अधिक कीमत का प्रबंध नहीं कर पाए और सारी भागदौड़ के बेकार हो जाने से वह कुछ निराशा सी अनुभव कर रहे हैं. उस ने कारों को कुछ दर्प के साथ दिखाया, "आप को हमारी कारें कुछ अधिक कीमती प्रतीत हो रही होंगी, इन दिनों हम इसे खरीदने के लिए किसी फिल्म स्टार के आने की आशा कर रहे थे. लेकिन हाल ही में आरंभ हुई जांच-पड़ताल के बाद वह भी अब कुछ घबराए हुए प्रतीत होते हैं."

"मैं फिल्म प्रेमी नहीं हूं और मुझे तुम्हारी यह बात भी पसंद नहीं है, जिस का यह अर्थ है कि मैं केवल मनोरंजन के लिए मुफ्त में सवारी कर रहा हूं," नवाब मुबारक जामनखां ने अत्यंत शान के साथ ऐसी आवाज में कहा जिस से किसी जमाने में सहस्रों लोग कांप उठते थे. उन के व्यक्तित्व और रोब ने अभी उन का साथ नहीं छोड़ा था.

रमेश हक्काबक्का रह गया. उस ने सोचा कि इतने बड़े आदमी को अप्रसन्न करना उचित नहीं है, उन का बहुत अधिक प्रभाव है तथा अन्य भी बातें हैं. शक्ति चंचल चीज है, आज यहां कल वहां. वह ठोस पृष्ठभूमि की उपज हैं. शत्रु की भांति भयानक. उन के साथ सावधानीपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए. जल्दी में बात संभालने के लिए वह दूसरे सिरे तक जा पहुंचा.

"नवाब साहब, मैं हजार बार मांगता हूं. मेरा निश्चय ही यह म नहीं था. वह हो भी कैसे सकता पहले भी आप और हम मिल कर पैसे का लेनदेन कर चुके हैं. और इस की कुछ कारों से पुराने समय में आ अकाउंट में कुछ भी अंतर न प लेकिन सरकार के ये समाज विचार..."

"मेरे पास राजनीति की चर्चा के लिए न तो समय है और न उ मेरी रुचि है. हमें कारों के बारे में करनी चाहिए और जिस बात को कभी नहीं समझ सकते उस पर बरबाद करना उचित नहीं. अपने मियों से 'मर्सडीज' साफ करने, को भरने, तेल की परीक्षा करने और उसे लेने तथा ड्राइव करने से पूर्व कुछ देख लेने को कहो."

"नवाब साहब, जरूरजरूर... जैसा कहें." उस ने सर्विस इंजीनियर कुछ कहा और व्यक्तिगत रूप से सब देख लेने की हिदायत दी. तब वह तेज मुसकराहट के साथ नवाब साहब ओर मुड़ा और अपनी आवाज में पु मधुरता लाते हुए कहा, "यद्यपि इ अच्छी कार पर नुकसान उठाना ठीक न लेकिन फिर भी मैं अपनी बात पर का रहूंगा और उसे आप को दो लाख में दे दूंगा."

"मैं यह जानता हूं कि तुम्हें यह टी. सी. से सवा लाख रुपए में मिली और मैं एक ऐसी फर्म से इतने बड़े

की आशा नहीं करता जिस के साथ मैं ने इतना बड़ा व्यापार किया है, यद्यपि तुम्हारे बड़ा होने से थोड़ा पहले."

इस पर जूनियर अवाक रह गया. "आप को उस प्रत्येक बात पर," उस ने शीघ्रतापूर्वक कहा, "विश्वास नहीं कर लेना चाहिए जो आप इस प्रकार के व्यापार के बारे में सुनते या पढ़ते हैं. हमें कुछ औपचारिकताएं निभानी पड़ती हैं जिन की संख्या काफी अधिक है. आप को यह ज्ञात नहीं कि इस कार्य में कितनी परेशानियां आती हैं और कितना अधिक धन व्यय होता है."

"यह तुम्हारा पक्ष है," नवाब ने अपनी आवाज में कुछ नरमी लाते हुए कहा, "लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि ऐसी नीलामियों में, जिन की ओर पूरे राष्ट्र का ध्यान आकर्षित होता है, सरलता से धोखा नहीं दिया जा सकता."

"इस से हमारा कोई काम नहीं बनेगा, नवाब साहब," रमेश ने ऐसे अमरीकी अंदाज और अनौपचारिक ढंग से कहा जिस से उस की राय में क्रुद्ध नवाब को नियंत्रित किया जा सकता था जो अब भी एक शासक की भांति बोल रहे थे. यद्यपि वह थे नहीं.

"व्यक्तिगत बातों को छोड़ो और काम की बात करो. कितनी कीमत? कम से कम, बेकार की बात छोड़ो."

रमेश ने कुछ गंभीरतापूर्वक कहा, "डेढ़ लाख रुपए दे दीजिए, यद्यपि आप को हमारी यह बहुत बड़ी छूट होगी."

"मैं उस के लिए एक लाख तीस हजार का चैक अभी दूंगा अथवा उसे बिल्कुल ही नहीं."

"एक मिनट का समय दीजिए," रमेश ने कहा, "मैं अपने पिता की स्वीकृति प्राप्त कर लूं."

नवाब प्रतीक्षा करने लगे. रमेश ने अपने पिता को फिर फोन किया, "नवाब एक लाख तीस हजार का चैक दे कर कार लेना चाहते हैं. उस की सफाई की जा रही है. मैं यह जानता हूं कि उस के लिए अधिक से अधिक हम इतना ही प्राप्त कर सकते हैं. लेकिन आज शनिवार है और पहले ही काफी देर हो चुकी है. इतनी देर तक कोई भी बैंक कार्य नहीं करता. क्या किया जाना चाहिए?"

"कोई परेशानी नहीं होगी. पहले चैक ले लो. हमारे अकाउंटेंट के लगभग सभी बैंकों में संबंध हैं. उसे फोन करो और इस चैक के बारे में व्यक्तिगत रूप से जांचपड़ताल करने के लिए कहो. कार्य बंद हो जाने के बाद हम उसे कैश करने के लिए नहीं कह रहे हैं. केवल उस की सत्यता के बारे में सही जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं. इसलिए उस के लिए अधिक उछलकूद मचाने की आवश्यकता नहीं. यदि तुम ऐसा नहीं कर सकते तो लगभग आधे घंटे में मैं स्वयं आऊंगा और इस कार्य को निपटाऊंगा."

हार्वर्ड से एम. बी. ए. की डिग्री प्राप्त युवक और अधिक सहन नहीं कर सका. "उसे भुला दीजिए," उस ने फोन

जुल्मत में चमक जाते हैं...

फूलों की तरह नफस महक जाते हैं,
शाखों की तरह बदन लचक जाते हैं,
मिल जाते हैं भटकते हुए दो दिल जो कहीं,
वो रात की जुल्मत में चमक जाते हैं.

—जगन्नाथ 'आजाद'

कहा, "मैं कीमत के बारे में आप की स्वीकृति चाहता था, उन सब बातों के बारे में नहीं जिन की आप मुझे शिक्षा दे रहे हैं. मैं यह जानता हूं कि इस कार्य के उस भाग को किस प्रकार पूरा किया जाए."

"ठीक है, जल्दी करो और इस प्रकार के मामले में कोई गलती मत कर बैठना. हमारे पास यह कार तब तक बनी रह सकती है जब तक कि वह पुरानी न पड़ जाए."

बहुत तेज मुसकराहट के साथ जूनियर ने जवाब से कहा, "श्रीमान-जी, मेरे पिता का आप को नमस्कार. उन की तबीयत कुछ खराब है; नहीं तो आप से मिलने के लिए वह यहां पर आ जाते. उन्होंने आप जैसे ग्राहक के साथ सौदा पूरा करने के लिए मुझे ही नियुक्त किया है." कह कर वह मुसकराता रहा, इस आशा में कि उस के पिता ने नवाब के प्रति जो आदर प्रदर्शित किया है, उस के उत्तर में नवाब कुछ कहेंगे.

नवाब ने अपनी उंगलियों के सिरों से उस के हाथ को कुछकुछ छूते हुए कहा, "खरीद या फरोख्त के लिए उन दिनों मेरे पास इतने अधिक व्यापारी आते थे कि मुझे अब उन का भली प्रकार स्मरण भी नहीं. लेकिन मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि एक समय तुम्हारे पिता भी उन में से एक रहे हैं. फिर भी सौदा पूरा करने के लिए उन्होंने कीमत के बारे में क्या कहा?"

"केवल आप के और आप के लिए," रमेश जूनियर ने कहा, "हम कार को इस कीमत पर बेच देंगे."

और अधिक अच्छा शब्द न मिलने के कारण नवाब ने टिप्पणी की, "मैं इसे ईमानदार धोखा कहूंगा. लेकिन आजकल यही होता है. इसलिए मेरा यह चैक लीजिए."

रमेश जूनियर ने चैक ले लिया और कुछ मिनटों के लिए क्षमा मांगी. उस ने अकाउंटेंट से तुरंत बैंक को फोन करने और चैक के बारे में जांचपड़ताल करने के बारे में कहा. और नवाब साहब को ले जाने के लिए साफ की जा रही थी.

अकाउंटेंट ने घड़ी की ओर देखा और कहा, "अब तक सारे बैंक बंद हो चुके हैं. अब आप मुझ से जानकारी प्राप्त करने की कैसे आशा कर सकते हैं? फिर भी, यह एक प्रतिष्ठित बैंक का चैक है और जहां तक हमारे बहीखातों से पता चलता है यह पार्टी भी सर्वोत्तम पार्टियों में से एक है. फिर भी जिम्मेदारी आप की है क्योंकि अब समय बदल गया है."

"बैंक में कोई न कोई अवश्य काम कर रहा होगा. क्या ऐसा नहीं होता?" रमेश ने कहा, "फोन करो, देखो क्या होता है."

रमेश नवाब के पास आया और उन से वादा किया कि कार सोमवार तक तैयार हो जाएगी क्योंकि सफाई करने वाले अभी तक सफाई कर रहे हैं.

"अरे जनाब, मैं बहुत अधिक प्रतीक्षा कर चुका. कारों के बारे में मैं तुम से अधिक जानता हूं. यदि तुम्हारे आदमियों को कुछ अधिक समय की आवश्यकता है तो मैं वह दे सकता हूं. लेकिन मैं अपनी कार 'अपनी जिम्मेदारी पर,' जैसा कि तुम्हारे बोर्ड पर लिखा है, तुम्हारे पास नहीं छोड़ सकता."

स्थिति अत्यंत नाजुक हो गई. रमेश को एक वृद्ध ग्राहक का चैक मिला था जिस की बहुत अधिक साख थी. वह इनकार कैसे कर सकता था? अब इनकार असंभव हो गया, क्योंकि काम पूरा करने की जल्दी में रमेश ने चैक की टिकट लगी रसीद नवाब को दे दी थी.

"यह नवीनतम माडल है, जिस में चिकनाहट पैदा करने के बारे में कुछ अपनी ही विशेषताएं हैं. इस में चिकनाहट पैदा करने के लिए कुछ विशेष पदार्थ भरने पड़ते हैं जो अभी तक भारत के बाजारों में नहीं मिलते. कार को सोमवार तक के लिए क्यों नहीं छोड देते? सोमवार में केवल एक ही दिन शेष है."

"जनाब!" नवाब ने सांस ले कर टूटीफूटी आवाज में कहा, "मैं ने उस से अधिक कारों और सेल्समैनों को देखा है जितने कि तुम ने सुने ही होंगे. मुझ से होलहुज्जत मत करो. यदि तुम्हें मेरी साख में संदेह है तो इस रसीद को फाड़ दो और मेरा चैक मुझे वापस कर दो. लेकिन यह बात निश्चित है कि न तो मैं इस अपमान को भूलूंगा और न मेरे मित्रों का विशाल समूह. वे यह जान जाएंगे कि इस ग्राहक पर कहां अविश्वास किया गया है," और यह कहते हुए उन्होंने वह रसीद रमेश को वापस कर दी.

अमरीका में मिले प्रशिक्षण ने छोटे मालिक की सहायता की. उस ने स्थिति की ऊंचनीच का जायजा लिया. उस का एक ऐसे आदमी से पाला पड़ा था जिस की साख कसौटी पर हमेशा खरी उतरती आई थी. यह सही है कि पुराने शासकों और जागीरदारों को बहुत अधिक नुकसान पहुंचा था और उन में से कुछ की दशा अपेक्षाकृत काफी खराब थी, लेकिन फिर भी उन में ऐसा कोई भी नहीं था जिस के बारे में उस ने यह सुना हो कि उस पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता या वह देश छोड़ कर भाग गया. इस के अतिरिक्त, स्थिति अभी तक उसी के हाथ में थी क्योंकि ट्रांसफर और पंजीकरण सोमवार से पहले पूरे नहीं हो सकते थे और उन्हें वह तब तक के लिए टाल सकता था जब तक कि रुपयों की अदायगी पूरी न हो जाए. जब आप बात को हंसी में टाल सकते हैं तो एक प्रभावशाली ग्राहक को क्रुद्ध करने से क्या लाभ? उसे कार दे कर सुरक्षित हो जाना ठीक है.

उस ने अत्यंत पीड़ा के साथ तथा अनजान बन कर कहा, "नवाब साहब, इस प्रकार की भद्दी बातें आप हमारे बारे में सोच भी कैसे सकते हैं? अभी तक हमारे आप के साथ कितने सुखद और. . . लाभदायक संबंध रहे हैं. मुझे अमरीका में प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था. क्या आप मुझ से इन मामलों में इतना पिछड़ा हुआ होने की आशा करते हैं? कार आप की है और आप इसे ले जा सकते हैं. आप के पास जब भी इसे हमारे पास छोड़ने के लिए समय होगा हम इस की निःशुल्क मरम्मत और सफाई करेंगे. आप के पास कार की बिक्री के उल्लेख सहित रसीद तो है लेकिन स्वामित्व परिवर्तन सोमवार को ही किया जा सकता है."

उस ने कार की चाबियां नवाब को सौंप देने का आदेश दिया. वह गंभीरतापूर्वक कुछ झुका.

नवाब को विदा कर के जब वह अपने कार्यालय वापस आया तो उस का अकाउंटेंट वहां पर उस की प्रतीक्षा कर रहा था. "मैं ने बैंक के चीफ अकाउंटेंट को उन के निवास स्थान पर फोन किया था," उस ने कहा, "नवाब साहब का बैंक में अकाउंट है और अकाउंटेंट कहता

मुक्ता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी

फार्म 4, देखिए नियम 8.

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक. 3, 4 व 5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम : विश्वनाथ. राष्ट्रीयता : भारतीय. पता : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं : दिल्ली प्रेस समाचारपत्र, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक.

है कि उसे उन के किसी ऐसे चैक की याद नहीं जो कैश न हो पाया हो. लेकिन यह खबर बुरी है कि जहां तक उसे याद है अकाउंट चल नहीं रहा है और उस में केवल निम्नतम धनराशि है. उस ने शीघ्रतापूर्वक यह भी कहा कि नवाब ने शायद हाल ही में कुछ रुपया ट्रांसफर किया हो और वह उस की नजर में न आया हो."

"मैं उस के बारे में ही सोच रहा था," रमेश ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया जो कि उस की वास्तविक मनःस्थिति नहीं थी, "नवाब साहब एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, उन के पास अपार धनसंपत्ति है. वह इस प्रकार की धोखाधड़ी का प्रयास बिलकुल नहीं करेंगे. इस के अतिरिक्त कार अब भी हमारी संपत्ति है और यदि चैक कैश नहीं होता तो हम ट्रांसफर रोक सकते हैं. मैं ने केवल अपने पिता को संतुष्ट करने के लिए आप को परेशानी में डाला था. बनियों की कैश के प्रति चली आ रही मोह की पुरानी परंपरा और आधुनिक संसार के नए तौरतरीकों में अविश्वास से आप उन्नति नहीं कर सकते. वस्तुतः हमारे युग और समय के लिए ये बातें उचित भी नहीं हैं."

"यह ठीक हो सकता है, लेकिन उन के पास जो रसीद है उस के बल पर यदि वह चाहें तो कार को बेच सकते हैं. ऐसी स्थिति में हम कार नये मालिक को सौंप देने के लिए बाध्य हो जाएंगे."

"क्या तुम हमारी रसीद का यह वाक्य भूल गए हो—'चैक नं. . .के कैश हो जाने पर. . .?'"

इसी बीच नवाब मुबारक जामनखां शहर के एक अन्य प्रसिद्ध व्यापारी के पास गए. वे कारों का निरीक्षण करने के लिए अंदर प्रविष्ट हुए. वह एक 'बेंटले' कार के पास रुक गए.

"इस कार की क्या कीमत है?" उन्होंने सेल्समैन से पूछा.

"श्रीमानजी, अस्सी हजार," सेल्समैन ने उत्तर दिया.

"वहां पर मेरी कार की ओर देखो,"

नवाब ने उस को मर्सडीज स्पोर्ट्स की ओर इशारा किया, "इस कार के बदले मेरे 'बेंटले' को ले लेने के बाद और क्या लेनादेना शेष रहेगा?"

"श्रीमानजी, कृपया बैठ जाइए," सेल्समैन ने कहा, "मैं मैनेजर से पूछूंगा और आप को बता दूंगा."

"एक घंटे पहले वह कार 'रमेश आटो सेल्स' के पास थी," सेल्समैन ने चिल्ला कर कहा, "और यह पार्टी उस की हमारी पुरानी 'बेंटले' के साथ अदलाबदली चाहती है. कुछ गड़बड़ नजर आती है."

"परवा मत करो, ग्राहक के पास जाओ और उस से कहो कि मैं एक मिनट में आता हूं."

मैनेजर ने 'रमेश आटोज' को फोन किया. रमेश जूनियर मिला. "तुम्हारी मर्सडीज स्पोर्ट्स के साथ क्या गड़बड़ है?" मैनेजर ने पूछा.

"उस के साथ क्या गड़बड़ हो सकती है?" रमेश ने कहा.

"क्या तुम ने उसे बेचने का प्रबंध कर लिया है अथवा अभी मामला बीच में है?" मैनेजर ने पूछा, "बात यह है कि मैं तुम्हें उस का ग्राहक दिला सकता हूं."

"इस के लिए धन्यवाद, लेकिन हम ने उसे केवल एक घंटा पूर्व ही बेचा है."

"तब तुम ने किसी बेचारे ग्राहक को धोखा दिया है और उसे उस के छिपे दोषों का पता चल गया है."

"तुम क्या कह रहे हो?" रमेश ने कहा. जो यह सुन कर हक्काबक्का रह गया था.

"अभी मुझे अधिक बात करने की फुरसत नहीं, लेकिन संभावना यह है कि तुम्हारी मर्सडीज का मालिक मैं बन जाऊं, क्योंकि नवाब, जिन्होंने उसे तुम से खरीदा था, उस की मेरी 'बेंटले' के साथ अदलाबदली चाहते हैं." इस से पूर्व कि रमेश जवाब दे सकता मैनेजर ने फोन नीचे रख दिया और अपनी 'बेंटले' की अदलाबदली के बारे में विचारविमर्श करने के लिए नवाब के पास चला गया.

"नमस्कार, नवाब साहब," उस ने कहा, "आप को मेरी याद होगी. मैं वह सेल्समैन हूं, जो 'राल्स फैंटम वी-12', जिसे आप ने उस अच्छे और पुराने जमाने में खरीदा था, आप के पास लाया था."

"हां, मुझे याद है. मैं तुम्हारी 'बेंटले' खरीदना चाहता हूं, यद्यपि वह मेरी मर्सडीज से पुरानी है. अपनी कार की तुम क्या कीमत लेना चाहते हो और यदि मैं अपनी कार के साथ उस की अदलाबदली करूं तो तुम मेरी कार कितने में खरीदोगे?"

"आप जैसे ग्राहक के साथ सौदा करना बहुत सुखकर होता है. वास्तव में हम ने इस 'बेंटले' को एक लाख में खरीदा था, लेकिन गुण की ओर नजर रखने वाले ग्राहक नित्यप्रति कम होते जा रहे हैं और इसलिए..." उस ने यह वाक्य अधूरा छोड़ दिया.

नवाब ने आश्चर्यचकित हो कहा, "तुम्हारे सेलसमैन ने अभीअभी इस की कीमत अस्सी हजार रुपए बताई थी. मैं तुम से मनगढ़ंत बातें सुनने की आशा नहीं करता."

"मेरे मूर्ख सेल्समैन ने मुझे बताया था कि हमें अस्सी हजार रुपए दिए जा रहे हैं. ऐसा मालूम होता है कि उस ने गलती से इस की यह कीमत बता दी."

"मित्र, देखो," नवाब ने जवाब दिया, "यह अधिक अच्छा होगा कि तुम इस प्रकार की बातें अपने नए ग्राहकों से करो जिन्होंने काले धन के द्वारा कार युग में हाल ही में प्रवेश किया है. मैं सब कारों को जानता हूं और उस की असली कीमत का मुझे अच्छी तरह पता है."

"नवाब साहब, कृपया परेशान मत होइए. आप जैसे अच्छे ग्राहकों में अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए हम इस की वही कीमत लेंगे जो उस बेवकूफ ने बता दी है. अस्सी हजार रुपया कैश में लिया जाएगा, किसी अन्य कार के साथ अदलाबदली नहीं होगी. मुझे

आप को यह बताने की आवश्यकता नहीं कि आजकल कीमती कारों को बेचना कितना कठिन है. इस के अतिरिक्त मैं यह जानता हूं कि यदि रमेश को इस मर्सडीज का आप जैसा ग्राहक न मिलता तो उसे इसे काफी नुकसान उठाते हुए बेचना पड़ता."

"विक्री की बातों को भूल जाओ. मैं ने 'रमेश आटोज' से इस कार को एक लाख पैंतीस हजार रुपए में खरीदा था, लेकिन तुम्हारी 'बेंटले' को देख कर अब मेरा विचार बदल गया है, क्योंकि यद्यपि यह पुरानी है और मेरी कार से इस की कीमत काफी कम है, फिर भी मुझे यह पसंद है. इसलिए अब काम की बात करनी चाहिए और बेकार की बातों में समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए."

"आप को एक विशेष ग्राहक मानते हुए मैं आप की कार के बदले आप को अपनी 'बेंटले' और बीस हजार रुपए दे सकता हूं, यद्यपि मैं वैसे उस का इस के साथ केवल विनिमय ही करता. मर्सडीज को बेचना हमारे लिए बहुत कठिन हो जाएगा, लेकिन हम आप जैसे ग्राहक को खोना नहीं चाहते."

मोलभाव के बाद मर्सडीज के बदले 'बेंटले' और पच्चीस हजार रुपए देना तय हुआ. मैनेजर ने नवाब से रमेश की रसीद ले ली और यह वादा किया कि वह 'बेंटले' की कीमत की रसीद के साथ शेष रुपयों का चेक दे देंगे.

मैनेजर ने रमेश को फोन किया. एक भी शब्द सुनने से पूर्व रमेश चिल्ला पड़ा, "मैं कितनी देर से तुम्हें खोज रहा हूं और तुम्हारे आदमी ने मुझे यह कह कर टाल दिया कि तुम बाहर हो. जब तुम ने यह कहा कि हमारी मर्सडीज तुम्हारी बेकार सी बेंटले के बदले तुम्हें दी जा रही है तो वह क्या केवल एक गलत समय पर किया गया मजाक था?"

"मैं यह नहीं जानता कि सौदा कितने में तय हुआ लेकिन अपनी बेंटले के बदले मर्सडीज लेने के लिए मैं ने अभीअभी नवाब मुबारक जामनखां से बात पक्की है और उन्हें पच्चीस हजार रुपए और के लिए सहमत हो गया हूं क्योंकि म डीज थोड़ा बाद का माडल है."

"यह सौदा मत करो," रमेश चीख कर कहा, "उन्होंने मुझे जो दिया था उसे मैं अभी तक कैश नहीं पाया हूं. मेरी तो यही राय है कि उस सौदे को छोड़ो."

"अपनी राय अपने पास मैं इन नवाब साहब को काफी समय जानता हूं. वह मजाक भी करना जा हैं तो इस बात का पता लगाना मेरा क नहीं. लेकिन उन पर कैश न किया सकने वाला चैक देने का आरोप लग से पूर्व मैं अच्छी तरह सोचूंगा. वह व्यापार ठप्प कर सकते हैं."

"क्या तुम ने दंडीपेट्ट के राजा बारे में नहीं सुना जिन का तीन लाख चैक वापस हो गया था? बाद में हुआ? उन्होंने अपने प्रिवी पर्स में से कि देने का वादा किया और अब वह रुक गया है. ये जागीरदार अब पहले नहीं हैं. या तुम सही बात नहीं ज हो?"

"चाहे कुछ भी क्यों न हो, मुझे अ निर्णय पर अधिक भरोसा है. मैं इस को नहीं छोड़ूंगा. मैं उसे करूंगा और ने उन को जो रसीद दी है उस के पर तुम्हें मर्सडीज मुझे ट्रांसफर कर के लिए कहने वाला उन का पत्र ले लूं

"देखो, मुझ पर एक दया करो. अ मेकैनिक से यह कहो कि वह बेंटले में कोई पुरजा निकाल ले या उस में और कर दे ताकि वह चलाई न जा और यह सौदा एक घंटे के लिए टल जा यह सौदा बिलकुल अजीब तरह का मैं एक घंटे में या तो वहीं पर जाऊंगा या तुम से बात करूंगा. याद रखो कि यदि तुम वैसा नहीं क जैसा कि मैं तुम से कह रहा हूं तो इस अर्थ यह होगा कि तुम एक मुकदमा ख रहे हो, कार नहीं."

"मैं यह," मैनेजर ने कहा, "अ

तरह जानता हूं कि मैं क्या कह रहा हूं. मैं न तो तुम्हारी किसी धमकी को सुनूंगा और न किसी अन्य की. लेकिन एक साथी व्यापारी के साथ नम्रता प्रदर्शित करने के लिए मैं इस सौदे में एक घंटे की देर कर दूंगा, इस से अधिक एक मिनट नहीं.''

रमेश सीनियर, पुलिस के असिस्टेंट कमिश्नर के मित्र थे. वे उन से मिले और यह समस्या उन्हें सौंप दी. उन्होंने कमिश्नर से उन की सहायता करने के लिए कहा, ''मैं पुराने जमाने में नवाब को जानता था. अगर हमारे देश में अचानक परिवर्तन न हो जाते तो मैं इस बारे में कुछ भी न सोचता, लेकिन अब मूंदड़ा और दंडीपेट्टों को नजर में रखते

> **विश्वासघात**
>
> विश्वासघाती यद्यपि प्रारंभ में बहुत सावधान होता है किंतु अंत में स्वयं को धोखा देता है.
>
> —लिवी.

हुए, मैं इस प्रकार के धोखे को रोकने का प्रयास करूंगा. मैं कोर्ट में जा कर मुकदमा लड़ने और अपने रुपयों को फंसा कर अनिश्चित काल के लिए उलझ जाने का नहीं. आप को मेरी सहायता करनी चाहिए. अब यह स्पष्ट हो गया है कि हमारे नवाब मित्र की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं. वह एक कार और पच्चीस हजार रुपए प्राप्त कर लेना चाहते हैं और हमें मुकदमे में फंसा देना चाहते हैं.''

''मैं क्या कर सकता हूं?'' असिस्टेंट कमिश्नर ने पूछा, ''यदि आप कोई रिपोर्ट करें तो मैं जांच कर सकता हूं और धोखाधड़ी के प्रयास में उन्हें बंदी बना सकता हूं. यह बात तभी सिद्ध हो सकती है जब उन के पास इस चैक के बराबर धन न हो.''

''मैं इस बारे में निश्चित हूं कि उन के पास इस चैक के बराबर रुपए नहीं हैं. उन्होंने जानबूझ कर छुट्टी का फायदा उठाया है और उन की योजना बेंटले तथा पच्चीस हजार रुपए हथिया लेने की है.'' उन्होंने उस सारी कहानी और उन सारी घटनाओं को दोहराया जिन्होंने उन्हें असिस्टेंट कमिश्नर की मदद लेने के लिए बाध्य कर दिया था.

''पहली बात तो यह है कि बैंक का अकाउंटेंट किसी अनधिकृत व्यक्ति को किसी आदमी का हिसाब नहीं बता सकता. इस के अतिरिक्त, आप की कहानी के अनुसार, वह घर पर थे और उन्होंने आप को जो कुछ बताया था वह केवल स्मृति से. बैंक नित्य प्रति सहस्रों काम करता है. सब बातों को किसे याद रह सकती है.''

यह सब विषयांतर है. मैं एक मित्र की भांति आप से यह अपील करता हूं कि आप मुझे लगभग एक लाख रुपयों के नुकसान से बचाएं.''

''यह मत भूलिए,'' असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा, ''कि आप किसी गली में फेरी वाले या किसी क्लर्क से बात नहीं कर रहे हैं. यदि बैंक के अकाउंटंट की स्मृति गलती कर रही है तो आप परेशानियों में फंस जाएंगे, और इस बारे में मैं कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता क्योंकि उस से मेरी नौकरी जा सकती है. मैं केवल इतना कर सकता हूं कि एफ्फीडेविट के साथ आप की इस लिखित शिकायत पर कोई कदम उठाऊं कि नवाब ने आप को धोखा दिया और आप को कैश न किया जा सकने वाला चैक दिया तथा अब बिना आप की मरजी या आप को बिना बताए अपनी कार बेच रहे हैं. ऐसा होने पर मैं उन की गतिविधि उन के होटल तक सीमित कर दूंगा और कार की बिक्री सोमवार तक के लिए रोक दूंगा, जब कि आगे कारखाई के लिए आप को न्यायालय का आदेश प्राप्त करना पड़ेगा.''

तो हुआ यह कि नवाब मुबारक जमानखां के चारों ओर सादे वस्त्रों में

पुलिस मंडराने लगी और उन के यह कहने के बावजूद कि उन का चैक ठीक है और कार की अदलाबदली का निर्णय उन का अपना है, उन को अपने ही होटल में बंद कर दिया गया.

सोमवार के दिन मुसकराते हुए रमेश सीनियर ने उस बैंक के मैनेजर के कार्यालय में प्रवेश किया जिस का चैक दिया गया था. रमेश सीनियर को उस समय बहुत बड़ा धक्का पहुंचा जब उस ने यह सुना कि चैक अदा करने के लिए नवाब के अकाउंट में काफी रुपया है.

''लेकिन मेरे अकाउंटेंट ने मुझे बताया था कि अनेक वर्षों से उन के इस अकाउंट में निम्नतम धनराशि रहती है,''

सत्य

सत्य को कह देना ही मेरे मजाक करने का तरीका है. संसार में यह सब से विचित्र मजाक है.

—जार्ज बर्नार्ड शा

✦

विलास के प्रेमी सत्य का पालन नहीं करते.

—प्रेमचंद

रमेश सीनियर ने कुछ रुकतेरुकते कहा.

''आप के अकाउंटेंट या अन्य किसी बाहरी व्यक्ति को हमारे बैंक में हिसाब रखने वालों के बारे में सूचना प्राप्त करने या जांचपड़ताल करने का क्या अधिकार है?'' बैंक के मैनेजर ने क्रुद्ध हो कर पूछा, ''मैं इस आदमी की पुलिस में शिकायत कर दूंगा और मेरे स्टाफ के जिस किसी व्यक्ति ने सूचना दी होगी मैं उस को बैंक से निकाल दूंगा.''

रमेश सीनियर उस होटल में गए जहां नवाब ठहरे हुए थे ताकि वह नवाब साहब के साथ अपना मामला सुलझा सकें. उन्हें कुछ और भी धक्के लगने शेष थे. कमरा लोगों से भर गया. सब ओर रिपोर्टर, वकील और बड़े पुलिस अ[illegible] काफी नाराज हो रहे थे.

वर्डेन सीनियर, वर्धेन और सोलो[illegible] ने, जो कि नवाब के वकील थे, [illegible] सीनियर का स्वागत करने का [illegible] अपने जिम्मे लिया. उन्होंने रमेश पर [illegible] नजर डाली और कानूनी भाषा में घो[illegible] की, ''मेरे मुवक्किल नवाब मुबारक ज[illegible] खां आप पर फौजदारी, दीवानी [illegible] इज्जत हदतक का दावा करेंगे, जिस[illegible] नोटिस मेरे कार्यालय से आप को शीघ्र [illegible] मिल जाएगा. मैं आप को यह राय [illegible] कि यदि आप इस मामले को न्याया[illegible] से बाहर रखना चाहते हैं तो आप [illegible] चीत के लिए अपना कानूनी प्रति[illegible] यहां पर ले आएं. लेकिन यह आप के [illegible] हित में है कि आप इस मामले को [illegible] अधिक न उलझाएं. प्रेस अथवा पुलिस [illegible] किसी भी आदमी के सम्मुख कोई [illegible] बात कह देने से आप की अपार क्षति [illegible] सकती है. अब आप जो कुछ भी [illegible] उस का भावी मुकदमे में, जो [illegible] मुवक्किल आप पर दायर करने वाले [illegible] आप के विरुद्ध भी प्रयोग किया [illegible] सकता है.''

अंत में, रमेश सीनियर दो लाख [illegible] हरजाने के बदले न्यायालय से बाहर [illegible] झौता करने के लिए सहमत हो गए [illegible] बेंटले की कीमत दूसरे व्यापारी को [illegible] के द्वारा अदा किया जाना तय हुआ. सब कार्य के दौरान संदेह और अनि[illegible] तथा शीघ्रतापूर्वक कार्य करने का [illegible] वरण बना रहा,'' रमेश ने दूसरे व्या[illegible] से कहा.

''सरकार,'' सचिव ने सांस [illegible] कर कहा, ''इस प्रकार की योज[illegible] आप का मस्तिष्क मेरे मस्तिष्क से [illegible] है. मैं ने केवल कुछ समय तक काम [illegible] के लिए हरजाना लेने के बारे में [illegible] था लेकिन आप ने बेंटले भी हड़प[illegible] का प्रबंध कर लिया.'' अत्यंत स्वा[illegible] भक्ति और प्रशंसापूर्ण स्वर में उस ने [illegible] कहा, ''लाजवाब है सरकार का दि[illegible] खुदा आप को सलामत रखे!''

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता रामसिह, उज्जैन हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● नीति निपुण बंदर

कोटा जिला जनसंघ के कार्यालय सचिव श्री विजय को बंदर ने घेर कर कार्यालय की तीसरी मंजिल से आक्रमण कर के नीचे धकेल दिया.

श्री विजय कुछ दिन पूर्व बंदरों के पास से कार्यालय की एक पुस्तक छुडा लाए थे. कुछ बंदर यह देख रहे थे. उन बंदरों में से एक बंदर पुनः कार्यालय में घुस कर पानी का एक जग ऊपर उठा ले गया तथा छत के बीच रख दिया. जब श्री विजय जग लेने छत पर गए तो अचानक चारपांच बंदरों ने सामूहिक रूप से आक्रमण कर के उन्हें छत से नीचे धकेल दिया. श्री विजय के पैरों के टखनों में साधारण चोटें आई.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : मंगलसेन, नई दिल्ली)

● दो चोर

पिछले दिनों तेलअवीव (इसरायल) में अपंग बालकों के एक संस्थान से एक चोर ने 300 पौंड चुरा लिए. बाद में जब उसे पता चला कि जहां से उस ने रुपया चुराया है वह अपंग बालकों का संस्थान है तो उस ने वे रुपए संस्थान को वापस भेज दिए और साथ ही एक टिप्पणी भी दी, "मुझे नहीं मालूम था कि यह किस प्रकार का संस्थान है."

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : दिलीपकुमार, अंजड़)

● हमराज और हमराह

ढाका के राजशाही विश्वविद्यालय के एक छात्र ने एक वक्त के अपने अजीज दोस्त अंसारअली से शादी कर के अपनी गृहस्थी बसा ली है. यह शादी अभी कुछ महीने पहले अंसार के उक्त दोस्त (जो आज उस की पत्नी है) के यौन परिवर्तन के कारण संभव हो सकी.

अंसार ने अपने इस दोस्त (जो अब हुस्नआरा बेगम है) से शादी के लिए अनेक लुभावने प्रस्तावों को भी ठुकरा दिया. अपनी भेंटवार्ता में उस ने बताया कि अपने दोस्त को अब एक निष्ठावान और कुशल गृहिणी के रूप में पा कर वह बहुत खुशकिस्मत महसूस कर रहा है.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : विपिनकुमार, नई दिल्ली)

● देर का फल

"कल रात जब मैं नौका में जा रहा था तब मुझे लगा कि मैं जिंदगी से तंग आ गया हूं और जीने की चाह छोड़ कर मैं तूफानी लहरों में कूद पड़ा. लेकिन जब लहरों के थपेड़ों ने मुझे चुनौती दी तब मेरे मन में फिर जीवित रहने और लहरों से संघर्ष कर के प्राण बचाने की कामना बलवती हो उठी. मैं एक दूर स्थित प्रकाश स्तंभ की ओर तैरता ही चला गया और अंततोगत्वा किनारे पर जा लगा."

यह बयान मुरतो (जापान) के एक 30 वर्षीय युवक का है. वह लंबी तैराकी का अभ्यस्त था और छः किलोमीटर तैर कर किनारे पर लगा.

—नवभारत टाइम्स, बंबई (प्रेषक : रामसिह, उज्जैन) ●

व्यंग्य • गोविंद शर्मा

अंतिम कवि सम्मेलन
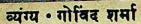
पहले मुझे कविताएं लिखने का चसका लगा, फिर कवि सम्मेलन आयोजित करने का. आज तक कोई कवि सम्मेलन सफल नहीं हुआ है. इसलिए कविताओं का भी पता नहीं सफल है या असफल. कवि सम्मेलनों के कविता प्रेमी ऐसी कविताएं पसंद करते हैं जो उर्दू, पंजाबी का मिश्रण हो, इश्किया हो और लहजा विदूषकों जब कि मेरी और मेरे साथी कवि मान्यता है कि कविता ऐसी होनी जिसे सुन कर श्रोता अपना सिर फो
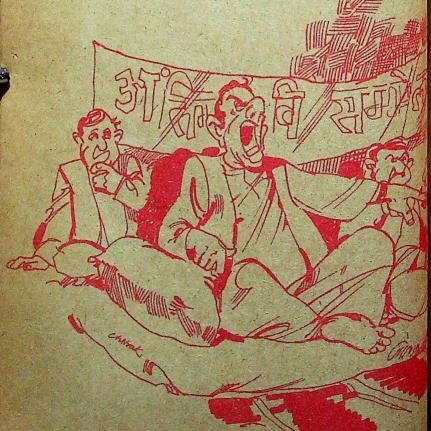
मैं ने जितने भी कवि सम्मेलन आयोजित किए, श्रोताओं के असभ्य, अरसिक होने के कारण बीच में ही भंग हुए. एकाध बार श्रोताओं ने चप्पलों और जूतों से कवियों और अध्यक्ष का सार्वजनिक अभिनंदन भी किया.

हमारे कसबे में एक नए थानेदार आए. नाम था खागड़सिंह. जैसा नाम वैसा ही डीलडौल. हाथ में जूते लिए वह बाजार में घूम रहे थे कि मुझे मिल गए. बोले, "लुगाइयों जैसे बाल और बकरे जैसी दाढ़ी वाला तू कौन है?"

थानेदार साहब की उपमाओं को सुन कर मैं उन की साहित्यिक प्रतिभा का कायल हो गया और मैं ने उन के आगे कवि सम्मेलन का अध्यक्ष बनने की प्रार्थना की. एक देसी ठर्रे की बोतल के बदले वह मेरे कवि सम्मेलन का अध्यक्ष बनने को तैयार हो गए.

निश्चित समय पर कवि सम्मेलन प्रारंभ हुआ. होहल्ला मचाने वाली कसबे की जनता आज चुप बैठी थी. थानेदार साहब ने अध्यक्षीय भाषण दिया और अंत में लोगों को धमका दिया, "सब चुपचाप बैठे रहें. कोई शोर न हो. अगर पत्ता भी खड़क गया तो पूरा पेड़ उखाड़ दूंगा." इस के बाद उन्होंने अपने लिखे बता कर गालिब, दाग, मजाज और शकील के शेर सुनाए.

महान (अ)रसिक और कविता के धुरंधर (अ)पारखी थानेदार खागड़सिंह की अध्यक्षता में ऐसा कवि सम्मेलन हुआ कि कवियों ने भविष्य में कविता न लिखने की कसम खा ली...

अब हम कवियों की बारी आई. अकविता के महान कवि दिगंबर जी अपनी कविता सुनाने लगे :

"मैं चोर हूं,
हां, मैं चोर हूं..."

थानेदार साहब अपने आसन से चीखे, "सिपाही कालासिंह, लगा दो साले को हथकड़ी. मेरे राज में सरेआम कहता है कि 'मैं चोर हूं.'"

दिगंबरजी ने खीसें निपोरते हुए कहा, "साहब, यह कविता है और मैं तो चित चोर हूं, सुंदरियों के..."

"तुम चित चोर हो या पट चोर यह मैं देखूंगा! अभी तो तुम हवालात की हवा खाओ."

सिपाही कालासिंह दिगंबरजी को घसीट कर ले गया. यह देख कर हम

कवियों में दहशत फैल गई.

प्रगतिशील कवि लक्स नायलपुरी उठे और अपनी लाल कविता सुनाने लगे :

"तेरे बाल लाल
तेरे गाल लाल
तेरे हाथ लाल
तेरे पांव लाल
पर प्रेयसी तेरे होंठ कालेकाले..."

खागड़सिहजी ने बीच में टिप्पणी दी, "साली बीड़ी ज्यादा पीती होगी. तंबाकू से बचा उसे, होंठ भी लाल हो जाएंगे."

"साहब, यह तो प्रतीकात्मक कविता है. होंठों से मतलब कारखाने की चिमनी से है."

"मैं भी तो यही कहता हूं. कारखाने की चिमनी तो सिर्फ धुआं उगलती है, जब कि तेरी प्रेयसी के होंठ धुआं खींचते भी हैं और उगलते भी हैं. अब बैठ जा."

श्रोता ऐसी फबतियां कसते हैं, तब हम नाराज हो जाते हैं. आज ऐसा अध्यक्ष महोदय कह रहे हैं, इसलिए नाराज नहीं, प्रसन्न हो रहे हैं.

"अगला कवि," अध्यक्षजी दहाड़े.

बेहोश महिलावादी उठे और चहके :

"आदमी, तू चेत सके तो चेत,
कुरसी पर बैठे हैं भूत या प्रेत."

अध्यक्षजी चीखे, "मुझे भूतप्रेत कहते हो?" और एक घूंसा कवि को दे मारा. कवि महोदय अचेत हो गए.

"नहीं, साहब, आप को नहीं कहा गया है. यह तो कुरसियों पर बैठे नेता लोगों के लिए कहा गया है," मैं ने डरते-डरते कहा.

"कैसे नहीं कहा मुझे? यहां मेरे सिवा कोई कुरसी पर नहीं बैठा है. बंद करो यह कौआ सम्मेलन! अच्छा, तू आयोजक है इसलिए एक कविता तू भी जल्दी से कह दे."

मैं घबरा गया, कांप गया. डरतेडरते मैं ने डायरी खोली. सामने एक बाल कविता थी. वही सुनाने लगा :

"कल वर्षारानी आई थी,
सपने सुहाने लाई थी..."

"शटअप! कौआ सम्मेलन डिसमि[स]" अध्यक्ष महोदय चीखते हुए उठले [और] मेरा हाथ पकड़ कर भागने लगे. [हम] हांफतेहांफते थाने पहुंचे.

"उस कोने में मुरगा बन जा," [था]दार का हुक्म था मेरे लिए.

"जी..."

"जी के बच्चे! मैं तेरी चमड़ी [उधेड़] दूंगा."

"आप मेरे साथ इस तरह बात [नहीं] कर सकते. संभव है, कभी मुझे साहि[त्य] अकादमी का पुरस्कार मिल जाए. [मैं] कोई मामूली आदमी नहीं हूं."

"तुझे साहित्य का एक आ[ध] पुरस्कार में मिले या दो, मुझे इस की प[रवाह] नहीं. तू तो यह बता कि तुझे यह कैसे [पता] चला कि कल मेरे पास वर्षारानी [आई] थी? मेरी जासूसी तू किस के कहने [पर] करता है, बोल? और तुझे क्या [क्या] पता है?"

"मैं किसी वर्षारानी को [नहीं] जानता. मैं ने वह कविता बच्चों के [लिए] लिखी थी."

"बच्चों के लिए या मेरे बच्चों [की] अम्मी के लिए? देख, बे, कवि, तुझे जि[तना] पता चल गया, चल गया. यदि [तू ने] किसी को बताया कि खागड़सिह के [पास] वर्षारानी आती है, तो मैं तेरी [आंखें] खींच लूंगा."

"साहब, मैं किसी वर्षारानी को [नहीं] जानता. मैं ने तो यह कविता आकाश [से] गिरने वाले पानी के संबंध [में] लिखी है."

खागड़सिह कुछ नम्र हुए. बोले, "[अबे] बच्चे, मेरे राज में तू चोरी कर, [लेना,] डाका डाल देना, यहां तक कि किसी [का] कत्ल कर देना, मैं तुझे साफ बचा [लूंगा.] तू जिसे कहेगा उस को फंसा दूंगा. [पर] कविता हरगिज मत लिखना. जा, [मेरी] वर्षारानी आती ही होगी."

यह मेरे कवि जीवन का अंतिम [कवि] सम्मेलन था.

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हमारी कक्षा अध्यापिका बहुत मजाकिया स्वभाव की थीं. जब वह हाजिरी लेतीं तो हम उत्तर में 'यस दीदी' कहते थे.

थोड़े दिन तो वह यह सुनती रहीं. लेकिन एक दिन 'यस दीदी' कहने पर वह कुछ बनावटी गुस्से से बोलीं, "मुझे यस दीदी मत कहा करो. मैं कहां से इतनी सारी फौज का दहेज लाऊंगी?"

उन का यह कहना था कि हम सब खिलखिला कर हंस पड़ीं.

—मुक्ता पाराशर, नई दिल्ली

● हमारे स्कूल में अंगरेजी के एक शिक्षक नएनए आए थे. उन का परिचय कराने के लिए हमारे अंगरेजी के शिक्षक उन के साथ हमारी कक्षा में आए और लड़कों को उन के बारे में बताने लगे, "आप ने बी. ए. द्वितीय श्रेणी में तथा बी. एड. प्रथम श्रेणी में पास किया है. यहां भी जब दो बार इंटरव्यू लिया गया तब भी आप ही टाप पर आए."

यह सुन कर सब लड़कों को खुशी हुई. वह हमारी कक्षा को पढ़ाने लगे. पर प्रायः वह अपना सारा समय यों ही बातों में बिताने लगे और जब भी वह किताब पढ़ाते तब हिंदी में ही अर्थ बता कर छोड़ देते. लड़के अंगरेजी में 'एक्सप्लेन' करने के लिए कहते तो वह बहाने बना कर टाल जाते. लड़कों को चिंता होने लगी कि अंगरेजी में व्याख्या के बिना पास कैसे होंगे. एक दिन सब लड़के क्लास में शोर मचाने लगे और कहने लगे, "आप को पढ़ाना नहीं आता. हमारी समझ में कुछ नहीं आता."

यह सुन कर शिक्षक महोदय बोले, "मैं इस से अच्छा नहीं पढ़ा सकता. मेरे पास कोई डिग्री नहीं है. मैं तो सिर्फ इंटर जे. टी. सी. हूं. मुझे यहां पर थोड़े दिन के लिए लगाया गया है."

जब लड़कों ने यह बात सुनी तो उन्हें बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ और किसी तरह उन से छुटकारा पाने के लिए दिन काटने लगे.

—विनयकुमार, बरेली

● रसायन शास्त्र का पीरियड लगा ही था कि हमारे सेक्शन की कुछ लड़कियों ने प्रोफेसर साहब को बोर करने के लिए एक योजना बनाई. प्रोफेसर साहब आ कर खड़े हुए ही थे कि एक लड़की ने कहा, "सर, आज तो आप एक गाना सुनाइए."

पहले तो प्रोफेसर साहब बौखलाए. फिर उस की तरफ देख कर कहने लगे, "आज पहली बार इन्होंने मुझ से गाने के लिए कहा है. मैं तो रोज ही क्लास में गाता हूं. भले ही वे गीत केमिस्ट्री के हों. अतः आज पहली बार ही मैं उन से प्रार्थना करूंगा कि ब्लैक बोर्ड के निकट आ कर मेरे गाए हुए गीतों में से कोई एक गीत सुनाएं."

उन के इतना कहते ही कक्षा में जोर का ठहाका लगा और उस लड़की का चेहरा ऐसा हो गया जैसे सांझ का सूरज.

—अमर्त्यकुमार, सहारनपुर ●

'कितना प्यारा बच्चा है,' उस ने सोचा. तभी बस झटके के साथ रुकी और वह उतर गया. बच्चे का चेहरा उस के भीतर धंस गया था.

घर पहुंच कर वह चारपाई पर लेट गया. संध्या की याद मनमस्तिष्क में फिर बहने लगी. उस ने सुना था, पुरवैया में चोट दहकती है—क्या भीतर की भी?

संध्या से राहुल ने आर्यसमाज मंदिर में प्रेम विवाह किया था. अंतर्जातीय विवाह होने के कारण बड़ी उछलकूद मची थी. लेकिन संध्या के घर वाले शादी के दूसरे ही दिन से राहुल के घर पहुंचने लगे थे. पहले दिन तो संध्या के भाई ने गला दबा कर राहुल को मार डालने की चेष्टा की थी. तब संध्या कुछ सिंहनी की तरह बिफरी थी, "राजू, चले जाओ यहां से. निकल जाओ मेरे घर से!"

राहुल ने भी जान पर खतरा देख, झटके से अपना गला छुड़ा कर राजू को एकदो हाथ मारे थे. पर वह उस से झगड़ा नहीं बढ़ाना चाहता था.

मार पड़ते ही राजू शांत हो गया था. फिर वह बोला, "समझौता हो जाए."

"ठीक है," राहुल ने कहा.

राजू बोला, "संध्या और तुम जितनी जल्दी संभव हो, शहर छोड़ दो."

"ठीक है, यदि तुम लोगों की यही इच्छा है. मैं दूसरी नौकरी ढूंढ़ ही रहा हूं. मिलने की उम्मीद भी है. हम जल्दी ही चले जाएंगे," राहुल ने बात को खत्म किया.

पर दूसरे दिन से ही संध्या की बहनें आने लगी थीं. फिर उस की चाची आईं. राहुल के घर की गरीबी वह देख गईं और घर जा कर दहाड़ मारमार कर रोने लगीं. "हमारी लड़की तो लुट गई. उस कलमुंहे ने भोलीभाली बच्ची को फंसा लिया. अब खिलाएगा क्या उसे? उस के यहां तो खाने को भी नहीं है. टूटी खटिया है और फटी रजाई. हमारी फूल सी संध्या कैसे रहेगी वहां?"

संध्या ने सुना तो चिढ़ उठी. कहा, "यह मेरी जो चाची हैं, इन्हें मैं अच्छी तरह जानती हूं. अपनी बेटी का गर्भपात करा कर उसे जबरन दूसरी जगह ब्याहा था न. मेरा यह ब्याह उन्हें भला क्यों सुहाएगा? अपनी अमीरी धरे रहें. हम उन से अच्छे हैं."

"कुछ भी कहो, संध्या," राहुल बोला, "तुम्हें तकलीफ तो सचमुच होगी ही. कहां तुम उतने संपन्न घर की बेटी और कहां मेरे पास न पंखे, न कुरसियां, न परदे."

"सब हो जाएगा धीरेधीरे," कहती हुई संध्या राहुल से लिपट गई थी.

राहुल को लगा, उस का जीवन धन्य हो गया है.

संध्या की बहनें आतीं, खूब घुलमिल कर बातें होतीं. राहुल को वे जीजाजी जीजाजी कहतीं. फिर वे पिताजी का
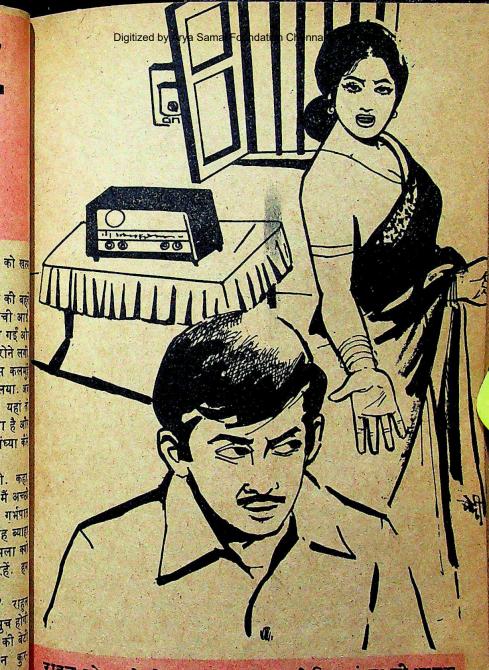
राहुल को अपने प्रेम पर विश्वास था लेकिन संध्या की भावुक हरकतों ने उस के मन में संदेह की एक दीवार खड़ी कर दी थी...और जब संध्या अपने जीजाजी के साथ दूर चली गई तो उस के सामने एक और प्रश्न खड़ा हो गया...

संदेश लाने लगीं. कहतीं, "पिताजी कहते हैं, 'मेरी संध्या ने जो कुछ किया, ठीक ही किया है. उसे बुला कर लाओ.' "

संध्या का मन पिघलने लगा. वह छत पर खड़ी चुपचाप सड़क की ओर देखती रहती. दफ्तर से लौट कर राहुल आता तो वह बताती, "आज मेरे चाचाजी दिखे थे. आज मेरा भतीजा साइकिल से निकला था. भैया अभीअभी सब्जी ले कर जाते दिखे थे."

राहुल भीतर तक भीग जाता. सचमुच संध्या के दिल में मायके के प्रति बड़ा मोह है. आखिर अपनों के प्रति लगाव क्यों न होगा? यदि संध्या के मन में उस के प्रति इतना गहरा प्यार है, तो अपने मातापिता, भाईबहनों के प्रति भी प्यार होना स्वाभाविक ही है. लेकिन राहुल को तो वे लोग दुश्मन मानते हैं.

इधर राहुल के परिचित उसे बताते कि वे लोग उस की गरीबी की अकसर चर्चा करते हैं और कहते हैं, "हमारी बिटिया तो फंस गई. एक बार निकल आए वहां से, तो सब ठीक हो जाए. हम दूसरी जगह उस की शादी कर दें, यहां से दूर."

राहुल चकरा जाता. अजीब हैं ये लोग. संध्या को पांच मास का गर्भ है, और ये उस की दूसरी शादी की योजना बना रहे हैं.

लेकिन तभी एक तूफान आया. संध्या की बड़ी बहन का ब्याह एक फौजी अफसर से हुआ था. संध्या के प्रेम विवाह की खबर पाते ही वे दोनों आए. बड़ी बहन रजनी खूब लिपट कर रोई संध्या से. संध्या भी उन्हें देख कर खिल पड़ी. रजनी के पति ने संध्या को लिपटा लिया और उसे चूम लिया. संध्या उन के सीने पर सिर रखे सुबकती रही. वह रहरह कर उस की पीठ पर हाथ फेरते, कहते, "पगली, तुझे मेरा विश्वास नहीं है!"

संध्या उन के सीने पर अपना मुंह रगड़ती, कहती, "है," और धीरेधीरे सुबकती रहती.

तीनचार बार यही क्रम चला. राहुल को यह अच्छा नहीं लगा. रात को राहुल ने संध्या से कहा, "मुझे पता नहीं कि इस तरह की आधुनिकता नहीं भाती. फिर भी मैं खुशीखुशी सहने को तैयार हूं, बशर्ते तुम यह कहो कि यदि कल तुम्हारे सामने मैं ने किसी मित्र लड़की से कुछ ऐसा ही व्यवहार किया तो तुम्हें बुरा नहीं लगेगा."

संध्या ऐंठ गई. बोली, "मित्र? वे मेरे जीजाजी हैं, राहुल. तुम कितने छिछले हो!" और यह कहते उस के चेहरे पर घृणा की लहर दौड़ गई.

राहुल जानता था, संध्या अत्यंत कोमल और भावुक लड़की है. वह पछताने लगा, उस ने उस से यह क्या कह दिया.

रात दोनों सो न सके. रात भर राहुल मनाता रहा. संध्या मान गई. लिपट कर रोती रही. बोली, "राहुल, तुम्हें मेरा विश्वास नहीं?"

"तुम गलत समझ गई, संध्या," राहुल ने कहा और उसे भींच लिया.

संध्या उस के अंकपाश में समा गई.

पर सुबह राहुल ने देखा, संध्या के भीतर कहीं कुछ बुझ गया है. राहुल एक छटपटाहट से भर गया. वह बारबार संध्या को खुश करने की कोशिश करता. लेकिन संध्या ने अपनेआप को समेट लिया था. दोपहर फिर रजनी व उस के पति आए. संध्या दौड़ कर रजनी से लिपट गई और रोने लगी. रजनी उसे पुचकारने लगी, फिर राहुल की ओर मुड़ी, "आप ने कुछ कहा है क्या?"

"नहीं तो," राहुल बोला.

संध्या रजनी व उस के पति के साथ घूमने चली गई. रात को वह देर से लौटी. तब वह खुश थी. रात को वह बोली, "मेरे जीजाजी बड़े अच्छे हैं, खूब अच्छे. बड़ी प्यारी शैली में बातें करते हैं. उन का बर्ताव तो बहुत ही अच्छा है. मैं अपनी दीदी पर उतना विश्वास नहीं करती, लेकिन जीजाजी से मैं कुछ नहीं छिपाती.

संध्या के पत्रों से राहुल को लगा कि संध्या दूसरा ब्याह करना चाहती है, तो उस ने संध्या को स्वीकृति दे दी. लेकिन संध्या फिर लौट कर राहुल के पास क्यों आ गई?

सब बता देती हूं.''

'सब बता देती हूं' यह सुन कर राहुल को लगा जैसे भीतर किसी ने दहकती सलाख से दाग दी है.

दूसरे दिन से संध्या फिर खूब खुश दिखने लगी. वह दीदी के साथ कशमीर जाने की भी बातें करने लगी. राहुल ने उसे समझाते हुए कहा, ''गर्भावस्था में प्रेम विवाह के तुरंत बाद दूर जाओगी तो अफवाहें उड़ेंगी.''

''राहुल, अब तुम अफवाहों से डरने लगे. अफवाहों से ही मैं डरती, तो तुम से प्रेम विवाह क्यों करती?'' 'तुम से' शब्द पर ज्यादा जोर दे कर बोली संध्या.

राहुल को लगा, संध्या उस की गरीबी की ओर इशारा कर रही है.

अगले तीनचार दिन संध्या कई तरह की बातें करती रही. कभी वह कहती, ''ब्रह्मा ने अपनी बेटी सरस्वती से ब्याह किया था.''

राहुल कहता, ''सब 'मिथ' हैं, इन के तो विचित्र अर्थ संभव हैं.''

तब वह चुप हो जाती.

कभी वह कहती, मैं पापपुण्य कुछ नहीं मानती.''

राहुल कहता, ''लेकिन नैतिकता और अनैतिकता की किसी भी जीवन दर्शन के अंतर्गत कोई तो धारणा होगी.''

संध्या कहती, ''उंहुं,'' और हंस देती.

कभी वह कहती, ''मेरे पिताजी ने गुजरात के एक बहुत धनी व्यक्ति के साथ मेरी सगाई पक्की कर दी थी. वह कहते हैं, 'संध्या बिटिया, तू हम से कुछ नहीं छिपाती थी. एक बार यह भी कह कर तो देखती.''

राहुल कहता, ''मैं भी तो कहता था, कह कर देखो. वह शायद मान जाएं. तुम कहती थीं, 'न, मैं अपने घर वालों को अच्छी तरह जानती हूं.' ''

आखिर संध्या रजनी के साथ चली गई कालिम्पांग. वहां के प्राकृतिक सौंदर्य के आकर्षक वर्णन वह पत्रों में लिख कर भेजती. राहुल को बहुत तेज छटपटाहट होती. उसे लगता, संध्या हर पल जैसे उस के पास ही हो. कितनी तीव्र लालसा हो उठी थी साथसाथ रहने की. तभी तो प्रेम विवाह किया था उस ने. संध्या से मिलने से पहले तो वह अकेले ही रहने की सोचता था.

धीरेधीरे प्रसव काल पास आ रहा था. अब संध्या का सफर करना खतरनाक था. उस ने पत्र में लिखा कि डाक्टर यात्रा करने के लिए मना करते हैं. राहुल ने भी पत्र डाल दिया कि 'अब तुम्हारा आना ठीक नहीं. वहीं रहो.' फिर संध्या के पत्र आने बंद हो गए, पर राहुल पत्र डालता रहा.

एक दिन तार आया, बच्ची हुई है. फिर पत्र आया, प्रसव बिना तकलीफ हुआ है. राहुल ने खूब खुश हो कर पत्र लिखा, 'खूब बनती थीं. अच्छा हुआ, बच्ची हुई. कहा करती थीं कि ज्योतिषी ने कहा है कि लड़का होगा, आपरेशन करना पड़ेगा. आशा है, अब ज्योतिष पर विश्वास नहीं करोगी. मैं नहीं जानता, ज्योतिष सच है या नहीं. पर यदि ज्योतिष सचमुच विद्या है तो निश्चय ही उस के अध्ययनमनन की जरूरत होती होगी. ये नीमहकीम खूसट पंडित या फिर चालाक छोकरे, जिन का अधिकांश समय बहुत ही सस्ती गतिविधियों में बीतता है, कैसे किसी विज्ञान के जानकार हो सकते हैं? तुम इन्हीं के वाक्यों पर विश्वास कर लेती हो. ज्योतिष संदिग्ध है. सिर्फ प्यार असंदिग्ध है, सत्य है. जल्दी आओ.'

राहुल को पता था कि रजनी के पति

भी ज्योतिष की दिनरात बातें करते हैं. उन्होंने ही संध्या [illegible] पैदा की थीं. हाथ देखदेख कर उन्होंने उसे यह कहा था कि वह 30 वर्ष की उमर में सारे संसार में विख्यात होगी, वह यहां यों ही फंस गई, वह तो बहुत ऊंची है.

तो भी प्यार में डूबा पत्र पा कर संध्या शीघ्र आएगी, राहुल रास्ता देख रहा था. तीन महीने बीत गए. न संध्या आई, न उस का पत्र. फिर एक दिन संध्या की चिट्ठी आई. उस ने लिखा था, 'मिस्टर राहुल, तुम्हारे मीठेमीठे शब्दों से मैं भुलावे में आ गई. जीवन सस्ते शब्दों में व्यक्त प्यार के सहारे नहीं कट सकता. यथार्थ बहुत बड़ा है. जीजाजी ने वहीं पर मेरी कुंडली देख कर बताया था कि मेरी दो शादियां लिखी हैं. राहुकेतु ने मेरा दिमाग खराब कर दिया था, इसी से ये घटनाएं घटीं.'

'राहुल, सोचो, तुम ने मेरे साथ क्या किया? मैं ने तुम्हारे लिए अपना सब कुछ छोड़ दिया. मुझे पता नहीं था कि तुम इतनी संकीर्ण दृष्टि रखते हो. नारी की सामान्य स्वतंत्रता भी तुम नहीं सह सकते. मैं ने विरोध किया है, तो तुम्हारे अनर्गल प्रलाप पर. अभी भी मैं प्रतिक्रिया का इंतजार कर रही हूं. यदि तुम अपना दृष्टिकोण विकसित करो तथा अपनेआप को बदलो तब ठीक है. हमारे संबंधों की डोरी का एक सिरा अभी भी मेरे हाथ में है. मुझे मजबूर न करो, राहुल, कि मेरे न चाहते हुए भी वह छूट जाए और तुम्हारे मन में सिर्फ आत्मग्लानि शेष रहे.'

राहुल संध्या का यह पत्र पढ़ कर ठगा सा रह गया. उस ने एक संक्षिप्त कार्ड डाला, 'संध्या, यह सब क्या लिखा है तुम ने! समय दो, सोच सकूं. जरा रुको.'

पूरे शहर में अफवाह थी कि संध्या के मांबाप कह रहे हैं, "हम अपनी बिटिया की शादी एक कर्नल के साथ करेंगे. राहुल हमारे खानदान के लायक नहीं है."

और बच्ची? उस के बारे में तरहतरह की बातें हो रही थीं. कोई कहता, "वह कर्नल अधेड़ है, बच्ची सहित संध्या से ब्याह करने को राजी हो गया है. राहुल यदि टांग अड़ाएगा तो संध्या उस से तलाक ले लेगी."

राहुल एक हफ्ते तक बीमार पड़ा रहा. कभी वह सोचता, आत्महत्या कर ले. मन खुद को धिक्कारता, कितनी कोमल एवं भावुक थी संध्या. अपना सब कुछ छोड़ कर आई थी. आखिर मैं ने पुरुषों की संकीर्णता का परिचय दे ही दिया. कभी एकदम विपरीत विचार उठने लगता, वह शायद किसी के आकर्षण में बह गई है.

ठीक होने पर राहुल ने संध्या को पत्र लिखा, 'प्रिये संध्या, पत्र तुम्हारे मन से लिखे नहीं प्रतीत होते. मुझे यथार्थ का दिग्दर्शन कराने योग्य तुम हो गई क्या? तुम्हें पता है, मैं ने जीवन का एकएक पल जिया है, इसी यथार्थ की छानबीन करते हुए. तुम्हारा यथार्थ कितना सीमित है, तुम जानती हो. एक बहुत छोटे वर्ग की दिनचर्या की मशीनी आवृत्तियों में फंसे लोग इसी से यथार्थ के विश्लेषक न बन जाएंगे कि वे इस समय देश में योग्य हैं, जब कि उन्हें समकालीन समाज व देश की स्थिति की ओर देखने की फुरसत नहीं. उन का सौंदर्यबोध इतना संकीर्ण है कि उन्हें पता ही नहीं कि विलासिता का जो मानदंड उन्होंने स्थापित किया है, वह इस भूखेनंगे लोगों की बहुतायत वाले देश में खून से सना और हड्डियों पर खड़ा है. इसलिए वह बीभत्स है, कुरूप है, अश्लील है. उस के सुंदर होने का प्रश्न ही नहीं. वे अश्लील जीवन जीने वाले बौने लोग हैं, यथार्थवादी नहीं.

'अपना दिमाग साफ करो. जिंदगी को बेहतर ढंग से जीना नितांत जरूरी है. फर्क सिर्फ यह है कि हम बेहतर जिंदगी किसे मानते हैं—क्या बंबइया

फिल्मों की भोंड़ी नकल की चेष्टा में भागनेफिरने को? तुम से तो मेरा कुछ छिपा न था.

'पर अभी भी देर नहीं हुई, यदि तुम ने यथार्थ को जान लिया हो तो उसे अच्छी तरह पकड़े रहना, कहीं वह छूट न जाए. ऐसा न हो कि कुछ वर्षों बाद फिर तुम्हें जवाहरलाल नेहरू की तरह यह एहसास हो कि इतने दिन स्वप्न में जिए!

'हम ने कुछ आदर्शों के लिए एकदूसरे का वरण किया था. उन के प्रति तुम्हारा मोह भंग हो गया है तो इस में बुरा क्या है? पर कुंडली के प्रभाव से तुम दूसरा विवाह करोगी क्या? कहां आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का वह आग्रह और कहां कुंडली की यह जकड़न? यथार्थ की दिशा में तुम्हारी प्रगति पर मुझे तो शंका है. श्रेष्ठतर जीवन के लिए तुम दूसरा विवाह अवश्य करो. पर कुंडली में लिखे होने के प्रभाव से नहीं. ध्यान रहे, ये कुंडली वाले लोग हमारे अब तक के आचरण को दुराचरण ही मानेंगे. वे कहेंगे कि लड़की फिसल गई, अब होश आया है. संध्या, क्या तुम्हें यह पसंद आएगा? क्या हम फिसले हैं या हम ने पूरे विवेक के साथ निर्णय लिया था?

'दूसरा विवाह कुंडली के कारण नहीं. विवेक के आग्रह के कारण करो, संध्या. जहां तक मेरा प्रश्न है, मैं इस विवाह में कोई अड़ंगा न लगाऊंगा. कानूनी खानापूरी जरूरी लगे, तो तलाक ले लेना कुछ समय बाद, तब करना विवाह. यों मेरी सलाह है कि इस की जरूरत नहीं. मैं आर्यसमाज के प्रमाणपत्र और अपना चित्र तुम्हारे सामने फाड़ कर फेंक दूंगा और कहीं कुछ न कहूंगा. और भी जो चाहोगी, लिखित में दे दूंगा. फिर कानूनी झंझट उठने का प्रश्न ही नहीं. मेरी तरफ से तुम्हें अनुमति है. दूसरे, किसी को फुरसत कहां है खटपट करने की? फिर तुम यहां से दूर होगी. चार दिन कानाफूसी होगी, फिर सब शांत हो जाएंगे. दूसरे विवाह की इच्छा हो गई है, तो अवश्य करो.'

15 दिन बाद राहुल खिड़की के पास खड़ा था. शुरू में जब संध्या गई थी, एक हफ्ते में लौट आने को कह गई थी. एक सप्ताह बाद राहुल रोज खिड़की के पास खड़ा रहता. रिक्शे की घंटी की आवाज दूर से ही सुन कर वह रोमांचित हो उठता. शायद इस रिक्शे में संध्या आ रही हो. फिर समय बीतने के बाद वह अपने पागलपन पर खुद ही हंस पड़ता. यही सब याद करतेकरते राहुल खो गया.

तभी दरवाजे पर रिक्शे की घंटी सुनाई पड़ी. राहुल चौंक गया. देखा, गोद में बच्ची लिए संध्या रिक्शे से उतर रही है. वह खुशी से लपका. रिक्शे वाले को पैसे दे कर उस ने सामान भीतर रखा. फिर बच्ची को गोद में ले कर राहुल ने चूम लिया.

संध्या आते ही राहुल से लिपट गई, "राहुल, तुम मुझे..."

राहुल ने संध्या के मुंह पर हाथ रख दिया, "चुप, अब एक भी शब्द नहीं. कुछ नहीं हुआ है," और चारपाई पर संध्या के साथ बैठ गया.

संध्या के गाल पर बहे आंसू राहुल के सीने को धोने लगे. राहुल ने बहुत ही प्यार भरा हाथ संध्या के सिर पर फेरा. वह उस के सीने के और करीब आ गई. ●

सैर को निकले...

सैर को निकले वोह अपनी रह गुजर से बेहिजाब,
और रखी हो हमारी लाश कफनाई हुई.
—रियाज खैराबादी

लेख • द. व. गुरुप्रसाद

ग्रामीण युवकों के लिए खुला विश्वविद्यालय

शिक्षा के क्षेत्र में एक नया किंतु क्रांतिकारी विकल्प

कुछ समय से हम युवकों के बारे में बहुत कुछ सुन रहे हैं. हड़तालों, घेरावों, फैशन परेडों इत्यादि के द्वारा उन्होंने अपने अस्तित्व का आभास कराया है. लेकिन यह एक अद्भुत बात है कि हम जब कभी भी युवकों के बारे में सोचते हैं, हमारे दिमाग में अत्यंत आधुनिक, नए तौरतरीकों वाले शिक्षित युवक ही आते हैं जो केवल शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित हैं. ग्रामीण युवकों को बिलकुल भुला दिया जाता है और सरकार के साथसाथ अन्य कोई व्यक्ति भी इन बहुसंख्यक युवकों के बारे में कोई चिंता करता प्रतीत नहीं होता.

सौभाग्य से वर्तमान केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रो. नूरुलहसन ने एक राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय आरंभ करने का प्रस्ताव रखा है. उस से ग्रामीण युवकों पर अधिक ध्यान दिया जा सकेगा और कुछ सीमा तक शहरी और ग्रामीण युवकों के बीच की खाई को भरा जा सकेगा.

यह खुला विश्वविद्यालय क्या है? वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला होगा. इस में प्रवेश के लिए औपचारिक शैक्षणिक आवश्यकताओं पर बल नहीं दिया जाएगा. इस में शिक्षा छात्र के दरवाजे पर ही उपलब्ध हो सकेगी. इस में हर व्यक्ति अपेक्षाकृत कम शुल्क दे कर अपने घर पर ही अपनी रुचि का विषय पढ़ सकेगा, जैसा कि उस के नाम से ही प्रकट है. खुले विश्वविद्यालय का उद्देश्य विभिन्न उपायों के द्वारा ज्ञान का वितरण होगा ताकि समय या धन की बरबादी के बिना कम सुविधाप्राप्त लोगों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सहायता की जा सके. कुछ वर्ष पूर्व डा. वी. के. आर. वी. राव ने, जब वह केंद्रीय शिक्षा मंत्री थे, कहा था कि खुला विश्वविद्यालय सामाजिक क्रांति का साधन बन सकता है और बड़े पैमाने पर शिक्षा का वितरण करने में सहायक हो सकता है.

खुले विश्वविद्यालय का सिद्धांत नया नहीं है. बहुत से देश खुले विश्वविद्यालय स्थापित कर चुके हैं. ब्रिटेन में हाल ही में खुला विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है. फ्रांस, पश्चिमी जरमनी, न्यूजीलैंड, जापान और आस्ट्रिया पहले ही यह प्रयोग कर चुके हैं. न्यू साउथ वेल्स के विश्वविद्यालय ने एक रेडियो विश्वविद्यालय स्थापित किया है.
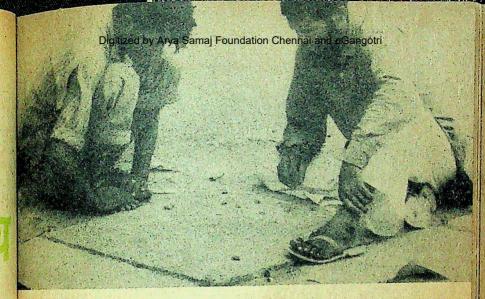
इन बेरोजगार ग्रामीणों को उपयुक्त काम के लिए शिक्षा दे कर प्रशिक्षित किया जा सकता है.

दिसंबर, 1970 में नई दिल्ली में आयोजित एक विचार गोष्ठी में यह मत व्यक्त किया गया था कि खुला विश्वविद्यालय ऐसे लोगों के लिए उच्च शिक्षा का प्रबंध कर सकता है जिन्होंने किसी कारणवश कम अवस्था में ही स्कूल या कालिज छोड़ दिया हो. खुला विश्वविद्यालय कम खर्चीली शिक्षा उपलब्ध करता है और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है.

खुले विश्वविद्यालय का शिक्षा देने का तरीका बिलकुल नया है जो परंपरागत तरीके से श्रेष्ठतर है. वह बहुमाध्यम प्रणाली का प्रयोग करता है. इस में छात्रों को शिक्षा देने के लिए रेडियो और टेलीविजन का प्रयोग किया जाता है. संपूर्ण देश में विभिन्न स्थानों पर परामर्श और पथप्रदर्शन केंद्र स्थापित किए जाते हैं. छात्र निकटतम केंद्र में जा सकते हैं और वहां शिक्षकों की सहायता से अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ सकते हैं. इस के अतिरिक्त, अध्ययन से संबद्ध फिल्में भी दिखाई जाती हैं. पाट घर पर ही भेज दिए जाते हैं. यह विश्वविद्यालय अपने छात्रों को अध्ययन संबंधी समयसारिणी का पालन करने के लिए बाध्य नहीं करता. इस के अधीन ग्रीष्मकालीन स्कूल भी स्थापित किए जाते हैं और वहां पूर्णकालिक शिक्षा दी जाती है. इस से उन छात्रों को लाभ होता है जो रोजगार में लगे होते हैं. वे घर पर भी अध्ययन करते हैं और उन का शिक्षकों से भी संपर्क स्थापित हो जाता है. वे उन के लेक्चर भी सुन सकते हैं.

खुले विश्वविद्यालय का एक लाभ यह है कि उसे अपेक्षाकृत कम पूंजी से स्थापित किया जा सकता है. ब्रिटेन में एक परंपरागत विश्वविद्यालय के लिए (जिस में लगभग 5,000 छात्र होते हैं) दो करोड़ पौंड की आवश्यकता होती है जब कि खुले विश्वविद्यालय के लिए केवल 60 लाख पौंड की आवश्यकता होती है. इस के अतिरिक्त यह 20,000 से अधिक छात्रों की आवश्यकता पूरी कर सकता है. इस प्रकार कुछ वर्षों के बाद खुला विश्वविद्यालय आत्मनिर्भर बन सकता है. खुले विश्वविद्यालय में परंपरागत विश्वविद्यालयों की अपेक्षा कम शिक्षकों की आवश्यकता पड़ती है.

इस का सब से बड़ा लाभ यह है कि यह राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण तत्त्व सिद्ध होता है.

विदेशों में पहले से ही अनेक खुले विश्वविद्यालय हैं. उन्हें 'माडल' मान कर भारत को राष्ट्रीय स्तर पर खुला विश्वविद्यालय स्थापित करने में कोई कठिनाई अनुभव नहीं होनी चाहिए. भारत को ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकता पूरी करने के लिए खुला विश्वविद्यालय खोलना ही चाहिए. यद्यपि शहरी क्षेत्रों में कारखानों और कार्यालयों में काम करने वाले बहुत से लोगों को भी उच्च शिक्षा की आवश्यकता है, खुले विश्व-विद्यालय को अधिकांशतः ग्रामीण युवकों की आवश्यकताएं पूरी करनी चाहिए. शहरी क्षेत्रों के कर्मचारियों को, जिन्हें उच्च शिक्षा की आवश्यकता है, वर्तमान अनेक विश्वविद्यालयों में बाहरी छात्रों के रूप में प्रवेश लेने में कोई कठिनाई नहीं होती. अनेक विश्वविद्यालय इस प्रकार के छात्रों के लाभ के लिए पहले ही पत्रा-चार स्कूल स्थापित कर चुके हैं. इसलिए खुला विश्वविद्यालय केवल ग्रामीण युवकों के लिए ही खुला रखना चाहिए.

खुले विश्वविद्यालय की स्थापना करते हुए हमें ऐसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जो केवल भारत में पाई जाती हैं. प्रथम और सर्वप्रमुख समस्या होगी शिक्षा के माध्यम की. अध्ययन सामग्री तैयार करते हुए विश्व-विद्यालय को उसे विभिन्न भाषाओं में तैयार करना पड़ेगा और छात्रों को अपनी मातृभाषा में प्रश्नों के उत्तर देने का अनुमति प्रदान करनी पड़ेगी. चूंकि भारत के अनेक विश्वविद्यालय क्षेत्रीय भाषाओं को स्नातक स्तर तक पहले ही शिक्षा का माध्यम बना चुके हैं इसलिए यह कोई कठिन कार्य नहीं होगा.

लेकिन सब से अधिक कठिन काम होगा योजना बनाना और अध्ययन सामग्री तैयार करना. इस के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी क्योंकि उन्हें हजारों ऐसे छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करना पड़े[गा] जिन को वे प्रत्यक्ष रूप से नहीं [जान] सकते. विभिन्न विश्वविद्यालयों में [इस] समय जिन पत्राचार पाठ्यक्रमों का प्र[योग] है, उन से इस दिशा में कुछ निर्देश प्रा[प्त] हो सकते हैं.

खुले विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान [के] उचित पाठ्यक्रमों का प्रबंध नहीं कि[या] जा सकता. यूरोपीय देशों में कुछ सा[र्व]जनिक प्रयोगशालाएं स्थापित की गई [हैं] और उन की सहायता से छात्र अपने [घर] पर प्रयोग कर सकते हैं. लेकिन यह ए[क] सर्वविदित तथ्य है कि ये सार्वजनि[क] प्रयोगशालाएं सर्वसाधनसंपन्न प्रयोगशाला[ओं] का स्थान नहीं ग्रहण कर सकतीं. भा[रत] में खुले विश्वविद्यालय द्वारा केवल मान[वि]की, गणित और सामाजिक शास्त्रों [की] ही शिक्षा उचित हैं.

बेरोजगारों की भीड़

कुछ आलोचक यह अनुभव करते [हैं] कि बेरोजगारों की भीड़ में और अधि[क] स्नातकों को शामिल करते जाने से को[ई] लाभ नहीं. इस संबंध में इस बात [को] ध्यान रखना चाहिए कि खुले विश्व-विद्यालय का उद्देश्य निरक्षरता दूर करना तथा शहरी क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों [के] लोगों के बीच अंतर समाप्त करना है. य[ह] कहना उचित नहीं है कि खुले विश्ववि[द्या]लय के ग्रामीण स्नातक नौकरियों के लि[ए] शहरी स्नातकों से स्पर्धा करेंगे. खु[ला] विश्वविद्यालय मुख्यतः उन के जीवन औ[र] मस्तिष्क के विकास में योगदान देगा औ[र] समाज का शैक्षणिक हितसंवर्धन करेगा. सैटेलाइट इंस्ट्रक्शन टेलीविजन एक्स[पे]रिमेंट (उपग्रह शिक्षा, दूरदर्शन प्रयोग) किए जाने के बाद (जिसे एन. ए. एस. ए., अमरीका द्वारा स्थापि[त] किया जाएगा) राष्ट्रीय खुला विश्ववि[द्या]लय शीघ्र ही स्थापित किया जा सकता है. विभिन्न स्थानों पर रेडियो और टेलीविजन स्टेशनों की स्थापना के बा[द] हमें इस दृष्टि से कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए.

टिक्का खां की गुप्त मीटिंग शुरू ही हुई थी कि ढाका का इंटरनेशनल होटल धमाकों से गूंज उठा. अविनाश की वह योजना कैसे सफल हुई?

आप पढ़ चुके हैं :

मम्मीपापा द्वारा पीटे जाने पर अविनाश घर छोड़ कर चला गया था और बिना टिकट एक गाड़ी में बैठ कर चल पड़ा था. टिकट चैकर ने जब अगले स्टेशन पर उसे धक्का दे कर उतार दिया तो वह पटरियों के साथसाथ चलता हुआ कंटीले तारों की एक बाड़ से जा टकराया और फौजी सिपाही पकड़ कर उसे ले गए. फौजी कैंप में अविनाश को हिंदुस्तानी जासूस समझ कर तरहतरह की यातनाएं दी जाने लगीं. दूसरे दिन मुक्ति फौज के लोग उसे जेल से निकाल कर अपने साथ ले गए जहां उसे पुल तोड़ने का काम सौंपा गया और वह सफल रहा.

अविनाश गुप्त मार्गों से होता हुआ जमाल के पास पहुंचा, जो अपने साथियों के साथ बातचीत में व्यस्त था.

"हैलो, कैप्टन. कोई ताजा खबर?" अविनाश को देखते ही उस ने पूछा.

"बंगबंधु पर पाकिस्तान में मुकदमा शुरू हो गया है," अविनाश ने बताया.

जमाल हंसा, "अफसोस है, दोस्त, आप की खबर बासी है. थोड़ी देर पहले मुझे यह खबर मिल चुकी है."

"मेरे पास एक और खबर है जो निश्चित रूप से आप के लिए एकदम ताजी होगी और मैं योजना पूरी करने की आप से आज्ञा लेने आया हूं."

जमाल सीधा हो कर बैठ गया. उस के साथी भी सतर्क हो गए. कुछ रुक कर अविनाश बोला, "आज दोपहर को एक बजे टिक्का खां ने इंटरनेशनल होटल में एक दावत का आयोजन किया है, जिस में उस ने प्रेस वालों को भी बुलाया है. अभी पूरी

खबर नहीं आई है. लेकिन मैं ने योजना बनाई है कि [illegible] होटल के उस हिस्से को उड़ा दिया जाए."

"बहुत खूब," जमाल उछल कर बोला, "कैप्टन, आप की यह खबर सचमुच बहुत जोरदार है और उस से भी जोरदार है यह योजना. मेरी तरफ से पूरी इजाजत है."

दोपहर के 12 बजे थे. ढाका का इंटरनेशनल होटल आज काफी दिनों के बाद लोगों से भर रहा था. उस के बड़े लान के चारों तरफ फौजी जवानों का कड़ा पहरा था और गेट पर तैनात दो अधिकारी हर व्यक्ति का कार्ड देख कर, उस की तलाशी लेने के बाद ही उसे अंदर जाने दे रहे थे.

होटल का प्रमुख रसोइया काजमी आज बहुत व्यस्त था. जरा सी लापरवाही का मतलब था धड़ से गरदन का अलग होना. वह पूरी लगन से विविध व्यंजन तैयार कर रहा था.

तभी उस के सामने की खिड़की का शीशा बहुत हौले से खटका और उस में से एक लड़के का चेहरा झांकता हुआ दिखाई दिया. काजमी गौर से देखने की कोशिश कर रहा था कि तभी लड़के ने अपने हाथ में पकड़ा एक गत्ते का टुकड़ा उस के सामने कर दिया जिस पर बंगला देश का मानचित्र अंकित था और उस के नीचे एक लाल गोल दायरा बना था.

काजमी बुरी तरह चौंक पड़ा. वह बंगाली था और छिपे तौर से मुक्तिवाहिनी के साथ था. मौकेमौके पर वह बड़ी महत्त्वपूर्ण खबरें बाहर पहुंचाता रहता था इसलिए वह यह निशान देखते ही समझ गया कि बाहर खुफिया दल का कोई सदस्य खड़ा है. उस ने सतर्कता से इधरउधर देखा. सभी अपने काम में व्यस्त थे. उस ने धीरे से पीछे का दरवाजा खोला और फुरती से बाहर आ गया. वह लड़का भी खिड़की से हट कर अब सड़क के उस पार एक पेड़ के नीचे खड़ा हो गया था.

काजमी चारों ओर देखता, लप[illegible] पहुंचा.

"आदाब, चचा," लड़के ने हंस कहा.

"आदाब. मुझे क्यों बुलाया है" काजमी ने फुसफुसा कर पूछा.

लड़के ने उंगली उठा कर एक इशारा किया. काजमी ने देखा पार्क में झाड़ियों के झुरमुट में से खूबसूरत चेहरा हलके से झांक कर गया है. काजमी ने प्रश्न भरी न से लड़के की ओर देखा तो वह बहुत धी आवाज में फुसफुसा कर बोला, "कै अविनाश."

जो लोग थोड़ा भी मुक्तिवाहिनी कामों में साथ देते थे, अब उन के लि यह नाम नया नहीं रह गया था और विस्मय से उस के बारे में बातें कि करते थे.

"तुम यहीं ठहरो और दरवाजे नजर रखो. मैं अभी आया," काज ने लड़के से कहा और फिर एक ही छ में पार्क की चारदीवारी फांद कर अ घुस गया. दस मिनट बाद जब वह लौ तो उस के चेहरे पर गजब की गंभीर और उत्तेजना थी. उस ने फिर एक

"कौन है, बे, तू?" एक फौजी ने डपट कर अविनाश से पूछा तो उस हकलाते हुए कहा, "हु...जूर मैं, शबराती हूं."

सतर्कता से सड़क की दोनों ओर और लपक कर होटल के किचन में गया.

साढ़े बारह बजने से पहले ही प और भी कड़ा कर दिया गया और हो के पीछे भी दो फौजी आ कर जम काजमी के हाथ काम में लग लेकिन आंखें खिड़की पर जमी हुई फौजियों के वहां बैठने पर उस ने बिचकाया और फिर अपने काम में गया.
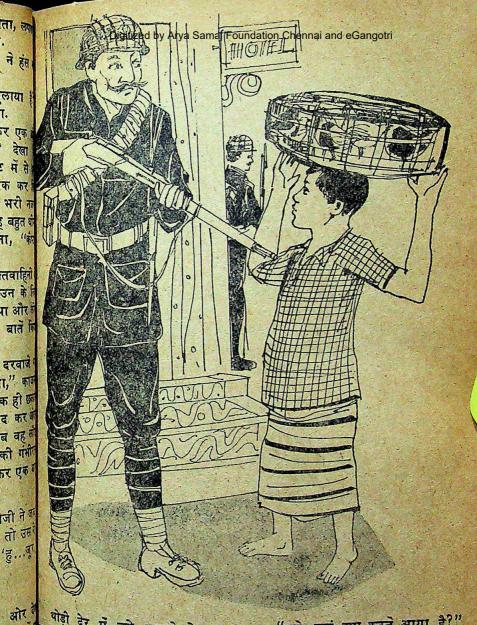
थोड़ी देर में उसे सामने से एक लड़का आता हुआ दिखाई दिया. उस ने धारीदार ऊंची तहमद, गंदी आधी बांहों की कमीज और चिपकी हुई फटी सी टोपी पहन रखी थी. उस के सिर पर एक टोकरी थी, जिस में मुरगे उछलकूद रहे थे.

"कौन है, बे, तू?" एक फौजी ने झपट कर उस से पूछा.

"हु...हु...जूर, मैं, शबराती," लड़के ने हकला कर कहा. इन फौजियों को देख कर वह बुरी तरह घबरा गया था.

"अबे, यहां क्या करने आया है?" दूसरे फौजी ने गुर्रा कर पूछा.

"ये . . . ये मुरगे, हुजूर," लड़का किसी तरह बोला.

"होही," फौजी हंसा, "मुरगे की औलाद, यहां से भाग जा, वरना अभी तेरा और तेरे मुरगों का भुरता बना दूंगा."

"हुजूर, ये मुरगे होटल में पहुंचाने हैं. वहां का आर्डर है."

"अबे ओ कुकड़ू, मैं पूछता हूं,

मुरगों का आर्डर कहां है?"

"आर्डर तो फोन से जाता है, हुजूर."

"अच्छा, बेटा, फोन से जाता है! देख, बे, भागता नजर आ," फौजी ने बंदूक तान कर कहा.

लड़का बहुत घबरा गया.

तभी किचन का दरवाजा खुला और काजमी ने गरदन निकाल कर झांका. शबराती को देख कर वह वहीं से चिल्लाया, "अबे, शबराती के बच्चे, तू वहां खड़ाखड़ा गप्पें मार रहा है, यहां मुरगों के बिना काम रुका है."

फौजियों ने काजमी की ओर देखा तो वह बोला, "आने दीजिए, सूबेदार साब. रोज आता है. मुरगों के बिना बड़ी परेशानी हो रही है. जनाब टिक्का खां साहब का खास हुक्म है कि हर आदमी के लिए कम से कम एक मुरगा जरूर होना चाहिए."

"जा, बे," फौजी ने शबराती से कहा और अपने साथी की ओर मुड़ कर बोला, "हुंह, सब के लिए एकएक मुरगा. खून हम बहाएं और मुरगा खाए साला टिक्का. यह कमबख्त काजमी न आता तो एकदो मुरगे झटक लिए होते."

शबराती हड़बड़ा कर किचन में जा घुसा. उस ने टोकरा एक ओर रख कर पसीना पोंछा. काजमी ने तुरंत टोकरा उठाया और एक कोठरी में घुस गया. उस के पीछे शबराती भी था.

"शाबाश, कप्तान. गजब का काम किया है आप ने," काजमी फुसफुसा कर बोला, "अब देर नहीं करनी है, वक्त हो गया है. वह सामने वर्दी रखी है. उसे पहन लीजिए. मैं तब तक और इंतजाम करता हूं."

कैप्टन अविनाश, जो शबराती का रूप बना कर आया था, जल्दीजल्दी बैरों की वर्दी पहनने लगा. थोड़ी देर में काजमी तीन बड़ेबड़े डोंगे ले कर अंदर आया और उस ने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया. अविनाश ने झपट टोकरी के अंदर हाथ डाल कर मुर्गों के नीचे पड़े तीन टाइम बम निकाले और उन्हें ... कर के डोंगों में रख कर उन्हें बंद ... दिया.

"आप मेरे पीछे आइए. मैं ... को जगह के लिए इशारा कर दूंगा. ... काम आप का," काजमी ने कहा.

अविनाश ने स्वीकृति से सिर हिला... और एक बड़ी ट्रे में तीनों डोंगे रख ... तैयार हो गया. काजमी ने उस... इशारा किया और वह ट्रे उठाए उस... पीछे चल पड़ा.

किचन से निकल कर वे गैलरी... हो कर सीढ़ियों पर पहुंचे. ऊपर का... चहलपहल थी. एक मेज पर पहुंच ... काजमी ने प्लेटों को थोड़ा इधरउ... किया. अविनाश ने मेज के बीच ... एक डोंगा रख दिया. यहां टिक्का ... को बैठना था. इसी तरह बगल की ... पर भी एक डोंगा रखा गया, जहां याहि... खां का विशेष प्रतिनिधि बैठने वाला ... फिर तीसरा डोंगा उस मेज पर रखा ... जहां फौज के अन्य बड़े अधिकारी बै... वाले थे.

यह काम खत्म ही हुआ था ... बरामदे में जूतों की एड़ियां खट... लगीं. सैकड़ों संवाददाताओं और फौ... अधिकारियों से हाल भर गया. धी... धीमा संगीत भी चालू हो गया. ... अपने निर्धारित स्थानों पर बैठ गए ... अविनाश का दिल उत्तेजना से धड़क ... था.

फोटोग्राफरों के कैमरों की ... चारों तरफ गूंजने लगीं. जनरल टि... खां खड़े हुए. उन्होंने गर्व से चारों ... देखा और फिर अपनी फौजी अंगरेजी ... कहना शुरू किया :

"मैं आप लोगों को आजकल ... हालात के बारे में कुछ बताना चाहता ... यहां जो बगावत की आवाज उठाई ... है, वह कुछ गद्दारों की साजिश है ... को हम ने कुचल दिया है. ये हिंदुस्ता... पाकिस्तान के दो टुकड़े कर देना ... हैं जो कभी मुमकिन नहीं होगा. हम...

"गजब हो गया, कप्तान, नाले के दूसरे मुहाने पर एक नाव खड़ी है," कादिर ने कहा तो अविनाश भी खड़ा हो कर देखने लगा.

का भरपूर जवाब हिंदुस्तान को...."

उन की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि हाल में एक तेज धमाका हुआ और देखते ही देखते दूसरे और तीसरे धमाके से हाल हिल उठा.

अविनाश के चेहरे पर क्षण भर को एक मुसकान आ कर खेल गई. उस ने देखा कि पाकिस्तान से आए प्रतिनिधि का शरीर चिथड़ेचिथड़े हो कर उड़ गया है. उस ने टिक्का खां को भी अपना बायां हाथ पकड़ते हुए देखा. तीसरी मेज पर कई फौजी अफसर बुरी तरह घायल हो गए थे. वह अन्य बैरों के साथ नीचे भाग गया.

इधरउधर खड़े फौजी तेजी से हाल की तरफ भाग रहे थे. अजब बदहवासी की हालत थी. अविनाश दौड़ता हुआ किचन में पहुंचा. उस ने काजमी को आंख मारी और कोठरी में घुस गया. तभी पीछे का दरवाजा जोरजोर से भड़भड़ाया जाने लगा. काजमी ने लपक कर दरवाजा खोला. दोनों फौजी घबराए खड़े थे.

"यह धमाका कहां हुआ है?" एक ने हड़बड़ा कर पूछा.

"ऊपर कुछ गड़बड़ हुई है, सरकार, जल्दी जाइए," काजमी ने भी घबराए हुए स्वर में कहा और वह एक ओर हट कर खड़ा हो गया. दोनों फौजी पतीलों को ठुकरातेलुढ़काते ऊपर भागे. काजमी ने क्षण भर इधरउधर देखा. सड़क पर कोई नहीं था. उस ने तुरंत अविनाश को उस की टोकरी पकड़ाई और वह चुपचाप बाहर निकल गया.

अविनाश का संगठन सशक्त रूप [illegible] दिखाई देने लगा था. ब[illegible] विस्फोट के बाद ढाका में फौजी शास[illegible] बहुत कड़ा हो गया था और जब अविना[illegible] अपने तीन साथियों को न केवल छु[illegible] लाया बल्कि उस ने पेट्रोल और गोलाबारू[illegible] के भंडार में आग भी लगा दी तो शास[illegible]

बुरी तरह बौखला उठे. लेकिन अविनाश और इस के साथियों पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वे अब भी उसी प्रकार सूचनाएं एकत्रित कर रहे थे और जगह-जगह बम विस्फोट कर रहे थे.

एक दिन जमाल ने आ कर अविनाश से कहा, "कैप्टन, मुझे अभीअभी पता चला है कि दुश्मनों को हमारे इस अड्डे का सुराग मिल गया है. यद्यपि उन का यहां तक पहुंचना आसान नहीं है लेकिन अच्छा यही है कि हम लोग अब इस स्थान को छोड़ दें. मैं शीघ्र ही कोमिल्ला की तरफ बढ़ रहा हूं. आप यहां का काम अपने किसी खास साथी को सौंप कर कोमिल्ला पहुंच जाइए," और वह जिस तेजी से आया था, उसी तेजी के साथ निकल भी गया.

कोमिल्ला में पहले से ही अविनाश का संगठन काम कर रहा था. वह दोतीन बार वहां जा चुका था. उस ने वहां भी जासूस बच्चे तैयार कर लिए थे. हर जगह उसे ऐसे लड़के मिल जाते थे जिन के घर जला दिए गए थे, मांबाप मर चुके थे या भारत चले गए थे और बेसहारा वे पाकिस्तानियों की दृष्टि से छिपते इधरउधर भटक रहे थे. ऐसे ही लड़कों की अविनाश को आवश्यकता रहती थी. उन्हें जासूसी की खास ट्रेनिंग दे कर तैयार कर दिया जाता था. कोमिल्ला में अविनाश को अपना जाल फैलाते समय नहीं लगा.

इधर कई दिनों से जमाल का कोई पता नहीं था. अविनाश को भी उस की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी थी. एक रात जब वह अपनी चटाई पर लेटने जा रहा था तो उस का दरवाजा सांकेतिक रूप से खटका. बिजली की गति से वह उठा और कमर में बंधे रिवाल्वर को टटोलते हुए उस ने दरवाजा खोल दिया.

"यूसुफ, नंबर तीन तीन पांच, पूर्वी," बाहर से आवाज आई. अविनाश कोड सुन कर आश्वस्त हुआ. उस ने रास्ता छोड़ दिया और यूसुफ के अंदर घुसते ही उस ने सवाल किया, "क्या खबर है?"

"लगभग चार घंटे बाद बंदरगाह पर एक लॉरेन नाम का अमरीकी जहाज लगने वाला है जो वहां से विशाल युद्ध-सामग्री ले कर आया है," यूसुफ ने फुसफुसा कर कहा.

"बहुत खब," अविनाश बोला, "मगर यह खबर इतनी देर से क्यों मिली?"

"कैप्टन, इस जहाज को बहुत गुप्त रूप से यहां लाया जा रहा है. बहुत कोशिश करने पर भी इस से पहले सूचना नहीं मिल सकी."

"तुम ने कहा न, लगभग चार घंटे बाद. यही कहा न तुम ने? यानी जहाज अब ज्यादा दूर नहीं है. खैर, कुछ और पता चला?"

"जहाज सैनिक नहीं है. दुनिया की नजरों से छिपाने के लिए व्यापारी जहाज में सामग्री भेजी गई है. अधिक सैनिक भी नहीं हैं, शायद 20-25 होंगे. लेकिन सुरक्षा का बहुत प्रबंध है."

"बहुत खूब," अविनाश ने उसे शाबाशी दी, "तुरंत कमांडर को देख कर आओ." फिर वह तेजी से कपड़े बदलने लगा. जेबों में न जाने क्याक्या सामान भरे जा रहा था वह.

"कमांडर नहीं है, कैप्टन."

"क्या?" अविनाश चौंका. उसे याद आया कि जमाल तो कई दिनों से गायब है. वह क्षण भर को पसोपेश में पड़ा रहा और फिर बोला, "नहीं, जहाज घाट पर नहीं लगना चाहिए. कमांडर नहीं है तो हम स्वयं सारा प्रबंध करेंगे."

नवंबर की काली रात. चारों तरफ गहरा सन्नाटा. वातावरण में युद्ध का तनाव. पूरा कोमिल्ला उजाड़, वीरान, एक मरघट सा नजर आता था, जिस पर गीदड़ों और सियारों की तरह पाकिस्तानी दरिंदे फौजी इधरउधर गश्त लगा रहे थे.

समुद्र के किनारे जंगल के एक छोर पर एकांत में एक छोटी सी नाव बंधी हुई थी जिस पर बैठा कादिर मल्लाह काला भूत सा नजर आ रहा था. उस का बदन

एकदम सीधा तना हुआ था और उस की सतर्क तेज आंखें अंधेरे में कुछ खोज रही थीं, उस के कान किसी आहट को सुनने को बेचैन थे.

कादिर के कान खड़े हो गए. उस ने दूर से आती, कीचड़ पर चल रहे कुछ कदमों की आहट सुन ली थी.

धीरेधीरे आवाज नजदीक आती गई. कादिर आंखें फाड़े अंधेरे में उसी ओर देख रहा था. थोड़ी देर में उस ने देखा कि जंगल को पार कर के एक आकृति बाहर आ गई है. एक, दो, तीन, चार, पांच—एकएक कर के पांच काले साए स्पष्ट होने लगे और कादिर उछल कर जमीन पर आ खड़ा हुआ.

"सब ठीक है न, कादिर मियां?" आगे आ रहे साए ने उस के पास आ कर फुसफुसा कर पूछा.

"जी हां," कादिर ने वैसे ही धीमे स्वर में कहा.

"बहुत खूब. अब देर नहीं करनी चाहिए. जल्दी चलो."

पांचों साए नाव पर सवार हो गए. कादिर एक ही छलांग में नाव पर चढ़ गया और उस ने बांस से नाव को ढकेल दिया.

"बहुत संभाल कर चलाओ, कादिर मियां. आवाज नहीं होनी चाहिए," उसे आदेश मिला. चप्पू अब बहुत संभल कर नीचे गिरने लगे जिस से पानी में आवाज न हो.

कोमिल्ला का घाट नजदीक आने लगा. घाट पर इस समय काफी चहलपहल दिखाई दे रही थी. तेज रोशनी फैली हुई थी.

"कादिर मियां, नाव घाट से बहुत दूर रखना. हम लोग खतरे के बहुत पास हैं."

"फिक्र मत करें, मैं नाव सीधे नहीं ले जा रहा हूं. वह नाला देखते हैं आप? बस, वहीं से चलना है हमें. यह नाला घूम कर घाट से आधा मील दूर जा कर खुलता है, फिर उस के बाद कोई खतरा नहीं होगा," कादिर ने धीमे स्वर में कहा और वह नाव को तेजी से दूसरे किनारे की ओर ले जाने लगा.

नाव आगे बढ़ी जा रही थी. सहसा कादिर की सतर्क आंखों ने दूर चमकती एक हलकी रोशनी को पकड़ लिया. कुछ देर तक वह रोशनी को गौर से देखता रहा. फिर उस ने बुदबुदा कर कहा, "गजब हो गया, कप्तान, नाले के दूसरे मुहाने पर एक नाव खड़ी है."

कैप्टन अविनाश उछल कर नाव पर खड़ा हो गया. उस ने दूर तक नजर डाली और उसे भी काफी दूर हलकी हिलती रोशनी दिखाई दी. निश्चित रूप से यह रोशनी किसी नाव से आ रही थी. पानी के थपेड़ों से वह नाव हिलती थी, जिस से कि रोशनी का वह बिंदु भी इधरउधर हिल रहा था. अविनाश के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं, "किस की नाव हो सकती है यह?"

"कप्तान, या तो यह नाव मछियारों की है जो मछली पकड़ रहे हैं या फिर उन कुत्तों ने वहां गश्त बैठा रखी है," कादिर ने कहा.

"देखो, कादिर मियां, नाव अभी बढ़ाए चलो, अभी खतरा दूर है. लेकिन उस नाव से एक फर्लांग पहले ही अपनी

मरता है आशिक तेरा...

कल किसी ने जो कहा, "मरता है आशिक तेरा,"
हंस के गैरों की तरफ कहने लगा—"और सुना?"

—हसरत लखनवी

नाव किनारे लगा लेना. ठीक है न?"

"बिलकुल ठीक, हजूर," कादिर ने कहा और नाव फिर तेजी से चलने लगी. अब रोशनी नजदीक आती जा रही थी.

अविनाश की नाव अब पेड़ों की छांव के नीचे किनारेकिनारे चल रही थी. चप्पुओं की बहुत हलकी आवाज उभरती थी जो हवा की आवाज में घुलमिल जाती थी.

कादिर ने बहुत सावधानी से नाव को किनारे लगा दिया. अब वह नाव स्पष्ट दिखाई देने लगी थी. अविनाश और उस के चारों साथी नाव से नीचे उतरे. उन्होंने अपनी जेबें टटोल कर अपने हथियारों को संभाला. अविनाश फुसफुसाया, "जहां वह नाव खड़ी है, वहां से घाट कुल आधा मील दूर है. गोले फटने या गोलियां चलने की आवाज वहां आसानी से पहुंच जाएगी. इसलिए उन का प्रयोग नहीं करना है."

उस के साथियों ने सारी बात समझ लीं. वे हौलेहौले पेड़ों की आड़ में एकएक कदम रखते हुए आगे को चल दिए. कीचड़ में उन के पैर धंस रहे थे. झाड़ियों से उन के शरीर में खरोंचें आ रही थीं. अंधेरे में रास्ता नजर नहीं आ रहा था और अगला कदम उन्हें किसी भी खतरनाक दलदल में फंसा सकता था. सांप किसी भी क्षण उन के पैरों से लिपट सकते थे. इन तमाम बातों से बेखबर ये किशोर आगे बढ़े जा रहे थे.

उस नाव से थोड़ी दूर इधर आ कर अंधेरे में ये लोग रुक गए. नाव पर एक तंबू लगा हुआ था, जिस के अंदर लोगों के बोलने की आवाज आ रही थी. अविनाश ने इशारा किया और ये लोग दबे कदम धीरेधीरे आगे बढ़ने लगे. ये लोग सरकते हुए नाव के पिछले हिस्से की तरफ पहुंच गए जहां तंबू की छाया के कारण घना अंधेरा छाया हुआ था. उन्हें नाव में चढ़ने में कोई परेशानी नहीं हुई. अब ये लोग तंबू से सटे खड़े थे और इन्हें अंदर की आवाजें साफ सुनाई पड़ रही थीं.

अविनाश ने अंधेरे में चारों तर[फ] देखा. उस समय वह नाले के बीच में था. नाले के दोनों मुहाने काफी दूर थे. बीच में जंगली टापू था और उधर समुद्र. उस के होंठों पर मुसकान खेल गई. उस ने अपने साथियों को इशारे से समझाया और सभी मुसकरा दिए.

अब उन्होंने देर नहीं की. तंबू जि[न] रस्सियों से बंधा था, उन्हें उन्होंने अपने छुरों से एक ही बार में काट दिया और पूरे का पूरा तंबू एक ही बार में नीचे आ गिरा. अंदर से उछलकूद और चीख पुकार की आवाजें आने लगीं. वे लोग बाहर निकलने के लिए तड़प रहे थे लेकिन अविनाश और उस के साथियों ने तंबू को चारों तरफ से ऐसा दबा रखा था कि वे चूहेदानी में बंद चूहों की तरह अंदर ही कुलबुला रहे थे. तभी अविनाश ने अपनी ओर से तंबू को हलकी सी ढील दे दी. अंदर छटपटा रहे लोगों को जैसे ही निकलने का थोड़ा सा रास्ता मिला, उन्होंने निकलने का प्रयास किया.

सब से पहले एक लंबातड़ंगा, गंजे चांद वाला भालूनुमा आदमी तड़प कर बाहर आया जिसे देख कर अविनाश चौंक पड़ा.

वह बिलकुल नंगा उस के सामने आ खड़ा हुआ था. अविनाश ने देर नहीं की और अपने पिस्तौल का भरपूर वार उस के सिर पर किया और साथ ही एक जोरदार लात उस की नंगी कमर में लगा कर उसे पानी में फेंक दिया.

—क्रमशः

अगले अंक में

पाकिस्तानी फौज की सहायता के लिए आने वाले जहाज को अविनाश और उस के साथियों ने समुद्र में ही कैसे बर्बाद कर दिया?

अनचाहे संबंधों से बचाव

कभीकभी अपने परिचितों की गलत हरकतों को युवतियां नजरअंदाज कर जाती हैं, लेकिन बाद में उन्हें कितनी परेशानी उठानी पड़ती है?

जीवन में जैसे मनचाहे संबंधों का कुशलतापूर्वक निर्वाह आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है, वैसे ही अनचाहे संबंधों से बचाव भी. खास तौर पर लड़कियों तथा महिलाओं को, जैसे अपने सफल प्रेम और दांपत्य जीवन के लिए अपने प्रियजनों के साथ सुव्यवस्थित निर्वाह की कला आनी चाहिए, वैसे ही अनचाहे संबंधों से सुनियोजित ढंग से बचाव की भी.

ढंग से अपनेआप को रास्ते चलते अपरिचित लोगों द्वारा आरोपित अनचाहे संबंधों से बचा कर बिना विशेष उलझनें पैदा किए निकल आना भी सचमुच एक कला है. लगभग सभी युवतियों और किशोरियों के जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब कोई अपरिचित या सुपरिचित सुसम्मानित व्यक्ति उन के सामने एक गोपनीय और वैयक्तिक संबंध स्थापित करने का प्रस्ताव अचानक रख देता है. अपरिचित व्यक्ति द्वारा रखे गए ऐसे किसी अनचाहे प्रस्ताव या हरकत के प्रयास को तो एक झटके से ठुकराया जा सकता है. अधिकतर स्त्रियां ऐसे प्रस्ताव ठुकरा ही देती हैं.

पर समस्या तब बनती है जब ऐसी कोई चेष्टा या हरकत किसी सुपरिचित और सम्मानित व्यक्ति या किसी निकट के संबंधी की ओर से की जाती है. मान लीजिए, आप के कोई सम्मानित अध्यापक, जिन से आप साधारणतया संबंध तोड़ना नहीं चाहतीं, ऐसी कोई हरकत कर बैठते हैं. या आप के आफिस के बास, आप के स्कूल के मैनेजर आदि अर्थात ऐसा कोई व्यक्ति होता है जिस से आप सामान्य सौहार्दपूर्ण व्यावहारिक संबंध बनाए रखना चाहती हैं, या फिर आप के रिश्तेदारों में दूर के या निकट के मामा या चाचा भी हो सकते हैं, और जीजा व देवर या जेठ भी. ऐसा कोई व्यक्ति एकांत देख कर आप का हाथ पकड़ ले या आप को चूम लेना चाहे या कोई और हरकत करना चाहे, तो कैसे इस मामले से निपटा जाए?

यह सब कुछ ऐसे मामले हैं, जिन में उलझने वाली लड़की की सब से बड़ी दुविधा यह होती है कि एक तरफ तो वह उस व्यक्ति को अपमानित कर के उस से सामान्य व्यावहारिक संबंध तोड़ना नहीं चाहती, और दूसरी तरफ उस के सामान्य यौन खिलवाड़ या गंभीर यौन कामना का शिकार भी नहीं बनना चाहती. पर होता अधिकतर यह है कि पहली चाह के सामने उस की दूसरी चाह दब जाती है और अनचाहे ही वह एक ऐसे संबंध में फंस जाती है जिसे वह मन से बिल[illegible] नहीं चाहती थी. इस से उस के जी[illegible] की शांति भी भंग हो जाती है.

इस का कारण एक तो पुरुष के [illegible] स्वभाव के बारे में लड़कियों की अज्ञान[illegible] है, और दूसरा उन की प्रारंभ में [illegible] संबंधों को गंभीरता से न लेने की वृ[illegible]

अनेक कटु अनुभवों से गुजरे [illegible] अनेक स्त्रियां इस साधारण से तथ्य [illegible] समझ नहीं पातीं कि पुरुष किसी के सा[illegible] अपने यौन संबंधों को उतनी गंभीरता [illegible] नहीं लेता, जितनी गंभीरता से स्त्रि[illegible] लेती हैं. अधिकांश पुरुष अनेक बार यों [illegible] रास्ते चलते किसी स्त्री से यौन सं[illegible] जोड़ने को तैयार हो जाते हैं या बिना [illegible] के बारे में गंभीरता से सोचे कम उम्[illegible] की लड़कियों के साथ थोड़ाबहुत यौ[illegible] खिलवाड़ कर लेते हैं.

नवीनता का शिकार

अधिकांश स्त्रियां यौन संबंधों [illegible] इतनी गंभीरता से नहीं लेतीं. जैसा [illegible] विवाह विज्ञान के विशेषज्ञ, प्रसिद्ध समाज[illegible] शास्त्री वेस्टरमार्क ने कहा है कि विवा[illegible] बाह्य यौन संबंधों में संलग्न अधिकां[illegible] पुरुष इसलिए किसी दूसरी स्त्री से संबं[illegible] में नहीं पड़ते कि वह उन की पत्नी [illegible] अधिक सुंदर या बुद्धिमान है, बल्कि अधिकतर उन को ऐसे संबंधों में डाल[illegible] वाली मुख्य प्रेरणा विविधता या नवीन[illegible] की उन की खोज ही होती है.

क्योंकि अधिकांश स्त्रियां पुरुषों [illegible] यौन व्यवहार की इस आम वृत्ति को नहीं समझतीं या समझ कर भी नहीं स्वीका[illegible] करतीं, इसलिए अधिकतर जब कोई अ[illegible] पुरुष उन के पास प्रेम का प्रस्ताव ले क[illegible] आता है तो वे यही समझती हैं कि [illegible] उन्हें सचमुच गंभीरता से चाहता है, [illegible] उन्हें ऐसा कोई भ्रम होने लगता है कि वास्तव में उस की पत्नी की अपेक्षा अधि[illegible] आकर्षक, बुद्धिमती आदि हैं. इस भ्रम [illegible] कारण वे न चाहते हुए भी आरो[illegible] संबंध का से प्रतिरोध नहीं कर पातीं.

कई जगह इस भय के बिना [illegible]

युवतियां कुछ [illegible] वालों का प्र[illegible] खुद प[illegible]

महिलाएं इस[illegible] कोई पुरुष [illegible] खिलवाड़ के [illegible] है, संकोचवश [illegible] व्यावहारिक [illegible] उस का प्रति[illegible] पुरुषों की [illegible] और लापरव[illegible] है और कुछ [illegible] समझा लेती [illegible] का क्या बु[illegible] गंभीर होने [illegible]

पर उन[illegible] आगे चल क[illegible] नाक स्तर [illegible] उन्हें सदा [illegible] का शिकार [illegible] उसे एक प्र[illegible] है. अंततः [illegible] सामान्य व्य[illegible] तो हमेशा [illegible]

सवाल [illegible] से सुव्यवस्थि[illegible] कैसे निपटा [illegible] मित्रों के [illegible] मुक्ता

युवतियां कुछ कारणवश पुरुषों की छेड़छानी का प्रतिरोध नहीं कर पातीं और खुद परेशानी में फंस जाती हैं.

महिलाएं इस जानकारी के बावजूद कि कोई पुरुष उन से केवल मनोरंजन और खिलवाड़ के लिए ही ऐसा करना चाहता है, संकोचवश या सम्मानवश या सामान्य व्यावहारिक संबंधों के टूटने के भयवश उस का प्रतिरोध नहीं कर पातीं. वे खुद पुरुषों की ऐसे संबंधों के प्रति अगंभीर और लापरवा दृष्टि से प्रभावित हो जाती हैं और कुछ क्षणों के लिए अपनेआप को यों समझा लेती हैं कि चलो इतनी सी बात का क्या बुरा मानना, आगे यदि मामला गंभीर होने लगा तो देख लिया जाएगा.

पर उन की यह प्रारंभिक असजगता आगे चल कर मामले को सचमुच खतरनाक स्तर तक गंभीर बना देती है. तब उन्हें सदा के लिए एक अवांछित संबंध का शिकार बन जाना पड़ता है अथवा उसे एक प्रबल झटके के साथ तोड़ना पड़ता है. अंततः ऐसे लोगों के साथ अपने सामान्य व्यावहारिक या पारिवारिक संबंध तो हमेशा के लिए टूट ही जाते हैं.

सवाल यह है, ऐसे अनचाहे संबंधों से सुव्यवस्थित ढंग से और सतर्कता से कैसे निपटा जाए? अपने और अपनी अनेक मित्रों के अनुभवों से मैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि इस का सब से अच्छा उपाय यह है कि इस दिशा में पहला कदम बढ़ाते ही दूसरे व्यक्ति को दृढ़ता से बिना अधिक अपमानित किए, रोक दिया जाए.

मान लीजिए, आप अपनी बड़ी बहन या निकटतम सहेली के यहां गई हुई हैं. एकांत पा कर उस का पति आप का चुंबन लेने की या आप का वक्ष आदि दबाने की कोशिश करता है. तब यह सोच कर कि वह नाराज हो जाएगा या घर में कलह होगी, चुपचाप उसे सह जाना उस व्यक्ति को आगे बढ़ने की शह देना है. उसे स्पष्ट शब्दों में दृढ़ता से कह दीजिए, "जीजाजी, यह मुझे बिलकुल पसंद नहीं है, आइंदा ऐसी हरकत करने की कोशिश न करें."

पहले कदम पर ही रोकिए

वास्तव में ऐसे संबंधों की विडंबना ही यह है कि जिस कटुता से बचने के लिए उन को पहले कदम पर नहीं रोका जाता, वह कटुता उन के थोड़े और विकास के बाद मजबूर हो कर अधिक कटु बना कर लानी पड़ती है. पहले कदम पर दृढ़ता से रोक देने से आप भविष्य में होने वाली अधिक कटुता और बिगाड़ से बच जाती हैं. जिस का हाथ आप ने पहली बार नहीं झटक दिया, उस का हाथ संभव है भविष्य में कोई ऐसी गंभीर हरकत कर बैठे जो आप के लिए भी और उस के लिए भी बदनामी, कटुता व मानसिक कष्ट का बड़ा कारण बन जाए.

पुरुष का यह स्वभाव होता है कि पहले वह उंगली पकड़ कर देखता है और फिर कलाई पकड़ लेता है. यदि आप ने उंगली झटक दी तो न तो वह अधिक बुरा मानेगा और न आप अधिक उलझन में फंसेंगी. पर यदि आप ने उंगली का पकड़ा जाना लापरवाही से या संकोच से सह लिया तो या तो आप को उस का कलाई पकड़ना भी सहन करना होगा, अन्यथा अब कहीं अधिक जोर से उसे झटकना होगा. एक रास्ते पर काफी आगे बढ़े हुए व्यक्ति को रोकना अधिक

मुश्किल भी होता है और घातक भी.

मैं ऐसी कई लड़कियों को जानती हूं जिन्होंने शुरूशुरू में दृढ़ प्रतिरोध नहीं दिखाया. बाद में स्थिति इतनी गंभीर हो गई और उन्हें संबंध इतने झटके के साथ तोड़ने पड़े कि उन के अपनी बहनों के साथ या प्रिय सहेलियों के साथ के सौहार्द-पूर्ण संबंध भी हमेशा के लिए टूट गए.

इस संबंध में सब से पहली ध्यान रखने की बात यह है कि जिस पुरुष से आप ऐसे अनचाहे संभावित संबंधों से बचना चाहती हैं, उस को एकांत में अपने साथ होने का अधिक अवसर मत दीजिए. ऐसे अवसर यदि आ भी जाएं तो बातचीत और व्यवहार में एक सम्मानजनक दूरी बनाए रखनी चाहिए और उस के उठे हुए गलत कदम को पहली ही बार आत्मसम्मान व दृढ़ता के साथ रोक देना चाहिए.

सामान्यतया युवतियों की लापरवाही ही उन की उलझनों और समस्याओं की जिम्मेदार है, जो एकांत में भी किसी अन्य पुरुष के साथ सब तरह की बातचीत कर लेने को अपने आधुनिक होने का प्रभाव मानती हैं. क्योंकि गोपनीय बातें कर के कोई भी पुरुष किसी भी युवती या स्त्री से गोपनीय संबंध बनाने के अपने इरादे की पृष्ठभूमि तैयार कर सकता है. ऐसी स्त्रियां यदि किसी उलझन में पड़ जाती हैं तो अपनी गलती नहीं सम[illegible] और पुरुषों के [illegible] जाती और [illegible] स्वभाव को कोसकोस कर अपनी [illegible] मिटाती हैं.

अपनी बीमारी, परेशानी और मा[illegible] सिक कष्ट का अभिनय कर के भी [illegible] पुरुष महिलाओं की सहानुभूति प्राप्त [illegible] उन से नाजायज संबंध स्थापित करने [illegible] कोशिश कर सकते हैं. इसलिए ए[illegible] के अवसरों पर जरूरत से ज्यादा सहा[illegible] भूति या सेवाभाव ऐसे पुरुषों के सा[illegible] दिखाना, जिन से आप इस तरह के सं[illegible] से बचना चाहती हैं, कई बार खतर[illegible] साबित होता है.

लेकिन जहां स्त्रियों को अपने [illegible] पर थोपे जाने वाले अनचाहे संबंधों [illegible] दृढ़ता व कुशलतापूर्वक प्रतिरोध कर [illegible] उन्हें परिपक्व होने से बचा लेना चाहि[illegible] वहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि [illegible] के बारे में बहुत शोरगुल मचाना या ए[illegible] दम एक हंगामा सा खड़ा कर देना [illegible] बुद्धिमानी नहीं है. उन्हें यह जान[illegible] चाहिए कि ऐसी कोशिश आम तौर प[illegible] लगभग सभी पुरुष थोड़ी बहुत करते [illegible] रहते हैं. इसलिए यह कोई ऐसी अनहोनी [illegible] बात नहीं है जो संसार में पहली बा[illegible] उन्हीं के साथ घटित हुई हो.

यह ज्ञान उन्हें इतनी समझदारी ज[illegible] देगा कि अपने साथ घटी इस प्रकार [illegible] घटना को वे एक व्यापक संदर्भ में र[illegible] कर देख सकें. इस व्यापक संदर्भ के बिना [illegible] ऐसी घटना के प्रति प्रबल भावनात्म[illegible] उद्वेलन दिखाने वाली नवयुवतियों [illegible] अपने भावी जीवन में पुरुष मात्र के प्रति [illegible] गहरी घृणा से भर उठने का खतरा रह[illegible] है और ऐसी लड़कियां फिर सामान्य [illegible] दांपत्य या प्रेम संबंधों के जीने लायक [illegible] नहीं रह जातीं. इसलिए उक्त तथ्य की [illegible] जानकारी व समझदारी उन्हें जितनी [illegible] जल्दी हो जाए और जितनी ही वे उस [illegible] प्रति सतर्क रह कर स्वस्थ प्रतिक्रिया [illegible] सकें, उतना ही उन के मानसिक स्वास्थ्य [illegible] व सुखद पारिवारिक जीवन के लि[illegible] अच्छा है.

लाल ग्रह मंगल

चंद्रमा के बाद अब मंगल ग्रह की निकट से जानकारी

टेलिस्कोप से देखने पर मंगल एक आकर्षक दिव्य पिंड प्रतीत होता है. उस की सतह के ब्योरे का बिलकुल स्पष्टता से अनुमान किया जा सकता है. यद्यपि कभीकभी न केवल उस के वातावरण में धुंध के कारण वह अस्पष्ट हो जाता है बल्कि धूल भरी आंधी जैसी उथलपुथल पैदा कर देने वाली घटनाओं के कारण भी चंद्रमा पर अपोलो अंतरिक्ष यात्रियों के बारबार उतरने के कारण अंतरिक्ष तकनीक में नए आयाम उद्घाटित हुए हैं. सौरमंडल के सारे ग्रहों में, जहां तक जीवन के अस्तित्व का संबंध है, मंगल हमारी पृथ्वी के काफी निकट है.

लेख • म. प. राव

राष्ट्रीय आकाश परिचरण और अंतरिक्ष प्रशासन (नेशनल एयरोनाटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) की वर्तमान शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व मंगल पर आदमी को उतारने की योजनाएं हैं.

19 सितंबर, 1956 को वर्तमान शताब्दी के दौरान मंगल पृथ्वी के सब से अधिक निकट था. उस समय वह एक अत्यंत चमकदार दिव्य पिंड था और आकाश में लाल हीरे की भांति चमक रहा था. 15 या 17 वर्षों में एक बार मंगल पृथ्वी के निकट छः करोड़ किलोमीटर के लगभग आ जाता है. इन समयों को 'फेवरेबल अपोजीशन' (हितकारी स्थितियां) कहा जाता है. उस समय किसी वस्तु को 75 गुना बड़ा कर के दिखाने वाला टेलिस्कोप (दूरदर्शक यंत्र) भी उसे

हमारे चंद्रमा जितना बड़ा दिखाता है. हाल ही में इस प्रकार की हितकारी स्थिति 12 अगस्त, 1971 को आई थी तथा अगली स्थिति 1986 में आएगी. इस वर्ष में मनुष्य को मंगल पर उतारने के लिए गंभीर प्रयास किया जाएगा.

13 नवंबर, 1971 की रात्रि को अमरीका का मैरीनर-9 अंतरिक्ष यान मंगल की सतह पर उतरा और उस का कृत्रिम उपग्रह बन गया. मैरीनर-9 ने दो दूरदर्शन कैमरों, एक इन्फ्रारेड रेडियोमीटर और एक अल्ट्रावायलेट तथा इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर सहित वैज्ञानिक उपकरणों से युक्त हो कर मंगल का सामना करने के लिए अंतरिक्ष में 39 करोड़ 80 लाख किलोमीटर की यात्रा की थी. 30 मई, 1971 को उसे एक प्रथम और द्वितीय चरण वाले यान एटलस सेंटौर के द्वारा केप कैनेडी से 'डायरेक्ट डेसेंट ट्रेजेक्टरी' (प्रत्यक्ष उतरान पथ) पर छोड़ा गया था.

मंगल की परिक्रमा

साढ़े सात करोड़ डालर की लागत वाला मैरीनर-9 अंतरिक्ष यान मंगल के चारों ओर 90 दिन की वैज्ञानिक आधारभूत यात्रा के लिए बनाया गया था. उस का एक लक्ष्य मंगल की सतह के लगभग 70 प्रतिशत के चित्र लेना था. जैसी कि आशा थी, यह अंतरिक्ष यान मंगल ग्रह के चारों ओर 17 वर्षों तक चक्कर लगाता रहेगा. मैरीनर-9 के अन्य प्रमुख कार्य ग्रह की रचना, तापक्रम और सतह के मौसमी धुंधलेपन, वातावरण की धुंध, ध्रुवीय क्षेत्रों के सफेद बादलों और धूल भरी आंधियों का अध्ययन करना था. रूस ने भी मार्स-2 और मार्स-3 नामक मंगल अध्ययन उपग्रह भेजे थे, जिन में से प्रत्येक का भार लगभग चार टन था. मार्स-3 ने 2 दिसंबर, 1971 को मंगल की सतह पर उपकरणों से भरा एक कैप्सूल उतारा था जिस ने केवल 20 सेकंड के ही बाद संकेत भेजना बंद कर दिया. अब मार्स-2 और मार्स-3 दोनों उपग्रह मंगल की परिक्रमा कर रहे हैं और इन दोनों उपग्रहों ने यह पता लगाया है कि मंगल के ध्रुव प्र... के ध्रुवों की अपेक्षा 50 प्रतिशत चपटे

मंगल को भेजे जाने वाले उपग्रह

मार्स-1 नामक प्रथम मंगल उप... रूस द्वारा 1 नवंबर, 1962 को छोड़ा ग... था. 6 करोड़ 60 लाख मील तक उस... संबंध रखा जा सका. जून, 1963 में मा... मंगल ग्रह से 1 लाख 30 हजार मील की... से गुजरा और उस ने कुछ उपयोगी सू... भेजी, लेकिन बाद में उस ने संकेत भे... बंद कर दिया. 5 नवंबर, 1964 को अमरी... द्वारा छोड़ा गया मैरीनर-3 असफल... गया क्योंकि उस पर नियंत्रण नहीं र... जा सका और नियंत्रण न रखे जा स... तथा संपर्क न बनाए रखे जा सकने... कारण वह अंतरिक्ष में विलीन हो ग... 28 नवंबर, 1964 को छोड़ा जाने वा... मैरीनर-4 अत्यधिक सफल हुआ. 5 दिसंब... 1964 को बीच मार्ग में मरम्मत के ब... वह 14 जुलाई, 1965 को केवल 6,1... मील की दूरी से मंगल के पास से गुजर... अंतरिक्ष दूरियों पर विचार करते सम... यह दूरी बहुत कम प्रतीत होती है... 'ट्रांसफर आर्बिट' मार्ग पर चलने के का... जो कि सब से छोटा मार्ग नहीं है, ज... वह पृथ्वी से 13 करोड़ 40 लाख मी... की दूरी पर था, उस ने चित्र भेजने... सफलतम कार्य किया.

मैरीनर-4 के द्वारा भेजे गए चि... जो कि संख्या में 22 हैं, बहुत धीरे-धी... भेजे गए (एक चित्र साढ़े आठ घंटे मे... लेकिन उन की किस्म बहुत अच्छी थी... इन चित्रों ने, जो कि मंगल की सतह... एक प्रतिशत से भी कम अर्थात उत्त... गोलार्ध से दक्षिणी गोलार्ध में फैली पत... सी पेटी के हैं, प्रथम बार सर्वाधि... आश्चर्यजनक बातें उद्घाटित कीं. म... की सतह चंद्रमा की भांति गड्ढों... भरी है. मंगल के गड्ढों में कुछ... क्रिया की प्रक्रिया नजर आती है जो... स्पष्टतः वातावरण संबंधी प्रक्रियाओं... परिणाम है (मंगल पर वातावरण... कितना भी पतला क्यों न हो). वहां...

कोई केंद्रीय चोटियां नहीं हैं. ये गड्ढे चंद्रमा के गड्ढों जैसे हैं, जो कुछ तो उल्काओं के टकराने के कारण बने और कुछ ज्वालामुखियों के फटने के कारण.

मगल पर गड्ढों की खोज से अंतरिक्ष यात्री स्तंभित रह गए. पृथ्वी की सतह जैसी सतह की सारी आशा समाप्त हो गई और जहां तक अधिकांश सतह संबंधी विशेषताओं का संबंध है, चंद्रमा से उस की अधिक समानता प्रकट हुई.

मैरीनर-4 ने यह प्रदर्शित किया कि मंगल का वातावरण मुख्यतः कार्बन डाइआक्साइड से बना है और जब अंतरिक्ष यान मंगल के पीछे की ओर गया तो रेडियो संकेतों ने यह सूचित किया कि मंगल का वातावरण आशा से कहीं अधिक पतला है, लगभग शून्य से केवल कुछ ही अंतर पर, अर्थात वैसा जैसा कि किसी व्यक्ति को पृथ्वी पर एक काल्पनिक एक लाख फुट ऊंची चोटी पर प्राप्त होता. मैरीनर-9 द्वारा भेजी गई सूचना से पता चलता है कि वहां पर वातावरण का औसत दबाव 505 एम. बी. है, जब कि पृथ्वी पर वह 1010 एम. बी. है.

मैरीनर-6 और मैरीनर-7, जिन में से प्रत्येक का भार 850 पौंड है, 30 जुलाई और 4 अगस्त, 1969 को मंगल के निकट से गुजरे अर्थात केवल 2130 मील की दूरी से, और उन्होंने 29 जुलाई, 1969 को मंगल के विषुवतरेखीय क्षेत्र के चित्र लिए. इन चित्रों से एक बार फिर यह बात सिद्ध हो गई कि मंगल की सतह चारों ओर गड्ढों से भरी है, दक्षिणी ध्रुव के निकट भी, मंगल की सतह पर स्थित एक चीज (मंगल पर सागर नहीं हैं) जिस का नाम 'निक्स ओलिंपिका' है और जिस का यह नाम पृथ्वी पर स्थित दूरदर्शक यंत्र के द्वारा अध्ययन किए जाने के उपरांत रखा गया था, 400 मील चौड़ा एक ज्वालामुखी पर्वत पाया गया.

मैरीनर-9 ने यह पता लगाया कि मंगल के ऊपरी वायुमंडल का तापक्रम लगभग 77° सें. है. ऊपरी वायुमंडल में अणु हाइड्रोजन और अणु आक्सीजन पाई गई. ध्रुवीय क्षेत्रों के वायुमंडल में जल वाष्प पाई गई है.

धूल के तूफान मंगल पर अकसर आते प्रतीत होते हैं. जब नवंबर, 1971 को मैरीनर-9 अंतरिक्ष यान मंगल के चारों ओर परिक्रमा पर गया, उस समय मंगल पर एक भयानक धूल का तूफान आ रहा था, जिसे रुकने में अनेक दिन लग गए. मंगल की हितकारी स्थिति के दौरान 1956 में पृथ्वी पर लगे दूरदर्शक यंत्रों के द्वारा धूल के एक अन्य तूफान का सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया गया. आरंभ में इस अवसर पर 20 अगस्त को नोअचिस (मंगल की सतह पर एक स्थान) के निकट हैल्लेस्पोट के उत्तरी भाग में एक चमकीला सफेद बादल देखा गया. आगामी दिवसों में आर्गीरे और नोअचिस के क्षेत्र धूल उठाने वाले बादलों के कारण, जिन्होंने मंगल की पूरी सतह को ढका हुआ था अत्यधिक चमकीले और लाल रहे. सफेद

नोट गलियों में उड़ने लगे

जापान में पतझड़ का मौसम था और उस दिन राजधानी टोकियो में तेज आंधी चल रही थी. अचानक राहगीरों ने हवा में करेंसी नोट उड़ते हुए देखे तो हक्के-बक्के रह गए. पुलिस को सूचना मिली तो उस ने नोट एकत्र करने शुरू कर दिए और उस के हाथ 3,70,000 येन (जापानी मुद्रा) कीमत के 37 नोट हाथ लगे.

घटना की जांचपड़ताल करने पर पता चला कि ये नोट 19 वर्षीय रिकियो सानो नामक युवक के थे. उस दिन उस की प्रेमिका 19 वर्षीया कुनीको कांगवा दक्षिण जापान जा रही थी. उसे देने के लिए उस ने बैंक से 11,00,000 येन निकलवाए और जल्दबाजी में टोकरी में डाल कर स्टेशन की ओर भागने लगा. आंधी के कारण नोट टोकरी से निकल कर गलियों में उड़ने लगे.

और पीले बादल परस्पर घुलमिल गए और उन्होंने दिन की समाप्ति के समय मंगल का अध्ययन कठिन बना दिया. यह विश्वास किया जाता है कि धूल के तूफान आने का एक कारण उल्कापात और आकाश पिंडों का गिरना है, जिस से जब वे मंगल की सतह पर टकराते हैं तो उन के प्रहार से धूल उड़ने लगती है.

इटली के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री शियापैरेली को 1877 में अत्यंत हितकारी स्थिति के दौरान दूरदर्शक यंत्र की सहायता से मंगल की सतह का ब्योरेवार और सावधानीपूर्वक अध्ययन करने का श्रेय प्राप्त है. उस वर्ष मंगल के असाधारण रूप से निकट आ जाने पर उन्होंने न केवल धुंधले चिह्न देखे, जिन को उस समय सागर माना गया, बल्कि कत्थई पृष्ठभूमि भी देखी, जिसे सूखी भूमि माना गया. शियापैरेली ने थल क्षेत्रों में फैली और 'सागरों' को एकदूसरे से संबद्ध करने वाली कुछकुछ काली रेखाओं की भी खोज की. उन्होंने उन का नाम 'कैनाली' रखा, जिस का शाब्दिक अर्थ है 'चैनल'. 'कैनाली' और अंगरेजी शब्द 'कैनाल' एकदूसरे के बिलकुल समान प्रतीत हुए और अंगरेजों ने गलती से उन्हें 'कैनाल' यानी नहरें कहना आरंभ कर दिया.

अरिजोना (अमरीका) स्थित फ्लैग-स्टाफ की खगोलशास्त्रीय वेधशाला के संस्थापक पर्सीवल लावेल ने भी इन नहरों को देखा और उन्हें यह दृष्टिगोचर हुआ कि ध्रुवीय क्षेत्रों के पिघलने पर ये नहरें वहां की संरचना में बिलकुल स्पष्ट हो जाती हैं जब कि उन्हें मंगल की विषुवत रेखा और उस से परे फैले हुए देखा जाता है. उन्होंने यह भी देखा कि धुंधले चिह्न धीरेधीरे हलके हरे से गहरे हरे होते जाते हैं, जिस से वनस्पति के विकास का पता चलता है. धुंधले चिह्नों में उत्तरी गोलार्ध में 'सिर्टिस मेजर' (आश्चर्य है कि वह भारतीय प्रायद्वीप जैसा दृष्टिगोचर होता है) और दक्षिणी गोलार्ध में 'मरे एसिडे-लियम' प्रमुख हैं.

लावेल ने यह अनुमान लगाया कि मंगल के 'बुद्धिमान जीवित प्राणियों' द्वारा खोदी नहरों से सिंचाई के लि पानी पिघलते हुए ध्रुवीय क्षेत्रों से की सतह पर चारों ओर ले जाया जा है. तथाकथित नहरों के दोनों ओ 'वनस्पति' दृष्टिगोचर हुई और उन्हों यह कहा कि मंगलवासियों का निवा मरुधानों या नहरों के एकदूसरे के काट के स्थानों पर है.

मैरीनर-9 के चित्रों ने 'रिलों' शियापैरेली की कैनाली से मिलतेजुल लंबेलंबे तंतुओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शि कर दिया है. 1,700 किलोमीटर की ऊंचाई से मैरीनर-9 के द्वारा लिए चित्रों ने 'मरे सिरेनियम' क्षेत्र में 1,800 किलोमीटर लंबी रिलें प्रदर्शित की हैं, जो कि कम या अधिक चंद्रमा की रिलों मिलतीजुलती हैं. ये रिलें शायद ज्वाला-मुखी फटने के कारण बनी हैं, और स्पष्टतः उन में पानी नहीं है.

मंगल के चंद्रमा

मैरीनर-9 ने मंगल के दोनों चंद्रमाओं के चित्र लिए. मंगल के आंतरिक औ बड़े चंद्रमा फोबोस का 3,444 मील की दूरी से चित्र लिया गया था और य चित्र खगोलशास्त्रियों के लिए अत्यं ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ. उस का आकार अत्यंत टेढ़ामेढ़ा था और इस बात के प्रमाण मिले कि वहां पर उल्काओं औ अन्य आकाश पिंडों का पात होता है जिस से उस की सतह पर गड्ढे हो गए हैं. यदि कोई आंतरिक चंद्रमा फोबोस औ बाहरी चंद्रमा डीमोस के चित्रों पर दृष्टि पात करे तो इस बात का अवश्य अनुभ होता है कि मंगल के तथाकथित 'चंद्रमा' या 'उपग्रह' इस ग्रह के निकट आ जा पर मंगल द्वारा पकड़ लिए गए केवल आकाश पिंड (छोटेछोटे ग्रह) हैं. इस बा का ध्यान रखा जाना चाहिए कि मंगल आकाश पिंडों की पेटी के निकट है.

वस्तुतः 1877 तक यह विश्वास किया जाता था कि मंगल शुक्र और बु की भांति बिना चंद्रमाओं (उपग्रह) वाला

ग्रह हैं. 1877 में वाशिंगटन स्थित नौसैनिक वेधशाला के खगोलशास्त्री असफ हाल ने मंगल के दो छोटेछोटे चंद्रमाओं का पता लगाया और युद्ध के देवता मंगल के दो पौराणिक अनुचरों के नाम पर उन का नाम 'फोबोस' (भय) और 'डीमोस' (आतंक) रखा. फोबोस और डीमोस सौरमंडल के सब से छोटे उपग्रह हैं. फोबोस केवल 25 किलोमीटर लंबा और 20 किलोमीटर चौड़ा है. डीमोस जो कि और भी छोटा है, आठ किलोमीटर लंबा और छः किलोमीटर चौड़ा है. निकट स्थित उपग्रह फोबोस मंगल के केंद्र से 5,800 मील की दूरी पर है तथा डीमोस 14,600 मील की दूरी पर. फोबोस, जो कि मंगल की सतह से 3,700 मील की दूरी पर परिक्रमा कर रहा है, इस ग्रह का एक चक्कर केवल सात घंटे और 39 मिनट में पूरा कर लेता है.

अत्यंत तीव्र गति के कारण वह पश्चिम में उदय होता हुआ और पूर्व में अस्त होता हुआ दृष्टिगोचर होता है. यह प्रक्रिया साढ़े चार घंटे में पूरी हो जाती है और आकाश में से गुजरते हुए इस दौरान विभिन्न स्थितियों, अर्थात क्रेस्सेंट, फर्स्ट क्वार्टर, गिब्बस और फुल का एक चक्र पूरा हो जाता है. अन्य शब्दों में, यदि वह क्रेस्सेंट की स्थिति में उदय होता है तो साढ़े चार घंटे बाद अस्त होते समय वह गिब्बस की स्थिति में होता है, अर्थात पूरे चक्र का पौना भाग पूरा हो गया होता है. दूसरी ओर डीमोस, जो मंगल के दोनों उपग्रहों में छोटा है और मंगल की सतह से 12,500 मील की दूरी पर है, अपनी परिक्रमा 30 घंटे में पूरी करता है, जो मंगल की अपेक्षा कुछ अधिक दीर्घ होने के कारण वह लगभग ढाई दिन तक मंगल के क्षितिज से ऊपर रहता है. इस दौरान वह अपनी विभिन्न स्थितियों में तीन बार आ चुका होता है.

मंगल पर जीवन

मंगल ग्रह एक ठंडा दिव्य पिंड है. उस पर अधिक पानी नहीं है और आक्सीजन संभवतः है ही नहीं. उस का वायुमंडल बहुत पतला है, जो सूर्य से होने वाले भयानक अल्ट्रावायलेट विकिरण से उस की सतह की रक्षा नहीं कर सकता. इसलिए हमारी पृथ्वी जैसा जीवन वहां संभव नहीं है. लेकिन इस में लगभग बिलकुल भी संदेह नहीं कि लाखों वर्ष पूर्व अत्यंत प्राचीन काल में मंगल पर 'एक प्रकार के जीवित प्राणी' थे और उस समय वायुमंडल में आक्सीजन मौजूद थी. विकास (इवोल्यूशन) संबंधी विभिन्न परिवर्तनों के कारण ये जीवित प्राणी समाप्त हो गए और यह विश्वास किया जाता है कि अब काई की तरह के जीवन के केवल निम्नस्तरीय रूप ही प्राप्त होते हैं.

अश्लील पोशाकों की बिक्री

इंग्लैंड की पुलिस ने ब्रिक्सहम (डेवन) के एक दुकानदार को अश्लील पोशाकें बेचने के जुर्म में पकड़ कर पब्लिक प्रासिक्यूटर के सुपुर्द कर दिया, ताकि उस पर अश्लीलता एक्ट के अंतर्गत मुकदमा चलाया जा सके.

इन पोशाकों पर कामशास्त्र में वर्णित आसनों के आधार पर जोड़ों के विभिन्न चित्र छापे गए हैं. इन पोशाकों को उस की शो विंडो में देख कर एक स्थानीय नागरिक ने पुलिस को सूचित कर दिया था.

दुकानदार का कहना है कि इन पोशाकों में अश्लील कुछ भी नहीं है और ये पोशाकें धड़ाधड़ बिक रही हैं.

खगोलशास्त्री पर्सीवल लावेल ने कहा था, "क्योंकि वह प्रक्रिया, जो उसे वर्तमान स्थिति तक ले आई, उस समय तक चलती जाएगी जब तक कि मंगल पर जीवन के अंतिम अवशेष भी समाप्त नहीं हो जाते. यह ग्रह उस समय तक अवश्य ही सूखता जाएगा जब तक कि उस की सतह जीवन धारण करने में बिलकुल असमर्थ नहीं हो जाती. धीरेधीरे लेकिन निश्चय ही समय जीवन समाप्त कर देगा. जब इस प्रकार आखिरी अंगारा भी बुझ जाएगा, यह ग्रह मृत संसार हो कर अंतरिक्ष के बीच लुढ़कने लगेगा और उस के विकास की प्रक्रिया हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी."

शाही ग्रीनविच वेधशाला के भूतपूर्व शाही खगोलशास्त्री दिवंगत सर हैराल्ड स्पेंसर जोन्स ने यह कहा था, "भूतकाल में यह पशुओं और कुछकुछ बुद्धिमान प्राणियों का घर रह चुका है. यह नहीं प्रतीत होता कि आक्सीजन की वर्तमान थोड़ी सी आपूर्ति इस प्रकार के जीवन को संभव बनाने के लिए पर्याप्त होगी."

कुछ लाख वर्षों के उपरांत इस प्रकार का भयानक भाग्य शायद हमारी पृथ्वी की भी प्रतीक्षा कर रहा है, यद्यपि शायद पूर्णतया उन्हीं कारणों से नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा वातावरण को दूषित बना दिए जाने के कारण.

मैरीनर—9 के द्वारा भेजी गई नवीनतम और विश्लेषित की हुई सूचना से यह प्रतीत होता है कि मंगल अपने वायुमंडल में से प्रतिदिन 380,000 लिटर की दर से पानी खो रहा है. अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अनुसार, जल वाष्प ज्वालामुखी की प्रक्रिया के द्वारा ग्रह के भीतर से बाहर आई गैसों से उत्पन्न हो सकती है. यह माना जाता है कि मंगल पर दीख पड़ने वाले सफेद बादल ध्रुवीय क्षेत्रों से कार्बन डाइआक्साइड में मिश्रित जल वाष्प के कारण हैं. यह विश्वास किया जाता है कि मंगल पर ज्वालामुखी अवश्य हैं. इस प्रकार, भूगर्भीय दृष्टि से विचार करते हुए, मंगल हमारे चंद्रमा की अपेक्षा अधिक सक्रिय है, लेकिन हमारी पृथ्वी से कम सक्रिय है.

मंगल की यात्रा

चंद्रमा पर मनुष्य के उतरने का कार्य पूरा हो जाने से अब मंगल अगला लक्ष्य है. शुक्र और बुध यद्यपि कहीं अधिक निकट हैं, फिर भी वे ग्रह निवास योग्य बिलकुल नहीं हैं. अमरीका का राष्ट्रीय आकाश परिचरण और अंतरिक्ष प्रशासन 1975 में मंगल पर प्रथम मावनरहित अंतरिक्ष यान (वाइकिंग) भेजना चाहता है, जो 1986-87 में समानव उतरान में परिवर्तित हो जाएगा. लेकिन उस से पूर्व रूसी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने और पृथ्वी पर मंगल की मिट्टी का नमूना लाने का प्रयत्न कर सकते हैं, जिस प्रकार लूना-20 हाल ही में चंद्रमा के ऊंचे भू-भागों से मिट्टी का एक छोटा सा पार्सल लाया था.

अगले दशक में इस समय प्रयोग में आ रहे कैमिकल कंबस्शन के स्थान पर अधिकाधिक विद्युत थ्रस्टरों का प्रयोग होने लगेगा. 1986-87 के वर्षों के दौरान मंगल की समानव यात्रा और वहां से वापसी का प्रयास किया जाएगा, जिस में विद्युत थ्रस्टरों का प्रयोग किया जाएगा. मंगल की पूरी यात्रा 140 दिन में तय हो जाएगी. इस में पहले धीरेधीरे गति में वृद्धि होगी, फिर मंगल के चारों ओर उस की सतह से लगभग 650 मील की ऊंचाई पर परिक्रमा की जाएगी और फिर रसायनों की सहायता से चल रहे कक्ष में खगोलशास्त्री वहां पर उतरेंगे. मंगल पर 50 दिन पूरे कर लेने के बाद वे मंगल की परिक्रमा कर रहे मूल अंतरिक्ष यान में आ जाएंगे और लगभग 260 दिन में पृथ्वी पर वापस लौट आएंगे.

इस आयोजना की वित्तीय और तकनीकी आवश्यकताएं अत्यधिक होंगी और केवल अमरीका जैसे समृद्ध देश के स्रोत ही उन्हें पूरा कर सकेंगे.

क्रिकेट शृंखला

कुछ कड़वे अनुभव...

गत कुछ महीनों में इस देश में क्रिकेट के खेल के नाम पर जो पेशेवर तमाशा चल रहा था, वह आखिरकार खत्म हो गया. उम्मीद है, शायद अब बैंकों में भुगतान की गलतियां नहीं होंगी और सरकारी दफ्तरों में काम कराने में कम देर लगेगी.

पांच टैस्ट मैचों की इस शृंखला में वेस्टइंडीज जीती और डंके की चोट पर जीती. वह एक बेहतर टीम थी. कप्तान लायड ने दिखा दिया कि क्रिकेट हिंदुस्तानियों के लिए नहीं है. उस के बल्ले से बनने वाले रनों ने बताया कि बल्लेबाजी कैसे की जाती है. भारत की तथाकथित निर्जीव पिचों पर भी राबर्ट्स, जूलियन, होल्डर और बायस ने गेंदें पटक कर और सिर तक उठा कर दिखाया कि तेज गेंद फेंकने के लिए मिट्टी में नहीं, हाथों में ताकत की जरूरत होती है.

भारत के विश्वविख्यात स्पिन गेंदबाजों चंद्रशेखर, प्रसन्ना और बेदी के मुकाबले उन का अकेला गिब्स ही काफी रहा.

भारतीय पेशेवर कप्तान पटौदी ने आठ पारियों में केवल 94 रन बनाए, जो कि केवल तीन स्पिन गेंदबाजों की कुल रन संख्याओं से ही ज्यादा है. इस के विपरीत लायड ने 636 रन बनाए. इन में एक बार के 242 रन (आउट नहीं) भी शामिल हैं. इन्हीं नवाब साहब ने शृंखला के दौरान रेडियो पर कहा था, "मैं तो क्रिकेट को जुए की तरह खेलता हूं." जब कुछ दांव पर न हो तो यही कहा जाता है.

भारत के माने हुए प्रारंभिक बल्लेबाज गावास्कर इतने नाजुक निकले कि एक शृंखला में चार बार चोट खा बैठे. यही हाल कमबढ़ती अन्य खिलाड़ियों का भी रहा. यह तो तब है जब मैच यहां हो रहे थे और अपेक्षाकृत कम तेज गेंदबाज आए थे. थामसन और लिली के सामने क्या होगा?

धन्य हैं वे चयनकर्ता जो अपने विकेटकीपर से बारबार पारी खुलवाने का जोखिम उठाते हैं और इंजीनियर साहब हर बार बिना गेंद छुए लौट आते हैं.

यह इसी देश में हो सकता है कि बेदी को नहीं खिलाया तो 'बेदी नहीं—टैस्ट नहीं,' और 'वेंकट नहीं तो टैस्ट नहीं' जैसे नारे लगते हैं. और जब इन्हें खिलाया गया तो वही ढाक के तीन पात.

चयनकर्ताओं ने इस शृंखला में जिस अदूरदर्शिता और गैरजिम्मेदारी का परिचय दिया, वह हाल के वर्षों में कम ही देखने में आया है. बंगलौर में बेदी को इसलिए नहीं खिलाया कि उस की नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष श्री रुंगटा से नहीं बनती थी. संसद में तथा बाहर हल्ला हुआ तो दिल्ली में खिला लिया गया. इसी टैस्ट में पटौदी अस्वस्थ था इसलिए एक नितांत अयोग्य खिलाड़ी वेंकटराघवन को कप्तान बना दिया. इसी वेंकट को अगले कलकत्ता टैस्ट में एकादश में भी नहीं रखा गया. ऐसा क्रिकेट के इतिहास में शायद ही कभी

हुआ हो कि एक खिलाड़ी को एक टैस्ट में कप्तान बना दिया जाए और अगले ही टैस्ट में टीम से बाहर कर दिया जाए. इसी प्रकार मदनलाल, बृजेश पटेल, पारकर, हेमंत कानितकर और पार्थसारथी शर्मा को न जाने क्या सोच कर लिया गया और एकदो टैस्टों में खिला कर टीम से हटा दिया गया. टैस्ट में खिलाड़ी का चयन निरंतर सफलता और अच्छा काम देखने के बाद किया जाना चाहिए और उसे अपनी योग्यता दिखाने के लिए दोचार मौके दिए जाने चाहिए.

इस शृंखला में उपलब्धि के नाम पर महज एक खिलाड़ी उभरा—विश्वनाथ. लेकिन क्या अकेला चना भाड़ फोड़ सकता है? अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने का दम भरने वाली टीम केवल एक ठोस बल्लेबाज से कब तक काम चला सकती है.

कुछ समीक्षक कलकत्ता और मद्रास की विजयों की आड़ में भारतीय क्रिकेट को पोषित करने की वकालत कर सकते हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि पूरी शृंखला में भारतीय विजय पर आश्चर्यजनक खुशी होती थी और इस के विपरीत हारने पर स्वाभाविक दुख. अर्थात वह महज संयोग था और उस के आधार पर इस निष्कर्ष पर कूद पड़ना कि भारतीय बेहतर क्रिकेट खेलते हैं और इसे सरकारी संरक्षण जारी रहना चाहिए, नितांत मूर्खतापूर्ण बात होगी.

इधर खबर आई है कि आस्ट्रेलिया की महिला क्रिकेट टीम भारतीय दौरे पर आ रही है. पुरुषों ने तो अपने जौहर दिखा दिए, अब महिलाओं की बारी है.

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि यह खेल महिलाओं के लिए नहीं है. आस्ट्रेलिया और इंगलैंड में यह महिला मुक्ति आंदोलन के रूप में अधिक चलाया जा रहा है, खेल के रूप में कम. अतः इसे भारतीय समाज पर एक भद्दे पैबंद के रूप में थोपना निरर्थक होगा. बेहतर होगा कि भारतीय महिलाओं को उन के अनुरूप अन्य खेलों में प्रवत किया जाए.

भारत केसरी दंगल

दिल्ली के अंबेडकर स्टेडियम में नगर निगम ने एक लाख पैंतीस हजार रुपए खर्च कर के भारत केसरी और भारत कुमार दंगल का आयोजन करवाया. कुश्ती जैसे भारतीय खेलों को प्रोत्साहन देना बड़ी अच्छी बात है, लेकिन नगर निगम को, जिस के पास इस शहर के 50 लाख लोगों का दैनिक जीवन सुविधाजनक बनाने का महती दायित्व है, क्या अपने सीमित स्रोतों को इस प्रकार के आयोजनों पर व्यर्थ खर्च करने का कोई नैतिक अधिकार है?

पता चला है कि इस दंगल में निगम ने खलीफा बदरी के स्थानीय अखाड़े को अनुचित प्रोत्साहन दिया. ड्रा में उस के पहलवानों को लाभकारी स्थान दिए गए और रैफरियों से उन के पक्ष में फैसले करवाए गए. भूतपूर्व भारत केसरी और भारत कुमार विजयकुमार को विवादास्पद ढंग से हरवाने के पीछे भी इन्हीं तत्वों ने काम किया. एक आयोजन में इस तरह की बेईमानी शोभा नहीं देती.

भारत केसरी के खिताब के लिए गुरु हनुमान के शिष्य 19 वर्षीय सतपाल ने महाराष्ट्र केसरी 26 वर्षीय दादु चौगुले को 20 मिनट में कांटेदार कुश्ती में हरा कर सिद्ध किया है कि गुरु हनुमान में अभी भी योग्य पहलवान तैयार करने की अपार क्षमता है. भारत कुमार का खिताब भी इन्हीं के शिष्य ने जीता.

भारतीय कुश्ती संघ को चाहिए कि वह अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती के लिए पहलवान चुनते समय गुरु हनुमान की सेवाएं ले.

श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने शिक्षा मंत्रालय को एक पर्यवेक्षक के रूप में अपनी रिपोर्ट में कहा है कि मास्को खेलों में भारतीय पहलवानों की हार का कारण दोषपूर्ण प्रशिक्षण, गलत चयन और उपकरणों का अभाव था. क्रिकेट और टेबल टैनिस जैसे ऊटपटांग खेलों को प्रोत्साहन देने वाली परिषद को विशुद्ध भारतीय खेलों के बारे में ईमानदारी से सोचना और काम करना चाहिए.

विश्व विद्यालयों के प्रांगण से

भागलपुर विश्वविद्यालय

बंद अवधि का भी शुल्क

तीव्र आंदोलन की अवधि में महाविद्यालय में छात्र नहीं आए. अब जब वे अपनी कक्षाओं में लौटने लगे हैं तो उन से उस पूरी अवधि की फीस मांगी गई है, जब कि कालिज बंद थे. फिर से असंतोष भड़क उठा. जुलूस, सभाएं हुईं और दससूत्री मांगपत्र उपकुलपति को पेश किया गया, जिस में पढ़ाई न किए गए महीनों की फीस न लेने की मांग और विश्वविद्यालय की छात्र परिषद के दफ्तर में डेरा डाले सी. आर. पी. की 52वीं बटालियन को अविलंब हटाने की मांग के साथसाथ अन्य मांगें भी थीं. दोतीन दिनों तक भागलपुर नगर के कालिजों में हड़ताल रहने के पश्चात उपकुलपति श्री देवेंद्रप्रसाद सिंह ने छात्रों की सभा को संबोधित करते हुए लगभग सभी मांगें सिद्धांत रूप में मानने की घोषणा की, हालांकि छात्र बीचबीच में 'आश्वासन नहीं, निर्णय,' 'डिग्री नहीं नौकरी' इत्यादि चिल्लाते रहे.

—यादवेंद्र पांडेय,

दिल्ली विश्वविद्यालय

नाम बदलने का विरोध

पिछले दिनों जब दिल्ली कालिज का नाम बदल कर डा. जाकिर हुसैन मेमोरियल कालिज रखने का प्रस्ताव पेश हुआ तो कालिज के छात्रों ने इस का जबरदस्त विरोध किया तथा हड़ताल करने का फैसला किया. डा. जाकिर हुसैन दिल्ली कालिज से काफी दिनों तक संबंधित रहे, पर उन को याद करने का यह तरीका उचित नहीं. वर्षों से दिल्ली कालिज के नाम से प्रतिष्ठित यह कालिज इस नए नाम से अन्य कालिजों की भीड़ में अपना अलग अस्तित्व खो बैठेगा. दिल्ली के लगभग हर कालिज का नाम

विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्रथम युवक समारोह में सागर विश्वविद्यालय द्वारा 'तीन अपाहिज,' रविशंकर विश्वविद्यालय द्वारा 'नईनवेली नौटंकी' और इंदौर विश्वविद्यालय द्वारा 'अनारकली आशिकों की अदालत में' नाटक प्रस्तुत किए गए. इन में 'नईनवेली नौटंकी' सर्वाधिक मनोरंजक और प्रभावपूर्ण रही. इसी नाटक का एक दृश्य.

—संतोष नागर

किसी महान व्यक्ति के नाम पर रखा गया है. पर कितने छात्र जानते हैं कि देशबंधु, दौलतराम, श्रीराम, सेंट स्टीफेंस या हंसराज आदि कौन थे और क्या थे?

—बिमल सहगल

उसमानिया विश्वविद्यालय

'जियो जयप्रकाश...'

तेलंगाना युवा विद्यार्थी सन्नाहक समिति के तत्वावधान में दिनांक 21 जनवरी को उसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के आर्ट्स कालिज के समक्ष विभिन्न कालिजों के 150 से अधिक प्रतिनिधियों ने 12 घंटे भूख हड़ताल की. भूख हड़ताल बिहार आंदोलन के समर्थन और भ्रष्टाचार और महंगाई के विरोध में हुई. इस से पहली बार नगर में जयप्रकाश नारायण के समर्थक विद्यार्थियों की जागरूकता खुल कर सामने आई.

इसी दिन नगर में अनेक प्रदर्शन भी हुए. बसों में सर्वत्र 'जियो जयप्रकाश' की गूंज सुनाई दी. बड़ी चावड़ी पुलिस स्टेशन के समक्ष प्रदर्शन में विद्यार्थियों ने डी. एस. पी. के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया. विद्यार्थियों का कहना था कि 20 से अधिक जिन प्रदर्शनकर्त्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया, उन्हें अदालत में पेश नहीं किया गया. विद्यार्थी कालिजों में बढ़ रहे पुलिस के जुल्म के विरुद्ध सड़क पर धरना दिए बैठे रहे.

तेलंगाना युवा विद्यार्थी सन्नाहक समिति ने यह मांग रखी कि गणतांत्रिक ढंगों से मतदाता सूचियों में शीघ्र ही सुधार किया जाए और शिक्षा पद्धति में बुनियादी परिवर्तन किए जाएं. समिति ने विद्यार्थियों से जयप्रकाश के आंदोलन को शक्ति प्रदान करने और भूख हड़ताल का आयोजन करने का अनुरोध किया, ताकि सरकार अपनी कमजोरियों का एहसास कर सके. —सुभाष शर्मा 'फंटूष'

बिहार आंदोलन, आरा

30 दिसंबर, 1974 को विधान सभा एवं विधायकों के घर के सामने धरना देने की भोजपुर जिले की बारी थी. यहां से करीब 300 की संख्या में सत्याग्रही पटना पहुंचे. इन में छात्रों की संख्या 150 के लगभग थी. 78 सत्याग्रही गिरफ्तार कर वनस्पति उद्यान में लाए गए. वहां से उन्हें दो बसों में भर कर बिहार मिलिटरी पुलिस के जवानों के साथ हजारीबाग केंद्रीय कारागार में बंद करने के लिए ले जाया गया. शायद बिहार सरकार को अब अपनी पुलिस पर विश्वास खत्म होने लगी है, इसी लिए मिलिटरी पुलिस की मदद ली गई.

—सुनीलशरण सिन्हा
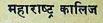
महाराष्ट्र कालिज

महाराष्ट्र कालिज के हिंदी साहित्य मंडल की ओर से 'भारतीय अध्ययन में विदेशी विद्यार्थियों की अभिरुचि' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया. मुख्य अतिथि प्रसिद्ध भाषाविद डा. जगदीशचंद्र जैन ने कहा, "भारत के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए विदेशी लोग निरंतर उत्सुक रहते हैं.

उन के मन में भारत के प्रति काफी गलतफहमियां हैं. वे भारत को एक विचित्र देश समझते हैं. इन सारी कठिनाइयों का हल ढूंढ़ने के लिए वे भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास का गहन अध्ययन करते हैं."

मोतीलाल विज्ञान महाविद्यालय, भोपाल में आयोजित वार्षिक स्नेह सम्मेलन में विभिन्न महाविद्यालयों ने भाग लिया. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय द्वारा प्रस्तुत एकांकी 'चाचा जिंदाबाद' विनोदपूर्ण होते हुए भी साधारण स्तर से ऊपर नहीं उठ सका. छाया नाटक 'वह सुबह कभी तो आएगी' के एक दृश्य में श्याम चंदीरमानी (चित्र 1). इसी नाटक के एक और दृश्य में अभय चोलिया, श्याम चंदीरमानी और एक बाल कलाकार (चित्र 2). 'चाचा जिंदाबाद' का एक दृश्य (चित्र 3). इसी एकांकी के एक और दृश्य में अखिलेश उपाध्याय और मंजु नागपाल (चित्र 4).

—अनिल माथुर

यूरोप के दौरे पर जाने वाली भारतीय महिला हाकी टीम और शेष भारत महिला एकादश के बीच एक प्रदर्शनी मैच दतिया में खेला गया. इस मैच में यद्यपि शेष भारत एकादश 1-2 गोल से हार गया, पर उस का खेल अपेक्षाकृत बेहतर था. भारतीय महिला हाकी दल की ओर से दोनों गोल कु. लता महाजन ने किए. शेष भारत एकादश की ओर से एक मात्र गोल कु. हरप्रितु ने किया था. पुरस्कार वितरण प्रख्यात हाकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद ने किया. चित्र में प्रदर्शन मैच से पहले दोनों टीमें.

—ऋषिकुमार श्रीवास्तव

महिला महाविद्यालय

पिछले ही दिनों श्रीमती भागीरथी बाई रुइया महिला महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव मनाया गया. इस अवसर पर छात्राओं द्वारा विविध मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए. प्रस्तुत कार्यक्रमों में राजस्थानी लोकनृत्य, झांसी की रानी (एकांकी), यशोधरा (नृत्यनाटिका) विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे. एकांकी में छात्राओं का अभिनय उच्च स्तर का था. नृत्यनाटिका यशोधरा भी सराहनीय प्रयास था.

—अशोककुमार गुप्ता 'तरुण'

● हिंदी विज्ञान लेख प्रतियोगिता

बंबई की हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद की ओर से अखिल भारतीय स्तर पर एक हिंदी विज्ञान लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है. यह पांचवीं वार्षिक लेख प्रतियोगिता है. प्रतियोगिता के लिए आधारभूत प्राकृत विज्ञान (जैसे भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान आदि) तथा व्यावहारिक विज्ञान (जैसे विज्ञान के नवीनतम उपयोग, इंजीनियरी, डाक्टरी, अंतरिक्ष विज्ञान तथा ऊर्जा के स्रोत आदि) विषयों पर लेख आमंत्रित किए गए हैं.

पूरी जानकारी के लिए प्रतियोगिता व्यवस्थापक, हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, सूचना प्रभाग, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, बंबई-400085 को लिखें.

● नया प्रयोग

12 कालिजों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों को स्वायत्त शासन के लिए प्रार्थनापत्र दिया है. स्वायत्त शासन का अर्थ है कि उन कालिजों को अपने कोर्स बनाने, परीक्षापत्र बनाने तथा परीक्षा लेने का अधिकार होगा. साथ ही वे कालिज छात्रों को प्रवेश देने के लिए अपने मापदंड रख सकेंगे तथा इन्हें प्राध्यापक आदि नियुक्त करने का भी अधिकार होगा. पर डिग्रियां आदि बांटने का अधिकार विश्वविद्यालयों के पास ही रहेगा.

इस स्वायत्त शासन से शिक्षाप्रणाली में सुधार संभव है, क्योंकि यह कालिज आवश्यकता अनुसार कोर्स को काटछांट कर उपयोगी विषयों को सम्मिलित करेंगे. नई परीक्षा प्रणाली से छात्रों के संपूर्ण ज्ञान को भली भांति जांचा जा सकेगा. विषय कुछ ऐसे होंगे, जिन से छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा तथा नौकरी पाने में भी सहायता मिलेगी.

—का. [illegible]

मुक्ता
युवकयुवतियों की पत्रिका
2 रुपए

यह है
वूलमार्क

सी. टी.
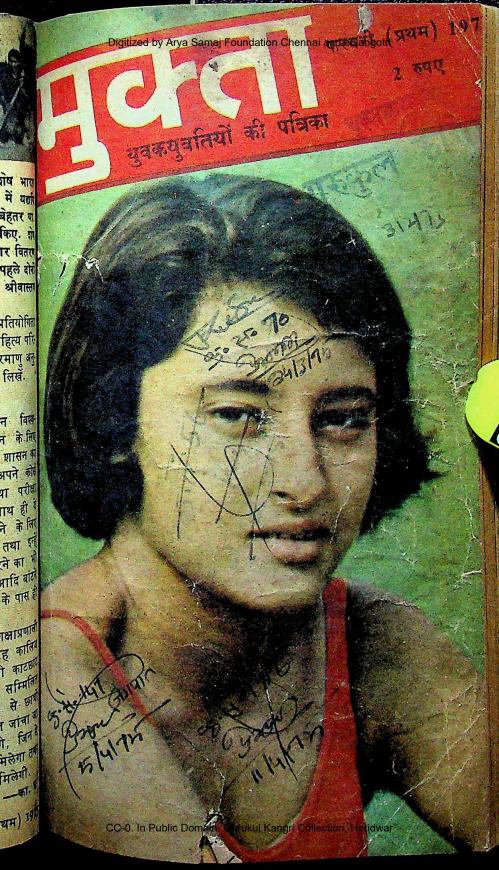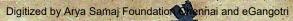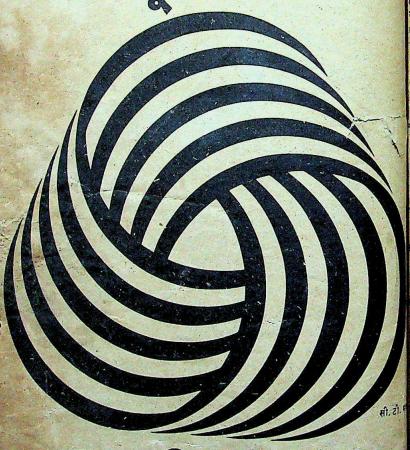
शुद्ध, नयी ऊन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक!

आप वूलमार्क की एक झलक देखते ही बता सकते हैं कि कोई सूट का कपड़ा, हाथ-बुनाई की ऊन, कालीन या स्वेटर-कार्डिगन आदि उत्तम, शुद्ध, नयी ऊन से बने हैं या नहीं।

वूलमार्क दुनियाभर में सबसे ज्यादा विश्वसनीय और बढ़िया ऊन का चिन्ह है। प्रमुख उत्पादकों ने गुणवत्ता की पूरी जाँच-परख के बाद ही यह छाप लगायी है और इस पर इण्टरनेशनल वूल सेक्रेटेरियट का भी पूरा नियंत्रण है।

अब जब भी ऊनी सामान खरीदें, पहले वूलमार्क का चिन्ह अवश्य देख लें

इस वर्ष आप निश्चय ही वूलमार्क वाले ऊनी कपड़े खरीदें

आवरण : नरेंद्र सरीन

मूल्य : एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए, दो वर्ष : 75.00 रुपए.
विदेश में (समुद्री डाक से) : एक वर्ष 60.00 रुपए, दो वर्ष : 115.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

फरवरी (प्रथम) 1975

अंक 205

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

मुसलिम युवतियां—कितनी विवश

संपादन व प्रकाशन कार्यालय
दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडे
झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.
दिल्ली प्रेस समाचारप
द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल
मुद्रित व प्रकाशित.
मुक्ता नाम ट्रेडमा
रजिस्टर्ड है.
मुक्ता में प्रकाशित
धिकार दिल्ली प्रेस सम
प्रकाशनार्थ रचना
पता लिखा लिफाफ
आवश्यक है अन्यथ
नहीं जाएंगी.

सही पालन पोषण का आधार
पराग
(स्प्रे-ड्राईड)
शिशु दुग्ध आहार
पूर्णतया संतुलित 'पराग' नवजात शिशु के सही पालन-पोषण के लिए एक विश्वसनीय दुग्ध आहार है। इसे आप अपने शिशु को जन्म के बाद पहले ही सप्ताह से पिला सकती हैं।
अत्याधुनिक स्प्रे-ड्राइंग प्रक्रिया द्वारा निर्मित तथा सभी पौष्टिक तत्वों से भरपूर 'पराग' को आप अपने शिशु की पाचन शक्ति के अनुकूल पायेंगी।
आज ही से पराग अपनाइये और अपने शिशु का पालन-पोषण सही कीजिए।
एकमात्र वितरक : स्पेंसर एण्ड कं० लिमिटेड
प्रादेशिक कोआपरेटिव डेरी फेडरेशन लि० लखनऊ द्वारा इन्फेंट मिल्क फूड फैक्टरी, दलपतपुर, (मुरादाबाद) में निर्मित
parag
INFANT MILK FOOD

कुमार टंडन 'रसिक') में लेखक ने अविवाहित युवतियों की सेक्स संबंधी समस्याओं की चर्चा की है. लेखक ने युवतियों के सम्मुख युवकों का एक हौवा खड़ा कर दिया है. युवतियों को इस प्रकार डराया गया है कि वे युवकों की परछाईं से भी दूर रहें.

लेखक ही क्या, आज कई लोगों का यह विश्वास है कि लड़कियों को घर की चारदीवारी में बंद रखा जाए. उन का विश्वास है कि युवतियां युवकों के संपर्क में आने से प्रायः यौन संबंध स्थापित कर लेती हैं.

कुछ अपवादों को छोड़ कर यह धारणा आधारहीन है. लेखक ने कहा है कि विवाह से पूर्व मिलनेजुलने, संबंध बनाने के बारे में समाज ने जो प्रतिबंध लगाए या आदर्श बनाए हैं, उन की अवहेलना नहीं होनी चाहिए. प्रायः अनुभव यह बताता है कि जिस चीज़ से जितनी दूर रहा जाए, उसे पाने की भावना उतनी ही तीव्र होती है.

इस समस्या को सुलझाने के लिए युवकों और युवतियों का चरित्रनिर्माण किया जाना चाहिए. सेक्स के बारे में उन्हें पूरी जानकारी दी जानी चाहिए तथा अविवाहित अवस्था में होने वाली बीमारियों और भविष्य में होने वाली कठिनाइयों के बारे में सचेत किया जाना चाहिए. इस के लिए कालिजों में सेक्स के बारे में शिक्षा दी जानी चाहिए.

युवकों और युवतियों को अलग रखने से यह समस्या नहीं सुलझ सकती. बल्कि इस से एकदूसरे के प्रति द्वेष की भावना बढ़ेगी. युवतियों के सामने हौवा खड़ा करने के स्थान पर उन्हें प्यार और भाईचारे के साथ रहने का मार्गदर्शन मिलना चाहिए.

—हरीनारायण टक्कर, खरखौदा

✦

'कुमारियों की समस्याएं' (लेख : संतकुमार टंडन 'रसिक') में लेखक समस्या का समाधान करतेकरते खुद समस्याओं के चक्रव्यूह में उलझ गया है.

लेखक चाहता है कि कुमारी युवतियां विवाहित स्त्रियों व पुरुषों से दूर रहें. तो क्या युवती को अपने मातापिता, भाईभाभी, बहनबहनोई से दूर हो जाना चाहिए? क्या मित्रों को इतनी आसानी से छोड़ा जा सकता है, जितना कि लेखक का कहना है? क्या सभी विवाहित लोग विवाह के बाद राक्षस बन जाते हैं?

समझ में नहीं आता कि लेखक कहना क्या चाहता है. क्या सभी कुमारी युवतियां अपने कौमार्य की रक्षा करने के लिए हिमालय पर चली जाएं या जंगलों में—जहां कोई उन की आबरू पर बुरी निगाह न डाल सके?

—जसवंतसिंह, अंबाला

✦

दिसंबर (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत 'शिक्षा से खिलवाड़' शीर्षक से मैं पूर्णतः सहमत हूं. वास्तव में आजकल की शिक्षा छात्रों को निठल्ला, कामचोर व पंगु बना रही है. वैसे भी, आज का विद्यार्थी ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि डिग्री व नौकरी पाने की लालसा से शिक्षा प्राप्त करता है.

आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो छात्रों को चरित्रवान, साहसी, मेहनती तथा कुशल बना कर, रोजगार दिला कर स्वावलंबी बना सके. यह तभी संभव है, जब शिक्षा पद्धति को पूर्ण रूप से सुधारा जाए. इस आंदोलन में 'मुक्ता' जैसी निर्भीक पत्रिकाओं का योग सराहनीय है.

—दिनेशप्रसाद दुबे, चाकलान

✦

दिसंबर (प्रथम) में प्रकाशित 'स्वीकार' (कहानी : निर्मला अर्गल) में रीता और अतुल का चरित्र तथा 'उलझन' कहानी में अमर का चरित्र परंपरागत समाज से अलग एक नवीन समाज के निर्माण हेतु अनुकरणीय हैं. विश्वास है, इसी प्रकार की रचनाओं से 'मुक्ता' सदैव हमारे जीवन पथ को आलोकित करती रहेगी.

—लालचंद अग्रवाल, लखीमपुर खीरी ●

ये मज़बूत हैं ये फ़्लेक्स हैं
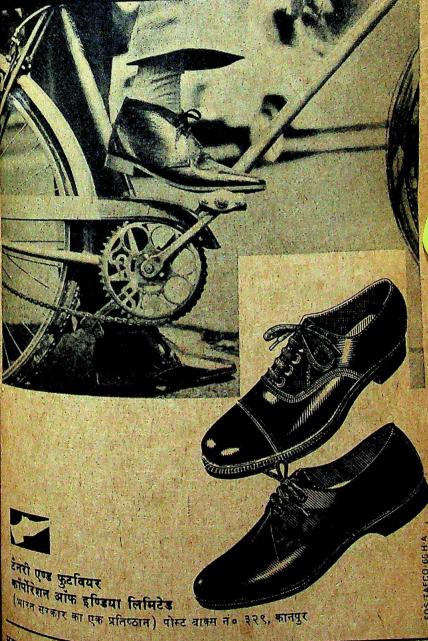
दो ही हैं काफी,
क्या करना ज्यादा का?

मां, बच्चों और सारे परिवार की भलाई इसी में है कि बच्चों के जन्म के बीच तीन वर्ष या इस से अधिक का अंतर रहे. बच्चों के जन्म के बीच अंतर डालने के लिए बहुत आसान और असरदार साधन आप को मुफ्त मिल सकते हैं. दो या तीन बच्चों की प्राप्ति के बाद नसबंदी या नलबंदी जैसा पक्का साधन अपनाने में ही आप का भला है.

नसबंदी या नलबंदी करवाते समय जो घाटा आप को मजदूरी आदि में पड़ता है, उस के मुआवजे आदि के लिए नलबंदी की दशा में 25 रुपए (और खुराक के लिए 25 रुपए अतिरिक्त), नसबंदी के लिए 20 रुपए और लूप लगवाने के लिए 6 रुपए दिए जाएंगे. अनुसूचित जातियों, अनुसूचित कबीलों, पिछड़ी श्रेणियों और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के पुरुषों को नसबंदी के लिए 50 रुपए और स्त्रियों को नसबंदी के लिए 100 रुपए दिए जाएंगे. इस के अतिरिक्त कारखानों के मालिकों और अन्य संस्थाओं की तरफ से भी अधिक रकम दिए जाने की संभावना है.

याद रखिए, ये सारी सेवाएं मुफ्त उपलब्ध हैं. नसबंदी या नलबंदी कराए हुए प्रत्येक परिवार को अस्पताल में आम इलाज करवाते समय प्राथमिकता दी जाएगी.

महंगाई और मानसिक बेचैनी से बचने के लिए नसबंदी या नलबंदी करवाइए.

आज ही निकटतम चिकित्सालय के जच्चाबच्चा भलाई केंद्र में जा कर पूरी जानकारी प्राप्त करें.

प्रकाशक : स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन विभाग, पंजाब.

(P R D/795-877)

जवां दिलों की
मधुर मुस्कान
लालइमली
धारीवाल की
अद्भुत शान!
दि॰ ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन लि॰
सदरलैण्ड हाउस कानपुर (यू॰ पी॰) इण्डिया

मुक्त विचार

कारी भोंपू

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिराजी ने
ही में दावा किया है कि हमारे देश
जनात्मक कलाकारों, लेखकों व सत्ता
कोई विरोधाभास नहीं है. बात कुछ
तक सही है. हमारे यहां वास्तव में
क व अन्य बुद्धिजीवी सरकार की
लोचना करते नजर नहीं आते.

पर इस का कारण यह नहीं है कि
सरकार की सारी नीतियां लेखकों
बुद्धिजीवियों को स्वीकार्य हैं. इस का
सली कारण यह है कि यहां का लेखक,
लेखक व कलाकार हमेशा ही सत्ता का
ारी रहा है और आज भी सत्ता के
गे माथा रगड़ता है. पहले राजाओं के
रबार में कवि व भांड राजा के गुणगान
ो अपनी स्वतंत्रता की सीमा मानते थे,
ज भी लेखक सरकार के गुणगान करने
ो ही स्वतंत्रता मानता है.

जहां अन्य देशों में रचनात्मक कला-
कार अपनी कला से सरकार के जनता
र बढ़ते प्रभाव की आलोचना करता है,
हां वह सरकार के अंकुश का समर्थन
रता है, कम से कम जब तक उसे सर-
ार सहूलियतें देती रहती है. अन्य देशों
में कलाकार अपनी जीविका जनता को
अपनी कला दे कर चलाता है, यहां वह
सरकार को अपनी कला बेचने के फिराक
में रहता है. और यह बात पुराने ही नहीं,
नए युवा कलाकारों पर भी लागू होती है.

यहां शिक्षा, टेलीविजन और रेडियो
पर सरकारी एकाधिकार है. हर कलाकार
जानता है कि यदि वह सरकार को खुश
रख सकता है तो उस की पुस्तकें कालिजों
व स्कूलों के लिए स्वीकृत हो जाएंगी, उस
की कविताओं का पाठ रेडियो पर हो
सकेगा, उस के चित्र सरकारी संग्रहालय
खरीद लेंगे और उस के अभिनय के लिए
टेलीविजन पर भी सुविधा हो जाएगी.

आम जनता तो यहां पर स्वयं भूखी-
नंगी है, वह इन को कहां से कुछ देगी?
इसलिए हमारे सभी कलाकार, लेखक,
कवि व पत्रकार सरकारी भोंपू बने रहते
हैं और इसी लिए उन में और सत्ता में
कोई विरोधाभास नहीं होता.

दलगत राजनीति

श्री जयप्रकाश नारायण ने आरंभ से
ही बिहार आंदोलन को दलों की राजनीति
से दूर रखने का फैसला किया था ताकि
अधिक से अधिक लोग इस में भाग ले
सकें. पर अब जनसंघ और समाजवादी

दल अपने छात्र संगठनों के माध्यम से इस आंदोलन का लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं. इस से बिहार छात्र संघर्ष समिति में दरारें पड़ गई हैं और अंदरूनी खींचातानी बढ़ने लगी है.

श्री जयप्रकाश नारायण को इस पर आपत्ति है, क्योंकि यह आंदोलन को कमजोर करेगी.

राजनीतिक दलों को यह समझ लेना चाहिए कि वे इस समय, अपनी शक्ति से किसी भी तरह का आंदोलन नहीं चला सकते. जनसंघ जैसे अच्छे संगठन वाली पार्टी भी श्री जयप्रकाश नारायण के आने से पहले बिहार या देश के किसी भी भाग में कोई विरोधी आंदोलन न चला पाई थी.

विरोधी दल कभी भी एक साथ काम न कर के हर आंदोलन इसी प्रकार चलाना चाहते हैं कि केवल उन्हीं के कार्यकर्ता मुखिया रहें. जब जनता देखती है कि आंदोलन उस के लाभ के लिए नहीं, राजनीतिबाजों के अपने लाभ के लिए है तो वह उस का बहिष्कार कर देती है.

आजादी के बाद बिहार में ही पहली बार ऐसा सुनियोजित आंदोलन आरंभ हुआ है, जिसे पूरी जनता का समर्थन प्राप्त है और जिस पर पूरे देश की आशाएं टिकी हैं. यदि ऐसे आंदोलन को भी राजनीतिक दल आपस में लड़झगड़ कर खराब कर देंगे तो स्थिति के सुधार की सभी संभावनाएं समाप्त हो जाएंगी.

बिहार आंदोलन की सफलता ही कांग्रेस की हार तथा विरोधी दलों की सब से बड़ी उपलब्धि होगी. परंतु यह केवल बिहार आंदोलन को दलगत राजनीति से दूर रख कर संभव हो सकेगा.

जेबखर्च

दिल्ली में हुए पांचवें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह तथा दिल्ली व कलकत्ता में हुए क्रिकेट मैचों के टिकटों में बहुत ही भारी कालाबाजारी हुई है. दोनों ही मामलों में टिकट तीनचार गुने दाम पर बिके. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारो[illegible] कई फिल्मों के टिकट दस गुना [illegible] भी बिके.

दोनों ही स्थानों पर इस तर[illegible] खरीदने वालों में अधिकांश संख्या [illegible] की थी. इस से लगता है कि [illegible] युवकों को जरूरत से ज्यादा पै[illegible] रहा है, जिसे वे पुस्तकों, पत्रि[illegible] अन्य आवश्यकताओं के स्थान [illegible] प्रकार के फिजूल के कामों पर ख[illegible] हैं.

विदेशों में भी युवकयुवतिय[illegible] मनोरंजन पर काफी पैसा खर्च क[illegible] पर वहां अधिकतर युवाओं को इस प्र[illegible] जेबखर्च के लिए पैसा स्वयं कमाना [illegible] है. पश्चिमी देशों के मातापिता व[illegible] बचपन से ही स्वयं कमा कर खर्च [illegible] की आदत डाल देते हैं. पर हमा[illegible] जिस प्रकार युवा लोग पैसा खर्च [illegible] नजर आते हैं, उस से लगता है कि [illegible] पिता स्वयं कमाने की आदत डाल[illegible] दूर, उन्हें दूसरे द्वारा कमाए गए पै[illegible] उड़ाने की आदत डालते हैं. इन्हीं [illegible] के कारण बाद में ये लड़के बड़े हो[illegible] आसान से आसान तरीके से पैसा क[illegible] की कोशिश करते हैं. इस से भ्रष्टा[illegible] को बढ़ावा मिलता है.

जब तक हमारे युवकयुवतियां [illegible] तरह नहीं समझ लेते कि पैसा काम [illegible] के ही मिल सकता है, मुफ्त में नहीं, [illegible] उन्नति नहीं कर सकता. अभिभावक[illegible] चाहिए कि वे बचपन से ही बच्चों [illegible] काम के बदले पैसा कमाने की आदत [illegible] उन्हें स्वयं पैसा जहां तक हो, न दें.

निराशाजनक फिल्म समारो[illegible]

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों [illegible] उद्देश्य जनता को अलगअलग देश[illegible] फिल्में दिखा कर उन्हें वहां की तक[illegible] साहित्य, विचारधारा और वाता[illegible] आदि बताना होता है. पर किस [illegible] को? यह तो स्पष्ट है कि 14 दि[illegible] समारोह में जहां एक फिल्म के ज्या[illegible]

दस शो हो सकते हैं, आम तौर नेमा देखने वाली साधी जनता तो ख नहीं सकती. इसलिए यह केवल लोगों को दिखानी चाहिए जो इस सी प्रकार से लाभ उठा सकें.

दिल्ली में जो अभी पांचवां अंत-य फिल्म समारोह आयोजित किया या, उस में आयोजकों ने यह पूरा-याल रखा है कि समारोह की फिल्में लोगों को बिलकुल देखने को न मिलें. समारोह की फिल्में कई सिनेमाघरों खाई गईं और अधिकांश में छात्र, वाले, दफ्तर के बाबू (विशेष तौर नोरंजन कर तथा कस्टम के दफ्तरों मंत्रियों और अधिकारियों के मित्र, की पत्नियां या बच्चे ही दिखाई दिए. रोह दिल्ली में हुआ. अतः फिल्म ग से संबंधित व्यक्तियों द्वारा इस लाभ उठाने का तो प्रश्न ही नहीं

विशेष व्यक्तियों के लिए किए गए नों में आयोजकों के परिवारों ने मिकता प्राप्त की और बिक्री वाले रों में टैक्सी वालों और काले बाजा-ने.

यही कारण है कि फिल्म समारोहों नियंत्रण करने वाली अंतर्राष्ट्रीय ने अब निर्णय किया है कि भविष्य फिल्म समारोह बंबई में किए जाएंगे. जन सरकार के सहयोग से नहीं, उद्योग के सहयोग से होगा ताकि कारी धांधली न कर सकें.

र से इनकार क्यों?

अभी हाल में ही प्रधान मंत्री इंदिरा ने कहा है कि देश इस समय संकट रे से गुजर रहा है, इसलिए शिक्षा चुनाव प्रणाली में परिवर्तन करना नहीं है.

वास्तविकता यह है कि शिक्षा और व की दोषपूर्ण प्रणालियां ही इस में बेकारी और भ्रष्टाचार की जड़ कर भी शासक दल के लोग इन में सुधार करने से कतराते हैं. इस का एक मात्र कारण यही है कि जब शिक्षा और चुनाव पद्धति में परिवर्तन हो जाएगा तो उन की कुर्सी को खतरा हो जाएगा. और हर शासक दल, चाहे वह कोई हो, कुर्सी से चिपका रहना चाहता है. इसी लिए उस की कोशिश यही रहती है कि देश की जनता मूर्ख बनी रहे.

फिलस्तीन मोर्चा

फिलस्तीन मुक्ति संगठन को दिल्ली में अपना कार्यालय खोलने की स्वीकृति दे कर भारत सरकार ने एक बार फिर अपनी मूर्खतापूर्ण विदेशी नीति का परिचय दिया है. एक ऐसे देश को, जिस का कहीं कोई अस्तित्व नहीं है, मान्यता प्रदान करना कहां की अक्लमंदी है, जब कि इसराइल को, जो इतने दिनों से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है, अभी तक अपना दूतावास खोलने की अनुमति नहीं प्रदान की गई है.

यह सभी को मालूम है कि बंगला देश संघर्ष के समय इसराइल ने भारत को पूरा समर्थन दिया था और अरब देशों ने चुप्पी साध ली थी, फिर भी हमारे नेता अरब देशों के तलवे चाटने से बाज नहीं आते. भारत को जितना अपमानित अरब देशों ने किया, उतना और किसी ने नहीं. रबात सम्मेलन की चोट इतनी जल्दी कोई बेशर्म ही भूल सकता है.

इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बात और है. कलकत्ता में होने वाले विश्व टेबल टेनिस में भारत सरकार ने इसराइल के खिलाड़ियों को वीसा देने से इनकार कर दिया है. यह बहुत ही गलत निर्णय है. खेल के लिए हमेशा खेल भावना का ही प्रदर्शन किया जाना चाहिए. खेल को राजनीति से अलग ही रखा जाए तो बेहतर है. आखिर यह कैसी तटस्थता है जो एक ऐसे देश को मान्यता प्रदान करती है, जो नक्शे पर कहीं नहीं है और दूसरी तरफ एक स्वतंत्र आत्मनिर्भर देश को नकारती है. ●

क्या इसराइल ने परमाणु बम बना लिया है?

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और अरब देशों द्वा... स्थिति में इसराइल द्वारा परमाणु बम बना लेने ...

सन 1945 की बात है. अमरीका ने अपने प्रथम परमाणु बम का सर्वप्रथम विस्फोट कर के समस्त विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया. विज्ञान जगत में अमरीका के इस कार्य को अभूतपूर्व नई वैज्ञानिक क्रांति का नाम दिया गया. तत्कालीन राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने कहा : "अब परमाणु बम के निर्माण के ... पर नियंत्रण रखना संसार की ... प्रमुख समस्या है." ट्रूमैन के ... बाद 30 वर्ष गुजर गए, पर आ... परमाणु बम पर नियंत्रण क... समस्या संसार की सब से बड़ी ... बनी हुई है.

सन 1945 के बाद आणविक ... का निरंतर विकास होता जा रहा ... देखते ही देखते अनेक देश परमाणु ... से लैस हो गए. सन 1945 में अ... सन 1949 में रूस, सन 1952 ... 1960 में फ्रांस, सन 1964 में ... सन 1974 में भारत ने परमाणु ... विस्फोट कर के आणविक शक्ति ... लता प्राप्त कर ली. पश्चिम के ... विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस ... के खत्म होने तक दुनिया के ... देश—अर्जेंटाइना, ब्राजील, ईरा...

इसराइल को निरंतर दी जा रही धमकियों की संभावना से विश्व शांति खतरे में नहीं पड़ गई है?

...नी, इटली, जापान, पाकिस्तान, ...ण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया और ...स्चिम जरमनी भी आणविक शक्ति में ...क्षमता प्राप्त कर लेंगे. कनाडा और ...टेन जैसे देश जब दूसरे देशों को ...आणविक रिएक्टर के साथ वैज्ञानिक ...जानकारी दे सकते हैं, तब वे खुद भी ...परमाणु बम बना सकते हैं.

पश्चिमी सैनिक विशेषज्ञों ने पिछले ...वर्षों इसराइल की प्रतिरक्षा व्यवस्था ...और वैज्ञानिक विकास की गति का अध्य-...यन कर यह अनुमान लगाया है कि इस-...राइल कभी भी परमाणु शक्ति संपन्न ...देश बन सकता है. सन 1950 के बाद से ...इसराइल ने परमाणु शक्ति के विकास के ...लिए काफी अनुसंधान व प्रयोग किए हैं. ...इसराइल ने सोरिक, तथा नेगव कसबे के ...दिमोना नामक स्थान पर अपने विशाल-काय आणविक रिएक्टर स्थापित कर रखे हैं. इसराइल के ये रिएक्टर पिछले 10 वर्षों से भारी मात्रा में आणविक पदार्थ तैयार कर रहे हैं. रिएक्टर से बनने वाले पदार्थ की मात्रा इतनी अधिक है कि इसराइल यदि चाहे तो प्रति वर्ष हिरोशिमा पर फेंके गए बम जैसा बम बना सकता है. पश्चिमी देशों का अनुमान है कि इसराइल के पास इस समय कम से कम 13 ऐसे बम बनाने के लिए आवश्यक सामान मौजूद है.

वैसे परमाणु बम बनाना अब कोई मुश्किल चीज नहीं रह गई है. अमरीकी वाणिज्य विभाग ने चार डालर मूल्य की एक पुस्तिका सन 1961 में ही प्रकाशित कर दी थी, जिस में उस ने प्रथम परमाणु बम बनाने का वर्णन किया था और परमाणु बम बनाने में काम आने वाली तकनीकी बातों व रेखाचित्रों को विस्तृत रूप से अंकित कर रखा था.

अरबइसराइल के बढ़ते संघर्ष की स्थिति को देखते हुए इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इसराइल

(नीचे) एक इसराइली सैनिक हथगोला [illegible] की तैयारी में, (ऊपर) युद्ध की [illegible] के बाद इसराइल द्वारा [illegible] टैंकों का एकत्रीकरण.

निर्णायक युद्ध के लिए ऐसे घातक हथियारों का प्रयोग करना जो अरब देशों को शिकस्त देने के लिए काफी हों. ऐसे हथियारों में परमाणु बम के प्रयोग से भी इनकार नहीं किया जा सकता. यही नहीं, फिलिस्तीनी गुरिल्ले भी इसराइल को हराने या ब्लैकमेल करने के लिए किसी देश से बम बनाने का सामान ला कर और बम बना कर पश्चिम एशिया में नई स्थिति पैदा कर सकते हैं. अमरीका के वर्जीनिया विश्वविद्यालय के एक प्रमुख वैज्ञानिक विलरिच ने यह आशंका प्रकट की है कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब ब्लैक मार्केट में बम बनाने का पदार्थ आसानी से उपलब्ध होने लगे.

पश्चिम एशिया में नई परमाणु शक्ति दौड़

इसराइल से निर्णायक युद्ध करने के लिए पिछले कुछ समय से अरब देश बड़े देशों से शक्तिशाली घातक हथियारों की खरीद कर रहे हैं. सीरिया व मिस्र को रूस ने हाल में भारी मात्रा में घातक प्रक्षेपणास्त्र दिए हैं और उन की फौजी ताकत को मजबूत करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई हैं. पश्चिम एशि... में घातक हथियारों के साथसाथ परमा... शक्ति की दौड़ भी शुरू हो गई है. पि... कई वर्षों से मिस्र रूस से इस बात... आग्रह करता रहा है कि वह उसे आ... विक शक्ति से लैस करे ताकि इसरा... से वह मुकाबला कर सके. लेकिन ... आणविक रहस्यों को देने से कतरा... रहा है.

इसराइल द्वारा हाल ही में शक्ति... शाली प्रक्षेपणास्त्रों के निर्माण व स... प्रयोग तथा चुपचाप आणविक बम ब... की अफवाह से मिस्र भी आणविक ... में शामिल हो गया है और वह भी ... यहां आणविक रिएक्टर स्थापित करने... व्यस्त है.

अमरीका ने हाल ही में घोषणा ... है कि वह मिस्र में एक आणविक रिएक्... स्थापित करेगा. मिस्र में स्थापित होने वा... इस रिएक्टर से हर वर्ष इतना आणवि... पदार्थ बनाया जा सकेगा कि उस से ... बम बनाए जा सकेंगे. इधर हाल ही ... रूस ने भी मिस्र को एक आणविक रि... क्टर देने की घोषणा की है. इस बी...

विश्व के आणविक स्रोत
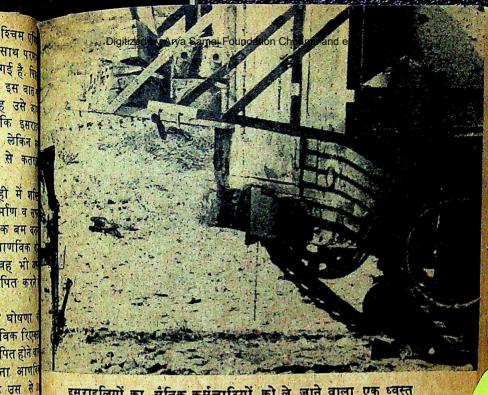
इसराइलियों का सैनिक कर्मचारियों को ले जाने वाला एक ध्वस्त वाहन. जमीन पर गड़ी राइफल उस स्थान का संकेत देती है, जहां पर एक सैनिक खेत रहा—बिना तैयारी के खड़ा कब्र का पत्थर!

इसराइल के राष्ट्रपति ने भी घोषणा की है कि इसराइल के वैज्ञानिक परमाणु बम व शस्त्र बना सकते हैं और वे किसी से पीछे नहीं रहेंगे. इसराइल अपने यहां नूब्लेक्स समुद्र के निकट खारे पानी को मीठे पानी में बदलने के लिए एक विशालकाय आणविक रिएक्टर स्थापित कर रहा है. ऐसी स्थिति में इस रिएक्टर में इतनी अधिक मात्रा में आणविक पदार्थ तैयार हो जाएगा कि उस से आसानी से 50 बम बनाए जा सकेंगे.

नाज़ुक स्थिति

कुछ दिन पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासभा में भाषण देते हुए फिलिस्तीन मुक्ति मोर्चे के नेता यासर अरफात ने घोषणा की थी कि "मेरे एक हाथ में शांति प्रस्ताव है और दूसरे में स्वतंत्रता सेनानी की बंदूक. मेरे हाथ से शांति प्रस्ताव नहीं गिरने दिया जाए, अन्यथा हालत बिगड़ सकती है." उधर इसराइल के नए प्रधानमंत्री यित्ज़ाक राबिन अपने देश की संसद में घोषणा की कि इसराइल अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सब कुछ करने को तैयार है. इन दोनों घोषणाओं से इस बात का पता चलता है कि पश्चिम एशिया की स्थिति नाजुक दौर में पहुंच चुकी है. पश्चिमी राजनीतिक पर्यवेक्षकों का अनुमान है कि पश्चिम एशिया में होने वाले आगामी युद्ध में विनाशकारी शस्त्रों का पूरापूरा उपयोग होगा. अरब देशों के पास अब ऐसे प्रक्षेपणास्त्र मौजूद हैं जो तेल अबीब और जेरुशलम तक मार करने में समर्थ हैं. उधर इसराइल के पास भी ऐसे ही, बल्कि इस से भी घातक प्रक्षेपणास्त्र हैं. पिछले दिनों यूरोप के अनेक देशों के अखबारों में इस तरह की खबरें प्रकाशित हुई थीं कि इसराइल ने परमाणु बम बना लिया है और उस का उपयोग वह भावी युद्ध में अंतिम समय पर करेगा. ●

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● मेरे दो मित्र एक दिन एक फिल्म देखने गए. पुरुषों की टिकट खिड़की पर भीड़ थी. अत: उन्होंने एक लड़की से टिकट मंगा लिए. उन के रुपयों में 20 पैसे बाकी बचे, जिन्हें मेरे मित्र मांगना भूल गए और लड़की ने दिए नहीं.

संयोग से फिल्म खत्म होने पर मेरे मित्र और वह लड़की एक ही बस में तथा आगेपीछे की सीटों पर बैठे. तब मेरे एक मित्र ने दूसरे से जोर से कहा, "तुम ने उस से 20 पैसे क्यों नहीं मांगे? एक आदमी का किराया निकल आता."

इतने में बस स्टाप आ गया. लड़की उतर कर चली गई. मेरे मित्र ने जब कंडक्टर को दो टिकटों के पैसे दिए तो उस ने 20 पैसे लौटाते हुए कहा, "एक का किराया वह बहनजी दे गई हैं."

—महिपालशरण गुप्त, [illegible]

● मेरा एक मित्र जब भी किसी सुंदर लड़की को देखता तो किसी न किसी उपाय से उस की निकटता प्राप्त करने की चेष्टा करता.

एक बार उस ने एक लड़की को पत्र लिखा, "प्रिये, मैं तुम्हारे प्यार में पागल हो गया हूं और तुम्हारे दिल में थोड़ी सी जगह चाहता हूं. मुझे निराश मत करना."

पत्र देने के बाद वह उत्तर की बड़ी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगा. एक दिन उस का उत्तर मिल ही गया. लड़की ने लिखा था, "श्रीमान, मेरा दिल किराए का मकान नहीं है. कृपया आप किसी पागलखाने में जगह की तलाश कीजिए, नहीं तो जेलखाने में जगह मैं दिला सकती हूं, क्योंकि मेरे पिताजी पुलिस इंस्पेक्टर हैं."

उत्तर पढ़ कर बेचारा इतना घबराया कि फिर किसी को पत्र लिखने का साहस नहीं किया.

—महेंद्रसिंह [illegible]

● मेरी एक सहेली बंबई जाने के लिए टिकट लेने स्टेशन गई. इस बारे में वह पूरी तरह नहीं जानती थी. काफी देर तक इधरउधर परेशान होती रही. 24-25 वर्ष का एक नवयुवक उस की परेशानी को देख रहा था. वह मेरी सहेली से बोला, "मुझे भी बंबई के लिए रिजर्वेशन करवाना है, आप का भी करवा दूंगा." थोड़ी देर बाद एक ही कूपे की दो सीटें रिजर्व करवा कर उस ने एक टिकट मेरी सहेली को दे दी.

निश्चित तारीख पर नवयुवक महोदय स्टेशन पर समय से काफी पहले पहुंच कर मेरी सहेली का इंतजार करने लगे. थोड़ी देर बाद मेरी सहेली अपनी मां के साथ स्टेशन पर पहुंची और अपनी मां का परिचय नवयुवक से करवाया. लड़का धीरे से बोला, "मैं आप की ही प्रतीक्षा कर रहा था. चलिए, अपना सामान रख दीजिए."

मेरी सहेली व उस की मां ने रेल के डब्बे में अपना सामान रखा और मां बेटी को समझाने लगी, "बेटी, चिट्ठी लिखती रहना."

"अच्छा, मां," कह कर मेरी सहेली नीचे उतर गई. तभी नवयुवक महोदय बोले, "अरे, आप नहीं जाएंगी क्या?"

मेरी सहेली हंसते हुए बोली, "नहीं, बंबई मैं नहीं, मेरी मम्मी जा रही हैं."

—सुषमा [illegible], [illegible]

मुसलिम युवतियां कितनी विवश, कितनी लाचार?

हमारी कौम में लड़कियों का जो दर्जा होना चाहिए था, वह न हो कर बद से बदतर है. खामोश और सहमी लड़कियां, हर कदम पर दिल हिला देने वाली संवेदनाएं लिए ये मासूम लड़कियां कितनी लाचार हैं.

आज की लड़कियां कल की विकसित दिमाग वाली गृहिणी, किसी पुरुष की पत्नी और कुशल गृहवधू होती हैं. किंतु ये सारे दर्जे मिलने से पहले वे इस तरह घुटन के बोझ से दब जाती हैं कि उन्हें इन रिश्तों का एहसास नहीं होता. वे तो मात्र बोझ समझती हैं इन रिश्तों को. हमारी कौम में जवान और कच्ची उमर की लड़कियों को परदे में बिठा देना शान समझा जाता है. इस का नतीजा यह होता है कि ये लड़कियां बाहरी यथार्थ अनुभूतियों से वंचित हो जाती हैं और दूसरे घरों में जा कर एक प्रकार से कच्चे दिमाग से काम करती हैं. ससुराल वाले इस बात को नहीं समझ पाते और फिर बातबात में होती है मारपीट और तलाक. अगर लोग समझ जाएं कि लड़की अपरिपक्व दिमाग ले कर आई है और इस नए वातावरण से सामंजस्य करने में समय लगेगा, तो हर मुसलिम घर में घटने वाली घटनाओं से लोग बच जाएंगे.

हमारी ये लड़कियां कितनी घुटन में दिन बिता रही हैं, यह बात परदे की ओट में दबीछिपी हुई है. कुछ घटनाएं सामने आ जाती हैं तो विस्मय होता है. एक घटना, जो आज से नौ वर्ष पूर्व घटी थी, प्रायः मेरे मस्तिष्क में एक धुंधली सी तसवीर बनाने लगती है. दो मुसलिम खानदानों में इतनी दोस्ती थी कि कुछ कहा नहीं जा सकता. इसी बीच दोनों

घरों के लड़के एवं लड़की में प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित हुआ. (वैसे हमारे यहां मुहब्बत करना शायद गुनाह है!) यह मूक प्यार दोतीन साल चला. लड़की उस वक्त मैट्रिक में पढ़ रही थी और लड़का नौकरी में था. प्रायः नौकरी लगने के बाद लड़के की तमन्ना होती है कि वह घर बसा ले. इसी आशय से उस ने मां से यह बात कह डाली. मां ने सहर्ष अपने बेटे की बात मान ली और अपने एक रिश्तेदार को रिश्ते की बात करने भेजा. पर उस बेचारे को छोटा मुंह कर के लौटना पड़ा. लड़की के बाप ने इनकार कर दिया यह कह कर कि दोस्ती अलग चीज है और रिश्तेदारी अलग.. हम अपनी लड़की अपने प्रांत वालों को देंगे, दूसरे प्रांत वालों को नहीं. लड़की पढ़लिख कर भी खामोश, अपनी मुहब्बत को दफन होते हुए देख रही थी. इस के बाद लड़के ने दूसरी जगह शादी कर ली. लड़की वालों ने भी अपने प्रांत वाले एक लड़के को अपनी बेटी सुपुर्द कर दी.

धर्म की गहरी खाइयां

कहने का आशय यह है कि हमारी कौम में प्रांतीयता घुस गई है. हमारा धर्म इसलाम है. हम बड़े जोर का नारा लगाते हैं : कौमी एकता जिंदाबाद! पर कितनी एकता है हमारे धर्म में? सुन्नी, शिया, कच्छी, बोहरा, वहाबी, अहमदिया और न जाने कितनी बंटी हुई उपजातियां हैं. वैसे कहने को एक धर्म है. और यही दीवार हमें खा रही है. हम सुन्नी हैं, तो अपनी बेटी अथवा बेटे का निकाह शिया से नहीं करेंगे. न ही शिया वाले सुन्नी से करेंगे. और इन लोगों की खोदी हुई खाइयों में हमारी मुसलिम लड़कियां दफन हो रही हैं.

इन लड़कियों को यह हक नहीं कि वे अपने मनपसंद दूल्हे को छांटें, मांबाप जिसे चाहें उसे चुन कर दे दें. लड़का शराबी, कबाबी, अफीमची और अन्य दुष्कर्म करने वाला क्यों न हो, मांबाप इस की गारंटी नहीं देंगे. लड़की गई, एक बोझ गया. हमारी कौम में तो लड़ की शादी मांबाप हज करने के समझते हैं.

लड़कियां अगर लड़झगड़ कर लें तो मांबाप के सामने कोई अ नहीं. वे तो इसे बोझ मानते हैं. लड़ को कदमकदम पर हिदायतें और दियों का जाल मिलेगा. मां क "लड़कियां आंखें झुका कर चलती हैं पर दुपट्टा जरूर होना चाहिए. अरे, राल जाएगी तो हमारी नाक कटा इस तरह चपड़चपड़ नहीं करते. तेरे बारे में क्या सोचेंगे?" यानी ससु न हुई, जेल हो गई, जहां जाने से पुलिस वाले हिदायतें देते हैं.

एक घटना कुछ ऐसी ही है. लड़कियों की शादी हो रही थी विप उमर वालों से. पहली वाली का दूल्हा की उमर से तीनचार साल छोटा उस बेचारी ने तो निकाह कबूल लिया. पर दूसरी लड़की ने, जिस की उ 20 वर्ष की थी, अपने से पांच साल दूल्हे से शादी करने से इनकार कर दि उस के इनकार से घर में खलबली म गई.

"वैसे ही इस जमाने में लड़कों किल्लत है. पहली तो 26 वर्ष की उ में निकाह पर बैठी और मान गई. यह चुड़ैल नखरे करती है," लोगों कहना शुरू कर दिया. उस के घर ब्याज के पैसे खाखा कर काफी मालदा हो गए थे, अतः जलाल आना लाजि था. इसी कारण उस बेचारी को काजी के हाथों ढेर सारा मिर्ची का खाना पड़ा, जिस के कारण वह लड़ प्रायः अधमरी सी हो गई. इस पर वह नहीं मानी तो उसे मारपीट और से बेदखल करने का खौफ दिखाया तब कहीं वह सिसकती हुई बड़ी मुश्कि से मानी.

अतः हमारी कौम में निकाह है, रस्म दिखावा. यहां लात और से निकाह कबूल करवाया जाता है. एक साहब हैं, उन्होंने एक
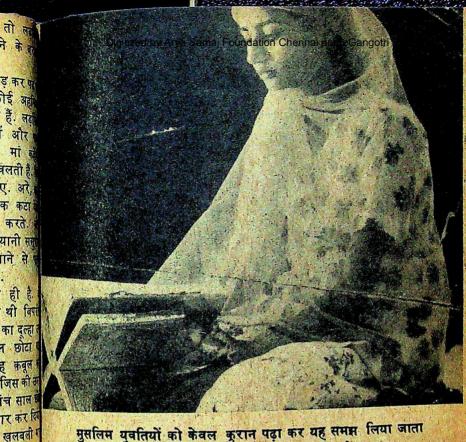
मुसलिम युवतियों को केवल कुरान पढ़ा कर यह समझ लिया जाता है कि उन्हें सब कुछ सिखा दिया गया है.

ढूंढ़ी. बात पक्की हुई. लड़की के नाप के कपड़े भी आ गए, यानी लड़के वालों ने उस लड़की के नाप के कपड़े सिलवाने के लिए मंगाए. पर बाद में मियांजी को एक अच्छी पढ़ीलिखी लड़की और काफी दहेज देने वाला खानदान मिल गया. फिर क्या था, उन्हें तो हर हाल में पैसे वाली बीवी चाहिए थी. पहली वाली से शायद कम मिलता, अतः उन्होंने उस लड़की के नाप के कपड़े लौटा दिए. अब बताइए, उस लड़की पर क्या बीती होगी? एक तरह से उस मासूम का दिल टूट गया होगा. ऐसेऐसे लालची पुरुषों से हमारे कौम की लड़कियों का पाला पड़ता है. वे मासूम दिलों को पैसों से तौलते हैं.

इस कौम में शिया, सुन्नी, बोहरा, वहाबी के मध्य रोटी और बेटी का संबंध नहीं होता, क्योंकि ये लोग अपनीअपनी उपजातियों को ऊंची मानते हैं. परिणाम सामने है, मुसलिम समाज में कुंआरी लड़कियों का अंबार लगा हुआ है. सिर्फ धर्म की छोटीमोटी खामियों के कारण एक ओर जहां शिया और सुन्नी में संबंध नहीं होते, वहीं चचेरेममेरे में शादीब्याह हो जाते हैं. गनीमत है, लिखने वालों ने यह हिदायत नहीं दी कि सगों में भी कर दो, अन्यथा सगे भाईबहनों की भी शादी हो जाती, और खुदा का डर दिखाने वाले मुल्लाओं की कौम में जो व्यभिचार फैलता, वह इस समाज को कहीं का न छोड़ता.

मेरे इन शब्दों का विरोध करते हुए एक मोहतरमा ने आक्रोश प्रकट करते हुए मुझ से कहा, "यह जरूरी नहीं कि जोर-जबरदस्ती चचेरेममेरे भाईबहनों में शादी-ब्याह हो." मैं इस तर्क को नहीं मानता

और उन सभी लड़केलड़कियों से पूछना चाहता हूं जो इस तरह के रिश्ते में बंध गए हैं, अथवा बंधने वाले हैं : क्या उन्हें यह नापाक रिश्ता अच्छा लगा? वे अपने दिल को टटोलें तो उत्तर अपनेआप मिल जाएगा. क्योंकि यह रिश्ता बुजुर्गों की देन है. वे जो चाहेंगे वही होगा. वैसे भी ऐसे रिश्तों का विरोध कम होता है.

मेरा एक पढ़ालिखा दोस्त है, पर वह भी अपने मामू की लड़की से निकाह कर रहा है. ये रस्मोरिवाज, सब हमें मुसलिम कानूनों से विरासत में मिले हैं. पर आज के युग में ऐसे जंगली कानूनों को मानना मूर्खता है. इन कानूनों ने भाईबहन के पाक रिश्ते पर दाग लगा दिया है. जो लड़कियां बचपन में अपने चचेरों को भाई कह कर पुकारती हैं, बाद में उन की उन से शादी कर दी जाती है. यह अन्याय सिर्फ मुसलिम समाज में है, और यह सब सहन कर रही हैं हमारी नेक फातिमाएं.

एक जनाब कुछ ऐसी ही बातूनी किस्म के हैं. वह सिर्फ बोलते हैं, करने के नाम पर चुप रहते हैं. वह कहेंगे, "भाई, हमारी कौम की लड़कियां शोषण के जाल में घिरी हुई हैं. मन ही मन कुंठित होते हुए अपने से दोगुनी उमर के आदमी के साथ बंध जाती हैं. कौम और मज़हब के तथाकथित ठेकेदार इन बेचारियों की मजबूरी का फायदा उठा रहे हैं. शासन को चाहिए कि ऐसी घटनाओं पर प्रतिबंध लगाए."

उन की बातों को सुन कर मैं ने कहा, "मियां, शासन का कानून अलग है और हमारा संयम अलग. तुम खुद देख रहे हो, जिस्म बेचना और खरीदना हमारे देश में कानूनन जुर्म है. फिर भी देश में यह सब चल रहा है. अगर हम कानून की बात छोड़ कर स्वयं के बूते पर ऐसा माहौल तैयार करें तो फिर किसी की ताकत नहीं कि हमारी मुसलिम लड़कियों को जलील करे. मान लो, एक लड़की बूढ़े से ब्याही जा रही है, तो क्या तुम उस का हाथ थाम सकते हो?"

इस पर वह खामोश हो गए [illegible] चुपचाप खिसक गए. आज भी [illegible] मिलते हैं, सिवा दुआसलाम के कुछ [illegible] कहते. मुझे उन का यह रुख कचोटता [illegible] जब असली काम की बात आती है [illegible] लंबीचौड़ी लच्छेदार बातें करने [illegible] खामोश हो जाते हैं. वे चाहते हैं [illegible] पर उन का ही अधिकार रहे. महिला [illegible] बुरका पहन कर घर में दुबकी पड़ी [illegible] और नन्हे बच्चों की सेवा करते [illegible] जिंदगी गुजार दें.

लड़कियां बोझ क्यों?

हमारे मुसलिम तबके के लोग [illegible] कहते हैं, करते कुछ और हैं. एक [illegible] हटाने के बदले दस लाद देते हैं. [illegible] कहना है कि दफ्तरों, स्कूलकालिजों [illegible] काम करने वाली लड़कियां बेहया [illegible] हैं और वे उन लड़कियों में बुराई [illegible] लगते हैं. इस खोजबीन में वे यह [illegible] जाते हैं कि उन की भी कुछ मज[illegible] होगी. और इसी बात को ले कर वे [illegible] से निकाह नहीं करते. बाद में [illegible] दूसरी लड़की से निकाह कर के घर [illegible] तंगी में उस से नौकरी करवाते हैं. [illegible] क्या पिछली बातें उन के दिमाग से [illegible] जल्दी उतर जाती हैं?

ये लड़कियां न हो कर मात्र कूड़े [illegible] टोकरा हो गई हैं. लोग इन्हें गंदगी [illegible] झते हैं और हर समय इन्हें घर से ज[illegible] निकालने की पड़ी रहती है. अभी [illegible] ही में एक जनाब ने अपनी बेटी के [illegible] बड़ी मुश्किल से लड़का ढूंढा और [illegible] बेटी की शादी अपने शहर में न कर [illegible] उस लड़के के शहर में ले जा कर [illegible] पूछने पर वह बोले, "क्या करें, [illegible] जमाना लड़कों का है. वे जो चाहेंगे, [illegible] होगा. मैं तो अपनी लड़कियों से परे[illegible] हूं. एक की तो जैसेतैसे हो गई, पर [illegible] का बस खुदा मालिक है. आज मेरे [illegible] में लड़के होते तो बात ही निराली हो[illegible] पर इन लड़कियों ने आ कर बेड़ा गर्क [illegible] दिया."

इन परिस्थितियों को देखते [illegible]

लड़कियों से पूछो तो वे कहेंगी, "क्या करें, हमारी पैदाइश तो सिर्फ इसी लिए हुई है. थोड़ी बड़ी हुई नहीं कि उर्दू, अरबी और मजहबी नियम गले लग जाते हैं. और 12 साल की होतेहोते परदा, 14-15 वर्ष में ससुराल."

रही परदे की बात, तो आप किसी भी मुसलिम घर में जा कर देख लीजिए, आज के सभ्य युग में वे कैसे जी रही हैं. मैं यह मानता हूं कि आज का मुसलिम माहौल बदला है. पर कितना? सिर्फ 100 में मात्र पांच घरों में. और यही पांच प्रतिशत महिलाएं कहती हैं, "यह सब लिखने वालों की बकवास है. हमें देखिए, हम कैसे जी रही हैं. हमें हर किस्म की आजादी है, सिनेमा से शिक्षा तक."

मिथ्यावादी

जहां बुद्धि और तर्क का कुछ वश नहीं चलता, मनुष्य मिथ्यावादी हो जाता है.

—प्रेमचंद

पर, मोहतरमा! यह तो बताइए कि आप के बुजुर्ग यानी अम्मी, दादी और उन के साथ सहेलियां पहले कैसा जीवन व्यतीत करती थीं. बुरके के कूपे में ठूंसा हुआ उन का जीवन एक किस्म से नारकीय था. उस यातना को जानते हुए वे आज अपनी बहूबेटियों को ऐसे तंग माहौल में नहीं घसीटना चाहतीं.

बाकी 95 प्रतिशत घरों में तो औरतों का दरवाजे से झांकना गुनाह समझा जाता है. अगर घर के अंदर बैठी हुई वे कुछ काम करती रहें और इतने में ही कोई आ जाए तो फिर उन की हालत देखने योग्य होती है. वे इस तरह भागती हैं जैसे कोई आफत आ गई हो. फिर उन के दिमाग से यह बात उतर जाती है कि उन के सिर से दुपट्टा कहां गया.

और यह सब देखने वाला शर्म से सिर झुका लेता है. उसे अपने मुसलिम समाज के गंदे माहौल का एहसास होने लगता है. पर वह सिवा सोचने के और कुछ नहीं कर पाता.

जहां तक लड़कियों की स्थिति सुधारने का सवाल है, यह कार्य सहयोग से होगा. हमें अपनी बहनों की भावनाओं को समझना होगा. वे रोटी, कपड़ा, जेवर के अलावा कुछ और भी चाहती हैं—ऐसी मांग, जो जायज है, उसे मांगने का हमारी बहनों को पूर्ण अधिकार है: अगर लड़का ढूंढा जाए तो लड़कियों की राय ले लेना अच्छा रहेगा. इस से हम भविष्य को ही नहीं, वर्तमान को भी सुधारने का कार्य कर सकेंगे. दूसरी बात, हम उन्हें परदे में ठूंस कर पैर की जूती न बना दें. हमें उन की कीमत समझनी चाहिए.

नारी स्वतंत्रता बीसवीं सदी की सब से बड़ी मांग है. इस मांग को हर धर्म ने एक हद तक मान लिया है. चाहे वे ईसाई हों, या सिख अथवा हिंदू. इन धर्मों की औरतें पुरुषों के साथ सहयोग करती हैं, उन के दुखदर्द बांटती हैं, उन के बच्चों की उचित परवरिश करती हैं. यह बात मुसलिम समाज में नहीं है. यहां की अनपढ़ लड़कियां क्या पुरुष से सहयोग करेंगी और क्या बच्चों को उचित राह दिखाएंगी. अतः पुरुष कभीकभी चिढ़ कर कह उठते हैं, "कैसी गंवार औरत से पाला पड़ा है." बात ठीक है, पर भाईजान, करतूत आप लोगों की है, फल भुगतो.

अतः हमें अपनी कौम की स्त्रियों के प्रति नरम रुख अपनाना होगा, नहीं तो मुसलिम समाज का बेड़ा गर्क है. यह उदार रवैया हर घर में और हर पुरुष के दिल में होना चाहिए, ताकि बाद में किसी बात का मलाल न रहे. हमारे इस काम से समाज की धुंधली तसवीर पर निखार आ जाएगा और आने वाली पीढ़ियां हमें दुआ देंगी. अगर हम यह कार्य नहीं होने देंगे तो ये दबीकुचली लड़कियां एक दिन अपना हक हम से छीन कर ले लेंगी. ●

कहानी • कुसुम गुप्ता

शिकायत

मुरलीधरन जैसे सौम्य, सुसंस्कृत, सुशील और मृदुभाषी सचिव इतने क्रोधित हो जाएंगे, इस की तो मैं ने कल्पना भी नहीं की थी. जब मैं उन के कमरे में घुसा तो वह बुरी तरह उखड़े हुए थे और क्रोध से उन का चेहरा तमतमाया हुआ था. उन के इस अप्रत्याशित रूप को देख कर मैं भी उलझ गया था. आखिर बात क्या है? मैं ने उन का अभिवादन किया और विनम्र स्वर में मैं बोला, "सर, आप ने याद किया था?"

"हां, मिस्टर सेठी. बैठिए."

मैं बैठ गया.

"क्या जमाना आ गया है. सीनियर अफसरों से भी अब यह आशा नहीं रह गई कि वे अपने पद की प्रतिष्ठा और शालीनता सुरक्षित रख सकेंगे. कोई और होता तो दूसरी बात थी, पर मिस्टर सचदेवा जैसे सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर से मैं इस बात की कभी आशा नहीं कर सकता था," मुरलीधरन भुनभुनाए, "सचदेवा एक कुशल अफसर हैं. अपनी ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता तथा अनुशासन के लिए वह पूरे विभाग में प्रसिद्ध हैं. फिर उन्होंने यह क्यों किया?"

हार कर मुझे पूछना ही पड़ा, "सर, आखिर बात क्या है?"

"उन के खिलाफ एक गंभीर, गुमनाम शिकायत आई है," कह कर उन्होंने एक लिफाफा मेरी ओर बढ़ा दिया.

"गुमनाम शिकायत?" मैं बुदबुदाया और सोचने लगा, 'इस प्रशासन में कर्मचारियों और अधिकारियों के विरुद्ध गुमनाम शिकायतें आनी एक साधारण बात है. अधिकांश शिकायतों में कोई सार नहीं होता. वे आधारहीन होती हैं. अकसर वे ईर्ष्या, जलन अथवा प्रतिस्पर्द्धा से प्रेरित होती हैं और सरकारी नियमों के अनुसार उन पर कोई कारवाई नहीं की जानी चाहिए. फिर सचिव महोदय इस गुमनाम शिकायत से इतने परेशान क्यों हो रहे हैं?'

मैं उस शिकायत को पढ़ने लगा. उस में किसी अज्ञात व्यक्ति ने विभाग के वरिष्ठ अफसर श्री सचदेवा पर यह आरोप लगाया था कि वह लगभग 20-22 वर्ष की एक नवयुवती के प्रेम के चक्कर में पड़ गए हैं. वह जब भी महीने में एकदो बार दिल्ली आते हैं, अपनी प्रेयसी से सार्वजनिक स्थानों पर मिलते हैं.

"पढ़ा आप ने, मिस्टर सेठी? सचदेवा जीवन भर अविवाहित रहे हैं. उन की आयु 50 के लगभग है. मैं तो शुरू से उन से कहता था, 'सचदेवा, विवाह कर लो, अविवाहित रहना अप्राकृतिक है. अभी तो नहीं, बाद में जब उमर ढलने लगेगी तो पता चलेगा.' वही हुआ न. सचदेवा जैसे वरिष्ठ और प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति को अपनी लड़की की उमर की लड़की के साथ इस तरह प्रेम

लीला करना क्या शोभा देता है?''

''लेकिन, सर...''

''मैं इस पर बहुत नाराज हूं. मैं ने विभाग के संयुक्त सचिव को नोट भेज दिया है कि जब तक इस मामले की जांच-पड़ताल न हो जाए, सचदेवा की तरक्की पर विचार न किया जाए.''

''पर, सर, इस तरह की शिकायत अकसर आधारहीन होती हैं.''

''मिस्टर सेठी, कानों सुनी बात गलत हो सकती है, पर आंखों देखी बात कैसे झूठ हो सकती है?''

''आंखों देखी?'' मैं चौंक गया.

''तो क्या आप ने शिकायती पत्र के

सचदेवा की ईमानदारी पर एक ऐसा दाग लगाया गया था जिस से आफिस में सनसनी फैल गई. लेकिन क्या वह आरोप सिद्ध हो सका?

साथ संलग्न फोटो नहीं देखे? यह एक असाधारण शिकायत है, मिस्टर सेठी.

मैं ने पत्र के साथ लगे तीन फोटो देखे. एक फोटो में सचदेवा और वह नवयुवती सट कर एक सिनेमाघर के बाहर खड़े थे. दूसरे फोटो में वे दोनों हाथ में हाथ पकड़े किसी बाग में टहल रहे थे. तीसरे फोटो में वे कुतुब के पास एक बड़े पत्थर पर सट कर बैठे थे और एक डब्बे में से कुछ निकाल कर खा रहे थे.

"देखा आप ने, मिस्टर सेठी? कहिए, सार्वजनिक स्थान पर सचदेवा का यह व्यवहार आचरण संहिता के प्रतिकूल नहीं है?"

"जी, हां. है तो, पर..."

"क्या आंखों देखी इस चीज पर भी आप को विश्वास नहीं हो रहा है..."

"सर, न्याय के सिद्धांतों के अनु... जब तक मिस्टर सचदेवा के दुराच... की पुष्टि नहीं हो जाती, तब तक मैं ... दोषी नहीं मान सकता."

"आंखों देखी बात को भी..." मुरलीधरन को फिर क्रोध आ गया.

"सर, कई बार आंखें धोखा ... जाती हैं. इस धोखे से बचने के लिए ... की आंखों को खोलना पड़ता है," मैं ने साहस जुटा कर कह दिया. मैं जानता ... कि मुरलीधरन दृढ़ता के सामने ... जाते हैं. वह भावुक आदमी हैं.

"ठीक है, मिस्टर सेठी. आप अप...

मन की आंखें खोलिए और मुझे इस शिकायत की जांच कर के तीन दिनों में रिपोर्ट दीजिए."

"सर, तीन दिन तो बहुत कम हैं. यदि आप एक सप्ताह की इजाजत दे दें तो बड़ी कृपा होगी."

"ठीक है."

मैं शिकायती पत्र और तीनों फोटो ले कर चला आया.

तीन दिन बीत चुके थे और मेरी जांच में कोई प्रगति नहीं हुई थी. मिस्टर सचदेवा पूर्वांचल के एक शहर में नियुक्त थे और उन की तथाकथित प्रेयसी का मेरे पास केवल चित्र था, उस का कोई अता-पता नहीं था. शिकायत करने वाले ने अपनेआप को गुमनाम रखा था. फिर मैं किस से मिलता, किस से पूछताछ करता? मेरे सामने केवल यही विकल्प था कि मैं सचदेवा के पास जा कर सच्चाई का पता लगाता, पर यह विभागीय नियमों के विरुद्ध था. भ्रष्टाचार या अनुशासनहीनता के हर मामले की प्रारंभिक जांच इतनी गुप्त होनी चाहिए कि किसी को कानोंकान खबर न हो, यहां तक कि जिस अफसर के खिलाफ जांच हो रही हो, उस से भी बातचीत नहीं करनी चाहिए.

फिर क्या किया जाए?

रात का खाना खत्म कर के मैं ड्राइंग रूम में बैठा टेलीविजन देख रहा था. मैं कार्यक्रम देख तो रहा था, पर मन [illegible]

[illegible] सियों बार देखे थे. वह नवयुवती सुंदर थी. उस की छवि मेरे अंतर पर अंकित हो गई थी. मेरे मन के एक कोने में भी यह संदेह करवटें लेने लगा था कि हो न हो, सचदेवा इस लड़की के रूपजाल में फंस गए हैं. उमर और मन में कोई तालमेल नहीं होता. मन तो जल की तरह चंचल होता है. कब किस ओर ढल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता.

टेलीविजन पर नवयुवकों के लिए [illegible] प्रस्तुतकर्ता ने घोषणा की, "अब मेडिकल कालिज की छात्राएं एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी."

मैं अचानक सोफे से उछल पड़ा. मेडिकल कालिज की जो छात्राएं रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर रही थीं, उन में सचदेवा की तथाकथित प्रेयसी भी थी.

मेरे मन ने चाहा कि मैं अभी टेलीविजन सेंटर पर जा कर इस नवयुवती से बातें कर लूं. पर मैं ने अपनी उत्सुकता

पर अंकुश रख कर सोचा कि हो सकता है, यह रिकार्ड किया हुआ बयान हो. फिर उस से अन्य लड़कियों के सामने मिलना भी तो उचित नहीं है.

अगले दिन सुबह मैं सीधा मेडिकल कालिज की लड़कियों के होस्टल में पहुंच गया और वार्डन से मिला. मैं ने उस से उस लड़की को बुलाने के लिए प्रार्थना की. उस का नाम तो मुझे मालूम नहीं था, मैं ने उस का फोटो दिखला दिया.

"अरे, यह तो रीता है. आप को इस से क्या बातें करनी हैं?" वार्डन ने पूछा.

"जी, मैं एक गोपनीय सरकारी काम से रीता से मिलना चाहता हूं."

"ठीक है, मैं उसे बुला देती हूं. आप उधर लान में तशरीफ रखिए," कह कर वार्डन ने एक चपरासी को अंदर भेज दिया.

मैं लान में जा कर बैठ गया. मेज पर पड़ी एक मेडिकल पत्रिका को उठा कर मैं उस के पन्ने पलटने लगा.

लगभग दस मिनट में रीता आ गई. वह साधारण सी सूती साड़ी में बड़ी आकर्षक लग रही थी. उस के मुख पर सौम्यता थी और आंखों में आश्चर्य. सुबह ही सुबह एक अपरिचित व्यक्ति के सामने वह उलझी सी खड़ी थी.

"बैठो, बेटी," मैं ने स्नेह भरे स्वर में कहा.

'बेटी' के इस संबोधन ने रीता को जैसे आश्वस्त कर दिया. वह मेरे सामने वाली बेंच पर बैठ गई. वह एकटक आश्चर्य से मेरी ओर देख रही थी.

"बेटी, मैं एक बहुत जरूरी काम से तुम्हारे पास आया हूं. मैं जो कुछ पूछूंगा, तुम सब सचसच बताना. बुरा मत मानना."

"पर आप हैं कौन?" रीता ने साहस जुटा कर पूछा.

"मैं सेठी हूं, इस विभाग का सतर्कता अधिकारी," कह कर मैं ने अपना परिचयपत्र उस की ओर बढ़ा दिया.

रीता ने परिचयपत्र को पकड़ा नहीं, उसे दूर से पढ़ा और फिर भय से उस की आंखें चौड़ा गईं. वह बोली, "आप इस समय मेरे पास क्यों आए हैं?"

"बतलाता हूं," कह कर मैं ने जेब से तीनों फोटो निकाले और उन्हें उस की ओर बढ़ा कर कहा, "ये तुम्हारे ही हैं न?"

"हां. पर ये आप के पास कैसे आए?"

"वह मैं बाद में बताऊंगा. पहले यह बताओ कि फोटो में तुम्हारे साथ यह पुरुष कौन है."

"यह मिस्टर सचदेवा हैं, सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर."

"वह तो मुझे भी मालूम है. पर यह तुम्हारे क्या लगते हैं?"

"यह मेरे पापा हैं."

"पापा?" मैं भीषण रूप से चौंक पड़ा.

"आप इस तरह चौंक क्यों गए?"

मेरी चेतना लौटी. मुझे लगा, जैसे रीता ने झूठ बोला है. मैं ने अपनी निगाहें रीता पर जमा दीं और कहा, "पर मिस्टर सचदेवा ने तो शादी नहीं की. . .?"

"यह भी ठीक है, अंकिल."

"फिर तुम. . .?"

"यह बड़ी लंबी कहानी है. पापा अकसर मुझे सुनाया करते हैं."

"अगर सच है तो सुनाओ."

"आप समझते हैं, मैं झूठ बोल रही हूं? आइए, मेरे साथ वार्डन के पास और पूछ लीजिए."

"तुम तो नाराज हो गई, बेटी. मैं तो मजाक कर रहा था."

"ऐसा मजाक मुझे पसंद नहीं."

"अच्छा, माफ कर दो. तो तुम एक लंबी कहानी सुनाने वाली थी. . ."

"अब नहीं सुनाऊंगी. पहले आप यह बताइए कि आप यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हैं."

अब मुझे झूठ बोलने को बाध्य होना पड़ा. यह एक निर्दोष झूठ था. ऐसा झूठ जिस से किसी की हानि नहीं होती थी बल्कि एक ईमानदार व्यक्ति

की प्रतिष्ठा की रक्षा होती थी. मैं बोला, "तुम्हारी शादी की बातचीत चलानी है."

"ओह, अभी नहीं. चाचाजी, मैं इस चक्कर में नहीं पड़ना चाहती."

"वह फैसला हम और तुम्हारे पापा मिल कर करेंगे. तुम अपनी बात तो कहो."

रीता ने एक ठंडी आह भरी और पूरी कहानी सुना दी जो बेहद रोचक और महत्त्वपूर्ण थी.

रीता से बिदाई लेने से पूर्व मैं ने उस से एक प्रश्न पूछ लिया, "जब तुम्हारे पापा दिल्ली आते हैं तो तुम्हें बाहर सार्वजनिक स्थानों पर क्यों ले जाते हैं?"

"इस में हर्ज भी क्या है? वह मेरे पापा हैं. यह महिलाओं का होस्टल है. यहां किसी पुरुष को आने की आज्ञा नहीं. पापा और मैं सारा दिन इस लान में बंधे नहीं बैठ सकते, इसलिए हम साथ-साथ घूमते हैं, सैर करते हैं, पिक्चर देखते हैं. इस संसार में न पापा का कोई और है और न मेरा."

लौटते समय मैं धन्यवाद देने के लिए वार्डन से मिला और उस से भी इस बात की पुष्टि हो गई कि रीता श्री सचदेवा की लड़की है.

करीब पांच बजे मैं श्री मुरलीधरन के पास गया और जब मैं ने इस रहस्य का उद्घाटन किया तो वह अवाक रह गए. वह सिर्फ इतना ही कह पाए, "मिस्टर सेठी, आप ठीक कह रहे थे. कई बार आंखों देखी बात भी गलत हो जाती है. कैसा जमाना आ गया है कि लोग बापबेटी को भी साथ देख कर शंका की दृष्टि से देखते हैं!"

मैं शांति से बैठा हुआ मुसकरा रहा था.

"लेकिन मिस्टर सेठी, एक बात समझ में नहीं आई. सचदेवा अविवाहित हैं, फिर रीता...?"

"सर, बड़ी विचित्र कहानी है यह."

"मतलब?"

"सर, यह बात उन दिनों की है, जब देश का विभाजन हुआ था. शरणार्थियों से भरी हुई रेलगाड़ियां पाकिस्तान से भारत पहुंच रही थीं. मार्ग में कत्लेआम हो रहा था. जो बच जाते वे अनाथ और असहाय भारत पहुंच रहे थे..."

"पर सचदेवा से इस का क्या ताल्लुक है?"

"सर, वही बताने जा रहा हूं. एक दिन मिस्टर सचदेवा दिल्ली रेलवे स्टेशन के बाहर आए तो उन्होंने देखा कि एक दोतीन वर्ष की बालिका एक कोने में खड़ी रो रही है. उस के मांबाप शायद कत्लेआम में मारे जा चुके थे. सचदेवा उसे अपने घर ले आए और उन्होंने उसे अपनी बेटी बना लिया," मैं ने संक्षेप में रीता की कहानी सुना दी.

"बहुत अच्छे," मुरलीधरन के मुंह से अनायास निकल गया.

"सर, सचदेवा करुणा, स्नेह और मानवता के प्रतीक हैं. उन्होंने एक आदर्श

होश इतना है कि...

हमारी बेखुदी का हाल वो पूछें तो ऐ कासिद,
यह कहना होश इतना है कि तुम को याद करते हैं.
'जलील' अच्छा नहीं आबाद करना घर मुहब्बत का,
यह उन का काम है जो जिंदगी बरबाद करते हैं.

—जलील मानिकपुरी

उपस्थित किया है. उन्होंने रीता को पालपोस कर इतना बड़ा किया और उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा दी. चार वर्ष पूर्व जब उन की बदली पूर्वांचल में हुई तो वह रीता को होस्टल में भरती करा गए."

"कमाल है, मिस्टर सेठी. पर हमारी समझ में नहीं आता, ऐसे देवता पुरुष पर इस तरह किसी ने क्यों कीचड़ उछाला है?"

मैं इस प्रश्न के लिए प्रस्तुत था. मैं ने विनम्र स्वर में कहा, "सर, मुझे जोशी पर संदेह है."

"पर वह ऐसा क्यों करने लगा?"

"सर, अफसरों की तरक्की की सूची आजकल तैयार हो रही है. जोशी इस सूची में नहीं आ रहा है. यदि ऊपर से एक अफसर निकल जाए तो वह उस सूची में आ जाता है. बस, उसी ने सक्सेना के विरुद्ध यह शिकायत भिजवाई होगी."

"ओह, तो यह नीच व्यक्ति अपने उद्देश्य में लगभग सफल हो गया था. मैं ने विभाग के संयुक्त सचिव को [illegible] नोट भेजा था, मैं अभी उसे कैंसिल करवाता हूं."

मैं श्री मुरलीधरन को अभिवादन कर के चलने ही वाला था कि वह गंभीर स्वर में बोले, "मिस्टर सेठी, मैं आप का आभारी हूं. आप ने अपनी तत्परता से एक निर्दोष व्यक्ति को बचा लिया. सचमुच, जब तक किसी का अपराध सिद्ध न हो जाए, तब तक उसे निर्दोष न मानना उस के प्रति घोर अन्याय है." ●

पसंद अपनी-अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री खुशाल गाला, हैदराबाद हैं.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● अफसर (नौकर से) : जब भगवान के यहां अक्ल बंट रही थी तब तुम कहां रह गए थे?

नौकर : सर, मैं आप के साथ दौरे पर गया हुआ होऊंगा. और तो मैं कहीं भी नहीं जाता.

—राकेश चोपड़ा, गाजियाबाद

● एक बीमा विरोधी सज्जन को जब बीमा एजेंट ने बीमे के महत्त्व के बारे में समझाना चाहा तो बीमा विरोधी सज्जन ने स्पष्ट उत्तर दिया, "देखिए साहब, कई बीमा एजेंटों से मेरी चर्चा हुई किंतु मुझे आज तक कोई बीमा कराने के लिए सहमत नहीं कर पाया."

"नहीं, नहीं, इस बार ऐसा नहीं होगा. क्योंकि अपने बारे में मेरा दावा है कि जिस में थोड़ी भी बुद्धि होगी, मैं उसे सहमत कर लूंगा. जिस में बिलकुल ही अक्ल नहीं, उस की बात छोड़िए," बीमा एजेंट का जवाब था.

अब बीमा विरोधी सज्जन के पास सहमत होने के सिवा कोई चारा न था.

—अरविंदकुमार दीक्षित, तराना

● एक बार एक देहाती को रास्ते में पड़ा दस का नोट मिल गया. उस ने राह चलते एक वकील से पूछा, "क्यों जी, यह दस का ही है न?"

वकील ने सात रुपए फीस के काटे और तीन रुपए लौटाते हुए कहा, "हां, यह दस का ही है."

● एक मेकैनिक से एक आदमी ने कहा, "सुबह तुम्हें डोर बेल ठीक कर जाने को कहा था पर अभी तक तुम नहीं आए."

"साहब, मैं आया तो था. दस मिनट तक मैं ने डोर बेल का बटन दबाए रखा. अंदर से कोई जवाब नहीं मिला तो मैं ने समझा कि घर वाले सोए होंगे या कहीं बाहर गए होंगे. इसलिए मैं वापस चला आया," मेकैनिक ने जवाब दिया.

● एक छोटे से शहर में क्रिकेट का मैच हो रहा था. गेंदबाज ने गेंद फेंकी तो वह बल्लेबाज के पैर से टकरा कर आगे चली गई. अंपायर ने उस बल्लेबाज को आउट घोषित कर दिया. उस बल्लेबाज ने अंपायर से पूछा, "मैं किस तरह आउट हुआ?"

अंपायर ने चिढ़ कर जवाब दिया, "कल समाचारपत्र में देख लेना."

"तुम देखना," बल्लेबाज बोला, "मैं संपादक हूं."

—खुशाल गाला, हैदराबाद

● एक श्रीमानजी अपनी श्रीमतीजी के साथ एक कपड़े की दुकान में पहुंचे. श्रीमतीजी करीब एक घंटे तक खरीदारी करती रहीं. वह चुपचाप खड़े देखते रहे. सेल्समैन जब श्रीमती से फारिग न हुआ तो उस ने उस के पति से पूछा, "कहिए साहब आप की सेवा में क्या पेश करूं."

"पसीना पोंछने के लिए एक रूमाल," श्रीमानजी ने कहा.

—राकेश भगत, रायपुर ●

सलीम और फिरदौस के
ऊंची थी कि उसे पार
निश्चय के बाद क्या

कहानी • अंजुम बानो

दीवार

सलीम और मैं दोनों लाइब्रेरी से निकल रहे थे. हमारे चेहरों पर एक पक्का इरादा साफ नजर आ रहा था. हम दोनों किसी सोच में डूबे हुए थे. शायद हम दोनों चार साल पीछे घूम रहे थे.

कालिज में दाखिले शुरू हो गए थे. मैं ने बी. ए. के पहले साल में दाखिला लिया था. सीनियर लड़कियां हमारी रैगिंग कर रही थीं. तभी एक मर्दाना आवाज सुन कर मैं ने गरदन उठाई.

वह कह रहा था, "अरे भई, क्यों नई लड़कियों को परेशान कर रही हो?"

"इन्हें कालिज के काबिल बना रहे हैं," लड़कियों ने चहक कर कहा.

"या अपनी तरह शैतान बना रही हो," यह कह कर वह लड़का हंस पड़ा.

उस के जाने के बाद मैं उसे काफी देर तक देखती रही.

एक लड़की ने चुटकी भरते हुए कहा, "उधर क्या देख रही हो? वह अच्छीअच्छी लड़कियों को लिफ्ट नहीं देता है."

मैं झेंप गई. सीनियर लड़कियां इधर-उधर बिखर गईं.

सलीम बी. काम. के दूसरे साल का छात्र था. वह एक छरहरे बदन का, लंबा काले बाल व लाल डोरे वाली आंखों का एक खूबसूरत नौजवान था और अमीर व शरीफ खानदान से ताल्लुक रखता था.

सभी प्रोफेसर, लड़के और लड़कियां की तारीफ करते थे. लड़कियां उस साथ पाने के लिए बेताब रहती थीं.

वक्त गुजरता रहा. कभीकभी पर मैं आदाब कर लिया करती थी. हमेशा मुसकरा कर मेरे आदाब का देता था. दूसरी लड़कियों की तरह मैं उस से मिलने के लिए बेचैन रहती कालिज से लौटते समय एक दिन मुझे मिला और कहने लगा, "क्या है, कालिज में बहुत कम नजर हो?" मैं सिर्फ मुसकरा दी. मेरी उस के प्रति प्यार प्रदर्शित कर रही

मुझे छेड़ने वाली लड़कियों की गलत साबित हो चुकी थी. मैं और स वैसे एकदूसरे की आंखों से एकदूसरे दिलों में उतर गए थे. वैसे हम अ खामोश रहते थे.

हम दोनों एक दिन लाइब्रेरी में हुए थे और धर्म पर चर्चा कर रहे मैं धर्म पर यकीन नहीं रखती थी, सलीम कुछ धर्म का कायल था. फिर

मजहब की दीवार इतनी मुश्किल था, लेकिन दोनों के दीवार टिकी रह सकी?

हमारे विचार आपस में काफी मिलते थे. अचानक सलीम ने सवाल किया, "फिरदौस, शादी के बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

"लड़का मेरी पसंद का होना चाहिए, चाहे हिंदू हो या मुसलमान."

"क्या तुम अपने घर वालों की मरजी के खिलाफ कचहरी में शादी कर सकती हो?"

"बिलकुल," मैं ने हंसते हुए कहा.

सलीम की लाल आंखों ने मेरी आंखों में न जाने क्या तलाश करने की कोशिश की. हम दोनों को अपनी कही हुई बातें याद थीं.

सलीम ने एम. काम. पूरा कर लिया, पर मैं एम. ए. कर रही थी. सलीम ने कालिज छोड़ दिया था मगर फिर भी वह मुझ से मिलने कालिज आता रहता था. सलीम ने अपनी तिजारत काफी जिम्मेदारी से संभाल ली थी. मुझे इस बात की बहुत खुशी थी कि वह अब अपने पैरों पर खड़ा हो गया है.

सलीम की वालिदा (मां) शकीला बेगम सलीम की शादी अपनी भतीजी फरहा से करना चाहती थीं. वह मुझ से काफी सुंदर थी और बी. ए. में पढ़ रही थी. सलीम के मामूजान, मामीजान और फरहा उस के यहां आए हुए थे. उन की खातिर में व्यस्त रहने के कारण कई दिन सलीम मुझ से मिलने नहीं आ सका. मैं उस से बगैर मिले काफी परेशान थी.

मेहमानों के जाने के बाद शकीला बेगम ने सलीम से कहा, "बेटे, तुम्हारे बड़े भाई की शादी हो ही गई है. माशाअल्ला
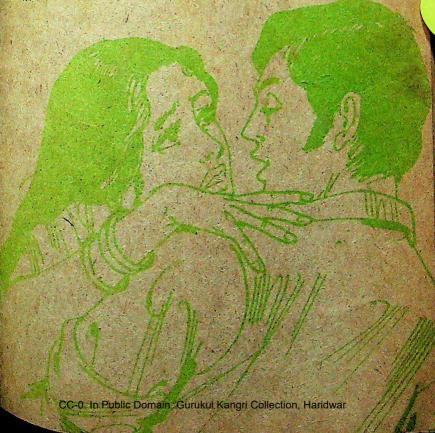
तुम भी बड़े हो गए हो. अब मैं छोटी दुलहन का चेहरा देखना चाहती हूं. उस के लिए मैं ने फरहा को पसंद किया है."

"अम्मीजान, मैं अभी शादी नहीं करना चाहता. थोड़ा व्यापार और बढ़ा लूं. और हां, गुस्ताखी माफ हो, मैं शादी अपनी पसंद से ही करूंगा," सलीम ने जवाब दिया.

शकीला बेगम चौंक गईं. उन के दिल में शक बैठ गया कि कहीं दाल में कुछ काला जरूर है. उन्होंने सलीम को समझाने की कोशिश की.

तभी सलीम का दोस्त माजिद आ गया. शकीला बेगम ने अपनी मुसीबत माजिद के सामने रखी. सलीम माजिद को आंख दबा कर यानी अस्वीकृति का इशारा कर के बाहर निकल गया. माजिद ने कहा, "खालाजान, पुराना जमाना लद गया. जब जिस से चाहा, बांध दिया. अब जमाना बदल चुका है. सब को अपना हमसफर चुनने का पूरा हक है."

"बेटा, तुम कैसी बातें कर रहे हो! हमारे पूरे खानदान में ऐसा कभी नहीं हुआ. सब रिश्ते मांबाप ही तय करते हैं और फिर फरहा में क्या बुराई है. देखीभाली लड़की है. दहेज भी काफी देंगे."

"खालाजान, आप दहेज से किसी की जिंदगी क्यों तौलती हैं?"

"बेटे, फिर वह क्या किसी और को चाहता है?"

"खालाजान, हमारे कालिज में ही एक लंबी सी, दुबलीपतली, सांवली पर तीखे नैननक्श की लड़की है, मगर. . ."

शकीला बेगम घबरा कर बोलीं, "बेटे, आगे बोलो, मगर क्या?"

"मगर लड़की शिया घराने से ताल्लुक रखती है."

शकीला बेगम गुस्से से उबल पड़ीं. उन्होंने और सलीम की दादी ने घर सिर पर उठा लिया. घर में तूफान सा आ गया. शाम को शकीला बेगम ने बेटे को समझाया, "सलीम, तेरा क्या दिमाग फिर गया है? शिया लड़की को घर में लाएगा. उस के साथ हमारा निवाह कैसे हो[illegible] [illegible] खराब कर दे[illegible] अपने शिया मजहब में रंग लेगी."

"अम्मीजान, उस के लिए एक [illegible] बुरा लफ्ज मत कहिए. पराई लड़की [illegible] इस तरह नहीं कहते हैं. वह इनसानियत [illegible] मजहब में यकीन रखती है. कल को रेश[illegible] भी तो शिया लड़के से शादी कर सक[illegible] है. इस में बुराई क्या है?"

"मेरी बेटी ऐसा कभी नहीं [illegible] सकती, मुझे पूरा यकीन है." शकी[illegible] बेगम गुस्से से लाल हो गईं.

दादीजी ने भी सलीम को समझा[illegible] की कोशिश की, "बेटे, एक लामज[illegible] लड़की और वह भी बेपरदा. अरे, [illegible] अपने खानदान की नाक थोड़े ही क[illegible] वानी है. क्या तेरे लिए लड़कियों की क[illegible] है? तू तो बहुत समझदार है. आज[illegible] की लड़कियां अच्छे लड़कों को फंसा [illegible] हैं और. . ."

सलीम ने बात काट कर कहा, "स[illegible] दार हूं तभी तो उस से श[illegible] कर रहा हूं. मैं उसे चार साल से जान[illegible] हूं. मैं ने आज तक उस के लिए कोई ग[illegible] राय कायम नहीं की. आप लोगों ने [illegible] बिना देखे ही कह दिया कि उस ने मु[illegible] फंसा लिया है. बहुत खूब!"

"बेटे, हम ने जमाना देखा है."

"मगर आप ने फिरदौस को [illegible] देखा है."

"बेटे, यह कैसे हो सकता है [illegible] शिया लड़की. . ."

"शियाशिया सुन कर मैं पागल [illegible] गया हूं. लेकिन यह तय है कि वह [illegible] घर में दुलहन बन कर आएगी और [illegible] जल्द आएगी, जिस तरह शीरीं भाभी [illegible] हैं," यह कह कर सलीम अपने कम[illegible] चला गया.

बात अब्बाजान, भाई साहब, [illegible] के पास तक पहुंच गई. सभी लोग स[illegible] से नाराज थे पर डौली और रेशमा [illegible] खुश थीं कि उन की नई भाभी आ [illegible] हैं. आपा ने सलीम को समझाने [illegible]

अम्मीजान मजहब को छोड़ कर फिरदौस को अपनाना नहीं चाहती थीं, लेकिन एकाएक उन का नजरिया क्यों बदल गया?

बहुत कोशिश की.

उन्होंने कहा, "अगर अम्मी और अब्बा हुजूर की मरजी नहीं है तो तुम कचहरी में जा कर शादी कर लो."

"बेटी नजमा, यह तू क्या कह रही है? वह बिना निकाही लड़की लाएगा? हमारी तो किस्मत ही फूट गई," दादीजी ने हाथ सिर पर रखते हुए कहा.

"और इस के अलावा क्या हो सकता है? न वह सुनता है, और न आप लोग ही हार मानते हैं."

उस के दूसरे दिन सलीम मुझ से लाइब्रेरी में मिला तो काफी परेशान नजर आ रहा था, कहने लगा, "फिरदौस, कल घर पर मेरा सब से झगड़ा हो गया. बात वही शियासुन्नी पर आ कर अटक गई. न जाने किस ने शियासुन्नी की दीवार खड़ी की है? मजहब इनसान का बनाया हुआ है. खुदा की नजर में सब एक हैं. फिरदौस, मैं शादी करूंगा तो तुम से ही. यह सलीम के दिल का फैसला है, जो कभी नहीं टूटेगा."

फिर मेरी आंखों में झांकते हुए सलीम ने कहा, "आज तुम मालूम कर लो, अगर तुम्हारे वालदैन तैयार न हों तो कल हम कोर्ट मैरिज कर लेंगे. बखुदा फिरदौस, मुझ सिवा तुम्हारे और कुछ नहीं चाहिए. बस, तुम आ जाओ."

न जाने क्या सोच कर मेरी आंखें भर आईं. मैं ने जवाब दिया, "सलीम, मैं तुम्हें और घर वालों को शिकायत का मौका कभी नहीं दूंगी. सब को यह बात माननी पड़ेगी कि लड़की की कीमत उस के हुनर से होती है, शियासुन्नी से नहीं."

और अब मैं चार साल पीछे से लौट कर मौजूदा हालत में आ गई हूं. गुस्सा

सलीम खामोश है. मुझे आज अपनी जिंदगी का फैसला करना है.

"क्या हम ने तुम्हें इसी दिन के लिए पढ़ाया था कि तुम सुन्नी लड़के से शादी करो?" फिरदौस की वालिदा गुस्से से चीखीं.

मैं ने शर्मलिहाज का नकाब उतारते हुए कहा, "अम्मी, पढ़ाई तो दिमाग में रोशनी लाती है. क्या सुन्नी इनसान नहीं होते? आप 'हां' या 'न' में जवाब दीजिए."

जवाब मुझे मिल चुका था, जो मुझे पहले से ही मालूम था कि मैं शादी के बाद इस घर में कभी कदम नहीं रख सकती हूं. जैसे मैं उन के लिए मरने जा रही हूं. घर का हर व्यक्ति मुझ से नाराज था क्योंकि मैं उन की नजर में उन की इज्जत मिट्टी में मिलाने जा रही थी.

हम दोनों रिक्शा से उतरे. सलीम आगे थे; मैं उस के पीछे गुलाबी गरारे के सूट में थी. कल से आज तक न जाने कितने फर्क मुझ में आ चुके थे. मांग में अफशां, पैरों में गुठले मेरे सुहागिन होने की गवाही दे रहे थे. आगे बढ़ते हुए मेरे पैर कांप रहे थे. मैं बेइंतिहा घबरा रही थी. सलीम ने मेरा हाथ पकड़ रखा था. दरवाजा आ गया. मैं ने घूंघट निकाल लिया. डरतेडरते दरवाजे में कदम रखा. घर में काफी खामोशी थी.

हमें देख कर डोली और रेशमा खुशी से चीखीं, "नई भाभी आ गईं."

सलीम ने मुझ से कहा, "फिरदौस, दादीजी के और अम्मीजान के पैर छूओ."

मैं ने उन के पैर छुए. उन्होंने मुझे बहुत आहिस्ता से दुआएं दीं. सलीम की

जिद के आगे सब हार गए थे.

शाम होने पर सलीम ने कहा, "शीरीं भाभी, फिरदौस को मेरे कमरे में पहुंचा दीजिए और खाना लगाइए. मुझे भूख लग रही है."

भाभी मुझे पकड़ कर सलीम के कमरे में ले गईं. रेशमा और डौली भी आ गईं. मैं मसहरी पर बैठ गई. खाना वहीं आ गया. कमरा बिलकुल साफ था. अगरबत्ती की एक खास खुशबू कमरे में बसी हुई थी. मैं सोच रही थी कि अब यही मेरा घर है. यहीं मेरी खुशियां हैं, यहीं मेरे गम. पर कुछ घबराहट की वजह से मुझे पसीना आ रहा था.

रात को आंगन में सलीम से सभी कुछ कहसुन रहे थे. बीच में रेशमा बोली, "भैया, भाभी बहुत अच्छी हैं."

तभी अम्मीजान ने उसे डांटा, "चुप रहो. बड़ों के बीच में नहीं बोलते हैं."

मेरा दिल यह सुन कर धक से रह गया. यह नाराजगी की पहली सीढ़ी थी. थोड़ी देर बाद सलीम कमरे में मेरे पास आया और आते ही मुझे बांहों में समेट लिया. न जाने मैं क्यों रोने लगी.

"फिरदौस, जब इनसान समाज के खिलाफ कोई काम करता है तो सुनना ही पड़ता है. दुनिया की आदत है कहने की. इस में घबराने की क्या बात है." सलीम ने मुझे समझाते हुए कहा. मेरी हिम्मत बंधी.

फिर हम एक हो गए, हमेशा के लिए दो बदन एक जान हो गए.

आग की तरह सारी बिरादरी में यह खबर फैल गई कि सलीम शिया लड़की को ब्याह लाया है. मिलने वाली औरतों का तांता लग गया. एक बुजुर्ग साहिबा बोलीं, "अरे, शकीला बहन, हमारे जमाने में तो शौहर का चेहरा भी नहीं देखते थे, लेकिन आजकल लड़कियां खुद लड़कों को पसंद करती हैं. क्या वक्त आ गया है! कयामत बस आने ही वाली है." मैं समझ रही थी, यह सब कुछ मेरे लिए ही कहा जा रहा है. लेकिन मुझे यकीन था कि यह माहौल भी वक्त के साथ खुद ब खुद बदल जाएगा.

दो दिन बाद काम पर जाते वक्त सलीम ने कहा, "फिरदौस, 11 बजे तैयार रहना. आज बाजार चलेंगे."

मैं ने जाने के लिए अम्मीजान से इजाजत मांगी, मगर वह कुछ न बोलीं.

भाभी ने बात संभालते हुए कहा, "सलीम बाजार से जल्दी आ जाना वरना खाने को देर हो जाएगी."

हकीमन बुआ चहक कर पड़ोसिन से बोलीं, "अरी बहन, जमाना देखो. शादी को तीन दिन नहीं हुए, शौहर के साथ स्कूटर पर बैठ कर घूमने चल दी. बेशरमी की भी हद है."

मैं हर मुमकिन खुद को इस माहौल में ढालने की कोशिश कर रही हूं. कुछ हद तक कामयाब भी रही हूं. मेरी शादी

होश आने पर फिरदौस ने अपनेआप को कमरे में बिस्तर पर पाया. उठने की कोशिश की तो अम्मी ने कहा, "दुलहन, तुम लेटी रहो, लेडी डाक्टर ने आराम के लिए कहा है."

हुए दो महीने हो चुके हैं. शीरीं भाभी, रेशमा, डौली और छोटा भैया नदीम, सभी मुझ से खुश हैं, अलावा मेरी दादीजी और अम्मीजान के. शायद सब ने मुझ से या हम सब ने एकदूसरे से मौन समझौता कर लिया है.

मैं कमरे में बैठी उकताहट महसूस कर रही थी. मैं ने सोचा, कुछ भाभी के साथ काम में हाथ बंटाना चाहिए. यह सोच कर मैं बाहर आई. भाभी खाने के इंतजाम में लगी हुई थीं. भाभी के लाख मना करने के बावजूद मैं खाना बनाने लगी. अब्बाजान ने जब खाना खाया तो बोले, "आज खाना बहुत लजीज बना है!" डौली ने हंसते हुए जवाब दिया, "अब्बाजान, आज खाना छोटी भाभी ने बनाया है."

यह सुनते ही अब्बाजान का चेहरा उतर गया और व्यंग्य से बोले, "तो ए

ए. पास लड़कियां भी अच्छा खाना बना लेती हैं!"

मैं ने सब्र से काम लिया, उन का व्यंग्य चुपचाप सह लिया. मुझे इस बात से संतोष हुआ कि अब्बाजान को मेरा बनाया हुआ खाना पसंद आया. मैं ने इस बात का सलीम से कोई जिक्र नहीं किया क्योंकि कभीकभी छोटी बातें बहुत बड़ी बन जाती हैं. मैं खुद अपनी सेवा से सब का दिल जीतना चाहती थी. अब मैं ने घर के काम में भाभी का बराबर हाथ बंटाना शुरू कर दिया था. कपड़ों की सिलाईधुलाई, घर की सफाई, बच्चों की पढ़ाई और बहुत से छोटे काम मैं ने अपने जिम्मे ले लिए थे.

मैं अम्मीजान को हर तरह खुश रखने की कोशिश करती. दादीजी काफी दिनों से छोटे चचाजान के यहां गई हुई थीं. एक दिन महल्ले की कुछ औरतें अम्मीजी से मिलने आईं. अम्मी अपना दुपट्टा धो रही थीं. मैं ने उन से कहा, "लाइए, दुपट्टा मैं धो दूं, आप जो आई हैं, उन के पास चल कर बैठिए."

"मैं तेरी सब तरकीबें जानती हूं. दूसरों को दिखाने के लिए कि बहुत काम करती है. मुझे कुछ नहीं करवाना. घर बरबाद कर के तमाशा देख रही है!"

अम्मी के ऐसा कहने पर भी मैं ने हिम्मत नहीं हारी. सलीम की कसम दे कर मैं ने दुपट्टा ले लिया. दुपट्टा धोने के बाद मैं उन लोगों के लिए पान लगा कर ले गई.

मैं मुस्तकिल यही सोच रही हूं कि मैं ने क्या घर बरबाद कर दिया. क्या मैं ने सलीम को शराब पीनी सिखा दी है? मैं तो जनाब को सिगरेट भी नहीं पीने देती हूं. डौली, रेशमा को मैं अपनी बहनों

से भी ज्यादा प्यार करती हूं. क्या मैं दोनों के लिए कभी बुरा सोच सकती हूं? सलीम मेरा सुहाग, मेरी जिंदगी, मेरा सब कुछ है, जिस के लिए मैं ने मांबाप को छोड़ दिया. क्या मैं उस की बुराई या बरबादी देख सकती हूं? नहीं, कभी नहीं.

सर्दी काफी पड़ने लगी थीं. मैं ने अम्मीजान के नहाने के लिए पानी गरम किया. क्योंकि पानी मैं ने गरम किया था, इसलिए वह गरम पानी से न नहा कर ठंडे पानी से ही नहा लीं. नतीजा यह हुआ कि उन्हें जुकाम हो गया और बुखार भी हो गया.

अब मैं हर वक्त उन की खिदमत में लगी रहती. उन के कपड़े बदलवाना, उन की चोटी करना, वक्त पर दवा देना—उन के हर काम का मैं खयाल रखती.

भाभी घर के कामों में लगी रहती थीं. वह हर काम में मेरी मदद करतीं. मैं थोड़ी देर अम्मी के पास रहती और थोड़ी देर सलीम के कामों में व्यस्त रहती—उन के कपड़े धोना, उन पर इस्तिरी, उन के जूतों पर पालिश करना वगैरा. कोई कमी रह जाती तो सलीम बहुत प्यार से मुझे समझा देते.

खाना खा कर मैं अम्मी का सिर दबा रही थी.

"दुलहन, अब रहने दो, तू थक गई होगी. अब जा वरना सलीम नाराज होगा," अम्मी ने कहा.

उन्हें अब मेरा और सलीम का इतना खयाल है, यह जान कर मेरा दिल खुशी से झूम उठा. मैं ने बहुत ही कम अरसे में अम्मी का दिल जीत लिया था. आज पहली बार उन्होंने मुझे 'दुलहन' कहा था. उन का दिल भी आखिर पिघल गया. आखिर वह भी इनसान हैं. ममता से भरा हुआ दिल उन के भी पास है. मैं सलीम की कसम दे कर उन का सिर दबाती रही.

अम्मी चुपचाप छत देख रही हैं. शायद वह यह सोच रही हैं कि काश उन का ताल्लुक किसी सुन्नी घराने से होता. पर दिल से वह मुझे बहुत प्यार करती हैं. जब कोई किसी को प्यार करता है तो उस को हर चीज से प्यार हो जाता है. वह सलीम को बहुत प्यार करती हैं. वह उन के जिगर का टुकड़ा है और मैं चूंकि सलीम के दिल में बसी हूं, तो भला मुझे प्यार क्यों नहीं करती होंगी? मगर दुनिया की खड़ी की हुई दीवारें उन के और मेरे बीच में भी आ जाती हैं. मजहब के ठेकेदारों की खड़ी हुई दीवारें उन के प्यार में रुकावट बनती हैं.

तभी मेरे खयालों की लड़ी टूटी. सलीम की आवाज आई, "फिरदौस, मेरा कुरता कहां है?"

यह सुनते ही मैं उठ कर भागी. जल्दी में मेरा सिर किवाड़ से टकराया और मैं चक्कर खा कर वहीं गिर पड़ी. होश आने पर खुद को अपने कमरे में बिस्तर पर पाया. भाभी, अम्मी, डौली, रेशमा, सलीम, नदीम सब वहीं मौजूद थे. अम्मी को देख कर मैं ने उठने की कोशिश की तो उन्होंने थपथपा कर कहा, "दुलहन, तुम लेटी रहो. लेडी डाक्टर ने आराम के लिए कहा है...आज मेरी आंखों से परदा हट गया है लड़की की कीमत उस के हुनर से आंकी जाती है, शिया या सुन्नी से नहीं."

खुशी से मेरी आंखें भर आईं. मैं अम्मी के वक्ष से लग कर सिसकियां भरने लगी. मुझे ऐसा लगा, जैसे मेरी रुखसत आज ही हुई हो. मेरे और अम्मी के बीच की दीवार गिर चुकी थी.

अम्मी मुझे अलग करती हुई बोलीं, "शीरीं दुलहन, जल्दी से सामान मंगवाओ. मुझे फिरदौस दुलहन की गोद भरने की रस्म अदा करनी है."

यह सुनते ही मेरे रुखसार सुर्ख हो गए, मेरी गरदन शर्म से झुक गई. सलीम की खुशी का ठिकाना नहीं था. अम्मी के चेहरे पर रौनक आ गई थी. उन की आधी बीमारी दूर हो गई और मैं बहुत खुश थी. आखिर मेरी इबादत रंग ले ही आई.

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री व. क. गांधी, ग्वालियर, हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

• अमीर भिखारिन

वेनिस में 78 वर्षीया एक भिखारिन अर्मेगिल्डा उर्बानी 21 अक्तूबर को उस स्थान पर मरी पाई गई, जहां पिछले 50 वर्षों से वह भीख मांगती रही थी. उस के घर से पुलिस ने नोटों व सिक्कों से भरी छः बोरियां बरामद कीं.

पुलिस का अनुमान है कि बोरियों में 9 हजार से 15 हजार डालर तक के मूल्य के नोट हैं तथा उन में ऐसे नोट व सिक्के हैं जो अब प्रचलन में नहीं हैं.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषिका : लता मंगल, ग्वालियर)

• नया प्रयोग

बड़वाह में इंदौर मार्ग पर चिवड़े की एक दुकान में न कोई नौकर है और न कोई गल्ले पर बैठता है. 'अपनी सेवा आप' के तहत वहां विभिन्न वजन के पैकेट रखे हैं और पैकेट की कीमत के अनुसार 50 पैसे, एक, दो, तीन, पांच या दस रुपए गल्ले में डाल कर कोई भी व्यक्ति चिवड़ा ले सकता है. दुकान के मालिक ने वहां अंग्रेजी में एक परचा रख छोड़ा है. उस में 'अपनी सेवा आप' के सिद्धांत को बढ़ावा देने की अपील करते हुए कहा गया है कि इस से कर्मचारियों का खर्च बचने के अलावा उन के अभद्र व्यवहार की शिकायत भी कोसों दूर है.

परचे में दो दिलचस्प बातें और हैं. एक तो यह कि मुसाफिर ग्राहक से कहा गया है कि अगर उस के पास कम पैसे हों तो वह बाकी रकम घर पहुंच कर मनीआर्डर से भेज सकता है या अगली बार बड़वाह से गुजरते समय गल्ले में डाल सकता है. दूसरा यह कि अगर वह आर्थिक कठिनाई में पड़ गया हो तो गल्ले से पांच रुपए तक ले भी सकता है. लेकिन ऐसा करते समय एक चिट पर अपना नाम व पता उसे वहां गल्ले में छोड़ देना चाहिए.

हिंदुस्तान में, और खास कर बड़वाह जैसे कसबे में यह अपने ढंग की अनूठी व्यवस्था है.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : व. क. गांधी, ग्वालियर)

• फिल्म के शौकीन

पलाम जिले के गढ़वा प्रखंड स्थित जहारिया गांव के निवासियों ने एक फिल्म देखने के लिए श्रमदान से सड़क की मरम्मत की.

जहारिया गांव के अधिकांश निवासियों को कभी भी सिनेमा देखने का मौका नहीं मिला था. उस गांव के कुछ नौजवानों ने भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी से सिनेमा दिखाने का प्रबंध करने का अनुरोध किया. पर उन्होंने सिनेमा दिखाने में असमर्थता व्यक्त की क्योंकि उस गांव तक जाने वाली सड़क का एक किलोमीटर भाग ध्वस्त अवस्था में था. इसलिए उस गांव तक कोई सवारी नहीं पहुंच सकती थी.

उस गांव के निवासी सड़क की मरम्मत करने पर सहमत हो गए एवं एक दिन में ही पूरी सड़क की मरम्मत कर दी तथा शाम को सिनेमा द्वारा अपना मनोरंजन किया.

—आर्यावर्त, पटना (प्रेषक : राजेशकुमार गुप्ता, मकतपुर) •

परिवर्तन

सुलतान के नए फरमान को फतह खान ने चुनौती देनी चाही, लेकिन उस का कटा सिर सुलतान के कदम क्यों चूमने लगा?

आगरा में मातम छा गया. सुलतान सिकंदर लोधी की अचानक मौत हो गई थी. उन के मरने के कुछ देर बाद ही उन के अमीरउमरा शाही महल में इकट्ठे हुए. सभा में उन के दोनों बेटे इब्राहीम और जलाल खान भी शामिल थे. परदे के पीछे मरहूम सुलतान की बेगम भी थीं. सभा की अध्यक्षता फतह खान ने की. वह सुलतान का उत्तराधिकारी चुनना चाहते थे. अमीरउमरा की ताकत इतनी ज्यादा थी कि उन की मरजी और मदद के बिना कोई सुलतान ज्यादा देर गद्दी पर टिक नहीं सकता था. इब्राहीम और जलाल खान इस बात से बखूबी वाकिफ थे, इसलिए वे चुपचाप बैठे उन के फैसले के इंतजार में थे. वह सभी बहस में उलझे किसी फैसले पर पहुंचना चाहते थे.

एकाएक मलिकाएजहान की आवाज उभरी, "मेरे खयाल में सल्तनत को दो हिस्सों में बांट दिया जाए. इब्राहीम क्योंकि उम्र में बड़ा है, उसे दिल्ली और आगरा का सुलतान बनाया जाए. जलाल खान को कालपी और जौनपुर का इलाका आजाद सल्तनत के तौर पर दे दिया

ाए. मेरा खयाल है इस में दोनों भाइयों
ो कोई एतराज नहीं होगा. अगर सुल-
ान आज जिंदा होते तो वह भी ऐसी
ी ख्वाहिश पेश करते. साथ में हमारे
ानदान की रिवायत ही कुछ ऐसी है.
ब सुलतान बहलोल लोधी गद्दी पर बैठे
ो उन्होंने इतना बड़ा तख्त बनवाया कि
न के 40 अमीरउमरा भी उन के साथ
ठ सकें. आज उन्हीं की बदौलत सल्तनत
ी हदें दूरदूर तक फैली हुई हैं."

"मेरे खयाल में बेगम ने जो कहा है
स पर गौर किया जाए तो बेहतर
होगा," फतह खान ने कहा.

थोड़ी देर की बहस के पश्चात सभी
स बात पर सहमत हो गए.

"शहजादे, मैं तुम्हें हिदायत देती हूं कि अपने अब्बाजान की तरह तुम भी हर काम अपने अमीरउमरा की सलाह से ही करना."

"जो हुक्म, अम्मीजान." इब्राहीम की आवाज में तटस्थता थी.

"आप का हुक्म, सिर आंखों पर." जलाल खान की आवाज में ईमानदारी थी.

सुलतान सिकंदर लोधी को शाही ढंग से दफना दिया गया. उस से अगले दिन सुलतान इब्राहीम गद्दी पर बैठा. खुले मैदान में शानदार मोतियों जड़ा शामियाना लगाया गया. रंगबिरंगे गलीचों के बीचों-

बीच सुलतान सिकंदर लोधी का सिंहासन रखा गया. उस पर उन के कीमती हीरे-मोती बिछा दिए गए. अमीरउमरा शानदार पोशाकों से सज्जित थे. घोड़ों और हाथियों को भी शाही तरीके से सजाया गया. पर इस सब रौनक के बीच इब्राहीम शांत किसी विचार में डूबा हुआ था. फतह खान ने आगे बढ़ उस के सिर पर ताज रख दिया. उस के पश्चात जलाल खान को जलालुद्दीन का खिताब दिया गया और फौज के एक हिस्से की कमान दे कर उसे बाइज्जत जौनपुर के लिए रवाना कर दिया गया.
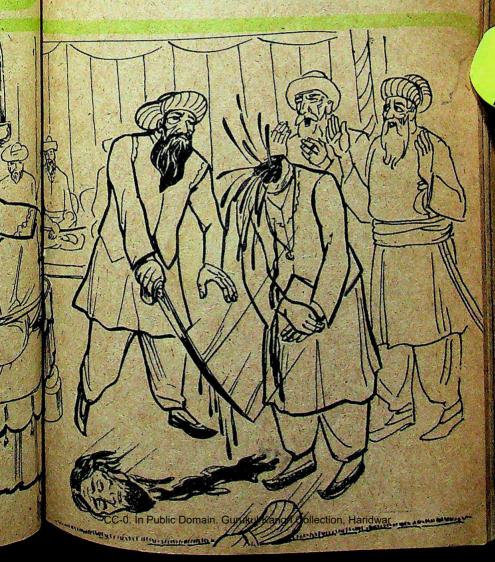
इस घटना के कुछ दिन बाद दो घुड़सवार शाम के धुंधलके में शाही महल के सामने आ कर रुके. उन के आने की खबर सुलतान को मिल चुकी थी. वह उन के इंतजार में था. वे दोनों आ कर उस के सामने झुक गए. उन में से एक बंगाल का सूबेदार आजम हिमायूं और दूसरा बिहार का सूबेदार मल्लिक आदम था.

उन्होंने कहा, "हम आप को मुबारकबाद देने आए हैं."

"खुश आमदीद! हम इस के लिए आप का शुक्रिया अदा करते हैं," सुलतान ने कालीन से उठ कर दोनों को आलिंगन में ले लिया और उन्हें अपने पास बैठा लिया. थोड़ी देर की इधरउधर की बातचीत के बाद ही वह तीनों बेतकल्लुफ हो गए.

आजम हिमायूं ने कहा, "सुलतान, अगर मेरी बात को गुस्ताखी समझें तो खता मान मुआफ कर दें. मैं ने लोधी खानदान का नमक खाया है, इस का बुरा मैं ख्वाब तक में भी नहीं सोच सकता. अगर इस के बारे में कोई जरा भी बुरा सोचता है तो मेरे तनबदन में आग लग जाती है."

"आप जो कहना चाहते हैं, दिल खोल कर कहें. आप हमारे अब्बा समान हैं. हम आप के खयालों की कद्र करेंगे."

"मुझे आप के अमीरउमरा की हिमाकत पर बहुत गुस्सा है, जो उन्होंने एक सल्तनत में दो सुलतान पैदा कर दिए हैं. आलमपनाह, एक जिस्म में दो रूहें नहीं हो सकतीं, एक म्यान में दो तलवारें नहीं हो सकतीं. इसी तरह से एक सल्तनत में दो सुलतानों के लिए कोई जगह नहीं है."

"परंतु उन्होंने जो किया है वह सल्तनत और हमारे खानदान के भले के लिए किया है. जलाल खान कोई और नहीं, हमारे सगे भाई हैं." इब्राहीम सावधान हो कर बैठ गया.

"आलमपनाह, आप गलती पर हैं. उन्होंने यह सब जो किया है, अपनी खुदगर्जी के लिए किया है. दो हिस्सों में सल्तनत को बांट कर आप को कमजोर कर दिया गया है, ताकि आप सदा उन के इशारों पर नाचते रहें. हम जलाल खान के दुश्मन नहीं हैं. वह आप के भाई हैं, इस नाते उन्हें इज्जत मिलनी चाहिए, पर उन्हें भी सुलतान बना कर आप का दुश्मन बना दिया गया है. उन्हें ले कर आप को कभी भी धमकाया जा सकता है."

सुलतान इब्राहीम चौकन्ना हो गया. यही बात उसे चुभती रही थी. पर अपने मन के भाव वह किसी तरह प्रकट नहीं कर पाया था. पहले दिन से ही वह महसूस कर रहा था कि वह अमीरउमरा के हाथ में कठपुतली मात्र था. असली ताकत उन के हाथ में थी. उन की हिदायत को टालने का हौसला वह कभी नहीं कर पाया था. आजम हिमायूं के साथ उस के सदा ही अच्छे संबंध रहे थे. उस की ईमानदारी पर उसे कोई शक नहीं था.

"खुदा कसम, आप सच कहते हैं. हमारे हाथ काट दिए गए हैं. पर हम मजबूर हो चुके हैं. जलाल खान अपने इलाके में अपने नाम का खुतबा पढ़वा चुका है. अपने नाम के सिक्के भी वह ढलवा चुका है. हम ने तो यहां तक सुना है कि जौनपुर की रिआया उस से बहुत खुश है."

सल्तनत को बचाने के लिए हिमायूं और मल्लिक आदम ने सुलतान को बारबार नेक सलाह दी, लेकिन सुलतान ने उन्हें क्यों कैद कर लिया?

"आप ने गलत सुना है," इस बार मल्लिक आदम बोला, "मैं जौनपुर से हो कर आ रहा हूं. उस के पैर अभी पूरी मजबूती से नहीं जम पाए हैं. वह अपने अमीरउमरा और दरबारियों को खुश करने के लिए खिल्लतें बांट रहा है. उन पर अपना खजाना लुटा रहा है. मैं ने टोह लेने की कोशिश भी की. उस के सिपाही उस से खुश नहीं हैं. उन में से ज्यादातर आप की खिदमत में हाजिर होने को उतावले हैं."

"परंतु हम ने यहां पर अमीरउमरा के सामने वादा किया था."

"सुलतान मौके के मुताबिक अपना वादा बदल सकता है. सवाल गलत या ठीक का नहीं, रियासत का है. आप यदि सल्तनत को मजबूत देखना चाहते हैं तो आप को अमीरउमरा की ताकत को बे-रहमी से कुचलना होगा. सिर्फ इसी तरह से ही आप सच्चे मायनों में सुलतान बन सकते हैं. मैं हैबत खान को भी बंगाल से साथ लाया हूं."

अगले दिन सुलतान को क्या कदम उठाने थे, उस पर वह सलाहमशविरा करने लगे. आजम हिमायूं के दिल में खटका सा हुआ. सुलतान इब्राहीम मानो उन के आने के ही इंतजार में थे. अमीर-उमरा की ताकत को कुचलने का मसौदा उन्होंने पहले ही तय कर रखा था. वह उन्हें सिर्फ शतरंज के मोहरे की तरह ही इस्तेमाल कर रहे थे. परंतु उस ने यह खयाल मन से निकाल दिया. उस ने इस सल्तनत का नमक खाया था और इस के लिए उसे जो भी कुरबानी देनी पड़े, उस के लिए वह तैयार था. रात आधी बीत चुकी थी जब उन्होंने सुलतान से विदा ली. इब्राहीम के होंठों पर कुटिल मुसकान तैर गई.

सुलतान इब्राहीम लोधी का दरबार लगा था. अमीरउमरा शान-शौकत के साथ अपनेअपने तख्तों पर विराजमान थे. उन के दाएंबाएं आजम हिमायूं और मल्लिक आदम थे. प्रवेश-द्वार के पास मुस्तैदी से हरेक पर निगाह रखे खड़ा था हैबत खान. वह अपने जमाने का मशहूर चालबाज और उस के साथ ही साथ जांबाज सिपाही था. उस के कई साथी इधरउधर बिखरे हुए थे. सुलतान मुसकरा कर उठ खड़े हुए. उन के खड़े होते ही दरबार में सन्नाटा छा गया.

"हम आज एक नया फरमान जारी करना चाहते हैं. आज के बाद किसी को भी हमारे दरबार में बैठने की इजाजत नहीं होगी. सभी अपने हाथ पीठ पर बांध कर एक कतार में खड़े हुआ करेंगे. हम से बात करने से पहले घुटनों के बल झुक कर हम से इजाजत लेनी होगी." उन्होंने बुलंद आवाज में कहा.

"यह नामुमकिन है," फतह खान गुस्से से चिल्लाया.

"फतह खान, तुम गलत कह रहे हो. हम इसे मुमकिन बनाना जानते हैं."

अचानक ही हैबत खान की तलवार लहराई और फतह खान का सिर लुढ़क कर सुलतान के कदमों में जा गिरा. एक-दो और अमीरों ने तलवारें निकालनी चाहीं, पर उन्हें भी काबू में कर लिया गया. सभी के सामने उन की गरदनें उड़ा दी गईं. बाकी सभी अमीरउमरा भयभीत हो उठ खड़े हुए. फराशों ने उन के तख्त वहां से हटा दिए. एकाएक चारों ओर सन्नाटा छा गया.

सुलतान की आवाज फिर गूंजी. "इस सल्तनत के मालिक सिर्फ हम हैं. आप सब यह कभी नहीं भूलेंगे कि आप सिर्फ इस के खिदमतगार हैं. हमारा एक सांस आप को बना सकता है या

बिगाड़ सकता है. कल से आप में से जिसे हम चाहेंगे सिर्फ वही हथियार दरबार में ला सकता है. अगर अभी भी किसी को हमारे हुक्म पर एतराज हो तो वह कह सकता है.''

यह कह कर सुलतान क्रूरता से हंसने लगा. फतह खान का अंजाम देख कर सभी के होश गुम हो चुके थे. वे सारे घुटनों के बल झुक गए, ''जो हुक्म आलीजाह.''

सालों से बनी अमीरउमरा की ताकत को सुलतान के एक ही वार ने झटके से तोड़ दिया. सभी उस के सामने नतमस्तक हो थर्रथर्र कांप रहे थे. दरबार फिर बरखास्त कर दिया गया.

शाम को आजम हिमायूं और मल्लिक आदम शाहीमहल में हाजिर हुए. इस बार उन के साथ हैबत खान भी था. लगता था, सुलतान के भीतर ज्वालामुखी धधक रहा था, इस बात से वह एकाएक वाकिफ हो गए. वे जब सुलतान के सामने झुके तो वह इस बार मुसकराया नहीं, सिर्फ सिर को झटका दे उस ने उन्हें बैठने का इशारा कर दिया.

''आलमपनाह, हम आप को मुबारकबाद देते हैं. मैं ने आप से कहा था कि खुदगर्ज आदमी कभी बहादुर नहीं होता. आप के सभी अमीरउमरा में खलबली मच गई है, सभी आप को हर तरह से खुश करना चाहते हैं.''

''हम जानते हैं,'' सुलतान का स्वर संयत था, ''हैबत खान, तुम हमारा पैगाम ले कर जौनपुर जलाल खान के पास जाओ. उसे कहना कि हम एक बहुत जरूरी मसले पर उस से मशविरा करना चाहते हैं. वह जितनी जल्दी हो सके, हम से आ कर आगरा में मिले. हम जानते हैं, जो कुछ आज दरबार में हुआ है, उस की खबर भी तुम्हारे जाने से पहले जौनपुर पहुंच जाएगी. लेकिन हमें तुम्हारी अक्लमंदी पर भरोसा है. तुम्हें उसे यकीन दिलाना होगा कि हम उस के दुश्मन नहीं, खैरख्वाह हैं.''

''जो हुक्म, आलमपनाह.''

''हम तुम्हारी खिदमत को न भूलेंगे.''

''आप हमारे आका हैं,'' हैबत ... उन के सामने झुक गया.

सुलतान ने ठीक अंदाज लगाया ... जो कुछ आगरा में हुआ था, उस का ... चार हैबत खान के पहुंचने से पहले ... पुर पहुंच चुका था. जलाल खान साव... हो चुका था, लेकिन फिर भी वह ... खान के साथ बहुत इज्जत के साथ ... आया. सुलतान इब्राहीम की चिट्ठी ... कर भी उस ने कोई भाव प्रकट ... किया, हालांकि वह समझ चुका था ... आगरा पहुंचते ही उसे गिरफ्तार ... लिया जाएगा.

हैबत खान ने हरेक चालाकी, ला... और धमकी का हथियार चलाया ... जलाल खान उस के जाल में नहीं फं... बोला, ''सुलतान इब्राहीम को हमा... पैगाम देना कि हम उन के बहुत शु... गुजार हैं कि उन्होंने जरूरी मसले ... बातचीत करने के लिए हमें बुलाया है. ... हम अभी सल्तनत के कामों से खुद ... फारिग नहीं कर सकते. मौका मिलते ... हम उन की ख्वाहिश पूरी करेंगे.''

उस ने खिल्लत और कीमती तोह... दे कर हैबत खान को रवाना किया ... लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी. उधर ... सुलतान को इस की सूचना मिली तो ... ने भी अपनी फौज को तैयार होने ...

हुक्म दे दिया.

आजम हिमायूं और मल्लिक आदम के नेतृत्व में शाही फौज ने कूच किया. उधर जलाल खान भी अपनी फौज के साथ कालपी पहुंचा. शहर के बाहर खेमे लग गए. एक रात एक हरकारा आजम हिमायूं के खेमे में पहुंचा और उसे सुलतान जलाल खान की चिट्ठी दी :

"आप मेरे अब्बाजान की तरह हैं. मैं इस नाते तहेदिल से आप की इज्जत करता हूं. आप जानते हैं कि सुलतान इब्राहीम ने अपनी मरजी से अमीरउमरा की सलाह पर सल्तनत का एक हिस्सा मुझे दिया है. मैं ने उस समझौते को कभी नहीं तोड़ा, नीयत बद पहले सुलतान की हुई. यहां तक कि अम्मीजान के पेट से मिले रिश्ते को भी उस ने अपनी बदनीयती की छुरी से काट दिया है. इस वक्त शाही फौज की कमान आप के हाथ में है. मैं आप से मदद की उम्मीद करता हूं."

आजम हिमायूं ने चिट्ठी पढ़ कर मल्लिक आदम को दे दी. उन दोनों की आंखें मिलीं. वे सोच में डूब गए. वे यह बखूबी जानते थे कि इब्राहीम का इरादा जलाल खान को गद्दी से हटाने के साथ-साथ उसे कत्ल करना भी था. अपने मन ही मन वे यह हरगिज नहीं चाहते थे. उन की इच्छा थी कि सुलतान इब्राहीम जलाल खान को एक जागीर दे दें और उसे कत्ल न करें. चुप्पी आजम हिमायूं ने तोड़ी. उस ने कहा, "यदि सुलतान जलाल खान सल्तनत छोड़ कर कालपी का जागीरदार होना स्वीकार कर ले और सुलतान इब्राहीम के अधीन होना मान ले तो फिजूल के खूनखराबे से बचा जा सकता है."

"आप बिलकुल बजा फरमाते हैं," मल्लिक आदम ने जवाब दिया, "मैं जलाल खान को बखूबी जानता हूं. वह अपना वादा नहीं तोड़ेगा. परंतु सुलतान इब्राहीम ने अगर इस बात से इनकार कर दिया तब..."

"मेरा खयाल ऐसा नहीं है. वह जानते हैं कि हम ने आज तक जो किया है वह उन के खानदान और उन की सल्तनत के भले के लिए ही. वह हमारी बात को नहीं टालेंगे, ऐसा मुझे यकीन है."

उन्होंने हरकारे के हाथ जवाब भिजवा दिया. उन दोनों को पता नहीं चला कि हैबत खान जो कान लगा उन के खेमे के बाहर खड़ा उन की बात सुन रहा था, कुछ और ही योजना बना रहा था. हैबत खान ने भी अपना एक हरकारा सुलतान इब्राहीम के पास आगरा भेज दिया.

जब हरकारा पत्र ले कर जलाल खान के खेमे में पहुंचा तो वह अपने अमीरउमरा के साथ मंत्रणा में व्यस्त था. उस ने पत्र पढ़ा और सोच में डूब गया. एकाएक उस ने निश्चय कर लिया. उस

हुस्न अगर बेनकाब हो जाता...

किसी का हुस्न अगर बेनकाब हो जाता,
निजामे आलमे हस्ती खराब हो जाता.
—जलील मानकपुरी

✦

जो रूठ जाए तो फ़ौरन न हो मनाने की,
खुशी तो उन की खुशी है कि जिस से सब खुश हैं.
—उम्मीद अमेठवी

ने वह पत्र सब के सामने पढ़ दिया, "अगर आप सचमुच ही मुझे अब्बाजान की तरह मानते हैं तो मेरी सलाह मान लें. आप सल्तनत का हक छोड़ मेरे साथ चलें. आप की हिफाजत का जिम्मा मैं लेता हूं. मैं आप दोनों भाइयों में समझौता करवा दूंगा. मैं यकीन के साथ कहता हूं कि कालपी की जागीर मैं आप को दिलवा दूंगा. यही एक तरीका है जिस से फिजूल के खूनखराबे को रोक सल्तनत को कमजोर होने से बचाया जा सकता है."

अमीरउमरा पत्र को सुनते ही भड़क उठे, पर जलाल खान शांत बना रहा. लगता था आजम हिमायूं की बात उस के मन ने स्वीकार कर ली थी. उस के एक सरदार ने मानो सभी के मन की बात कह दी, "आप खुद को कमजोर क्यों महसूस करते हैं, हम ने आप का नमक खाया है. आप मजबूत बने रहें और अपने वफादार नौकरों को खिदमत का मौका दें. सुलतान इब्राहीम बुरे स्वभाव का है. खुदा आप की मदद करेगा."

अगली सुबह जलाल खान आजम हिमायूं के खेमे में आया तो वह अकेला था.

"मैं अपनी जिंदगी की नौका आप के हवाले कर रहा हूं."

"इंशा अल्लाह, मैं अपने नेक इरादे में कामयाब रहूंगा, आप भरोसा रखें."

सुलतान इब्राहीम के दरबार को खास ढंग से सजाया गया था. अमीरउमरा पीठ पर हाथ बांधे, जमीन पर निगाहें टिकाए, सिर झुकाए खड़े थे. आजम हिमायूं और मल्लिक आदम जब जलाल खान के साथ वहां आए तो एकदम से सन्नाटा छा गया. वे तीनों घुटनों के बल झुक गए.

"उठो, आजम हिमायूं, तुम जो कहना चाहते हो, कहो."

आजम हिमायूं ने विश्वास के साथ अपना मकसद कह सुनाया.

उस की बात पूरी होने से पहले ही इब्राहीम क्रूरता से हंस दिया. बोला, "आजम हिमायूं, हम ने तुम से ही यह सीखा है कि सुलतान को खुद को छोड़ कर किसी और पर भरोसा नहीं करना चाहिए."

"मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि इस इंतजाम में बदनीयती नहीं है."

"हम किसी के यकीन पर भरोसा नहीं करते. हम अपने फैसले खुद अपने दिलोदिमाग से करना जानते हैं."

"परंतु मैं वादा कर चुका हूं."

"तुम अपनी हद से बढ़ गए. हमारी मरजी के बिना तुम्हें यह वादा करने का कोई हक नहीं था."

"परंतु जलाल खान आप के भाई हैं."

"हम भी इस सच्चाई से बखूबी वाकिफ हैं. इसी नाते यह हमारी सल्तनत के लिए सब से बड़ा खतरा है."

सुलतान का इशारा पाते ही हैबत खान आगे बढ़ा. उस के साथियों ने आजम हिमायूं और मल्लिक आदम के हाथपैरों में बेड़ियां पहना दीं. हैबत खान की तलवार के एक ही वार से जलाल खान का शरीर दो हिस्सों में बंट गया.

"आजम हिमायूं और मल्लिक आदम, कभी आप के दिल में यह बात आए कि आप ने हम पर कोई एहसान किया और हम उसे भूल गए, और हम से बदला लेने का आप कोई मंसूबा बनाएं, उस से पहले ही हम आप को उमर कैद की सजा देते हैं. आप ने सदा इस सल्तनत की खिदमत की है, इसलिए हम आप की जान नहीं लेना चाहते, लेकिन हम आप को गद्दारी का भी मौका नहीं देना चाहते. आप दोनों के हश्र को देख कर बाकी सब को भी मालूम हो जाएगा कि अपनी हद से बढ़ना अच्छा नहीं होता."

आजम हिमायूं की मुट्ठियां भिंच गईं. उस ने कुछ कहना चाहा, पर शब्द उस के गले में अटक गए. वह फटी निगाहों से सुलतान की तरफ सिर्फ देखता रह गया. सुलतान की जहरीली हंसी उस के आसपास तैरती चली गई.

गृहदाह

कहानी • इंद्रपाल शर्मा

"भाभी, तुम्हारी कोई बहन है?" खेत में कपास चुनते हुए जगजीतकौर ने प्रतापकौर से पूछा.

"हां, एक है."

"कितनी बड़ी?"

"तेरे ही जितनी होगी. अब तो उस के लिए वर की खोज में हूं. मां का भी पत्र आया है."

"तो ले आओ न मेरे भैया के लिए."

"कौन भैया?"

"सोहणू भैया के लिए."

सोहणू का नाम सुनते ही प्रतापकौर की बाछें खिल गईं, मानो उस की समस्या हल हो गई हो. उस ने प्रश्नसूचक अंदाज से पूछा, "अच्छा?"

जगजीतकौर ने गंभीरता से कहा, "हां."

"सोहणू आजकल कहां है?"

"वह फौज में है, भाभी. कल ही दो महीने की छुट्टी ले कर आया है. कहता है, अब वह बड़ा अफसर हो गया है. वेतन भी पांच सौ रुपए हो गया है."

जगजीतकौर प्रतापकौर के पति के चाचा की लड़की थी. पांच वर्ष पूर्व जब प्रतापकौर की शादी हुई थी तब दोनों कुटुंब एक साथ रहते थे. पर बाद में भूमि के बंटवारे पर झगड़ा हुआ तो बड़े घर के बीच में दीवार बना कर दो घर बनाए गए. भूमि के बंटवारे पर तो झगड़ा इतना बढ़ा कि कचहरी का मुंह देखना पड़ा और आपस में बोलचाल भी बंद हो गई.

रात को प्रतापकौर कामकाज समाप्त कर अपनी खाट पर लेटी तो विचारों में खो गई. उस की सास ने भी कई बार उस की छोटी बहन से अपने छोटे पुत्र के विवाह का प्रस्ताव रखा था. उस दिन जब उस की मां का पत्र आया, जिस में गुरबचनकौर के लिए वर ढूंढ़ने को कहा था, तो उस की सास ने हंस कर कहा था, "वर तो अपने घर में ही है. खोजने की क्या जरूरत है?" उस समय वह चुप रही थी.

वह अपनी प्यारी बहन को इस घर में नहीं लाना चाहती थी. इस घर का वातावरण उसे अच्छा नहीं लगता था. उस के मातापिता ने इस घर को अच्छा समझ कर ही उसे ब्याहा था, पर अब जानबूझ कर वह कैसे मक्खी निगल सकती थी. वह अपने पति को प्यार

प्रतापकौर ने सोहणू को जीवनसाथी दे दिया, लेकिन उसी दिन सोहणू के हाथों प्रतापकौर का सुहाग क्यों उजड़ गया?

करती थी, पर उस की कई आदतें उसे पसंद नहीं थीं. इस घर के आदमी मदिरा पी कर पत्नी, मां और बहन तक को पीटने लगते और आपस में भी लड़ पड़ते थे. एक बार उस के देवर ने क्रोध में आ कर उस के मुख पर जूता मारा था, पर कोई बोला नहीं था. उस की सास बातबात पर उस के पति को सिखा कर उसे पिटवाया करती थी. अब घर की माली हालत भी अच्छी न थी.

एक ओर था पढ़ालिखा, जवान, सुंदर, कमाऊ लड़का और दूसरी ओर अनपढ़, मूर्ख, मदिरा पीने वाला. अपने देवर को न चुनने के परिणाम को वह भलीभांति जानती थी. उस का पति उसे पीट सकता था, उसे घर से निकाल सकता था. उस की सास सदा के लिए उस का जीवन नरक समान बना सकती थी.

प्रातः जब वह उठी तो उस का मन हलका हो चुका था. वह इस परिणाम पर पहुंची थी कि चाहे उस का गला ही क्यों न काट दिया जाए, वह इस घर में अपनी बहन को बहू बना कर नहीं लाएगी.

उस ने जगजीतकौर से अपनी मां को पत्र लिखवाया, जिस में अपनी सारी परिस्थिति समझाई और अनुरोध किया कि वह किसी प्रकार उसे अपने पास बुलवा ले तो वह सब ठीक कर लेगी.

प्रतापकौर के पति ने झपट कर सोहणू के कंधे पर लाठी मारी और इतने में ही सोहणू की उंगलियों ने बंदूक का घोड़ा दबा दिया.
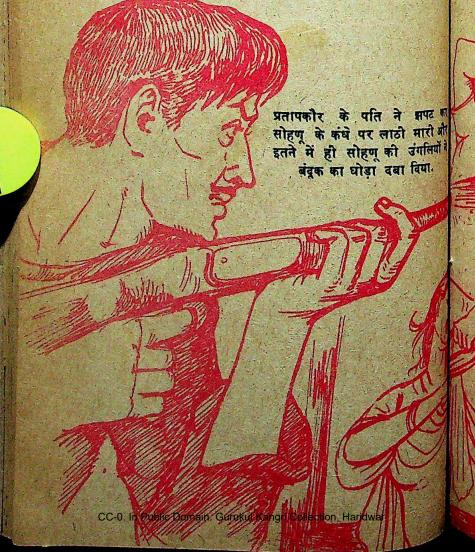
उस की मां ने एक कहार उसे मायके लिवा लाने के लिए भेजा. उस की सास ने कहार को दो दिन ठहरा कर खूब खातिर की. प्रतापकौर और उस के पुत्र के लिए नए कपड़े सिलवाए गए.

विदा होते समय उस की सास ने दोहराया, "गुरबचनकौर को अपने देवर की बहू बना कर अवश्य लाना."

मंगनी की बात गुप्त रखी गई और शादी भी अगली पूर्णिमा की पक्की हो गई. सब को निमंत्रण भेज दिए गए. प्रतापकौर ने अपने पिता से अपने पति को शादी में शामिल होने के लिए पत्र लिखवाया.

बरात आ गई, पर प्रतापकौर का पति न आया. उसे चिंता ने घेर लिया. फिर भी वह अपनेआप को प्रसन्न रखने की चेष्टा करते हुए सब काम करती रही. उस का पति उस पर नाराज था, यह वह जानती थी. पर उसे आशा न थी कि वह उस के पिता की बात भी नहीं सुनेगा. वह जल्दी से जल्दी अपने पति के पास पहुंच कर उस से क्षमा मांगना चाहती थी.
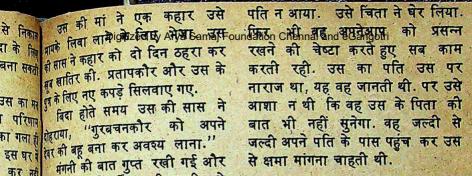
लाख मना करने पर भी वह बरात के साथ अपनी ससुराल आ गई. सारे दिन वह अपनी छोटी बहन के पास बैठी रही. शाम को उसे खाना खिला कर, प्यार से उस के कपोलों को थपथपा कर जब वह बाहर गली में आई तो उस का दिल कांपने लगा. उस के पांव आगे बढ़ने से हिचकिचाने लगे. पर उस ने अपनेआप को संभाल कर पैर आगे बढ़ाए. कांपते हुए हाथों से दरवाजा खोल कर डरतेडरते वह अपने घर में दाखिल हुई.

उस की सास रसोई में खाना बनाने में व्यस्त थी. उस ने डरतेडरते उस के पैर छुए और 'सदा सुहागिन रहो' का आशीर्वाद प्राप्त किया. वह आंगन में पड़ी खाट पर बैठ गई और अपने पुत्र को दूध पिलाने लगी.

बाहर से किसी के पैरों की आहट सुनाई दी. उस ने द्वार पर दृष्टि डाली. उस का पति खेत से चारा ले कर आया था. वह उठ कर उस की मदद करने के लिए उस के पास गई. उस ने उस के माथे का पसीना पोंछने के लिए अपने दुपट्टे का छोर आगे बढ़ाया, पर पति ने हाथ झटक दिया. उस ने अपनी मां से पानी मांगा. प्रतापकौर पानी का गिलास ले कर उस के पास गई. उस ने जोर से हाथ मार कर गिलास नीचे गिरा दिया.

"तेरी हड्डीपसली तोड़ दूंगा!" प्रतापकौर का पति चिल्लाते हुए अंदर से एक लाठी ले आया और उस पर भूखे शेर की तरह झपटा.

प्रतापकौर भाग कर घर से बाहर

निकल गई. वह उस के पीछे भागा.

प्रतापकौर सोहणू के द्वार पर पहुंच कर जोर से चिल्लाई, "सोहणू, दरवाजा खोलो!"

आवाज सुन कर सोहणू, जो अपनी दुलहन के पास बैठा था, चौंका. उस ने लपक कर दरवाजा खोल दिया. प्रतापकौर सहमी हुई झट अंदर चली गई.

"क्यों मारते हो?" सोहणू चिल्लाया.

"तुम कौन होते हो बीच में बोलने वाले?" प्रतापकौर का पति कड़का.

"खबरदार, यदि आगे बढ़े तो!" सोहणू अंदर से बंदूक ले आया.

प्रतापकौर के पति ने झपट कर सोहणू के कंधे पर लाठी मारी और न जाने कब सोहणू की उंगलियों ने बंदूक का घोड़ा दबा दिया. गोली सरसराती हुई प्रतापकौर के पति की छाती चीर कर आगे निकल गई. प्रतापकौर झपट कर अपने पति की लाश से लिपट गई और सोहणू अपनी दुलहन को एकाकी छोड़ कर बिना सुहागरात मनाए न जाने कहां भाग गया.

मुख पृष्ठ पर...

मीनाक्षी गंजू

15 वर्षीया गंजू अजमेर के मेयो कालिज में 10वें स्टैंडर्ड की छात्रा है. प्रतिभाशालिनी मीनाक्षी ने 1961 से ही तैराकी सीखने का अभ्यास शुरू कर दिया था. उस को इस क्षेत्र में पदार्पण करने की प्रेरणा अपने पिता से मिली. अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए उस ने 6 बार राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया.

मीनाक्षी को भारतलंका तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया, किंतु पढ़ाई के कारण वह भाग नहीं ले सकी. तैराकी में स्मिता देसाई और नफीसा अली से भी उस की प्रतियोगिता हो चुकी है.

वह भविष्य में स्विमिंग कोच बनने की आकांक्षा रखती है. तैराकी के अतिरिक्त उस की रुचि टैनिस और बैडमिंटन में भी है.

1970 में मीनाक्षी तैराकी में विशेष प्रशिक्षण के लिए विदेश गई. 1971-72 में उस ने तीनतीन पदक जीते. 1973 में उस ने क्रमशः 5 पदक जीते.

1974 में हुई जूनियर चैंपियनशिप में उस ने 100 मी. फ्री स्टाइल में स्वर्ण पदक, 200 मी. फ्री स्टाइल में रजत पदक, 400 मी. फ्री स्टाइल में रजत पदक, 4×100 मी. व्यक्तिगत प्रतियोगिता में रजत पदक, 200 मी. बैक स्ट्रोक में रजत पदक तथा 100 मी. बैक स्ट्रोक में कांस्य पदक जीते.

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55

● मैं ने विश्वविद्यालय में नयानया प्रवेश लिया था. वरिष्ठ छात्रों द्वारा कनिष्ठ छात्रों की रैगिंग बड़े जोरशोर से की जा रही थी. एक दिन एक वरिष्ठ छात्र ने मुझे भी पकड़ लिया और कहा, "आप सुबह अपने पति को चाय देते समय कैसे जगाती हैं, जरा हमें भी दिखाइए."

मैं ने कहा, "मेरे पति चाय नहीं पीते इसलिए मुझे कभी ऐसा मौका नहीं मिला. हां, अगर आप कर के बता दें कि पति के पास चाय ले कर कैसे जाना चाहिए तो मैं आप की इच्छा पूरी कर सकती हूं."

वह जोश में तो था ही, झट से पास पड़ा एक पत्थर उठाया, उसे प्याले की तरह हाथ में लिया और कमर मटकाते हुए चलने लगा. तभी मेरी सहेली ने आगे आ कर वह 'प्याला' ले लिया और कहा, "थैंक यू, डार्लिंग."

एकाएक जोरदार ठहाका लगा और तब उसे अपने बेवकूफ बनने का होश आया तो झेंप कर वह भाग गया.

—उषा सिंह, लखनऊ

● उन दिनों मैं एम. ए. (प्रथम वर्ष) में पढ़ता था. हमारी कक्षा में दोतीन लड़कियां हर समय स्वेटर बुनती रहती थीं. इस से लड़कों का ध्यान बंट जाता था.

एक दिन मेरे एक सहपाठी को शरारत सूझी. कहीं से वह थोड़ा सा सन ले आया. हिंदी के प्राध्यापक महोदय ने हाजिरी लेने के बाद जैसे ही पढ़ाना शुरू किया, उस ने सन से रस्सी बनानी शुरू कर दी. नजर पड़ते ही प्राध्यापक महोदय ने पूछा, "आप यह क्या कर रहे हैं? आखिर यह क्लास है."

"सर, अपने बछड़े को बांधने के लिए रस्सी बुन रहा था."

"आप को क्लास में मजाक करते हुए शर्म नहीं आती?" प्राध्यापक महोदय ने नाराज होते हुए कहा.

"नाराज न हों, सर. मैं ने तो आज यह पहली बार किया है, हमारी क्लास की छात्राएं तो प्रतिदिन क्लास में रस्सी सी बुनती रहती हैं." सहपाठी ने अत्यंत नम्रता, से कहा. और उस के बाद उन लड़कियों ने कभी क्लास में स्वेटर नहीं बुना.

—विपिनचंद्र शर्मा, बिजनौर

● बंबई में पिछले 2 सितंबर को स्नातकोत्तर छात्र संघ के अध्यक्ष ने उपकुलपति के कार्यालय के सामने अपने बाएं हाथ की कलाई को काट दिया.

विश्वविद्यालय प्रशासन की भ्रष्टता के बारे में शिकायत करने हेतु वह उपकुलपति से मिलना चाहता था और उस ने साक्षात्कार की अनुमति के लिए 15 मिनट का समय मांगा. अनुमति नहीं मिली तो उस ने एक ब्लेड से कलाई की धमनियों को काट दिया. उसे अस्पताल में भरती किया गया.

वह 50 छात्रों के साथ गत वर्ष की एम. ए. परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएं फिर से जंचवाने की मांग को ले कर गया था.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक: राकेशकुमार जैन, मह्) ●

एक उद्घाटन भाषण
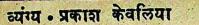
इंजीनियरिंग, डाक्टरी, साइंटिस्टबाजी, होम साइंस—ये हैं विज्ञा

भाइयो, भारत एक विज्ञानप्रिय देश है. हम प्राचीन काल से विज्ञानप्रिय रहे हैं. तभी तो रामचंद्रजी लंका से अयोध्या लौटते हुए हेलीकाप्टर में बिराज कर आए और अर्जुन ने बाण से हाइड्रोजन बम बरसा डाला.

लेकिन रामायण युग और महाभारत युग के बाद अचानक हमारे वैज्ञानि गायब हो गए और हम हजारों सा तक बैलगाड़ियों में सवारी करते रहे सरकंडे की कलम से पेड़ों की छाल पुस्तकें लिखते रहे.

इसी बीच हमारी अमूल्य विज्ञान किताबें अंगरेज और जरमन चुरा कर

विज्ञान गोष्ठी पर

के चार वर्गीकरण. अब देखिए आप किस वर्ग का लाभ उठा रहे हैं.

गए और वैज्ञानिक बन बैठे, जब कि हम आपस में शास्त्रार्थ ही करते रहे और लड़ते रहे.

भाइयो, हमें इस से निराश नहीं होना चाहिए. किसी भी देश के लिए जितना जरूरी विज्ञान है उतनी ही जरूरी लड़ाई भी है. लड़ाई लड़ते रहने से देश में योद्धा पैदा होते रहते हैं. वरना खाली वैज्ञानिक किस काम आ सकते हैं?

हमें चाहिए कि हम अन्य काम करने के बाद दिन में एक बार जरूर लड़ें. यह लड़ाई चाहे पड़ोसी से हो या पत्नी से. वैसे राष्ट्रीय स्तर पर हम कई तरह से लड़ रहे हैं—गुटबंदी के स्तर पर या
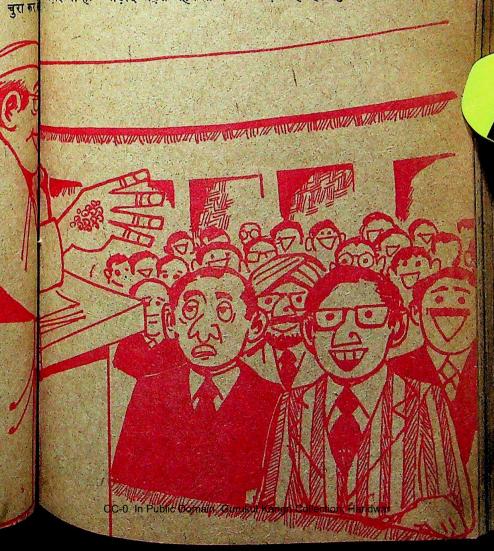
क्षेत्रीयता के स्तर पर. अतः देश को इस ओर से निराश नहीं होना चाहिए.

अब जहां तक विज्ञान का प्रश्न है उस के लिए हमारे देश की जमीन बड़ी उपजाऊ है. तभी तो अचानक हमारे देश में हजारों इंजीनियर बेकार हो गए हैं. यह देश के लिए शुभ लक्षण है. गंवार लोग बेकार बैठे रहें, इस से तो अच्छा है कि पढ़ेलिखे बेकार बैठे रहें. इस से विदेशों में हमारी शान बढ़ती है.

अब मैं आप सब बैठे हुए वैज्ञानिक बंधुओं को बता दूं कि विज्ञान कई प्रकार के होते हैं. लेकिन इन में से चार प्रमुख हैं : एक इंजीनियरिंग, दूसरा डाक्टरी, तीसरा साइंटिस्टबाजी और चौथा विज्ञान होता है होम साइंस.

भाइयो, आप को यह जान कर खुशी होगी कि मेरा एक बेटा इंजीनियर है. इंजीनियरिंग एक अच्छा विज्ञान होता है. इस में इंजीनियर या तो बेकार रहता है या लखपति हो जाता है. यानी इंजीनियरिंग का उपाधि पत्र लाटरी का टिकट होता है. भगवान की कृपा से मेरे बेटे की लाटरी काफी अरसा हुआ खुल गई है अर्थात वह एक सरकारी नौकरी में लग गया है.

एक इंजीनियर बड़ेबड़े वैज्ञानिक चमत्कार करता है. जैसे मेरे बेटे ने एक बांध बनाने में सीमेंट की जगह शुद्ध मिट्टी का उपयोग किया और बांध वास्तव में बन कर तैयार हो गया. लेकिन बरसात के मौसम में बाढ़ आने से बांध टूट कर रह गया और कई गांव डूब गए. इस से कई फायदे हुए. एक तो तुरंत 'अकाल रहित फार्म' चालू हो गया, जिस से बेचारे कई गरीब इंजीनियर, ओवरसियर और मेरे जैसे समाज सेवी कुछ धनलाभ कर सकें. दूसरे, उस बांध को दोबारा बनाने के लिए उतने ही लोगों को फिर काम मिल गया. इस तरह गरीबी और बेरोजगारी की समस्या भी हल हो गई.

भाइयो, मेरे बेटे ने और भी चमत्कार कर दिखाए हैं. जैसे नक्शे में सड़क को दिखा कर एक बेहूदी जगह से बनाने की बजाए एक अच्छे शहर में सुंदर सा बंगला बना लिया. कुआं खोदने के लिए पैसे ले कर बैंक में जमा करा दिए जिस से पैसे की बरबादी रुक गई और ब्याज भी मिलने लगा.

प्रभुकृपा से मेरा दूसरा बेटा डाक्टर है. डाक्टरी भी एक महत्त्वपूर्ण विज्ञान होता है. जिस का बुड्ढा बाप मर रहा हो वह मेरे बेटे की सेवा प्राप्त कर सकता है. उस ने एक बार एक मरीज की दाईं टांग की जगह बाईं टांग का आपरेशन कर डाला और आपरेशन बड़ा सफल रहा. रोगी अगर बुखार से पीड़ित हो तो वह बुखार जैसी साधारण बीमारी से नहीं मरता बल्कि एकदम आधुनिक किसी नई बीमारी से ही मरता है. इस से रोगी को और उस के परिवार वालों को बड़ा सुख मिलता है.

डाक्टरी में एक और भी फायदा होता है. जैसे अस्पताल सरकारी हो तो दवाएं जो दुकान से अस्पताल आती हैं फिर दुकान को लौट जाती है, और फिर दुकान से अस्पताल को लौट आती हैं और फिर...इस तरह से दवाएं चक्कर लगाती रहती हैं और डाक्टर और दुकानदार सुखपूर्वक जीवन काट लेते हैं. रोगी भी दवा के न मिलने से हमेशा के लिए सुख की नींद सो जाता है.

भाइयो, अब मैं आप को तीसरे विज्ञान के बारे में बताऊं

इस विज्ञान को साइंटिस्टबाजी कहते हैं. विदेशों में कई लोग साइंटिस्टबाजी करते हैं, जिस से वहां तरक्की होती है. अपने देश में अब तक पतंगबाजी, बटेरबाजी, सट्टेबाजी, चालबाजी, घूसबाजी और गुटबाजी का ही प्रभुत्व रहा है. लेकिन अब हम ने साइंटिस्टबाजी शुरू कर दी है.

साइंटिस्टबाजी के लिए आदमी में बचपन से ही इस ओर झुकाव होना चाहिए. आप लोगों के सौभाग्य से मेरा झुकाव बचपन से ही साइंटिस्टबाजी की ओर रहा है. मुझे याद है, मैं दीपावली के मौके पर पटाखे जरूर छोड़ता था. विशेषकर बम छोड़ने का मुझे बड़ा शौक था. तभी से मैं ने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि बड़ा हो कर देश के लिए बम बनाऊंगा.

भाइयो, मैं बड़ा हुआ, नेता हुआ और सौभाग्य से देश ने अणुबम भी बना लिया. आखिर मेरी योग्यता काम आई. इस देश की खातिर मैं ने जो कुरबानियां दी हैं, उस के बदले मैं केवल इतना ही चाहता हूं कि बस मरते दम तक यह नेता वाली कुरसी न छीनी जाए.

विज्ञान की चौथी ब्रांच है—होम साइंस. यह साइंस केवल लड़कियों के लिए सुरक्षित है, लेकिन कई बेवकूफ लड़के आगे चल कर जब शादी कर लेते हैं तो होम साइंस में दक्षता हासिल कर लेते हैं.

होम साइंस पढ़ने से कई फायदे हैं. जैसे होम साइंस की किताब ले कर आप हलवा बनाना शुरू करें तो अंत में वह कढ़ी की शक्ल अख्तियार कर लेगा. इस से खाने वाला विस्मय से उसे देख कर ही पेट भर लेगा. जिन की पत्नियां होम साइंटिस्ट हैं वे खाना प्रायः होटल में ही खाते हैं. जिस से होटल उद्योग फलता-फूलता है. इस के अलावा इस तरह के पति घर का खर्च बढ़ जाने से अधिक कमाने लगाते हैं और अधिक कमाने के लिए अधिक परिश्रम करते हैं. अधिक परिश्रम करने से हाजमा ठीक रहता है.

भाइयो, आप में से कुछ युवक दामाद बनने वाले हैं. उन से मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी शादी किसी होम साइंटिस्ट लड़की से ही करें, जिस से आप स्वस्थ रहें एवं लंबी उमर प्राप्त करें.

इन चार प्रमुख विज्ञानों के अलावा कुछ और तरह के विज्ञान भी होते हैं. इन में से एक विज्ञान वह है जिसे कुछ लोग पढ़ कर स्कूलों, कालिजों में मास्टर हो जाते हैं. इस तरह विज्ञान का दुरुपयोग करने वालों को अपने देश में मूर्ख कहा जाता है. आप सब से निवेदन है कि आप अपनी संतानों को यदि विज्ञान पढ़ाएं तो बेशक पढ़ाएं मगर मूर्ख मास्टर न बनाएं. इस से सारे परिवार को बड़ी आर्थिक हानि होती है.

इन दिनों हमारे देश में एक और विज्ञान बड़ा फलफूल रहा है. वह है व्यापार विज्ञान. हमारे देश के व्यापारी

आग को पिघला लिया...

दो घड़ी को दे दे कोई अपनी आंखों की जो नींद,
पांव फैला दूं गली में तेरी सोने के लिए.
मिट भी सकती थी कहीं बेरोए छाती की जलन,
आग को पिघला लिया फाहा भिगोने के लिए.

—आरजू लखनवी

बड़े उच्च वैज्ञानिक हैं. वे वैज्ञानिक पद्धति से घोड़े की लीद को 'धनिए में, लकड़ी के बुरादे को पिसी मिर्च में एवं पपीते के बीज को काली मिर्च में परिवर्तित कर देते हैं.

इस के अतिरिक्त हमारा वैज्ञानिक मस्तिष्क वाला व्यापारी वस्तुओं को सफाई से बाजार से गायब कर देता है. सारा देश ढूंढ़ता रहता है कि गेहूं जो पैदा हुआ वह आखिर कहां गया. लेकिन लालटेन ले कर ढूंढ़ने से भी कुछ नहीं मिलता. मुझे अपने देश के व्यापारियों के वैज्ञानिक मस्तिष्क पर गर्व महसूस हो रहा है.

धन्य हैं वे लोग जिन्हों ने लाखों टन अनाज ऐसे गायब कर दिया जैसे गधे के सिर से सींग. धन्य है हमारी भारत भूमि!

अस्तु, आज आप सब इस विज्ञान गोष्ठी में एकत्रित होने के लिए देश के कोनेकोने से पधारे हैं. यह विज्ञान का ही चमत्कार है कि लोग हजारों मील की दूरी से आ सके हैं. मुझे मालूम है, आप सब लोग रायल क्लास में यात्रा कर के आए हैं. लेकिन यात्रा भत्ता प्रथम श्रेणी का या एरोप्लेन का ही लेंगे.

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप लोगों के यात्रा भत्ते बड़े तगड़े बनें. मेरा आप लोगों को सुझाव है कि यहां से आप बढ़िया बासमती चावल की एक एक बोरी भरवा कर जरूर ले जाएं. यहां पर इन का रेट सिर्फ दो रुपए किलो है. आप इस को अपने इलाके में ब्लैक कर के अच्छा पैसा कमा सकते हैं.

अंत में मैं सभी वैज्ञानिक बंधुओं से आशा करता हूं कि वे इस शहर में तफरीह करने के बाद, डट कर खाना खाने के बाद और कस के नींद निकाल लेने के बाद देश की वैज्ञानिक उन्नति के लिए कुछ न कुछ विचार जरूर प्रकट कर जाएं, ताकि इस गोष्ठी के आयोजकों को दिखाने के लिए कुछ न कुछ कूड़ा अवश्य मिल जाए.

अब इस विज्ञान गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मैं अपनी बत्तीसी को जेब से निकालता हूं.

(तालियों के बीच नेता का बत्तीसी के साथ फोटो)

प्रौढ़ कुमारियां

आधुनिकता के बहाव में बह कर युवतियां ऐसा कदम क्यों उठा लेती हैं कि उन्हें जिंदगी भर अविवाहित रहना पड़ता है...?

लेख • बापू डाक्टर

पश्चिमी देशों में अकेली रहने वाली, अविवाहित महिलाएं चर्चा का विषय नहीं हैं. वहां काफी बड़ी संख्या में इसे स्वतंत्र जीवन की इच्छा से या जीवन का एक तरीका समझ कर स्वेच्छा से अपनाया गया है, पर हमारे देश में स्थिति उस से भिन्न है.

भारत में कोई लड़की विवाह की इच्छा रखती हो या नहीं, विवाह उस के लिए एक अनिवार्यता है. एक परंपरा ने, शास्त्रों के आदेश ने, इसे अनिवार्य बना दिया है. पुरुष यहां आसानी से जीवन काट सकता है, पर स्त्री नहीं. लेकिन इधर शैक्षणिक तथा सामाजिक जागृति के प्रभाव से के कारण और उद्योगीकरण के प्रभाव से स्थिति बदल गई है. अनेक कारणों से यहां भी अब अविवाहित स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी है. यह अलग बात है कि यह अभी स्वेच्छा से कम और मज बूरियों से ज्यादा है.

इस की शुरुआत हुई स्वतंत्रता संग्राम से. गांधीजी के आह्वान पर जि

युवतियों ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया, उन में से अधिकांश ने अविवाहित रह कर देशसेवा का व्रत लिया था. कुछ युवतियां इसलिए भी अविवाहित रह गईं कि उन के मातापिता या केवल पिता या माता के जेल जाने से घर की स्थिति बिगड़ गई. आर्थिक अभाव से व कोई देखभाल करने वाला न रहने से उन की समय पर शादी नहीं हो पाई और बाद में वे अविवाहित रह गईं. फिर आजादी के बाद तो अनेक कारणों से प्रौढ़ कुमारियों की संख्या बढ़ती गई. कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो सकेगी.

कुमारी 'क' के एक विधुर अधिकारी के साथ 'सभी तरह' के संबंध थे लेकिन वह विवाह की बात वर्षों तक टालती रही. उस के मातापिता व छोटे भाईबहन उस पर आश्रित थे. एक बार उस के प्रेमी ने उसे कई तरह से आश्वस्त किया कि वह उस के परिवार की शेष जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार है, लेकिन फिर भी वह विवाह के लिए राजी नहीं हुई. उस ने अपनी सहेली को बताया कि चाहे वह कितने ही वादे करें लेकिन कोई नहीं कह सकता कि कुछ वर्षों के बाद भी वह उन पर कायम रहेंगे. फिर क्या उस के मातापिता दामाद का एहसान लेने को तैयार होंगे?

आर्थिक विवशता

आर्थिक विवशता का ही एक दूसरा उदाहरण है कुमारी 'ख'. लड़की पर आश्रित होने से उस के मातापिता उस के रिश्ते की बात टालते रहे. जब बहुत देर हो गई और लोगों का उन पर दबाव पड़ने लगा तो उन्होंने उसे ऐसे लड़के दिखाने शुरू कर दिए जिन्हें वह नापसंद कर देती. एक बार एक ऐसा ही लड़का दिखाया गया. आशा के विपरीत उस ने तुरंत 'हां' कर दी. तब घबरा कर उस के मातापिता ने तुरंत राय बदल दी. इस अवसर का लाभ उठा लड़की ने तुरंत अपनी पसंद के युवक को सामने कर दिया. अब मातापिता को मानना ही पड़ा. विवाह हो गया और मातापिता के व्यवहार से चिढ़ कर उस ने आगे से उन की सहायता से हाथ खींच लिया.

एक अन्य मामले में अपनी बूढ़ी मां की खातिर एक लड़की अविवाहित रह गई. एक दूसरे केस में दोनों प्रेमियों को लड़की के तीन छोटे भाईबहनों की पढ़ाईलिखाई और शादी तक प्रतीक्षा करनी पड़ी. शादी के समय लड़की और लड़के की उम्र क्रमश: 33 और 35 वर्ष थी.

अनेक मामलों में महत्वाकांक्षी लड़कियां पहले अधिक से अधिक पढ़ना और फिर नौकरी करना चाहती हैं. उस के बाद उन की ऊंची पसंद का लड़का मिलना कठिन हो जाता है और जब कुछ वर्षों की प्रतीक्षा करने के बाद वे अपनी पसंद कुछ नीची करती हैं, तब तक उन की उम्र इतनी ज्यादा हो चुकी होती है कि कोई सामान्य व अच्छे कैरियर वाला लड़का उन से शादी के लिए तैयार नहीं होता और वे आजीवन कुमारी रह जाती हैं.

अधिक उम्र

उम्र अधिक हो जाने से चुनाव में ही कठिनाई नहीं आती, दांपत्य जीवन में सामंजस्य लाने में भी कठिनाई आती है. प्रौढ़ता की सीमा तक पहुंची शिक्षित युवती अपने विचार और स्वभाव में आसानी से परिवर्तन नहीं ला सकती और झुकने को तैयार नहीं होती जब कि हमारी परंपरा में प्रायः झुकना लड़की को ही होता है. इसलिए एक ओर आजादी छिन जाने के डर से युवतियां विवाह से भागने लगती हैं और दूसरी ओर युवक उन से शादी करने से कतराने लगते हैं.

उन के अविवाहित रह जाने के पीछे लड़की की कुरूपता, उस के मातापिता के पास दहेज का अभाव, लड़की का 'फ्री सेक्स' में विश्वास व लड़की

दोस्ती आदि अन्य कारण हैं.

पहले मातापिता द्वारा [illegible] व रिश्तेदारों के दायरे में विवाह संबंध निश्चित करने के कारण लगभग हर सुंदर व असुंदर लड़की का विवाह हो जाता था और जो जोड़ बंध जाते थे, वे किसी न किसी तरह निभाते ही थे. अब पश्चिमी प्रभाव, तलाक व्यवस्था आदि के कारण कुरूप लड़कियों का या तो विवाह होना कठिन हो गया है या वे असफलता के भय से अथवा अपनी ही हीन-भावना के कारण विवाह करने को तैयार नहीं होतीं. आज के आर्थिक संकट में एक ओर काले पैसे से विवाह में बढ़-चढ़ कर खर्च किया जा रहा है तो दूसरी ओर दहेज न जुटा पाने से अनेक मांबाप अपनी बेटी का विवाह कर पाने में असमर्थ हैं. ऐसे मामलों में साहसी लड़कियां प्रेमविवाह कर के मांबाप को चिंतामुक्त कर देती हैं और भावुक व डरपोक लड़कियां कुमारी रह जाती हैं.

'फ्री सोसाइटी' का सपना

आधुनिकता के प्रवाह में उन्मुक्त समाज (फ्री सोसाइटी) का सपना देखने वाली युवतियों का भी एक वर्ग पैदा हो रहा है, जो विवाह में विश्वास नहीं करता, जो उसे गुलामी के रूप में देखता है और एक पुरुष के साथ बंध कर जिंदगी में 'बोर' नहीं होना चाहता. स्वेच्छा से अविवाहित रह जाने वाला केवल यही छोटा सा वर्ग हमारे सामने आया है. सहज रूप से स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छा रखने वाली असाधारण प्रतिभावान महिलाओं की संख्या इस में नगण्य सी ही है.

इस प्रकार इस बढ़ती हुई अविवाहित युवतियों की संख्या में 80 प्रतिशत आर्थिक तथा अन्य मजबूरियों से और 20 प्रतिशत स्वैच्छिक मानी जा सकती हैं. इस विश्लेषण के बाद एक प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है कि इस बढ़ती हुई संख्या के साथ क्या हमारे यहां अविवाहित महिलाओं के लिए सहज, स्वतंत्र जीवन की

'फ्री सेक्स' में विश्वास रखने वाली अधिकांश लड़कियां अविवाहित रह जाती हैं.

स्थितियां भी विकसित हुई हैं? और तो और, कामकाजी महिलाओं के होस्टल भी गिनेचुने ही हैं. अकेले घर बसा कर रहने वाली प्रौढ़ कुमारियों की समस्याएं अनंत हैं. जब तक इन समस्याओं का समाधान नहीं होगा, हमारे देश में लड़की का विवाह अनिवार्य बना रहेगा और घूम कर फिर छोटी उम्र में विवाह की मांग जोर पकड़ती जाएगी. ●
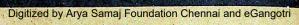
वीरान टापू

डाकू सरदार लाखन और उस के गिरोह का काम था, बच्चों को बहका कर ले जाना और फिर उन की रिहाई के बदले में उन के मातापिता से बड़ीबड़ी रकमें वसूलना.

एक दिन लाखन के आदमी जब नीलू को बहका कर ले गए तो मोहन ने फैसला कर लिया कि वह डाकुओं के अड्डे का पता लगा कर ही रहेगा.

मोहन 'वीरान टापू' पर डाकुओं तक कैसे पहुंचा? कैसे बदमाश रधिया को चकमा दे कर उस ने नीलू को छुड़ाया? मोहन और अलका ने मिल कर डाकुओं के पूरे गिरोह को कैसे गिरफ्तार करवा दिया? यह सब बातें आप इस रोचक व रोमांचक उपन्यास को पूरा पढ़ने के बाद ही जान पाएंगे. मनोरंजन और साहसिक कारनामों से भरपूर सुशील कपूर का यह बाल उपन्यास, बच्चों की साहित्यिक रुचि को बढ़ावा देने के अतिरिक्त उन्हें निडर व साहसी बनने की भी प्रेरणा देगा.

मूल्य: रु.2

सुशील कपूर

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम 12 कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001.

डाक व्यय 40 पैसे सहित पूरी रकम अग्रिम भेजें.

लेख • कृष्णकांत प्रवासी

मध्यम पुरुष वाची

सर्वनाम

कहीं आप 'तू' का प्रयोग कर के दूसरों के कोपभाजन तो नहीं बन रहे?

सूबेदार ने नायक से कहा, "तू क्या करता रहा है? तेरे को पता है कि अभी एक चौथाई भी काम नहीं हुआ? बहुत ढीला है तू! तेरे घर का..."

नायक चुप सुनता रहा. उस के चेहरे से लगा कि उस का मन आहत हो गया है. सूबेदार ने फिर वही वाक्यावली दोहराई तो उस से न रहा गया, "देखिए, साहब, आप मुझे सजा दे सकते हैं लेकिन आइंदा मुझे 'तू' कहेंगे तो ठीक न होगा. मैं आप के घर का नौकर नहीं..."

दोनों की बातों पर दूसरे लोग खुसरफुसर करने लगे. सूबेदार के लिए नायक का उत्तर अप्रत्याशित था, पर नायक का विचलित होना भी अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता.

ऐसे एक नहीं, अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं. अनुभव के बावजूद लोग सतर्क नहीं होते. हम अपने व्यक्तित्व और दूसरों से व्यवहार के प्रति कितने लापरवाह रहते हैं!

क्षेत्र

किन्हींकिन्हीं क्षेत्रों में 'तू' कहने का रिवाज है, जैसे ब्रज, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि में. इन क्षेत्रों के निवासियों को अन्य क्षेत्रों के लोगों से बात करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए. उत्तर प्रदेश में 'तू' शब्द बुरा माना जाता है. लोग इस पर आपत्ति करते हैं. क्या वे हीन अथवा नीच हैं जो उन्हें 'तू' कहा जाता है?

लड़ाईझगड़े का पर्यायवाची 'तूतू मैंमैं' मुहावरा तो प्रसिद्ध ही है.

अनौपचारिक और प्रगाढ़ संबंधों में जहां यह शब्द अमृत के समान है, वहां औपचारिकता और दुनियादारी में यह विषतुल्य और विस्फोटक है. एक मित्र कह रहा था कि जब तक वह अपनी पत्नी से 'तू' नहीं कहला लेता, उसे चैन नहीं पड़ता. यों वह सामान्यतः उसे 'तुम' कहती है. परंतु उस से 'आप' कहलाना तो उसे कतई पसंद नहीं. फिल्मों में प्रेम होने पर नायक नायिका से कहता है, "मुझे 'आप' नहीं, 'तुम' कहो." मातापिता, गुरु इत्यादि के मुख से 'तू' सुन कर सुख मिलता है. मनुष्य ईश्वर से आत्मीय भावनावश कहता है, "भगवन, तू बड़ा दयालु है!"

लेकिन संसार में जीवन अधिकांश रूप से औपचारिक है. एक कामकाजी आदमी की प्रेमिका की बांहों से अधिक

समय नौकरीचाकरी और व्यवसाय में बिताना होता है.

समाज की वर्गीय ऊंचनीचता, जोर-कमजोर रिश्तों, एहसानों व दबावों ने लोगों को इस शब्द के प्रति असहिष्णु बना दिया है. गांव का ठाकुर या ब्राह्मण हरिजन भाई को 'तू' कहता है.

शिष्टाचार

औपचारिकता और शिष्टाचार का अन्योन्याश्रय संबंध है. यह सार्वभौमिक सिद्धांत है कि हम वही पाते हैं, जो देते हैं. एक कप्तान साहब हैं. वह छोटे से बड़े हर कर्मचारी के लिए 'आप' या हद से हद 'तुम' का प्रयोग करते हैं. उन्हें अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त है.

इस शब्द की प्रयोगजन्य कटुता से बचने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :

जब तक यह निश्चय न कर लें कि संबंधित व्यक्ति 'तू' शब्द से प्रसन्न होगा, इस का प्रयोग न करें.

'तू' से अधिक 'तुम' और 'तुम' से अधिक 'आप' औपचारिक है और उसी मात्रा में शिष्टाचारयुक्त भी. अपरिचित के लिए 'आप' सदा उचित है.

'तू' का प्रयोग किसी को नीच, उपकृत या गयाबीता मान कर कभी न करें. प्रेम की दशा में ही यह प्रयोग संबंधित व्यक्ति को आह्लादित करता है.

इस का प्रयोग करने से रोब नहीं बढ़ता, न मान्यता मिलती है.

इस की अवांछनीय आदत को निरंतर आत्मनिरीक्षण, संकल्प और अभ्यास द्वारा दूर कर लें.

प्रिय सत्य बोलने वाले बनें. आप भी तो हर किसी से 'तू' कहलाना पसंद नहीं करते. ∎
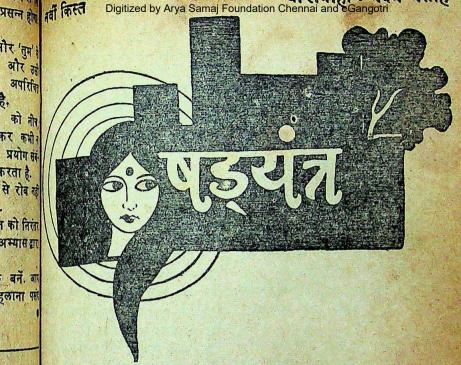
उषा राय बड़ी बेचैनी से संदूक में किसी महत्त्वपूर्ण वस्तु की तलाश में व्यस्त थी, तभी चित्रा वहां पहुंच गई, जिसे देख कर उषा राय का चेहरा पीला पड़ गया. . .

आप पढ़ चुके हैं :

पिता का तार पा कर चित्रा पीली कोठी पहुंचती है. वहां उस की मुलाकात प्रतीक से होती है, जो उसे उस के पिता के पास चंडीगढ़ ले जाता है. अगले दिन प्रतीक से मिलने के बाद चित्रा उषा राय के घर चली जाती है, जहां वह एक व्यक्ति को उषा राय का चुंबन लेते देखती है. घर आने पर पिता के मना करने के बावजूद चित्रा प्रतीक से मिलने चली जाती है. वहां उसे पता चलता है कि प्रतीक का वास्तविक नाम डाक्टर सत्यप्रकाश है और वह घर चली आती है. उसे प्रतीक के अपराधी होने का संदेह होता है. थिएटर में उषा राय द्वारा अशरफ का परिचय कराए जाने पर वह कांप जाती है. उस के पिता उसे कश्मीर चलने पर बाध्य करते हैं. लेकिन एक रात वह घर से भाग जाती है और प्रतीक के पास चली जाती है.

उस ने बाहर एक कार के स्टार्ट होने की ध्वनि सुनी और एक मिनट बाद ही वह अंदर आ गया.

"आओ. पी लिया? आओ चलें."

वही हलकी नीले रंग की कार बाहर खड़ी थी. उसे इस परिचित कार में प्रतीक के साथ बैठने में पवित्र आनंद की अनुभूति होने लगी. जब वे

गली से निकल कर मुख्य सड़क पर आ गए तो उस ने चित्रा की ओर देखा. "फिर तो तुम्हें पत्र पर विश्वास हो गया?" उस ने पूछा.

"मुझे तो वह पत्र मिला तक नहीं. तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मेरी मां ने उसे फाड़ कर जला दिया था और मैं घर से भाग आई हूं."

प्रतीक ने जो उत्तर दिया, उस की चित्रा ने कल्पना तक नहीं की थी.

"धन्यवाद, बहुतबहुत धन्यवाद!" उस ने कहा, "यदि तुम आज न आतीं तो मैं पुलिस में जा रहा था."

"पुलिस में?"

"हां," उस के उत्तर ने चित्रा को आश्चर्य में डाल दिया.

"परंतु अभी इस की चिंता मत करो. पहले मुझे यह बताओ, वहां क्या हुआ है?"

जब वे नगर की भीड़ वाली सड़कों पर चले जा रहे थे तो चित्रा ने थिएटर वाली बात और बाद में जो कुछ हुआ था, संक्षेप में उसे बता दिया. प्रतीक का चेहरा उस की कथा सुनते समय पीला पड़ गया था. अंत में उस ने कहा, "बड़ा अच्छा हुआ. तुम्हें मालूम होना चाहिए, वह चतुर है, बहुत दुष्ट है."

"दुष्ट तो है ही," चित्रा ने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "मैं ने भी ऐसा ही अनुभव किया. यदि वह पिताजी को इस बात का विश्वास दिलाने में सफल हो जाती कि मैं दौरे से पीड़ित हूं तो फिर मैं चाहे जो कुछ भी कहती, वह कभी नहीं मानते. उन को मुझ से प्रेम है. सो, चिंतित अवस्था में वह वही करते जो वह उन से करने के लिए कहती. सो... मैं भाग आई हूं..."

"तुम ने बहुत अच्छा किया," प्रतीक ने तुरंत ही कहा.

"इसलिए मुझे तुम्हारा पत्र नहीं मिला. मैं ने केवल यही अनुभव किया कि यदि वह मेरे प्राइवेट पत्र फाड़ सकती है और मेरे विषय में इतना झूठ बोल सकती है, तो वह तुम्हारे विषय में भी ... झूठ बोल रही होगी," चित्रा ने एक ... सांस में कह दिया, "और मैं ने तुम्हारे पास आ कर स्वयं यह पूछने का निश्चय किया. मैं सच्चाई जानना चाहती हूं."

प्रतीक ने बिना हिचक उत्तर दिया, "यह सब मेरा दोष है. मैं वास्तव ... मूर्ख बन गया था."

"कैसे?" चित्रा ने उत्सुक हो ... पूछा.

"मैं ने तुम पर आरंभ में विश्वास नहीं किया."

"तुम्हारा अर्थ है, तुम ने ... बताया नहीं..."

"वह कहानी? हां, यह मैं ने ... रात अनुभव किया, जब तुम मेरी बात ... नहीं सुन रही थीं. मैं वास्तव में ... मूर्ख बन गया था. तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कल पूरी रात कितना व्याकुल रहा. मैं तुम्हारे लिए भयभीत ... मैं तो पुलिस में जाने वाला था."

"परंतु क्यों?"

"यह बहुत लंबी कहानी है. आओ ... कहीं चल कर बैठते हैं."

कुछ दूर आगे जाने पर उन्हें ... कैफे दिखाई दिया और वे दोनों उस ... में चले गए.

सवा बारह बज रहे थे. कैफे भरा ... जा रहा था. परंतु उन्होंने ... मेज देख ली, जहां से उन की बातें ... सुनी जा सकती थीं. कैफे के अंदर ... जोरजोर से बोल रहे थे. दो व्यक्ति ... लगभग लड़ने लगे थे. कुछ देर ... चित्रा और प्रतीक उन का तमाशा देखते रहे.

जब बैरा उन का आर्डर ले कर चला गया, तब चित्रा ने प्रतीक की ओर मुसकरा कर देखा. उसे अपने मन में प्रसन्नता तथा संतोष का अनुभव हो रहा ... वह सोच रही थी कि घर से निकल ... उस ने इस समय कितनी बुद्धिमानी की ...

बैरा एक प्लेट में बिस्कुट तथा ... ले आया. कैफे में प्रसन्नता की

प्रतीक और चित्रा कैफे में पहुंच कर बैठ गए और प्रतीक एक साल पुरानी अपनी रहस्यमय कहानी सुनाने लगा.

दौड़ रही थी. रिकार्ड प्लेयर में अनेक धुनें बज रही थीं. काफी का स्वाद चित्रा को बहुत अच्छा लगा. प्रतीक ने उसे कहानी सुनानी आरंभ कर दी.

"मुझे अपनी कहानी एक वर्ष पहले से आरंभ करनी पड़ेगी," उस ने चित्रा को सावधान करते हुए कहा, "अन्यथा तुम यह नहीं समझ सकोगी कि मैं ने सच बातें क्यों नहीं प्रकट कीं. उस समय मुझ पर भी गहरा उन्माद छाया हुआ था.

"मैं ने बिलासपुर में डाक्टरी की प्रैक्टिस आरंभ की थी. मैं ने अपनी सारी पूंजी उस में लगा दी थी और स्थिति अनुकूल होती जा रही थी. मेरे रोगियों में धनवान महिलाओं की संख्या अधिक थी. उन्हें अपने स्वास्थ्य के अतिरिक्त और किसी भी बात की चिंता नहीं थी और वे मुझे जुकाम हो जाने पर भी अपने घरों से बुला लेती थीं.

"मुझे कुछ समय पूर्व निमोनिया हो गया था और डाक्टरों ने मुझे राय दी कि मध्यप्रदेश के किसी गर्म स्थान पर कम से कम एक वर्ष तक अवश्य रहूं. सो, मैं ने वहां प्रैक्टिस आरंभ कर दी और रोगियों की सेवा करने का भरसक प्रयत्न किया.

"सब कुछ ठीकठाक चल रहा था कि मेरे निकट के एक काटेज में एक बूढ़ा और उस की पत्नी आ कर रहने लगे. वह धनी व्यक्ति था, यह मैं ने उस के रुपए खर्च करने के ढंग से अनुमान लगा लिया था. उस की पत्नी उस से आयु में बहुत छोटी थी और मैं उस के विषय में प्रायः सोचा करता था. उस ने मुझ से प्रेम प्रकट किया, परंतु मेरी आदत नहीं है कि मैं युवती रोगियों से प्रेम करने लगूं. इस से मेरे व्यापार पर भी प्रभाव पड़ने की संभावना थी." वह कहानी सुनाने में व्यस्त था, तभी चित्रा ने उस के माथे पर दुख की रेखाएं उभरते देख लीं.

चित्रा से रहा न गया. उस ने कहा, "प्रिय, मुझे कल रात की बात का दुख है. मेरा अर्थ है कि जो कुछ मैं ने

कहा था, उस का ...उस का मुझे हार्दिक दुख है और..."

"चिंता मत करो. मैं जानता हूं कि तुम मेरे विषय में बहुत सी झूठी बातें सुनती रही हो. यदि मुझे यह न मालूम होता तो मैं कभी तुम को पत्र न लिखता."

"चार हाथ और चार आंखें एक-दूसरे से बहुत कुछ कह सकती हैं. क्यों, ठीक है न?" चित्रा ने हंस कर कहा.

"मैं कहां तक पहुंचा था?" उस ने पूछा. "हां, ठीक है. वह बूढ़ा बीमार हो गया, परंतु उस के शरीर के लक्षण विचित्र थे. कुछ समय तक वह बिलकुल ठीक रहता और फिर अचेत हो जाता था, मानो मर जाएगा. इस का कोई कारण नहीं था. मुझे यह विचित्र लगा. उस की पत्नी ने ऐसा प्रदर्शित किया, जैसे कि वह उस की दशा से बहुत चिंतित है, परंतु मैं जानता था कि उस का संबंध एक अन्य व्यक्ति से था. इस से मेरा संदेह बढ़ गया. कुछ भी हो, मैं ने उस पर दृष्टि रखी और अपनी नर्स को भी उस पर दृष्टि रखने को कहा. हम ने देखा बूढ़ा उसी समय अचेत होता था, जब कि नर्स वहां नहीं होती थी और उस की पत्नी उस की सेवासुश्रूषा के लिए उपस्थित रहती थी. सो, मैं ने बैल के सींग पकड़ लिए और उस महिला से प्रश्न करने आरंभ किए.

"जो कुछ मैं पूछता, वह बहुत ही सावधानी से उस का उत्तर देती थी. क्योंकि मेरे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं था, अतः स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कह सकता था. परंतु मेरे विचार में वह मुझे अच्छी तरह से समझती थी. मैं ने उस से कह दिया कि मुझे संतोष नहीं है, इसलिए मैं बूढ़े को अस्पताल में रखना चाहता हूं. वह मेरे ऊपर बिगड़ने लगी और उस ने मुझे धमकी दी, परंतु मैं अपनी बात पर डटा रहा और मैं ने उस से साफ कह दिया कि अगर वह मेरी बात पर सहमत न हुई तो मुझे विशेष[illegible] की राय लेने पर बाध्य होना पड़ेगा. इस से वह डर कर सहमत हो गई. मैं ने बूढ़े को दूसरे दिन अस्पताल में भरती करने का प्रबंध कर लिया और अस्पताल की मैट्रन को भी सावधान कर दिया कि वह बूढ़े को उस की पत्नी के साथ अकेला न छोड़े. मैं दूसरे दिन उसे अस्पताल ले जाने के लिए उस के घर गया, पर बूढ़ा बिदा हो चुका था."

"बिदा हो चुका था?"

प्रतीक धीमे से मुसकरा पड़ा.

"हां. उस स्त्री ने विशेष विमा[illegible] की व्यवस्था कर के उसे रात को [illegible] चंडीगढ़ पहुंचा दिया. मैं ने तीन महीने के पश्चात उस की मृत्यु का समाचार एक समाचारपत्र में पढ़ा. यही कहानी थी. निस्संदेह मेरे पास इस का कोई प्रमाण न था. मैं कुछ भी करने में असमर्थ था. कुछ भी हो, मेरे मन [illegible] एक संतोष था कि बूढ़े ने अपनी [illegible] वसीयत में उस स्त्री के लिए एक [illegible] भी नहीं छोड़ा था. वह कर्ज [illegible] कर उस का भार वहन कर रहा [illegible] इस प्रकार जो कुछ भी उस स्त्री ने किया उस के बदले में उसे कुछ प्राप्त न[illegible] हुआ."

"तुम्हारे विचार में उस ने [illegible] दे कर बूढ़े का जीवन समाप्त किया[illegible]" चित्रा की आंखों से आश्चर्य प्रकट [illegible] रहा था.

प्रतीक ने सिर हिला दिया, "मैं निश्चि[illegible] रूप से कह सकता हूं कि उस[illegible] विष दे कर बूढ़े को मार डाला. [illegible] इस से मेरा कोई संबंध नहीं था. जो कुछ [illegible] कर सकता था, वह मैं ने किया. सो, मैं [illegible] के विषय में सब कुछ भूल चुका था.

"हां, तो एक महीने के पश्चात [illegible] प्रैक्टिस धीरेधीरे कम होने लगी. [illegible] रोगी नित्य मेरे पास आया करते थे. [illegible] के पत्र मुझे मिलने लगे, जिन में [illegible] होता था कि वे दूसरे डाक्टर से [illegible]

करवाना चाहते हैं. लोग मुझे विचित्र दृष्टि से देखने लगे थे. मुझे गलीकूचे में देखते ही लोग मुझ से कन्नी काट जाते थे. मैं इस का कारण नहीं समझ सका. कुछ समय तो मैं इसे सहन करता रहा, फिर मैं ने एक परिचित व्यक्ति के घर जा कर उस से पूछा, यह सब क्या है? उस ने मुझे बताया कि मेरे विषय में एक अश्लील अफवाह फैल गई है कि एक लक्ष्मी नाम की सुंदर युवती को गायब करने में मेरा हाथ है.

"मैं ने बिलासपुर की पुलिस में इस की रिपोर्ट की. उन्होंने यह वास्तविकता खोज निकाली कि मेरे रोगियों के पास निरंतर इस विषय के गुमनाम पत्र भेजे जा रहे थे. उन्होंने बहुत प्रयत्न किया, परंतु पत्र लिखने वाले का पता लगाने में वे असफल रहे. यही नहीं, अब मुझे क्लब की सदस्यता से भी वंचित कर दिया गया. अधिकांश व्यक्तियों ने इन अफवाहों को सच मान कर विश्वास कर लिया और मेरे ऊपर विश्वास करने वालों की संख्या अंत में दोचार ही रह गई."

"प्रिय," चित्रा की आंखों में करुणा भर आई थी, "तुम्हारे साथ कितना बुरा हुआ!"

"तुम जानती ही हो कि बूढ़ी महिलाएं किसी भी बात पर विश्वास कर लेती हैं. कुछ भी हो, मुझे शीघ्र ही ज्ञात हो गया कि वहां गुजारा चलना मुश्किल है. जितनी पूंजी मैं ने लगाई थी, उस का सातवां भाग भी देने के लिए कोई तैयार न हुआ. मैं सब कुछ छोड़ कर चला आया. मैं ने यहां आ कर पुलिस से संपर्क स्थापित किया और उन से उन गुमनाम पत्रों को भेजने वाले का पता लगाने का अनुरोध किया. गुप्तचर विभाग का अधिकारी मेरा पुराना मित्र था. उस ने बहुत प्रयत्न किया परंतु काफी समय बीत चुका था, इसलिए वह सफल न हो सका. एक अन्य पुराने मित्र ने मुझे अपने यहां आश्रय दे दिया. उस ने मेरी आर्थिक सहायता भी की और मुझे संतोष है कि मैं फिर सेवाकार्य कर रहा हूं."

वह कुछ क्षणों तक चुप रहा. उस की दृष्टि सामने टिकी हुई थी. चित्रा विचार कर रही थी, 'इस का मुख कितना सुंदर है.' अभी तक उस ने इस पर गौर ही नहीं किया था. उस की खुबसूरत आंखें धीरेधीरे फिर चित्रा के मुख पर आ कर जम गईं.

"मैं बताता हूं कि अब मुझे इस का दुख नहीं है. मेरा अर्थ है, जो हो गया उस के लिए." वह चित्रा को देख कर मुसकरा रहा था. "यदि ऐसा न होता तो मैं अभी भी वहीं होता."

"तुम्हें बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा!" चित्रा ने कहा.

"नहीं. बहुत बड़ा मूल्य नहीं."

नाजुकी उस के लब की...

नाजुकी उस के लब की क्या कहिए?
पंखुड़ी इक गुलाब की सी है.
—मीर

✦

रोज जाता हूं नए रूप से उस के दर पर,
रोज रखता हूं नया नाम बदल कर अपना.
—दाग

"नहीं?"

"नहीं, कुछ भी नहीं. मुझे उस से कहीं अधिक मूल्यवान वस्तु प्राप्त हो गई, और वह है तुम्हारा प्रेम!"

"सच?" चित्रा यह पहले ही जानती थी, पर वह उस के मुंह से कहलवाना चाहती थी.

"हां, मुझे तुम से प्रेम है. जब कल रात मुझे तुम से पृथक होने की आशंका हुई, तो मैं लगभग अपने मस्तिष्क का संतुलन खो बैठा था."

"मेरी भी यही दशा थी," चित्रा ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, "द्वार बंद हो जाने पर मुझे आघात लगा. मैं गली में तुम्हारे पीछे दौड़ना चाह रही थी."

"अच्छा?"

"और क्या..."

घड़ी ने साढ़े बारह बजाए. एक मोटा व्यक्ति अपनी बगल में अखबार दबाए बैरे द्वारा भोजन लाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा था. उस की दृष्टि इन दोनों पर ही जमी हुई थी. उस ने बड़बड़ाते हुए कहा, "कैसा जमाना आ गया है! यह बदतमीजी नहीं तो क्या है?"

उस ने अपनी घड़ी देखनी आरंभ कर दी. एक युवा बाबू खाली कुरसी खोज रहा था. उसे चित्रा के पीछे एक कुरसी मिल गई और उस ने सामने देख कर अपनी भौंहें तान लीं और मुसकराता हुआ कहीं और चला गया.

उन दोनों को इस का जरा भी बोध नहीं था कि कोई उन्हें देख रहा है या नहीं. वे दोनों अपनी बातचीत में मस्त थे.

"अब तुम्हें थोड़ाबहुत मालूम हो गया कि क्या हुआ था?"

"हां, मालूम हो गया है," चित्रा ने उत्तर दिया, "परंतु मैं अभी भी यह नहीं समझ सकी हूं कि राजपुर वाली पीली कोठी बीच में कहां से आ गई."

"मैं एक मिनट में बताता हूं. और लस्सी? नहीं? लिमनेड? नहीं पीती? ठीक है. हम इतना खर्च भी तो वहन नहीं कर सकेंगे."

चित्रा का मुख लाल हो गया.

"धीरे बोलो, कोई सुन रहा होगा."

"सुनने दो," प्रतीक ने संक्षेप में कहा, "मैं क्या कह रहा था? ओह, हां, राजपुर वाली पीली कोठी. वह इस प्रकार है. मैं उन गुमनाम पत्रों के विषय में सब कुछ भूल चुका था. वैसे मैं निश्चित रूप से जानता था कि ये पत्र उसी स्त्री ने भेजे हैं, जिस के विषय में मैं अभी बता रहा था. मैं किसी भी अन्य ऐसे मनुष्य को नहीं जानता, जिस को मुझ से इस सीमा तक घृणा रही हो. परंतु इन बातों पर विचार करना व्यर्थ था और मैं ने भूतकाल के विषय में सब कुछ भूल जाने का निश्चय कर लिया था. जिस चीज का पता पुलिस तक न लगा सकी, उस को खोज लेना मेरे लिए संभव भी कैसे हो सकता था. एक दिन मैं उसी छोटे होटल में अपने डाक्टर मित्र को टेलीफोन कर रहा था. यह होटल जिस व्यक्ति द्वारा चलाया जा रहा है, उस का मैं ने इलाज किया था. मैं प्रायः वहां जाता रहता हूं. मैं ने उन दोनों को निकट ही एक मेज पर बैठे देखा. यह वही बिलासपुर वाली स्त्री थी और वही उस का प्रेमी था."

"वह देखने में कैसा था?" चित्रा ने बीच में टोकते हुए पूछा.

"वह गोरा, लंबा, घनी काली मूंछों वाला कशमीरी था. तभी तो मैं ने तुम से उस दिन उस के विषय में पूछा था."

चित्रा ने जल्दी से पूछा, "उस का नाम क्या है?"

"वह अपने को अशरफअली बताता था और स्त्री श्रीमती शीला भार्गव बताती थी."

"अब मैं समझ गई."

"कैसे?"

"यह मैं बाद में बताऊंगी."

"खैर, जो भी हो, होटल में वे दोनों लड़ रहे थे. उन की आवाजें साफ

सुनाई दे रही थीं. वह उसे वास्तव में गालियां दे रही थी कि उस ने उस के पति के मरने के पश्चात उस से विवाह नहीं किया था. वह भी कंधे हिलाता हुआ उस पर बिगड़ते हुए कह रहा था कि यदि वह उस से विवाह करना चाहती है, तो उसे काफी रुपए का प्रबंध करना चाहिए. पुरुष कह रहा था कि यदि वह मूर्ख न होती, तो उसे पहले ही ज्ञात हो जाना चाहिए था कि उस का पति कर्ज ले कर खर्च चला रहा है. मैं जो कह रहा हूं, वह मैं ने अपने कानों से सुना. म उन गुमनाम पत्रों के भेजने वाले की खोज में था. सो, मैं ध्यानपूर्वक उन की बातें सुनता रहा. शायद वह अपने मुंह से कोई ऐसी बात कह दे जिस से मुझे कोई सूत्र मिल जाए. संयोगवश उस स्त्री ने मुझे देख लिया. उस का रंग सफेद पड़ गया और वह अकस्मात ही चुप हो कर बैठ गई. उस पुरुष ने पीछे मुड़ कर मेरी ओर देखा. तभी होटल के बैरे ने मुझे बताया कि मेरे डाक्टर मित्र टेलीफोन पर आ गए हैं. जब मैं मित्र से बातचीत कर के वापस लौटा तो वे दोनों जा चुके थे. इसलिए मैं उन का पीछा न कर सका. यह लगभग डेढ़ महीने पहले की बात है और मैं ने उस रात्रि तक उन के विषय में कुछ और नहीं सुना जब तुम से मेरी भेंट हुई थी."

"वह बड़ी अच्छी रात्रि थी," चित्रा ने कहा.

"हां, सो तो है ही," प्रतीक ने उत्तर दिया. "प्रिये, तुम ने मेरे जीवन में आनंद भर दिया है. सुनो, हमारा विवाह कब होगा?"

"अभी तो तुम ने विवाह का प्रस्ताव ही नहीं रखा."

"अब तो रख रहा हूं."

"नहीं, पहले मुझे पीली कोठी वाली बात बताओ."

इस के उत्तर में प्रतीक ने धैर्यपूर्वक कहा, "तुम्हारी आंखें कितनी सुंदर हैं!"

उसी अखबार वाले मोटे व्यक्ति ने चारों ओर देखा और बिगड़ते हुए कहा, "बैरा कहां चला गया?"

प्रतीक ने उस की ओर देखा और काफी ले आने का आर्डर दे दिया.

इस के बाद उस ने कहानी आरंभ कर दी, "उसी दिन लगभग डेढ़ बजे, मैं अपनी डिस्पेंसरी में था, तभी मुझे टेलीफोन पर बुलवा लिया गया. मैं बोलने वाले की आवाज नहीं पहचान सका कि स्त्री बोल रही है या पुरुष. कुछ विचित्र आवाज आ रही थी. ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बोलने वाले को दमा की शिकायत है."

"वह कंधा मुंह के सामने रख कर बोल रहा होगा?" चित्रा ने कहा.

"मुझे नहीं मालूम. शायद तुम ठीक कह रही हो," उस ने उत्तर दिया, "कुछ भी हो, उस ने अपना नाम प्रकट नहीं किया, केवल इतना ही कहा, क्या डाक्टर सत्यप्रकाश बोल रहे हैं? मैं ने बताया कि मैं ही हूं. फिर उस ने कहा कि देहरादून जिले से सात मील दूर उत्तर में राजपुर में एक पुरानी कोठी

बादामी गिरजाघर

हाहो (तुर्किस्तान) में हलके बादामी रंग के पत्थरों का बना एक गिरजाघर है. एक हजार साल बाद आज भी इस गिरजाघर के पत्थरों के रंग में कोई अंतर नहीं आया है क्योंकि निर्माण से पहले इन पत्थरों को पूरे एक साल तक दूध में डुबो कर रखा गया था.

है जो कि पीली कोठी के नाम से प्रसिद्ध है, यदि मैं वहां ठीक साढ़े ग्यारह बजे रात्रि को पहुंच जाऊं तो उन गुमनाम पत्रों के लिखने वाले से मेरी भेंट हो सकती है. इस से मेरे मन में खलबली मचने लगी. मैं ने पहले विचार किया कि मैं पुलिस को सूचित कर दूं, परंतु मुझे भय था कि यह दिल्लगी हो सकती है, और मैं इस को सार्वजनिक उपहास नहीं बनाना चाहता था.

"जो भी हो, मैं ठीक एक बजे चंडीगढ़ से रवाना हो गया और ग्यारह बजे से कुछ पहले वहां पहुंच गया. मैं ने अपनी कार कोठी के अहाते में खड़ी कर दी. फिर दबे पांव कोठी की ओर चल पड़ा और बीच में एक उपयुक्त स्थान पर रुक कर प्रतीक्षा करने लगा. मेरा विचार था कि वह व्यक्ति मेरी पहले से ही प्रतीक्षा कर रहा होगा, परंतु कोठी खाली थी. मैं उसे पहले देख लेना चाहता था. तभी मुझे कोठी के अंदर प्रकाश दिखाई दिया..."

"मेरी टार्च का प्रकाश?"

"हां. मैं बाग में से निकल कर पता लगाने के लिए चल पड़ा. उसी समय मैं ने किसी को दरवाजे पर खड़े देखा. अंधेरे में ठीक से देख पाना संभव न था. सो, मैं भी दबे पांव ऊपर चढ़ने लगा. मैं उस को अप्रत्याशित रूप में पकड़ लेना चाहता था. क्योंकि मैं जानता था कि अंदर वाले व्यक्ति दरवाजे से किसी के आने की आशा ही नहीं कर सकते थे. मैं ऊपर बरामदे में पहुंच गया और तभी किसी का हाथ मेरे मुंह पर आ लगा. कोई पूरी शक्ति से चिल्ला रहा था..."

"मैं नहीं चिल्लाई..."

"तुम ही चिल्ला रही थीं. जब मैं ने लाइटर जलाया तो देखा कि मेरी बांहों में संसार की सब से उत्तम वस्तु थी."

"चुप रहो."

"तुम से उस अंधेरे फर्श पर लेटेलेटे ही मुझे प्रेम हो गया."

"जरा संभल कर बात करो," चित्रा ने निवेदन किया. उस की आंखें चारों ओर देख रही थीं.

"मैं संभल कर, गंभीर हो कर बोल रहा हूं."

"अच्छाअच्छा, और बातें रहने दो," चित्रा ने जल्दी से कहा, "पर यह बताओ तुम ने उसी समय मुझे सब कुछ क्यों नहीं बताया? मेरा अर्थ है नाम तथा आने का कारण आदि."

"क्योंकि मेरी आंखों में मूर्खता का पर्दा पड़ा हुआ था. मैं ने यह सोचा कि इन बातों से निश्चय ही तुम्हारा कुछ न कुछ संबंध है."

"उन गुमनाम पत्रों से?"

"हां. या उस टेलीफोन से. मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मेरा संदेह बहुत बढ़ चुका था. मुझे संदेह था कि उन्होंने मेरे लिए जाल बिछा रखा है और मैं तुम से बिलकुल अपरिचित था. मैं तो केवल यही जान सका था कि तुम अनिंद्य सुंदरी हो और निर्जन कोठी में अकेली होने के कारण भयभीत हो. मेरी अंतरात्मा मुझ से कह रही थी कि तुम्हारा कथन बिलकुल सत्य है, परंतु मैं नहीं जानता था कि वे किस प्रकार का प्रपंच रच रहे हैं. और मैं उन की पकड़ में नहीं आना चाहता था. इसी लिए मैं चाहते हुए भी तुम को न बता सका कि मेरी कार अहाते के अंदर खड़ी है और मैं तुम्हें देहरादून पहुंचा सकता हूं. इसी लिए मैं ने तुम को ऊपर सोने के लिए कहा. मैं नहीं चाहता था कि हम दोनों को एक साथ पकड़ लिया जाए. मैं अपनी मूर्खता के लिए शर्मिंदा हूं."

"नहीं, यह मूर्खता नहीं है," चित्रा ने उसे उत्साहित करते हुए कहा, "यह स्वाभाविक था. जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ, उस स्थिति में कोई भी ऐसा ही करता."

"तुम्हें देख कर ऐसा कोई नहीं करता," प्रतीक ने मुसकराते हुए कहा, "मुझे तुम्हारे सुंदर चेहरे को देख कर ही समझ लेना चाहिए था. पर

मैं ने जो कुछ सोचा, वह तुम्हें बता दिया. जब तुम बिस्तर पर लेट गई तो मैं ने अलमारी की दराजें खोल कर देखनी आरंभ कर दीं. मैं जानना चाहता था कि इस कोठी का स्वामी कौन है. दूसरे दिन मैं तुम्हें अपनी कार में यहां ले आया. इस के भी दो कारण थे. पहला यह था कि मैं तुम्हारे साथ अधिक से अधिक समय तक रहना चाहता था और दूसरा यह कि मैं तुम्हारे पिताजी को देखना चाहता था. मेरे मन में यह विचार था कि कहीं तुम्हारे पिता ही तो वह कश्मीरी नहीं हैं."

"पिताजी...?" चित्रा हंसने लगी.

"मैं ने उन को भी देख लिया है. मुझे यह भी मालूम है कि उन का या तुम्हारा इस से कोई संबंध नहीं है.

स्त्री का मौन

स्त्री का मौन पुरुष की वाणी के सदृश होता है. इस से कौन इनकार कर सकता है?

—बेन जान्सन

जब तुम ने मुझे यह बताया था कि तुम्हारे पिता उस से डेढ़ महीने के अंदर विवाह करने जा रहे हैं, तो मैं ने अनुभव किया कि वह निश्चय ही मुझे मार्ग से हटाने का प्रयास करेगी."

"तुम्हें पूरा निश्चय है कि यह वही स्त्री है?"

"हां, मैं पूरे निश्चय से कह रहा हूं."

चित्रा कुर्सी हटा कर खड़ी हो गई. उस की आंखों के सामने वास्तविकता नाच उठी थी. पर अकस्मात ही फिर अंधेरा छा गया.

"परंतु फिर...," उस ने बड़ी कठिनाई से कहा, "फिर तो वह मेरे पिता के साथ भी वैसा ही करेगी."

"हां, मुझे इस बात का डर है, यदि वह उस से विवाह कर लेते हैं."

"परंतु वह तो पिताजी से आज ही डेढ़ बजे विवाह कर रही है."

प्रतीक ने घड़ी देखी, 12 बज कर 45 मिनट हो रहे थे.

"आओ, चलो." प्रतीक उठ कर खड़ा हो गया. वह जेबें टटोलता हुआ भाग रहा था. मैनेजर ने कहा, "आप का बिल, श्रीमान?" उस ने जल्दी से एक दस का नोट फेंक दिया और बिना पैसे लिए बाहर निकल गया.

वे दोनों भागते हुए अपनी कार में जा कर बैठ गए.

"श्रीमती उषा राय इस समय कहां होगी?"

"मुझे नहीं मालूम," चित्रा ने उत्तर दिया, "पिताजी का उसे उस के फ्लैट से लाने का कार्यक्रम था. परंतु कब, यह मैं नहीं कह सकती. हो सकता है, अभी वह अपने फ्लैट में ही हो."

"चलो, वहीं चल कर देखते हैं."

"फ्लैट नं. 17, रूम नं. 30, सैक्टर 5."

कार तीव्र गति से भागने लगी. चित्रा ने उछलती हुई कार में प्रतीक से कहा, "मुझे भय है कि पिताजी आप की बात का विश्वास नहीं करेंगे."

"मैं यह नहीं सोच रहा हूं," उस ने एक बस से कार को बचाते हुए कहा, "मैं उन से मिलना चाहता हूं और धमकी देना चाहता हूं."

गति बताने वाले यंत्र की सुई ऊपर चढ़ती जा रही थी. पुल पार करते समय कार साठ मील की गति से भाग रही थी. आगे सड़क पर बहुत भीड़ थी. प्रतीक ने अभी भी गाड़ी की गति धीमी नहीं की.

एक ट्रैफिक पुलिसमैन ने हाथ आगे बढ़ा कर कार रोकने का संकेत दिया. इस समय वह विपरीत दिशा से आने वाली दो बसों से कार को बचाने का प्रयत्न कर रहा था. उस की कार चौराहे पर बने चबूतरे से टकरा ग

उस ने कार को पीछे की ओर से घुमा कर निकाल ले जाने का प्रयास किया परंतु पुलिस वाले ने उसे रोक दिया.

"बहुत तेज कार चला रहे हैं," पुलिस वाले ने कहा, "मुझे जरा अपना लाइसेंस तो दिखाइए."

"ओह, कृपया इस समय हमें जाने दें," चित्रा ने कहा, "हम ने किसी की कोई हानि नहीं की है. हमें बहुत जल्दी पहुंचना है. यह... यह जीवन-मरण का प्रश्न है."

पुलिस वाले ने दुख प्रकट किया, पर उस पर चित्रा की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा.

"दुख है, मिस, मुझे अपने कर्त्तव्य का पालन करना है. मैं आप के बीमा के कागजात भी देखूंगा."

वह लंबाचौड़ा व्यक्ति था. जैसे कि पुलिस वाले प्रायः करते ही हैं, उस ने निश्चित हो कर कागजात देखने आरंभ कर दिए. वह लाइसेंस पर लिखे नाम को पढ़ने लगा. उस ने कुछ देर बाद कागजात प्रतीक को लौटा दिए और अब अपनी छोटी नोट बुक में पूरा विवरण लिखना शुरू कर दिया. उसे कोई जल्दी नहीं थी. घड़ी ने एक बजाया और फिर एक बज कर पांच मिनट हो गए.

"सुनो, प्रतीक, मैं टैक्सी में पहले वहां पहुंच कर उसे रोकती हूं."

"नहीं, तुम्हें उस के निकट नहीं जाना चाहिए. यह खतरनाक हो सकता है."

परंतु विरोध व्यर्थ रहा. चित्रा पहले ही कार में से नीचे उतर चुकी थी और सड़क पर भाग रही थी.

"फ्लैट 17, रूम 30, सैक्टर 5," उस ने टैक्सी में बैठते हुए कहा.

चित्रा जब टैक्सी में बैठ रही थी, तो प्रतीक भी बाहर कूद पड़ा और उस की ओर बढ़ने लगा. उस लंबेचौड़े पुलिस वाले ने उस की बांह पकड़ कर उसे पीछे खींच लिया.

"नहीं, नहीं, श्रीमान, आप नहीं जाएंगे," पुलिस वाले ने कहा, "मैं ने एक को छोड़ दिया था, फिर वह हाथ नहीं आया."

"कोई ऐसा कानून नहीं है जो एक प्रेमी को अपनी प्रेमिका के पीछे जाने से मना करता हो, जब कि वह खतरे में पड़ने वाली हो."

प्रतीक भी हलकाफुलका युवक नहीं था. उस ने जोर से झटका दिया. पुलिस वाला घूम गया. उस का टोप सड़क पर जा गिरा. परंतु वह स्वयं भी गिरतेगिरते बचा. पुलिस वाला नंगे सिर प्रतीक के पीछे भागने लगा. प्रतीक ने देख लिया था कि टैक्सी दूर जा चुकी है. वह रुक गया. इतने में पुलिस वाला भी पहुंच गया. उस ने प्रतीक को पकड़ लिया. प्रतीक ने फिर झटका दिया, जिस से पुलिस वाला क्रोधित हो उठा.

एक शब्द "आक्रमण," कह कर उस ने सीटी बजानी आरंभ कर दी. प्रतीक को दो पुलिस वालों ने पकड़ लिया और उसे घसीटते हुए थाने की ओर ले जाने लगे.

चित्रा ने टैक्सी में बैठ जाने के बाद यह घटना देखी ही नहीं थी. उस ने हाथ हिलाने के पश्चात एक बार भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा था. वह ध्यान-मग्न हो कर निरंतर आगे देख रही थी.

सात... नहीं, एक बज कर नौ मिनट हो चुके थे. क्या वह समय पर पहुंच सकेगी? दूरी अधिक नहीं थी पर टैक्सी ड्राइवर तो प्रेम के चक्कर में नहीं फंसा हुआ था, अतः उसे जल्दी न थी. चित्रा ने बाहर झांक कर देखा और उसे दोगुना किराया देने का प्रलोभन दिया. उस के पीछे प्रतीक कानून की पकड़ में आ चुका था, यह उसे ज्ञात नहीं था.

वह उषा राय से जा कर क्या कहेगी? यह विचार अन्य सभी विचारों से प्रबल था. उसे जैसेतैसे उषा को बाहर जाने से रोकना था जब तक कि

प्रस्तुत है कम दाम में उच्च कोटि का साहित्य

विश्व पाकेट बुक्स

नानावती का मुकदमा : त. घोष
पूरे तथ्यों सहित, अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी.

एक के बाद : रमेश गुप्त
सरकारी दफ्तर की जिंदगी की परतें खोल कर रख देने वाला उपन्यास.

लायड्स बैंक डकैती : त. घोष
अपराधों की सच्ची कहानियां—काल्पनिक कथाओं से कहीं अधिक रोचक व रोमांचक.

अंतरिक्ष के पार : कैलाश साह
अपने ज्ञान के बल पर कंप्यूटर हेरीकोल्ट-7 एक दिन दास से स्वामी बन बैठा और फिर...

विद्रोह के स्वर : प्रेम हालन
सामाजिक बंधनों से तंग आ कर रितु ने समाज व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और फिर....

नीली आंखों के दायरे
रहस्यपूर्ण शौकत महल, मालिक की हत्या के बाद जिस का रहस्य और भी गहरा हो गया.
रु 3 प्रत्येक

अजंता : ई. थियोडोर किंग
प्रेम और वात्सल्य की शीतलता भी उस के मन को स्थिर न कर सकी—आखिर उसे किस की तलाश थी ?
रु. 3 प्रत्येक

टूटा हुआ पुल : वासुदेव
जीवन को एक नाटक समझ कर खेलने वाली युवती कांता, जब जीवन के कठोर सत्य से टकराई...
रु. 5

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम 12 कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट लेने पर 5% की छूट, डाक खर्च माफ. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

...नहीं आ ...

जब टैक्सी रुकी तो चित्रा बाहर कूद पड़ी. उस ने बैग में पड़े पैसे ड्राइवर को थमा दिए. वह अभी पैसे गिन ही रहा था कि वह दौड़ कर ऊपर पहुंच गई और उस ने मुख्य द्वार पर लगी घंटी दबा दी.

एक अधेड़ आयु की सेविका बाहर आ गई.

"श्रीमती उषा राय अभी नहीं मिल सकतीं. वह अपना सामान बांध रही हैं." सेविका फिर अंदर चली गई.

"मेरा उन से मिलना बहुत आवश्यक है," चित्रा ने निराश हो कर कहा.

सेविका ने सिर हिला दिया, "वह अभी नहीं मिल सकतीं. यदि कोई बिल है तो मुझे दे दो, मैं अंदर जा कर दे दूंगी, तुम्हें पैसे मिल जाएंगे."

"बिल नहीं है. मुझे श्रीमती उषा राय से बात करनी है."

"यदि तुम्हारा यहां कोई सामान है जो श्रीमती उषा राय ने किराए पर लिया है तो कल आ जाना और उठा ले जाना."

सेविका को निर्देश दिए गए थे, जिन का पालन आवश्यक था. यदि चित्रा अंदर प्रविष्ट होना चाहे तो उसे बलपूर्वक अंदर जाना होगा. परंतु सेविका के अंदर मानव हृदय था और उसे चित्रा की व्याकुलता का पूरा आभास था. उस ने नम्रता से कहा, "तुम्हें चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है. उन का विवाह होने जा रहा है. मुझे अपना वेतन मिल चुका है."

"यह धन से संबंधित नहीं है." चित्रा ने उत्तर दिया. "मेरा..." फिर अकस्मात ही उत्साहित हो कर उस ने कहा, "मैं कर्नल जगमोहन की ओर से आई हूं, जो श्रीमती उषा राय से विवाह कर रहे हैं."

"तो तुम ने यह पहले क्यों नहीं बताया?..." सेविका ने बड़बड़ाते हुए कहा और दरवाजा खोल दिया. वह चित्रा को ले कर एक तंग गलियारे में से हो कर जाने लगी. अकस्मात ही उस के चेहरे पर विषाद की रेखा उभर आई. उस ने आशा भरे शब्दों में चित्रा से पूछा, "कोई दुर्घटना तो नहीं हुई न?"

"अरे नहीं," चित्रा इधरउधर देख रही थी. तीन दरवाजे थे और इस समय तीनों बंद थे.

"वह इस समय वहां है," सेविका ने कहा. उस ने धीरे से दरवाजा खटखटाया और उसे पर्याप्त संकेत समझ कर, गलियारे में चली गई. उस ने चित्रा को वहां अकेला छोड़ दिया.

यह वही कमरा था जिसे वह पहले भी देख चुकी थी. परंतु इस समय कमरा अस्तव्यस्त पड़ा हुआ था. फटेपुराने कागज, फटे हुए पत्र और बड़ी मात्रा में पुराने वस्त्र फर्श पर बिखरे पड़े थे. इस के अतिरिक्त कमरे में सर्वत्र सिगरेट के जले हुए टुकड़े फैले पड़े थे. मेज पर गम गलत करने वाली बोतल तथा नया सिगरेट का डब्बा रखा हुआ था. एक छोटा सफ़ेद कुत्ता कमरे में इधरउधर घूम रहा था. कमरे के बीच में उषा राय घुटनों के बल बैठी हुई बक्से को बंद कर रही थी. उस ने दरवाजे की ओर नहीं देखा.

"नामो, यहां आ कर जरा ढकने पर बैठ तो जाओ," उषा राय ने आदेश दिया.

चित्रा जा कर ट्रंक के ऊपर बैठ गई. उषा का सिर झुका हुआ था. ट्रंक का ताला लग गया और उषा प्रसन्न हो कर पीछे बैठ गई.

"तुम?"

"हां," चित्रा ने कहा, "मैं हूं."

"मैं जानती हूं कि तुम हो." उषा उठ कर खड़ी हो गई और अपने वस्त्र झाड़ने लगी. यह बहुत सस्ते किस्म का कमरा था. दीवार पर देवी-देवताओं के बीसों कैलेंडर टंगे हुए थे और फर्श पर कई दिनों से झाड़ू नहीं दी गई थी. "तुम ने अपना विचार बदल

नीली आंखों के दायरे	लायड्स बैंक डकैती	अंतरिक्ष के पार
आनंद सागर श्रेष्ठ	तपन घोष	कैलाश
शौकत महल, जो बाहर से जितना बड़ा था उतना ही भीतर से भी विशाल और रहस्यपूर्ण था. फिर जब इस शौकत महल के मालिक की बड़े ही नाटकीय ढंग से हत्या कर दी गई तो महल का रहस्य और भी गहरा हो गया. आखिर यह हत्या किसने की? रहस्यों से भरपूर एक रोमांचक उपन्यास	इंसान के हाथों होने वाले अपराधों की सच्ची कहानियों का संकलन, जिसकी जघन्यता दिल हिला कर रख देती है. कल्पना के जोर पर पेश किए जाने वाले अपराधों की मनगढ़ंत घटनाओं से कोसों दूर यह वास्तविक घटनाएं रहस्य रोमांच की काल्पनिक अपराध कथाओं से कहीं ज्यादा सनसनीखेज व रोचक हैं.	मानव निर्मित क[illegible] हैरोकोल्ट-7 जिसने पृ[illegible] अंतरिक्ष के पार मानव [illegible] का बीजारोपण करने [illegible] अकल्पनीय काम का [illegible] उठाया और अपने नि[illegible] को कार्य रूप देने में ब[illegible] भी हो गया. लेकिन इस [illegible] शक्तिशाली 'सर्वज्ञ' को [illegible] मानव के हाथों मात [illegible] पड़ी. आखिर था तो ब[illegible] कंप्यूटर ही.
रु. 3	रु 3.	

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

दिया?"

"मैं तुम से मिलने आई हूं," चित्रा ने कहा. "मैं... मैं तुम से कुछ बातें करना चाहती हूं."

"ओह!" उषा ने पता लिखा हुआ एक कागज निकाल लिया जो एक नीची कुर्सी पर रखा हुआ था. "मुझे दुख है कि मेरे पास सुनने का समय नहीं है. मुझे तुम्हारे पिता के साथ रजिस्ट्री दफ्तर में जाने के लिए पौन घंटे के अंदर तैयार होना है. यदि तुम बातचीत करना चाहती हो तो हमारे साथ चल कर क्यों नहीं करतीं?"

चित्रा जब कमरे में आई थी तो उस के मन में भय व्याप्त था परंतु इस स्त्री की शांत वाणी और प्रतीक द्वारा बताई गई कहानी ने, जिस का केंद्र यही थी, उस का भय अब आक्रोश में परिवर्तित कर दिया था.

"ठीक है. यदि तुम यही चाहती हो तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगी," उस ने उत्तर दिया, "परंतु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनोगी तो मुझे पिताजी को यह बात बतानी पड़ेगी. बस, यही कहना था, श्रीमती शीला भाटिया."

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा. उषा ने सिगरेट का डब्बा निकाल लिया और एक सिगरेट सुलगा ली. उस की दृष्टि चित्रा पर टिकी हुई थी. उस अवसर पर चित्रा मन ही मन उस के साहस की सराहना करने लगी. उस ने ऐसा बड़ा आघात भी सहज ही आत्मसात कर लिया था. उस का हाथ, जिस में उस ने माचिस पकड़ी हुई थी, सामान्य रूप में स्थिर था.

"अच्छा, मैं समझ गई," उस ने उत्तर दिया. "अच्छा, अब यह बताओ, तुम क्या कहना चाहती हो?"

"केवल यही," चित्रा उस के सामने सीधी खड़ी हो गई, "मैं ने तुम्हारे विषय में सब कुछ खोज लिया है. मैं तुम्हारे साथ पशुओं जैसा व्यवहार नहीं करना चाहती परंतु या तो तुम अभी यहां से निकल जाओ और पिताजी को एक पत्र पर लिख कर छोड़ जाओ कि तुम विवाह नहीं करना चाहतीं, अन्यथा मुझे पिताजी को सब कुछ बताना पड़ेगा." उसे ज्ञात था कि क्या होने जा रहा है, इसलिए उस का साहस बढ़ गया था. उस ने उषा के बोलने से पहले ही कहा, "नहीं, मुझ पर दौरा नहीं पड़ रहा है या तनाव भी नहीं अनुभव हो रहा है. मैं यह सब अपनी ओर से नहीं कह रही हूं. इन बातों को कोई और भी प्रमाणित करने जा रहा है."

"निस्संदेह, वह डाक्टर सत्यप्रकाश है," उषा ने धीरे से हंसते हुए कहा.

"हां, डाक्टर सत्यप्रकाश." चित्रा अब जरा भी भय अनुभव नहीं कर कर रही थी. वह अपने को पूर्णतया सुरक्षित समझ रही थी. वह कुछ ही क्षणों में उस की सहायता के लिए आने वाला था और तब तक किसी भी मूल्य पर वह उषा को रोकने का निश्चय कर चुकी थी. "वह तुम को अच्छी तरह जानता है. तुम्हीं ने वे गुमनाम पत्र भेजे थे—और अन्य सभी बातें."

उषा सोच रही थी. बाहर से शांत दिखाई देने पर भी वह अंदर से शांत नहीं थी. चित्रा को दिखाई दे रहा था कि उस की आंखों में बेचैनी थी. परंतु उस की वाणी अभी भी संतुलित थी जब उस ने कहा, "अन्य सभी बातें? जरा और अधिक स्पष्ट व्याख्या करो."

"ठीक है." अनायास ही मेज पर रखी टाइमपीस पर चित्रा की निगाहें जा टिकीं. एक बज कर बारह मिनट हो रहे थे. "यदि तुम पूछना ही चाहती हो तो मैं बताती हूं. वह जानता है कि तुम ने अपने बूढ़े पति की हत्या की और तुम उस से इसलिए घृणा करती हो कि उस ने तुम को उस की हत्या करने से रोकने का प्रयास किया था और तुम ने उस का व्यापार चौपट करने के लिए उस के रोगियों को गुमनाम पत्र लिखे..."

कहीं न कहीं कुछ भूल हो गई थी.

जब वह बोल रही थी तो उषा ने यह ताड़ लिया था. उषा मुसकरा रही थी. यह कठोर हंसी थी. उस ने धीरे से कहा, "जब तुम ये झूठे अभियोग लगा चुकोगी तो मुझे भी तो उत्तर देने का अवसर मिलेगा. शायद तुम्हें पता नहीं है कि तुम्हें ऐसे झूठे अभियोग लगाने पर दो वर्ष की जेल हो सकती है."

चित्रा को उस की बात पर विश्वास न था, परंतु उसे इस की चिंता न थी. वह ऐसे स्थान पर पहुंच चुकी थी जहां से वह लौटना ही नहीं चाहती थी, इस का परिणाम चाहे जो भी हो.

"मुझे इस की जरा भी चिंता नहीं है," उस ने उत्तर दिया, "परंतु मैं यह जानती हूं कि मैं तुम को अपने पिता से विवाह करने तथा उन की हत्या करने की अनुमति कभी नहीं दे सकती." चित्रा का चेहरा पीला पड़ गया था, वह जल्दीजल्दी सांस लेने लगी थी. "यह सब तुम डाक्टर सत्यप्रकाश से पूछ लेना. वह पीली कोठी में तुम्हारे प्रपंच के विषय में अच्छी तरह जानता है."

यह अंधेरे में चलाया गया तीर था और प्रतीक द्वारा गुमनाम टेलीफोन सूचना की प्राप्ति पर आधारित था, परंतु इस का स्पष्ट प्रभाव पड़ा. उषा की शांत भावना अकस्मात ही अंतर्धान हो गई. वह तन कर खड़ी हो गई. उस की आंखों में द्वेष तथा क्रोध भर गया. इस से चित्रा कुछ भयभीत हो उठी.

"ओह!" उस की वाणी में धमकी थी. "क्या जानता है? फिर तो शायद तुम इस का भी स्पष्टीकरण दे सकती हो कि वह वहां क्या कर रहा था. तुम उस के प्रेम में फंस गई हो, ... है या नहीं? फिर तो ठीक है, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि पुलिस उस की खोज में है, उस पर हत्या का अभियोग है."

"मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकती," चित्रा ने उत्तर दिया.

"नहीं करतीं?" उषा ने ... मारने वाले सांप के समान सिर मोड़ते हुए कहा, "क्या तुम विश्वास करती हो, मुझे दोपहर तक पुलिस हेड क्वार्टर में रहना पड़ा? मुझ से मेरी कोठी के विषय में भांतिभांति के प्रश्न पूछे गए. उस रात्रि में, जिस रात्रि तुम वहां थीं, एक व्यक्ति मारा गया—उस की हत्या कर दी गई. इस का विरोध करने का प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि उस के दोनों हाथ पीछे थे और सिर के पिछले भाग में गहरा घाव था. किसी ने उस की हत्या कर दी. तुम ने स्वयं मुझे बताया था कि उस रात्रि कोठी में कोई नहीं आया. पुलिस जानना चाहती थी कि मैं उस समय कहां थी. मैं ने उन्हें बताया—मैं तुम्हारे पिता के साथ भोजन कर रही थी. उन्होंने प्रश्न किया कि कोई अन्य व्यक्ति उस रात्रि को कोठी में गया. मैं ने झूठ बोला. जो कुछ मैं जानती थी, मैं ने उन्हें नहीं बताया. मैं तुम्हें बचाना चाहती थी, चित्रा. तुम्हारे लिए नहीं पर तुम्हारे पिता के लिए. यदि मैं यह कह दिया होता कि डाक्टर सत्यप्रकाश वहां था तो तुम भी उस के साथ छिप जातीं. अभी तक पंजाब के प्रत्येक समाचारपत्र में तुम्हारी कहानी छप गई होती—एक युवती पूरी रात अकेली एक हत्यारे के साथ! वे तो इस में और नमकमिर्च मिला देते—और न जाने क्याक्या कहते. तुम्हारे लिए और कर्नल जगमोहन के लिए मैं ने डाक्टर सत्यप्रकाश का भी नाम नहीं लिया. पर यदि जो मैं जानती कि वह बता दिया होता तो..."

—क्रमशः

अगले अंक में पढ़ें :

क्या चित्रा उषा राय और कर्नल जगमोहन के विवाह को रोकने में सफल हो जाती है?

हलका फुलका शिफ्ट कोट

...धिक सर्दी में बाहर निकलते समय अकसर समस्या सामने आती कि अच्छीखासी पोशाक शाल या कोट ...ढक कर छुप जाती है और व्यक्तित्व ...लबादा ओढ़े नजर आता है. उठती-...रती अल्हड़ किशोरियों को भला यह ... पसंद आने लगा. तो क्यों न ऐसा ... सामने से खुला बिना बांहों का ढीला-...ला कोट बुन लें कि भीतर का पुलोवर ... पूरा दिखता रहे और विपरीत रंगों ...ना कोट पूरी पोशाक की सज्जा करने ... साथ सर्दी में दुहरे वस्त्र का भी ...म दे.

इस शिफ्ट कोट की बुनाई भी ... सरल है. बिना बांहों के इस कोट ... ऊन भी एक पुलोवर से ज्यादा नहीं ...गी. लीजिए सीखिए :

...मग्री

(नाप अनुमानित 12-13 वर्ष की ...की के लिए)

तीन प्लाई की ऊन 10 गोले (250 ...म),

सफेद ऊन 2 गोले (50 ग्राम),

सलाइयां 10 और 12 नंबर की.

सामने व पिछला भाग इकट्ठा चढ़ा ...इए. पिछले भाग के लिए 120 और ...मने भागों के लिए 100, कुल 220 फंदे

...णा

10 नंबर की सलाई पर चढ़ाइए. दोनों ओर सीधी सलाइयां पहले सफेद ऊन से बुनिए. फिर दोनों ओर की सफेद पट्टी के लिए 10-10 फंदे अलगअलग सेफ्टी पिनों में पिरो कर छोड़ दीजिए. शेष फंदों पर सादी बुनाई (एक सलाई सीधी, एक उलटी) में कोट को कंधों तक बढ़ाइए, सीधा ही. हिप से कंधों तक की यह लंबाई लगभग 20 इंच या 50 सें. मी. आनी चाहिए. फिर मुड्ढे के लिए फंदे क्रमशः 6-4-3-2-1 घटाइए और कोट को तीन भागों में बांट कर अलगअलग बढ़ाइए. पिछला भाग कंधे तक सीधा आएगा. सामने भाग में हर आठवीं सलाई पर एकएक फंदा मामूली तिरछी 'वी' शेप के लिए घटाना चाहिए. शेष फंदे कंधे पर मिला कर बंद कर दें. पहियां, जेब, नीचे की झालर अलग से लगाई जाएंगी. सारी बुनाई एकदम सीधी, सरल है.

जेब और पट्टियां

12 नंबर की सलाई से दोनों ओर सीधी बुनाई में बुनिए. जेबों के लिए अलग चौकोर टुकड़े बुन कर यथास्थान (चित्र में दिखाए अनुसार) टांकिए. सामने की पट्टियों के लिए सेफ्टी पिनों में पि... फंदे उठाइए व लंबाई पूरी हो जाने... कोट के साथ सफाई से सी दीजिए. मु... की पट्टियां अलग बुन कर सिलाई क... क्योंकि कोट में बगल का जोड़ न होने... मुड्ढे पर से फंदे उठा कर बुनने में क... नाई होगी. इस तरह बुनना हो तो ... सलाइयों का प्रयोग करें व नीचे ... सिलाई को बीच से घटा कर तिरछा क... बस, कोट तैयार है. इसे भीगा कप... रख कर इस्तरी से पहले जमा लें. ... नीचे की झालर लगा कर कोट की ... लंबाई व सज्जा पूरी करें.

झालर

झालर के लिए सफेद ऊन के दो... किनारे पर क्रोशिए से पिरो कर... बांधती जाएं व 10 सें. मी. तक ... कर शेष काटती जाएं. बाद में फिर ... झालर को सिर से काट कर बराबर ... दें. तैयार 8 सें. मी. रह जानी चाहिए.

इस शिफ्ट कोट को तीनचार ... के बेलबाटम व पुलोवर के ऊपर प... जा सकता है. समान व विपरीत ... रंगों के साथ खिलेगा.

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● हमारी कक्षा में केवल दो लड़कियां थीं, शेष लड़के. कक्षा में सब से अगली पंक्ति में दोनों लड़कियों के लिए एक डेस्क सुरक्षित था.

एक दिन हिंदी के एक स्पष्टवादी शिक्षक की नजरें पढ़ातेपढ़ाते एक लड़के पर केंद्रित हो गईं, जो बारबार उन लड़कियों की ओर चोरी से देख रहा था. थोड़ी देर तक तो वह उस की इस हरकत की उपेक्षा कर के पढ़ाते रहे, पर काफी समय बीत जाने पर भी वह अपनी हरकत से बाज नहीं आया तो वह उसे संबोधित करते हुए बोले, "जनाब, उधर घूरघूर कर क्या देख रहे हो? उन में से एक भी नहीं मिलने वाली."

उन का इतना कहना था कि कक्षा के सभी लड़के जोर से हंस पड़े और उस लड़के ने फिर कभी भी आंख उठा कर इधरउधर न देखा.

—राजेंद्र पारखे, बल्ली राजहरा

● हमारे एक शिक्षक महोदय बहुत जोर दे कर कहा करते थे कि व्यक्ति अपने नाम में ही अपना आधा परिचय दे देता है. एक बार मैं ने अपने एक मित्र के साथ एक लड़के को चोरी करते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया और उक्त महोदय के पास ले गया. उन्होंने उसे डांटाडपटा. डांटडपट का असर न पड़ता देख उन्होंने रिपोर्ट करने के इरादे से उस लड़के का नाम पूछा. उस ने अपना नाम आनंद बताया तो वह चुप हो गए. हम दोनों मित्र मंदमंद मुसकाने लगे क्योंकि उन का नाम आनंदीलाल वर्मा था. उन्होंने डांटते हुए कहा, "जाओ, आगे से इस सफेदपोश नाम को बदनाम न करना." उस के बाद उन्होंने नाम की महिमा गाना छोड़ दिया.

—शेखर एरन, अहमदाबाद

● मैं बी. एससी. अंतिम वर्ष का विद्यार्थी था. परीक्षा से पूर्व हमें मेंढक के खून की स्लाइडें बनानी थीं. पहले प्रोफेसर साहब ने हमें एक स्लाइड बना कर दिखाई और हमें उसी प्रकार की स्लाइड बनाने का आदेश दे कर बाहर चले गए.

लगभग एक घंटे बाद प्रोफेसर साहब पुनः लौटे और सभी छात्रछात्राओं की स्लाइडें देखने लगे. लड़कियों की प्रत्येक स्लाइड पर उन के मुंह से निकला, 'वाह,' 'सुंदर,' 'एक्सीलेंट,' 'बेस्ट' आदि, पर लड़कों की हर स्लाइड पर वह कहते, 'बेकार,' 'जीरो,' 'वर्स्ट' आदि.

तभी एक शैतान लड़के की स्लाइड देख कर वह पूर्ववत बोल उठे, "क्या बेकार स्लाइड बनाई है तुम ने. एकदम जीरो."

"जी," लड़का आश्चर्य से बोला, "पर..."

"पर, क्या? 36 प्रतिशत अंक भी नहीं मिल सकते इस में."

"पर यह तो वही स्लाइड है जो आप बना कर छोड़ गए थे," लड़के ने साहस के साथ कहा.

"क्या...?" प्रोफेसर साहब की स्थिति देखते ही बनती थी.

—प्रदीपकुमार मेहता, भीलवाड़ा ●

झिलमिलाती जवाहराती खुशियां

नारी और शृंगार दोनों का एकदूसरे से अटूट संबंध है. गांव की अल्हड़ गोरी हो या नगर की आधुनिक नारी, शृंगार के प्रति सब का आकर्षण एक सा ही है. और आभूषण न हों तो शृंगार भला कैसे हो!

विवाह के अवसर पर दुलहन का साजशृंगार अनूठे ढंग से करते हैं. शहर की तरुणियां भी इस अवसर पर कितने ही फैशन के आभूषण पहन कर अपना शृंगार करती हैं. ग्राम्य अंचलों में पहने जाने वाले आभूषणों का भी अपना अनोखा रंग है. कोई भी आधुनिक नववधू इन आभूषणों में सचमुच खिल उठेगी.

गांवों में प्रचलित आभूषणों से शृंगार किसी भी आधुनिक वधू के सौंदर्य में चार चांद लगा देता है.

विवाह के अवसर पर महारानियों सा श्रृंगार करिए. यह दिन जिंदगी में फिर कभी लौट कर नहीं आता.
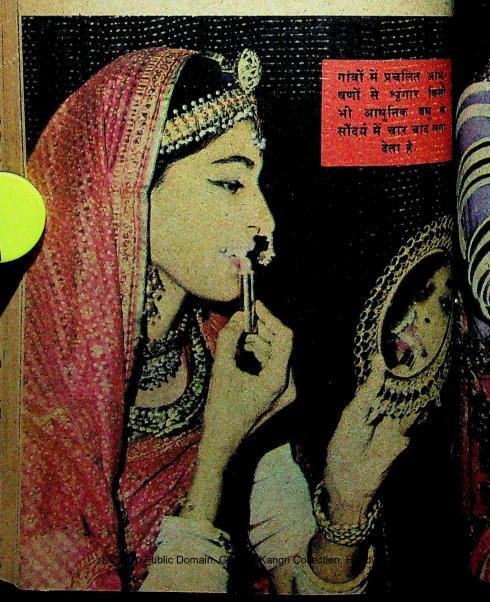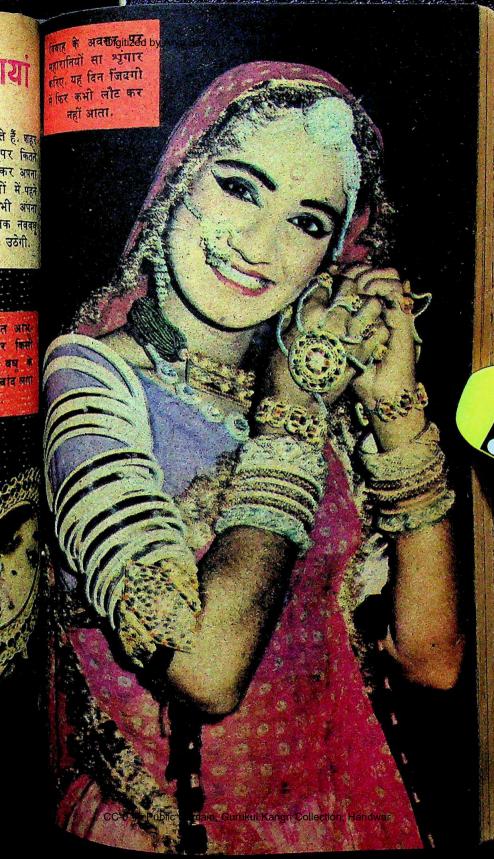
दोनों हाथ की उंगलियों में ये नाजुक, खूबसूरत अंगूठियां पहन कर देखिए. अपने हाथों पर आप स्वयं ही मुग्ध हो जाएंगी.

रूप का यह हिमालय...

बुद बखुद प्राण [illegible]
रूप का यह हिमालय पिघलने लगा.
घोल दी सांस में प्यार की गंध जो,
बात बेबात पर दिल मचलने लगा.

आंख ही आंख में कुछ इशारे हुए,
नेह का सूर्य नभ में चमकने लगा.
दिन गया सो गया, आंख में रात है,
वक्त ऐसे हमारा गुजरने लगा.

जिंदगी का महल था बना कांच से,
तुम ने छूआ तो कंचन बनने लगा.
याद उन की है बहुत बेरहम 'कल्पित'
गीत लिखने का मौसम सिसकने लगा.

—कृष्ण कल्पित

चित्रावली
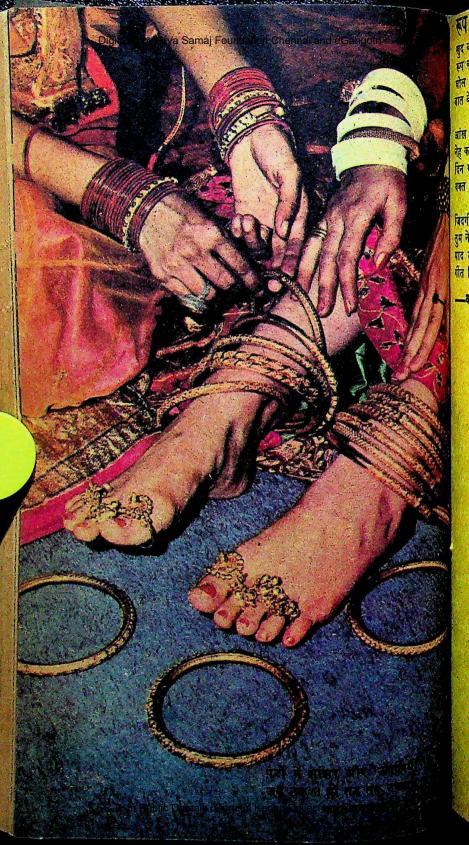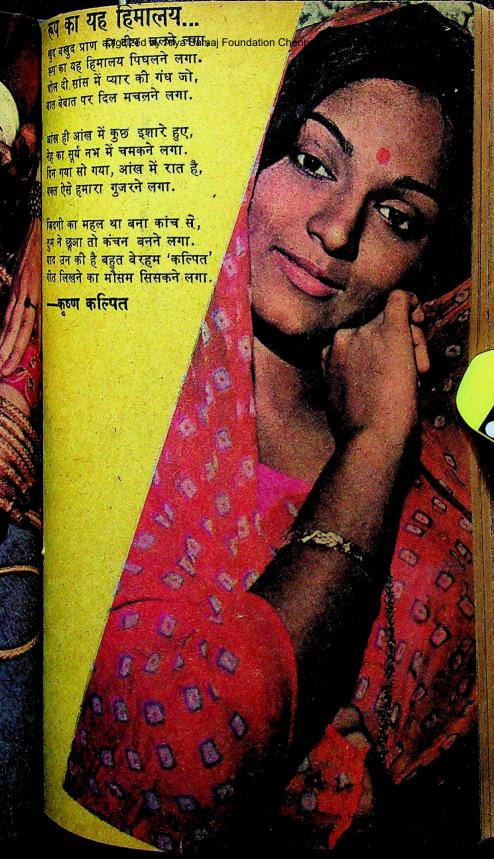
● अनठा अभिनंदन : ब्रिटिश नौसेना के इन दो नौसैनिकों ने अपने बीच बैठी 18 वर्षीया सुंदरी क्लेटे बेरटंन का प्रथम नौसैनिक महिला के रूप में अभिनंदन किया. क्लेटे बेरटंन पोर्टस्माउथ (इंगलैंड) के 'फ्रिगेट अपोलो' संस्थान में इंजीनियरिंग की प्रशिक्षणार्थी है और वह शीघ्र ही युद्धपोत की संचालन क्रिया का अध्ययन करने जा रही है.

● अप्रत्याशित गौरव : पिछले दिनों लंदन में आयोजित विश्व सुंदरी मेले में इंगलैंड की एक सुंदरी हेलन मारगेन को विश्व सुंदरी होने का गौरव प्रदान किया गया था. लेकिन शीघ्र ही उसे इस सुख से वंचित होना पड़ा, क्योंकि वह एक कुंआरी मां थी. अतः दूसरे स्थान पर आई दक्षिण अफ्रीका की एनीलीन क्रील को इस वर्ष की विश्व सुंदरी घोषित किया गया. चित्र में एनीलीन अपने मित्र जेम्स ...नान के साथ प्रसन्न मुद्रा में खड़ी है.

● यह अभिवादन कैसा? लंदन की गलियों में तीन पहियों की 15 सीटों वाली साइकिल पर सवार प्लेबाय क्लब (इंगलैंड) की सुंदरियों ने राह चलते लोगों को झुक कर अभिवादन किया. ये सुंदरियां साइकिल पर पैडल लगाते हुए आगे बढ़ीं तो इन्हें छठी का दूध याद आ गया. इस के बाद तो इन्होंने इस अनूठी साइकिल की प्रशंसा में घंटियां बजानी शुरू कर दीं. शायद इसलिए कि वे इसे एक रोज सफलतापूर्वक चला सकेंगी. इस के पीछे गरीब लोगों की सहायता के लिए पैसा एकत्र करने का गंभीर उद्देश्य बताया जाता है. उल्लेखनीय है कि इस साइकिल का निर्माण वहां की ही महिलाओं की एक संस्था ने किया है.

चरस

निर्माता रामानंद सागर फिल्म 'चरस' का निर्माण कर रहे हैं. फिल्म का संगीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने दिया है, गीत आनंद बक्शी के हैं तथा फोटोग्राफी प्रेमसागर की है. फिल्म के मुख्य कलाकार धर्मेंद्र और हेमा मालिनी हैं. अन्य कलाकार रूपेशकुमार, फरियाल, पद्मा खन्ना, जीवन, कुमकुम, सुरजीतकुमार हैं.

ढोंगी

फिल्म 'ढोंगी' का निर्देशन अशोक राय कर रहे हैं. फिल्म की कहानी प्रयागराज ने लिखी है तथा संगीत राहुलदेव बर्मन ने दिया है. फोटोग्राफी कपाड़िया की है. फिल्म के मुख्य कलाकार रंधीर कपूर तथा नीतू सिंह हैं. अन्य कलाकार प्रेमनाथ, फरीदा जलाल, असरानी तथा राजन हक्सर हैं.

(नीचे) 'ढोंगी' में रंधीर कपूर, नीतू सिंह और असरानी तथा (दाएं) 'चरस' में धर्मेंद्र और हेमा मालिनी.
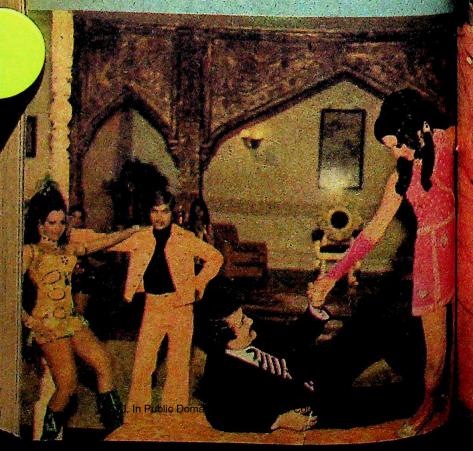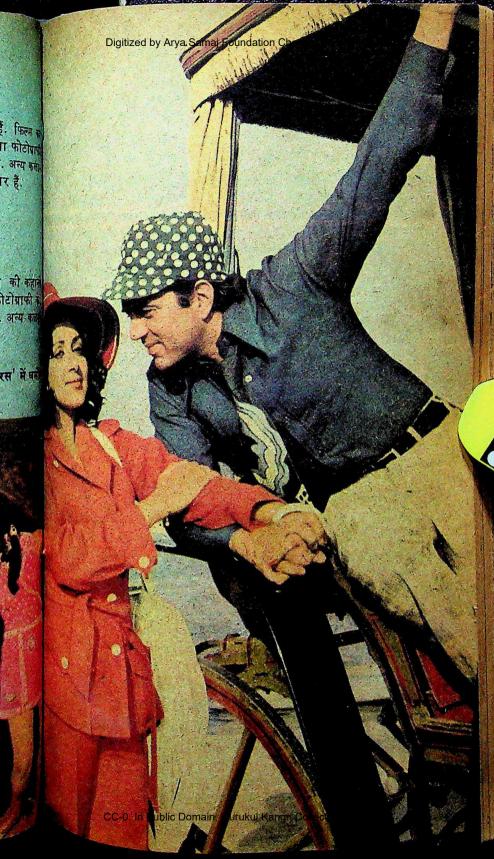
मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● मैं बी. एससी. (भाग प्रथम) का विद्यार्थी हूं. आयु 20 वर्ष है. मातापि... एक सज्जन को वचन दे चुके हैं कि मेरी शादी वे उन की लड़की से ही करेंगे. वैसे मु... लड़की पसंद है, पर उस की ऊंचाई मुझ से अधिक है, इसलिए सगाई से कतरा र... हूं. मेरी ऊंचाई बढ़ाने का या अन्य कोई उपाय बताइए. —सोमदत्त शर्मा, उ...

ऊंचाई बढ़ाने का कोई उपाय नहीं है. आप यदि लड़की को अन्य बातों... पसंद करते हैं तो इस हीन भाव को मन से निकाल कर उसे सहज रूप में स्वीका... कर लीजिए. यदि अभी दुविधा में रह कर आप उसे स्वीकारेंगे तो आगे चल... आप की यह हीन ग्रंथि आप के दांपत्य संबंधों में रुकावट डाल सकती है. तब दृ... से मना कर देना ही ठीक होगा. यों भी अभी आप की उमर सगाई या ब्याह... नहीं है. पहले कैरियर बनाइए. तब तक मातापिता भी शायद अपना निर्णय बदल... या उस लड़की की शादी अन्यत्र हो जाएगी. आत्मनिर्भरता तक किसी भी हा... में इस संबंध को टालिए. इस के बाद आप सही निर्णय करने में समर्थ हो सकेंगे.

● मैं ने बी. काम. पास किया है. आगे 'बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन' में एम... करना चाहता हूं. कृपया बताएं, कहां संपर्क करूं? —सुभाष जैन, गंगान...

दिल्ली, कलकत्ता, अहमदाबाद, पूना विश्वविद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम... अपने राज्य के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम भी देख लीजिए, शायद वहां भी को... व्यवस्था हो.

● मेरी आयु लगभग 20 वर्ष है. अभी हाल में गौना हुआ तो मैं ने पत्नी... पूछा, "तुम मेरे अधीन रहोगी या मुझे अपने अधीन रखना पसंद करोगी?" पत्नी... इस प्रश्न पर चुप रह गई. आप ही मार्गदर्शन करें. —व. द., इलाहाबा...

आप का प्रश्न गलत है. दोनों में से कोई किसी के अधीन हो कर क्यों र... एकदूसरे का सहयोगी, साथी बन कर क्यों न रहे? फिर भी हमारी समाजव्यवस्था... नुसार पति का कुछ अधिक अधिकार पत्नियां मानती ही हैं. आप स्वयं को इस यो... बनाइए कि पत्नी आप का अधिकार ही नहीं माने, आप का आदर भी करे.

● मेरे मुंह पर चारपांच साल से दाने निकल रहे हैं, पहले खुजली होती है, ठी... होने पर काले दाग पड़ जाते हैं. पूरा मुंह काले निशानों से भर गया है व भद्दा लग... है. किसी इलाज से फायदा नहीं हुआ. आप इलाज बताइए. —प्रमोदकुमार, सतौ...

किशोरावस्था और तरुणावस्था में बहुतों के चेहरे पर ऐसे मुंहासे निकल... हैं. दाग भी पड़ते हैं यदि उन्हें छीला या नोचा जाए. यदि अब नए मुंहासे नहीं निक... रहे हैं तो काले दाग मिटाने के लिए दूध में चिरौंजी घिस कर उस का लेप कुछ दि... तक नियमित रूप से करें. नहाने से आधा घंटा पहले लगाएं, फिर धो डालें.

नए मुंहासे न निकलें, इस के लिए भारी, तली हुई चीजों व अधिक ... पदार्थों का सेवन बंद कर अपने भोजन में सागसब्जी, फल व दूध की मात्रा बढ़ा... क... बिलकुल न होने दें. अश्लील साहित्य पढ़ते हों तो बंद कर के अच्छा साहित्य... ...हासों वाले चेहरे पर कभी भी चिकनाई का प्रयोग न करें. चेहरे पर ...

पानी में भीगा तौलिया रख कर मुंहासे वाले चेहरे को भाप दें ताकि त्वचा के छिद्र खुलें और भाप के तुरंत बाद ठंडे पानी के छींटे दें ताकि खून का दौरा ठीक हो.

चारपांच बार रोज तब तक ऐसा करें जब तक कि मुंहासे ठीक न हो जाएं. कोई दवा लगाने की जरूरत नहीं है. मुंहासे छीलें नहीं. चेहरे को थपथपा कर ही पोंछें.

● मैं 19 वर्षीया बी. ए. की छात्रा हूं. मुझे बारबार पेशाब आने की बीमारी है. मेरे दिमाग में भी परेशानी रहती है. व्यर्थ की बातें सोचती रहती हूं. स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है. क्या करूं? —क. ख. ग., नई दिल्ली

आप की पेशाब की कोई बीमारी नहीं है. मानसिक उलझन व उथलपुथल से ही आप को बारबार पेशाब जाना पड़ता है. अपने मन का विश्लेषण कर के देखिए कि आप की वास्तविक समस्या क्या है. उस पर विजय पाने व सहज रहने का प्रयत्न ही आप का इलाज है. स्वयं समाधान न मिले तो सफदरजंग अस्पताल में मानसिक चिकित्सक से परामर्श लीजिए.

● मैं बी. ए. की छात्रा हूं. मुझे हमेशा लड़कों से नफरत रही है. पर पिछले दिनों मातापिता के साथ पर्वतीय स्थल पर घूमने गई तो मेरी मुलाकात एक लड़के से हुई. उस ने मुझे एक पत्र दिया. मगर बिना जवाब दिए मैं वापस आ गई. फिर पत्राचार चलता रहा. कुछ दिन पूर्व वह मुझे यहां मिला और बताया कि उसे ऐसी बीमारी है जिस से अधिक दिन जी नहीं सकता. उस ने यह भी कहा कि मैं किसी और से शादी कर लूं. अब परेशानी के कारण पढ़ाई में मन नहीं लगता. समझ में नहीं आता, क्या करूं? घर वालों को कुछ नहीं मालूम. —अ. दे., करनाल

आप ने यह नहीं लिखा कि उसे क्या बीमारी है. आजकल अनेक दुसाध्य बीमारियों का इलाज संभव है. शायद घर वालों की सहमति न मिलने से विवाह की असमर्थता के लिए उस ने बहाना ही बनाया हो. बहरहाल, आप को उस की सदाशयता पर विश्वास कर के उस का कहना मान कर अन्यत्र ही विवाह करना चाहिए. भावुक न बनिए. व्यावहारिक बनिए व आगे उस लड़के से संबंध मत बढ़ाइए. अपनी पढ़ाई में, अन्य हाबियों में, सामान्य अध्ययन में व्यस्त रहिए. समय के साथ उसे भूल पाना संभव होगा. पढ़ाई की समाप्ति पर किसी अन्य से विवाह कर सकती हैं.

● मैं 34 वर्षीय मध्यम परिवार का लड़का हूं. दस वर्ष पूर्व हिंदू रीति से मेरा विवाह हुआ था. पत्नी शादी के बाद मुश्किल से केवल एक महीना मेरे साथ रही. वह लगातार पीहर में ही रहती है. अब एक बच्चे की मां भी है. मेरे परिवार के लोग उसे लाने के लिए सब प्रयत्न कर के हार गए. चार साल कोर्ट में भी धक्के खाए, फिर जज साहब ने कागज पर समझौता करवा कर केस खत्म कर दिया.

लड़की के पिता बेकार हैं. वह लड़की की कमाई पर ही निर्भर हैं, इसलिए उसे शह देते हैं. दोबारा केस चलाने के लिए न पैसा है, न हिम्मत. पत्नी हमेशा पत्रों में सुझाती है कि मैं उस की मानसिक शांति के लिए दूसरा विवाह कर लूं. लगता है, शुरू से ही उस के जीवन में कोई और है. मुझे क्या करना चाहिए? —अनाम, जोधपुर

पत्नी आप के पास क्यों नहीं आना चाहती, इस बात का पूरा पता आप के पत्र से नहीं लगता. शायद आप वास्तविक कारण जानते हों, पर छिपा रहे हों.

बहरहाल, अब उसे जबरदस्ती लाने का प्रयत्न छोड़ कर आप के लिए तलाक का ही रास्ता शेष है. पहले का 'कागजों पर समझौता' आप की स्वीकृति बिना तो नहीं हुआ होगा. यही आप ने गलती की. अब यदि आप ने पत्नी से अलहदगी की अवधि को कानूनी अलहदगी में बदलवा रखा है तो दोबारा केस करने (पूर्व समझौता भंग करने के आधार पर ही) पर आप को शीघ्र तलाक मिल सकेगा. निराश न हो कर उचित ढंग से काररवाई कीजिए. बिना तलाक प्राप्त किए मात्र पत्नी के सुझाव पर आप दूसरी शादी नहीं कर सकते. —नीरजा ●

मुक्ता

गुलाबी आंख के दरपन में...

चमन के खुशनुमा पहलू में [illegible] गया,
खड़ा था इस तरह बुत सा कि झुकना भूल गया.

कली के गाल पर यह तिल कहां से उग आया,
बड़ा मगरूर है भंवरा कि उड़ना भूल गया.

गुलाबी आंख के दरपन में सूरत उभरी है,
भरी बहार में गुलशन संवरना भूल गया.

सिखा गए हैं इशारे वे इस तरह मुझ को
खुली किताब का मजमून पढ़ना भूल गया.

अंधेरी रात में चमकी शमां दरिंदे सी
परिंदा शाख से नीचे उतरना भूल गया.

—किशोर काबरा

शर्मिला टैगोर

शर्मिला टैगोर हिंदी रजतपट की प्रतिभासंपन्न, अभिनेत्री है. र उस के साथ खेदजनक बात यह है वह न तो पूरी तरह कलात्मक फिल्मों दायरे में बंध पाई है, और न ही व्याव-सायिक क्षेत्र में चोटी पर पहुंच सकी है. क्ति सामंत जब उसे बंगला चित्रों से श्मीर की कली' में लाया तो उस ने से एक शोख लड़की (ग्लैमर गर्ल) के प में ही प्रस्तुत किया. फिर शर्मिला की भूमिकाएं 'सावन की घटा' व 'पेरिस की शाम' तक शोख लड़की की ही रहीं.

. गिरधारीलाल पाहवा
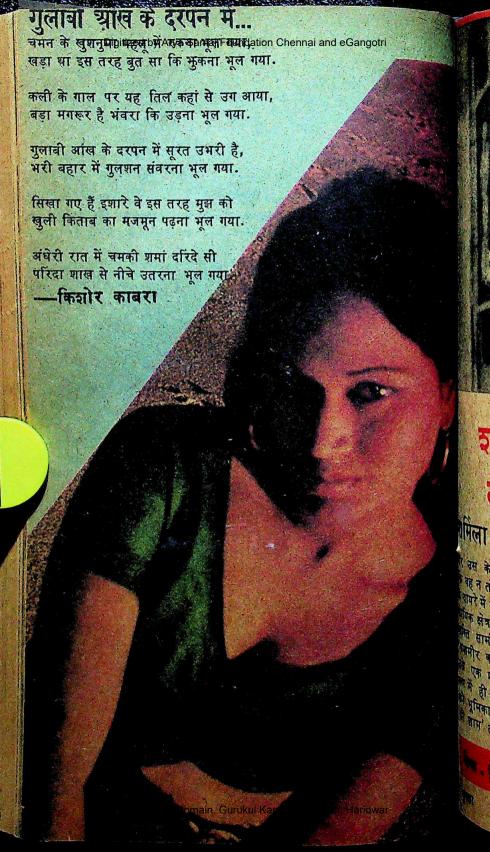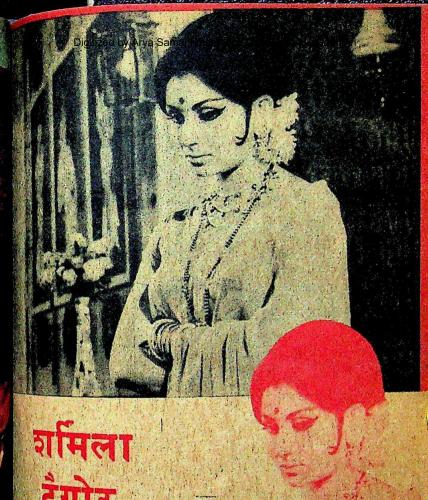
हिंदी फिल्मों में आने के बाद शर्मिला अपनेआप को बंबइया माहौल में नहीं ढाल पाई लेकिन कई समझौते उसे करने पड़े. अपनी भूमिकाओं के चयन में वह इतनी सावधान रही कि बड़ी लागत की कई फिल्में भी उस ने अस्वीकार कर दीं.

व्यावसायिक फिल्मों के दस साल के अभिनय जीवन में उस की 'आराधना,' 'अमर प्रेम,' 'दाग,' 'आ गले लग जा,' 'तलाश' आदि चंद रजत जयंती मनाने वाली फिल्में हैं, जब कि लीक से हट कर बनी फिल्मों में 'अनुपमा,' 'सत्यकाम,' 'देवर,' 'सफर,' और हाल में प्रदर्शित 'आविष्कार' हैं. 'सुहाना सफर,' 'दिल और मुहब्बत,' 'यकीन,' 'आमनेसामने,' 'प्यासी शाम,' 'मालिक,' 'राजारानी,' 'दास्तान,' 'यह गुलिस्तां हमारा,' 'हमसाया,' 'शैतान' आदि दर्जन भर फिल्में ऐसी हैं जिन्हें व्यावसायिक दृष्टि से कामयाबी नहीं मिली और दर्शकों की प्रशंसा से भी वह वंचित रही. उस ने शादी की और वह मां बनी, पर फिल्मों से संन्यास लेने का उस ने जिक्र तक नहीं किया.

आज हेमा मालिनी के बाद शर्मिला दूसरे नंबर की अभिनेत्री है. फिल्म उ[illegible] में उस की मांग है. लाखों में वह पा[illegible] श्रमिक लेती है, लेकिन कोई भूमिका स्[illegible] करने के बाद वह कहानी का, वि[illegible] रूप से अपनी भूमिका का, गंभीरतापू[illegible] अध्ययन कर लेती है. अन्य नायिका[illegible] की तरह वह फिल्मों का ढेर लगाने [illegible] विश्वास नहीं करती.

बंबई की हिंदी फिल्मों में आ[illegible] शर्मिला ने क्या पाया? सत्यजीत रे [illegible] 'देवी' को देख कर हर जागरूक द[illegible] ने शर्मिला को सराहा. काननदेवी [illegible] पति हरिदास भट्टाचार्य के निर्देशन [illegible] बनी 'शेषांक' में वह उत्तमकुमार के सा[illegible] नायिका बनी. फिर तपन सिन्हा [illegible] 'निजन शोमको थाम' व 'छायासुर्वि' [illegible] भी उस की प्रभावशाली भूमिकाएं रहीं पर 'कशमीर की कली' के बाद उस [illegible] एकाएक अपनी इमेज बदली.

पहली बार साधारण से कद [illegible] दुबलीपतली गोरी सी शर्मिला को [illegible] कर कुछ भी ऐसा नहीं लगा जिस [illegible] बदौलत शर्मिला को सौंदर्य सम्राज्ञी क[illegible] जा सकता. मधुर मुसकान से भरे ग[illegible]

फिल्म 'आविष्कार' में शर्मिला टैगोर राजेश खन्ना के साथ : भावपूर्ण अभिनय.

'यह गुलिस्तां हमारा' में शर्मिला टैगोर और सुजीतकुमार : भूमिका कोई भी हो, शर्मिला टैगोर उस का गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर लेती है.

पड़ते गालों से वह दर्शकों का ध्यान बरबस आकृष्ट कर लेती है, पर मोटे फ्रेम के चश्मे में सारी खूबसूरती खो बैठती है. शुरू में उस का हिंदी उच्चारण दोषपूर्ण था. धीरेधीरे उस के अभिनय में परिपक्वता आती गई और यह दोष भी नहीं रहा.

समर्थ निर्देशकों का अभाव

कुछेक अपवादों को छोड़ कर हिंदी क्षेत्र में ऐसे समर्थ निर्देशकों का अभाव है जो अभिनेत्रियों में छिपी प्रतिभा को परख सकें तथा उन को सही ढंग से प्रस्तुत कर सकें. इन अपवादों में हृषिकेश मुखर्जी, असित सेन, गुलजार और बसु भट्टाचार्य के नाम उल्लेखनीय हैं. हृषिकेश मुखर्जी ने 'अनुपमा' में शर्मिला को चुनौती भरी भूमिका दे कर उस की शोख़ी भरी अदा को बदला. उस ने कहा, "मुझे 'अनुपमा' की भूमिका के लिए ऐसी लड़की चाहिए थी जो कम उमर हो, जिस के चेहरे पर मासूमियत हो, जिसे देख कर करुणा जागे, जो जबान से एक शब्द न कहे और आंख से कुछ अनकहा न छोड़े. ऐसी लड़की कहां है? एक रात मुझे शर्मिला का खयाल आया. मैं ने उसे हटाना चाहा, पर बारबार घूम कर उसी का चेहरा सामने आता. तब मैं ने जाना कि सत्यजीत रे ने सिर्फ आंखों के कारण ही नहीं, बल्कि उस की गहन गंभीर प्रतिभा के कारण ही उसे चुना होगा."

'अनुपमा,' 'सत्यकाम,' 'सफर' और 'आविष्कार' देखने के बाद लगता है कि हृषिकेश मुखर्जी का विश्वास सही था.

'अनुपमा' के बाद 'आराधना' की दोहरी भूमिका में शर्मिला ने जो सुलझा हुआ अभिनय कर दिखाया, उस से निर्माताओं में उस के प्रति नया विश्वास जागा. अपनी सिद्धहस्त कला से शर्मिला चोटी की अभिनेत्री बन गई. उसे अनेक फिल्में मिल गईं. राजेश खन्ना और शर्मिला की जोड़ी खूब चमक उठी. फिर विवाह के बाद शर्मिला ने अपनी इमेज को निखारा. उस के अभिनय में परिपक्वता आई, हालांकि व्यावसायिक फार्मूले पर बनी फिल्मों से वह मुक्त नहीं हो पाई.

"क्या अब भी आप 'इवनिंग इन पेरिस' की तरह की किसी उत्तेजक या सेक्सी फिल्म में अभिनय करना पसंद

मेरे इस प्रश्न पर कुछ खिन्न स्वर में शर्मिला बोली, "अब मैं न तो शोख यानी ग्लैमर वाली भूमिकाएं ले रही हूं, न ही हलकेफुलके रोल करना चाहती हूं. पहले भी मेरी रुचि सस्ती फार्मूला फिल्मों में न थी, पर एक ढर्रा सा बन गया था. निर्माता ऐसी ही भूमिकाएं ले कर आते. उन का मत था कि दर्शक मुझे सेक्सी रोल में ही पसंद करेंगे—मिनी स्कर्ट या नहाने वाली पोशाक में; और मैं भी सायरा की तरह सफल सुंदरी हूं. फिर मैं ने महसूस किया कि ये भूमिकाएं मुझे स्टार भले ही बना दें लेकिन कुशल अभिनेत्री नहीं सिद्ध कर सकतीं. इन से मैं यश और धन अर्जित कर सकती हूं, पर ये फिल्में और इन की शर्मिला जल्दी ही दर्शकों के मानसपटल से मिट जाएगी जब कि 'देवी,' 'अपूर संसार,' 'अनुपमा' और 'सत्यकाम' की बदौलत वर्षों जिंदा रहेगी. फिर कला की प्यास, आत्मा की तृप्ति उन्हीं फिल्मों के माध्यम से ही संभव है जिन में कुछ वजन हो."

"आप ने 'आविष्कार' की मानसी के चरित्र को जिस सजीवता से अदा किया, उस ने 'सत्यकाम' और 'सफर' को बहुत पीछे छोड़ दिया है. आप अपनी किस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ मानती हैं?"

"अपनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म किसे कहूं? न जाने भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है. मैं अभी फिल्मों में बरकरार हूं और उन से संन्यास लेने का मेरा कोई इरादा नहीं है. मैं ऐसी भूमिकाएं अदा करना चाहती हूं जो जीवन के किसी न किसी पहलू को छूती हों. कौन सा हीरो है या कैसा निर्माता है, यह देखने की अपेक्षा मैं निर्देशक, कहानी और भूमिका की श्रेष्ठता पर अधिक बल देती हूं.

"आज 'आविष्कार' की मानसी मात्र एक फिल्मी चरित्र नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं की प्रतीक है. मैं इस चुनौतीपूर्ण रोल में कहां तक सफल रही, इस का निर्णय तो आप करेंगे."

"क्या 'आराधना' में वृद्धा का रोल करने के बाद आप की लोकप्रियता पर असर नहीं पड़ा?"

"नहीं, बिलकुल नहीं," विश्वास भरे स्वर में शर्मिला बोली, "मैं ने आत्मविश्वास के साथ थकीहारी बुढ़िया का मेकअप कराया. मैं अब ऐसी कठिन व चुनौती से भरी भूमिकाएं निभाना चाहती हूं जिन से कला में निखार आए. इस से कलाकार की प्रतिभा उभरती है.

"मैं कभीकभी महसूस करती हूं कि यहां के तौरतरीकों में मैं पूरी तरह खप नहीं पाई. यहां सिर्फ अच्छी अभिनेत्री होना, अपने दायित्व के प्रति ईमानदार रहना या निर्मातानिर्देशक को अपेक्षित सहयोग देना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि सस्ते प्रचार की जरूरत है. फिर, कलाकार की कलाक्षमता की बजाए फिल्म की टिकट खिड़की की सफलता उस के भाग्य का निर्णय करती है. यहां का मानदंड तो टिकट खिड़की की कामयाबी है."

"क्या शादी के बाद हीरोइन के मार्केट मूल्य पर असर पड़ता है? इस बारे में आप का क्या अनुभव है?"

"मैं ऐसा नहीं मानती. वैसे इस बारे में अपनाअपना नजरिया है. सायरा की मांग शादी के बाद बढ़ गई. इसे संयोग ही कहिए कि मैं ने 'जानी मेरा नाम' की वह भूमिका नहीं स्वीकार की जो हेमा ने निभाई और फिल्म के चलते ही वह चढ़ गई.

"मैं घर और स्टुडियो की जिंदगी को अलग रखती हूं. मेरे पति मेरे अभिनय संबंधी कार्यों में दखलअंदाजी नहीं करते. मैं ने कभी फिल्मों से संन्यास लेने की बात नहीं कही, न मैं समझती हूं कि मेरी मांग कम हुई है. हां, मैं फिल्मों के चुनाव में जरूर सावधानी बरतती हूं. पांचछः से अधिक फिल्में रखना मुझे अच्छा नहीं लगता. मैं समझती हूं, ज्यादा फिल्में एक साथ होने पर कलाकार अपनी भूमिकाओं के प्रति न्याय नहीं कर सकता."

नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता

1200 रुपए के पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए **द्वितीय पुरस्कार : 150 रुपए**
तृतीय पुरस्कार : 100 रुपए **15 अन्य पुरस्कार : 50 रुपए प्रत्येक**

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मुक्ता द्वारा यह प्रतियोगिता लेखन में रुचि रखने वाले नए लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित की जा रही है. इस प्रतियोगिता में केवल वही प्रतियोगी भाग ले सकेंगे जिन की कोई भी कहानी अब तक कहीं भी प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है.

कहानी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या ऐतिहासिक परिवेश को ले कर लिखी जा सकती है और उस में जीवन के किसी भी पक्ष का चित्रण किया जा सकता है. कहानी का उद्देश्यपूर्ण एवं मुक्ता की नीति के अनुकूल होना जरूरी है. कहानी की शब्दसंख्या दो से चार हजार तक हो सकती है. वह पर्याप्त हाशिया छोड़ कर कागज के एक ओर टाइप की हुई या साफ अक्षरों में लिखी होनी चाहिए.

कहानी के साथ एक अन्य कागज पर लेखक की ओर से यह घोषणा की जानी चाहिए : **"मैं घोषित करता हूं कि अब तक मेरी कोई भी कहानी कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. यह कहानी मेरी अपनी लिखी हुई है, मौलिक, अप्रकाशित व अप्रसारित है. 'नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता' के निर्णय की घोषणा होने तक यह कहीं भी प्रकाशित या प्रसारित नहीं कराई जाएगी, और न कोई दूसरी कहानी ही प्रकाशित या प्रसारित कराई जाएगी."**

अस्वीकृति की स्थिति में वापसी के लिए साथ में टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा होना चाहिए, अन्यथा रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का पत्रव्यवहार करना संभव न होगा.

पुरस्कृत कहानियों पर मुक्ता संचालकों का सर्वाधिकार होगा. प्रतियोगिता में संपादक, मुक्ता, का निर्णय अंतिम व मान्य होगा. प्रतियोगिता का परिणाम उपयुक्त समय पर मुक्ता में प्रकाशित किया जाएगा.

कहानियां भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 1975 है.

कहानियां निम्न पते पर भेजें
'नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता'
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

बेहद कोलाहल. झंडियां और फीते, जैसे कोई मेला लगा हो. हर ओर जोश और उल्लास का वातावरण. लाउड स्पीकरों की चीखपुकार कानों के पर्दे फाड़ रही है. मशीनों की घरघराहट. चारों ओर बेशुमार लोग. दमकते चेहरे. खेमे गड़े हैं. बाजियां लग रही हैं. नएनए होटल और रेस्तोरां खुल गए हैं. खानेपीने के साथ नाच का दौर भी चल रहा है. क्या कोई मेला लगा है? नहीं जनाब, यह मोटर रेस यानी मोटरों की दौड़ हो रही है.

थोड़ी ही देर में संकेत मिलेगा. पुलिस वाले भीड़ नियंत्रित करने लग जाएंगे. गाड़ियां आने ही वाली हैं. लीजिए, उन का सिलसिला शुरू हो गया. तेजी से कारें आ रही हैं. लोग हाथ हिला रहे हैं. शोर, और शोर. चालक ने हाथ उठाए और आगे बढ़ गया. एक के बाद दूसरी का नंबर. उत्सुकता से प्रतीक्षा. दबने या चोट लगने का कोई भय नहीं. पास ही अस्पताल है, जहां 70 बेड, 10 एंबुलेंस सहित चालीस डाक्टर सेवा के लिए हैं.

मोटर रेस आज संसार का सब से खतरनाक खेल माना गया है. चालक के लिए तो यह खतरनाक है ही. तेज कार चलाते हुए न जाने कितनी दुर्घटनाएं हुईं. भयंकर रास्ते और आड़ेतिरछे मोड़ों पर वेग से भागती गाड़ी उलट गई. देखने वाले भी कभीकभी चपेट में आते देखे गए हैं. पहाड़ों, जंगलों और खतरनाक घाटियों के खतरे अलग. फिर भी इस रोमांचक खेल के प्रति न तो दर्शकों में उत्साह कम हुआ है और न दुर्घटनाओं से भयभीत हो कर चालक ही पीछे हटे. और तो और, महिलाएं भी इस मौत और जिंदगी की आंखमिचौनी वाले खेल में भाग लेती रहीं.

पहली मोटर रेस

पहली मोटर रेस एक प्रयोग के रूप में आयोजित हुई थी. इस का आयोजन एक समाचारपत्र की ओर से किया गया

लेख • शिवनंदन कपूर

मोटर रेस

संसार का सब से रोमांचक खेल

था. पुरस्कार भी रखा गया था. सन 1894 में हुई यह दौड़ पेरिस से रुएन, और वापस रुएन से पेरिस के रूप में रखी गई थी. इस दौड़ में प्रतियोगी तो कुल 56 थे, पर उत्साह में आ कर 102 और लोग इस में शामिल हो गए थे. प्रथम पुरस्कार पैनहार्ड और प्यूगाट कारों के बीच बंट गया था. लोगों का उत्साह देख कर इस खेल का प्रचलन बढ़ा. दौड़ के लिए दो बड़े शहरों के बीच का पहाड़ी रास्ता चुना जाने लगा. पुलिस लगी रहती, पर और सवारियां भी चलती रहतीं. इस से चालकों को असुविधा होती थी.

मोटर रेस के क्षेत्र में पहली ट्राफी जेम्स गोर्डन बैनेट ने प्रारंभ की थी. उस के नाम पर दौड़ का नाम भी गोर्डन बैनेट रेस रखा गया. गोर्डन बैनेट रेस काफी कठिन रहती थी. इस दौड़ की प्रतियोगिता में भाग लेने वाला हर देश तीन कारें दौड़ में भाग लेने के लिए भेजता था. इस दौड़ में एक कार दूसरी से प्रतियोगिता नहीं करती थी बल्कि एक देश दूसरे का प्रतियोगी रहता था. राष्ट्रों की प्रतियोगिता होने से इस दौड़ की एक आवश्यक शर्त थी. वह यह कि भाग लेने वाली कार का एकएक पुर्जा उस के ही राष्ट्र में बना हो. इस तरह यह पूर्ण रूप से विभिन्न देशों की प्रतियोगिता रहती थी. कई दुर्घटनाएं होने के बाद फ्रांसीसी सरकार ने बोरडो में होने वाली कार रेस पर रोक लगा दी. उस के बाद तिकोनी गोलाई में, और हर तरफ से घिरी सड़क पर दौड़ शुरू हुई. पुलिस का अच्छा प्रबंध हुआ. विशेष प्रकार की सड़क पर कार रेस की जाने लगी. तीसरी गोर्डन बैनेट कार रेस इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आयरलेंड में आयोजित हुई.

गोर्डन बैनेट कार रेसों में सदा फ्रांस ही विजयी होता रहा. इसलिए उस नियम में सुधार किया गया, जिस के अनुसार केवल विशिष्ट तीन प्रकार की कारों का ही प्रयोग करना होता था. अब रेस में
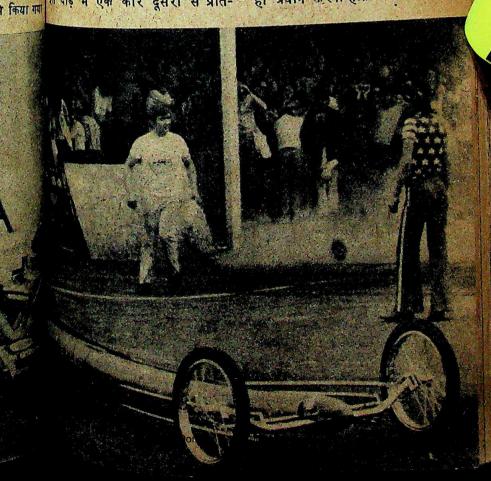
कई तरह की कारें प्रयोग में आने लगीं. हर देश के अनुसार कारों के अलगअलग रंग होने लगे. ब्रिटेन की हरी, फ्रांस की नीली ही नीली कारें, जरमनी की सफेद, इटली की लाल गाड़ियां आदि. इस कार रेस को 'ग्रे. प्री. रेस' का नाम दिया गया. यह सारे संसार में बहुत ही लोकप्रिय हुई. इस रेस में प्रतियोगिता भी विकट होती थी. सन 1909, 1910 और 1911 में कोई दौड़ नहीं हुई. मर्सिडीज कंपनी ने सन 1914 से नई परंपरा और नए नियमों का प्रारंभ किया.

आज कार दौड़ के प्रति लोगों की रुचि ज्यादा से ज्यादा हो रही है. अधिक से अधिक लोग उसे देखने लगे हैं. यूरोप और अमरीका में यह शौक और भी जोर पर है. आज ढाई करोड़ से भी अधिक जनसमूह इसे देखता है. जून, 1955 में फ्रांस में हुई कार दौड़ में कम से कम 80 लोग मर गए. फिर भी जरमनी के नूरेम्बर्ग में हुई दौड़ में पांच लाख दर्शक रहे. इटली के मिलेमिगलिया नामक स्थान की रेस में तो पचास लाख लोग जमा हुए. मैक्सिको और ब्युनोआयर्स की दौड़ में भी लाखों की भीड़ होती है. यूरोप के तथा संसार के अन्य देशों की अपनीअपनी 'ग्रे. प्री. रेस' होती है. उस में तो अंक पाने के साथ यूरोप के बाहर के दो स्थानों इंडियाना पोलिस और ब्युनोआयर्स की दौड़ों में विजेता होने पर ही कोई विश्व विजेता कहलाता है.

भयंकर रास्ते का रोमांच

'ग्रे. प्री. रेस' में भयंकर रास्ते का रोमांच उत्साही चालकों को आकर्षित करता है. 300 मील की दौड़ शहर के बीच से हो कर देहातों के मध्य से चलती है. इस में भी सब से खतरनाक नरबरग्रिंग का 14 मील का चक्कर है. पहाड़ियों के ऊंचेनीचे रास्ते और बीहड़ जंगल के अलावा इस में 174 भयंकर मोड़ हैं. उन में कैंची मोड़ भी है, अंगरेजी के 'एस' अक्षर के आकार के घुमावदार मोड़ हैं. दाहिनी ओर और झुकावदार मोड़ हैं. जूते की नाल जैसे अनेक घुमाव हैं.

मजबूत उपकरण

कारों का निश्चित वजन रहता है. वे आकार में ही 'टारपीडो' जैसी नहीं रहतीं, वैसी ही भयंकर भी होती हैं. साधारण कार के सब उपकरण 'रेसिंग कार' में होते हैं. पर इस के उपकरण अधिक शक्तिशाली और विशेष रूप से दृढ़ बनाए गए होते हैं. इस के टायर दोगुने मजबूत और अधिक दाम के होते हैं. छोटी दौड़ों में भी अकसर दो सेट टायरों का प्रयोग होता है. कारण, रास्ते की भयंकरता है. मैक्सिको के ज्वालामुखी पर्वत वाले खतरनाक रास्ते 70 मील की दूरी में ही नए टायर के चिथड़े उड़ा देते हैं. ब्रेकिंग सिस्टम को ठंडा रखने का खास इंतजाम रहता है. फिर भी उस के हिस्से जल जाते हैं. साधारण ड्राईवर के ब्रेक का जो अस्तर साल भर तक चलता है, वह इस प्रकार की एक ही लंबी दौड़ में खत्म हो जाता है क्योंकि कभीकभी तो इस में औसतन तीसरे मील पर ही ब्रेक लगाने की जरूरत पड़ जाती है.

रेसिंग कार के स्पार्किंग प्लग साधारण प्लगों से तीन गुना महंगे होते हैं फिर भी तिगुने घिसते हैं. ईंधन भी इस दौड़ में विशेष लगता है. विशेष रसायनों से मशीन का परीक्षण चलता है. टायरों के दबाव और सुरक्षा आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है.

दौड़ प्रारंभ होने के कई दिन पूर्व से ही विशेष मार्ग की देखभाल प्रारंभ हो जाती है. पुलिस का प्रबंध तो रहता ही है, स्थानस्थान पर जनता स्वागत के लिए झंडियां आदि लगाती है. लाउड स्पीकरों की कानफोड़ गूंजें और उल्लास भरा कोलाहल. दूरदूर से आए दर्शकों के लिए जगहजगह रेस्तोरां खुल जाते हैं. कार पार्क करने के स्थान बनाए जाते हैं, जहां सैकड़ों कारें खड़ी की जा सकें. ऐसे में पास ही जाते हैं. हवाई अड्डे के पास भी कारें खड़ी करने की व्यवस्था की जाती है. अस्पताल एवं जनसेवागृह खुलते हैं

दौड़ प्रारंभ होने से पहले चारों ओर उत्सुकता अपनी चरम सीमा पर रहती है. मिस्त्री कारों की आखिरी देखभाल में लगे रहते हैं. भावी संघर्ष का जोश! चालक अपनी आखिरी सिगरेट के कश खींच रहे हैं. चारों ओर वेग से धड़कते कलेजे. जाने क्या होगा! लीजिए, अब दौड़ शुरू होने ही जा रही है. प्रतियोगिता में भाग लेने वाली गाड़ियां दौड़ प्रारंभ करने वाली रेखा तक धकेल कर लाई जा रही हैं. हर कार का स्थान पहले से निर्धारित है. हरेक का नंबर है.

सुरक्षा पेटियां

कुछ चालक पेट और पीठ के बचाव के लिए खास तरह की चौड़ी चोली जैसी पेटियों से अपनेआप को कसे हैं. कुछ ने स्वयं को डोल जैसी सीट में तसमों से कस लिया है. पेटियों से बड़ी सुरक्षा हो जाती है. एक बार जानफिंच नामक एक अमरीकी चालक ने 140 मील प्रति घंटे की गति से गाड़ी चलाई. उस की कार तीन बार उलट गई. फिर भी वह तसमों से कसा रहने से बच गया. वैसे, यूरोप के कई चालक अपने को पेटियों से कसा जाना पसंद नहीं करते हैं.

दौड़ की कार चलाना कोई हंसीखेल नहीं रहता. उस में बैठना कुछ ऐसा ही लगता है, जैसे सड़क पर किसी डब्बे में बिठा कर घसीटा जा रहा हो. खतरनाक मोड़ों पर पहियों को घुमाने में ताकत लगती है. सावधानी तो रखनी ही पड़ती है. ब्रेक के रक्षण के लिए चालक 'गीयर लीवर' का निरंतर प्रयोग करते रहते हैं. तीनचार घंटों के बाद तो चालकों की बांहें बुरी तरह थक जाती हैं. दौड़ से पूर्व चालकों का कठोर शारीरिक प्रशिक्षण होता है. उन्हें विशेष आहार के साथ स्कीइंग, स्केटिंग और तैरने का अभ्यास करना पड़ता है. लंबी दौड़ में उन का वजन भी कम हो जाता है.

लीजिए, सारी तैयारी पूरी हो गई. क्लच नीचे झुकाए गए. इंजन में सरसराहट हुई. झंडियां झुकीं, और कारें दौड़ पड़ीं. क्षणों में 60, फिर 80, और फिर 100 की गति पकड़ ली गई. शुरू में भीड़ का बचाव और गच्चा दे कर आगे निकलने की कोशिशें रहती हैं. फिर संघर्ष केवल तीनचार कारों में ही रह जाता है. चालक की चातुरी तो बस मोड़ों पर ही देखने पर आती है. कार भगाने को तो कोई भी भगा ले जाए. वहीं चालकों का अनुभव और सूक्ष्म दृष्टि तथा स्थिरता काम आती है. एक्सिलेरेटर पर पांव धरे वे गाड़ी को भीतरी पटरी की ओर कुशलता से निकालते हैं.

मामूली 'ग्रे. प्री. रेस' में चालक एक विराम ले कर पेट्रोल, पानी आदि भरते हैं. कुछ चेहरे को स्पंज से पोंछते हैं. चश्मे साफ किए जाते हैं. मिस्त्री आगे का शीशा साफ कर मोबिल आयल आदि की जांच कर लेता है. कुछ ही क्षणों में सारे

अल्बट्रास

दक्षिण अमरीका के दक्षिणी छोर से 1200 मील पूर्व की ओर दक्षिण अटलांटिक के अत्यंत शीतल प्रदेश में दक्षिण जार्जिया नामक टापू की पंक्ति में अल्बट्रास नामक एक छोटा सा टापू है. उस में अल्बट्रास नामक अपूर्व पक्षियों का निवास है. ये बहुत भारी होते हैं. ये जल के आश्रय में बढ़ते हैं. यदि ये अपने पंखों को फैला दें तो इन की लंबाई 11 फुट होती है. निश्चल हवा में न तो ये उड़ सकते हैं और न ही उतर सकते हैं. तेज हवा में ये 60 मील प्रति घंटे की गति से उड़ सकते हैं. अल्बट्रास टापू में हमेशा तेज हवा चलती रहती है.

काम हो जाते हैं. जरूरत के लिए कार में अभिशामक भी रहता है. कभीकभी कार चालक पीछे वाली गाड़ी को बुत्ता दे कर निकल जाने देते हैं. फिर बिना अतिरिक्त शक्ति खर्च किए उस से आगे बढ़ जाते हैं. कभीकभी ऐसी क्रिया मनोवैज्ञानिक प्रभाव के लिए भी की जाती है.

ऐसा भी हुआ है कि इस चक्कर में टक्कर हो जाए. इस दौड़ में ऐसे कुशल चालक भी नजर आए हैं, जो सभी कारों के आगे बिजली की तेजी से दौड़ते नजर आए हैं. पीछे रहे हैं तो चीते जैसी फुर्ती से झपट्टा मार कर सब से आगे बढ़ गए हैं.

जान हथेली पर

कार दौड़ में चालक जान हथेली पर ही ले कर आते हैं. इस दौड़ के अनेक बड़ेबड़े चालक दौड़ के बाद अस्पताल में स्वास्थ्य सुधार कराते ही नजर आएंगे. जान बच गई, फिर देखेंगे. भरोसा ही क्या रहता है बचने का? फिर भी उसी जिन्दादिली और जोश से वे फिर आते हैं. इंडियाना पोलिस की ही दौड़ में एक बार 25 चालक दुर्घटनाओं के कारण मर गए. 14 मिस्त्री भी मारे गए. उन में कुछ चैंपियन भी थे. जनता के लोग भी मारे जाते हैं.

उलट कर घूमती, नाचती, बहकी गई कारों की चपेट में कितने ही दर्शक पिस जाते हैं. 'ले मान्स' की दौड़ में एक कार रास्ते से हट कर सुरक्षित पटरी पर चढ़ गई. चक्कर और भगदड़ में सैकड़ों घायल हुए. 80 से अधिक मरे. पर इस से क्या?

अनेक बार लोगों ने इस खेल के विरुद्ध आवाजें उठाईं. इसे मानवता के विरुद्ध, क्रूर और हिंसक बताया. पर दर्शकों का आकर्षण न अपीलों से रुकता है, न दुर्घटनाओं से. इस में गतिशील संसार की सब से अधिक भागदौड़ जो देखने में आती है, जीवनमृत्यु की आंखमिचौनी में विजय की उपलब्धि की अनुभूति जो होती है.

ऊर्जा का नवीन स्रोत

प्लाज्मा

पदार्थ तीन अवस्थाओं में पाया जाता है : ठोस, द्रव और गैस. प्लाज्मा पदार्थ की चौथी अवस्था है. इस अवस्था में पदार्थ में अनेक उपयोगी गुण आ जाते हैं. प्लाज्मा को नियंत्रित करने पर वैज्ञानिक नए प्रकार के अंतरिक्ष यान बना सकेंगे, जिन की गति आधुनिक अंतरिक्ष यानों की गति से कई गुणा अधिक होगी. नाभिकीय संगलन प्रक्रिया (न्यूक्लियर फ्यूजन रिऐक्शन) से असीम ऊर्जा शक्ति प्राप्त होगी. यही कारण है कि आज विश्व की अनेक अनुसंधान-शालाओं में प्लाज्मा पर विभिन्न प्रकार के रोमांचकारी परीक्षण किए जा रहे हैं, जो मानव के लिए अत्यधिक कल्याणकारी सिद्ध हो सकेंगे.

यह सत्य है कि प्लाज्मा पर किए जा रहे परीक्षणों में सफलता मिलने पर मनुष्य की ऊर्जा और ईंधन की समस्याएं सदा के लिए हल हो जाएंगी. बिजली इतनी सस्ती और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगी, जिस की अभी कल्पना भी नहीं की जा सकती है. केवल 25 घंटे में 2,000 किलोमीटर की यात्रा की जा सकेगी. मनुष्य ग्रह, उपग्रह से भी आगे, सितारों की भी यात्रा कर सकेगा. ऊर्जा का यह महान स्रोत जिस ने भौतिक विज्ञान में एक विचित्र सी हलचल पैदा कर दी है तथा मनुष्य के सुख और उस की समृद्धि के लिए, महत्त्वाकांक्षाओं के लिए एक नए अध्याय का सूत्रपात किया है प्रस्तुत लेख का विषय है.

प्लाज्मा क्या है?

परमाणु पदार्थ का सूक्ष्म कण है. परमाणु के केंद्र में एक नाभिक (न्यूक्लियस) होता है. यह नाभिक धन आवेशयुक्त होता है. ऋण आवेशयुक्त इलेक्ट्रान कण इस नाभिक के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं. अत्यधिक ऊंचे ताप (5,000° सें.) पर परमाणु एकदूसरे से अत्यंत तीव्र गति से टकराते हैं. इस क्रिया में परमाणु के बाहर की परिधि में चक्कर लगाते हुए इलेक्ट्रान परमाणु से अलग हो जाते हैं.

ऋण आवेशयुक्त इलेक्ट्रान कणों के अलग हो जाने से अब परमाणु धन

आवेशयुक्त आयन के रूप में रह जाते हैं. जैसेजैसे ताप बढ़ता है, इलेक्ट्रान कण धन आवेशयुक्त आयनों से टकराते हैं. परिणामस्वरूप प्रकाश के रूप में चमक निकलती है. पदार्थ की इस दौलित अवस्था को प्लाज्मा कहा जाता है. यह धन आवेशयुक्त आयन एक ऋण आवेशयुक्त इलेक्ट्रान का सम सम्मिश्रण है. चूंकि न तो यह गैस है, न द्रव और न ठोस अवस्था में ही है, अतः इसे पदार्थ की चौथी अवस्था माना गया है. प्लाज्मा अत्यधिक आयनीकृत गैस है.

सर्वप्रथम जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी के इरविंग लेंगमूर ने सन 1929 में प्लाज्मा पर अनुसंधान प्रारंभ किया और अपने परीक्षणों में उन्होंने पाया कि इस प्रकार वह 10,000° सें. ताप तक पहुंचने में सफल हो गए हैं. यह ताप सूर्य की सतह की ताप से दोगुना है. यह वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण परीक्षण था, क्योंकि अभी तक वैज्ञानिक इतना ऊंचा ताप प्रयोगशालाओं में पैदा करने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे. इस ताप पर सभी पदार्थ तुरंत वाष्प बन कर उड़ जाते हैं.

वास्तव में अभी तक विज्ञान ने ऐसा कोई भी पदार्थ मनुष्य के हाथों में नहीं दिया है, जो इतने ऊंचे ताप को सहन कर सके. स्वाभाविक रूप से फिर यह प्रश्न उठता है, किस प्रकार इतने ऊंचे ताप पर प्रयोग किए जाएं? इस समस्या का समाधान भी बड़े अनूठे ढंग से किया गया. प्लाज्मा को यदि नली की दीवारों के बीच में ही केंद्रित रखा जाए, ताकि नली की दीवारों को प्लाज्मा कण छू न पाएं, तो उस उपकरण को, जिस में प्लाज्मा पर प्रयोग किए जा रहे हैं, वाष्प बन कर उड़ने से बचाया जा सकता है. यह निस्संदेह एक क्रांतिकारी निष्कर्ष था. जब प्लाज्मा को चुंबकीय क्षेत्र में रखा जाता है, तो धन आवेशयुक्त आयन वहीं सिकुड़ जाते हैं, जैसे किसी क्रिया से बांध दिए गए हों और ऋण आवेशयुक्त इलेक्ट्रान कण चुंबकीय रेखाओं में घिर जाते हैं. परिणाम यह होता है कि अब प्लाज्मा कण इधरउधर भाग कर उपकरण की दीवारों को नहीं छू पाते हैं और वह उपकरण पूर्णतया सुरक्षित रहता है. इस तरह इस से भी अधिक ताप प्रयोगशालाओं में उत्पन्न किए जा चुके हैं. यही कारण है कि ऊंचे ताप उत्पन्न करने के लिए वैज्ञानिक प्लाज्मा पर निरंतर प्रयोग कर रहे हैं.

ऊंचे ताप का महत्त्व

नाभिकीय संगलन प्रक्रिया से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उपकरण में उच्च ताप काफी समय तक स्थिर रहे. दो नाभिक धन आवेशयुक्त होने से एकदूसरे को प्रत्याकर्षित करते हैं. यदि उन नाभिकों में संगलन प्रक्रिया प्रारंभ की जाए तो उन में इतनी ऊर्जा होनी चाहिए, कि वे अपने विद्युत विकर्षण को दूर कर, आपस में क्रिया कर सकें. यह तभी संभव है जब नाभिकों की औसत ऊर्जा 1,000 इलेक्ट्रान वोल्ट हो. इस का अर्थ यह हुआ कि ताप 10 करोड़ अंश सेंटीग्रेड हो. सूर्य का केंद्र जो सब से गरम है, उस का ताप भी केवल दो करोड़ अंश ही है. निश्चय ही मनुष्य का यह प्रयास सराहनीय है कि वह अपनी प्रयोगशाला में सूर्य के बराबर ताप उत्पन्न कर चुका है.

प्रत्येक नाभिक आवेशयुक्त होता है और हम ने देखा कि दो नाभिकों को समान आवेशयुक्त खर्च पड़ता है, लेकिन दो ड्यूट्रियम कणों के मिलने से इतनी शक्ति प्राप्त होती है जितनी 300 गैलन पेट्रोल से प्राप्त होती है.

प्लाज्मा में संगलन प्रक्रिया

संगलन प्रक्रिया से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए प्लाज्मा पर अनेक प्रकार के प्रयोग किए जा रहे हैं. एक संगलन प्रतिकारी (फ्यूजन रिऐक्टर) से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए 10 करोड़ अंश ताप की आवश्यकता होती है. ऐसा प्रतीत होता है कि यह वैज्ञानिकों के सामने एक कठिन समस्या ही रहेगी. प्रयोगशाला

प्लाज्मा अनुसंधान में स्टेलरेटर यंत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है.

में इतना उच्च ताप उत्पन्न करना केवल कोरी कल्पना ही हो सकती है, क्योंकि यह सारा उपकरण ही इतनी ऊष्मा से तहसनहस हो जाएगा.

इस संकट से बचने के लिए जो संगलन प्रतिकारी बनाए जा रहे हैं, उन में चुंबक प्रयोग में लाए जाते हैं. एक तीव्र चुंबक प्लाज्मा को नली के बीच में ही केंद्रित रखेगा, जिस से कि प्लाज्मा कण एकदूसरे से सन्निकट आ जाएंगे और इस क्रिया में ताप भी बढ़ता है. उचित ताप पर प्लाज्मा दूसरे प्लाज्मा से जुड़ जाते हैं और इस संगलन प्रक्रिया में न्यूट्रान और ऊर्जा प्राप्त होती है. न्यूट्रान में किसी प्रकार का आवेश नहीं होता, अर्थात वह उदासीन कण है और यह चुंबकीय क्षेत्र से बाहर निकल सकता है. न्यूट्रान का बाहर निकलना इस बात का प्रमाण है कि प्लाज्मा के अंदर संगलन प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है.

जीटा मशीन (जीरो एनर्जी थर्मोन्यूक्लियर असेंबली)

एल्यूमीनियम ट्यूब में प्लाज्मा आवेश के कारण एकदूसरे को प्रत्याकर्षित करते हैं. स्वाभाविक है कि यदि दो नाभिकों को हम मिलाना चाहें तो ऐसे नाभिक लेने होंगे जिन के आवेश सब से कम हों ताकि वे एकदूसरे को कम से कम प्रत्याकर्षित करें, जिस से कम शक्ति से ही उन्हें आपस में मिलाने का प्रयत्न किया जा सके, और संगलन प्रक्रिया प्रारंभ हो कर ऊर्जा प्राप्त की जा सके.

इस प्रकार प्रोटान, ड्यूट्रान और ट्राइटान पर, जिन में आवेश कम है, प्रयोग प्रारंभ किए गए. ड्यूट्रान और ट्राइटान पानी से प्राप्त किए जाते हैं क्योंकि ये भारी हाइड्रोजन के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं और भारी हाइड्रोजन पानी से प्राप्त होता है. ट्राइटान की मात्रा पानी में बहुत कम है, इसलिए वैज्ञानिकों ने ड्यूट्रान प्रक्रिया से ऊर्जा प्राप्त करने की ओर प्रयास किए. इस प्रक्रिया में दो ड्यूट्रान नाभिक मिलने पर हीलियम गैस, न्यूट्रान और ऊर्जा प्राप्त होती है.

यह एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है. इस क्रिया में जो ऊर्जा प्राप्त होती है, उस से अरबों वर्षों तक मनुष्य को शक्ति का महान स्रोत प्राप्त हो सकेगा, क्योंकि पानी काफी मात्रा में उपलब्ध है, और भारी हाइड्रोजन पानी से प्राप्त किया जाता है. एक गैलन पानी में 1/8 ग्राम ड्यूट्रियम होता है, और उसे प्राप्त करने में 50 पैसे विद्युत विसर्जन किया गया. दो लाख एंपीयर विद्युत एक सेकंड के दस हजारवें समय तक प्रवाहित की गई. विद्युत प्रवाह से ताप बड़ी तेजी से बढ़ता है. इस प्रकार जीटा मशीन में 50 लाख अंश तक ताप उत्पन्न किया जा चुका है. यह ताप किसी भी तारे की सतह के ताप से ऊंचा है.

यद्यपि जीटा में वैज्ञानिकों को काफी सफलता मिली, फिर भी संगलन प्रक्रिया शुरू करने के लिए काफी प्रयास अभी बाकी है. अधिक ताप उत्पन्न करने के साथसाथ विद्युत विसर्जन एक सेकंड तक चालू रहना चाहिए.

स्टेलरेटर

प्लाज्मा अनुसंधान में स्टेलरेटर यंत्र का एक प्रमुख स्थान है. यह यंत्र प्रिंसटन विश्वविद्यालय के डाक्टर स्पिटजर का बनाया हुआ है. इस में विद्युत विसर्जन एक नली में कराया जाता है. विद्युतधारा तार के द्वारा प्रवाहित
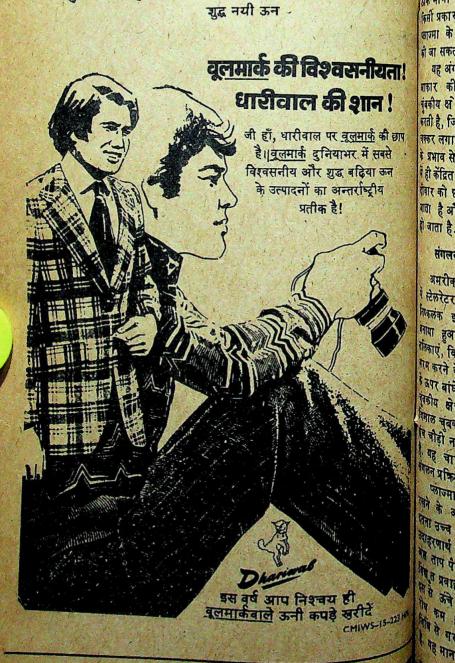
धारीवाल पर
यह छाप है!
सी. टी. मार्क
शुद्ध नयी ऊन

की जाती है, और तार नली के ऊपर ही बांधे जाते हैं. नली के अंदर इलेक्ट्रानिक विधि से गैस को अंदर प्रविष्ट किया जाता है और उन्हें इस प्रकार 10 करोड़ अंश ताप तक भी गरम किया जा सकता है. इस ताप पर यदि गैस बराबर और ठीक मात्रा में पहुंचाई जाए और गैस में किसी प्रकार की अशुद्धियां न रहें तो प्लाज्मा के अंदर संगलन प्रक्रिया प्रारंभ की जा सकती है.

यह अंगरेजी के आठ अंक (∞) के आकार की नली विद्युत प्रवाह से चुंबकीय क्षेत्र (मैगनेटिक फील्ड) उत्पन्न करती है, जिस से प्लाज्मा इस में बराबर चक्कर लगाते रहते हैं. यही नहीं, चुंबक के प्रभाव से प्लाज्मा कण नली के बीच में ही केंद्रित रहते हैं क्योंकि यदि प्लाज्मा दीवार को छू लेते हैं तो ताप काफी गिर जाता है और स्वयं यंत्र भी तहसनहस हो जाता है.

संगलन प्रक्रिया की समस्या

अमरीका में प्रिंसटन विश्वविद्यालय में स्टेलरेटर का निर्माण ढाई लाख पौंड निष्कलंक इस्पात की आधारशिला पर किया गया है. इस आधार के ऊपर नलिकाएं, विद्युत विसर्जन के तार और गरम करने के यंत्र रखे गए हैं. नलिका के ऊपर बांधे गए तार 55,000 गास का चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं. इस विशाल चुंबक के द्वारा प्लाज्मा को आठ इंच चौड़ी नलिका में केंद्रित किया जाता है. यह चार इंच व्यास का प्लाज्मा संगलन प्रक्रिया से ऊर्जा उत्पन्न करता है.

प्लाज्मा को इस तरह से केंद्रित रखने के अतिरिक्त एक बड़ी समस्या इतना उच्च ताप उत्पन्न करने की भी है. उदाहरणार्थ जीटा मशीन में जो 50 लाख अंश ताप पैदा किया गया, वह मुख्यतया विद्युत प्रवाह के फलस्वरूप था. लेकिन इस से ऊंचे ताप पर प्लाज्मा का प्रतिरोध कम हो जाता है और फिर इस विधि से गरम करना असंभव हो जाता है. यह मानते हुए कि निकट भविष्य में ये समस्याएं हल हो सकेंगी, यह अनुमान लगाया गया है कि ड्यूट्रान, ट्राइटान प्रक्रिया में 10 लाख एंपीयर विद्युत प्रवाहित की जानी चाहिए. इतनी तीव्रता से विद्युत प्रवाह करना प्राविधिक दृष्टि से अत्यंत दुष्कर कार्य होगा.

आज वैज्ञानिकों के सामने संगलन प्रक्रिया के पूर्ण होने में अनेक जटिल समस्याएं हैं. प्लाज्मा का नियंत्रण एवं केंद्रन (कंट्रोल एंड कनफाइनमेंट) करना परम आवश्यक है. दरअसल वैज्ञानिक अभी तक यह नहीं समझ पाए हैं कि प्लाज्मा को इस तरह से चुंबक में रखना उस के गुणों के विपरीत तो नहीं होगा. फिर इतना ऊंचा ताप (10 करोड़ अंश) उत्पन्न करना और उसे एक सेकंड के लिए स्थिर रखना भी परम आवश्यक है.

यद्यपि इस समस्या पर प्रचुर मात्रा में धन लगाया जा रहा है और बड़ेबड़े भीमकाय यंत्र अनुसंधान के हेतु बनाए जा रहे हैं, फिर भी निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि वैज्ञानिक पूरी तरह से हल निकाल ही लेंगे.

प्लाज्मा का प्रयोग मिसाइल्स और अंतरिक्ष यान में किए जाने की संभावना है. विद्युत प्रवाह से प्लाज्मा को उसी प्रकार से अंतरिक्ष यान से नीचे की ओर छोड़ा जा सकता है, जिस प्रकार गैस, द्रव, ईंधन राकेट से नीचे की ओर छोड़े जाते हैं और राकेट ऊपरउठता है.

ऐसे राकेट में प्लाज्मा को लगभग प्रकाश की गति के वेग से छोड़ा जाएगा. प्लाज्मा की नीचे की ओर की बौछार से अंतरिक्ष यान बड़ी तेजी से ऊपर उठेगा. ऐसे राकेट में करीब 90 प्रतिशत ईंधन ऊर्जा के रूप में परिणत होगी. राकेट की गति प्रकाश की गति से कुछ ही कम होगी. निश्चय ही मनुष्य को ऐसे राकेट तैयार करने में कई वर्ष लगेंगे. लेकिन ऐसा राकेट बनने के बाद निकटतम तारों तक (जिन की दूरी चार प्रकाश वर्ष है) मनुष्य पांच साल में पहुंच सकेगा. प्लाज्मा ने मनुष्य के शोध के लिए अनंत अंतरिक्ष के द्वार खोल दिए हैं. ●

सांसों से सांसों को...

भीगी पवन है, उसे तन से लिपट जाने दो,
सांसों से सांसों को टकरा जाने दो.

हंसती किरणें पगडंडी पर फैली,
देखो नाच उठी सुबह सुनहली.
मन के तार कंपन कर उठे,
फिर क्यों मन से मन रूठे.

प्यासे साज को अपनी आवाज सुनाने दो,
सांसों से सांसों को टकरा जाने दो.

गंधीली नीम की मटमैली छाया,
सपनीली टहनियों की लचकीली काया.
पंछी का गीत पत्तियों का छोर छोड़,
जा तुम्हारे अधरों में समाया.

लरजते होठों से अब सरगम छिड़ जाने दो,
सांसों से सांसों को टकरा जाने दो.

दर्पण से कह दो, वह अब न बनाए,
प्रतिबिंब तुम्हारा और इतराए.
ढांप ली है मैं ने पलकों की चिक से,
अपनी आंखों में छवि तुम्हारी.

भटकते मन को गेसुओं में आराम पा जाने दो,
सांसों से सांसों को टकरा जाने दो.

—अधवेश सक्सेना 'स्वप्नेश'

लेख • कैलाश मा...

इंटरव्यू एक स...

अपनी असफलताओं का उत्तरदायित्व भाग्य पर सौंप क... निश्चित...

अपने साप्ताहिक के लिए इंटरव्यू लेने मैं चला अवश्य गया था किंतु उसे देख कर मुझे निराशा हुई. किसी दृष्टि से भी तो असाधारण व्यक्ति नहीं था वह. वेषभूषा, चालढाल, चेहरा-मोहरा सभी कुछ सामान्य था. वह चुंबकीयता भी नहीं थी उस में, जो एक सफल व्यक्तित्व में होनी चाहिए.

पकी उम्र के उस आदमी शीतलप्रसाद के बारे में बड़ेबड़े दावे सुन रखे थे मैं ने कि वह बड़ा सफल व्यक्ति है. विफलता का मुख तो कभी देखा नहीं उस ने. जो भी चाहा, वही पाया. जिस काम में भी हाथ डाला, वही कर के दिखाया—आदिआदि.

अपनी बात पहले ही स्पष्ट कर दूं. मैं मनुष्य को स्वयं समर्थ नहीं मानता. अपने कामकाज में स्वतंत्र नहीं है वह. वह तो कठपुतला है किसी अदृश्य शक्ति के हाथों का. जैसे वह नचाती है, नाचता रहता है.

परंतु जब मैं ने अपना चिंतन सफल व्यक्ति के आगे रखा तो वह खिलखिला कर हंस पड़ा.

"आप हंस क्यों रहे हैं?" मैं ने अपनी झेंप मिटाने के से स्वर में पूछा.

"मैं आप के भगवान की अक्ल पर हंस रहा हूं," उस ने हंसते हुए उत्तर दिया, "यदि उसे मनुष्य को कठपुतली ही बनाना था तो उस ने मनुष्य को अक्ल नामक शक्ति क्यों दी? मस्तिष्क रहित मनुष्य तो भगवान के अधिक ही काम का होता."

वास्तव में इस ओर मेरा ध्यान नहीं गया था. मस्तिष्क की बात मैं ने आ... तक नहीं सोची थी. मस्तिष्क तो स... मुच ही उपयोग करने की चीज है.

"अब देखिए," सफल व्यक्ति ने कहा, "सूझबूझ के साथ मनुष्य के प... और भी गुण हैं, जैसे साहस, उत्साह, ... आदि. इन्हीं की सहायता से उस ने ... के दांत उखाड़े हैं, हाथी के कान उमे... हैं, समुद्र की गहराई नापी है, चांद ... भूमि छुई है."

"तो आप इन महान कार्यों के पी... भाग्य की कोई भूमिका नहीं देखते?" मैं ने आश्चर्य में भर कर पूछा.

"मूर्खता का यही लक्षण है कि... सफलता प्राप्त की जाए अपने बाहुबल ... और उसे नाम दे दिया जाए भाग्य ... या फिर असफल हुआ जाए अपनी क... के कारण और उस का उत्तरदायित्व भा... पर डाल दिया जाए," शीतलप्रसाद ... उत्तर दिया.

'बड़ा अजीब आदमी है यह,' ... सोचा. 'न भगवान को मानता है, ... भाग्य को. सितारों की शक्ति को ... यह क्या मानता होगा? बस, अपने ... ही तीसमारखां मानता है—जैसे सब कु... इस के द्वारा ही हो रहा है. ऐसे आद... से झख मारना बेकार है. इस से ... केवल काम की बात करनी चाहिए.'

"अच्छा, देखिए, आप के विषय ... चारों ओर यह चर्चा है कि आप ... सफल व्यक्ति हैं. सदा ही सफल हु...

अपनी जिंदगी में आप ने कभी असफलता का मुंह नहीं देखा. क्या मैं जान सकता हूं कि आप की अनुपम सफलता का राज क्या है?" मैं ने निवेदन किया.

सफल व्यक्ति

सफल व्यक्ति कुछ क्षणों तक चुप बैठा रहा. फिर बोला, "सफल व्यक्ति मैं नहीं हूं, जैसा आप समझ रहे हैं. कुछ छोटीमोटी सफलताएं आई अवश्य हैं मेरे हिस्से में, किंतु वे तो उस प्रत्येक प्राणी को मिल सकती हैं, जो अपना तनमन—सभी कुछ दांव पर लगा दे."

'बड़ी ऊंची उड़ान उड़ रहा है,' मैं ने सोचा, 'ऐसी दूर की तो मैं भी हांक सकता हूं.' प्रकट में मैं ने पूछा, "खैर, कृपया यह बताइए कि आप किसी कार्य को आरंभ कैसे करते हैं?"

"देखो भाई, मैं कोई कार्य जल्दी में नहीं करता. जल्दी का काम तो शैतान का होता है," सफल व्यक्ति ने कहा, "कार्य हाथ में लेने से पहले यह जांचने की कोशिश करता हूं कि इस में कितना प्रयत्न चाहिए तथा मैं उतना प्रयत्न जुटा सकूंगा या नहीं."

एक सफल व्यक्ति का

निश्चित हो जाना क्या सफलताकांक्षी व्यक्ति के लिए उचित है?

"तो आप पहले कार्य की सीमाओं को अपने साधनों के साथ तौल लेते हैं?" मैं ने पूछा.

"यथासंभव. किंतु जब कार्य हाथ में ले लेता हूं तो पीछे मुड़ कर नहीं देखता, भले ही उस के लिए रातदिन एक करना पड़े." फिर थोड़ा रुक कर वह बोला, "मेरा यह तरीका है कि जब काम पकड़ लेता हूं तो उसे जीवनमरण का प्रश्न बना लेता हूं, निश्चय कर लेता हूं कि अब तो इसे किसी भी कीमत पर करना ही है."

"तो अनुकूल फल प्राप्त करने का तरीका यह हुआ कि उस कार्य को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेना चाहिए... क्यों?" मैं ने पूछा.

सफलता का रहस्य

"केवल प्रतिष्ठा का प्रश्न ही नहीं," उस ने मुझे समझाया, "उस कार्य में अपना सब कुछ झोंक देना पड़ता है. किसी कार्य विशेष को करते समय अन्य किसी कार्य का विचार मन में लाना खतरनाक है. कार्य के साथ अनन्यता का भाव स्थापित करना आवश्यक है."

"आप तो योग की बात कर रहे हैं." मैं ने शंका व्यक्त की.

"नहीं, मैं मनोयोग की बात कर रहा हूं," उस ने स्पष्ट किया, "एकाग्रता की बात कर रहा हूं—अपने कार्य के साथ एकाग्रता की."

"लेकिन, जनाब, मन तो बड़ा चंचल है. वह प्रकाश की गति से भी अधिक तेज है. ऐसे चंचल मन का तादात्म्य किसी कार्य के साथ हो ही कैसे सकता है?"

"हो सकता है," उस ने उसी धीरगंभीर वाणी में कहा, "मन को स्थिर किया जा सकता है. मगर मूर्तियों से नहीं, जाप और पाठ से नहीं, कथाकीर्तन से नहीं."

"मैं जानता हूं," मैं ने उसे बीच से काटते हुए कहा, "आप अभ्यास के द्वारा मन को वश में करने की बात कहते हैं. गीता में यही कहा गया है."

"नहीं, अभ्यास से मन स्थिर नहीं हो सकता," उस ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा, "यदि अभ्यास से मन वश में किया जा सकता तो कभी का कर लिया जाता. किंतु ऐसा हुआ नहीं." फिर थोड़ा रुक कर बोला, "मन को अपने अनुकूल रखने का तरीका काम को चुनौती के रूप में स्वीकार करना है—यह सोच कर चलना है कि यदि यह काम न हुआ तो आसमान गिर जाएगा. जब हमारा मन चुनौती को स्वीकार कर लेता है, तो वह कार्य मन का विषय बन जाता है. उस स्थिति में मन कभी भी इधरउधर नहीं भागता."

"तो मन किसी भी कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेता है?" मैं ने शिष्य की सी जिज्ञासा के भाव से पूछा.

"मन को चुनौती स्वीकारने के योग्य बनाने के लिए एक और शर्त है: मन का रचनात्मक होना, आशापूर्ण होना, विश्वास भरापूरा होना. शंका, संदेह, भय, दुर्भावना आदि विकार मन को दुर्बल करते हैं. इसलिए निराश किस्म के लोग, डरपोक किस्म के लोग, सुनहरे बादल में अंधकार का आभास पाने वाले लोग इस योग्य नहीं होते कि चुनौती को स्वीकार कर सकें तथा प्राणपण से उस के साथ भिड़ सकें. सफल जीवन के लिए जीवन के प्रति अनुकूल सुख अपनाना अत्यंत आवश्यक है—स्वस्थ दृष्टिकोण रखना बेहद जरूरी है."

मन की एकाग्रता

"अच्छा, कोई ऐसी घटना तो सुनाइए अपने जीवन की, जिस से मुझ जैसे प्राणी को भी थोड़ीबहुत प्रेरणा मिले," मैं ने प्रार्थना की.

"बात यह है कि जीवन भर जीवन से जूझता ही रहा हूं," शीतल वाणी में शीतलप्रसाद ने कहा, "बहुत छोटे व निर्धन परिवार में पैदा हुआ. पढ़ाई-लिखाई का कोई अवसर नहीं था. फिर

पिता का देहांत मेरे बचपन में ही हो गया. किंतु मन में एक लगन थी, दो विषयों में एम. ए. करने के अतिरिक्त रिसर्च भी की."

"तो सफलता के लिए धन व पारिवारिक गौरव जैसी चीजें अनिवार्य शर्तें नहीं हैं?" मैं ने पूछा.

"मुझे तो ऐसा लगा नहीं कभी," शीतलप्रसाद ने उत्तर दिया, "इन दोनों चीजों के अभाव में कभी मेरा कोई काम रुका भी नहीं. बल्कि नौकरी के मामले में तो सफलता और भी अधिक सरलता से मिल गई. लोग घर से बुला कर ले गए और नौकरी दे दी."

"मजाक कर रहे हैं क्या?" मैं ने कहा, "लोग तो बगल में डिग्रियों के पुलिंदे दबाए दफ्तरों की खाक छानते-छानते बूढ़े हो जाते हैं और नौकरी नहीं मिलती और आप..."

"नौकरी उन्हें नहीं मिलती, मेरे भाई, जो पढ़लिख कर डिग्रियां तो हासिल कर लेते हैं किंतु जानकारी में कोरे होते हैं. उन्हें अपने कार्य का ज्ञान तो होता नहीं, बस, किसी तरह डिग्री जुटा लेते हैं." फिर संकोच के से भाव से कहा, "मेरी योग्यता के विषय में तो लोग इतने आश्वस्त थे कि मुझे इंटरव्यू की औपचारिकता से भी नहीं गुजरना पड़ा."

दृढ़ आत्मविश्वास

मैं अगला प्रश्न करने ही वाला था कि शीतलप्रसाद ने स्वयं ही कहा, "मेरे जीवन में तो सारी बातें चुनौती ही बन कर आईं. विवाह हुआ तो वहां, जहां होना असंभव था. बल्कि सच यह है कि जीवन बीमा कराने के बाद ही विवाह के लिए प्रस्थान किया था. मकान बना तो वहां, जहां बनना असंभव था. प्रति पल मृत्यु सामने खड़ी रहती थी."

"तो सफलता के लिए जान तक की जोखिम उठानी पड़ती है?" मैं ने प्रश्न किया.

"जोखिम? जोखिम उठाए बिना कुछ हाथ नहीं आता." सफल व्यक्ति ने कहा, "जितनी बड़ी जोखिम उतनी ही बड़ी प्राप्ति."

फिर मेरी ओर और अधिक उन्मुख होता हुआ बोला, "देखिए, मुझे आश्चर्य है कि आप जवान होते हुए भी मुझ से बूढ़ों की तरह सफलता के नुस्खे पूछ रहे हैं. भोले भाई, जवानी तो अपनेआप में सब से बड़ी सफलता है. युवकयुवतियां तो शक्ति के भंडार होते हैं. यदि इरादा कर लें तो आकाश से तारे तोड़ कर ला सकते हैं. बस, आत्मविश्वास चाहिए और चाहिए आत्मनिर्भर होने का साहस."

असंभव भी संभव

फिर जवान आदमी जैसे जोशीले स्वर में बोला, "मेरी एक बात गांठ बांध लो, मेरे दोस्त, जब तक हमारे देश का नौजवान भगवान, भाग्य, सितारे आदि काल्पनिक शक्तियों के आधार पर हाथ बांधे बैठा रहेगा, जब तक वह भिखमंगे आकाश के आगे हाथ फैलाए खड़ा रहेगा, जब तक वह अपनी शक्ति को पहचान कर आगे नहीं बढ़ेगा, तब तक इस डूबते देश का उद्धार नहीं होगा."

मैं ने महसूस किया कि सफल व्यक्ति के कंठ से आत्मविश्वास के फव्वारे छूट रहे हैं.

इंटरव्यू समाप्त हो गया था. मैं ने उठते हुए कहा, "क्षमा कीजिएगा, आप से एक प्रश्न और पूछूंगा. जीवन में अर्जित की हुई तमाम उपलब्धियों का सामूहिक प्रभाव क्या अनुभव करते हैं आप?"

"देखिए, अपने अत्यंत अल्प व सीमित साधनों के मध्य मुझे हर समय एक ही अनुभूति होती है कि मैं सारे लोगों में एक सुखी व्यक्ति हूं. मैं समझता हूं कि सुख की यह अनुभूति आत्मविश्वास का ही परिणाम है."

इसे मेरी आत्मस्वीकृति ही मानिए कि घर लौटते समय मैं वह व्यक्ति नहीं रह गया था, जो इंटरव्यू लेने गया था.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

अरविंद कोडानदाथ, हैदराबाद
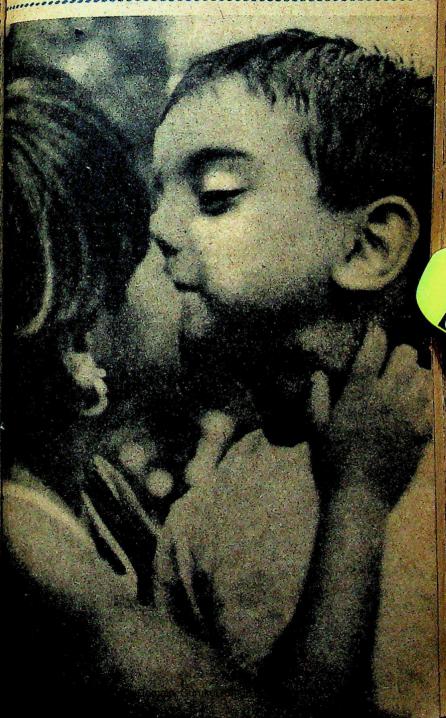
जब भी किसी व्यक्ति को 'विग' लगाए देखता हूं तो अपने साथी आनंद की याद आ जाती है. आनंद हमारे ही कालिज में मनोविज्ञान विभाग में लेक्चरार था. अब वह कुमायूं विश्वविद्यालय में रीडर है.

आनंद जब हमारे स्टाफ में आया तो उस के सिर पर अच्छेखासे घुंघराले बाल थे. अगले साल उस की शादी तय हो गई. अच्छी पढ़ीलिखी सुंदर लड़की थी. वह भी एक महिला कालिज में पढ़ाती थी. दोनों ने एकदूसरे को पसंद किया था.

शादी की तारीख भी तय हो गई. परंतु कुछ ऐसा चक्कर चला कि गरमियों से सर्दियों में और फिर सर्दियों से अगली गरमियों में, द्रौपदी के चीर की तरह मुहूर्त आगे ही बढ़ता जाता था. कभी आनंद के बाबा की मृत्यु हो गई तो कभी होने वाली पत्नी की नानी की. अगली बार आनंद की ताई का देहांत हो गया तो अगले साल होने वाली पत्नी की दादी संसार से कूच कर गई. इस सिलसिले में तीन साल निकल गए.

पता नहीं शादी टलने की चिंता से या नजला झड़ने से या इस स्थान का पानी माफिक न आने से, आनंद के बाल धीरेधीरे झड़ने लगे. पहले बीच में मैदा[n] साफ हुआ. उस के बाद सामने माथे ता[k] पट्टी बन गई. अंत में वह पट्टी दोनों ओ[र] काफी चौड़ी हो गई. बालों के नाम प[र] किनारे रह गए. लगभग सारा सिर सफा[ट]. उस ने काफी उपाय किए परंतु गं[जापन] बढ़ता गया, ज्योंज्यों दवा की.

आनंद परेशान रहता. आयु अभी [...] वर्ष और सिर गंजा. साथी लोग चुस[की] लेते, मजाक में कुछकुछ कह देते. विद्या[र्थी] प्रायः ब्लैकबोर्ड पर किसी केशवर्द्धक तै[ल] का नाम लिख देते. चपरासियों को ना[म] पूछने या याद रखने की आवश्यकता न[हीं] रहती. सिर पर हाथ फेर कर बता दे[ते] कि आनंद ने भेजा है.

जैसेतैसे शादी का मुहूर्त आया. सज[-] धज कर बरात चली. फेरों के बाद रा[त] को जब सास ने सिर पर से सेहरा उता[रा] तो अवाक रह गई. चार साल पहले उ[स] ने आनंद को देखा था. सिर पर घुंघरा[ले] बाल थे. उसे लगा कि उन के साथ धोखा किया गया है. पति को बुला कर उस[ने] संदेह प्रकट किया. पति ने काफी पूछता[छ] कर के उस को बताया कि धोखा नहीं है, बाल ही सफा होने लगे हैं. भगवान [ने] चाहा तो फिर उग आएंगे.

यही हाल वधू का हुआ. वह ठगी [सी] रह गई. उस ने स्वयं आनंद को देखा [और] पसंद किया था. नाकनक्श, रंगरूप, गठ[न] विन्यास सब कुछ वही था, परंतु बा[ल] गायब थे. वह भी आश्वस्त तो हो ग[ई] परंतु उस के हृदय की कली जैसे मुरझा गई. युगल दंपत्ति का चित्र जैसे [...] खिझाने लगा. जीवन की मधुरिमा [...] लुप्त हो गई. अपने छात्रा जीवन [में] वधू ने 'मिस कालिज' की प्रतियोगि[ता] जीती थी. उस ने उसी क्षण कुछ निश्च[य] कर लिया.

रश्मि(वधू) की रात भर जगी आं[खों] को सवेरे सहेलियों ने और लाल कर दि[या]. सब के व्यंग्य सिर पर ही थे : "दू[ल्हा] बड़ा भाग्यवान है" या "जमीन पर [चांद] उतर आया है." कोई गुनगुनाने [लगी] "ये रेशमी जुल्फें..." किसी ने रश्मि

चिकोटी काटी, "अब तो चांद बीवी बन गई हो." किसी ने उसे बधाई देते हुए कहा, "बड़ी खुशकिस्मत हो. दूल्हा बड़ा सुंदर मिला है."

यद्यपि रश्मि ने सब को बड़ी चुस्ती से जवाब दिया, "धन्यवाद. आप को भी ऐसा ही मिले," परंतु मन से वह दुखी थी. एक सहेली तो उसे 'चांद बीवी' ही कह कर पुकारने लगी.

छोटे बच्चों को किसी ने सिखा दिया और वे बरात विदा होने तक आनंद के आगेपीछे घूमते, हंसतेगाते, कहते रहे, "जीजा जीजा आए, बाल कहां धर आए?" हंसने का कितना ही प्रयत्न करने के बाद भी आनंद के मन में एक टीस सी उत्पन्न हो जाती थी. बालों का मोह आज स्पष्ट हो गया था. आज वह स्वयं को बौना महसूस करने लगा था.

जब बरात विदा हुई तो पता नहीं

शादी करने से पहले रश्मि सोचती थी कि वह अपनेआप को आनंद की बांहों में समर्पित कर के सुख की सांस लेगी, लेकिन शादी के बाद वह निराश क्यों हो गई?
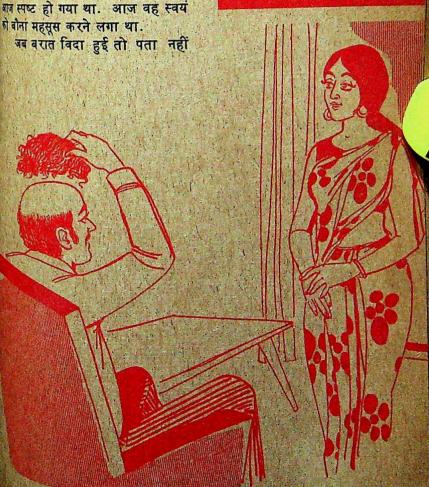
किस ने लाउड स्पीकर पर रिकार्ड लगा दिया, "मैं क्या [illegible], राम, मुझे बुड्ढा मिल गया." रश्मि के कलेजे पर तो जैसे छुरियां चल गई हों.

ससुराल पहुंचने पर रश्मि में वही हीनता की भावना घर करने लगी. वह जहां भी आनंद के साथ जाती, उसे लगता, सब उस पर फब्तियां कस रहे हैं. कोई भी उन की ओर न देख रहा हो, परंतु उसे सब की आंखों में एक ही प्रश्न तैरता दीखता : 'बेमेल जोड़ी'. आनंद को उस ने जब सर्वप्रथम देखा था तो उस के घुंघराले बाल उसे इतने अच्छे लगे थे कि कल्पना में वह उन्हीं में उंगलियां फेरती रहती थी. लेटेलेटे अनायास ही उस की उंगलियां घूमने लगतीं. पर समय ने उस के इस काल्पनिक सुख को कोरी कल्पना कर के ही छोड़ दिया. वह अपने मन को बहुत समझाती, स्वयं से तर्क करती, 'क्या कमी है आनंद में?' मन की अगरबत्ती जलने लगती, पर हृदय सुवासित नहीं होता.

पहले रश्मि सोचती थी कि शादी के बाद नौकरी छोड़ देगी, पति की [illegible] कर रहेगी. पति से दूर रह कर नौकरी करने वाली महिलाओं के संबंध में उस की धारणा कुछ अच्छी नहीं थी. उन का व्यक्तित्व उसे भोंडा, अधूरा, अतृप्त सा लगता था. वह स्वयं को सांचे में नहीं ढालना चाहती थी. परंतु शादी के बाद उसे अपना निर्णय बदलना पड़ा. वह अपने को पूर्णतः समर्पित करने में असमर्थ पा रही थी. हृदयतंत्री के तारों में [illegible]ड़े तनाव को वह ढीला नहीं कर पा रही थी. दो सप्ताह ससुराल में रह कर वह अपनी नौकरी पर लौट गई.

इधर आनंद भी उदास रहने लगा. मनोविज्ञान का अध्यापक होने के नाते रश्मि की खिन्नता उस से छिपी नहीं रही. उस ने अपनेआप को समझाने का [illegible]रसक प्रयत्न किया. कभीकभी अपना व्यवहार उसे स्वयं हास्यास्पद लगने लगता था. रश्मि के मन की गांठ खुलने की बजाए और भी कसती जाती थी.

छुट्टियों में प्रायः आनंद ही रश्मि के पास चला जाता था. रश्मि का चक्कर कम ही लगा था. दोनों के बीच की खाई बढ़ती जा रही थी. आनंद उसे पाटने का बहुत यत्न करता, पर सब निरर्थक.

गरमियों की छुट्टी के बाद कालिज खुला तो शिक्षक व छात्र यह देख कर दंग रह गए कि आनंद की खोपड़ी पर बाल उग आए हैं—छोटेछोटे नहीं, पर्याप्त बड़े तथा घुंघराले. जैसे चारपांच साल पहले वाला आनंद पुनः लौट आया हो. दो माह पूर्व के परिचित तथा आंखों में समाए आनंद का जैसे कोई छोटा भाई चला आया हो. पर नहीं, वह आनंद ही था, वही आनंद. उस ने 'विग' लगा रखा था. मस्तक ढक जाने के कारण उस की आयु पहले जितनी लगती थी.

साथियों ने चुस्की ली, "कहो, भाई, छुट्टियों में कहां चंपी करवाई?" किसी ने कहा, "कौन सी खाद का प्रयोग किया?" कोई बोला, "लगता है, कोई जड़ीबूटी हाथ आ गई है."

आनंद हंस कर टाल जाता. किसकिस को बताता फिरे कि नकद एक हजार का 'विग' आया है तथा सौ रुपए सेट कराने में लगे हैं.

कालिज में पुराने विद्यार्थी पास से गुजरते तो धीरेधीरे गुनगुनाने लगते, "सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, कि खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से." क्लास में जब तक हाजिरी लेता, लड़कियां अपनी गुंथी हुई चोटी को सामने कर के ख्वाहमख्वाह गूंथने का नाटक करती रहतीं. आनंद जानबूझ कर इस सब से बेपरवा बना रहता. नई जुल्फों के साए में वह स्वयं को व्यवस्थित कर रहा था.

दशहरे की छुट्टियों में आनंद रश्मि के पास पहुंचा. वह 'सरप्राइज' देना चाहता था, अतः उस ने पहले से सूचना नहीं दी.

रश्मि होस्टल की वार्डन थी. वह आफिस में बैठी थी कि [illegible] लान के उस पार रिक्शे में से एक घुंघराले बालों वाला युवक उतरता दिखाई दिया. एक क्षण को दिल में टीस सी उठी. किसी छात्रा का संबंधी होगा,' यह सोच कर वह अपने काम में लग गई. तभी चौकीदार खबर ले कर आया, "आप के कोई रिश्तेदार आए हैं."

रश्मि ने सामने निगाह डाली. वही युवक टहल रहा था. रश्मि ने चौकीदार को स्लिप दे कर कहा, "नामपता लिखा कर लाओ." चौकीदार काररवाई पूरी कर के लौट आया. रश्मि स्लिप पढ़ कर दंग रह गई. वह जोर से चीख पड़ी, "नहीं, झूठ है. यह व्यक्ति आनंद नहीं हो सकता. यह तो कोई झूठा, मक्कार, दगाबाज है. उसे बाहर निकाल दो."

पर वह व्यक्ति टलने का नाम ही नहीं ले रहा था. चौकीदार के हाथ जोड़ कर प्रार्थना करने का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था. तब रश्मि स्वयं आफिस से निकल कर उधर बढ़ी. दूर से ही उस ने चिल्लाना आरंभ किया, "शर्म नहीं आती आप को? सीधे जाते हैं या पुलिस बुलवाऊं?"

युवक मुसकराता हुआ बोला, "अपने घर आने में कैसी शर्म? अवश्य पुलिस बुलवाइए," और उस ने हाथ के एक ही झटके से सिर से 'विग' अलग कर दिया. सामने गंजा आनंद खड़ा था.

रश्मि पानीपानी हो गई. भावना के आवेग में, एक ही झटके से मन की गांठ खुल गई. यही तो था उस का दूल्हा, ऐसा ही तो. इन्हीं घुंघराले बालों की कल्पना में ही तो उस की कुमारी उंगलियां थिरका करती थीं. आज जैसे वह सब कुछ पा गई थी.

अगली प्रातः वह आनंद के साथ कशमीर घूमने चली गई. वहां से लौट कर उस ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया तथा आनंद के साथ रहने लगी. ●

त्रशिवन गाथा

संसार का बहुचर्चित छायाकार,
जिस ने अपना संपूर्ण दांपत्य
जीवन कला को समर्पित
कर दिया. . .
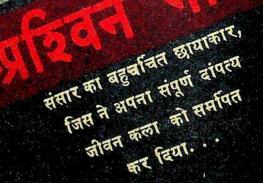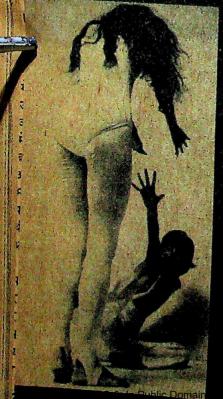
जब वह छः महीनों का था तो उस के मांबाप नहीं रहे थे. उस ने 14 वर्ष की आयु में किंडरगार्टन में दाखिला लिया था. वह दसवीं पास भी नहीं कर सका था.

जब वह 25 वर्षों का था तो बंबई के चर्च गेट स्टेशन पर इसलिए रातरात-भर घूमा करता था कि उस के पास खाने के लिए पैसे और रहने के लिए घर नहीं था.

कई वर्षों तक उस ने पांच रुपए रोज पर तसवीरें खींचीं. आज वह दुनिया के पहले 10 फोटोग्राफरों में गिना जाता है. 'पापुलर फोटोग्राफी' ने उसे दुनिया का बेहतरीन तसवीरें खींचने वाला बना दिया. वह 'एशिया' मैगजीन का स्टाफ फोटोग्राफर रहा है. असाई पैंटेक्स ने उस के सम्मान में प्रदर्शनियों का आयोजन किया. उस का कहना है कि भारत सरकार उसे इस लायक नहीं समझती कि उस की कला का लाभ उठाया जा सके. वह कैमरे को वफादार कुत्ते की तरह मानता है. [illegible]

बैले नृत्य की विभिन्न मुद्राओं में अश्विन गाया द्वारा लिए गए अपनी पत्नी के चित्र.
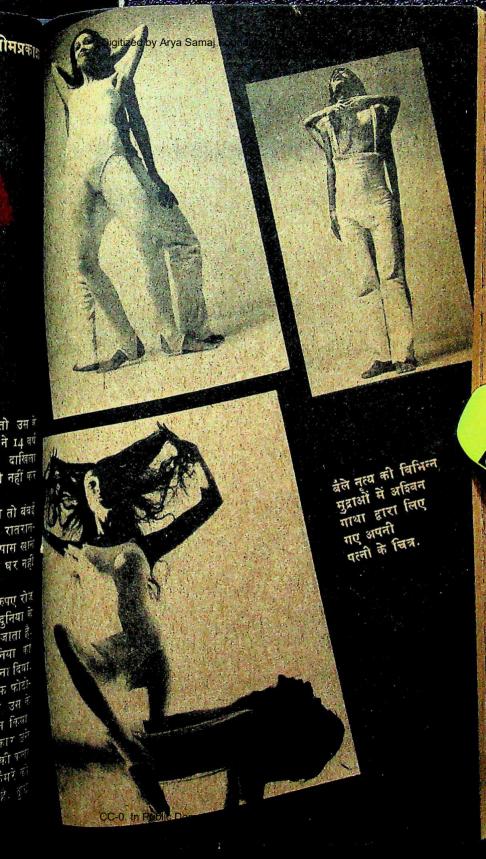
वर्ष पूर्व उस ने पूना फिल्म संस्थान में दाखिला लेना चाहा था, पर वह असफल हो गया. हाल ही में संस्थान ने उस पर एक वृत्तचित्र तैयार किया है.

आज उस का कोई घर नहीं है. वह जहां जाता है, वहीं घर बना लेता है. बंबई वाले घर में उस के पास एक आधुनिक उपकरणों वाली रसोई भी है. जब मैं उस से मिला था तो वह न्यूयार्क से आया था और कोणार्क जा रहा था.

उस का धर्म पर विश्वास नहीं है. वह मानवता में विश्वास रखता है. उसे सब से बड़ा भरोसा अपने काम पर है. वैसे उस ने गिरजाघरों की तसवीरें खींच कर बहुत पैसा कमाया है.

उस की पत्नी ओडिसी और मार्थग्रलम की बढ़िया नर्तकी है. वह भारतीय नृत्य परंपरा से भावना और पाश्चात्य नृत्य से भाव ले कर कला की सार्वभौमिकता की दिशा में काम कर रही है. दोनों मिल कर कैबरे और नृत्य को आत्मसात कर कुछ नया उत्पन्न करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं.

विचारों की समानता

उन की शादी को तीन साल हो गए हैं, पर उन की कोई संतान नहीं है. इस के लिए उन का कोई इरादा भी नहीं है. वे संतान को पतिपत्नी के मिलन से उपलब्ध सृजन की संज्ञा देते हैं. उन का कहना है कि वे हर रोज अपनी कला से इतना कुछ सृजन कर रहे हैं कि उन्हें परंपरागत सृजन (संतान) की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती.

उस का नाम है अश्विन और उस की पत्नी का फ्लोरा. दोनों का गठबंधन करने वाला नाम है गाथा.

अश्विन पिछले दिनों भारत आया हुआ था. उस का मिशन था अमरीकी सूचना सेवा के लिए भारतअमरीकी व्यापार संबंधों पर एक वृत्तचित्र तैयार करना. इस किस्म का कार्य अश्विन के लिए पहला कार्य नहीं है. इस से पूर्व वह संयुक्त राष्ट्र संघ तथा 'केअर' जैसी संस्थाओं के लिए अपने कैमरे का उपयोग कर चुका है.

अधिकारियों की दिलचस्पी नहीं

अभी हाल ही में एडिलेड में विभिन्न कलाकारों की कृतियों की एक अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी हुई थी. फोटोग्राफ कक्ष के लिए केवल अश्विन गाथा की तसवीरों को चुना गया था. शायद ही कोई ऐसा दिन हो जिस दिन 10-12 सौ लोग इन के कक्ष को देखने न आए हों. "मुझे अफसोस हुआ कि भारतीय उच्चायोग का एक भी अधिकारी किसी दिन नहीं आया. बाद में भारतीय उच्चायुक्त यह कहते सुने गए कि उन्हें इस का पता ही नहीं लगा." अश्विन का अनुभव है कि लगभग सभी जगह भारतीय दूतावास पर्यटक या प्रवासी भारतीयों में कोई दिलचस्पी नहीं लेते.

अश्विन के पास आजकल तीन असाई पैंटेक्स कैमरे और छः अन्य लैंस हैं. एक कैमरा तो लगभग 10 वर्ष पुराना है. इस कैमरे से उस ने लाखों रुपए कमाए हैं. असाई पैंटेक्स वालों ने उसे नया कैमरा देने की पेशकश की, पर उस ने मना कर दिया. फोटो खींचने की शुरुआत उस ने एक बाक्स कैमरे से की थी. "अच्छी फोटो के लिए सिर्फ महंगे कैमरों से काम नहीं चलता. क्या महंगे कैनवास और बढ़िया रंगों से ही कोई बढ़िया चित्र बना सकता है? यही बात कैमरों के बारे में है. वास्तव में, देखा गया है, अच्छी तसवीरें प्रायः सस्ते कैमरों से ही खिंची होती हैं."

अश्विन की विचारधारा पर रघु राय का बड़ा असर पड़ा है. "मेरे विचार में रघु इस समय सर्वाधिक संवेदनशील फोटोग्राफर है. काश, मैं उस से आधा काम भी कर पाता. विश्व में हेनरी कार्टियर ब्रुसो और गार्डनपार्क्स की कला ने मुझ पर काफी प्रभाव डाला है."

अश्विन सभी कलाओं में मूलतः कुछ समानता पाता है : "मेरे विचार में सभी कलाएं अभिव्यक्ति का माध्यम हैं. यह कहना बड़ा मुश्किल है कि अमुक कला दूसरी से अधिक प्रभाव रखती है और

काम के व्यस्त क्षणों में अश्विन गाथा.

अधिक सशक्त है. हर कला की अपनी विशेषता होती है और वह उस की सीमाओं को ढक सकती है.''

कुछ नया देने की कोशिश

इसी भावना से प्रेरित हो कर गाथा दंपत्ति आजकल एक प्रयोग में संलग्न हैं. उन्होंने कैमरे और नृत्य के सहयोग से कुछ नई वस्तु देने में, मंच के अग्र भाग में नृत्य करते कारकार की छवि को पीछे परदे पर डाल कर कुछ नया प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश की है. यह प्रयोग बंबई तथा पश्चिम के कई नगरों में बड़ा पसंद किया गया है. फ्लोरा का कहना है, "मैं अश्विन के लिए उस की आवश्यकता के अनुसार मूड तैयार करती हूं. मैं कलाकार होने के नाते समझ सकती हूं कि वह क्या चाहता है.''

अभी हाल ही में यूरोप के कई नगरों में सड़क पर नृत्य करती एक लड़की और उस के फोटो लेते हुए एक फोटोग्राफर की बड़ी चर्चा रही. ये गाथा दंपत्ति ही थे.

फ्लोरा अपनेआप में पूर्ण कलाकार है. यूरेशियन नस्ल की फ्लोरा पूना में पैदा हुई और लंदन में पली व बढ़ी. उस ने अपने बहरे और गूंगे भाई के साथ मूक अभिनय की रागात्मकता को समझा, आयरलैंड में नाट्य कला का अध्ययन किया, स्टाकहोम के जीवंत थिएटर में कई वर्षों तक अभिनय किया और एडम डेरियस की मंडली के साथ यूरोप का चक्कर लगाया. आजकल वह अपना स्वतंत्र बैले ग्रुप बनाने में व्यस्त है. इस के पीछे मूल भावना भारतीय नृत्य की आत्मा अर्थात भाव, पाश्चात्य संगीत और नृत्य की तेजी और अभिव्यक्ति को मिला कर कुछ नया देने की कोशिश है. "मुझे नहीं लगता कि नृत्य अंतिम अर्थों में कहीं भिन्न होता है. मेरा विश्वास है कि वह काल, परिवेश और संस्कृति की सीमाओं से परे होता है.''

गाथा दंपत्ति अब तक 59 हवाई यात्राएं कर चुके हैं. "कभीकभी मैं सोचती हूं, क्या हम सारी जिंदगी यों ही घूमते रहेंगे? क्या हमारा कभी स्थायी

बार छोड़ी. फोटोग्राफर कहां भी काम करे, उसे आत्मसम्मान से समझौता नहीं करना चाहिए."

काम की याद आ जाती है और सब दर्शन धरा ही रह जाता है," मलीरा की दर्द भरी आवाज थी.

"भारतीय महिलाओं के परंपरागत जीवन के बारे में आप की क्या राय है?"

"केवल चूल्हेचौके और बच्चे पालने में तो मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है. औरतों को कुछ और भी करना चाहिए. शायद मेरा पालनपोषण एक ऐसी आबोहवा में हुआ है, जहां यह विचारधारा उपजी है. पर आज तो यही ध्रुव सत्य नजर आता है."

अश्विन का मत है कि भारत में केवल फोटोग्राफी से रोटी कमाना मुश्किल है, बशर्ते आप किसी संस्थान से संबद्ध न हो जाएं. पर उस स्थिति में पेशेवरी आ जाती है और कलाकार मर जाता है. "मैं ने कई बार नौकरियां कीं और कई बार छोड़ीं. फोटोग्राफर कहीं भी काम करे, उसे आत्मसम्मान से समझौता नहीं करना चाहिए."

अश्विन का अनुभव है कि अमरीका प्रतिभाशाली फोटोग्राफरों के लिए बहुत अच्छी जगह है. अकेले न्यूयार्क में 22,000 पेशेवर फोटोग्राफर हैं. फिर भी वास्तविक कलाकार के लिए अभी गुंजाइश है.

भारत सरकार के कटु अनुभव के बावजूद अश्विन को अपने देश से प्यार है. उस के पास अभी भी भारतीय पासपोर्ट है. विदेशी संस्थान भी उसे काम देते समय यही मान कर चलते हैं कि वह अपने कैमरे से भारत को ज्यादा प्रभावशाली ढंग से उन तक पहुंचा सकता है. "वैसे मुझे नहीं लगता कि मैं यहां आ कर बस सकूंगा. सच्चे कलाकार की कोई राष्ट्रीयता नहीं होती." ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खोए या नष्ट हो जाने का उत्तरदायी नहीं होगा.

रचनाएं इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

• सुशील अग्रवाल

अविनाश को जब एक ऐसे कमरे में ले जाया गया, जहां पर फौजियों की भीड़ थी, तो वह हक्काबक्का रह गया. उस के सीधेसादे जवाब ने वातावरण को और भी गंभीर व उलझनपूर्ण बना दिया...

आप पढ़ चुके हैं :

मम्मीपापा द्वारा पीटे जाने पर अविनाश का स्वाभिमान तिलमिला उठा था और वह बिना किसी को बताए घर से निकल पड़ा था. स्टेशन पर पहुंच कर वह बिना टिकट गाड़ी में बैठ गया था. लेकिन टिकट चैकर ने जब अगले स्टेशन पर उसे धक्का मार कर उतार दिया तो पटरियों के साथसाथ चलता हुआ वह कंटीले तारों के एक बाड़ से टकरा गया और फौजी सिपाही उसे पकड़ कर ले गए. कैंप में अविनाश इंस्पेक्टर के लिए परेशानी का कारण था तो करीम मियां अविनाश के लिए एक उलझन...

अविनाश के होंठों से खून की एक धार बह निकली. उस का दिमाग सुन्न हो गया, आंखें सूज कर बंद हो गईं और मुंह का स्वाद नमकीन हो गया. उस के गले में कांटे चुभने लगे, कानों में सांयसांय की आवाज आ रही थी. उसी हालत में उस ने अफसर की खिलखिलाहट सुनी और वह कह रहा था, "नाजुकबदन ज्यादा मार न सह सकेगा, रहीमबक्श. इसे थोड़ी सी ब्रांडी दे दो और तब फिर इस की मिजाजपुर्सी करो. बड़ी कड़ी हड्डी का दिखता है."

"जी, हां, साहब, वरना रहीम भाई का झापड़ खा कर कोई उठा है भला? फौज में आने से पहले यह कराची के बूचड़खाने में काम करता था," रहीमबक्श के साथी ने उस की तारीफ की.

रहीमबक्श ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और अविनाश भद्द से जमीन पर गिर पड़ा. उस की यह हालत देख कर रहीमबक्श बूचड़खाने में सीखी हंसी हंस कर बोला, "हुजूर, ब्रांडी तो इस गरीब

को भी मिलनी चाहिए. मारतेमारते थक गया हूं."

"हां, हां, तुम भी ले लो. मगर, मियां, तुम तो रोजानमाज के बड़े पाबंद हो. फिर यह ब्रांडी वगैरा..." अफसर ने उस से मजाक किया.

"अब, हुजूर, भला रोजानमाज से इन बातों का क्या वास्ता? मजहब अपनी जगह है और यह सब अपनी जगह. अगर सचमुच हम कुरान पाक के सिखाए रास्ते पर चलने लगें तो मेरी तो खैर छोड़िए, अपनी यह फौजी सरकार भला कितने दिन चलेगी और अपने इस मुल्क का क्या होगा? तभी तो कहता हूं कि कुरान पाक तो बस पढ़ने की चीज है. अगर उसे समझ लिया तो समझो, दिमाग गया घास खाने."

अफसर को यद्यपि रहीमबक्श का यह भाषण पसंद नहीं आया, मगर वह सच्चाई से इनकार नहीं कर सकता था. उस ने 'हां ना' किए बिना ब्रांडी की बोतल रहीमबक्श को पकड़ा दी और सच्चे मुसलमान, रोजानमाज के पाबंद और पाकदामन रहीमबक्श की आंखें खुशी से चमक उठीं.

अविनाश के घर में मातम छाया हुआ था. पापा ने हर तरीके से खोज कर ली थी, लेकिन उस का कोई पता नहीं चला था. मम्मी का रोरो कर बुरा हाल हो गया था. उन के पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं जाता था. पापा ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की मगर उन का रोनाधोना बंद नहीं हुआ. उन्हें लग रहा था कि अविनाश के घर से भाग जाने का कारण वही हैं. न वह बच्चों की ओर पूरी तरह ध्यान देती थीं और न उन्हें पूरा प्यार. गृहस्थी के जंजाल में फंस कर वह मां का दायित्व भूल बैठी थीं और इसी की सजा उन्हें मिली थी.

तो क्या अविनाश आराम से बैठा था? नहीं, घर छोड़ कर उस ने बड़ी गलती की थी और वह कम परेशानियां

नहीं उठा रहा था. रहीमबक्श की मार से त्रस्त वह जमीन पर पड़ा था कि उस का मुंह खोल कर रहीमबक्श ने ब्रांडी की बोतल उस में उलट दी. कसैली तीखी शराब उस के गले से उतर कर पेट में पहुंची तो जैसे उस में आग सी लग गई. सुबह से अन्न का एक दाना भी उस के पेट में नहीं गया था और उस पर ब्रांडी ने उस के पेट में जा कर आग धधका दी. उस की गंध से उस का सिर फटा जा रहा था और उसे लग रहा था कि अभी वह उलटी कर देगा.

ब्रांडी ने काम किया और उस के नशे से अविनाश को अपने शरीर का दर्द कम अनुभव होने लगा और उस ने अपने अंदर कुछ ताकत महसूस की. उस ने अपने हाथपैर हिलाए और आंखें खोल दीं. खेमे में सन्नाटा छाया हुआ था. उस ने गरदन उठा कर देखा. रहीमबक्श और उस का साथी जा चुका था. अफसर अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था मगर उस की नजरें अब भी अविनाश पर लगी थीं. अविनाश को हिलते हुए देख कर वह मुसकराया. अविनाश को एक बार शक हुआ कि शायद उस के दिल में दया उमड़ आई है और अब वह छोड़ दिया जाएगा लेकिन उस ने अफसर की वही व्यंग्य भरी आवाज फिर सुनी, "क्या इरादा है तुम्हारा? रहीमबक्श की खातिरदारी पसंद आई?"

अविनाश बेचारा क्या कहता? उस ने अपना सिर फिर जमीन पर रख दिया. अफसर कंबल फेंक कर खड़ा हो गया. अब उस की आवाज नशे से लड़खड़ा रही थी. वह झूमता हुआ अविनाश के पास आ खड़ा हुआ. उस ने झुक कर अविनाश को देखा और अपनी आवाज भरसक मुलायम कर के बोला, "देखो, दोस्त, जासूसी तुम्हारे जैसे बच्चों का खेल नहीं है. इस में बड़ा जोखिम है. पता नहीं कैसी है तुम्हारी सरकार, जो तुम जैसे नाजुक बच्चों से ऐसे काम लेती

रहीमबक्श की मार से त्रस्त अविनाश जमीन पर पड़ा था कि उस का मुंह खोल कर रहीमबक्श ने ब्रांडी की बोतल उस में उलट दी.

है और कैसे हैं तुम्हारे मांबाप जिन्होंने तुम्हें इस काम की इजाजत दे दी. खैर, मुझे इस से कोई वास्ता नहीं. मेरे पास वक्त बहुत कम है. सुबह होते ही मुझे तुम्हारे बारे में हैड आफिस को खबर करनी होगी और तुम्हें वहीं भेज दिया जाएगा. तब मैं नहीं जानता कि वहां तुम्हारी क्या हालत होगी. वहां रहीमबक्श से भी तगड़े लोग मौजूद हैं जो अच्छे-अच्छों से भेद निकलवा लेते हैं. अगर तुम भलाई चाहते हो तो मुझे सब कुछ बता दो. मैं तुम्हें सरहद के उस पार पहुंचा दूंगा."

अविनाश को उस की बातों से तसल्ली होने लगी और उसे लगा कि उसे अपनी जिंदगी की उम्मीद नहीं छोड़ देनी चाहिए. मगर जब उस के पास कोई भेद था ही नहीं तो वह बताए क्या? वह लड़खड़ाता हुआ जमीन पर बैठ गया. उस ने अफसर की ओर देखा. वह उसी तरह खड़ा मुसकरा रहा था. अविनाश को कुछ सहारा मिला और उसका

वह भर्राई आवाज में धीरेधीरे बोला, "देखिए, आप मुझे पता नहीं क्या समझ रहे हैं. मैं कलकत्ता का रहने वाला हूं. मेरे पापा वहां नौकरी करते हैं. आज सुबह मम्मी ने मुझे मारा तो मैं नाराज हो कर घर से भाग निकला. स्टेशन पर जो गाड़ी खड़ी थी, उसी पर सवार हो गया. रास्ते में टिकट चैकर ने मुझे यहां के स्टेशन पर उतार दिया और मैं ठंड से बचने के लिए किसी झोंपड़ी की तलाश में यहां तक आ गया. मुझे नहीं मालूम था कि यहां भारत की सीमा खत्म होती है. मैं तारों में बुरी तरह उलझ गया था और इन दो फौजियों ने मुझे वहां से निकाल कर अंदर घसीट लिया. तभी आप आ गए. मैं जानबूझ कर यहां नहीं आया. मैं माफी मांगता हूं. मेरे घर वाले मेरे बिना बहुत परेशान होंगे, आप मुझे छोड़ दीजिए. मैं वापस घर चला जाऊंगा और अब कभी घर से नहीं भागूंगा."

अविनाश फूटफूट कर रो पड़ा. उसे अपने मम्मीपापा फिर याद आ गए.

उसे अनुभव हो रहा था कि घर छोड़ कर उस ने कितनी बड़ी गलती की है. मगर अब वह कर ही क्या सकता था. उस ने दया के लिए बड़ी कातर दृष्टि से अफसर की ओर देखा जो अब भी वैसे ही खड़ा मुसकरा रहा था. वह जम्हाई ले कर बोला, "तुम ने अपनी ऊलजलूल कहानियों से मेरा काफी वक्त खराब किया है. खैर, हेडक्वार्टर वाले खुद सब कुछ पता लगा लेंगे."

अफसर अपने पलंग की ओर मुड़ा और उस ने बाहर ड्यूटी पर खड़े रहीमबक्श को आवाज लगाई. नशे में झूमते हुए रहीमबक्श ने अंदर आ कर सैल्यूट किया तो झोंक में गिरतेगिरते बचा. अफसर ने नाराजगी से उस की ओर देखा और बोला, "इस के हाथपैर बांध कर कोने में डाल दो और बाहर ड्यूटी पर मुस्तैद रहो. अगर यह भागने की कोशिश करे तो बिना झिझक इसे गोली से उड़ा दो."

रहीमबक्श ने बड़े अदब से गरदन झुकाई और रस्सी निकाल कर अविनाश के हाथपैर कस कर बांध दिए और फिर उसे एक ओर ढकेलता हुआ वह बुदबुदाया, "अब आराम करो अपने रंगमहल में, मियां जासूस."

अविनाश की आंखों से आंसू टपक रहे थे और अंदर ही अंदर पाकिस्तानी फौज के प्रति घृणा और विद्रोह के भाव पनप रहे थे.

रात हो गई थी. तभी खेमे के बाहर एकदम चहलपहल बढ़ गई. एड़ियां टकराने लगीं और कुछ ही देर में खेमे का पर्दा हटा कर फौजी अफसरों की एक पूरी टीम अंदर आ घुसी. सब से आगे एक लंबा, हट्टाकट्टा अफसर, बड़ीबड़ी मूंछें बढ़ाए, कमर पर दोनों हाथ रखे, खड़ा था. उस के पीछे ढेर सारे छोटे अफसर सहमे से खड़े थे और घूरघूर कर अविनाश की ओर देख रहे थे.

"यही है वह?" बड़े अफसर ने अविनाश की ओर इशारा करते हुए पिछली रात वाले अफसर से पूछा.

"जी, साहब," अफसर ने उत्तर दिया.

बड़ा अफसर आगे बढ़ कर अविनाश के ठीक सिर के पास आ खड़ा हुआ. अविनाश ने अपनी आंखें खोलीं तो उसे एक क्रूर, तना हुआ चेहरा अपनी ओर घूरता हुआ दिखाई दिया.

"इसे खड़ा करो," बड़े अफसर ने उसी तरह अविनाश की ओर घूरते हुए हुक्म दिया. तुरंत ही एक छोटा अफसर आगे बढ़ा और उस ने अविनाश की रस्सियां खोल कर उसे कंधे से जकड़ कर सीधा खड़ा कर दिया.

अविनाश की आंखों में घूरते हुए उस अफसर ने अपनी कड़कती आवाज में पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

अविनाश ने एक बार सहमी सी दृष्टि उस भीड़ पर डाली और किसी तरह थूक से गला तर कर के भरी आवाज में कहा, "अविनाश."

"यहां क्या करने आए थे? तुम्हारे कौनकौन साथी हैं? यहां तुम्हारी मदद कौन करता है? तुम्हारा क्या मिशन था?" बड़े अफसर ने एक साथ सवालों की झड़ी लगा दी.

अविनाश ने दृष्टि उठा कर उस की ओर देखा तो उसी तरह अब भी वह उसे घूरे जा रहा था. उस की समझ में न आया कि वह क्या जवाब दे. यही सवाल वह रात में भी सुन चुका था. उस ने जवाब भी दिया था, लेकिन क्या फायदा हुआ? वह खामोश ही खड़ा रहा.

"इस की तलाशी ली?" बड़े अफसर ने फिर रात वाले अफसर से सवाल किया.

"जी, साहब. कुछ नहीं मिला. मैं ने हर तरीके से इस से पूछने की कोशिश की, मगर यह कुछ नहीं बताता. हर बार नई कहानी सुनाता है."

"इस का बाप भी बताएगा. डाल दो इस कुत्ते को मेरी गाड़ी में. और तुम
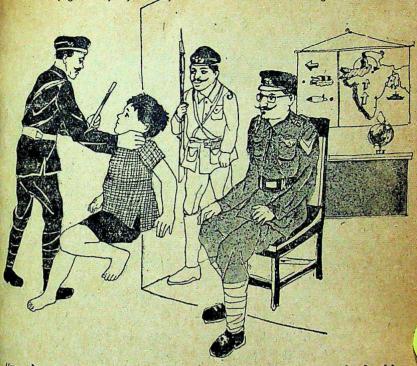
"डाल दो इस कुत्ते को मेरी गाड़ी में." बड़े अफसर का आदेश पाते ही छोटे अफसर ने अविनाश को दबोच लिया और घसीटता हुआ वह बाहर ले आया...

होशियार रहना. इस के पीछे इस के साथी जरूर होंगे. उन्हें भी पकड़ने की कोशिश करो."

"जो हुक्म," अफसर ने सैल्यूट करते हुए कहा. फिर उस ने आगे बढ़ कर अविनाश को दबोच लिया और उसे घसीटता हुआ बाहर ले आया, जहां जीपों की लाइन लगी हुई थी. उस ने अविनाश को उठा कर एक जीप में पटक दिया. दो फौजी तुरंत उस के अगलबगल आ कर बैठ गए और उस की मुश्कें कस लीं. देखतेदेखते सारे अफसर जीपों में सवार हो गए और पूरा काफिला चल दिया.

एक तंबू के सामने खड़े रहीमबक्श ने ठंडी सांस ली और अपने साथी की ओर मुड़ कर बोला, "गया. खुदा रहम करे. बड़ा गांधी का बच्चा बन रहा था, करीम मियां ने भेजा है."

"अबे, अब यह लफड़ा बंद कर. यह करीम बदमाश किसी दिन कोर्ट मार्शल कराएगा. खुदा ने बड़ी खैर की कि बात बंद हुई, वरना अपनी तो बस, अय्यूब मियां वाली हालत ही होने वाली थी." उस के साथी ने सहमति में सिर हिलाया और दोनों खड़ेखड़े धूल का गुबार देखते रहे, जिस ने जीपों का काफिला छिपा दिया था.

दो दिनों तक अविनाश को एक सीलन भरी कोठरी में बंद रखा गया. दिन में केवल एक बार उसे पाखाने जाने दिया जाता. जब वह वहां से लौटता तो उसे कोठरी में दोतीन डबलरोटी के सूखे टुकड़े और एक बरतन में थोड़ा सा पानी रखा हुआ मिलता, जिसे खापी कर वह फिर लेट जाता.

तीसरे दिन दोपहर सहसा कोठरी का दरवाजा खुला और एक फौजी ने अंदर प्रवेश किया. अविनाश हड़बड़ा कर उठ बैठा. फौजी ने एक बार बड़ी

हकारत से उस की ओर देखा और बोला, 'चलो मेरे साथ.'

अविनाश चुपचाप उस के पीछे हो लिया. सामने एक आलीशान इमारत दिखाई दे रही थी. अविनाश को ले कर फौजी उस इमारत में घुस गया और एक बरामदा पार कर के लिफ्ट पर सवार हो गया.

उन्हें ले कर लिफ्ट तीसरी मंजिल पर पहुंची. वहां एक बरामदा पार कर के वे लोग एक कमरे में घुस गए. चारों तरफ फौजी ही फौजी दिखाई दे रहे थे. यह कोई आफिस था, जहां मेजों पर टाइपराइटर खटखटा रहे थे और फाइलों के अंबार लगे हुए थे. इस कमरे को पार कर उन्होंने एक दूसरे कमरे में प्रवेश किया जहां एक फौजी बैठा कागज उलटपलट रहा था. इन लोगों के पहुंचते ही उस ने सिर उठा कर इन की ओर देखा और तुरंत खड़ा हो गया. फिर उस ने अविनाश को ऊपर से नीचे तक देखा और आश्चर्य भरी आवाज में बोला, "क्या यही है वह?"

"जी, हां," अविनाश के साथ वाले फौजी ने कहा.

दूसरे फौजी ने फिर अविनाश की ओर देखा, जैसे उसे विश्वास न हो रहा हो. फिर वह बोला, "इसे यहीं रोको. में अंदर बात कर के आता हूं, शायद अभी सारे मेंबर नहीं आए हैं," और वह सामने की चिक उठा कर अंदर चला गया. अविनाश के साथ वाला फौजी एक कुरसी पर जा बैठा. अविनाश चुपचाप उस के पास खड़ा रहा.

थोड़ी देर में अंदर से आ कर वह फौजी अपनी कुरसी पर जा बैठा और फाइल पर कुछ लिखने लगा. फिर वह कुछ कागज ले कर अंदर चला गया. धीरेधीरे शाम हो गई और कमरे में लगे बल्ब जलने लगे.

आखिर अंदर से बुलावा आ गया. अविनाश के साथ वाला फौजी हड़बड़ा कर उठा और हथेली से मूंछें रगड़ता हुआ अपनी टोपी ठीक करने लगा और फिर अविनाश की कलाई पकड़ कर चिक हटा कर अंदर चला गया.

सामने एक विशालकाय मेज पड़ी थी, जिस के तीन तरफ 20-25 कुरसियां पड़ी थीं जिन पर कई रौबदार चेहरे बैठे दिखाई दे रहे थे. कमरे में तेज रोशनी के कई बल्ब जल रहे थे और गहरा सन्नाटा छाया हुआ था.

अविनाश को बगल में कर के फौजी ने एक जोरदार सैल्यूट मारा. सभी की निगाहें ऊपर उठीं और अविनाश पर जा टिकीं. बीचोंबीच बैठा एक मोटा अफसर अविनाश को देखते ही अंगरेजी में बोला, "यही वह शैतान छोकरा है जिसे तीन दिन पहले चुपचाप सीमा पार करते हुए हमारे जवानों ने पकड़ा है. इस से वहां काफी पूछताछ की जा चुकी है लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला. हमें शक है कि यह दुश्मन का जासूस है और इस से काफी भेद उगलवाए जा सकते हैं. हालांकि इस की उमर बहुत कम है, कमबख्त बहुत चालाक है."

सारे रौबीले चेहरे उस की बात को गंभीरता से सुनते रहे. फिर उन में से एक ने अपना चश्मा उतार कर गूंजदार खरखराती आवाज में कहा, "अच्छा तो, अविनाश, मैं तुम्हें एक बात पहले बता दूं. हम लोग उतने खराब आदमी नहीं हैं जितना तुम समझ रहे हो. हम दोस्तों के साथ दोस्ताना सुलूक करते हैं और चाहते हैं कि तुम दोस्तों की तरह रहो. अगर तुम हमें सब कुछ सचसच बता दोगे तो तुम देखना, हम तुम्हारे साथ कितना अच्छा सुलूक करते हैं. अगर तुम ने गुस्ताखी की तो तुम जिंदा नहीं बच सकते. तुम मेरी बात समझ रहे हो न?"

उस की मीठी बातों से अविनाश का साहस बढ़ा और उस ने सिर हिला कर बताया कि वह उस की बात समझ रहा है.

मोटे अफसर ने अब एक नया सिगार सुलगा लिया था और आंखें बंद कर के

अजीबोगरीब स्थिति में हो गया था, जैसे उसे इस ड्रामे में कतई मजा न आ रहा हो. उस ने एक जोरदार जम्हाई ली और अपनी कुरसी पर कुछ और पसर गया. अविनाश का ध्यान उस ओर गया तो ऐसे दिल दहलाने वाले माहौल में भी मुसकान की एक हलकी सी लकीर उस के होंठों पर फिसल गई. चश्मे वाले अफसर ने तुरंत अपना चश्मा घुमा कर इस मुसकान को पकड़ लिया. फिर उस ने थोड़ा मुड़ कर अपने बगल के गंजे अफसर से धीमी आवाज में कहा, "बड़ा घुटा हुआ मालूम होता है. इस की मुसकान तो देखो. लगता है, सीधी उंगली से घी नहीं निकलेगा."

"हूं," गंजे अफसर ने बड़ी संजीदगी से अपना भारीभरकम सिर हिला कर कहा और अपनी चुंधी आंखें फिर अविनाश पर जमा दीं. चश्मे वाले अफसर ने फिर अविनाश की ओर रुख किया. बोला, "देखो, मिस्टर, तुम्हारे बारे में हम ने सारी रिपोर्ट इकट्ठी कर ली है, जिस से हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तुम शुरू से आखिर तक झूठ बोल रहे हो. अब तुम्हारे लिए यही अच्छा है कि हमें सब कुछ सचसच बता दो. तुम्हारी उमर यह खतरनाक खेल खेलने की नहीं है. बेहतर है कि तुम हम लोगों का वक्त खराब न करो और हमारे सवालों का सही जवाब देते जाओ."

अविनाश का ध्यान इस बीच एक बड़ीबड़ी मूंछों वाले अफसर पर जम गया था. उसे याद आ रहा था कि थोड़े दिन पहले उस ने बच्चों की एक पत्रिका में एक कार्टून देखा था, जिस में ऐसी मूंछों से रस्सी बांध कर दो बच्चे झूला झूल रहे थे. कार्टून याद कर के वह फिर मुसकराया. चश्मे वाले अफसर ने फिर उस की मुसकान पकड़ ली. उस का माथा गरम होने लगा. कुछ नाराजी में उस ने कहा, "हां, तो अब हमें यह बता दो कि तुम्हारा मिशन क्या था?"

"जी... जी, मैं मिशन स्कूल में नहीं, गवर्नमेंट स्कूल में पढ़ रहा था," अविनाश ने चौंक कर कहा.

"लाहौल विलाकूवत," चश्मे वाले अफसर ने चिल्ला कर कहा और अपना हथौड़ानुमा हाथ जोर से मेज पर पटका. इस आवाज से मोटा अफसर बुरी तरह चौंक पड़ा. उस ने अपनी बड़ीबड़ी आंखों से चश्मे वाले अफसर को घूरा. वह सहम कर बोला, "गुस्ताखी माफ हो. इस छोकरे की बातों से गुस्सा आ गया था."

कुछ देर बाद चश्मे वाला अफसर अपनी कुरसी से उठ खड़ा हुआ और तीनचार लंबे कदम बढ़ा कर उस ने अविनाश के बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़ कर उस का सिर झकझोर दिया और चीख कर बोला, "बंद करो यह चीखना. तुम सीधे से कुछ नहीं बताओगे." फिर उस ने एक फौजी, सिल्ला खां से कहा, "जाओ, इस कमीने को तीसरे कमरे में ले जाओ."

अब मोटा अफसर बोला, "तो अब

जमाना है कि...

जमाना है कि गुजरा जा रहा है,
यह दरिया है कि बहता जा रहा है,
जमाने पै हंसे कोई कि रोए,
जो होना है वह होता जा रहा है.

—जलील मानिकपुरी

आज का काम खत्म हुआ न?"

"जी, साहब," चश्मे वाले अफसर ने सावधान हो कर कहा.

मोटा अफसर कसमसा कर अपनी कुरसी पर से उठा. उस ने एक उड़ती सी नजर अविनाश पर डाली और दरवाजे की ओर बढ़ गया. बाकी सब अफसर उस के पीछे हो लिए.

सिल्ला खां ने अविनाश की गरदन पकड़ कर उसे खड़ा कर दिया और खींचता हुआ तीसरे कमरे की ओर ले गया.

इस 'तीसरे कमरे' में पाकिस्तानी फौज के चंगुल में फंसे लोगों को तरह-तरह से सताया जाता था. सिल्ला खां अविनाश को घसीटते हुए इस कमरे तक ले आया और उसे एक ओर ढकेल कर दरवाजे से टिक कर खड़ा हो गया.

थोड़ी देर में बरामदे में बूटों की आवाज गूंजने लगी. सिल्ला खां जल्दी से अटेनशन की मुद्रा में खड़ा हो गया. तभी लंबेलंबे कदम रखता हुआ चश्मे वाला अफसर कमरे में आ गया. उस के पीछे दो फौजी और थे जो डीलडौल में दैत्य से नजर आ रहे थे.

चश्मे वाला अफसर एक कुरसी पर पैर चढ़ा कर बैठ गया. अब दोनों फौजी अविनाश के पास पहुंच चुके थे. अफसर ने उन की ओर देखा और अपने सिर को एक हलका सा झटका दे कर उन्हें कुछ इशारा किया.

इशारा पाते ही अविनाश का बदन दो जल्लादों के हाथों में झूलने लगा और उन्होंने उसे ले जा कर कमरे के बीचोंबीच पड़ी एक मेज पर पटक दिया और बड़ी तेजी के साथ मेज के किनारों से लटक रहे पट्टों में उस के हाथपैर जकड़ दिए. फिर उन्होंने मेज के नीचे लगे एक चक्के को धीरेधीरे घुमाना शुरू किया.

अविनाश दर्द से चीख पड़ा. चक्के के घूमने के साथ ही उस का बदन ऐंठता जा रहा था. वह मेज पर मछली की तरह तड़पने लगा. उस के मुंह से एक दर्द भरी चीख निकली और चक्का घुमाते हुए एक जल्लाद खिलखिला कर हंस पड़ा, "अबे, अभी चूं बोल गई! अभी तो पूरा एक चक्का भी नहीं घुमाया."

उस ने चक्के को थोड़ा और घुमाया और अविनाश फिर जोर से चीख पड़ा. चश्मे वाले अफसर ने फिर इशारा किया और चक्का घूमना बंद हो गया. अविनाश का बदन अब भी उसी तरह ऐंठा पड़ा था और दर्द की लहर उसे नीचे से ऊपर तक कंपा रही थी. अफसर कुरसी से उठ कर अविनाश के पास आया और उस ने उलटे पंजे से एक जोरदार झापड़ उस के मुंह पर जमा दिया. फिर वह बोला, "क्या इरादे हैं जनाब के?"

अविनाश ने कातर नयनों से उस की ओर देखा और तभी दूसरी ओर से एक और झापड़ उस के गाल पर पड़ा और उस की गरदन दूसरी तरफ लुढ़क गई. अफसर थोड़ी देर तक उस के बोलने की प्रतीक्षा करता रहा. लेकिन जब उसे कोई उत्तर नहीं मिला तो उस ने फिर इशारा किया और चक्का थोड़ा और घुमा दिया गया. अब अविनाश के मुंह से एक दर्द भरी चीख निकली और वह बेहोश हो गया.

दूसरे फौजी ने पास ही रखे बरतन में से पानी निकाल कर अविनाश के मुंह पर छींटे मारे. थोड़ी देर में उस की चेतना लौट आई.

—क्रमशः

अगले अंक में :

अविनाश को जेल की एक बदबूदार कोठरी में बंद कर दिया गया, लेकिन वह वहां से कैसे निकल गया? अपने साथियों के बीच अविनाश ने क्या प्रतिज्ञा की?

युगांडा के चंचल प्रकृति के राष्ट्रपति इदी अमीन, जिन्हें बड़ा दादा भी कहते हैं, इन दिनों मशहूर हो रहे हैं. दुनिया में ऐसी कोई कला नहीं है, जिस में इदी अमीन पारंगत न हों. बंदूक चलाने, शिकार खेलने, फिल्मों में नायक की भूमिका अदा करने, भारी प्रचार करने और अपने देश में आतंक का दौर चलाने में तो इन का कोई मुकाबला ही नहीं है. सन 1971 में मिल्टन ओबोटो का तख्ता पलट कर सत्ता हथियाने के बाद इदी अमीन ने हजारों निरपराध व्यक्तियों को मौत के घाट उतारने में भी भारी सफलता प्राप्त की है. सन 1972 में अल्लाताला द्वारा स्वप्न में दिए एक विशेष संदेश के आधार पर इदी अमीन ने युगांडा से 50,000 एशियाइयों को निकालने में वाहवाही लूटी है. नित नए प्रचारात्मक तरीके अपनाने वाले अफ्रीका के इस दादा ने पिछले सप्ताह एक नए

एलिजाबेथ बगाया की

नाटकीयता के लिए विश्वविख्यात युगांडा के राष्ट्रपति इदी अमीन के नए षड्यंत्र से प्रगति की ओर बढ़ती अफ्रीकी नारियों का भविष्य अंधकारमय नहीं हो जाएगा?

हजार बम का विस्फोट कर अपना नाम और अखबारों की सुर्खियों में लाने में सफलता प्राप्त की है.

इदी अमीन ने हाल ही में अपनी विदेश मंत्री कुमारी एलिजाबेथ बगाया को अनैतिक व्यवहार के आधार पर बर्खास्त कर नजरबंद कर दिया है. एलिजाबेथ बगाया कुछ दिन पूर्व ही संयुक्तराष्ट्र संघ में अपने देश का प्रतिनिधित्व करने गई थी. इदी अमीन ने बगाया पर आरोप लगाया है कि उस ने एक अज्ञात योरोपीय से पैरिस हवाई अड्डे के स्नानागार में प्रेम किया और अमरीकी सी. आई. ए. व ब्रिटेन के गुप्तचरों से संपर्क किया.

शाही कुल में पैदा होने के कारण बगाया टोरो राज्य की राजकुमारी के नाम से मशहूर है. मार्च, 1943 में जन्मी, छः फुट लंबी, आकर्षक चेहरे की इस अफ्रीकी सुंदरी को राजनीति में लाने का श्रेय इदी अमीन को ही है. युगांडा के भूतपूर्व राष्ट्रपति मिल्टन ओबोटे व इदी अमीन के बाद विदेशों में बगाया युगांडा की जानीमानी हस्ती समझी जाती है. एलिजाबेथ बगाया विगत 20 फरवरी, सन 1964 को विदेश मंत्री के पद पर नियुक्त हुई थी. इस से पूर्व बगाया वकील, एक्ट्रेस और माडलिंग का व्यवसाय भी कर चुकी है. जिस समय बगाया का राज्य युगांडा में शामिल किया गया था उस समय तक बगाया वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी थी.

बगाया ही पूर्वी अफ्रीका की प्रथम महिला थी, जिस ने वकालत पास की और अफ्रीकी नारी के उत्थान के लिए

...या की गिरफ्तारी

लेख • वशिष्ठ बंधु

जोरशोर से कार्य किया. बगाया ने माडलिंग का धंधा भी शुरू किया और राष्ट्रमंडल की एक फैशन प्रदर्शनी में भाग लिया. फिर न्यूयार्क में अभिनेत्री का कार्य किया. दो वर्ष तक बगाया घुमंतू राजदूत भी रही और बाद में संयुक्त राष्ट्रसंघ में युगांडा की प्रतिनिधि नियुक्त हुई.

राष्ट्रपति मिल्टन के पतन के बाद बगाया ने युगांडा की राजनीति में पूरी तरह आने का निर्णय किया और विदेश मंत्री के पद पर नियुक्त हुई. लेकिन शीघ्र ही इदी अमीन से इन के मतभेद, बढ़ने लगे और मतभेदों का अंत हुआ गिरफ्तारी में. इदी अमीन ने बगाया पर आरोप लगा कर कहा है कि बगाया ने अफ्रीकी नारीत्व को लज्जित किया है. कंपाला के हवाईअड्डे पर उतरते ही बगाया को गिरफ्तार कर लिया गया. बगाया की गिरफ्तारी से इस बात की आशंका की जा रही है कि कहीं उस के साथ वैसा ही बरताव न हो जैसा कि भूतपूर्व विदेश मंत्री के साथ हुआ, जिस की बेदर्दी से हत्या कर दी गई.

तानाशाही शासन

युगांडा में पिछले कुछ अरसे से आतंक का राज्य है. अंतर्राष्ट्रीय जजों की एक परिषद ने हाल ही में एक प्रस्ताव पास कर युगांडा में शांतिव्यवस्था और कानून की बिगड़ती स्थिति की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है. इदी अमीन के तानाशाही तरीकों और नृशंस अत्याचारों से डर कर हजारों युगांडावासी पड़ोसी देशों—केन्या, तंजानिया और योरोप के देशों में चले गए हैं. युगांडा की राजधानी कंपाला में इदी अमीन की निजी गुप्तचर संस्था के 3000 से भी अधिक व्यक्ति खिलाड़ियों की पोशाक पहने और काला चश्मा लगाए दिनरात संदिग्ध व्यक्तियों की निगरानी में लगे रहते हैं. जिस किसी पर भी उन्हें शक होता है उसे मोटर में बैठा कर वे ले जाते हैं.

कंपाला में अमीन की निजी गुप्तचर संस्था का आतंक इतना बताया जाता है कि जो भी एक बार पकड़ में आ जाता है वह फिर दोबारा सड़क पर दिखाई नहीं देता है.

आतंक का राज्य

मार्च, 1974 में युगांडा के भूतपूर्व विदेश मंत्री माइकेल ओंडोगा का अपहरण किया गया. बाद में औण्डोगा का क्षत-विक्षत शव विक्टोरिया झील में तैरता हुआ मिला. इस से भी लोमहर्षक घटना 6 सितंबर, 1972 को घटी, जब छः बंदूकधारी पुलिसमैन राष्ट्रीय हाईकोर्ट की बिल्डिंग में घुस गए और प्रधान न्यायाधीश बनिडिक्टो किवानकू को सड़क पर घसीट कर ले गए और फिर बाद में उन का पता नहीं चला.

इसी तरह पश्चिम जरमनी में राजदूत के पद पर काम कर सेवामुक्त होने वाले जार्ज कांबा के सम्मान में स्वयं इदी अमीन द्वारा दी गई पार्टी में से उन का अपहरण कर लिया गया.

इन सभी घटनाओं पर इदी अमीन ने मात्र सरसरी तौर पर बयान दे कर चुप्पी साध ली. जाहिर है कि ये सभी राजनीति से प्रेरित अपहरण, हत्याएं, अत्याचार और आतंक फैलाने वाली काररवाइयां इदी अमीन सिर्फ अपनी गद्दी को सुरक्षित करने के लिए कर रहे हैं. इदी अमीन के ये प्रचारात्मक नाटक कुछ समय तक तो कुरसी को सुरक्षित कर देंगे, लेकिन लंबे समय तक नहीं. आज नवोदित अफ्रीकी राष्ट्रों में जो जनजागरण, चेतना, राजनीतिक हलचल हो रही है, वह उत्पीड़न, शोषण और हजारों वर्षों की गुलामी की जंजीरें तोड़ने के कारण है, न कि नए प्रकार की राजनीतिक गुलामी स्वीकार करने के लिए. अफ्रीका के ज्यादातर देश आज अशिक्षा, अंधविश्वास, गरीबी, भुखमरी से पीड़ित हैं. बंदूक के द्वारा उन पर शासन करने के बजाए उन की आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने का प्रयास किया जाना चाहिए. ●

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता, श्री ध्रुव राहिल, जयपुर, हैं.

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

• **आत्मनिर्भर नागरिक**

डूंगरपुर से 84 किलोमीटर दूर, जैसला गांव के निवासियों ने नियमित रूप से अपनी आय का दो प्रतिशत हिस्सा नकद अथवा वस्तु के रूप में गांव के विकास के लिए एकत्रित कर के गांव में एक राजकीय डिस्पेंसरी, एक माध्यमिक तथा एक प्राथमिक विद्यालय तथा बिजली की सुविधा उपलब्ध की है. जैसला निकटवर्ती अनेक गांवों में ऐसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं.

गांव में रहने वाले 60 परिवारों में से केवल 15 परिवार ही राशि देते रहे हैं. यह गांव किसी भी सड़क से विलग है.

—नवज्योति, अजमेर (प्रेषक : सुशीलचंद्र सेठी 'चंद्रमुखी', अजमेर)

• **रूढ़ि विरोधी छात्र**

पिलानी में 19 अक्तूबर को विष्णु यज्ञ के आयोजकों और बिड़ला इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी के छात्रों के बीच एक संघर्ष हो गया.

तनाव उस समय पैदा हुआ जब छात्र यज्ञ करने का विरोध कर रहे थे. देश में भयानक सूखे की स्थिति होते हुए भी यज्ञ के आयोजक यज्ञ में भारी मात्रा में खाद्य पदार्थ की आहुति देने की कोशिश कर रहे थे. लगभग एक क्विंटल घी यज्ञ के लिए इस्तेमाल किया गया.

छात्रों की यज्ञ न करने की अपील को आयोजकों द्वारा ठुकरा देने पर दोनों पक्षों में संघर्ष छिड़ गया.

—नवीन दुनिया, जबलपुर (प्रेषक : वीरेंद्र मोहन, जबलपुर)

• **आत्मरक्षक महिला**

पिछले अगस्त में कोटा के इंदिरा गांधी नगर के एक चौकीदार ने दूसरे चौकीदार के ड्यूटी पर चले जाने के बाद उस की बीवी के साथ बलात्कार करने का प्रयास किया, पर महिला के धैर्य व साहस के कारण उसे अपनी जान गंवानी पड़ी.

महिला ने अपना सतीत्व बचाने के लिए एक चाल चली और कहा, "अभी नहीं, फिर कभी." मगर उस आदमी ने चाकू निकाल कर महिला के जिस्म से सटा दिया. तब महिला ने कहा, "ठीक है, चाकू हटा लो. रोशनी बंद कर दो. साथ ही कपड़े भी उतार दो. मैं भी उतार देती हूं."

यह कह कर महिला ने उस के सामने कपड़े उतारने शुरू कर दिए. चौकीदार ने भी अपने कपड़े उतारे और रोशनी बंद कर के महिला के पास आया. मौका पा कर महिला ने उसी चाकू से उस की जननेंद्रिय काट डाली और अपना सतीत्व बचा लिया. चौकीदार अचेत हो गया और अस्पताल में मर गया.

इस बहादुरी के लिए सरकार ने चौकीदार की पत्नी को 500 रुपए का इनाम दिया.

—ब्लिट्ज, बंबई (प्रेषक : ध्रुव राहिल, जयपुर) •

जासूस आप
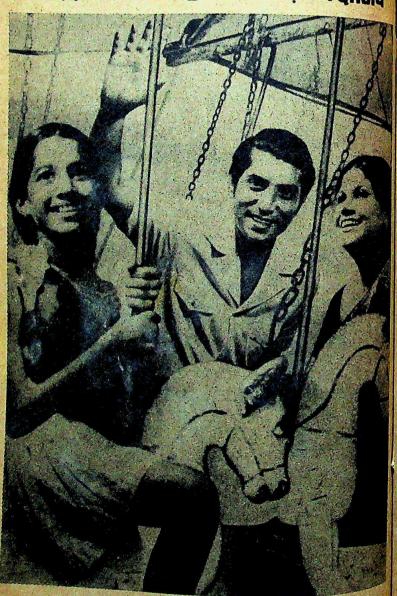
मामला एक लाख 37 हजार रुपए की धोखाधड़ी का था. दरअसल यह सीधी धोखाधड़ी भी नहीं थी. मामले को हाथ में लेने के बाद इंस्पेक्टर कांत को घटना का जो ब्योरा दिया गया, वह इस प्रकार है :

घटना वाले दिन सुबह कोआपरेटिव बैंक आफ बिजनेसमेन के मैनेजर मिस्टर डी. आर. रावत के पास डालूराम एंड कंपनी के मालिक लाला डालूराम दो बीयरर चैक ले कर आए और कैश कर देने को बोले. एक चैक 73 हजार रुपए का था और दूसरा 64 हजार रुपए का. एक साथ इतनी बड़ी रकम की जरूरत अचानक पड़ जाने का कारण उन्होंने यह बताया कि उन्होंने एकाएक एक सौदा पक्का कर लिया है, जिस में भुगतान नकद ही करना है.

उस समय बैंक में इतनी बड़ी रकम नहीं थी. इसलिए बैंक के मैनेजर ने कहा कि कुछ समय बाद वह हैड आफिस से रुपए मंगवा कर फोन कर देगा. लाला डालूराम से मिस्टर रावत का व्यक्तिगत परिचय भी था. इसलिए वह दोनों चैक वहीं छोड़ गए और कह गए कि फोन आने पर वह अपना आदमी भेज देंगे.

"लगभग 11 बजे हैड आफिस से रुपए आ गए तो मैं ने लालाजी को फोन किया," बैंक के मैनेजर मिस्टर रावत ने बताया, "फोन लालाजी की सेक्रेटरी ने उठाया था. उस ने लालाजी से पूछ कर कहा था कि वह लगभग पौने एक बजे अपने आदमी बंसीधर को भेजेंगे. वही उन का विश्वासपात्र है.

"लगभग एक घंटे के बाद फिर फोन आया. दूसरी ओर वही सेक्रेटरी बोल रही थी. उस ने बताया कि बंसीधर बाजार से जल्दी लौट आया है इसलिए उसे अभी भेजा जा रहा है. उस समय 12 बज कर 10 मिनट हुए थे. सवा बारह बजे एक दुबलापतला छोटे से कद का आदमी मेरे कमरे में आया. उस ने गाढ़े नीले रंग का गरम सूट, फूलों वाली लाल टाई, सिर पर हेलमेट, जो अकसर मोटरसाइकिल चलाने वाले पहनते हैं, हाथ में फर वाले दस्ताने और आंखों पर हलके नीले रंग का धूप का चश्मा पहन रखे थे."

"पैसों के बारे में बात उस ने शुरू की थी या आप ने?" इंस्पेक्टर के सहायक अक्षत ने पूछा.

"उसी ने. वह कमरे का दरवाजा खोल कर सीधे आ कर मेरी मेज के सामने खड़ा हो गया और आते ही उस ने पूछा, 'आप को दो बीयरर चैकों के बारे में लालाजी का फोन मिल गया

होगा?' मेरे हामी भरने पर उस ने रुपए मांगे. मैं ने उसे बैठने को कहा तो वह बोला, 'जरा जल्दी है. पैसे लेने वाले बैठे हैं.' पैसे मैं ने पहले ही ले कर दराज में रखे हुए थे, उसे पकड़ा दिए."

थोड़ा रुक कर मैनेजर ने कहा, "उस के हिंदी बोलने के ढंग में बंबइयापन साफ नजर आ रहा था...मैं ने रुपए दे दिए. लगभग पौने एक बजे वैसे ही डीलडौल का एक युवक आया तो भेद खुला कि आधा घंटा पहले आने वाला व्यक्ति ठग था."

इंस्पेक्टर कांत ने सिर हिलाया और पूछा, "आप ने उस से दस्तखत नहीं करवाए?"

"चैक तो मेरे पास थे ही. फिर एक रसीद के लिए मेरे मन में बात आई, पर वह इतनी जल्दी में था कि मैं यह बात भूल ही गया."

किसी और व्यक्ति ने तथाकथित बंसीधर को मैनेजर के केबिन में आते-जाते नहीं देखा था. बैंक में भुगतान एक बजे तक होता है और उस समय भीड़ भी बहुत होती है. इसलिए उधर किसी का ध्यान ही नहीं जा सकता था.

लाला डालूराम का कहना था, "मैं ने दोबारा कोई फोन नहीं करवाया. बैंक के साथ हमारी फर्म का व्यवहार होता ही रहता है और पहले भी कई बार ऐसे ही चैक मैं छोड़ आया हूं लेकिन हर बार पावती की रसीद मैनेजर साहब जरूर लेते रहे हैं और हमारे कर्मचारी रकम के लेनदेन में दस्तखत जरूर करते हैं और दूसरों से भी ले लेते हैं. हमारा कोई आदमी दस्तखत किए या रसीद दिए बिना रुपया नहीं ले सकता."

"जहां तक दूसरी आवाज का सवाल है," लालाजी ने बताया, "मेरी सेक्रेटरी मेरे कमरे में ही लगी मेज पर बैठती है. एक बजे से पहले वह प्रायः बाहर नहीं जाती. आज एक बार वह बाथरूम में जरूर गई. उस पर शक नहीं किया जा सकता क्योंकि वहां फोन नहीं है."

बंसीधर का कहना था, "मैं ग्यारह

बारह बजे तक बाजार में ही रहता हूं. बाजार के भावों के उतारचढ़ाव के साथ-साथ बिल वसूल करना व लेनदेन मेरे ही हाथ में है. ठीक 12-10 पर मैं कहां था यह मुझे पता नहीं क्योंकि मैं प्रायः एक दुकान पर पांचसात मिनट से ज्यादा नहीं ठहरता. हां, जैन एंड संस में जब पहुंचा तो 12 बज चुके थे, उस के बाद सीधा यहां आ गया. पांचसात मिनट में वहां का काम निबटा कर मैं पत्नी को छोड़ने रेलवे स्टेशन पर चला गया."

सब के बयान ले कर इंस्पेक्टर कांत अपने दफ्तर पहुंच गए.

"यह एक पूरे गिरोह का काम है," अक्षत बोला, "और इस गिरोह में लड़कियां भी शामिल हैं."

"हां, ऐसे चित्र निकालो जिन में लड़कियां भी शामिल हों."

चित्रों की एक मोटी एलबम ले कर वे मिस्टर रावत के पास पहुंचे. उन्हें फोटो दिखाते हुए कांत ने कहा, "ये कुछ अपराधियों के फोटो हैं. आप पहचानने की कोशिश करें कि इन में से कौन सा व्यक्ति आप के पास आया था. हमारे पास कुछ ऐसे व्यक्तियों के फोटो भी हैं जो पतिपत्नी, दोनों यही काम करते हैं. उन के फोटो अभी आते ही होंगे."

"वह आदमी जरूर शादीशुदा होगा," मिस्टर रावत ने कहा, "उस के हाथ में जो अंगूठी थी, उस पर 'निर्मला' नाम खुदा हुआ था."

इंस्पेक्टर कांत ने फोटो समेट लेने को कहा और अगले क्षण बाहर आ गए.

"क्या फोटोग्राफर के पास चलें?" अक्षत ने जीप स्टार्ट करते हुए पूछा.

"नहीं. अपराधी का पता तो चल चुका है. इन तीनों में से एक आदमी झूठ बोल रहा है," इंस्पेक्टर ने कहा.

क्या आप बता सकते हैं कि वह व्यक्ति कौन है? ●

'जासूस आप' पहेली-14

50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में

सही हल भेजने वाले पाठकों को 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. उत्तर के साथ निम्न कूपन काट कर भेजना आवश्यक है. आप के उत्तर 28 फरवरी, 1975 तक मुक्ता कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए.

प्रेषक ____________________

पता ____________________

'जासूस आप' पहेली -14

मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

कलकत्ता में विश्व टेबल टैनिस

कलकत्ता में फरवरी में दुनिया भर के टेबल टैनिस खिलाड़ी जमा हो रहे हैं. अवसर होगा 33वीं विश्व प्रतियोगिता का. 6 से 16 फरवरी तक होने वाले इस मुकाबले में लगभग 50 देशों के भाग लेने की संभावना है. इस के लिए विशेष रूप से एक इनडोर स्टेडियम का इन दिनों निर्माण हो रहा है.

जहां एक ओर इस स्पर्धा में बहुत सालों बाद चीनी खिलाड़ियों को भारत आने का मौका मिलेगा, वहां भारतीय खिलाड़ियों को बहुत कुछ सीखने का अवसर भी प्राप्त होगा. मिस्र, यमन, वियतनाम और पनामा जैसे कुछ देश पहली बार विश्व प्रतियोगिता में उतरेंगे.

भारत का इस समय विश्व टेबल टैनिस में सातवां स्थान है. पहले तीन स्थान चीन, जापान और उत्तरी कोरिया के खिलाड़ी बांटते रहे हैं. चीन ने तो हाल के वर्षों में अपनी पिंगपोंग की राजनीति से अपने पुराने दुश्मनों को खुश करने का बीड़ा सा उठा लिया है.

आशा है कि वर्तमान पुरुष विश्व चैंपियन हसी एन तिग और महिला विजेता यू लान कलकत्ता खेलने आएंगे. उधर योरोपीय क्षेत्र के चैंपियन हंगरी की ओर से भी इस्तावन जोनीर, गाबोर तथा महिलाओं में जूडिट मायोस तथा बीटरिक्स किशाजी के भाग लेने की उम्मीद है.

इधर भारत में खोदायजी, मर्चेंट, कासिम अली और जगन्नाथन का जमाना लदता जा रहा है. उस के स्थान पर जयंत कवद तथा मनजीत दुआ जैसे युवा खिलाड़ी उभर रहे हैं. टेबल टैनिस में हाल के वर्षों में जितने नए खिलाड़ी चमके है उतने किसी और खेल में नहीं.

जहां एक ओर इतने बड़े आयोजन की तैयारी हो रही है, वहां किसी भी अन्य खेल की भांति टेबल टैनिस भी गुटबंदी की राजनीति की गिरफ्त में कसता जा रहा है. अब तक टेबल टैनिस में भी एक व्यक्ति का निरंकुश साम्राज्य रहा है—टी. डी. रंगारामानुजम. यह सही है कि अंतर्राष्ट्रीय टेबल टैनिस संघ में इन साहब की काफी हवा है, पर उस गलतफहमी में यह यहां किसी को कुछ समझते ही नहीं हैं. इन्होंने कलकत्ता आयोजन के लिए स्थानीय अधिकारियों का सहयोग लेने से लगभग मना ही कर दिया है. इस से बंगाल टेबल टैनिस संघ में काफी रोष है. कोई आश्चर्य नहीं कि ऐन वक्त पर कुछ रंग में भंग पड़ जाए.

अश्विनी युग का खात्मा

पिछले दिनों भारतीय हाकी संघ पर से अश्विनीकुमार की हुकूमत विधिवत समाप्त हो गई. सुनते हैं कि जब उन्हें सीमा सुरक्षा दल का महानिदेशक पद सौंपने की बात हो रही थी तब उन्हें स्पष्ट कर दिया गया था कि अब उन्हें हाकी की राजनीति से हाथ खींचना पड़ेगा. अश्विनीकुमार ने हाकी साम्राज्य बहुत भोगा था, पर मुंह लगा खून जल्दी नहीं छूटता. अतः वह जातेजाते अपने उत्तराधिकारी पी. एन. साहनी को गद्दी नशी

कर गए. उन की बात और थी. साहनी का व्यक्तित्व इतना बड़ा नहीं है. अतः बगावतियों ने हल्ला बोल दिया. तेहरान एशियाई खेलों में भारतीय हाकी टीम का जाना खटाई में पड़ गया. इस पर शिक्षा मंत्रालय ने हस्तक्षेप किया और किसी तरह रातोंरात टीम भेजी गई. ऐसी भेजी टीम का प्रदर्शन भिन्न कैसे हो सकता था. लौटने पर हाकी संघ स्पष्टतया दो गुटों में बंट गया. साहनी का मुकाबला करने के लिए तामिलनाडु के मामा रामास्वामी को बागडोर सौंपी गई. सरकार ने निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश गजेंद्र गडकर को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया.

पर जब न्यायाधीश महोदय ने देखा कि दोनों गुट मत प्राप्त करने के लिए रुपया और दबाव का अंधाधुंध इस्तेमाल कर रहे हैं, तो उन्होंने अपने दायित्व से मुक्ति पा ली. सरकार की सहानुभूति अश्विनीकुमार के कारण साहनी गुट के साथ थी. पर पैसा बहुत बड़ी चीज होती थी. रामास्वामी के पैसे ने सब का हृदय परिवर्तन कर दिया. साहनी गुट को जब अपनी हार सामने दिखाई दी तो उन्होंने गडकर के इस्तीफे की आड़ में चुनाव का बहिष्कार कर दिया और रामास्वामी शांतिपूर्वक अध्यक्ष चुन लिए गए. तूफान से पूर्व वाली यह शांति हाकी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत नहीं देती. पता चला है कि साहनी गुट पुनः अपनी शक्ति बटोरने लगा हुआ है.

मध्य टेस्ट शृंखला समीक्षा

भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेले गए तीन टेस्ट मैच यह सिद्ध करते हैं कि भारत के पास तीन सुदृढ़ बल्लेबाजों और पांच उत्कृष्ट क्षेत्र रक्षकों की जरूरत है. 1971-72 में वेस्टइंडीज और इंगलैंड के विरुद्ध भारतीय विजयों में केवल यही दो विशेषताएं काम में आई थीं और इन्हीं में ह्रास के कारण हमें लगातार पांच टैस्टों में पराजय का मुख देखना पड़ा.

तीसरे कलकत्ता टैस्ट मैच में विजय को तुच्छ नहीं करार दिया जा सकता. पर यह भारतीय क्रिकेट की श्रेष्ठता को भी स्थापित नहीं करता. अतिथि बल्लेबाजों ने भारतीय गेंदबाजों को धुनने की जो शैली अपनाई थी, उस पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने के कारण ही उन्हें पराजय मिली. उन में रक्षात्मक खेल का अभाव है और यह कमी काफी महंगी पड़ी. इस जीत का यह अर्थ कदापि नहीं लगाना चाहिए कि भारतीय बल्लेबाजी रातोंरात बहुत बढ़िया हो गई है या हमारी गेंदबाजी में कुछ नया जादू आ गया.

अब तक खेली गईं छः पारियों में हर बार ज्यादा से ज्यादा दो बल्लेबाज ही टिक कर खेले हैं. एक विश्वनाथ को छोड़ कर कोई भी खिलाड़ी लगातार दो बार विश्वस्त खेल का परिचय नहीं दे पाया.

हर नया खिलाड़ी, चाहे वह शर्मा हो या गायकवाड़, सुधीर नायक हो या मदनलाल, एक पारी में 40-50 रन बना कर जिंदगी भर के लिए टीम में स्थान सुरक्षित महसूस कर लेता है. अतः इस बल्लेबाजी की बदौलत कलकत्ता में प्रदर्शित श्रेष्ठता को कुछ टैस्टों तक फैलाया जा सकेगा, यह संभव नहीं दिखता. कम से कम एक सुदृढ़ प्रारंभिक बल्लेबाज और विश्वनाथ के अलावा फिलहाल एक तीसरे नंबर पर आने वाले भरोसे के बल्लेबाज की आवश्यकता है. इस से बड़ा दुःखद आश्चर्य और क्या हो सकता है कि गत 20 टैस्टों में कभी भी यह नहीं तय माना गया कि वही दो खिलाड़ी पारी की शुरुआत करेंगे. हर बार यह जोड़ी बदली जाती है. और एक बार पहला बल्लेबाज आउट हुआ कि चलाचली का सिलसिला शुरू हो जाता है.

यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि शेष दो टैस्ट मैचों में और उस के बाद आने वाली शृंखलाओं में विपक्षी बल्लेबाज जम कर नहीं खेलेंगे. अतः महज तीन स्पिनरों और एक बल्लेबाज से फिर जीत मुश्किल होगी. •

विश्व विद्यालयों के प्रांगण से

जोधपुर विश्वविद्यालय

राजस्थानी भाषा

जोधपुर विश्वविद्यालय ने राजस्थान प्रांत की भाषा 'राजस्थानी' के विकास हेतु इस शिक्षण सत्र से इसे त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम में एक वैकल्पिक विषय के रूप में मान्यता दी है. इसी सत्र से राजस्थानी भाषा में शोध करने की सुविधा भी प्रदान की जाएगी. अब राजस्थान के छात्र भी अपनी प्रिय मातृभाषा की शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे.

—विनोदकुमार छाजेड़

मगध विश्वविद्यालय

परीक्षा, पुनःपरीक्षा

मगध विश्वविद्यालय इन दिनों प्रशासकीय अधिकारियों की राजनीति का शिकार बना हुआ है. अभी ताजा उदाहरण हैं इंटरमीडिएट तथा इंटरमीडिएट विशेष की परीक्षाएं.

बिहार आंदोलन के कारण परीक्षाओं में व्यवधान उपस्थित हुआ. परीक्षार्थियों की नगण्य उपस्थिति तथा सरकार के दबाव के कारण उपकुलपति श्री नर्मदेश्वरप्रसाद ने परीक्षा में अनैतिक साधनों का उपयोग करने की खुली छूट दे दी ताकि वे परीक्षार्थियों की अधिक से अधिक प्रतिशत संख्या दिखा सकें. बात यहां तक बढ़ी कि सड़क पर से उठा कर किसी भी व्यक्ति को, चाहे वह डाक्टर, इंजीनियर, वकील या चपरासी हो, परीक्षार्थियों के स्थान पर बैठा दिया गया. इन अवैध उपायों के बाद भी परीक्षार्थियों की संख्या नगण्य रही.

कुछ दिनों के उपरांत उन परीक्षार्थियों के लिए पुनःपरीक्षा की घोषणा कर दी गई, जो किसी कारण परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सके थे अथवा जिन के कुछ विषय शेष रह गए थे. इस परीक्षा में अवैध साधनों के प्रयोग की पूरी छूट थी. लेकिन यह परीक्षा भी पूरी नहीं हो सकी. उपकुलपति बोर्ड की मीटिंग बैठी और हिंदी तथा अंगरेजी के शेष चार प्रश्नपत्रों की पुनःपरीक्षा लेने की घोषणा की गई. इस के लिए 50 रुपए अतिरिक्त शुल्क के रूप में भी जमा करवाए गए. इस परीक्षा ने भी खूब मजाक किया. इस अत्याचार पर पीड़ित छात्रों ने सिर नहीं उठाया.

सब से गजब का मजाक 'कला' के विद्यार्थियों के साथ हुआ. उन में से प्रत्येक ने मात्र एक विषय अर्थात दो प्रश्नपत्रों की ही परीक्षा दी. शेष सभी प्रश्नपत्र बाकी थे, पर परीक्षा में केवल हिंदी तथा अंगरेजी की ही परीक्षा लेने की घोषणा की गई अर्थात अब इस तीसरी बार भी परीक्षा देने के बाद जिन छात्रों के अन्य पत्र बाकी रह जाते हैं, वे पूरक परीक्षा में बैठ सकेंगे. साल तो बरबाद हुआ ही, पैसे की बरबादी व परेशानी भी उतनी ही अधिक हुई. यों तो उपकुलपति

महोदय ने छात्रों को जबानी आश्वासन दिया है कि उन की अन्य पत्रों की भी परीक्षा साथ ही ली जाएगी. पिछली बार पुनःपरीक्षा के समय भी उन्होंने यही आश्वासन दिया था.

—लाला अरुणकुमार सिन्हा

जबलपुर विश्वविद्यालय

'व्याख्याता जगत'

व्याख्याता संघ द्वारा एक पत्रिका 'व्याख्याता जगत' का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है. पत्रिका का विमोचन करते हुए शासकीय शिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य डा. जी. चौरसिया ने पत्रिका के प्रकाशन के इस प्रयास की सराहना की और कहा, "आज शिक्षक अज्ञान के अंधकार की ओर अग्रसर हो रहा है, जब कि वह स्वयं बालकों को प्रकाश की ओर ले जाने वाला है. स्वयं की ज्ञान साधना से ही राष्ट्र एवं समाज की प्रगति संभव है."

—विजयकुमार बजाज

पटना विश्वविद्यालय

कांग्रेस जुलूस

16 नवंबर को बिहार की राजधानी पटना में कांग्रेस द्वारा एक जुलूस निकाला गया, जिस में ग्रामीण लोगों की संख्या अधिक थी. इसे सफल बनाने के लिए पानी की तरह रुपए खर्च किए गए. राज्य परिवहन की सारी बसों, ट्रकों एवं टैक्सियों को कांग्रेस ने प्रदर्शनकारियों को ढोने के लिए अपने अधीन कर रखा था. प्रदर्शनकारियों के खानेपीने तथा ठहरने की अच्छीखासी व्यवस्था की गई थी.

गांवगांव में जा कर लोगों को तरहतरह के प्रलोभन दे कर उन्हें पटना लाने और वहां से गांव पहुंचाने की व्यवस्था की गई थी. लोगों का कहना है कि सरकार की ओर से उस दिन रेल में भी बिना टिकट यात्रा करने की पूरी छूट दी गई थी.

इस का एक प्रमाण है. 16 नवंबर को पटनागया लाइन पर पोठही नामक छोटे से स्टेशन पर लोगों ने मिल कर 'जनता चेकिंग' की, जिस के फलस्वरूप लगभग 200 व्यक्ति बिना टिकट यात्रा करते पाए गए, जिन में कुछ खद्दरधारी भी शामिल थे जो पटना जा रहे थे.

राजधानी के मुख्य मार्गों से हो कर गुजरने वाले इस जुलूस में हाथीघोड़े, मोटरगाड़ियां और अनेक बैंडबाजे भी थे.

—जुगलकिशोर 'रत्नेश'

परीक्षाफल के आधार पर योग्यता

पटना विश्वविद्यालय में 14 छात्रछात्राओं को 1974 के परीक्षाफल के आधार पर 'योग्यता' (मेरिट) प्रदान की गई. यह 'योग्यता' आई. ए., आई. काम. आई. एससी. तथा एम. बी. बी. एस. (प्रथम) के छात्रछात्राओं को मिली है. यदि 'योग्यता' प्राप्त छात्रछात्राएं इसी विश्वविद्यालय में अध्ययन जारी रखेंगे तो उन्हें छात्रवृत्ति मिलेगी. छात्रवृत्ति ऐसे लोगों को नहीं दी जाएगी जिन्हें कोई अन्य छात्रवृत्ति मिलती है. यह छात्रवृत्ति आई. ए., आई. काम. तथा आई. एससी. के छात्रछात्राओं को दो वर्षों तक 50 रुपए प्रति माह और एम. बी. बी. एस. (प्रथम) के छात्रछात्राओं को डेढ़ वर्ष तक 60 रुपए माहवार मिलेगी.

नया पाठ्यक्रम

पटना विश्वविद्यालय में 1974-75 सत्र से पत्राचार पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई है. इस पाठ्यक्रम योजना से ऐसे व्यक्ति लाभान्वित होंगे जो किसी कारणवश कक्षाओं में जाने में असमर्थ हैं फिलहाल यह सुविधा आई. ए., आई. काम., बी. ए. (पास) तथा बी. काम. (पास) के छात्रों को ही मिलेगी.

—गिरीशकुमार त्रिपाठी

इंदौर क्रिश्चियन महाविद्यालय में संपन्न वादविवाद प्रतियोगिता में पुरस्कृत छात्रद्वय श्री रमेशप्रसाद मिश्र तथा समद लोदी

इंदौर विश्वविद्यालय

आर्थिक संघ अधिवेशन

गत दिनों म. प्र. आर्थिक संघ का अधिवेशन इंदौर में संपन्न हुआ, जिस के मुख्य अतिथि थे डा. मिन्हास, जो योजना आयोग और छठे वित्त आयोग के सदस्य रह चुके हैं. इन के अलावा प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा. पी. आर. ब्रह्मानंद भी इस अवसर पर उपस्थित थे.

डा. मिन्हास के भाषण का विषय था 'आत्मनिर्भरता के लिए आयोजना'. उन्होंने कहा कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान भारी उद्योग को जब विकास की कुंजी माना, महंगाई बढ़ी, कारखानों का उत्पादन कम हुआ और (1967 के मूल्यों पर) 2500 करोड़ रुपए की जो पूंजी हम ने 1965-66 में लगाई थी, उस से ज्यादा पूंजी हम आज तक नहीं लगा पाए. राष्ट्रीय बचत भी घटी. एक गरीब खेतिहर देश में जब खेती ही उपेक्षित हो जाए तो लोग कितना पेट काट सकते हैं? परिणामस्वरूप तीन साल तक योजना की छुट्टी रही. चौथी योजना में फिर कोई सबक नहीं सीखा गया और पांचवीं योजना बन ही नहीं रही है. लेकिन फिर भी पुरानी जिदें जारी हैं.

डा. मिन्हास ने अपनी 'अन्न मुद्रा' पर भी प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि सरकार खाद, पानी और बिजली का उपयोग मुद्रा के रूप में करे. कृषकों को ये चीजें 'अन्न मुद्रा' के रूप में दी जाएं. लगान की वसूली भी इसी तरह 'अन्न मुद्रा' में की जानी चाहिए.

पिछले दिनों इंदौर क्रिश्चियन महाविद्यालय द्वारा एक वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. विषय था : 'श्री जयप्रकाश नारायण का बिहार आंदोलन अप्रजातांत्रिक एवं समाज-विरोधी है.' वक्तागणों ने खुल कर विषय के पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार व्यक्त किए.

उस वक्त बड़ा ही भावुक दृश्य उपस्थित हो गया, जब अध्यक्ष ने इस

इंदौर के श्री तरुणलाल ने लायंस इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर कर्नल पटेल से 'लियो एवार्ड-1974' प्राप्त किया.

आंदोलन को समर्थन देने वाले छात्रों से अपने हाथ ऊपर उठाने के लिए कहा. इस के उत्तर में हजारों हाथ बिहार आंदोलन के समर्थन में उठ गए. इस के विपरीत इस आंदोलन के विपक्ष में मात्र कुछ छात्रों ने ही अपने हाथ ऊपर उठाए.

इंदौर का गौरव तरुणलाल

डेली कालिज के छात्र तरुणलाल ने 1973 की 'शंकर अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता' में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक जीता. दस वर्ष बाद यह मौका आया जब कि किसी भारतीय छात्र ने यह प्रतियोगिता जीती.

इस प्रतियोगिता में विश्व के सौ से अधिक देशों से 1 लाख 50 हजार प्रविष्टियां आई थीं.

डेली कालिज, इंदौर से 20 छात्रों ने अपनी कलाकृतियां भेजी थीं. दो छात्रों को नेहरू पदक तथा 6 को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुए हैं. तरुण के पुरस्कृत चित्र का शीर्षक है : 'मां और पुत्री.' इस में एक आदिवासी भी अपनी पुत्री के बाल संवारते दिखाई गई है.

लियो क्लब, इंदौर ने 'लियो एवार्ड 1974' से तरुणलाल को पुरस्कृत किया है.

—विनयकुमार मेलावत

उदयपुर विश्वविद्यालय

शिक्षकों में गुटबंदी का विरोध

उदयपुर विश्वविद्यालय केंद्रीय छात्र संघ की प्रथम बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा छात्रों ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों में व्याप्त गुटबंदी पर क्षोभ व्यक्त किया है.

प्रस्ताव में छात्रों ने यह स्वीकार किया है कि शिक्षकों को जितना सामाजिक सम्मान मिलना चाहिए, उतना नहीं मिलता है. किंतु साथ ही छात्र संघ ने यह विनम्र चेतावनी भी दी है कि शिक्षकगण अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण अलगअलग गुटों में बंट कर छात्रों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ न करें.

—रमेश शारदा

मुक्ता
युवक-युवतियों की पत्रिका
फरवरी (द्वितीय)
2 रुपए

Lakmé
VANISHING CREAM
आप जैसे मोतियों
ढली कचनार कली
लैक्मे
वैनिशिंग क्रीम से

मूल्य : एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए, दो वर्ष : 75.00 रुपए.

विदेश में (समुद्री डाक से) : एक वर्ष 60.00 रुपए, दो वर्ष : 115.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

फरवरी (द्वितीय) 1975

अंक 206

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ

हमारी दोमुंही नीति—पृष्ठ 24

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में मुद्रित व प्रकाशित.

मुक्ता नाम ट्रेडमार्क एक्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

खाने की
खालिस वस्तुओं
के लिए
एगमार्क
निशान देखिए

मक्खन, घी, तेल, पिसे मसाले, गेहूं का आटा, शहद, अंडे आदि खरीदते समय एगमार्क निशान जरूर देखिए।

एगमार्क निशान
असली की पहचान

नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता

1200 रुपए के पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए **द्वितीय पुरस्कार : 150 रुपए**
तृतीय पुरस्कार : 100 रुपए **15 अन्य पुरस्कार : 50 रुपए प्रत्येक**

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मुक्ता द्वारा यह प्रतियोगिता लेखन में रुचि रखने वाले नए लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित की जा रही है. इस प्रतियोगिता में केवल वही प्रतियोगी भाग ले सकेंगे जिन की कोई भी कहानी अब तक कहीं भी प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है.

कहानी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या ऐतिहासिक परिवेश को ले कर लिखी जा सकती है और उस में जीवन के किसी भी पक्ष का चित्रण किया जा सकता है. कहानी का उद्देश्यपूर्ण एवं मुक्ता की नीति के अनुकूल होना जरूरी है. कहानी की शब्दसंख्या दो से चार हजार तक हो सकती है. वह पर्याप्त हाशिया छोड़ कर कागज के एक ओर टाइप की हुई या साफ अक्षरों में लिखी होनी चाहिए.

कहानी के साथ एक अन्य कागज पर लेखक की ओर से यह घोषणा की जानी चाहिए : **"मैं घोषित करता हूं कि अब तक मेरी कोई भी कहानी कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. यह कहानी मेरी अपनी लिखी हुई है, मौलिक, अप्रकाशित व अप्रसारित है. 'नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता' के निर्णय की घोषणा होने तक यह कहीं भी प्रकाशित या प्रसारित नहीं कराई जाएगी, और न कोई दूसरी कहानी ही प्रकाशित या प्रसारित कराई जाएगी."**

अस्वीकृति की स्थिति में वापसी के लिए साथ में टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा होना चाहिए, अन्यथा रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का पत्रव्यवहार करना संभव न होगा.

पुरस्कृत कहानियों पर मुक्ता संचालकों का सर्वाधिकार होगा. प्रतियोगिता में संपादक, मुक्ता, का निर्णय अंतिम व मान्य होगा. प्रतियोगिता का परिणाम उपयुक्त समय पर मुक्ता में प्रकाशित किया जाएगा.

कहानियां भेजने की अंतिम तिथि 28 फरवरी, 1975 है.

कहानियां निम्न पते पर भेजें
'नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता'

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

नवां दिलों की
मधुर मुस्कान
लालइमली
धारीवाल की
अद्भुत शान!
Lal-imli
दि० ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन लि०
हाउस कानपुर (यू० पी०) इण्डिया
PUBSTRINGS

हमारी सभी उड़ानें आप के लिये फिर से चालू!

11 यूरोप

यूरोप के लिए सप्ताह में ११ उड़ानें
हमारे ७०७ विमान अब फिर से पहले की ही तरह उड़ानें भरने लगे हैं — सप्ताह में ८ बार लंदन के लिए, ४ बार फ्रैंकफर्ट के लिए, ५ बार रोम तथा ५ बार पेरिस के लिए और एक बार जिनेवा के लिए. हमारे ७०७ विमानों की उड़ानें भी शुरू हो गई हैं — सप्ताह में दो बार मॉस्को के लिए तथा एक-एक बार जिनेवा और लंदन के लिए.

7 न्यू यॉर्क

न्यू यॉर्क के लिए सप्ताह में ७ उड़ानें
सप्ताह में हर रोज ७४७ विमान की उड़ान — मध्य पूर्व तथा यूरोप होते हुए. और हमारे एक्सकर्शन फेयर के अन्तर्गत यात्रा करने पर किसी भी जगह जाकर वापस लौटने का किराया एकतरफा किराये से भी कम पड़ता है.

18 मध्य पूर्व

मध्य पूर्व के लिए सप्ताह में १८ उड़ानें
प्रति सप्ताह हम प्रस्तुत करते हैं कुवैत और बेरूत के लिए ३ उड़ानें, दुबई और बहरैन में से प्रत्येक के लिए २ उड़ानें, अबूधाबी, दहरान और तेहरान में से प्रत्येक के लिए २ उड़ानें तथा अदन, मस्कत, दोहा और कैरो में से प्रत्येक के लिए एक उड़ान.

इसके अलावा हर सप्ताह :
३ उड़ानें
पूर्वी अफ्रीका के लिए
१० उड़ानें
दक्षिण पूर्व एशिया के लिए
६ उड़ानें
जापान के लिए
२ उड़ानें
मॉरिशस के लिए
२ उड़ानें
ऑस्ट्रेलिया के लिए

एयर-इंडिया

ये पूरे भरोसे के लायक हैं
ये फ्लेक्स हैं

टैनरी एण्ड फुटवियर
कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान) पोस्ट बाक्स नं० ३२९, कानपुर

उत्तर प्रदेशीय सहकारी गन्ना समिति संघ लि., लखनऊ

12, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ

प्रदेश की 134 सहकारी गन्ना समितियों की सर्वोच्च संस्था। गन्ना संघ व सदस्य समितियों के लगभग 22 लाख गन्ना उत्पादकों के क्रयविक्रय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान करते हुए तथा कृषि उत्पादन व गन्ने की पैदावार बढ़ाने हेतु सभी आवश्यक साधनों को सुलभ करने में सतत प्रयत्नशील है।

लघु सिंचाई साधनों को बढ़ावा देना, खादों का उपयोग बढ़ाने हेतु खाद भण्डारों का निर्माण, विभिन्न प्रकार के उर्वरक खादों व कीटनाशक पदार्थों का प्रबन्ध, उन्नतिशील बीजों का वितरण आदि कार्यों को सुविधाजनक बनाते हुए कार्यान्वित करना संघ का मुख्य कार्य है।

आधुनिकतम मशीनों से युक्त गन्ना संघ प्रेस सदस्य समितियों की मुद्रण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

विवाह और सुखी जीवन

मूल्य :४ रुपए.(डाक खर्च अतिरिक्त)
सरिता, मुक्ता के स्थायी ग्राहकों से केवल २.५० रु.
मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक खर्च माफ.

विवाह से पहले आप को क्या जानना चाहिए? पतिपत्नी एकदूसरे को समझने में कहां गलती करते हैं? और पारिवारिक शांति, सुख और सफलता की कुंजी क्या है?

इस पुस्तक में सुखी पारिवारिक जीवन से संबंधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर सहज, सरल भाषा और रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है. यह पुस्तक दांपत्य जीवन की उलझी गुत्थियों को सुलझाने और टूटते परिवारों को बचाने में सहायक-सिद्ध होगी.

दिल्ली बुक कंपनी, एम-१२, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

रोशनी की दुनिया में
फ़िलिप्स बेपनाह
खूबसूरती पेश करते हैं—
लियोनोरा शृंखला में
तरह-तरह के काँच शेड्स.
डिज़ाइन, खूबसूरती
और निर्माणकौशल
में इतना आगे जो
कल्पना को भी पीछे
छोड़ जाए. काँच, रंग
और कल्पना का अपूर्व
इन्द्रधनुषी मेल. रोशनी
और रंग-रूप में एक
अभिनव अनुभव.

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of

CARAVAN & WOMAN'S ERA

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.

uniq

ak

ine in

selling
gazine
ne that
longer
hildren
re and

c for-
ls from
horror,
nodern
s them
ravery.

gift for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only
One Year Rs 10 only

Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to :

CHAMPAK
Delhi Press Building,
Jhandewala, New Delhi – 55.

द्वितीय)

मुक्ता

मार्च (प्रथम) 1975 अंक के विशेष आकर्षण:

• परीक्षा में बारबार असफल क्यों?

हर वर्ष की तरह परीक्षाएं फिर सिर पर आ रही हैं, लेकिन आप कहीं फिर पुरानी गलतियां तो नहीं दोहरा रहे हैं?

• क्या हम सभ्य हैं?

सभ्यता का लबादा ओढ़े हमारी असभ्यता के कुछ चौंका देने वाले नमूने.

• चटपटी चर्चाएं

चटपटी चर्चाएं चाट की तरह मजेदार जरूर होती हैं, लेकिन उन के भयंकर परिणाम भी तो जान लीजिए.

• अनचाहे संबंधों से बचाव

अनेक अनचाहे व्यक्ति हमारे जीवन में विष घोल जाते हैं. आइए, जरा उन्हें पहचान लें.

• लाल ग्रह मंगल

चंद्रमा के बाद अब मंगल ग्रह की निकट से जानकारी.

• खुला विश्वविद्यालय

शिक्षा के क्षेत्र में एक नया किंतु क्रांतिकारी विकल्प.

इन के अतिरिक्त अनेक हृदयस्पर्शी कहानियां, जगा देने वाले लेख, दो धारावाही उपन्यास, फिल्मों पर सुरुचिपूर्ण लेख, भावपूर्ण कविताएं, सभी स्तंभ और विविध सामग्री.

अपनी प्रति के लिए आज ही अखबार वाले से कह दें.

दिसंबर (प्रथम) में 'मुक्त विचार' के अंतर्गत प्रकाशित शिक्षा संबंधी आप के विचार निस्संदेह पूर्णतः वही विचार हैं जो आज हमारे देश के लाखों लोगों के हृदयों में उठ रहे हैं.

शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी हमारे राजनीतिबाज अपनी गंदी और घिनौनी राजनीति चला कर उसे भी अपने समान गंदा बना रहे हैं. परिवर्तन व सुधार के नाम पर असंगत व अव्यावहारिक सुझाव पास कर और उन्हें अमल में ला कर ये नेता राष्ट्र का भयंकर अहित कर रहे हैं.

जनता की मांग है कि शिक्षा के ढांचे में प्रारंभ से परिवर्तन हो और वे परिवर्तन यह कर रहे हैं कि ग्यारह साल का कोर्स बारह साल में पूरा होगा या ऐसा ही कुछ और. आखिर देश के शिक्षाशास्त्री कर क्या रहे हैं? लगता है कि हमारे शिक्षाशास्त्रियों ने भी सरकार के भ्रष्ट राजनीतिबाज मंत्रियों की चापलूसी को ही अपना कर्त्तव्य समझ लिया है और अपने विवेक को बेच दिया है.

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

यदि यह सच नहीं तो वे सरकार के अव्यावहारिक, तर्कहीन व मूर्खतापूर्ण परिवर्तनों का क्यों विरोध नहीं करते?

—अशोक खंडेलवाल, जबलपुर

✦

'मुक्ता' का 20वां अंक सजासंवार कर अपने प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए आप को हार्दिक बधाई.

दिसंबर (प्रथम) में प्रकाशित 'हड़ताल नहीं हुई' (कहानी: नरेंद्र चतुर्वेदी) युगानुरूप रचना है. आज हर विद्यालय में डीलडौल वाले, अशिष्ट, उद्दंड और विवेकहीन छात्र नेता तो मिल जाते हैं, पर मिस्टर वर्मा जैसे कर्त्तव्यपरायण व निर्भीक प्रोफेसर तथा विवेक जैसे विवेकवान छात्र नहीं मिल पाते.

यदि आज हर 'विद्या मंदिर' में मिस्टर वर्मा जैसा एक भी प्रोफेसर सही आवाज उठाने लगे और विवेक जैसे कुछ साहसी विद्यार्थी हों तो न ही विद्यार्थियों को अराजकता, आगजनी और राजनीतिक दलों के स्वार्थों का ही शिकार होना पड़े और न ही वर्ष के दस महीनों में से सात महीने विश्वविद्यालय ही बंद रहें.

—केशवानंद शर्मा, इलाहाबाद

✦

दिसंबर (द्वितीय) में प्रकाशित 'जाने कहां गए वे सुर' (लेख : दिलीप गुप्ते) पसंद नहीं आया,

लेखक ने इस लेख में पुराने व नए संगीतकारों की तुलना कर के पुराने संगीतकारों को महान व सफल बताया है और नए संगीतकारों की निंदा की है. संगीत कानों को प्रिय लगना चाहिए—वह संगीत के नियमों (शास्त्रीय संगीत के रागों में बद्ध) के अंतर्गत आए या न आए. उस की पहली शर्त यह है कि वह श्रोता को पसंद आए.

नए संगीतकारों की भी अपनी विवशताएं हैं. उन्हें संगीत अपनी मरजी का न दे कर फिल्म निर्माताओं की पसंद का देना पड़ता है और फिल्म निर्माता व्यावसायिक दृष्टि से श्रोताओं के मन-

पसंद का सफल संगीत चाहते हैं.

लेखक ने तुलना में 20-30 वर्षों का लिया है. इस लंबी अवधि में पुराने गीतों का नए गीतों से आगे रहना स्वाभाविक है. लेकिन आजकल नए संगीतकार संगीत में नएनए प्रयोग कर रहे हैं. वे पुरानी लीक से बंध कर नहीं रहना चाहते.

आज कई नए संगीतकार अपने नए सुर ले कर आ रहे हैं. आवश्यकता है उन्हें प्रोत्साहन देने की, न कि यह कि आते ही उन से अमर संगीत की मांग करें.

—कमलकुमार चोपड़ा, दिल्ली

✦

नवंबर (द्वितीय) में 'परदे के आगे, परदे के पीछे' स्तंभ के अंतर्गत छपा है कि निर्देशक शक्ति सामंत फिल्म 'अजनबी' का निर्माण कर रहा है जब कि 'अजनबी' को प्रदर्शित हुए काफी समय हो चुका है.

इसी प्रकार परवीन बाबी के परिचय में लिखा गया है कि फिल्म 'त्रिमूर्ति' परवीन बाबी की शीघ्र प्रदर्शित होने वाली फिल्म है, जब कि 'त्रिमूर्ति' हमारे शहर में 22 अगस्त को प्रदर्शित हो चुकी है.

—महेंद्रसिंह 'रीन', इंदौर

✦

दिसंबर (द्वितीय) में पृष्ठ 63 पर प्रकाशित पूरक 'चार ही चार' में एक ऐतिहासिक भूल की ओर आप का ध्यान विनम्रतापूर्वक आकृष्ट करना चाहता हूं.

चार्ल्स चतुर्थ ब्रिटेन का सम्राट था न कि जरमनी का. यह दूसरी बात है कि अंगरेजी भाषा पहले जरमनिक (ओल्ड) परिवार में ही मानी जाती रही है, भाषावैज्ञानिक प्रक्रिया के अनुसार अंगरेजी भाषा का 'चार्ल्स' शब्द जरमन में 'कार्ल' और फ्रेंच में 'शार्ल' हो गया है.

—अखिलेशचंद्र, राकेश द्विवेदी, झांसी

मुक्त विचार

अदालतें : स्वतंत्रता की रक्षक

जब से देश की अदालतों ने आंतरिक सुरक्षा कानून के अंतर्गत पकड़े गए कुछ तथाकथित कुख्यात तस्करों को रिहा किया है, कुछ लोग अदालतों को जनता व सरकार विरोधी करार दे कर मांग करने लगे हैं कि अदालतों से ऐसे अधिकार ही छीन लिए जाएं. सरकार ने एक ऐसा कानून भी बनाया है जिस के अनुसार 'मीसा' के अंतर्गत बंदी बनाए गए नजरबंदियों को अदालत जाने का अधिकार न होगा. इस कानून की वैधता अभी तक अदालतों के सामने परखी नहीं गई है, फिर भी हो सकता है कि अदालतें इसे अवैध घोषित कर दें.

पर इस का अर्थ यह नहीं है कि अदालतें चोरबाजारियों, तस्करों और अपराधियों को संरक्षण देती हैं. अदालत और एक आम व्यक्ति के नजरिए में एक मूल भेद यह है कि व्यक्ति केवल विश्वास के आधार पर एक व्यक्ति को शरीफ या अपराधी मान लेता है जबकि अदालत इस के लिए सबूत मांगती है.

अदालतों का काम असलियत में आम व्यक्तियों को सरकार की मनमानी से बचाना होता है. यदि आप के क्षेत्र का राजनीतिबाज या थानेदार आप से किसी बात पर नाराज हो जाए तो वह आप को पकड़ कर जेल में बंद कर सकता है, पर अदालतें उसे ऐसा करने से रोकती हैं. थानेदार चाहे जितना कहे, अदालत केवल उस की बात मान कर उस व्यक्ति को जेल में बंद रखने की अनुमति न देगी. वह पूरे सबूत मांगेगी कि उस व्यक्ति ने कब, क्यों और कैसे ऐसा कार्य किया था जिस से समाज या किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान पहुंचा. क्या अदालतों का यह अधिकार आम जनता के हित और सुरक्षा के लिए आवश्यक नहीं है? यदि उस व्यक्ति ने वास्तव में गलत कार्य किया है तो शासन अपने पैसे और प्रभाव से उसे साबित करने के तथ्य जुटा सकता है और ऐसी हालत में अदालतें उस व्यक्ति को अवश्य दंड देती हैं.

तस्करों के मामलों में शासन न तो सारे तथ्य जमा कर सका जिन से अपराध साबित हो सके, और न ही तस्करी रोक सका. तस्करों के पास कितने ही आधुनिक तरीके क्यों न हों, शासन की फौज और पैसे के मुकाबले में कुछ नहीं हैं. जब शासन देश में विदेशी गुप्तचरों पर नियंत्रण रख सकता है तो इन तस्करों पर क्यों नहीं रख सकता? जब असफलता शासन की मिलीभगत या अयोग्यता के कारण है तो उस का दोष अदालतों पर क्यों थोपा जाए?

यदि अदालतें केवल इसलिए किसी व्यक्ति को नजरबंद रखने की अनुमति दे दें कि सरकार उसे तस्कर कहती है तो

क्या सरकार कल अन्य निरपराध व्यक्तियों को तस्कर या समाज विरोधी नहीं कह सकती? कांग्रेस सरकार विरोधियों का सिर कुचलने के लिए तस्करों के लिए बनाए कानून बिहार के आंदोलनकारियों पर भी तो लागू कर रही है. क्या वहां भी अदालतें चुप बैठी रहें?

वास्तव में लोकतंत्र में अदालतें ही ऐसी संस्था हैं जो आम नागरिकों को शासन की क्रूरता से बचाती हैं. शासन हमेशा इन्हें बदनाम करने की कोशिश करता रहता है. यदि शासन इन की प्रतिष्ठा समाप्त करने में सफल हो गया तो उस का अर्थ होगा स्वतंत्रता छिन जाना.

दहेज समस्या या सामाजिक प्रथा?

मुक्ता की 'नए अंकुर कहानी प्रतियोगिता' में लगभग 80 प्रतिशत रचनाएं युवा लेखकों की होती हैं और उन में से लगभग 50 प्रतिशत में दहेज प्रथा की आलोचना की जाती है. ऐसी रचनाएं लड़कियों द्वारा अधिक लिखी जाती हैं और उन में पानी पीपी कर दहेज मांगने वालों को कोसा जाता है.

ठीक है, दहेज प्रथा समाप्त करने के लिए ऐसे युवकों की आवश्यकता है जो मातापिता की नाइनसाफी के विरुद्ध कदम उठा सकें. पर समझ में नहीं आता कि लड़कियां इस मामले में स्वयं कुछ करने के लिए क्यों तैयार नहीं होतीं. जिस लड़की का विवाह हो रहा हो, शायद वह स्वयं दहेज लेने वाले का विरोध नहीं कर सकती, पर उस लड़के की बहनें, भाभियां व अन्य संबंधी लड़कियां क्यों नहीं ऐसे विवाह का बहिष्कार कर सकतीं जिस में दहेज मांगा जा रहा हो?

उलटे आम तौर पर छोटीबड़ी बहनें तथा अन्य संबंधी लड़कियां ही विवाह वेदी पर लड़के को मांगने के लिए प्रोत्साहित करती नजर आती हैं. बात साफ है. दहेज प्रथा केवल उस समय बुरी है, जब विवाह अपनी बेटी या बहन का हो रहा हो. जब विवाह बेटे या भाई का होता है तो सामाजिक प्रथा बन जाती है.

दहेज प्रथा का विरोध सभी करते हैं, पर इसे समाप्त कोई नहीं करना चाहता. जिन लोगों के बेटी होती है, वे भी अपने बेटे के विवाह में लंबीचौड़ी मांगें रखते हैं. यहां तक कि जिन की बेटियों के विवाह बिना दहेज के लेनदेन से हो जाएं, वे भी अपने बेटों की शादी में दहेज लेने से नहीं चूकते.

शिक्षकों का पुनर्मूल्यांकन

यह संतोष की बात है कि जब से कालिजों के अध्यापकों ने नए वेतनमानों की मांग पर जोर देना शुरू किया है, उन की योग्यता, कार्यकुशलता व अध्ययनशीलता पर भी प्रश्न उठने लगे हैं. हमारे देश में शुरू से ही गुरु का आदर करने तथा उस की हर बात मानने का पाठ इस तरह पढ़ाया जाता है कि अध्यापकों की योग्यता के बारे में प्रश्न उठाने को अनुशासनहीनता और अध्यापन के अपमान का नाम दे दिया जाता है. इसी की आड़ में हमारे देश के विश्वविद्यालयों में अध्यापक वर्षों से मौज कर रहे हैं.

परंतु जब से वे भी अन्य मजदूरों की तरह हड़तालों, जुलूसों और अनशनों पर आमादा हो गए हैं, मजदूरों की तरह उन की उत्पादकता का निर्णय करना भी जरूरी हो गया है.

देश में शिक्षा का स्तर बुरी तरह गिर रहा है जबकि करदाता पर इस का भार निरंतर बढ़ रहा है. इस का एकमात्र कारण शिक्षकों में शिक्षा के प्रति उदासीनता है. विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नौकरी अब बिलकुल पक्की है. वे पढ़ाएं या न पढ़ाएं, छात्र पास हों या फेल, उन की नौकरी व वेतन पर इस का कोई असर नहीं पड़ता. इसी लिए अधिकतर शिक्षक अब अतिरिक्त योग्यता प्राप्त करने के लिए नाम मात्र के लिए भी अध्ययन जारी नहीं रखते.

यदि शिक्षकों की योग्यता का हर थोड़े दिनों बाद पुनर्मूल्यांकन किया जाए

जो उन्हें उस के लिए तैयारी करते रहना पड़ेगा. शिक्षकों की योग्यता को सामयिक बनाने के लिए उन्हें छुट्टियों के दिनों में विशेष कक्षाओं में बैठने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए, जिस में उन के विषयों से संबंधित व्यक्ति उन्हें नई जानकारी दे सकें. पुनर्मूल्यांकन के विषय में जब तक शिक्षकों की सहमति न मिल जाए, उन की अतिरिक्त वेतन की मांग बिलकुल नहीं मानी जानी चाहिए.

दर्शकों की अशिष्टता

लखनऊ में डेविस कप के लिए हुए पूर्व क्षेत्रीय सेमी फाइनल में भारत, जो पिछले वर्ष राजनीतिक हठधर्मी के कारण चैंपियन बनने का अवसर गंवा चुका है, न्यूजीलैंड से हार गया. हार की खिसियाहट मिटाते समय एक अधिकारी ने आरोप लगाया है कि भारत की हार लखनऊ के दर्शकों के कारण हुई है.

उन के अनुसार लखनऊ में टेनिस मैच देखने वाले अपने साथ घंटे, हार्न और शंख आदि लाए थे और उन्होंने लगातार शोर से खिलाड़ियों का ध्यान निरंतर बंटाए रखा था.

खेल हारने का इस से क्या संबंध है, यह तो वही जानें क्योंकि ध्यान तो विदेशी खिलाड़ियों का भी बंटा होगा, पर यह अपनेआप में खेद की बात है कि दर्शकों ने इस प्रकार का भद्दा व्यवहार किया. यह लखनऊ में ही पहली बार नहीं हुआ है. हमारे देश में जहां भी कोई प्रतियोगिता होती है, इस प्रकार के अनुशासनहीन तत्त्व दौड़े चले आते हैं, जिन्हें दूसरों को तंग करने में ही मजा आता है. पुलिस तो वैसे होती ही नहीं है और यदि हो भी तो वह निष्क्रिय रहती है. दर्शकों में कभी भी इतना एका नहीं होता कि वे मिल कर दंगाई लोगों को पकड़ लें. गिरफ्तार होने पर भी ये लोग हजार, पांच सौ दर्शकों को तंग करते रहते हैं. कुछ दिन पहले बंबई में ऐसे लोगों के कारण एक संगीतज्ञ को अपना गायन आधा छोड़ कर उठ जाना पड़ा था.

लगता है, शीघ्र ही ऐसी स्थिति आ जाएगी जब आयोजकों को स्वयं ऐसे गुंडे नियुक्त करने पड़ेंगे जो दंगा करने वालों से निपट सकें, या फिर इस प्रकार के आयोजन ही बंद हो जाएंगे.

युवा मताधिकार से वंचित

चुनाव आयोग ने सभी राज्यों की चुनाव तालिकाओं को आधुनिकतम बनाने की मांग अस्वीकार कर दी है. कई राज्यों में अभी तक 1965 में तैयार की गई चुनाव तालिकाएं प्रयोग में लाई जा रही हैं.

यह एक बहुत गंभीर मामला है क्योंकि इस कारण पिछले दस वर्षों में कानूनन मताधिकार प्राप्त करने वाले लोग अपने अधिकार का प्रयोग न कर पाएंगे. ये सभी लोग 21 वर्ष से ले कर 31 वर्ष तक की आयु के हैं. इन की संख्या लगभग पांच करोड़ है.

यद्यपि चुनाव कानून के अनुसार हर आम चुनाव और उपचुनाव से पूर्व चुनाव तालिकाओं का पुनरीक्षण होना चाहिए, पर चुनाव आयोग इसे टालता आ रहा है.

चुनाव आयोग के इस टालमटोल के पीछे कांग्रेस सरकार ही लगती है. पिछले तीनचार वर्षों में कांग्रेस ने युवा लोगों में अपना विश्वास पूरी तरह खो दिया है और देश भर के छात्र तथा अन्य युवा कांग्रेस को हटाने के लिए संगठित हो रहे हैं. कांग्रेस को डर है, इन पांच करोड़ युवा लोगों में से अधिकांश विरोधी दलों को ही वोट देंगे और आने वाले चुनावों में उस की हार निश्चित हो जाएगी.

युवाओं को कांग्रेस की इस साजिश का खुल कर विरोध करना चाहिए. यदि सरकार हठधर्मी से यह अधिकार न दे तो इस के लिए आंदोलन किए जाने चाहिए तथा कांग्रेस के समर्थकों को वोट देने ही नहीं दिया जाना चाहिए. लोकतंत्र के नाम पर आज जनता के पास वोट का ही तो अधिकार रह गया है. यदि यह भी न मिला तो लोकतंत्र कैसा? ●

लेख • प. र. दभाषी

हमारी दोमुंही

चाहे काम उचित हो या अनुचित, विरोधी दल हमेशा सत्तारूढ़ दल का विरोध करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं.
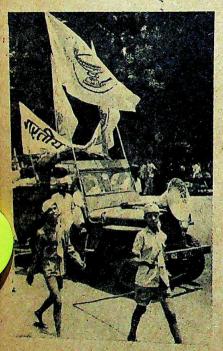
आज हमारा देश अस्थिरता के युग से गुजर रहा है. अस्थिरता या तो परिवर्तनों से पैदा होती है या फिर दो वस्तुओं के प्रति एक व्यक्ति की आसक्ति से. परिवर्तनों से होने वाली अस्थिरता किसी भी आर्थिक दृष्टि से विकासशील राष्ट्र के लिए स्वाभाविक होती है. इस के विपरीत दूसरी स्थिति से होने वाली अस्थिरता साधन और साध्य में कमी की सूचक होती है. हमें लगता है कि आज हमारी यही समस्या है.

इस संदर्भ में मैं देश के संगठित जीवन के तीन मूल संस्थानों—केंद्रचालित शासक पद्धति या नौकरशाही, निजी उद्योग और शिक्षा पद्धति—के संबंध में जो कुछ किया जा रहा है, उस की व्याख्या करना चाहूंगा. इन तीनों संस्थानों की स्थिति आज ऐसी है कि इन पर कभी भी हमला हो सकता है. आज हम अपनी आंखों में बदले का खून लिए हुए मस्तिष्क में उठने वाले आवेग को दबाए हुए इन की खुल कर आलोचना करते हैं. फिर भी हम न तो इन्हें खत्म कर सके हैं और न ही झुका पाए हैं. इस के अलावा इन तीनों में से किसी एक संस्थान के संबंध में भी कोई प्रभावशाली कदम उठाने में अक्षम हैं, क्योंकि हमें यह ही पता नहीं कि हमें क्या करना चाहिए. परिणामतः हमारी आलोचना इन संस्थानों को निष्क्रिय उत्साह की भावना की तरफ ले जा रही है.

संसदीय प्रजातंत्र में नौकरशाही का अपना एक विशेष कार्य होता है. अतः किसी भी संगठित समाज के लिए नौकरशाही स्वाभाविक होती है. ऐसी ही कुछ बात मेक्स वेबर ने भी कही है. उस ने इसे 'समझदार संस्थान' की संज्ञा दी है. हम ने जिस संसदीय प्रजातंत्र को अपनाया है, उस के राजनेता तथा प्रशासक में हमारे लिए बड़ा ही साफ अंतर है. राजनेता उस दल से बनता है जिस का संसद या विधान मंडल में बहुमत होता है तथा प्रशासक उन असैनिक अधिकारियों का समूह होता है जिन को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा कुछ निश्चित योग्यताओं के आधार पर चुन कर प्रशिक्षण दिया जाता है.

राजनीतिक दल सत्ता में आते हैं

नीति

विदेशी शासन पद्धति की नकल और सरकारी अस्थिरता की नीति से क्या हम अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुंच सकेंगे?

और चले जाते हैं, पर नौकरशाही ज्यों की त्यों रहती है. क्योंकि इस पद्धति के जिस ढांचे, संसदीय प्रजातंत्र को हम ने अपनाया है, उसे राजनीतिक रूप से तटस्थ रहना पड़ता है. दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह किसी विशेष राजनीतिक दल या विचारधारा के प्रति पूर्णतया समर्पित नहीं होता.

पर यह सब उस समय भुला दिया जाता है जब लोग बिना परिणाम समझे इस बात की आलोचना करते हुए शिकायत करते हैं कि नौकरशाही वचनबद्ध नहीं है.

इस तरह नौकरशाही के राजनीतिक रूप से, तटस्थता के सिद्धांत से इस की सहमति नहीं होगी, यदि उस की वचनबद्धता गैरसैनिक अधिकारियों से केवल उन के कार्य के प्रति समर्पण की भावना चाहेगी और यदि यह वचनबद्धता किसी राजनीतिक विचारधारा, समाजवाद के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध हो जाती है तो उस से कई समस्याएं पैदा होंगी.

आइए, समाजवाद के संदर्भ में ही विचार करें. समाजवाद अपनेआप में केवल एक ही प्रकार का नहीं होता. साम्यवादी देशों में प्रधान रूप से समाजवाद फैला हुआ है. स्कैंडिनेविया जैसे देशों में प्रजातांत्रिक समाजवाद का बोलबाला है. ब्रिटेन में फेबियन समाजवाद की परंपरा है और फ्रांस में काल्पनिक (यूरोपियन) समाजवादी विचारधारा के लोग थे. इस प्रकार पता नहीं चलता है कि समाजवाद के कौन से प्रकार से नौकरशाही को वचनबद्ध माना जाए.

स्पष्ट रूप से किसी विचारधारा के प्रति वचनबद्धता हमारे लिए न केवल मुश्किल

हम शिक्षा नीति के लिए मैकाले को दोष देते हैं, लेकिन आज भी हमारे शिक्षण संस्थान अधिकांश क्लर्क ही पैदा करते हैं.

बहुत बड़ी कठिनाइयां पैदा कर देगी बल्कि हमें चक्कर में भी डाल देगी. इस से बुरी बात और क्या होगी कि अधिकारी ही विचारधारा की वचनबद्धता से मुंह मोड़ने लगें और उस के स्थान पर व्यावसायिक अधिकारों को स्वीकार कर लें.

यह दूसरी बात होगी, यदि हम ही यह चाहें कि नौकरशाही राजनीति के प्रति वचनबद्ध हो. उस अवस्था में हम वर्तमान नौकरशाही के रूप को त्याग देंगे. तब इस के अधिकारियों को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा नहीं चुना जाएगा तथा

उस के स्थान पर शासन करने वाले राजनीतिक दल के सदस्य होंगे.

राजनीतिक दल में होने वाले इन परिवर्तनों का परिणाम यह होगा कि उस के जो प्रशासकीय अधिकारी हैं, उन में भी कुछ सीमा तक परिवर्तन किया जाए. यह अमरीका की अध्यक्षात्मक प्रणाली में ही संभव है. पर यह पता नहीं कि हमारे वर्तमान संसदीय प्रजातंत्र में अमरीका की शासन पद्धति जैसा कोई ढांचा स्वीकार भी किया जा सकेगा या नहीं. लेकिन फिर भी परिवर्तन ऊंचेऊंचे पदों में ही किए जा सकते हैं. नौकरशाही का अधिकांश भाग तो अपरिवर्तित ही रह जाता है, चाहे वह अमरीका की अध्यक्षात्मक पद्धति ही क्यों न हो.

परिवर्तन लाभदायक नहीं

यदि हम अपनी नौकरशाही को ऊपर से ले कर नीचे तक सही रूप देने के लिए परिवर्तित करना चाहते हैं तो उस का मतलब यह होगा कि शासन प्रबंध राजनीतिक अधिकारियों को दे दिया जाए. लेकिन शासन के एक राजनीतिक दल से दूसरे राजनीतिक दल के हाथों में दिए जाने का अर्थ होगा कि सब से नीचे काम करने वाले विभागों में पूर्णतया परिवर्तन किया जाए.

यह एक प्रकार से प्रशासनिक नौकरशाही के स्थान पर राजनीतिक नौकरशाही की स्थापना होगी. तब यह नौकरशाही के लिए लाभदायक तो होगी ही नहीं, बल्कि प्रजातंत्र के लिए भी खतरा पैदा कर देगी. इस तरह यह कुछ लोगों के लिए एक दलीय शासनतंत्र तथा निर्दयी शासन के अलावा और कुछ नहीं होगा.

पर यदि हम ऐसा नहीं चाहते हैं तो हमारी शासन प्रणाली राजनेता तथा प्रशासक के रूप में चलती रहनी चाहिए. इस प्रकार की शासन प्रणाली ब्रिटेन तथा अन्य देशों में शासन के योग्य पाई गई है, जहां कि प्रजातंत्र है. भारत ने भी अपनी प्रजातांत्रिक परंपराओं के साथ पिछले कुछ वर्षों में इसे अपने लिए उपयोगी पाया है.

लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि नौकरशाही के संगठन, प्रबंध और अधिकारियों की योग्यता में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए. बदलते हुए समाज में नौकरशाही को नए उद्देश्यों तथा कार्यों के संदर्भ में स्वयं को फिर से गठित करना होगा. प्रशासनिक सुधार बहुत लंबे समय तक चलने वाला काम है. इस की विध्वंसकारी आलोचना का कोई लाभ नहीं. जब लोग बड़े अधिकार के साथ यह घोषणा करते हैं कि नौकरशाही भ्रष्ट होने के साथसाथ अयोग्य भी है तथा विकास का कार्य केवल दल के विभागों द्वारा ही हो सकता है, तो वे हमारे संगठित प्रयासों की जड़ों पर कुठाराघात करते हैं. नौकरशाही ही नीति के निर्धारण तथा विकास का अंग है और उसे होना भी चाहिए. एक बहुत बड़ी नौकरशाही की स्थापना करने के बाद दल के विभागों से विकास के कार्यक्रमों को चलवाने की आशा करना ठीक ऐसा ही होगा जैसे कि कुत्ता पाल कर स्वयं भौंकना. इस प्रकार नौकरशाही बरबादी के रास्ते पर चलने लगेगी. हमारे यहां यदि भ्रष्ट और प्रभावहीन नौकरशाही है तो अप्रशिक्षित तथा गैरजिम्मेदार दल के विभाग भी, और इस स्थिति को एक गरीब राष्ट्र वहन नहीं कर सकता.

निजी उद्योग का स्थान

ठीक इसी तरह निजी उद्योग भी खतरे में है. इस पर यह कलंक लगा हुआ है कि निजी उद्योग का उद्देश्य धन कमाना होता है, समाज की भलाई नहीं. यद्यपि लाभ ही निजी उद्योग को बढ़ावा देता है लेकिन फिर भी पिछले कुछ सालों से व्यापार की सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी यह स्वीकार कर रहा है. हम ने मिश्रित आर्थिक नीति को अपनाया है. इस तरह निजी उद्योगों के साथसाथ सार्वजनिक उद्योगों को भी स्थान प्राप्त है.

पर यदि हम यह महसूस करते हैं कि निजी उद्योग व्यर्थ की वस्तु है और उस का हमारी आर्थिक नीति में कोई भी

स्थान नहीं होना चाहिए, तब हमें निजी उद्योगों को एक ही झटके में खत्म कर के पूर्ण रूप से समाजवाद को अपना लेना चाहिए. लेकिन हम ऐसा न कर के उस की आलोचना करते रहते हैं.

अतः हमें इन में से किसी एक का चुनाव करना चाहिए. यदि हम पूर्ण विकसित समाजवाद को स्वीकार नहीं करते तथा मिश्रित आर्थिक नीति का समर्थन करते हैं, तो हम उस समय तक उन्नति नहीं कर सकते जब तक कि हमारा उद्देश्य निजी उद्योग को खत्म करना होगा.

हमें निजी उद्योग के अस्तित्व को स्वीकारते हुए अपनी आर्थिक नीति का आधारभूत तत्त्व मान कर उसे वे सभी अवसर दे देने चाहिए, जिस से वह यह अनुभव करे कि उस का भी हमारी आर्थिक

> ### नेता
>
> नेता समुद्र में जहाज के सदृश हैं; वे आते हैं और चले जाते हैं परंतु जनता समुद्र की भांति है जो सदा रहती है.
>
> —मारिस हिंडस

नीति तथा समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है. इस से वह हमें अपना अधिक से अधिक योगदान दे सकेगा, नहीं तो हम उस की व्यापार में लगी पूंजी और उत्साह की भावना को नष्ट कर देंगे.

हमारी शिक्षा पद्धति के बारे में भी इसी तरह से आलोचना की जा रही है. आज आजादी के 27 साल बाद भी हम क्लर्कों को तैयार करने वाली शिक्षा पद्धति की स्थापना के लिए मैकाले को दोष देते रहते हैं. हम मौकेबेमौके यह कहते रहते हैं कि वह हमारे समाज और आर्थिक स्थिति के अनुकूल नहीं है, इसी लिए हम चाहते हैं कि इस शिक्षा पद्धति को बिलकुल बदल दिया जाए.

इस परिवर्तन के नाम पर हम यह करते हैं कि इस की आत्मा को बदले बिना केवल उस के बाहरी ढांचे को ही बदल देते हैं. परिणामस्वरूप शिक्षा संस्थाएं शक्तिहीन हो जाती हैं. फिर उस की निर्बलता के कारण छात्र बाहरी तत्त्वों के साथ मिल कर विनाश करते हैं.

सुधार की आवश्यकता

काफी लंबे समय से विश्वविद्यालय के मैदानों में उपद्रवों और हिंसा का तांडव हो रहा है. पर इस से न तो शिक्षा पद्धति में कोई सुधार हो रहा है, और न ही शैक्षणिक संस्थानों को शक्तिशाली बनाया जा सकता है.

हां, यह सच है कि शिक्षा के स्तर को सुधारना चाहिए. किंतु शैक्षणिक संस्थानों की वैधता में छात्र समुदाय का जो विश्वास है, उसे खत्म कर के यह सुधार नहीं किया जा सकता.

शिक्षा के स्तर को सुधारने के उपायों में से एक यह हो सकता है कि अध्यापकों के स्तर को सुधारा जाए. लेकिन अधिकारी स्वयं शिक्षा पद्धति के दोषों के लिए अध्यापकों की आलोचना करते हैं. शायद छात्रों में अपने अध्यापकों के प्रति आदर की भावना इसी लिए नहीं है क्योंकि वे स्वयं हड़तालों और उपद्रवों में भाग ले कर छात्रों की नजरों में अपनी इज्जत गंवा देते हैं. इस प्रकार हम शैक्षणिक संस्थानों तथा अध्यापकों के प्रति छात्र-छात्राओं के विश्वास को भ्रष्ट करने में सफल हुए हैं.

हम अपने समाज तथा आर्थिक नीति को सुदृढ़ बनाना चाहते हैं तथा अपने राष्ट्र को प्रगति करता हुआ देखना चाहते हैं. किंतु हमारी जो दोमुंही नीति है, उस से यह सब नहीं हो सकता.

हम केवल इसी ढंग से उन्नति कर सकते हैं कि हम जो रास्ता अपनाएं, उस का बड़ा ही साफ चित्र हमारे मस्तिष्क में हो. इस के साथ ही हमारी संस्थाएं शक्तिशाली और स्वस्थ हों. ●

स्वर्णिम वाक्य

● ''भिखारी को कभी सुख नहीं मिलता. उसे दयापूर्वक एक टुकड़ा मिल जाता है, किंतु उस के पीछे उपेक्षा और घृणा का भाव रहता है. कम से कम यह भाव तो रहता ही है कि भिखारी कोई तुच्छ वस्तु है. वह जो कुछ पाता है, उस में उसे सुख नहीं मिलता. हम सब भिखारी हैं. हम जो कर्म करते हैं, उस का बदला चाहते हैं. हम सब व्यापारी बन गए हैं. हम जीवन का व्यापार करते हैं, गुणों का व्यापार करते हैं, धर्म का व्यापार करते हैं. आह! हम प्रेम का भी व्यापार करते हैं.''

—*स्वामी विवेकानंद : उत्तिष्ठत, जाग्रत (प्रेषक : मेवाराम वडेरा, बाड़मेर)

● ''मालिक बनने की आकांक्षा में ही गुलामी के बीज छिपे हैं. क्योंकि जिस के हम मालिक बनेंगे, उस का हमें अनजाने गुलाम भी बन जाना पड़ता है. गुलाम इसलिए बन जाना पड़ता है कि जिस के हम मालिक बनते हैं, हमारी मालकियत उस पर निर्भर होती है. जब मालकियत किसी पर निर्भर होती है तो हम अपनी मालकियत के मालिक कैसे हो सकते हैं? मालिक तो वह हो गया, जिस पर वह निर्भर होती है. मालकियत की आकांक्षा गुलाम बना देती है. सिर्फ वही आदमी इस दुनिया में मालिक है जो किसी का मालिक नहीं होना चाहता है. सिर्फ वही आदमी मालिक हो सकता है जिस ने किसी को गुलाम नहीं बनाया है, क्योंकि उस की मालकियत को खत्म नहीं किया जा सकता. उस की मालकियत स्वतंत्र है.''

—रजनीश : सूली ऊपर सेज पिया की (प्रेषक : सीताराम मालपानी, कुचामन सिटी)

● ''हीरे इमारत की खूबसूरती बढ़ा सकते हैं, देखने वालों को चकाचौंध कर सकते हैं, लेकिन वे इमारत की बुनियाद नहीं बन सकते, उसे लंबी उमर नहीं दे सकते, सदियों तक अपने मजबूत कंधों पर उस के बोझ को उठा कर उसे सीधा खड़ा नहीं रख सकते. अभी तक हमारे आंदोलन ने हीरे कमाए हैं, बुनियाद के पत्थर नहीं बटोरे. इसलिए इतनी कुरबानी देने के बाद भी हम अभी तक इमारत क्या उस का ढांचा भी खड़ा नहीं कर पाए. आज हमें बुनियाद के पत्थरों की जरूरत है.''

—शिव शर्मा : संस्मृतियां (प्रेषक : मुकेशचंद्र, लखनऊ)

● ''कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो बहुत शीघ्र ही किसी बात का निर्णय कर लेते हैं लेकिन जब उस निर्णय को वे कार्य रूप में लाते हैं तब उन्हें पता चलता है कि जल्दबाजी में उन्होंने गलत निर्णय कर लिया है. कुछ दृढ़ इच्छाशक्ति न होने के कारण उसे बदलने में झिझक अनुभव करते हैं और काफी क्षति उठाने के बाद निराश और हताश हो कर बैठ जाते हैं. लेकिन सफलता उन्हीं के चरण चूमती है, जो किसी भी समस्या अथवा कार्य के दोनों पक्षों को देखते हैं और शीघ्रता में कोई निर्णय नहीं करते. अगर कभी कोई गलत कदम उठ भी जाता है, तो सलाह लेने में या उसे सुधारने में व्यर्थ का संकोच नहीं करते.''

—जान कैनेडी : (इच्छा शक्ति) अपना आदर्श चुनना (प्रेषक : फूलचंद, रांची)

● ''रातदिन हम जिस भ्रष्टाचार की बुराई करते हैं, आवश्यकता पड़ने पर स्वयं भी उसी का अवलंब लेते नहीं हिचकते. जिस सच्चाई और ईमानदारी की आशा हम दूसरों से करते हैं, अवसर आ जाने पर उस की हत्या स्वयं ही कर बैठते हैं. आत्म-प्रवंचना की यह प्रवृत्ति जब तक दूर न होगी, तब तक हम अपने देश और समाज के नैतिक स्तर को कभी ऊंचा नहीं उठा सकते.''

—भगवतीप्रसाद वाजपेयी : एक [illegible] (प्रेषिका : अंजली सिंह, धौलपुर) ●

* पुरस्कृत स्वर्णिम वाक्य.

परमाणु घड़ियां
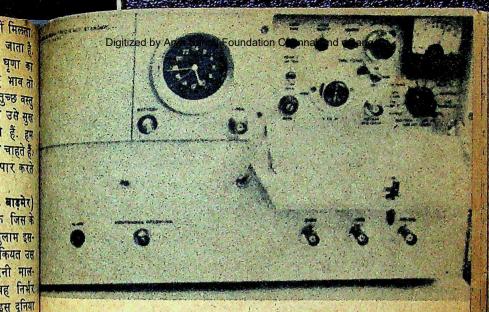
एक सेकंड के हेरफेर से विश्व को चौंका देने वाली दुर्घटनाएं हो सकती हैं. इन पर नियंत्रण रखने के लिए वैज्ञानिकों का एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार...

समय क्या है?—यह कहना जरा कठिन है क्योंकि दर्शनशास्त्र भी समय की कोई सुनिश्चित परिभाषा तय नहीं कर पाया है. समय एक गतिमान व सापेक्ष वस्तु है. यद्यपि संसार में प्रत्येक वस्तु का कुछ न कुछ आकार, रूप, भार का माप जरूर होता है, समय के विषय में ऐसी कोई भी बात संभव नहीं हो सकी है. समय से सिर्फ एक प्रकार की अनुभूति होती है, जिस को नापने में मनुष्य की बुद्धि अब तक असफल रही है. जब मनुष्य किसी प्रिय कार्य में जुटा हुआ होता है तो उस को वह समय बहुत ही छोटा लगता है. लेकिन जब उसे किसी का इंतजार करना होता है तो उसे एक मिनट भी एक घंटे के समान लगने लगता है.

लेख • गोपालकृष्ण गोयल

मनुष्य जाति आदिकाल से शुद्धातिशुद्ध समय नापने का प्रयत्न करती चली आ रही है और इस के लिए जितने भी प्रयत्न अब तक किए गए हैं, वे सब यूरोप व अमरीका के प्राचीन ऐतिहासिक संग्रहालयों में आज भी सुरक्षित हैं. लेकिन जितना क्रांतिकारी परिवर्तन पिछले 25 वर्षों में इस क्षेत्र में हुआ है, शायद उतना पहले 100 वर्षों में भी नहीं हुआ होगा क्योंकि वर्तमान युग की मांगों ने वैज्ञानिकों को मजबूर कर दिया कि वे समय नापने के ऐसे साधनों की खोज करें जो सेकंड के लाखवें हिस्से तक को सहीसही

नाप सकें. परमाणु घड़ी वैज्ञानिकों की अरसे से चली आ रही एक ऐसी ही खोज का परिणाम है. उन का विश्वास है कि इस घड़ी में 10,000 वर्षों में सिर्फ एक सेकंड का अंतर आने की संभावना हो सकती है. समय की इतनी अधिक शुद्धता बताने वाला अन्य कोई स्रोत अभी तक विश्व में दूसरा नहीं है. अतः इसी स्रोत को विश्व के वैज्ञानिकों ने समय व आवृत्ति के 'मौलिक व प्रारंभिक संदर्भ' की संज्ञा दी है.

परमाणु घड़ी की विशेषताएं

भौतिक विज्ञान का शायद ही कोई ऐसा विषय होगा जिस में किसी न किसी रूप में समय की इकाई का उपयोग न होता हो. अतः इस का सहीसही पता लगाने का कार्य सौर जगत विद्या की उच्चतम श्रेणी का एक विशेष विषय समझा जाता है. इस को वेधशालाओं द्वारा सूर्य, चंद्र व नक्षत्रों की गतियों का अध्ययन करने के लिए परमाणु घड़ियों की मदद से तय किया जाता है. यह कार्य इतना कठिन, मेहनत वाला, लंबा तथा महंगा होता है कि सिर्फ सरकारी संस्थान ही इस का संचालन तथा विकास कर सकते हैं.

विज्ञान का विद्यार्थी जानता है कि समय व आवृत्ति में विलोम का संबंध होता है. अतः समय की जानकारी आवृत्ति के रूप में ज्ञात करने से बड़ी ही सुविधा हो गई है. परमाणु घड़ी भी आवृत्ति की स्थिरता व शुद्धता पर आधारित है. हमें इस घड़ी को समझने के लिए समय की कुछ पुरानी पद्धतियों को समझना होगा.

समय स्वयं गतिमान वस्तु होने के कारण किसी अन्य ऐसी गतिमान वस्तु पर आश्रित है जो सदा निश्चित गति की द्योतक हो. यद्यपि समय की इकाई को कभी भी त्रुटिरहित नहीं नापा जा सकता, फिर भी, जहां तक संभव हो सका है, विश्व भर में सेकंड की इकाई को एक निश्चित अवधि का रखने की कोशिश की गई है.

परमाणु घड़ी के जन्म से पहले पृथ्वी की गति को ही समय नापने का एकमात्र साधन समझा जाता था. लेकिन जब से यह मालूम हुआ है कि पृथ्वी की गति में लगभग दो माइक्रोसेकंडों की प्रतिदिन कमी होती जा रही है, तब से इस स्रोत से ज्ञात किया हुआ समय संदिग्ध समझा जाने लगा है और अब इस की जगह परमाणु घड़ियों ने ले ली है.

- परमाणु घड़ी द्वारा बताया समय पृथ्वी द्वारा बताए समय से कई गुना अधिक शुद्ध, स्थिर तथा परिमार्जित पाया गया है (लगभग 1,00,000 गुना).
- यह साधन अब सभी साधनों की अपेक्षा सस्ता, विश्वसनीय, आसान तथा कम समय खर्च कराने वाला है तथा इस की आग, पानी या अन्य किसी प्राकृतिक प्रकोप से नष्ट होने की संभावना नहीं रही है.
- इस साधन पर ऊंचाई, गहराई, वातावरण तथा जलवायु का कोई असर नहीं पड़ता है.
- यह साधन विश्व की प्रत्येक अच्छी प्रयोगशाला में आसानी से बनाया या खरीदा जा सकता है. इस की देखभाल व स्थिरता को भी आसानी से बनाए रखा जा सकता है.
- इस साधन को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बिना किसी विशेष कठिनाई के लाया, ले जाया जा सकता है. इस पर पेंडुलम क्लाक की भांति गुरुत्वाकर्षण शक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न ही इस को क्वार्ट्स क्लाक की भांति कठोर स्थितियों में ही रखना होता है. कंपनरहित तहखाने, निश्चित तापक्रम व आर्द्रता आदि की पाबंदियां इस के लिए बिलकुल नहीं हैं.

परमाणु घड़ी में ही पेंडुलम घड़ी की भांति सिजियम धातु नं. 133 के परमाणुओं के कंपनों द्वारा समय की इकाई की अवधि ज्ञात की जाती है. ये कंपन निस्संदेह उच्च स्तर की शुद्धता व स्थिरता वाले होते हैं. अतः इस माध्यम को समय का मूल आधार मान कर इस
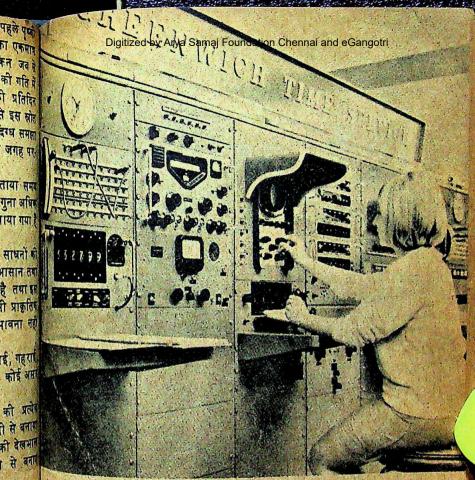
समय की जानकारी रखने का विश्व का प्राचीनतम स्थान ग्रीनविच, इंगलैंड की वेधशाला

...यु के परमाणु के 9,19,26,31,776 कंपनों की अवधि कुछ विशेष परिस्थितियों में एक सेकंड के बराबर मान ली गई है जो कि लगातार काफी परीक्षणों के बाद भी निश्चित पाई गई है.

समय का मूल स्रोत तथा परमाणु घड़ी

समय की जानकारी रखने का विश्व का प्राचीनतम स्थान ग्रीनविच (इंगलैंड) की वेधशाला को माना जाता है, क्योंकि अंगरेज जाति सर्वप्रथम सन 1675 में नापतोल व समय की गणना में दिलचस्पी दिखा कर विश्व की सिरमौर बन गई. इस वेधशाला के पास अब अनेक आधुनिक व उच्च श्रेणी के संवेदनशील फोटोकैमरे, टैलीस्कोप तथा अन्य साधन हैं, जिन के द्वारा इस ने पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का समय 365.24219879 सूर्य दिनों के बराबर ज्ञात किया है.

वैसे शुद्ध व अंतिम समय की जानकारी व गारंटी अंतर्राष्ट्रीय सौर जगत संघ द्वारा दी जाती है, जो अंतर्राष्ट्रीय समय ब्यूरो (पेरिस) द्वारा संचालित है. यह ब्यूरो विश्व के भिन्नभिन्न स्थानों से, जिन में जापान, अमरीका, कनाडा, फ्रांस, जरमनी और स्विजरलैंड मुख्य हैं, समय के विभिन्न परिणामों को एकत्रित करता है, जो कि वहां की वेधशालाओं द्वारा परमाणु घड़ी द्वारा ज्ञात किए गए होते हैं. इन देशों के समय में भी थोड़ाबहुत अंतर जरूर रहता है. इन सब समयों का अध्ययन बड़ेबड़े समीकरणों व गणित की

राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला का मोनिटरिंग स्टेशन, जहां समय के स्टैंडर्ड की देखभाल की जाती है. यहां से समय समय पर सही समय के संकेत भी प्रसारित किए जाते हैं.
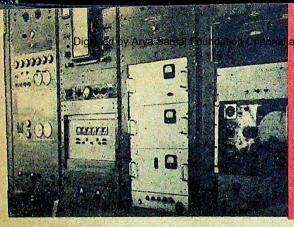
गणना द्वारा किया जाता है और फिर एक निचोड़ निकाला जाता है, जिसे 'अंतर्राष्ट्रीय समय' कहते हैं. यह समय परमाणु घड़ी द्वारा बताए समय से सन 1958 से अब तक 13 सेकंड पीछे है. इन दोनों समयों की प्रणालियों में कुछ लंबे व पेचीदा गणितीय समीकरणों द्वारा आपस में कुछ ऐसा संबंध स्थापित किया गया है कि उपभोक्ता घर में बैठे ही रेडियो प्रसारण के माध्यम से दोनों समयों की सहीसही जानकारी प्राप्त कर लेते हैं. इस प्रकार यह ब्यूरो विश्व में समय के क्षेत्र में एकरूपता बनाए रखने का भरपूर प्रयत्न करता रहता है.

इस प्रकार हम देखते हैं कि समय के दो समानांतर संदर्भ अपनाए जा रहे हैं जो वैज्ञानिकों के लिए एक समस्या पैदा किए हुए हैं. इस का इन के पास कोई हल नहीं है. फिर भी विश्व के अंदर जगहजगह स्टैंडर्ड समय व आवृत्ति की जानकारी के लिए रेडियो स्टेशनों की व्यवस्था की गई है जो रातदिन कार्य करते हैं.

इन के पास अपनी कईकई परमाणु घड़ियां हैं ताकि प्रसारण की शुद्धता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रह सके. ये सब स्टेशन आपस में जंजीर की भांति एकदूसरे से जुड़े हुए हैं और अपने-अपने संदर्भों की एकदूसरे के प्रसारण के द्वारा जांच करते रहते हैं. इन स्टेशनों में मुख्य ये हैं : जे. जे. वाई. (जापान), डब्ल्यू. डब्ल्यू. वी. (अमरीका), डब्ल्यू. डब्ल्यू. वी. एच. (हवाई), जी. बी. आर. (इंगलैंड), आई. वी. एफ. (इटली) और आर. ओ. आर. (रूस).

यात्री परमाणु घड़ी तथा शुद्धता की जांच के साधन

समय में अंतिम शुद्धता की जांच के लिए समय के किसी ऐसे संदर्भ पर तो निर्भर करना ही होगा, जिस की शुद्धता व स्थिरता सर्वोच्च व सर्वमान्य हो. ऐसे साधन को ही समय का मूल संदर्भ माना जाएगा. यद्यपि त्रुटिहीन समय की आशा नहीं की जा सकती, फिर भी परमाणु घड़ी इस युग की अधिकतम मांग को काफी हद तक पूरा करती है. वैसे इन घड़ियों में भी आपस में कुछ न कुछ अंतर अवश्य रहता है. अतः यह जरूरी हो जाता है कि भिन्नभिन्न क्षेत्रों की घड़ियों को उच्चतम शुद्धता वाली पेरिस की घड़ी से मिला कर रखा जाए. क्योंकि पेरिस की घड़ी ही पूरे विश्व में सही समय का संचालन करती है और अंतर्राष्ट्रीय मान्यता के अनुसार प्रत्येक देश अपने समय में इस समय के संदर्भ से ज्यादा से ज्यादा एक मिलीसेकंड तक का अंतर बनाए रख सकता है और कम से कम 1000 माइक्रोसेकंड का.

समय के इतने सूक्ष्म अंतर को बनाए रखने का कारण यह है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कुछ ऐसी वैज्ञानिक तथा अंतरिक्ष संबंधी घटनाएं घटित होती रहती हैं जिन में दिन के सही समय की जान-

जानकारी का मालूम होना बहुत जरूरी है, जैसे—सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण किस किस स्थान पर, किस समय, किस प्रकार का होगा, अमुक आकाशपिंड पृथ्वी के किस हिस्से से किस समय पर आ कर टकराया है. अतः परमाणु घड़ियों के इस प्रकार के सूक्ष्म अंतर पर तेज निगरानी रखनी पड़ती है ताकि विश्व में अलगअलग समय होने के कारण किसी प्रकार की भ्रांति व परेशानी पैदा न हो. इस समस्या का हल यह है कि समस्त घड़ियों को एक संदर्भ घड़ी से मिला कर रखा जाए.

साधारणतया इस प्रकार सूक्ष्म व शुद्ध समय की जांच के लिए समय व आवृत्ति के स्टैंडर्ड सिगनलों पर निर्भर करना पड़ता है क्योंकि समय का स्टैंडर्ड नापतोल के स्टैंडर्ड की भांति लोहे की अलमारी में नहीं रखा जा सकता. अतः रेडियो प्रसारण ही इन को प्राप्त करने का एकमात्र साधन हैं. उच्च रेडियो तरंगों पर किया गया प्रसारण आकाश से परावर्तित होता है, जिस के कारण समय में कुछ त्रुटि आ जाती है. इस त्रुटि को कम से कम करने के लिए अन्य साधनों का सहारा लेना होता है.

● काफी खोज व परिश्रम के बाद एक ऐसी युक्ति निकाली गई है, जिस से इस त्रुटि को कम किया जा सका है और वह यह है कि समय के सिगनलों को कम से कम आवृत्तियों पर प्रसारित किया जाए ताकि तरंगें पृथ्वी पर ही सीधी जाएं और आकाश में जानेआने का समय न लगे. इस से समय के प्रसारणों में काफी शुद्धता आ गई है. शुरूशुरू में यह साधन कुछ मीलों तक ही सीमित था लेकिन अब इस का काफी विकास हो गया है. यह साधन बहुत महंगा व मेहनत वाला है, अतः विश्व में कुछ ही गिनेचुने स्टेशन इस प्रकार के हैं.

● सही समय की जांच करने की तीसरी युक्ति कृत्रिम उपग्रह से संचार व्यवस्था की है. अगस्त, सन 1962 में इंगलैंड और अमरीका के बीच एक माइक्रोसेकंड तक की शुद्धता का पता इसी के द्वारा लगाया गया था. इसी प्रकार अमरीकी उपग्रह रिले नं. 2 द्वारा जापान और अमरीका के बीच 0.1 माइक्रोसेकंड तक शुद्ध समय नापा जा सका है.

● समय की शुद्धता की जांच के लिए जो तीसरी युक्ति अपनाई जा रही है, जो नवीनतम तथा कम से कम त्रुटि की द्योतक है, वह है 'यात्री परमाणु घड़ी' अर्थात वायुयान के फर्स्ट क्लास के रिजर्व कंपार्टमेंट से यात्रा कर के परमाणु घड़ी द्वारा विश्व की मुख्य परमाणु घड़ियों में आए हुए अंतर की जांच करना और यथोचित परिवर्तन कराना. यह युक्ति माइक्रोसेकंड के हिस्से तक की शुद्धता बता देती है.

1 जनवरी, 1972 का क्रांतिकारी कदम

शायद आप ने भी रेडियो से चौंकाने वाला समाचार सुना होगा कि विश्व की तमाम घड़ियों को 31 दिसंबर की रात को ठीक 12 बजे कुछ समय के लिए रोक दिया गया था. यह क्यों और कैसे किया गया—हम आप को समझाते हैं.

अब तक हमें जो भी साधन मिले हैं, उन से हम सिर्फ समय का अंतर ही नाप सके हैं, लेकिन दिन के सही समय की जानकारी के लिए हमें पृथ्वी की गति पर निर्भर करना पड़ता है. पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना और घूमतेघूमते सूर्य की परिक्रमा करना दो ऐसे प्राचीन सिद्धांत हैं, जिन से क्रमशः 'सूर्य समय' तथा 'चतुर्दिक समय' का बोध होता है. लेकिन चंद्रमा तथा अन्य नक्षत्रों की गतियों की मदद से अब यह बिलकुल निश्चित हो गया है कि पृथ्वी की गति में दिन-प्रतिदिन धीमापन आता जा रहा है. इस का पता लगाने का श्रेय परमाणु घड़ी को जाता है. इस घड़ी का काफी परीक्षण करने के बाद सन 1958 में अंतर्राष्ट्रीय समय ब्यूरो ने इसे प्रयोगात्मक स्तर पर विधिवत चालू कर दिया. 1 जनवरी, सन 1972 तक इस का समय पृथ्वी द्वारा बताए गए समय से लगभग 10 सेकंड आगे

पाया गया. वैसे विश्व का समय व आवृत्ति निर्धारित करने वाली समिति ने इस घड़ी को सन 1964 में प्रायोगिक रूप में व सन 1967 में वैधानिक रूप में समय व आवृत्ति के संदर्भ में मान्यता प्रदान की तथा इस समय को व्यावहारिक रूप में उपयोग में लाने तथा उसे आसानी से प्राप्त करने व समझने के हेतु इस समय के अंतर को पूर्ण इकाई में बदलने का निर्णय भी लिया. अतः 31 दिसंबर की रात को 12 बजे विश्व की समस्त घड़ियों को 0.107760 सेकंड तक के लिए रोक दिया गया ताकि परमाणु समय अंतर्राष्ट्रीय समय से ठीक 10 सेकंड आगे हो जाए.

भविष्य में इस प्रकार के समय के अंतर को वर्ष में ज्यादा से ज्यादा दो बार बदला जा सकता है. इस युक्ति द्वारा सिर्फ पूर्ण इकाई को ही आगेपीछे किया जा सकता है जिसे 'लीप सेकंड' की संज्ञा दी गई है. अब तक यह अंतर 13 सेकंडों के बराबर हो गया है. हम इस अंतर को इसी प्रकार जोड़ते चले जाएंगे क्योंकि पृथ्वी की गति को नियंत्रित करना किसी के हाथ में नहीं है और न ही यह पता लगाया जा सकता है कि कब पृथ्वी की गति का रुख बदलता है. अब यदि 'परमाणु समय' को ही दिन प्रतिदिन का समय मान लिया जाए तो हजारों व लाखों वर्षों के बाद यह अंतर जुड़तेजुड़ते ऐसी स्थिति पैदा कर देगा कि आफिस जाने का समय सुबह चार बजे होगा और दोपहर के 12 बजे तक छुट्टी हो जाया करेगी. तब कैसी अजीब स्थिति होगी? फिर भी 'अंतर्राष्ट्रीय समय' की जानकारी अपना अलग ही एक विशिष्ट स्थान रखती है. यद्यपि इस समय में इतनी अधिक शुद्धता नहीं है, फिर भी इस का उपयोग दिन का सही समय मालूम करने, सूर्यग्रहण एवं चंद्रग्रहण का समय मालूम करने तथा मौसमों में परिवर्तन की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है.

परमाणु घड़ी से लाभ

आप को आधुनिक विज्ञान का कोई भी ऐसा आविष्कार नहीं मिलेगा, जिस में समय व आवृत्ति का योगदान न रहा हो. विशेषकर, उच्चस्तरीय न्यूक्लियस भौतिकी तथा इलैक्ट्रानिकी विषय तो इस संदर्भ पर पूरी तरह निर्भर करते हैं. नौसेना और वायुसेना के 90 प्रतिशत उपकरण इलैक्ट्रानिक यंत्रों से संबंधित हैं. विदेश संचार विभाग तो पूरी तरह ही इस पर निर्भर रहता है. वैज्ञानिक व औद्योगिक संस्थानों में भी इस का महत्त्व कम नहीं है. देश के या विदेश से आए हुए यंत्रों तथा पुर्जों की जांचपड़ताल, अंकन, परीक्षण, स्थिरता की देखभाल तथा विकास कार्य इस संदर्भ के बिना कदापि संभव नहीं हैं. इस से यंत्रों की कार्यक्षमता बढ़ती है, सुंदर व उच्च श्रेणी के परिणाम निकलते हैं तथा उत्पादक वस्तुओं का शुद्ध व उपयोगी प्रदर्शन होता है. इतना ही नहीं, इस से वस्तुएं मजबूत, व विश्वसनीय तथा अन्य उत्तम गुणों वाली बनती हैं. इस से विदेशों में हमारी वस्तुओं का मान बढ़ता है.

परमाणु घड़ी का उपयोग समय व आवृत्ति के संदर्भ के रूप में देश की प्रत्येक प्रयोगशाला, शोध केंद्र और सरकारी व गैरसरकारी संस्थान में भूगर्भ व भूगोल के शोधकर्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है. टेलीफोन, टेलीग्राफ और टेलीविजन के इंजीनियरों व टेकनिशियनों, अंतरिक्ष व सौर जगत के वैज्ञानिकों तथा कृत्रिम उपग्रहों व रेडार के कंट्रोलरों को भी अपने यंत्रों की जांच के लिए इसी साधन का उपयोग करना होता है.

इस संदर्भ का अधिकतम लाभ प्रतिरक्षा के उपकरणों का परीक्षण करने में होता है क्योंकि ये उपकरण उच्चतम शुद्धता की मांग करते हैं. युद्ध क्षेत्र में काम आने वाले राकेटों, टाइम बमों, बैस्टिक मिसाइलों तथा अणु अस्त्रों के नियंत्रण करने वाले उपकरणों, जलयानों व पनडुब्बियों में काम आने वाले 'सोनार' व 'लोनार' का अंकन इसी एक स्रोत पर आश्रित है. इस के अतिरिक्त दुर्घटनाओं
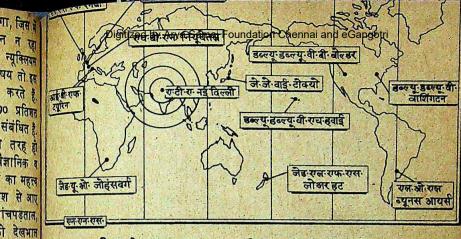
विश्व के कुछ मानक समय और आवृत्ति प्रसारण केंद्र

के बचाव के उपकरणों की भी जांच इसी एकमात्र साधन पर निर्भर है. विदेश संचार तथा माइक्रोवेव लिंक व्यवस्था में भी इस का बड़ा योगदान है.

दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुएं भी, जो कि भारी इंजीनियरिंग उद्योगों की देन हैं, इस के लाभ से वंचित नहीं हैं—विशेषकर जहां उत्पादन करते समय सेकंड के दो दशमलव से ले कर छः दशमलव तक शुद्ध समय की आवश्यकता होती है. इस का उपयोग ओलंपिक खेलों तथा घुड़दौड़ के मैदानों से ले कर फोटोग्राफिक कैमरों, मेडिकल यंत्रों, टेप रिकार्डरों, रेडियोग्रामों, मिक्सियों, उच्च स्पीड के ग्राइंडरों (हीरे तराशने वाले), ट्रैफिक कंट्रोल के उपकरणों, स्पाट वैल्डिंग, दवाई बनाने की मशीनों, इलैक्ट्रानिक रिले, बिजली के स्वचालित स्टार्टरों तथा लाइट डेकोरेशनों आदि तक में होता है क्योंकि यांत्रिक घड़ियां इतना बारीक समय नहीं बता सकतीं.

समय व आवृत्ति के संदर्भ का विभिन्न आवृत्तियों के रूप में वाद्य यंत्र तथा बिजली के विभिन्न पुर्जे बनाने वाले उद्योग में बड़ा ही महत्त्व है. बिजली के सितार, हारमोनियम, प्यानो आदि की आवृत्तियां निश्चित करने के लिए इसी संदर्भ का आश्रय लेना पड़ता है, वरना इन का प्रदर्शन करते वक्त वह मधुरता नहीं आएगी, जो आनी चाहिए. इसी प्रकार आवृत्ति अंकन बिना रेडियो प्रसारण बेसुरे व टेलीविजन चित्र दो स्टेशनों की गड़बड़ से धुंधले व टेढ़ेमेढ़े आएंगे.

भारत में परमाणु घड़ी

स्वतंत्रता से पूर्व भारत के पास किसी प्रकार का समय संदर्भ नहीं था. तब समय व आवृत्ति संबंधी यंत्रों व उपकरणों के उत्पादनों का अंकन और परीक्षण ब्रिटिश सरकार इंगलैंड से कराया करती थी, जिस के कारण काफी समय नष्ट होता था, विदेशी मुद्रा बाहर जाती थी तथा यातायात के अच्छे साधनों की कमी के कारण रास्ते की टूटफूट से भी काफी नुकसान उठाना पड़ता था. इस प्रकार हम पूरी तरह विदेशों पर निर्भर थे. लेकिन अब यह सब कार्य भारत के वैज्ञानिकों द्वारा अपने देश की ही प्रयोगशालाओं में संभव हो गया है. भारत सरकार ने इस कार्य के लिए राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला को संरक्षक बनाया है. उस की छत्रछाया में समय व आवृत्ति के संदर्भ की 'ए. टी. ए.' नाम से कालकाजी, नई दिल्ली में स्थापना की गई है जो पिछले 15 सालों से विदेशियों की भांति ही, सही समय की जानकारी कराता आ रहा है. यह भारत का पहला और अकेला स्टेशन है, जहां ये

परमाणु घड़ी से जनित समय व आवृत्ति का प्रसारण नित्य 11 बजे से 3 बजे तक 10 मैगासाइकिल पर किया जाता है. इस से न केवल भारत को ही, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया को भी पूरापूरा लाभ हो रहा है. हिंद महासागर के भटके हुए जहाजों को अब इस स्टेशन से काफी मदद मिलने लगी है.

वास्तव में परमाणु घड़ी भारत के वैज्ञानिकों तथा इलेक्ट्रानिक इंजीनियरों व टेकनिशियनों के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है—विशेषकर ऐसे समय में जबकि वैज्ञानिक व औद्योगिक क्षेत्र की बड़ी तीव्र गति से उन्नति हो रही है. एटम बम परीक्षण तथा रेडार, टेलीविजन और माइक्रोवेव लिंक जैसे नाजुक व संवेदनशील यंत्रों की मांग ने समय व आवृत्ति के सर्वशुद्ध संदर्भ के महत्त्व को और भी बढ़ा दिया है. यह मांग सिर्फ परमाणु घड़ी ही पूरी कर सकती है.

परमाणु घड़ी की कीमत डेढ़ लाख रुपए है. कोई भी गैरसरकारी संस्थान इतना धन खर्च कर के इसे खरीदना नहीं चाहेगा. राष्ट्र हित का ध्यान रखते हुए इतना खर्च सिर्फ सरकारी संस्थान ही उठा सकता है तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शुद्धता बनाए रखने में पूरापूरा योग दे सकता है ताकि देश में बना हुआ माल विदेशों में निम्न स्तर का न निकले. अतः सभी क्षेत्रों की मांग को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने यह भार उठाया है. अब देश इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर है. उपभोक्तागण अपनीअपनी जगहों पर बैठेबैठे ही अपनीअपनी जरूरतों को रेडियो प्रसारण द्वारा पूरी कर लेते हैं.

ए. टी. ए. क्या है?

23 मई, 1974 से पहले इस स्टेशन के समय व आवृत्ति के प्रसारण की शुद्धता 'ऐंगशन टाइप' क्वार्ट्स क्रस्टलों की आवृत्ति पर निर्भर थी जिस की आवृत्ति 100 किलोहर्ट प्रति सेकंड की थी और शुद्धता $\pm 2 \times 10^{-8}$ स्तर की थी लेकिन अब परमाणु घड़ी के आ जाने के कारण यह शुद्धता 10^{-12} स्तर की हो गई है.

इस स्टेशन की स्थापना सन 1956 में हुई थी तथा प्रथम प्रसारण 1 नवंबर, 1958 को हुआ था. तभी से विश्व के प्रत्येक कोने से आए हुए समाचारों से यह विदित होता है कि इस का कितना महत्त्व है.

इस स्टेशन के प्रसारण की शुद्धता की जांच के लिए राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला में अलग एक विशेष विभाग है जहां विदेशों से ऐसे ही समय सिगनल रेडियो द्वारा प्राप्त किए जाते हैं तथा ए. टी. ए. के टाइम सिगनलों की तुलनात्मक शुद्धता की जांच की जाती है. लेकिन जब से परमाणु घड़ी का स्रोत हमें मिल गया है, तब से हमें ज्यादा विदेशी सिगनलों पर पूर्णतया निर्भर नहीं रहना पड़ता. फिर भी 'क्रास चैकिंग' के लिए विदेशी सिगनलों को प्राप्त करना प्रायः जरूरी ही है.

'शुद्धता का मूल्य' ही इस स्टेशन की जान है. इस को कायम रखना ही इस स्टेशन की विशेषता है. इस शुद्धता को कायम रखने के लिए हर संभव प्रयत्न किया जाता है. कुछ स्वचालित तथा कुछ 'स्पेयर' यंत्रों की व्यवस्था के कारण किसी भी प्रकार शुद्धता में कमी नहीं आने दी जाती. बिजली बंद हो जाने पर काफी तादाद में लगाई हुई बैटरियों की मदद से स्टेशन का प्रसारण चालू रखा जाता है. इस के अतिरिक्त किसी प्रकार की खराबी की सूचना हलकी, गहरी

...की रोशनी की चमक से तथा विभिन्न प्रकार की ध्वनियों से स्वचालित यंत्र ... के इंचार्ज को दे देते हैं. कुछ खराबियों का ग्राफ पेपर से भी पता चल जाता है. पूरी बिल्डिंग को तापानुकूलित रखा जाता है, जहां क्रिस्टलों की स्थापना की गई है. वहां किसी प्रकार का कंपन नहीं होने पाता.

समय के सिगनलों का विवरण

सेकंड टिक : यह टिक पांच साइकिलों से मिल कर बनती है और एक हजार प्रति सेकंड वाली टोन से बनाई जाती है. यह टिक विश्व भर में सब जगह एक साथ सुनाई देती है

मिनट टिक : यह टिक 100 साइकिलों से मिल कर बनी है और यह भी एक हजार प्रति सेकंड वाली टोन से बनाई जाती है. यह प्रत्येक साठवें सेकंड पर सुनाई देती है.

टोन : यह 1000 साइकिल प्रति सेकंड 'सुनाई देने वाली' टोन है जो प्रत्येक ... मिनट के बाद हर चार मिनट के लिए दी जाती है. यह संगीत तथा बिजली के उपकरण बनाने वालों के लिए दी जाती है.

अनाउंसमेंट : रेडियो प्रसारण के प्रत्येक 15वें मिनट से पहले स्वचालित यंत्रों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समय को मोर्स कोड में तथा भारतीय समय को अंगरेजी भाषा में स्टेशन के नाम के साथ प्रसारित किया जाता है ताकि देशविदेश के सब लोग इस का लाभ उठा सकें. यह सब उपरोक्त कार्य 'बोलने वाले क्लाक' की सहायता से संपादित किया जाता है.

भारत के वैज्ञानिक विकास कार्यों में परमाणु घड़ी की स्थापना कर के भारत ने एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है. इस प्रयोगशाला में अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि ये घड़ियां अब अपने ही देश में बनाई जाएं और सस्ती व रियायती दरों पर बड़ेबड़े वैज्ञानिक, शैक्षिक तथा इंजीनियरिंग संस्थानों को बेची जाएं जिस से देश के उद्योगों की दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति हो.

आरती का विवाह

सरस्वती की धारणा ने आर
पसंद करती थी तो दूसरी ओ

आरती की माता सरस्वती ने पूछा, "संध्या के समय तुम नीली साड़ी क्यों नहीं पहन लेतीं?"

आरती ने कोई उत्तर नहीं दिया तो उस की माता ने कहा, "ठीक है, यदि तुम्हें वह पसंद नहीं है तो तुम नींबू के रंग की वह साड़ी पहन सकती हो जिस पर फूल कढ़े हुए हैं."

आरती फिर भी कुछ नहीं बोली तो सरस्वती ने जोर से कहा, "क्या बात है? तुम किसी भी बात से प्रसन्न होती नहीं दिखतीं."

आरती ने ऊपर देखा और कहा, "मम्मी, क्या फायदा? बहुत से युवकों को दिखाए जाने के लिए मैं अनेक बार वस्त्र पहन चुकी हूं. मैं अजनबियों के साथ अनेक बार निरर्थक वार्तालाप कर चुकी हूं. मैं इस आदमी से नहीं मिलना चाहती, वह चाहे कोई भी क्यों न हो."

"तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम विवाह नहीं करना चाहतीं? क्या तुम सारा जीवन यहीं रहना चाहती हो? जब तुम्हारे मम्मीपापा नहीं रहेंगे तब क्या करोगी?" सरस्वती ने पूछा.

"यह मैं नहीं जानती और न ही इस बात की परवा करती हूं," आरती ने उपेक्षा के साथ उत्तर दिया, "लेकिन अब मैं इन युवकों से नहीं मिलूंगी."

"इन युवकों से? तुम्हें केवल एक से ही तो मिलना है और यदि विवाह तय हो जाता है..."

"मेरा विवाह तय नहीं होगा. मुझे और भी अनेक युवकों से मिलना पड़ेगा. अनुभव से मैं यह जानती हूं कि मेरी जन्मपत्री इस युवक की जन्मपत्री से नहीं मिलेगी और तुम पंडितों की बातों की अवहेलना नहीं कर सकोगी. इस युवक को भी उसी प्रकार भेज दिया जाएगा, जिस प्रकार अन्यों को भेजा जा चुका है. और तब कोई अन्य युवक आएगा; उस के बाद कोई अन्य तथा उस के बाद कोई और," आरती ने थके स्वर में कहा.

"अरे, आरती," सरस्वती झुंझलाई, "तुम ये कैसी बेकार की बातें करती हो?"

आरती ने उत्तर नहीं दिया. सरस्व
यह कह कर कमरे से बाहर चली ग
"ठीक है. खुश रहो. जैसा ठीक सम
करो. आधुनिक युवकयुवतियों को वश
करने का कोई रास्ता ही नहीं है. मे
राय में, तुम्हें आधी या चौथाई शता
पहले जन्म लेना चाहिए था. तब लड़
लड़कियों के मिलने और एकदूसरे
पसंद करने की नवीन विचारों से उत्प
इस सारी कठिनाई के बिना तुम्हा
विवाह हो जाता. उन दिनों इस प्रक
की बातें किस ने सुनी थीं? मेरा विव
14 वर्ष की अवस्था में हुआ था औ
किसी ने इस बारे में मेरी राय लेने
जरूरत नहीं समझी थी कि मुझे कि
व्यक्ति से विवाह करना है. मेरे पिता
निश्चय कर लिया था और मैं ने उ
का निश्चय स्वीकार कर लिया था. मे
विवाह क्या उस से कुछ कम सफल र
जितना कि तुम्हारा होगा? मुझे बताओ

आरती ने इसे केवल आधे दिल
सुना. उस ने इस बारे में पहले से

था और वह यह जानती थी कि की माता का क्या तात्पर्य है. वह थी और उस की जन्मपत्री अधि- युवकों की जन्मपत्री से मेल नहीं थी. वह उसे केवल एक बार मिली लेकिन वह आदमी मोटा था और होता जा रहा था; उसे कठिनाई युवा कहा जा सकता था. उस का ग्रहों में जन्म हुआ था, जिन में स्वयं का और जिन ग्रहों में जनमे वर की काफी समय से प्रतीक्षा थी. आरती मातापिता को यह आदर्श संबंध प्रतीत था लेकिन आरती ने उस से विवाह से इनकार कर दिया. उस ने इस का पक्का निश्चय कर लिया था कि जन्मपत्री मिले या न मिले लेकिन उस से कोई संबंध नहीं रखेगी.

सरस्वती ने बहुत प्रयत्न किया; धमकी दी, [illegible] और अंत में बीमार पड़ गई. अपनी माता के बीमार पड़ जाने पर भी आरती हमेशा इनकार कर दिया करती थी लेकिन इस बार वह ऐसा नहीं कर सकी.

इस छोटे से परिवार पर उस की माता की नब्ज तेज चलने और दिल के दौरों का शासन था. आरती के पिता उदार और निर्बल थे तथा उन की पत्नी, जो कि अत्यंत रूढ़िवादी थीं, किसी से मेल नहीं खाती थीं. शायद जन्मपत्रियों में उन का उतना अधिक विश्वास नहीं था, जितना कि उन की पत्नी का. आरती यह बात नहीं जानती थी. वह जान भी नहीं सकती थी क्योंकि उस ने अपना मत प्रकट करने का कभी साहस नहीं किया था.

दुविधा में डाल दिया था...एक ओर वह आधुनिकता सरस्वती के पुराने विचार उस के लिए भारी पड़ रहे थे...
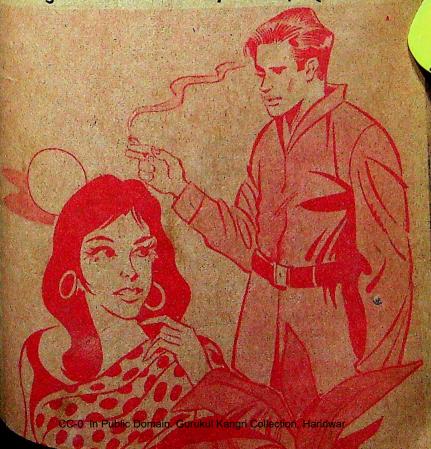
जब आरती की माता बीमार पड़ गई, तब वह स्वयं को दोषी अनुभव करने लगी लेकिन वह स्वयं को उस मोटे, गंजे सिर वाले, तथाकथित युवक से विवाह करने के लिए तैयार नहीं कर पाई जिस से कि उस की जन्मपत्री मेल खाती थी. उस की माता बहुत समय तक बीमार रहीं लेकिन अंत में वह ठीक हो गईं. आरती के लिए यह अत्यंत कठिन काल था. प्रत्येक व्यक्ति उस की निंदा कर रहा था और वह परेशानी अनुभव कर रही थी.

लगभग इसी समय उसे एक शिक्षिका की नौकरी मिल गई. अब उस की आयु 25 वर्ष के लगभग हो रही थी और उन युवकों से मिल कर वह बुरी तरह तंग आ चुकी थी जो उस के मातापिता द्वारा समयसमय पर उस के सम्मुख प्रस्तुत किए जाते थे. वह चाहती थी कि वे उसे अकेला छोड़ दें. यदि वे उस का विवाह तय नहीं कर पाते तो कम से कम वे इतना तो कर सकते हैं कि उस को, खाली इस आशा में कि वे एकदूसरे को पसंद करेंगे और उन की जन्मपत्रियां भी मिल जाएंगी, अपने सौंदर्य का प्रदर्शन करने और विभिन्न युवकों को रिझाने के लिए बाध्य कर के उसे अपमानित न करें.

आरती को सुनील की याद थी जिस की आकृति सुंदर थी, जो प्रसन्नवदन था तथा एक व्यापारिक संस्था में कार्य करता था. उसे उस से विवाह करने में कोई एतराज न था लेकिन अंतिम क्षण विवाह करने का विचार छोड़ दिया गया था क्योंकि जन्मपत्री नहीं मिली थी. फिर नवीन, संजय और आशुतोष आए. उन्हें भी चलता कर दिया गया क्योंकि उन की जन्मपत्री के बारे में संदेह था.

आरती अपनी मम्मी को फिर बीमार नहीं करना चाहती थी इसलिए उस ने यथासंभव उस की इच्छाओं के विरुद्ध न जाने का प्रयत्न किया. इसलिए उस दिन संध्या के समय वह चांदी जैसे बार्डर वाली नीली साड़ी पहन कर तैयार हो गई और सुबोध से मिलने के लिए ड्राइंग रूम में इंतजार करने लगी.

वह थोड़ी देर से आया और कुछ परेशान नजर आ रहा था, "मुझे खेद है," उस ने दुख प्रकट किया, "मैं दिल्ली से अधिक परिचित नहीं हूं और टैक्सी वाले को यह स्थान खोजने में काफी समय लग गया."

आरती के पिता संतोषकुमार ने इस के उत्तर में कुछ परंपरागत शब्द कहे और सुबोध को सोफे पर बैठने के लिए आमंत्रित किया. सरस्वती ने उस से पूछा कि उस के कितने भाईबहन हैं, उन की क्या अवस्था है, इत्यादि. इस के उपरांत वह यह कहते हुए उठ गईं, "मैं चाय भेजती हूं. आप आराम करें, सुबोध."

कुछ मिनट बाद संतोषकुमार ने घड़ी की ओर देखा और कहा, "क्षमा कीजिए. मुझे कुछ काम है." और वह कमरे से बाहर चले गए. आरती और सुबोध ने एक दृष्टि से एकदूसरे की ओर देखा. फिर चारों ओर अत्यंत कष्टकर चुप्पी छा गई. तभी सुबोध ने अपने गले को साफ किया और कहा, "मुझे आप से मिल कर अपार हर्ष हुआ. मैं ने सुना है कि आप किसी स्कूल में पढ़ाती हैं. आप को यह काम कैसा लगता है?"

"बहुत रोचक है," आरती ने उत्तर दिया.

फिर दोनों चुप हो गए और सुबोध ने अपने मुख को रूमाल से पोंछा. वह इतना घबरा गया था कि आरती को हंसी आने लगी.

सुबोध उठा और उस ने कमरे में किताबों की अलमारियों की ओर देखा. "क्या आप का पढ़ना अच्छा लगता है?" उस ने पूछा और फिर वार्तालाप शुरू करने का प्रयास किया.

"हां," आरती ने उत्तर दिया. उसे भी एक बिलकुल अजनबी के साथ बातचीत करने का प्रयास अजीब सा लग रहा था लेकिन उसे इस प्रकार के साक्षात्कारों की आदत पड़ चुकी थी और सुबोध की

दकियानूसी विचार ने आरती का आत्मविश्वास डगमगा दिया था, वह दिन प्रति दिन निराश होती जा रही थी...लेकिन एक दिन सुबोध ने उसे किनारे पर ला कर खड़ा कर दिया.

अपेक्षा उस का स्वयं पर अधिक नियंत्रण था. उस ने कहा, "मुझे पढ़ना अच्छा लगता है लेकिन वैसा गंभीर साहित्य नहीं, जैसा कि अकसर हमें उपलब्ध होता है. मैं जासूसी कहानियां पसंद करती हूं."

सुबोध ने आराम की सांस ली और वह प्रथम बार मुसकराया. उस ने कहा, "मुझे यह जान कर बहुत खुशी हुई क्योंकि मुझे भी जासूसी प्रेम कहानियां पसंद हैं. आप का प्रिय लेखक कौन है?"

इस के बाद वे रुचि ले कर बातचीत करने लगे. तभी दरवाजे पर थपथपाहट हुई और नौकर चाय, पकौड़े, दहीबड़े, मेवे तथा मिठाई ले कर अंदर आया. आरती ने प्यालों में चाय डाली और सुबोध सोचने लगा, 'यह कितनी सुंदर, आकर्षक तथा चतुर है. यदि यह मुझ से विवाह करने के लिए सहमत हो जाए तो मैं कितना सौभाग्यशाली हूंगा.'

उधर आरती ने सोचा, 'यह कितना अच्छा युवक है. मुझे इस से विवाह करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए. उम्मीद है, इस में कोई कठिनाई नहीं होगी.'

सुबोध ने पूछा, "क्या आप के माता-पिता मेरे आप को सिनेमा ले जाने पर आपत्ति तो नहीं करेंगे?"

आरती ने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानती. आप को उन से पूछ लेना चाहिए."

साक्षात्कार समाप्त हो गया और मेज साफ कर दी गई तो सरस्वती ने अपने बड़े पुत्र निखिल के साथ प्रवेश किया. तब सुबोध ने पूछा, "क्या आप की राय में मेरा आरती के साथ सिनेमा जाना अनुचित तो न होगा?"

सुबोध ने यह वाक्य अटकअटक कर पूछा

कहा था. सरस्वती ने उस की ओर ठंडी निगाह से देखा. उन के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना सुबोध यह समझ गया कि वह आरती को सिनेमा नहीं ले जा सकता. सरस्वती ने कहा, "हम आप के पापा को लिखेंगे और उस के बाद..."

"देखिए, मुझे आरती पसंद है," सुबोध ने भावावेश में कहा, "मेरे पिता मेरे विवाह के लिए आप से पत्रव्यवहार कर रहे हैं और आप मेरे तथा मेरे परिवार के बारे में सारा ब्योरा जानती हैं. यदि मैं कह देता हूं कि आरती मुझे पसंद है तो मेरे पिता उसे स्वीकार कर लेंगे. आप यह समझिए कि विवाह तय हो गया है बशर्ते कि आरती सहमत हो." और उस ने लज्जा के साथ आरती की ओर देखा.

सरस्वती और अधिक ठंडी मूड में हो गई, "अपने परिवार में हम विवाह इस प्रकार तय नहीं करते. मेरे पति आप के पिता को लिखेंगे और वह जन्मपत्री मिलने पर विवाह तय कर देंगे."

"जन्मपत्री?" सुबोध ने घबरा कर पूछा, "मैं ऐसी बात पहली बार सुन रहा हूं. जहां तक मुझे याद है, मेरी जन्मपत्री बनाई ही नहीं गई."

"विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण अवसरों पर, जिन में दो युवा व्यक्तियों और उन के परिवार का भावी सुख निर्भर है, जन्मपत्री के अनुसार चलना आवश्यक है," सरस्वती ने कहा.

सुबोध ने खिन्न हो कर वहां से प्रस्थान किया. जैसे ही उस के चले जाने पर दरवाजा बंद हुआ आरती अपनी मम्मी की ओर मुड़ी और उस ने पूछा,

''आप मुझे इन युवकों से मिलने के लिए क्यों कहती हैं? यदि आप के लिए जन्मपत्री इतनी ही आवश्यक है तो मुझे मिलाने से पूर्व ही आप उसे क्यों नहीं मिलवा लेतीं?''

''हम ने सुबोध की जन्मपत्री मांगी थी लेकिन उस के पिता ने वह भेजी नहीं. इसी बीच यह लड़का किसी साक्षात्कार के लिए दिल्ली आ रहा था और उस के पिता ने लिख दिया कि वह तुम से मिलना चाहता है. तब हम क्या करते?''

आरती चुप रही. सरस्वती ने संतोष के साथ कहा, ''लेकिन सुबोध के पिता ने उस के जन्म की तारीख, समय और स्थान बता दिया है. उस की सहायता से हमारा पंडित उस की जन्मपत्री बना देगा.''

आरती इस पंडित में अपनी माता के अंधविश्वास के बारे में जानती थी. वह यह भी जानती थी कि उस की जन्मपत्री अधिकांश युवकों की जन्मपत्री से नहीं मिलती. इसलिए उस का दिल बैठने लगा.

जब सुबोध के पिता ने संतोषकुमार को सूचित किया कि उस के पुत्र को आरती पसंद है और वह विवाह करने के लिए तैयार है और संतोषकुमार ने जवाब में यह लिखा कि जन्मपत्रियां न मिलने के कारण विवाह नहीं हो सकता तो उसे जो डर था, वह सही सिद्ध हो गया.

कुछ दिन बाद आरती उस बस की प्रतीक्षा कर रही थी जो उसे स्कूल ले जाती थी. ''हैलो, आरती,'' एक आवाज ने उस से कहा. वह सुबोध था.

''अरे, हैलो!'' आरती ने कहा. वह कुछ कहने के लिए सही शब्द ढूंढ़ने का प्रयास करने लगी.

उसी समय बस आ गई और वह उस में चढ़ गई. उस के साथ ही सुबोध चढ़ गया. दोनों पासपास सीटों पर बैठ गए.

सुबोध ने कहा, ''मैं आप से मिलना चाहता था लेकिन यह नहीं जानता था कि कैसे मिला जाए.''

''अरे,'' आरती ने उत्तर दिया.

सुबोध ने अपना गला साफ किया और कहा, ''मैं आप के भाई से मिला था और उस ने मुझे बताया था कि सुबह के समय मैं आप से बस स्टाप पर मिल सकता हूं, इसलिए मैं यहां आ गया.''

''आप निखिल से मिले हैं?'' आरती ने आश्चर्य के साथ पूछा.

''हां. मैं ने समस्या उस के सम्मुख रखी थी.''

''कौन सी समस्या?'' आरती ने पूछा, यद्यपि वह यह जानती थी कि क्या समस्या थी.

''मैं ने उस से कहा कि आप मुझे पसंद हैं और मैं आप से विवाह करना चाहता हूं. क्या आप भी मुझे पसंद करती हैं?''

''हां,'' एक बार झिझकने के बाद आरती ने कहा.

''क्या आप मुझ से विवाह करने के लिए सहमत हैं? सुबोध ने पूछा.

आरती ने इस प्रस्ताव पर कुछ गंभीरता से विचार किया और कहा, ''मैं आप को पसंद करती हूं, सुबोध, लेकिन मेरे मम्मीपापा इस विवाह को कभी स्वीकार नहीं करेंगे.''

''लेकिन आप की क्या राय है?'' सुबोध ने जोर दे कर पूछा, ''क्या आप जन्मपत्रियों में विश्वास करती हैं?''

''नहीं. मैं इन में विश्वास नहीं करती लेकिन मम्मी करती हैं और मैं उन्हें चोट नहीं पहुंचा सकती. उन का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता. . .''

''निखिल ने कहा है कि वह भी जन्मपत्रियों में विश्वास नहीं करता,'' सुबोध ने बात काट कर कहा, ''आप इतनी बड़ी हैं कि इस बारे में स्वयं निर्णय ले सकती हैं. यदि आप तैयार हैं तो हमें सिविल मैरिज नहीं कर लेनी चाहिए?''

आरती ने इस प्रश्न को अनसुना कर दिया और पूछा, ''आप निखिल से कैसे मिले? आप ने उस से कब बात की?''

''मैं ने उस से मिलना और उस से

...बातचीत करना अपना रोज का काम बना लिया है," सुबोध ने उत्तर दिया.

आरती का स्कूल आ गया और वह बस से उतर गई. सुबोध भी उस के पीछेपीछे उतर गया और उस से बोला, "आरती, मैं आप से प्रेम करता हूं. मैं रोजगार में लगा हूं. मुझे काफी वेतन मिलता है. यदि आप मुझ से विवाह कर लेंगी तो इस के लिए आप को पछताना नहीं पड़ेगा. मैं आप को प्रसन्न रखने का पूरा प्रयत्न करूंगा. मेरे मम्मीपापा अपने घर में आप को पा कर प्रसन्न होंगे."

"लेकिन इस से मेरी मम्मी तो मर ही जाएंगी," आरती ने कहा.

तभी स्कूल की घंटी बज गई और आरती ने कहा, "मुझे अब जाना चाहिए."

विवाह

अच्छी स्त्री से विवाह जीवन के तूफान में बंदरगाह है और खराब स्त्री से विवाह बंदरगाह में ही तूफान है. —जे. पी. सेन

"मैं कल आप को इसी समय उसी स्थान पर मिलूंगा," सुबोध ने कहा, "मुझे आप का निर्णय मिल जाना चाहिए."

आरती का मस्तिष्क घूमने लगा. उसे जन्मपत्रियां मिलाने के बारे में अपनी मम्मी के रुख पर बहुत क्रोध आया. वह अनुभव करने लगी कि उस की मम्मी के इस बात पर अड़े रहने के कारण उस का जीवन यों ही गुजरता जा रहा है. उस ने अपने मम्मीपापा की इच्छाओं के विरुद्ध चलने के बारे में कभी सोचा तक नहीं था.

अब सुबोध के संपर्क में आने से उसे ऐसा लगा कि वह ऐसा कर सकती है. उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि निखिल भी ऐसा ही सोचता है. उस ने इस बारे में खूब सोचा और इस विचार को नया और प्रेरणा पाया.

उसे सुबोध से विवाह क्यों नहीं कर लेना चाहिए? यह सच है कि वह उसे इतना नहीं जानती कि उस से प्रेम कर सके लेकिन जब उस ने अपने मम्मीपापा को परंपरा के अनुसार अपने विवाह की व्यवस्था करने की अनुमति दी थी तो वह प्रेम नहीं खोज रही थी. वह सुबोध से मिली थी और उस ने उसे पसंद किया था तथा यह अनुभव करती थी कि उस के साथ वह प्रसन्न रह सकती है. लेकिन उसे फिर अपनी मम्मी के खराब स्वास्थ्य और इस बात का ध्यान आया कि किस प्रकार छोटी से छोटी चीज भी उन्हें परेशान और बीमार कर सकती है. उस ने उन की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करने का विचार छोड़ दिया.

स्कूल से लौटने पर वह स्वयं को थकी अनुभव कर रही थी. रात्रि के समय वह मकान की छत पर गई. ग्रीष्मकाल था और चारपाइयां खुले में बिछी थीं. वह उन में से एक पर बैठ गई. उस के दिमाग में कई विचार कौंधने लगे.

जब उस ने यह आवाज सुनी तो वह चकित रह गई, "आरती, तुम यहां अकेली क्या कर रही हो?"

वह निखिल था.

आरती ने कहा, "कुछ नहीं. मैं होम वर्क जांचने के लिए नीचे जाने वाली थी."

"अभी उसे रहने दो," निखिल ने मानो आदेश दिया, "मुझे कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण बातें करनी हैं." फिर उस ने पूछा, "आरती, तुम इसी प्रकार कब तक प्रतीक्षा करोगी?"

आरती चुप हो गई. उस ने स्वय से यह प्रश्न अनेक बार किया था. वह अभी तक उस का उत्तर नहीं जान पाई थी.

"हां," आरती ने उत्तर दिया, "वह आज मुझे मिला था और उस ने मुझ से

(शेष पृष्ठ 93 पर)

कहानी सुषमा मायुर

कौन अपना?

"मेजर असगर, पैट्रोल करने जो जीप गई थी, अभी तक वापस नहीं आई?" मेजर जनरल रंजीत ने, जो चौकी पर इंसपेक्शन करने आए थे, मेजर असगर से पूछा.

"सर, इसी कारण मैं जरा चिंतित हूं, क्योंकि कम से कम पंद्रह मिनट पहले जीप को वापस आ जाना चाहिए था."

"चलो फिर हम देखते हैं कि क्या कारण है."

"चलिए."

मेजर जनरल रंजीत ने चौकी पर अन्य अफसरों को कुछ आवश्यक निर्देश दिए और अपने साथ कुछ जवान लिए, और जिस ओर पहली जीप गई थी, उसी ओर अपनी जीप बढ़ा दी.

एक स्थान पर भारत और पाकिस्तान के बीच झाड़झंखाड़ का एक बड़ा सा मैदान था. दोनों सीमाओं पर अपनेअपने सिपाहियों का पहरा रहता था. इस समय इधर एक भी हिंदुस्तानी नहीं था. रंजीत और असगर ने समझ लिया कि उन की आशंका निर्मूल नहीं थी. यहीं से आ कर पाकिस्तानियों ने हिंदुस्तानी सिपाहियों पर हमला किया है और पैट्रोल करती जीप के सैनिकों को भी मार डाला है या बंदी बनाया है. वे सब दबे पांव जीप से कूद गए और बड़ी सतर्कता से इधरउधर घूम कर आहट लेने लगे. एक जीप झाड़ियों में धुसी हुई थी. असगर सोच ही रहा था कि उस के पास जा कर कुछ सुराग लेने का प्रयास करे, कि एक गोली सरसराती हुई उस के पास से निकल गई. चारों ओर घनघोर अंधेरा था. हलकेहलके तारे ही अपनी टिमटिमाहट से उन्हें प्रकाश देने का असफल प्रयत्न कर रहे थे. जिस ओर से गोली आई थी असगर ने अंदाज से उसी ओर अपनी गोली चला दी. रंजीत ने

टार्च की रोशनी डाल कर झाड़ियों में देखना चाहा, तभी एक गोली उन पर आ कर लगी और उस के साथ ही गोलियों की बाढ़ सी आ गई. ये लोग धरती से चिपक गए, और जिस ओर से गोलियां आ रही थीं, बंदूकों की नलियां उधर कर दीं. कुछ देर यह अंधी लड़ाई होती रही. तभी सातआठ पाकिस्तानी झाड़ियों से बाहर निकल आए. असगर ने उन सब को देखा और एक सैनिक को देख कर उस के मुंह से निकल पड़ा, "अकबर भाई!" अकबर ने भी उसी क्षण असगर की ओर देखा. एक पल के लिए दोनों के हाथ शिथिल हो गए, किंतु केवल एक पल के लिए. फिर दोनों ओर से गोलियां चल गईं.

भारतीय सैनिक अपनी रक्षा बड़ी बहादुरी से कर रहे थे, परंतु दुश्मन संख्या में बढ़ते जा रहे थे और जिस समय वे यह सोच रहे थे कि अब सब मारे जाएंगे, झाड़ियों से गिरतेपड़ते और हिंदुस्तानी निकल आए. पहले जिन हिंदुस्तानियों को पाकिस्तानियों ने घायल कर बांध कर झाड़ियों में डाल दिया था, किसी प्रकार एकदूसरे की सहायता कर, अपने बंधन खोल बाहर आ गए थे. अब मुकाबले की लड़ाई थी. असगर ने देखा कि अकबर रंजीत की ओर निशाना साध रहा है. इस से पहले कि रंजीत को गोली लगती, असगर ने बिजली की तेजी से अपनी गोली अकबर के सीने से पार कर दी. कुछ समय पश्चात ही गोलियों की आवाज सुन चौकी से और भारतीय आते हुए नजर आए. उन्हें देख बचे हुए पाकिस्तानी झाड़ियों में छिपने और भागने का प्रयत्न करने लगे. फिर भी अधिकतर मारे गए या घायल हो कर बंदी बना लिए गए. हिंदुस्तानियों की भी क्षति कम न हुई. हिंदुस्तानियों ने अपने मारे गए सैनिकों के शवों को उठा कर जीपों में डाल लिया और वापस चौकी की ओर चलने लगे. तभी असगर को न जाने

अकबर को अपनी ही गोली से मौत दे कर मेजर असगर सदमे से तड़प उठा, लेकिन अंजुम अपने वैधव्य का जिम्मेदार उसे क्यों नहीं ठहरा सकी?
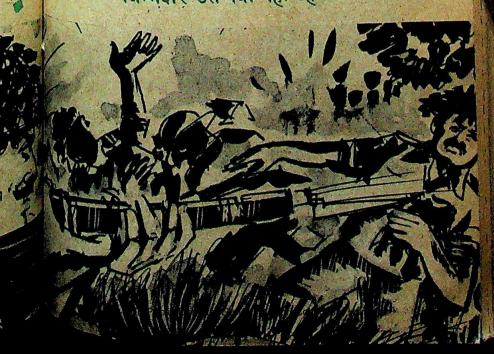
क्या सूझा, उस ने अकबर की लाश को भी जीप में डाल दिया. एक सिपाही बोला, "मेजर साहब, यह तो दुश्मन की लाश है." मेजर असगर ने कुछ उत्तर न दिया. मेजर जनरल रंजीत ने ध्यान से उस की ओर देखा, फिर ड्राइवर को शीघ्र जीप चलाने का आदेश दिया.

चौकी पर आ कर सब ने चैन की सांस ली. सब ही को कहीं न कहीं गोली लगी थी. सब मरहमपट्टी करवा खेमे में आराम करने आ गए. सुबह एंबुलैंसों द्वारा सब को निकट के अस्पताल में जाना था. चौकी के पहरेदार और सतर्कता से पहरा देने लगे.

मेजर जनरल रंजीत बंक में लेटे थे, परंतु वह सो नहीं पा रहे थे. इस कारण नहीं कि उन के कंधे में लगा गोली का घाव कष्ट दे रहा था, बल्कि कुछ स्मृतियां उन के मानस पटल को उद्वेलित कर रही थीं.

लड़ाई छिड़ने से कुछ महीने पहले की तो बात है. यही असगर, जिस ने आज उन की जान बचाने के लिए शायद अपने किसी प्रियजन को मृत्यु के घाट उतार दिया, उन के पास आया था. उस ने प्रार्थना की थी कि रंजीत उस की बहन को अपने भाई अजित के लिए अपना ले क्योंकि वे दोनों एकदूसरे से प्रेम करते थे. परंतु रंजीत ने केवल इस कारण उस के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था कि वह मुसलमान है और प्रतिक्रियास्वरूप तुरंत ही अपने भाई को अमरीका भेज दिया था. उड़ता हुआ समाचार उन तक पहुंचा था कि असगर की बहन ने अपना मानसिक संतुलन खो दिया है और असगर ने उस का इलाज कराने के लिए छुट्टियां ली हैं. लेकिन वह नहीं पसीजे. जिस धर्म और खानदान पर उन्हें गर्व था, वह इन छोटी-छोटी बातों के कारण खोया नहीं जा सकता. आज वह इसी बात को तरहतरह से सोच रहे थे, और किसी प्रकार भी मन को शांत नहीं कर पा रहे थे. वह बंक से उठे. दबे पांव खेमे से बाहर निकले और निरुद्देश्य ही एक ओर बढ़ गए. कुछ दूर ही बढ़े होंगे कि उन्हें एक मनुष्याकृति जमीन पर झुकी हुई दिखाई दी. आकृति असगर की थी. उस ने अकबर के शरीर को धरती में गड्ढा खोद कर उस में रख दिया था. अब वह गड्ढे को मिट्टी से भर रहा था. बिना बोले ही रंजीत ने भी अपने जख्मी हाथ से गड्ढे को भरना शुरू कर दिया. असगर ने उन की ओर देखा, उस की आंखों में दुख, क्षोभ और आहत होने के मिलेजुले भाव थे. बोला, "आप को कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, मैं पर्याप्त हूं यह कार्य करने के लिए."

"कोई निकट संबंधी था?" रंजीत ने उस की बात पर बिना ध्यान दिए पूछा.

"साला, दोस्त और फूफी का बेटा."

"फिर उसे तुम ने क्यों मारा? यदि वह मुझे गोली मार भी देता तो अच्छा ही था. तुम्हारी बहन की खुशियों का रास्ता खुल जाता."

असगर ने शिकायत भरी दृष्टि से रंजीत को देखा, बोला, "उस समय अकबर मेरी निगाह में एक पाकिस्तानी दुश्मन था, आप मेरे वतन, फौज के एक कुशल अफसर." मेजर जनरल रंजीत कुछ नहीं बोल पाए. कुछ देर दोनों अपने विचारों में खोए रहे. अब तक अकबर का शरीर बिलकुल दब चुका था और जमीन समतल हो गई थी. रंजीत ने असगर के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "चलो, खेमे में चलो." लंगड़ाता हुआ मेजर असगर एक आज्ञाकारी बालक की तरह रंजीत के सहारे खेमे की ओर बढ़ चला.

नजमा ने नमाज पढ़ ली थी और खुदा से अपने पति की सलामती की दुआ मांग रही थी. तभी दरवाजे पर घंटी बजी. नजमा की ननद किशवर ने जा कर दरवाजा खोला. गीता थी. वह नजमा को स्टेशन ले चलने के लिए आई थी. उन्हें स्टेशन पर जवानों को चाय बांटनी थी.

असगर ड्यूटी से लौटा तो नजमा ने चुपचाप उसे एक पत्र पकड़ा दिया और असगर व्यग्रता व उत्तेजना से पत्र पढ़ने लगा.

किशवर को देख गीता बोली, "आज तुम घर पर कैसे हो, कालिज नहीं गईं?"

"अनवर को कल बुखार हो गया था, इसलिए आज वह स्कूल नहीं गया. भाभी ने कहा कि आज मैं कालिज से छुट्टी ले कर आप के साथ चली जाऊं." दोनों बात करतीकरती अंदर आ गईं. आज नजमा कुछ अधिक ही उदास थी. गीता ने उस का उतरा चेहरा देखा तो बोली, "नजमा, तुम बहुत अधिक चिंता करती हो. मेरे पति भी सीमा पर हैं. पर सोच-सोच कर अपनी सेहत खराब करने से क्या लाभ हो सकता है. आखिर देश की रक्षा तो करनी ही है, और उस के लिए बलिदान भी देना ही पड़ेगा." इस से पहले कि नजमा कुछ उत्तर देती, छः वर्षीय अनवर हवाई जहाजों की आवाज सुन कर कमरे से भागता हुआ आया. उन की ओर संकेत कर बोला, "देखो, मम्मी, ये जहाज जा रहे हैं. ये पाकिस्तान पर दबादब बम गिराएंगे और सब पाकिस्तानियों को भून कर रख देंगे." और वह हर्षोल्लास से तालियां बजाने लगा. नजमा का चेहरा रक्तविहीन हो गया. भय से उस की आंखें विस्फारित हो गईं. एकाएक उस ने अनवर को कलेजे से चिपका लिया और कंपित स्वर में बोली, "ऐसा मत कह, मेरे बच्चे! कम से कम तू ऐसा मत बोल." गीता के मुंह पर इस वार्तालाप के मध्य कई भाव आए और गए. आखिर उस से न रहा गया, बोली, "बड़ी अजीब बात है, नजमा, एक ओर तुम यहां जवानों को चाय पिलाने जाती हो, तुम्हारे पति सीमा पर देश की सुरक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा रहे हैं, दूसरी ओर पाकिस्तान पर बम गिरेंगे, इस विचार मात्र से तुम आकुल हो उठीं."

नजमा की आंखों में व्यथा झलक उठी, बोली, "यह परिस्थितियों का अंतर है. जब तुम यह समाचार सुनती हो कि पाकिस्तानी सैनिक बड़ी संख्या में मारे जा रहे हैं, तो तुम्हारे मन में केवल एक भावना उत्पन्न होती है, अपनी विजय की, और तुम प्रसन्न हो उठती हो. पर जब मैं यह समाचार सुनती हूं तो प्रसन्नता के पीछेपीछे एक डर की भावना दानव

का तरह मेरे हृदय को आ दबोचती है. मैं सोचती हूं, उन्हीं सैनिकों में मेरे भाई, बहनोई भी हो सकते हैं. जब अपने हवाई जहाजों द्वारा पाकिस्तानी नगरों में बम गिराने के समाचार सुनती हूं तो मेरा हृदय अपनी मांबहनों की हिफाजत के लिए दुआएं मांगने लगता है."

"तब क्या तुम्हें प्रसन्नता न होगी, जब पाकिस्तान हारेगा?"

नजमा तड़प उठी, जैसे गीता ने शारीरिक प्रहार किया हो. आहत अभिमान से उस का मुंह लाल हो गया. बोली, "कैसी बातें करती हो, गीता? मेरे पति सीमा पर अपनी जान से खेल रहे हैं. अगर इस देश की विजय मैं नहीं चाहूंगी तो कौन चाहेगा. मेरे घर का प्रत्येक सदस्य इस समय देश को किसी न किसी रूप में सहायता दे रहा है. मुझे अपने देश पर गर्व है और उस के लिए मैं कोई भी कुर्बानी देने से नहीं झिझकूंगी. लेकिन जिन का खून मेरी रगों में दौड़ रहा है, उन्हें न मैं भूल सकती हूं और न उन का बुरा चाह सकती हूं." गीता को भी अपने कहे शब्दों पर पश्चात्ताप हुआ और वह चुप हो गई. तभी किशवर ने आ कर शीघ्र चलने को कहा. अभी वे दोनों दरवाजा खोल कर बाहर निकली ही थीं कि डाकिया एक तार ले कर आया. तार देखते ही किशवर का चेहरा सफेद पड़ गया. वह जहां की तहां खड़ी रह गई. कांपते हाथों से गीता ने तार खोला. पढ़ कर एक चैन की सांस उस के मुंह से निकल गई. जितने बुरे समाचार की उसे आशंका थी, उतना बुरा नहीं था. लिखा था : असगर लड़ाई में घायल हो गया है, अत: उसे कुछ दिन सैनिक अस्पताल में रखा जाएगा. उस के उपरांत वह एक महीने की छुट्टी के साथ घर आ जाएगा. खबर सुन कुछ देर नजमा सुन्न सी बैठी रह गई. किशवर और गीता ने उसे तरह-तरह से आश्वासन दिए तब जा कर वह कुछ स्वस्थ हुई.

असगर के घर आ जाने पर सब ने पाया कि शारीरिक घावों से अधिक उसे मानसिक घाव पीड़ा दे रहे हैं. नजमा को जब उस ने अपने द्वारा अकबर के मारे जाने का समाचार सुनाया तो उस के अबाध गति से आंसू बह रहे थे. वह सोच रहा था कि नजमा को बता कर शायद उस का हृदय कुछ हलका हो जाए, परंतु वह न हुआ. जब भी नजमा उस के सामने आती, उस की ओर उस की आंखें न उठतीं. एक अपराध और ग्लानि की भावना से उस का दिल भर जाता. नजमा यद्यपि अपने भाई के शोक में इधरउधर रो आती, परंतु वह बारबार असगर को समझाने का प्रयत्न करती कि उस ने जो कुछ किया, वही उस के लिए उचित था. फिर अकबर किसी और के द्वारा भी तो मारा जा सकता था.

लड़ाई समाप्त हो चुकी थी. देश में विजय की खुशियां मनाई जा रही थीं. जगहजगह सैनिकों का अभिनंदन करने के लिए जलसे हो रहे थे. असगर जब कभी ऐसे जलसों में जाता तो वह पूरी तरह उन खुशियों में डूब न पाता. जाने कहां से सब हर्षोल्लास के मध्य से एक कसक आ कर हृदय को बेध जाती. जब जनता सैनिकों का अभिनंदन करते हुए हर्षातिरेक से तालियां पीट रही होती तो पता नहीं कैसे और कब यह करतल ध्वनि असगर के कानों में उस की फूफी का रुदन बन उस का हृदय मथ डालती. उस की आंखों के सामने अकबर की पत्नी का बिखरे बालों से घिरा वैधव्य-ग्रस्त उजड़ा रूप आ जाता. उस के लिए अब इस तरह कहीं जाना असहनीय हो गया था. वह घर पर ही पड़ा रहता. ऐसे ही एक जलसे के दिन वह उदास और गुमसुम अपने घर में बैठा था. नजमा उसे समझा रही थी कि उस को जाना चाहिए. अपने लिए नहीं तो दूसरों के लिए ही. फिर जाने से उस का कुछ ध्यान भी दूसरी तरफ होगा. तभी अनवर ने उसे रंजीत का विजिटिंग कार्ड ला कर दिया. ऐसी मानसिक स्थिति में वह बिलकुल ही

गया. उस की इच्छा हुई कि वह कहला दे कि वह घर पर नहीं है, पर वह केवल इच्छा मात्र ही थी. ड्राइंग में आ कर मेजर जनरल रंजीत सोफे पर ऐसी मुद्रा में बैठ गए जैसे उन का शीघ्र जाने का कोई इरादा नहीं है. कुछ देर असगर उन के आने का कारण जानने के ख्याल में इधरउधर की बातें करता रहा. जब उसे कोई संकेत न मिला तो वह चुप हो गया. रंजीत ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और असगर की ओर बढ़ा कर पूछा कि क्या वह पिएगा. उस के नकारात्मक सिर हिलाने पर उन्होंने बड़े इत्मीनान से सिगरेट सुलगाते हुए कहा, "अजित को मैं ने पत्र लिखा था. उस के उत्तर में उस का 'केबल' आया है. अगले सप्ताह हिंदुस्तान पहुंच रहा है.'' असगर को इस समाचार का तात्पर्य नहीं समझ आया इसलिए वह चुप ही रहा. लाईटर बुझा कर उस को जेब में रखते हुए मेजर जनरल रंजीत फिर बोले, "तुम अपनी बहन का विवाह शीघ्र से शीघ्र कब कर सकते हो?" असगर को लगा कि अब कुछ उन का आशय समझ गया है. क्रोध से उस का मुंह तमतमा गया. क्रुद्ध स्वर में बोला, "जनरल साहब, आप मेरे घर में मेरा अपमान करने आए हैं? मुझ में स्वाभिमान की इतनी कमी नहीं है कि मैं दोबारा आप के भाई के लिए आप से प्रार्थना करूंगा. न मेरी बहन इतनी गई-गुजरी है कि जैसे ही उसे मालूम होगा कि अजित आ रहा है, वह उस के पीछे दौड़ जाएगी. इसलिए मेरी बहन का विवाह हो या न हो, आप निःशंक रहें. हमारी ओर से आप को कोई खतरा नहीं है. पर कृपया अजित को भी समझा दीजिए कि वह किशवर के कालिज के चक्कर न काटे, अन्यथा उस के अपमान का उत्तरदायित्व मेरे ऊपर न होगा."

मेजर का आवेश देख मेजर जनरल के मुख पर मुसकराहट खेल गई. बोले, "असगर. पहले यह तो पूछा होता कि मैं तुम्हें यह बताने स्वयं क्यों आया हूं. अजित को तुम से बचाना होता तो मैं तुम से

उस के आने का समाचार छिपाता."

"फिर आप अपने घरेलू मामले मुझे क्यों बतला रहे हैं, और उन से किशवर की शादी का क्या संबंध है?" अभी भी असगर के स्वर में उलझन और आक्रोश की पुट थी.

रंजीत ने सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए कहा, "मैं चाहता हूं कि मेरे घरेलू मामले तुम्हारे भी घरेलू मामले बन जाएं.

मैं किशवर की आजत के लिए तुम से मांगने आया हूं.''

''क्यों, क्या आप अब हिंदू नहीं रहे? मैं ने तो अपना मजहब छोड़ा नहीं है. और यदि आप अपनी जान की कीमत मुझे इस रूप में देना चाहते हैं, तो क्षमा करिए. मैं आप को बताना चाहता हूं कि मैं ने केवल एक स्वदेशवासी को पाकिस्तानी दुश्मन से बचाया था. आप को बचाते समय मेरे हृदय में न कोई निजी स्वार्थ था और न ही आप के लिए मेरे हृदय में मुहब्बत जोर मार रही थी. इसलिए आप के हृदय में अगर मेरे प्रति कोई कृतज्ञता के भाव हों तो निकाल दीजिए. और इसलिए भी नहीं डरिए कि मैं इस बात का कभी आप के सामने जिक्र करूंगा या उस का अहसान जताऊंगा. क्योंकि चाहे मेरे मन में अपने किए का कोई पश्चात्ताप नहीं है, पर इतना प्रसन्न भी नहीं हूं कि बारबार उस घटना को याद करूं.'' मेजर जनरल रंजीत व्यथित हो उठे. कातर स्वर में बोले, ''असगर, क्या तुम मुझे इतना गिरा हुआ समझते हो कि मैं अपनी जान की कीमत देने की धृष्टता करूंगा? युद्धभूमि ने मुझे यह सिखा दिया है कि सब से पहले मैं एक हिंदुस्तानी हूं. जब हम युद्धस्थल में अपना धर्म, ईमान और प्रांतीयता भूल सकते हैं तो क्या कारण है कि लौट कर हम उसे याद ही रखें? वास्तव में गर्व हमें अपने चरित्र पर करना चाहिए. और अपनी बहू में मैं सब से अधिक इसी गुण की कामना करता हूं. जिस का भाई तुम जैसा हो, उस लड़की के चरित्रबल में मुझे तनिक भी संशय नहीं है.''

असगर ड्यूटी से लौटा तो नजमा ने उसे एक पत्र पकड़ा दिया. असगर ने देखा, लिफाफा पाकिस्तान से आया था. नजमा बोली, ''मैं जानती हूं कि अकबर भाई की मृत्यु आप के हृदय में एक नासूर बन गई है. आप उन को मारने के दोष से अपने को किसी तरह मुक्त नहीं कर पा रहे हैं. मुझ से आप की यह हालत नहीं देखी जाती. इसी लिए ही भारत व पाक में डाकतार व्यवस्था का पुनः संचार हुआ, मैं ने अंजुम भाभी को पत्र लिखा. यह उसी का जवाब है.''

पत्र में लिखा था :

''प्यारी बहन नजमा,

तुम्हारा खत मिला. इतने दिनों बाद तुम लोगों की कुछ खैरखबर मिली.

यह सच है कि अकबर साहब की याद मेरे साथ कबर तक जाएगी. हालांकि सरकार ने मुझे अच्छा मुआवजा दिया है लेकिन वह खाविंद की कमी कैसे पूरी कर सकता है? मेरे बच्चे तो बाप के प्यार से महरूम हो ही गए. पर दो मुल्कों की लड़ाई में वहां के लोगों को इतनी कुर्बानी तो देनी ही पड़ती है. दुनिया की कुछ ताकतें अपनी ताकत बढ़ाने के लिए हमें ताकतवर नहीं होने देतीं...

पर यह जान कर कि असगर भाई अकबर साहब की मौत के लिए अपने को गुनाहगार समझ रहे हैं, ताज्जुब हुआ और फिक्र भी.

हिंदुओं के देश में तुम रह रहे हो, गीता में क्या लिखा है, क्या मुझे बताना होगा? असगर भाई ने सिवा अपना फर्ज पूरा करने के कुछ नहीं किया. अकबर साहब भी अपने वतन के लिए अपनी बहन के सुहाग से खेल जाने में नहीं चूकते. अपने देश की हिफाजत के लिए कोई भी कुर्बानी बड़ी नहीं है. जंग के मैदान में मादरे वतन का बेटा ही हमारा अपना है, हमारा सगा भाई है. मेरी यही दुआ है कि इस खत को पढ़ कर असगर मियां को तसकीन हो जाए. मैं उन की बड़ी शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने मेरे शौहर को इज्जत से दफना दिया. अगर कभी दोनों मुल्कों में आनेजाने की सहूलियत हुई तो कबर पर फूल चढ़ाने आऊंगी.

तुम्हारी भाभी,
अंजुम.''

पत्र पढ़ कर असगर कुछ बोल नहीं सका. अंदर की घुटन आंसुओं के रूप में आंखों से बाहर बह निकली.

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी-झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● एक दिन खाली पीरियड में हम अपने क्लास रूम में बैठे थे. कमरे के एक कोने में कुछ लड़कियां भी बातें कर रही थीं. अचानक एक लड़के को शरारत सूझी और वह जोर से चिल्ला कर बोला, "खुदा करे, इन हसीनों के बाप मर जाएं, मरने का बहाना हो और हम उन के घर जाएं."

इतने में एक लड़की ने खट से जवाब दिया, "खुदा करें इन मजनुओं के बाप मर जाएं, मरने का बहाना हो और इन के सिर मुंड़ जाएं."

क्लास में हंसी का फव्वारा छूट पड़ा और उस लड़के की हालत देखते ही बनती थी.

—डाक्टर नंद आनंद, जयपुर

● एक बार मैं अपने एक मित्र के साथ फिल्म देख रहा था. हमारे साथ वाली दो सीटों पर दो जवान लड़कियां बैठी थीं तथा उन दोनों के आगे वाली सीट पर दो लड़के बैठे थे. वे लड़के बारबार मुड़ कर उन लड़कियों को देख रहे थे.

उन की इस हरकत को एक लड़की सह नहीं सकी. उस ने उन लड़कों को जोर से कहा, "तुम ने पैसे फिल्म देखने के लिए खर्च किए हैं. पहले पिक्चर देख लो. इंटरवल में हम दोनों को अच्छी तरह से देख लेना. इस से तुम्हारे पैसे खराब नहीं होंगे."

इंटरवल के बाद लड़के कहीं भी दिखाई न दिए.

—अजय किनरा, फरीदाबाद

● मेरा एक दोस्त बड़ा मनचला है. एक दिन हम दोनों कालिज जा रहे थे कि सामने से एक बहुत खूबसूरत लड़की आती दिखाई दी. मेरा मित्र शरारत करने से बाज नहीं आया. जब वह उस के पास से गुजरी तो वह बोला, "अमरीका वाले चांद पर पहुंचने के लिए लाखोंकरोड़ों रुपया खर्च कर रहे हैं, और यहां देखो तो चांद धरती पर घूम रहा है."

इतना सुनना था कि लड़की मुड़ कर वापस आई और बोली, "आप दोनों में से नील आमंस्ट्रांग कौन है?"

यह सुन कर मेरा मित्र सकते में आ गया और फिर सिर झुकाए चुपचाप एक ओर खिसक गया. उस दिन के बाद उस ने शरारतें करनी छोड़ दीं.

—वरुण सक्सेना, ग्वालियर

● प्रयाग में पुलिस ने सात ऐसी लड़कियों को गिरफ्तार किया है, जो सामूहिक रूप से लड़कों से छेड़खानी कर रही थीं. पुलिस ने इन सातों लड़कियों को हवालात में बंद कर दिया.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : हेमेंद्रकुमार राय, चांदामेटा) ●

आम्ना के पैरों तले की जमीन खिसक गई—"क्या कह रही हो, बानो?"

"मैं सही कह रही हूं, खालाजान, बरात वाकई आ गई है."

"हाय अल्लाह! अब क्या होगा? एक रोज पहले ही बरात क्यों आ पहुंची?" और यह कहती हुई आम्ना पागलों की तरह भीतर भागी. मगर वहां कोई नहीं था. अब वह पलट कर जीनत के पास आई, "बेटी," और आगे वह कुछ न बोल सकी.

क्योंकि बाहर दालान में अड़ोसपड़ोस की औरतें एकत्र होने लगी थीं. "अरे, 'अम्मा बी,' 'आम्ना चाची,' 'आम्ना खाला,' यह सब कैसे हो गया? बेटी की बरात एक रोज पहले ही क्यों चली आई? आज तो मेहंदी है!" कई आवाजें आम्ना के कानों से टकराने लगीं और उसे पसीना आ रहा था. वह सिर थाम कर खटिया पर धम्म से बैठ गई.

औरतों ने आव देखा न ताव, वहीं जम कर बैठ गईं और गीत गाने लगीं, "दूल्हा आया दुलहन के दर आज...दूल्हा आया..."

"अरे यह सब क्या है? जरा ठहरो भी!" आम्ना चीख उठी.

तभी उस की बेटी जीनत हड़बड़ाती, हांफती आई, "अम्मां, बात क्या है?

"अरे, बात क्या होगी, मुई, तेरी बरात आ गई."

जीनत अवाक रह गई. वह भी नहीं समझ सकी कि एक रोज पहले ही निकाह कैसे होगा. बोली, "मगर एक रोज पहले ही क्यों?"

"यही तो मैं पूछ रही हूं. घर पर कोई बंदोबस्त नहीं है. तेरे चचा तो सामान लेने शहर गए हुए हैं. अब क्या होगा? या मेरे मौला, तू ही इज्जत रखने वाला है," और आम्ना ने फिर से सिर थाम लिया.

उधर गांव के चौक में बैलगाड़ियां और कुछ ऊंट खड़े थे. कुछ बराती छकड़ों में थे और दूल्हा एक मरियल घोड़ी पर बैठा सेहरे में मुसकरा रहा था. उस के पैर जमीन को छू रहे थे और इस प्रकार चार पैरों वाली सजीधजी घोड़ी छः पैरों वाली घोड़ी लग रही थी. धरती पर जाजम बिछी और एक लड़का नाचने लगा. गांव की छोकरियां और मैले कपड़ों में

लिपटे नंगधड़ंग छोकरे वहां मक्खियों की तरह भिनभिनाने लगे. घरों की कच्ची दीवारों और कांटों की बाड़ की आड़ से देहाती युवतियां उस मजमे को घूंघट की ओट देखदेख कर गुदगुदाने लगी थीं. सामने पनघट को बह रहा रास्ता जैसे भीड़ से रुक गया था. पानी के मटके लिए हिंदू पनिहारिनें कूल्हे मटका कर नाचते उस लड़के को देख कर मन ही मन हंस रही थीं.

जीनत अपनी बेवा मां की इकलौती संतान थी. जब वह छोटी थी तभी उस का बाप मर गया था. घर में कोई और सहारा नहीं था. मजबूरी में आम्ना ने लोगों के बरतन धोए, आटा पीसा और किसी तरह बेटी को मिडिल तक पढ़ाया. इस वर्ष जीनत मैट्रिक का प्राइवेट इम्तिहान देने वाली थी. तभी एक रिश्ता आ गया और बेबसी में आम्ना को उसे कबूल करना पड़ा. लड़का उमर में काफी बड़ा था, मगर घरघराना उस का ठीक था. वे शरीफ लोग थे और इसलिए आम्ना ने यह रिश्ता मंजूर कर लिया था.

पिछले दिनों लड़के के वालिद रजाक मियां अजमेर से गरीब नवाज के उर्स की जियारत कर के लौटते वक्त उस के यहां

एक ही चांद पर आधारित दो मान्यताओं ने जीनत के लिए आई बरात में विवाद खड़ा कर दिया. लेकिन मामला कैसे सुलझा?

कहानी

•

नायत बानो कायमखानी

रुके थे और बातोंबातों में शादी की तारीख पक्की कर गए थे. आम्ना मना नहीं कर सकी थी, क्योंकि उसे डर था कि कहीं यह रिश्ता हाथ से न निकल जाए. खैर, शादी चांद की पांच तारीख की मुकर्रर हो गई.

इस मामले में आम्ना ने बेटी से कोई राय नहीं ली. मुसलमानों में वैसे ही लड़की की राय कोई माने नहीं रखती. फिर यह तो ऊपर से देहात ठहरा. देहातों में ऐसे कार्य भले नहीं कहे जाते. हां, जीनत ने जरूर दबे स्वर में गुस्ताखी कर ली, "अम्मां, अभी क्या जल्दी है? मुझे मैट्रिक तो कर लेने देती. फिर मैं कोई नौकरी कर लेती तो यह सब आसान हो जाता."

"सब ठीक होगा, बेटी. मेरे पास कुछ चांदी के जेवर हैं, उन्हें बेच कर सामान जुटा लेंगे."

अब जब शादी की तारीख करीब आने लगी तो आम्ना जीनत के चचा गबरू मियां के घर गई. चांदी और चंद रुपए देखे तो गबरू ने लावारिस लड़की का वारिस बन कर निकाह संपन्न कराने की हामी भर ली थी. आम्ना ने उस के साथ बैठ कर सब तय कर लिया और लौट आई.

और आज गबरू मियां शादी नजदीक आ जाने के कारण सामान खरीदने शहर गए हुए थे. उन्हें गए चार दिन हो चुके थे और आज वापस लौट आने की कोई गुंजाइश इस वास्ते नहीं थी क्योंकि यहां आठआठ मील के इलाके में कोई बस नहीं मिलती है. ऐसे में बरात का आ जाना आम्ना के लिए झुंझलाहट का कारण बन गया. वह खीज उठी.

उसे अच्छी तरह से याद है, शादी पांच तारीख ही की तय की गई थी. फिर आज चार को ही समधी बरात ले कर भला क्यों टपक पड़ा? दूसरों की इज्जत से खेलना क्या शोभनीय है? यह माजरा क्या है? आम्ना व उस के पड़ोसियों की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था. आखिर परेशान हो कर लड़की की बेवा मां ने बिरादरी के मुखिया के आगे अपनी समस्या रखी तो कुछ आदमी चौक में रजाक मियां के पास गए.

उधर रजाक मियां भी रहरह कर आपे से बाहर हो रहे थे. उन्हें बरात ले कर यहां आए कोई चार घंटे हो चुके थे, मगर लड़की वालों की तरफ से कोई अगवानी व मेजबानी के लिए नहीं आया था. उन्हें यह भी नहीं बताया गया कि बरात को फलां जगह ठहरा दो. न चिलम, न हुक्का और न चायपानी. वह छेड़े गए सांप की भांति इधरउधर पैर पटकते घूम रहे थे.

फिर जब आम्ना के आदमी उन के सामने आए तो वह गुस्से से बोले, "यह क्या बदतमीजी है? कहां है वह साला गबरू? बड़े गाल बजाता था. और कहां है वह समधिन आम्ना? उस ने क्या मजाक समझ रखा है? मैं बरात वापस ले जाऊंगा."

"मगर, साहब, गलती आप की है. एक रोज पहले आप बरात ले कर पधारे ही क्यों?"

"क्या कहा? एक रोज पहले? अरे जाहिलो, तुम्हें हो क्या गया है? इस देहात में जितने भी हो, सभी का एक ही दिमाग है क्या? शादी पांच तारीख की तय हुई थी और आज पांच तारीख है, इसलिए हम बरात ले आए. क्या मैं झूठ बोल रहा हूं? कहां है वह गबरू का बच्चा?"

"मगर, साहब, आज तो चांद की चार तारीख ही है. आप एक रोज पहले तशरीफ ले आए हैं," गांव का एक युवक बोला.

"वाह, किस ने कहा तुम से? मैं कहता हूं, आज पांच तारीख है."

"यह गलत है, चाहे तो पूरे गांव से पूछ लो," एक वृद्ध बोला.

"यह चार झोपड़ों की बस्ती भर है? न यहां मुल्ला, न यहां मसजिद."

"फिर ज्यादा बड़ा तो आप का गांव भी नहीं."

"मगर वहां ऐसे जाहिल नहीं रहते. अनपढ़ और गंवार कहते हैं कि आज चार तारीख है," रजाक मियां ने मुंह बनाया.

"आप हमारे मेहमान हैं, कुछ भी कहिए, मगर तारीख तो चार ही है. चाहें तो मेरे घर कलेंडर पड़ा है, चल कर देख लें," युवक फिर बोल पड़ा.

"वह काफिरों का कलेंडर है. क्या उस में अरबी, उर्दू है?" रजाक मियां चीख उठे तो युवक चुप हो गया. शायद अरबी, उर्दू उस के दिमाग में नहीं थी.

"यह आप की ज्यादती है," गांव वालों ने निःश्वास छोड़ा.

"क्या बकते हो!" रजाक मियां चिढ़ गए. तभी निकाह पढ़ाने वाले काजी भी बीच में आ गए. वह रजाक के बेटे की बरात में साथ ही आए थे, क्योंकि गबरू ने कह दिया था कि उस के गांव में काजी का इंतजाम नहीं हो सकेगा.

काजीजी बात की जड़ में जा पहुंचे. पूरा माजरा वह समझ चुके थे. वधू पक्ष आज अपने हिसाब से 'मेहंदी की रात' मान रहा था, जब कि वर पक्ष वाले आज की रात को 'निकाह रात' मान कर चले आए थे. दरअसल अपने-अपने हिसाब से दोनों पक्ष ही सही थे.

काजीजी ने बीचबचाव करते हुए समझाया, "देखिए, आप हजरात झगड़ें नहीं. आप दोनों के दावे सही हैं और भूल का कारण यह है कि वर पक्ष ने चांद उनतीसा माना है जब कि वधू पक्ष ने तीसवां माना है, और इसी लिए आज चांद की चार तारीख भी है और पांच तारीख भी है."

"आ, आं..." बात रजाक मियां की समझ में आ गई थी. वह तुरंत संभल गए.

पूरे देश में एक साथ चांद दिखे यह जरूरी नहीं और इस संदर्भ में एक ही शहर में उन्होंने ईद की दोदो नमाजें होती देखी हैं. कहीं ईद आज तो कहीं कल. वह बोले, "खैर, हम माफी चाहते हैं और आज गांव से बाहर पड़ाव डाल लेते हैं. दरअसल हमें चांद पर अब निर्भर नहीं रहना चाहिए. अन्य तारीखों व वार का भी ध्यान रखना चाहिए."

"आप की समझ में आ गया तो हम भी नासमझ नहीं. ठहरो, अभी इंतजाम हो जाता है."

और रजाक मियां ने देखा, औरतें फिर से गीत गाने लगी थीं. ●

रंग उन की जवानी का...

दिल लाख पाकसाफ है दामन को क्या करूं,
जाजा के मैकदे में यह धब्बा लगा दिया.
भरे सागर में है भरपूर रंग उन की जवानी का,
गजब है बे पिए नशे में मेरा चूर हो जाना.
—रियाज खैराबादी

✦

न वह आरामेजां आया, न मौत आई शबेवादा,
इसी धुन में हजारों बार हम उठउठ के बैठे हैं.
—दिल शाहजहांपुरी

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता सुश्री वर्षा हिरदे, इंदौर, हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● **एक कहानी : एक हकीकत**

पिछले दिनों रंगून की एक अदालत में एक मुकदमा पेश हुआ, जिस में दो व्यक्तियों के बीच एक बिल्ली के स्वामित्व का विवाद था. रंगून की एक उपनगरीय अदालत के तीन जजों की पीठ ने निर्णय दिया कि बिल्ली को झोले में बंद कर के अदालत में उस झोले को खोल दिया जाए. झोले से आजाद होते ही बिल्ली अपने असली मालिक के पास चली जाएगी.

ऐसा ही किया गया. बिल्ली घबरा गई और अदालत से ही भाग गई. इस से अदालत में उपस्थित लोग जोरजोर से हंस पड़े. घटना का ब्योरा अखबारों में छपा तो उस इलाके (वार्ड) का वकील नाराज हो गया. उस ने वार्ड परिषद में शिकायत की कि यह मामला छपना नहीं चाहिए था क्योंकि इस से जजों की बदनामी होती है.

इस शिकायत पर अखबारों में अग्रलेख छपे. सरकार के एक अंगरेजी दैनिक ने तीखी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए लिखा कि 'क्या इस का अर्थ यह होता है कि जजों या सरकारी सेवकों को रुचिकर लगने वाली बातें ही अखबारों में छपनी चाहिए? अगर गैरजिम्मेदाराना और गलत काम न हों तो ऐसे समाचार छपें ही नहीं.'

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : ओमप्रकाश गोयल, सारंगपुर)

● **नाम महात्म्य**

लंदन के अखबार 'गार्जियन' में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार वाशिंगटन में ब्रिटिश दूतावास के सूचना कौंसलर का अमहत्त्वपूर्ण छोटे पद पर इसलिए स्थानांतरण कर दिया गया क्योंकि उस का नाम बहुत ही भद्दा था. 51 वर्षीय इस ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ का नाम एचिलेस पपाडोपोलस है. अमरीकी प्रेस को यह बहुत ही अटपटा लग रहा था कि कोई ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ यूनानी नाम रखे. वह ऐसा व्यक्ति चाहते थे जिस के नाम से वास्तविक ब्रिटिश ध्वनि निकले.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषिका : वर्षा हिरदे, इंदौर)

● **अंतिम इच्छा**

त्रिवेंद्रम जेल में फांसी पर लटकाए जाने से पूर्व 49 वर्षीय श्री धरन ने इच्छा व्यक्त की कि उस के नेत्र नेत्रबैंक और शरीर त्रिवेंद्रम मेडिकल कालिज को दिया जाए. उस की इच्छा पूरी कर दी गई. उसे एक हत्या के आरोप में यह सजा मिली थी.

—वीर अर्जुन, नई दिल्ली (प्रेषक : अशोककुमार पंसारी, सीकर)

● **58 वर्ष बाद**

सदरलैंड (इंगलैंड) में प्रथम विश्वयुद्ध के वीर सेनानी बिली विल्सन को 58 वर्ष बाद यह पता चला कि उस के सीने में बंदूक की एक गोली धंसी हुई है. विल्सन अब 76 वर्ष के हैं और वे 1916 में घायल हुए थे. एक्सरे जांच में डाक्टरों को इस रहस्य का पता चला.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : सतेन्द्र गुप्ता, बड़वाह)

लेख • रामकिशोर दीक्षित

ग्रामीण युवक और शहरी शिक्षा

गांव के स्कूल में पढ़ाई के दौरान ग्रामीण युवक कल्पनाओं की ऊंची उड़ान भरता रहता है, लेकिन शहर के कालिज में पहुंचते ही वह समस्याओं में क्यों उलझ जाता है?

एक ग्रामीण युवक अपने गांव में अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा पूरी करता है और उस के मन में कालिज जाने की इच्छा उठती है. वह चाहता है कि वह अधिक पढ़लिख कर एक सुशिक्षित व उच्च नागरिक बने. वह सोचता है कि जब वह बी. ए. या एम. ए. कर लेगा तो वह वैसा ही बन जाएगा जैसे उस के स्कूल के आचार्य अथवा वरिष्ठ अध्यापक हैं. परंतु ज्यों ही वह शहरी भूमि पर कदम रखता है, उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

पहली समस्या उस के सामने तब उपस्थित होती है जब वह अपनी धुन में मस्त और ऊंचे विचारों में खोया होता है कि उसे अचानक आवाज आती है, "ऐ, छोकरे, इधर आना." उस की कल्पना का जाल टुकड़ेटुकड़े हो जाता है. तभी प्रश्नों की बौछार शुरू होती है. शायद उस समय कालिज के पुराने छात्र सोचते हैं कि यह दशानन है जो अपने दसों मुंहों से इस का जवाब देगा अथवा उस का मजाक उड़ाने के लिए यह सब किया जाता होगा. वह अनजान पंछी की तरह किसी तरह वहां प्रवेश लेने में सफल हो जाता है. अब उस के सम्मुख प्रमुख रूप से दो समस्याएं आती हैं :

1. कालिज के अपरिचित चेहरों से जानकारी हासिल करना व उन्हें परखना, तथा
2. कमरे की समस्या अर्थात निवास-स्थान की समस्या.

दूसरी समस्या बहुत बुरी तथा भयंकर समस्या है, क्योंकि घर में तो उसे इस की कुछ भी व्यवस्था नहीं करनी पड़ती थी. शहर में आते ही उसे किराए का कमरा मिलता है और फिर उस के आसपास का वातावरण—संयोगवश अच्छा, नहीं तो खराब. जहां गांवों में विशुद्ध प्रेम की भावना होती है, वहां शहरों में स्वार्थ ही स्वार्थ होता है. बिना स्वार्थ के वहां कोई किसी से बात करना तक पसंद नहीं करता. यह देख कर ग्रामीण युवक बौखला उठता है. जहां गांवों में उसे खुली हवा मिलती है, वहां शहर में आ कर वह एक पिंजरे का शेर बन जाता है.

अगली समस्या, जो ग्रामीण युवक के सामने आती है, वह है कालिज का वातावरण. वह विचित्र सी लंबीचौड़ी बिल्डिंग

देख कर चौंक उठता है. पढ़ाने वालों का ढंग उसे रास नहीं आता. वह कोसता है अपनेआप को कि उस ने कालिज में प्रवेश क्यों लिया. अब वह एक ऐसी मछली की स्थिति में रहता है, जो पानी में डाले गए कांटे में फंस जाती है और उस का निकलना असंभव है. अपने कमरे में आने पर भी वह कुछ अजीब सा अनुभव करता है. फिर शोरशराबा, कोलाहल आदि के पनाह क्षेत्र भी तो शहर ही हैं. जैसी दशा एक व्यक्ति को जंगल में अकेला छोड़ देने पर होती है, वही मनोदशा ग्रामीण युवक की शहर में होती है.

शिक्षा

जिन्होंने मानव पर शासन करने की कला का अध्ययन किया है, उन्हें यह विश्वास हो गया है कि युवकों की शिक्षा पर ही राज्यों का भाग्य आधारित है.

—अरस्तू

अगली समस्या आती है उस के रहने की. यह भी एक बहुत बड़ी समस्या है. उस ने कमरा तो ले लिया मगर वह उस में रहे कैसे. ज्यों ही वह इस में रहना शुरू करता है, उसे अनेक वस्तुओं का ढेर अपने साथ लाना पड़ता है, जैसे कोई युवक किसी युवती के साथ घर बसाने के लिए जा रहा हो. इस के बाद उसे भोजन की व्यवस्था करनी पड़ती है. कहने का तात्पर्य यह कि उसे सब वस्तुओं की व्यवस्था करनी पड़ती है और इसी दौड़-धूप में पढ़ाई कोसों पीछे रह जाती है.

किसी ने कहा है कि शादी के बाद तीन चीजें याद रह जाती हैं : नमक, तेल व लकड़ी. मगर इस ग्रामीण युवक को तो इन का भाव पहले ही मालूम पड़ जाता है.

अब एक अन्य मुसीबत, जो ग्रामीण युवक के ऊपर आती है, वह है मनोरंजन का अभाव. शहर में आने के बाद उसे खेत, तालाब, खुले मैदान आदि नहीं मिलते. इस से उस का मनोरंजन नहीं हो पाता. इसी को पूरा करने हेतु वह दूसरे तरीके अपनाता है. शहरों में सिनेमाघर होते हैं और ग्रामीण युवक को इस का चसका बहुत जल्दी लग जाता है, या फिर वह मित्रों के साथ घूमनेटहलने, बीड़ीसिगरेट पीने में ही अपना कीमती समय नष्ट कर देता है.

अंतिम मुसीबत ग्रामीण युवक के सामने सेक्स की आती है. एक भोलाभाला युवक शहर में आ कर वहां की रंगरेलियों में फंस जाता है. जहां गांवों में प्रत्येक युवती को बहन समझा जाता है, वहां शहर की युवतियां उस गदराए शरीर वाले बलिष्ठ युवक को भाई नहीं समझतीं, वरन उन का दृष्टिकोण और ही होता है. यह सब देख कर युवक गाने लगता है 'एक बेचारा' का वह गीत, जो शहर में आने के बाद ही उस ने सुना था, "... रामा हो रामा..."

ग्रामीण युवक की ऐसी दशा सुधारने का प्रयास सरकार को करना चाहिए. इस के लिए कुछ उपाय हैं :

1. गांवों में कालिजों का निर्माण किया जाए, जिस से लड़के गांवों में रह कर अपना चरित्र बनाने व मानसिक विकास करने में समर्थ हों.

2. गांवों में सहशिक्षा न रखी जाए, वरन लड़केलड़कियों के अलगअलग महाविद्यालय हों.

3. कालिजों में भेजने के बजाए ग्रामीण युवकों को रोजगार केंद्रों में भेजा जाए अथवा गांव में ही कोई रोजगार खोला जाए.

4. ग्रामीण युवकों के लिए छात्रावास की व्यवस्था की जाए, जिस में वे अपना अध्ययन सुचारु रूप से कर सकें. अनेक गांवों में छात्रावास आदि नहीं हैं जिस से युवकों को परेशानी उठानी पड़ती है. हमें शहरों की ओर न दौड़ कर गांवों की तरफ लौटना है. भारत गांवों का देश है. जो बेकारी गांवों में विद्यमान है उसे हमें हटाना है.

लेख • कमल सहगल

अपनी वाचालता के कारण अपने मधुर संबंधों को कटुता की गंभीर स्थिति तक क्यों पहुंचा देते हैं?

जबान को लगाम दीजिए

जी हां, जबान को लगाम दीजिए. शीर्षक पढ़ कर चौंक गए क्या? बहुत अटपटा लग रहा है. मगर यह है बहुत फायदेमंद. अधिक बोलना बुद्धिमान व्यक्ति का लक्षण नहीं है. वाचाल मनुष्य को देरसवेर अपनी ही कही बातों पर लज्जित होना पड़ता है. अधिक बोलने से आप के मुंह से अनायास ही ऐसी बातें निकल जाती हैं, जिन पर बाद में आप बहुत शर्मिंदा होते हैं और आश्चर्य भी करते हैं कि आप के मुंह से ऐसी बात निकल कैसे गई.

लेकिन तरकश से छूटे तीर की तरह, बोले हुए शब्द वापस नहीं लाए जा सकते, और कई बार तो आप को बहुत ही विचित्र परिस्थितियों में डाल देते हैं. विश्व भर में वाचाल लोगों के बारे में काफी कहावतें प्रचलित हैं, कि कैसे उन्हें बाद में हानि उठानी पड़ती है, पर पता नहीं क्यों लोग अपनी इस बुरी आदत पर ध्यान ही नहीं देते. इस का एक कारण तो यह हो सकता है कि वाचाल व्यक्ति यह मानने को तैयार ही नहीं होते कि वे अधिक बोलते हैं.

वैसे अधिक बोलने के मामले में स्त्रियां ज्यादा बदनाम हैं. वे जब बोलना शुरू करती हैं तो बिना आगापीछा सोचे निरंतर बतियाती ही रहती हैं, चाहे कितना ही महत्त्वपूर्ण कार्य क्यों न छूट जाए.

मनोवैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि की है कि लड़की शिशु अवस्था के ठीक बाद से ही लड़कों के मुकाबले में अधिक बोलने लगती है. वह जल्दी ही बोलने को उद्यत हो जाती है, तेज बोलती और देर तक बोलती है. लेकिन स्त्रियों की श्रेष्ठता सिर्फ बोलने की रफ्तार तक ही सीमित रहती है, न कि बोली जा रही बात के वास्तविक अर्थों को जल्दी कह पाने में. मगर इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि लड़की जन्म से ही लड़कों से इस क्षेत्र में होड़ लेने लगती है और कुछ समय बाद उन्हें काफी पीछे छोड़ जाती है.

रोचक तथ्य

मनोवैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया है कि औरतों की बातचीत पुरुषों के मुकाबले में बुद्धिमानी की नहीं होती. पुरुष उन के मुकाबले अधिक समझदारी की बातें करते हैं. उन की इस खोज में कुछ और भी रोचक तथ्य प्रकाश में आए हैं. उन में एक प्रमुख तथ्य यह है कि स्त्रियों का बातचीत का मुख्य विषय पुरुष

ही होते हैं. जब कि उस के विपरीत पुरुषों की बातचीत का मुख्य विषय होता है व्यापार, कामधंधा, पैसा, दूसरे आदमी आदि. स्त्रियों का जिक्र वे बाद में या फुरसत के क्षणों में करते हैं.

पुरुष भी वाचाल

इस प्रकार स्त्रियों के बारे में बने हुए चुटकुलों में भी कुछ तथ्य है. लेकिन उस के अपवादस्वरूप कई बार कुछ पुरुष भी अत्यधिक वाचाल पाए जाते हैं. यह भी तथ्य है कि अधिक बोलने वाला कभी भी अधिक समझदारी की बात नहीं करता.

यदि किसी भी क्षेत्र में इस आदत से हुई हानि पर दृष्टिपात किया जाए तो आप देखेंगे कई हजार कार्यदिवस बतियाने में ही बरबाद हो जाते हैं. अधिक बातचीत करने वाले अपना तो समय नष्ट करते ही हैं, दूसरों का अमूल्य समय नष्ट करने में भी कुछ अपराध भाव महसूस नहीं करते. ऐसे लोग कभी भी किसी सभासोसाइटी में लोकप्रिय नहीं होते. लोग ऐसे लोगों को बहुत नापसंद करते हैं.

लेकिन यहां ही वाचालता के दोष समाप्त नहीं हो जाते, अधिक बोलने से सब से अधिक नुकसान तो ऐसे लोगों को खुद उठाना पड़ता है. कुछ सत्य उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिन्हें पढ़ कर आप को मालूम हो जाएगा कि अधिक बोलने से कभी-कभी कितनी अधिक हानि उठानी पड़ सकती है.

सच्ची घटना

एक वाचाल लड़की जब शादी के बाद ससुराल पहुंची तो दूसरे ही दिन उस के मुंह से ऐसी बात निकल गई, जिस से उसे जीवन भर पछताना पड़ा. शादी के दूसरे दिन सब लोग बैठे थे. हंसी-मजाक चल रहा था, बात लड़की के बारे में हो रही थी. किसी ने उस के रूपरंग पर कोई मजाक किया तो वह धीरे से पति से हंस कर बोली कि मेरे पांव तो आप के मुंह से भी अधिक गोरे हैं. वहां इस बात को सुनते ही सब की हंसी गायब हो गई. और उस का पति गुस्से से उठ कर बाहर चला गया. दूसरे दिन ही वह उस लड़की को उस के घर छोड़ आया और फिर कभी लेने नहीं गया.

यह एक सच्ची घटना है. इस पर उस लड़की ने अधिक बोल कर स्वयं ही अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मार ली. बात कितनी छोटी थी, जब उस ने यह बात कही थी तो उस में कोई दुर्भाव नहीं था.

मगर परिणाम कितना निराशाजनक हुआ.

ऐसी ही एक नवयुवक की घटना है. उस ने पुलिस में थानेदार की जगह के लिए प्रार्थनापत्र दिया था. एक दिन वह हंसीमजाक में अपनी मां से बोला, "मां, अगर मैं थानेदार बन गया तो पहली गोली तुम्हें मारूंगा. यह वैसे ही हंसीमजाक में कही गई बात थी और उस युवक ने बिना सोचेसमझे ही कह दिया था. लेकिन मां को यह बात बहुत बुरी लगी और वह युवक बाद में बहुत शर्मिंदा हुआ. मगर कभी मुंह से निकला शब्द वापस भी आया है? कहते भी तो हैं कि तलवार का घाव ठीक हो कर याद नहीं रहता मगर जबान का किया हुआ घाव कभी नहीं भूलता.

वाचालता के दुष्परिणाम

ऐसी ही एक और गांव की युवती का उदाहरण है. उस युवती की सगाई एक ऐसे लड़के से हुई थी जो एक बैंक में क्लर्क था तथा जिस ने बैंक अफसर बनने के लिए विभागीय परीक्षा दे रखी थी. उसे चुन लिए जाने का पूरा विश्वास भी था, मगर अभी परिणाम नहीं निकला था. यही बात साफसाफ उस ने अपनी भावी वधू को बता दी, तथा उस ने यह भी बता दिया कि अगर उस का चयन न हुआ तो अगले वर्ष वह फिर परीक्षा में बैठेगा.

युवती गांव में अपनी सखियों के साथ पानी भरने गई, और जब लड़कियों ने उसे कुछ छेड़ा तो वह बोले बिना न रह सकी और बोली कि जब तक वह परीक्षा पास न कर लेगा, तब तक वह क्लर्क से थोड़े ही शादी करेगी. बात सहेलियों में थी, लेकिन उन में एक लड़की वर पक्ष की रिश्तेदार थी. बस, कानोंकान वर पक्ष तक बात पहुंची और लड़के की मां ने यह कह कर रिश्ता तोड़ दिया, "हमारा लड़का तो क्लर्क ही है, यदि वह पास न हुआ तो हम ने ऐसी बहू क्या करनी है जो उस से सदा असंतुष्ट रहे और आपसी तालमेल ही न बैठे."

इस तरह यह रिश्ता टूट गया. फिर थोड़े ही दिनों में वह लड़का परीक्षा पास कर के अफसर बन गया और गांव की एक अन्य युवती से धूमधाम से उस का विवाह हो गया. इस तरह उस वाचाल लड़की ने बिना सोचेसमझे बोल कर इतना बढ़िया जीवनसाथी खो दिया. इन घटनाओं से पता चलता है कि बिना सोचेसमझे बोलने के कई बार कितने खतरनाक अंजाम हो सकते हैं.

बोलना कम तो चाहिए ही, मगर कम बोलते हुए भी शिष्टाचार के सामान्य नियमों का अच्छी तरह पालन करना चाहिए. ऐसा न हो कि आप का प्रथम वाक्य ही आप को दूसरे व्यक्ति से दूर कर दे. अशिष्ट भाषा का प्रयोग कभी गुस्से में भी नहीं करना चाहिए. कई लोग घर में तो बहुत शिष्ट भाषा प्रयोग करते हैं, मगर जब घर से दूर दोस्तोंयारों में जाते हैं तो उन की भाषा बड़ी अभद्र हो जाती है. इस तरह जब वे घर में या सभासोसाइटी में होते हैं तो अभद्र भाषा अपनेआप उन के मुंह से निकल जाती है और उन्हें इतनी शर्मिंदगी होती है कि वे अपने स्वजनों तक को मुंह दिखाने लायक नहीं रह जाते.

शिष्ट भाषा

भाषा मृदु, सौम्य व शिष्ट होनी चाहिए. धीरेधीरे मगर साफ आवाज में बात करें, जो सब को आसानी से समझ आ जाए. बात करने से पहले मस्तिष्क में सोच लें कि आप क्या कहने जा रहे हैं. भाषा अधिक साहित्यिक या क्लिष्ट भी नहीं होनी चाहिए. अबोधगम्य भाषा समझने में बहुत कठिनाई होती है, फिर जो बात दूसरे को बताने के लिए ही कही गई है, उस को समझ में ही न आए तो उस का क्या फायदा?

बोलते वक्त एकदम ऊंचा बोलने लगना या ऊंचेऊंचे स्वरों में बहस करना असभ्यता की निशानी है. आवाज को कर्कश न होने दें. बातचीत करते वक्त

कभीकभी बिना सोचेसमझे मुंह से कोई बात निकल जाने से दूसरों को आघात पहुंचता है और हंसीखुशी का वातावरण भी गंभीर बन जाता है.

एक और महत्त्वपूर्ण बात याद रखिए कि बातचीत करते वक्त वहां उपस्थित किसी व्यक्ति पर हंसिए मत. यह बहुत ही बुरी आदत है. आप हंसिए जरूर, मगर सब के साथ हंसिए. कम से कम बोलिए और अधिक से अधिक सुनिए. किसी पर व्यंग्य कसना भी कोई अच्छी बात नहीं है.

जब कहीं दो व्यक्ति बात कर रहे हों तो बिना अनुमति उन के पास जा खड़ा होना या जबरदस्ती बातचीत में सम्मिलित होने की कोशिश करना शिष्टाचार के सामान्य नियमों के विरुद्ध है. जब तक कोई बात आप से नहीं पूछी जाती, उस का जवाब आप न दें. एक कहावत भी है, 'एक चुप सौ सुख.' कई बार चुप रह जाना, जवाब देने के बजाय अधिक अच्छा रहता है. किसी की छिप कर बातें सुनना भी शिष्टाचार के खिलाफ है, और ऐसे व्यक्ति कभी भी लोकप्रिय नहीं हो सकते.

कई लोगों को दूसरों पर फब्तियां कसने की बुरी आदत होती है. यह एक बहुत घिनौना कार्य है. किसी भी सभ्य समाज में उसे बरदाश्त नहीं किया जाता. ऐसा व्यक्ति जल्दी ही बदनाम हो जाता है. सो, इस बात से परहेज रखिए.

बहस न करें

बातचीत में बहस करने से कई बार बड़े दुखद परिणाम निकलते हैं, क्योंकि गुस्से में मुंह से कुछ ऐसे शब्द निकल जाते हैं, जिन का बाद में कोई प्रायश्चित नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतया गुस्से में एक युवक अपने संबंधी से बोला, "जब तू सो रहा होगा, मैं तुझे चाकू मार दूंगा." संबंधी को यह बात बहुत खली और दोनों परिवारों के संबंध बिलकुल ही टूट गए. बाद में वह युवक बहुत पछताया, मगर

बाद में पछतान से क्या होता है.

इसी लिए कभी भी बहस न कीजिए. यदि आप को यह पता है कि आप ठीक हैं तो यह आप की बुद्धिमानी है कि आप धीरे से यह कहते हुए बात समाप्त कर दीजिए, "मैं समझता था कि मैं ठीक हूं लेकिन सोचता हूं शायद आप ही ठीक हों, मगर मुझे कुछ संदेह है." और फिर किसी भी सूरत में उस बात पर विचार मत कीजिए.

चुगली की आदत

स्त्रियों को दूसरों की निंदा या चुगली की बड़ी आदत होती है. इस से कई बार बड़े ही दुखद परिणाम निकलते हैं और लड़ाईझगड़ा लगा ही रहता है. दूसरों की निंदा सुनने से ही परहेज करें. अगर कान में कुछ पड़ भी गया तो उसे अपने तक ही सीमित रखें.

शेक्सपियर का कथन है, 'सुनो सब की, और अपनी राय गुप्त रखो.' इस सुनहरे उसूल पर चल कर आप लड़ाईझगड़ों से बचे रहेंगे. यदि आप को किसी की निंदा करनी भी हो तो उन्हीं शब्दों में कीजिए जिन शब्दों में आप उस के सम्मुख भी बात कर सकें.

औरतों को गप्पें मारने में विशेष दिलचस्पी होती है. लेकिन यदि वे हिसाब लगाएं कि वह इस तरह एक वर्ष में कितना अमूल्य समय बरबाद करती हैं, तो उन्हें पता चलेगा कि वे अपने जीवन का एकतिहाई समय सो कर और एक तिहाई गप्पों में ही व्यतीत कर देती हैं. यह कितना दुखद है कि इस तरह अमूल्य समय को नष्ट किया जाए, जो आप के सिवा राष्ट्र का भी समय है. हम आप को बोलने से मना नहीं करते, बोलिए, जहां जरूरी हो, मगर बोलिए सोच कर. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खोए या नष्ट हो जाने का उत्तरदायी नहीं होगा.

रचनाएं इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55

ज्ञान पहेली

1

अखिल भारतीय अन्न प्रतियोगिता में प्रति हेक्टर अधिक गेहूं उपजाने के लिए 1973-74 की रबी फसल में प्रथम पुरस्कार व 'कृषिपंडित' से अलंकृत किए जाने वाले कृषक श्री साहिबलाल किस राज्य के हैं?

(क) हरियाणा
(ख) मध्य प्रदेश
(ग) कर्नाटक

2

अमरीका के विदेश सचिव, श्री हेनरी किसिंजर राजनीतिक क्षेत्र में आने से पहले क्या करते थे?

(क) कैलिफोर्निया के एटार्नी जनरल
(ख) हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर
(ग) फोर्ड फाउंडेशन के अध्यक्ष

देश विदेश के बारे में आप को कितनी जानकारी है?

हम यहां राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि विभिन्न विषयों पर सामान्य ज्ञान के कुछ प्रश्न दे रहे हैं. हर प्रश्न के साथ तीन उत्तर हैं जिन में से एक ठीक है. अगर आप के सभी उत्तर ठीक हैं तो आप का ज्ञान उत्तम है. अगर आप के आधे से भी अधिक उत्तर ठीक हैं तो आप का ज्ञान सामान्य है. अगर आप के आधे से भी अधिक उत्तर गलत हैं तो आप को अपना ज्ञान बढ़ाने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है.

3

भारतीय संसद के दोनों सदनों ने एक विधेयक पास किया है, जिस के अनुसार केंद्रीय सरकार एक केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित करेगी. वह किस नगर में होगा?

(क) नागपुर
(ख) शिलांग
(ग) हैदराबाद

4

नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट आफ स्पोर्ट्स, पटियाला के एक परिपत्र के अनुसार पांचवीं अखिल भारतीय ग्रामीण खेलकूद प्रतियोगिता जनवरी, 1975 के अंतिम सप्ताह में आयोजित होगी. यह प्रतियोगिता कहां आयोजित होगी?

(क) हिसार (हरियाणा)
(ख) शिमोगा (कर्नाटक)
(ग) कोरापुत (उड़ीसा)

5

सितंबर, 1974 में तेहरान में सातवें एशियाई खेलकूद प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए राष्ट्रीय ध्वज उठाने वाला कौन सा खिलाड़ी था?

(क) अजितपालसिंह (हाकी)
(ख) कुसुम चटवाल (100 मीटर दौड़)
(ग) प्रवीणकुमार (लौह चक्र)

6

सन 1973 वर्ष में हाकी में अद्भुत खेल के लिए अर्जुन पुरस्कार किस को प्रदान किया गया?

(क) असलमशेर खान (भोपाल)

(ख) एम. पी. गणेश (बंबई)
(ग) अशोककुमार (उत्तर प्रदेश)

7

हिंदी फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री वहीदा रहमान ने एक व्यवसायी श्री शशि रेखी से विवाह किया है, जिस ने एक फिल्म में उस के साथ कमलजीत नाम से काम किया था. वह कौन सी फिल्म है?

(क) शगूफा
(ख) शगुन
(ग) शबनम

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री वहीदा रहमान.

8

नई दिल्ली में बन रहा 'संसदीय सौध' 1975 में तैयार हो जाएगा. उस की अनुमानित लागत 2 करोड़ 7 लाख रुपए होगी जब कि इस की लागत पहले एक करोड़ 57 लाख रुपए आंकी गई थी. संसदीय सौध का निर्माण किस लिए किया जा रहा है?

(क) संसद सदस्यों के आवास के लिए
(ख) संसद भवन के उपगृह के लिए
(ग) लोक सभा के अध्यक्ष के आवास के लिए

9

भारतीय पर्वतारोहण संघ ने 15 सितंबर, 1974 को दो वर्षों के लिए अध्यक्ष पद के लिए किसे पुनः निर्वाचित किया है?

(क) श्री एस. एस. खेरा
(ख) ब्रिगेडियर ज्ञानसिंह
(ग) श्री एच. सी. सरीन

10

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित नवीनतम सांख्यिकी वार्षिक पुस्तिका के अनुसार वह कौन सा देश है, जिस की बाल मृत्यु दर निम्नतम अर्थात 10.8 प्रति हजार है?

(क) ब्रिटेन
(ख) सोवियत संघ
(ग) स्वीडन

11

हिंदी फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री जीनत अमान पहलेपहल किस फिल्म में आई?

(क) हलचल
(ख) हरे रामा हरे कृष्णा
(ग) हंगामा

फिल्म अभिनेत्री जीनत अमान.

उत्तर :

(1) ख, (2) ख, (3) ग, (4) ख, (5) ग, (6) ख, (7) ख, (8) क, (9) ग, (10) ग, (11) क.

षड्यंत्र

चित्रा द्वारा लगाए गए एक के बाद एक आरोप से उषा तिलमिला उठी और उस की आंखों में खून तैरने लगा, लेकिन दूसरे ही क्षण वह फफक कर रोने क्यों लगी?

आप पढ़ चुके हैं :

पिता का तार पा कर जब चित्रा पीली कोठी पहुंचती है तो वहां उस की मुलाकात प्रतीक से होती है. वह उसे उस के पिता के पास चंडीगढ़ पहुंचा देता है. अगले दिन चित्रा प्रतीक से मिलने के बाद उषा राय के घर जाती है, जहां वह किसी व्यक्ति को उषा राय का चुंबन लेते देखती है. घर वापस आने पर पिता के मना करने के बावजूद वह प्रतीक से मिलने चली जाती है. वहां उसे पता चलता है कि प्रतीक का वास्तविक नाम डाक्टर सत्यप्रकाश है तो वह वापस घर लौट आती है. उसे प्रतीक के अपराधी होने का संदेह होता है. उस के पिता जब उसे कशमीर चलने पर बाध्य करते हैं तो वह घर से भाग कर प्रतीक के पास चली जाती है. प्रतीक उसे उषा राय के बारे में एक रहस्यपूर्ण कहानी सुनाता है. प्रतीक और चित्रा उषा राय के घर जाते हैं तो रास्ते में एक पुलिसमैन प्रतीक को रोक लेता है और चित्रा टक्सी ले कर उषा राय के घर पहुंच जाती है.

उषा राय नाटकीय ढंग से रुक गई. चित्रा का रंग सफेद पड़ गया था और वह उषा की ओर मंत्रमुग्ध अवस्था में देख रही थी. परंतु उस ने साहसपूर्वक कहा, "मैं... मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकती. तुम उस के विरुद्ध कुछ भी

प्रमाणित नहीं कर सकती. मैं उस के साथ वहां रात्रि में रहने पर लज्जित नहीं हूं और कोई क्या कहेगा, इस की भी मुझे चिंता नहीं है. मैं उन्हें बता सकती हूं कि उस ने यह हत्या नहीं की है. क्योंकि तुम ने यह स्वयं ही कहा था कि कोठी के तहखाने में दूसरे दिन सामान उठाने के लिए कुछ व्यक्ति गए थे, पर वहां उन को कुछ नहीं मिला था."

"यह मेरी भूल थी," उषा ने सहज भाव से उत्तर दिया, "मैं ने उन से पूछा था और उन्होंने बताया कि वे तहखाने में नहीं गए थे."

"फिर भी उस से इस हत्या का कोई संबंध नहीं है. मैं भी दूसरे दिन सुबह तहखाने में गई थी और वहां कुछ नहीं था." चित्रा साहसी बनने का प्रयास कर रही थी, पर वह मन ही मन प्रार्थना और आशा कर रही थी कि प्रतीक आ जाए.

"तुम गई थीं?" उषा मुसकराने लगी, "तुम तहखाने के अंतिम छोर तक गईं?"

चित्रा के चेहरे से ही उषा को इस प्रश्न का उत्तर मिल गया.

"नहीं गईं." अब उषा की आंखों से उल्लास प्रकट हो रहा था, "और शायद तुम्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि डाक्टर सत्यप्रकाश राजपुर क्यों गया था. परंतु मैं जानती हूं. वह उस व्यक्ति की हत्या करने गया था, जो गुमनाम पत्र लिखा करता था."

"यह झूठ है," चित्रा चिल्ला पड़ी.

"झूठ है? शायद तुम्हें यह मालूम नहीं है कि मृत व्यक्ति की जेब से एक ऐसा ही पत्र प्राप्त हुआ है. उस मृतक की जेब से, जिस की उस ने हत्या की."

उषा राय के मुख से क्रूरता टपक रही थी. वह चित्रा को एकटक देख रही थी और चित्रा के चेहरे का रंग उड़ गया था.

"तुम्हें यह मालूम नहीं था? पुलिस को अभी यह ज्ञात नहीं है कि उस समय डाक्टर सत्यप्रकाश वहां था. मेरे वि... में यदि तुम अपने सुंदर प्रेमी को फ... पर लटकते नहीं देखना चाहतीं तो ... और अपने पिता के मामले में हाथ डाल... का प्रयत्न न करो."

"यह सब तुम्हारी करतूत है. ... तुम ने जानबूझ कर किया है," चित्रा ... चीख कर कहा.

उषा यह सुन कर हंस पड़ी.

"तुम ने डाक्टर को पीली को... में भेजा. तुम उसे हत्या के अपराध ... फंसाना चाहती हो." यह मात्र अनुमा... था और अंधेरे में निशाना मारने ... समान था, फिर भी चित्रा अनुभव ... रही थी कि इस में सत्य का अंश भी ... "तुम्हें अच्छी तरह मालूम था कि ... व्यक्ति की जेब में पत्र था और तुम... डाक्टर को इसी लिए वहां भेजा कि ... उसे मिल जाए और..." वह कह... कहते रुक गई.

'शव? वह भयानक दीखने वा... व्यक्ति तो जीवित था!' उषा को ... था कि वह व्यक्ति कोठी में होगा औ... यह भी कि उस के पास पत्र है. उ... ने प्रतीक को टेलीफोन किया होगा औ... उसे पीली कोठी पहुंचने का प्रलोभ... दिया होगा. परंतु उसे यह कैसे निश्च... हो सकता था कि वह व्यक्ति उसी रा... मर जाएगा? उषा को यहां चंडीगढ़ ... बैठेबैठे पिताजी के साथ रहते हुए ... निश्चय कैसे हुआ कि डेढ़ सौ मील ... राजपुर में हत्याकांड होगा? क्या उ... ने उस व्यक्ति को प्रतीक की हत्या कर... भेजा था, या...'

चित्रा ने गहरी सांस ली. "ओह... तुम ने उस भयानक व्यक्ति को मेरी हत्या... करने के उद्देश्य से वहां भेजा था!"

अब सब कुछ प्रकट हो गया था. ... उषा की काली चमकदार आंखें अब चित्र... की ओर देखने का प्रयास नहीं कर रही थीं. अकस्मात ही जैसे बिजली ... कौंध से एक क्षण के लिए अंधियारा ... हो जाता है, वैसे ही चित्रा ने देखा. ...

यह एक समझबूझ कर बनाई ...
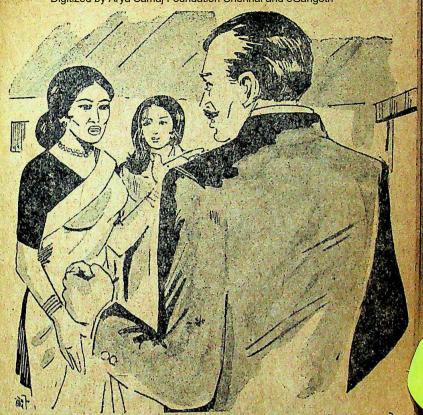
"कर्नल, यह सारा दोष मेरा है. मैं ने तुम से झूठ बोला," उषा राय ने कहा तो कर्नल जगमोहन आश्चर्य से उसे देखने लगे.

निःशंक योजना थी, जिस से किसी को भी उषा के प्रति संदेह नहीं हो सकता था. केवल हत्यारा ही . . . और वह अब मर चुका था.

दो तार भेजे गए थे. एक कर्नल जगमोहन का था और दूसरा सामान उठाने वालों का. कौन संदेह कर सकता था कि उन में जानबूझ कर गड़बड़ की गई है? कौन अनुमान लगाता कि यह भूल डाकखाने वालों ने नहीं की है? उस तार के शब्दों से, जो लखनऊ भेजा गया था, सरलता से यही समझा जा सकता था कि वह सामान उठाने वालों को सूचित करने के लिए है, जिस में कहा गया था कि ठीक ग्यारह बजे पीली कोठी में पहुंच जाएं. अंत में लिखा था, 'यदि किसी कारणवश पहुंचने में देर हो जाए तो वे प्रतीक्षा करें.'

तार के शब्दों से निश्चित था कि इस को पाने वाली युवती रात्रि के ग्या[रह] बजे वहां पहुंच जाएगी और उस नि[र्जन] और अकेली कोठी के बाहर या अं[दर] प्रतीक्षा करती रहेगी.

इस में सब से महत्त्वपूर्ण बात थी कि उस युवती को, जिसे उषा ने अ[भी] देखा तक नहीं था, अकेली निर्जन को[ठी] में भिजवाने के रहस्य की कोई कल्प[ना] तक नहीं कर सका था.

क्या यह संयोग था कि वह भया[नक] आकृति वाला व्यक्ति दबे पांव कोठी [के] अंदर चला आया था? या उसे [व]हां प्रतीक्षा करने व छिपे रहने के उद्देश्य [से] भेजा गया था ताकि वह टैक्सी में आ[ई] युवती को देख ले, जिसे उस के विषय [में] तनिक भी संदेह नहीं था?

चित्रा को ठंडा पसीना आने ल[गा] था. वह उषा का क्रूर चेहरा देख [कर] भयभीत हो गई थी. उस के सा[थ]

र उसी भयंकर व्यक्ति का चेहरा आ
ा था.

यदि उस ने पगध्वनि न सुनी होती...
लखाने का दरवाजा धीरे से खुल गया
ता... और उस ने कुछ देर बाद उस
क्ति को देखा होता तो उस के पतले
थों की बिना नाखूनों की उंगलियां उस
ा गला दबा देतीं!

'ठीक ग्यारह बजे,' तार में लिखा
. प्रतीक को टेलीफोन पर जो सूचना
गई थी, उस में भी ठीक ग्यारह बजे
ंचने का आग्रह किया गया था. अगर
आधा घंटा देर से पहुंचता तो उसे
र जाता कोई व्यक्ति न दिखाई देता.
कुछ समय प्रतीक्षा कर के और कोठी
किसी को न पा कर अवश्य लौट
ता. फिर क्या होता?

दूसरे दिन सामान उठाने वालों को
युवती का शव मिलता. कोई...
यद अशरफअली आगे आ कर नीली
ी कार की शनाख्त करते हुए कहता
एक व्यक्ति को रात्रि में यहां देखा
ा है और प्रतीक को पहचान लिया
ता. बिलासपुर में उन गुमनाम पत्रों
ा फैली अफवाह के आधार पर कि
युवती गायब कर दी गई है, उस पर
दमा दायर कर दिया जाता और
भयानक व्यक्ति के विषय में सत्य
ट न होता.

प्रतिनिधि द्वारा कराई गई हत्या!
री हत्या का अभियोग लग जाने से
ा को डाक्टर सत्यप्रकाश से पूर्णतया
कारा मिल जाता. उसे संभवतः
ी हो जाती या आजीवन कारावास.
ई आश्चर्य नहीं कि प्रतीक ने झूठ बोला,
कि इस सच्चाई से मैं वास्तव में डर
ती.

ये विचार एक के बाद एक चित्रा
मस्तिष्क में चक्कर काटने लगे.
ीक को पूरा विश्वास था कि उषा दूसरे
ा की भी हत्या कर देगी. यदि उस की
जना असफल न हो जाती, तो कर्नल
मोहन की एकमात्र पुत्री के
ल धन की उत्तराधिकारिणी, अब तक
मर चुकी होती और कर्नल जगमोहन की
विधवा एक धनवान स्त्री बन जाती.

'नीच, कुटिल...पापिष्ठा!' चित्रा
को उषा का चेहरा अब और भी अधिक
भयानक लगने लगा.

वह भयभीत हो कर दरवाजे की
ओर बढ़ी.

उस का हाथ दरवाजे के हैंडिल पर
पहुंचा ही था कि दो कठोर हाथों ने
उस की गर्दन पकड़ ली और उसे ला
कर सोफे पर पटक दिया. उषा उस की
गर्दन दबाने लगी.

उसे चिल्लाने का भी अवसर नहीं
मिला. उस का दम घुटने लगा था और
वह असहाय अवस्था में अपने पैर छटपटा
रही थी.

"ऐसे ही पड़ी रह, मूर्खा! क्या
यहां ड्रामा करवाना चाहती हो? क्या
मुझे तुम को बांधना पड़ेगा?" उषा ने
अब उस की गर्दन छोड़ दी थी.

चित्रा हांफती हुई खड़ी हो गई.
उस का चेहरा काला पड़ गया था. उसे
सांस लेने में कठिनाई हो रही थी.

उषा ने गर्व से कहा, "तुम जो चाहे
कह सकती हो और मेरे विषय में चाहे
जैसी कहानी गढ़ सकती हो, पर उसे
प्रमाणित नहीं कर सकतीं. अब मुख्य
बात यह है कि तुम अपनी जबान बंद
करोगी या नहीं?"

"मुझे जाने दो," चित्रा ने दरवाजे
की ओर बढ़ने का प्रयत्न किया. उषा
ने फिर उसे धकेल कर सोफे पर बिठा
दिया.

"यहां चुपचाप बैठी रहो. चित्रा,
याद रखो, मैं प्रमाणित कर सकती हूं कि
डाक्टर सत्यप्रकाश उस व्यक्ति से मिलने
के उद्देश्य से पीली कोठी में गया था.
और यदि तुम अपनी जबान बंद रखोगी
तो मैं भी इस विषय में चुप रहूंगी."

'नीच, कुटिल... पापिष्ठा!'
चित्रा का मन घृणा से भर गया. वह
अपने को अस्वस्थ अनुभव करने लगी
थी.

सौभाग्यवश या संयोगवश प्रतीक पीली कोठी में आया था... वह अभी जीवित थी, अन्यथा वह इस समय मुर्दाघर में पड़ी हुई होती. उसे अब सब कुछ स्पष्ट दिखाई देने लगा था.

वह योजना असफल हो चुकी थी, फिर भी एक बात में सफल रही थी. प्रतीक रात्रि को पीली कोठी में पहुंचा था, किंतु वह यह कैसे प्रमाणित कर सकता था कि उसे टेलीफोन पर संदेश मिला था. वह कैसे बताता कि उसे टेलीफोन किस ने किया था?

चित्रा सोफे पर बैठी जल्दीजल्दी विचार कर रही थी. इस समय वह अपनी कहानी का मूल्यांकन कर रही थी, इसलिए नहीं कि वह सत्य थी, बलिक इसलिए कि अदालत में उस का क्या महत्त्व होगा.

वह सत्यप्रकाश को निर्दोष प्रमाणित करने के लिए क्या कह सकती थी? यही कि उस ने उसे सीढ़ियों पर देखा था और उन्होंने मिल कर पूरी कोठी को देखा था और वह ऊपर बिस्तर पर जा कर सो गई थी?

शपथ ग्रहण करने पर उसे यह कहने पर बाध्य होना पड़ता कि वह सुबह तहखाने में उस स्थान तक गई थी, जहां मेन स्विच था. कुत्ते ने विचित्र व्यवहार किया था और उस ने एक सफेद चमकती हुई वस्तु देखी थी.

उस की साक्षी से वह निर्दोष प्रमाणित नहीं हो सकता था. यदि वह सच कह दे...? चित्रा अपनी गर्दन पकड़ कर यह विचार कर रही ... वह जानती थी कि अदालत में वह ... नहीं बोल सकती. वकीलों के उल... सीधे प्रश्नों की बौछार में सत्य छिपा ले... संभव न था. शपथ दिलादिला ... वे सत्य को उगलवा कर ही छोड़ते हैं.

जब उस ने उषा की ओर अ... उठा कर देखा तो उस की आंखों से ... तक छिपा हुआ भय प्रकट हो गया.

"लगता है, अब तुम्हारी समझ ... आ रहा है..." उषा ने हर्ष प्रकट क... हुए कहा, "तुम ने फांसी का त... कभी देखा है, चित्रा? मैं ने देखा ... वे फंदा डाल कर नीचे का तख्ता हटा... हैं और कुछ क्षणों में व्यक्ति की गर्दन ... जाती है. कैसा भयंकर दृश्य होता ... मेरे विचार में तुम उस व्यक्ति को फ... पर झूलते नहीं देखना चाहोगी, जिस ... तुम प्रेम करती हो. जरा समझो."

उसे केवल अपना मुंह बंद र... है. फिर उषा भी डाक्टर के प... कोठी में जाने का रहस्य प्रकट ... करेगी...और डाक्टर सुरक्षित ... सकेगा. एक क्षण के लिए यह वि... चित्रा के मस्तिष्क में अन्य सभी विच... पर प्रबल हो उठा. फिर एक संदे... उस का स्थान ले लिया.

अब किसी भी क्षण उस के ... यहां आ जाएंगे. उन्हें किसी प्रकार ... संदेह नहीं है. क्या वह अपने पिता ... ऐसी स्त्री से विवाह करने दे जो ह... है, जिस ने योजनाबद्ध ढंग से ... हत्याएं की हैं और शायद तीसरे की ... हत्या करने जा रही है?

दिले शाद या दिले नाशाद?

मैं राजे हुस्न कहूं तुम को हुस्ने राज कहूं,
कमाले दर्द मुहब्बत कि हद्दे नाज कहूं?
तुम्हें मैं नग्मा कहूं या खामोश सी फरियाद,
कहूं तुम्हें - मैं दिले शाद या दिले नाशाद?

—जगन्नाथ आजाद

वह चुप रह कर डाक्टर के प्राण बचा सकती है, लेकिन अपने पिता कैसे बचाएगी? वह निःशंक उस के कशमीर में उस के प्रेमी के होटल चले गए तो?

चित्रा पर अब यह भेद भी स्पष्ट गया. उस की आवाज ऐसी थी वह मीलों दूर से बोल रही हो. ने कहा, "इसी लिए तुम मुझे अपने मधुपूर्णिमा के अवसर पर कशमीर जाना चाहती हो?"

"क्या कह रही हो?" कहती हुई की आंखों से भय प्रकट हो रहा था, उस की वाणी संतुलित तथा स्पष्ट परंतु वह चित्रा को धोखा देने में सफल रही.

आ की आंखों में कशमीर के पर्वतों का दृश्य नाचने लगा था. के किनारे अशरफ का होटल... पर चढ़ते हुए दुर्घटना. ..दो शव भली भांति गाड़ दिया गया.

'नीच, कुटिल और पापिष्ठा!' लिए उषा ने बारबार उसे अपने कशमीर ले जाने का आग्रह किया परंतु अब भी, जब कि उसे सब ात हो चुका था और उसे चेतावनी गई थी, क्या उस के पिता सुरक्षित सकेंगे? उन्हें जीवित रहने भी गया तो उषा दूसरे उपाय अपनाएगी अपने नाम बीमा कराने के लिए उन ाध्य कर देगी...

वह अपने पिता को यह सब बता , तो भी डाक्टर पर हत्या का ोग अवश्य लगेगा... यह कार्य अवश्य करेगी. क्या वह अपने निर्दोष प्रमाणित कर सकेगा? क्या दोनों को बचाने का कोई उपाय है? से दोनों में से एक को चुनना ?

प्रतीक या पिता में से एक को...? अकस्मात ही दृढ़ निश्चय कर के, विश्वास के साथ चित्रा उठ कर हो गई.

"मुझे तुम्हारे कहने की चिंता नहीं है मैं पुलिस में रिपोर्ट देने जा रही हूं."

"ओह... किस बात की रिपोर्ट?" उषा ने व्यंग्यात्मक वाणी में कहा.

"मैं उन्हें सब कुछ बता दूंगी... कि तुम ने डाक्टर को पीली कोठी में भेजा. तुम ने मेरी हत्या करने का प्रयत्न किया," चित्रा की सांस फूलने लगी थी. "और तुम ने अपने बूढ़े पति की हत्या की..."

"यह तो तुम ने दो बार कह दिया है," उस की धीमी वाणी में भी धमकी थी, "मैं ने अभी तक सहन किया है, क्योंकि तुम पर दौरा पड़ता है. परंतु दो बार सहन करना काफी है. चित्रा, तुम्हारे साथ साक्षी भी होने चाहिए. एक बार फिर ऐसे विचित्र अभियोग लगाने से पहले अच्छी तरह से विचार कर लो... कौन? डाक्टर सत्यप्रकाश? मेरे विचार में वह कुछ नहीं कर सकता." उषा ने असीम धैर्य का प्रदर्शन करते हुए कहा, "इस देश में यदि अस्पताल में कोई मरता है तो उस के लिए डाक्टर प्रमाणपत्र देता है और मेरे पति की मृत्यु कैंसर से हुई, इस का प्रमाणपत्र मेरे पास है."

परंतु चित्रा टस से मस नहीं हुई.

"तुम अच्छी तरह जानती हो कि तुम ने ही टेलीफोन द्वारा डाक्टर को सूचित कर के पीली कोठी में भिजवाया. तुम ने दोनों तारों में जानबूझ कर गड़बड़ कर दी और तुम ने ही उस व्यक्ति को मेरी हत्या करने भेजा."

"क्या तुम्हारे पास इस का प्रमाण है?" उषा ने तीव्र वाणी में कहा. वह मुसकराने लगी, "मैं ने तुम्हारी बहुत बातें सहन कर ली हैं, चित्रा. तुम यहां आईं और आते ही तुम ने मुझ पर झूठे अभियोग लगाने आरंभ कर दिए और मुझे धमकी दी, जब कि तुम्हारे पास इन का कोई प्रमाण नहीं है. मैं ने तुम से कह दिया कि अपनी जबान बंद रखो, क्योंकि मैं तुम्हारे पिता को व्याकुल नहीं करना चाहती, पर अब मैं बात साफ कर देना चाहती हूं कि अब

नी कहसुन लिया गया है. अब इन
तापूर्ण विचारों को छोड़ दो और
रे साथ कशमीर चलो. मैं भी
न से अच्छा व्यवहार करने का प्रयत्न
रूंगी." वह चुप हो गई, क्योंकि
त्रा उस की बात सुनने के लिए
यार ही नहीं थी.

"वह आ गए!"

बाहर कार आ कर रुकी. चित्रा
गा कर खिड़की पर पहुंच गई. परंतु
जो कार सड़क पर आ कर रुकी थी, वह
नीली, छोटी कार नहीं थी. वह उस के
पिता की एंबेसेडर कार थी और जो
व्यक्ति नीचे उतर कर ड्राइवर से बातें
कर रहा था, वह कर्नल जगमोहन था.

> **प्रेम**
>
> प्रेम मृत्यु से अधिक बलवान है, मृत्यु जीवन से अधिक बलवान है. यह जानते हुए भी मनुष्य मनुष्य के बीच कितनी संकुचित सीमा खिंची है.
>
> —खलील जिब्रान

उषा भी चित्रा के पीछे आ कर खड़ी हो गई थी. पिता और पुत्री की आंखें मिलीं. पिता की आंखों में प्रसन्नता थी.

चित्रा ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह भारी मन से खिड़की से हट कर पीछे खड़ी हो गई. 'बीस मिनट. . .प्रतीक कहां रह गया? क्या हुआ होगा?'

दरवाजे पर लगी घंटी बज रही थी. यह साहसपूर्वक कह देना कि मैं पुलिस में जा रही हूं, सरल था, परंतु अब उस के पिता आ गए थे और दोएक मिनट में वह उषा को ले कर कचहरी चले जाएंगे. वह समय पर उन का विवाह रुकवाने के लिए पुलिस में कैसे पहुंच सकती थी? क्या वह अपने पिता को सारी कहानी बताने का साहस जुटा पाएगी, जब कि उस के मुंह से निकला प्रत्येक शब्द प्रतीक पर प्रहार करेगा?

उस की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी. उस ने अपने पिता के बूटों की भारी ध्वनि सुनी. वह गलियारे में आ रहे थे. उषा उत्सुक हो कर दरवाजे की ओर देख रही थी.

निराश

चित्रा ने मन ही मन कहा, परंतु उस के मुंह से धीरे से ये शब्द निकल ही गए, "मुझे आश्चर्य है कि पिता जी इस बात को जानते हैं."

"क्या जानते हैं?" उषा ने तुरंत पूछा.

"कि तुम्हारा नाम शीला भाटिया है. वह तुम से झूठे नाम से विवाह नहीं कर सकते."

"चुप रहो."

यह साधारण सी बात थी, जिसे चित्रा ने बहुत ही धीमे शब्दों में कहा था, पर इस का उषा पर असाधारण प्रभाव पड़ा. उस के माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं और आंखों में भय छा गया. अब उस का उत्साह ठंडा पड़ गया था.

इसी क्षण उन को गलियारे में कर्नल जगमोहन के शब्द सुनाई दिए, "कहां हो?"

दरवाजे का हैंडिल घूम रहा था कि उषा ने चित्रा की बांह पकड़ ली.

"सुनो," उषा ने चित्रा के कान से अपना मुंह लगाते हुए कहा, "मैं हार गई. मैं विवाह नहीं करूंगी, केवल उन से यह मत कहना. . . मैं स्वयं ही सब कुछ कह दूंगी."

"हल्लो! तुम यहां? तुम्हें यह कहां मिली?" कर्नल जगमोहन ने बारीबारी से उषा और चित्रा को देखा, परंतु उन में से एक ने भी उत्तर नहीं दिया.

उषा अपने हाथ मल रही थी, जैसे कि उसे कोई बड़ा आघात लगा हो. चित्रा का गला प्रसन्नता के कारण भर आया था, इसलिए वह बोल नहीं पा रही थी. उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह विजयी हुई है.

"मैं नहीं जानता कि तुम पूरी रात्रि कहां रही, [illegible] ने अत्यधिक व्याकुल कर दिया था," उस के पिता उस से ही कह रहे थे, परंतु उस ने संभवतः उन का एक भी शब्द नहीं सुना. वह सांस रोक कर उषा को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हुए सुनना चाहती थी.

"यह तुम ने अच्छा नहीं किया," कर्नल जगमोहन तुरंत ही उषा की ओर मुड़ गए, "तैयार हो? मुझे खेद है कि मार्ग में कुछ देर हो गई. सारा ट्रैफिक जाम हो गया था. हमें शीघ्र चलना चाहिए." परंतु उषा अपने स्थान से नहीं हिली.

"क्या तुम ने अभी तक कोई तैयारी नहीं की?" कर्नल ने पूछा.

"एक मिनट बैठ जाइए. कर्नल, मुझे आप से कुछ कहना है." उषा कमरे में से एक बरफी का डिब्बा और सिगरेटों का नया पैकेट उठा लाई. उस ने एक सिगरेट जला ली और फिर कर्नल को सिगरेट पेश की, परंतु उस ने सिर हिला दिया.

"डेढ़ बज चुका है," कर्नल ने संदेहपूर्ण शब्दों में कहा, "क्या हमारी बातचीत घर पर नहीं हो सकती?"

"नहीं, यह बहुत गंभीर बात है."

कर्नल फिर चित्रा तथा उषा को बारीबारी से देखने लगा.

"अब क्या है? तुम्हारा यह अर्थ तो नहीं है कि चित्रा..." उस ने आंखों से चित्रा की ओर संकेत किया. परंतु उषा ने सिर हिला दिया.

"नहीं, यह चित्रा का दोष नहीं है. यदि इस के लिए कोई दोषी है तो वह मैं हूं. क्योंकि मैं मूर्ख हूं."

"हुआ क्या?" कर्नल अब कुछ सतर्क हो गया था.

"कुछ नहीं... बस," उषा की वाणी धीमी पड़ती जा रही थी, "मैं... मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती, कर्नल. इसे समाप्त समझो."

"प्रिये, यह तुम क्या कह रही हो?" कर्नल ने उषा की कमर में हाथ [illegible] निकट खींच लिया, "प्रिये, क्या तुम पागल हो गई हो?"

"नहीं, मैं ठीक कह रही हूं." वह उस से पृथक हो गई और गंभीर हो कर उसे देखने लगी.

"परंतु क्यों...किस लिए...?" वह चित्रा की ओर मुड़ गया और उस पर बिगड़ता हुआ कहने लगा, "तुम यहां अब तक क्या करती रहीं?"

"चुप रहो, कर्नल, यह उस का दोष नहीं है." उषा ने उस की कोहनी पकड़ कर उसे बलपूर्वक सोफे पर बिठा दिया, परंतु वह भयानक दृष्टि से चित्रा को देख रहा था.

"इसी लड़की ने तुम से अवश्य कुछ कहा है. ठीकठीक बताओ, क्या बात है?" उस ने आग्रहपूर्वक कहा.

"नहीं, यह मेरी गलती है," उषा की वाणी में पश्चात्ताप की भावना थी.

चित्रा जो सोफे के सहारे खड़ी हुई थी, उसे अब उषा पर दया आने लगी थी. वह वास्तव में दुखी तथा निराश दिखाई दे रही थी. धीरेधीरे चलती हुई चित्रा खिड़की के पास जा कर खड़ी हो गई. वह अपने पिता की क्रोधित आंखों से आंखें मिलाने का साहस नहीं कर पा रही थी.

"तुम कैसी बातें कर रही हो?" कर्नल ने प्रश्न किया.

"मैं कल रात गलत सोच बैठी थी." यह नई उषा थी, एक दुखी स्त्री, जो दुखपूर्ण शब्दों में अपना दोष स्वीकार कर रही थी, "मुझे उस समय तक सच्चाई का ज्ञान नहीं था. मेरा विचार था कि चित्रा यूं ही झूठमूठ कहानी गढ़ रही है, क्योंकि इस पर दौरा पड़ता है मैं नहीं समझती थी कि..."

"क्या?" कर्नल भयभीत तथा अधीर हो उठा था.

"यह कि इस ने मेरे विषय में कुछ सुन लिया था."

"इस ने क्या सुना? यह क्या कह रही हो?" कर्नल फिर चित्रा की ओर

रुक गया. "तुम. . .तुम. . ."

"नहीं, कृपया उसे कुछ न कहिए." उषा ने फिर कर्नल को सोफे पर बिठा दिया, "मैं उसे बिलकुल दोष नहीं दे रही हूं. यह विचार अपने मन से निकाल दीजिए. यह उस का स्वाभाविक अधिकार है. मैं भी यदि उस के स्थान पर होती तो वही करती जो वह कर रही है."

चित्रा इस आकस्मिक परिवर्तन से व्याकुल हो गई. उस की आंखें तुरंत ही उषा की आंखों से जा टकराईं, मानो उन से क्षमा मांग रही हों.

तुरंत ही उषा ने अपनी वाणी में अमृत घोलते हुए कहा, "मेरे विचार में तुम वास्तव में साहसी युवती हो इसी लिए सीधे मेरे पास आ गईं." एक क्षण चुप रहने के बाद वह कर्नल की ओर मुड़ी, "कर्नल, तुम्हें मालूम होना चाहिए कि वह सीधी तुम्हारे पास जा सकती थी और उस अवस्था में मुझे उस से अधिक घृणा हो जाती."

"जरा मुझे भी तो बताओ कि तुम दोनों क्या कहना चाहती हो?" कर्नल ने कहा.

"मैं बता तो रही हूं. मैं ने तुम से झूठ बोला. बस, यही बात थी." उषा ने तुरंत ही अपना मुंह फेर लिया और वे दोनों उस का मुख नहीं देख सके. वह रुंधे गले से कहने लगी, "मैं जानती हूं कि तुम मुझे क्रूर कहोगे, परंतु. . .कर्नल, तुम्हें नहीं मालूम कि मैं कितनी संकट में फंस गई थी."

"प्रिये उषा, रोओ मत. मेरी तरफ देखो," उस ने उषा को फिर अपनी ओर खींचना चाहा, पर इस में वह सफल न हो सका. वह चित्रा पर बरस पड़ा, "मुझे इस की चिंता नहीं है कि चित्रा ने क्या कहा और तुम ने क्या किया. मैं तो यही जानता हूं कि मैं तुम से प्रेम करता हूं और मेरी इच्छा है कि तुम मुझ से विवाह कर लो."

"पूरी कहानी सुन लेने के बाद तुम विवाह नहीं करोगे," उषा ने सिसकते हुए कहा, "यह अच्छी कहानी नहीं है, कर्नल."

"मुझे इस की चिंता नहीं है."

"सुनने के बाद तुम ऐसा नहीं कहोगे." उस की वाणी में दृढ़ता थी.

"चित्रा, यह सब क्या है?" वह क्रोधित हो कर उबल पड़ा.

"पिताजी, इसे स्वयं अपनी कहानी बताने दीजिए," चित्रा उत्तर दिए बिना न रह सकी. फिर उस ने उषा से पूछा, "क्या मैं बाहर चली जाऊं?"

"नहीं. मैं चाहती हूं कि तुम यहीं रहो," उषा ने सिसकियां भरते हुए कहा, "तुम्हें यहां ठहर कर यह निश्चय करने का अधिकार है कि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करती हूं या नहीं."

"कैसी प्रतिज्ञा?" कर्नल ने पूछा. परंतु उषा ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया. वह सिसकियां भरती हुई आंसू बहाती रही.

"कर्नल, यह सारा दोष मेरा है. मैं ने तुम से झूठ बोला. मैं बहुत भयभीत थी. तुम्हें नहीं मालूम मैं किस संकट में फंस

14 सप्ताह लेटे ही नहीं

जनरल विलियम कांप्टन (1624-1663) बैनबरी में शाही सेनाओं के सेनापति थे. जब कामवेल ने बैनबरी पर हमला किया तो वह लगातार 14 सप्ताह तक (14 जुलाई से 26 अक्तूबर, 1644) सोना तो दूर, बिस्तर पर लेटे तक नहीं.

प्रस्तुत है कम दाम में उच्च कोटि का साहित्य

विश्व पाकेट बुक्स

नानावती का मुकदमा : त. घोष
पूरे तथ्यों सहित, अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी.

एक के बाद : रमेश गुप्त
सरकारी दफ्तर की जिंदगी की परतें खोल कर रख देने वाला उपन्यास.

लायड्स बैंक डकैती : त. घोष
अपराधों की सच्ची कहानियां—काल्पनिक कथाओं से कहीं अधिक रोचक व रोमांचक.

अंतरिक्ष के पार : कैलाश साह
अपने ज्ञान के बल पर कंप्यूटर हैरीकोल्ट-7 एक दिन दास से स्वामी बन बैठा और फिर...

विद्रोह के स्वर : प्रेम हालन
सामाजिक बंधनों से तंग आ कर रितु ने समाज व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और फिर....

नीली आंखों के दायरे
रहस्यपूर्ण शौकत महल, मालिक की हत्या के बाद जिस का रहस्य और भी गहरा हो गया. रु 3 प्रत्येक

अजंता : ई. थियोडोर किंग
प्रेम और वात्सल्य की शीतलता भी उस के मन को स्थिर न कर सकी—आखिर उसे किस की तलाश थी ?
रु. 3 प्रत्येक

टूटा हुआ पुल : वासुदेव
जीवन को एक नाटक समझ कर खेलने वाली युवती कांता, जब जीवन के कठोर सत्य से टकराई...
रु. 5

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम 12 कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट लेने पर 5% की छूट, डाक खर्च माफ. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

मुझे तुम्हें उसी समय सब कुछ ना चाहिए था, जब डाक्टर सत्य- के विषय में बताया था."

प्रकाश?" अब कर्नल के हाथ गया था. "उस का इस से ध है?"

"ह सब उसी से संबंधित है," ने साहसपूर्वक अपना आंसुओं धुला चेहरा ऊपर उठाया, "कर्नल, मैं ने तुम्हें उस के विषय में वह सब सच नहीं था. वह डाक्टर उस की प्रैक्टिस चल नहीं रही कि लोग उस के विषय में कुछकुछ ते थे. इस से पहले जब मैं अपने साथ बिलासपुर में थी और का इलाज कर रहा था, कुछ हो गया..."

का गला रुंध गया था और ने में कठिनाई अनुभव कर रही र्नल उस की पीठ थपथपा कर ना दे रहा था.

"ब इन बातों को रहने दो, प्रिये," बार कह रहा था.

"ब मुझे कह लेने दो," उषा ने आंखों को पोंछते हुए कहा, "कर्नल, र्दिक इच्छा है कि आरंभ से तुम्हें ब बता दूं."

"मैं इस विषय में कुछ भी नहीं चाहता," उस ने दृढ़ता से कहा.

"मेरा दोष नहीं था. मैं सच कह रही हूं," उषा बोली, "मैं ना कर कहती हूं कि मैं ने उसे जरा प्रोत्साहन नहीं दिया."

"किसे प्रोत्साहन नहीं दिया?" चित्रा

"उस आदमी को... सत्यप्रकाश उषा ने सहज भाव से उत्तर दिया. "वह उस समय मेरे पति का इलाज रहा था और प्रति दिन हमारे घर था. मुझे उस से मिलना ही परंतु मैं ने कभी एक बात भी नहीं कही जिस से वह सोचे..."

वाणी धीमी पड़ गई. फिर अकस्मात ही वह क्रोध में भर गई, "वह अपनी स्थिति से अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करने लगा था."

"क्या तुम यह कहने का प्रयास कर रही हो कि...?" चित्रा ने कहना आरंभ किया ही था कि उस के पिता बीच में बोल पड़े, "चुप रहो. मैं वही सुनना चाहता हूं जो उषा मुझे बता रही है."

उषा कहने लगी, "डाक्टर सत्यप्रकाश ने मुझ से प्रेम करना चाहा और उस के लिए प्रयत्न भी किया, पर मैं ने दुत्कार दिया. मैं ने उस से कह दिया कि मैं अपने पति से शिकायत कर के दूसरे डाक्टर का प्रबंध करवा लूंगी."

"यह झूठ है. पिताजी, यह आप से झूठ बोल रही है," चित्रा चिल्ला पड़ी, परंतु उन दोनों ने ही उस की बात अनसुनी कर दी.

"इस से वह डर गया, मैं ने समझा कि वह अब ठीक हो गया है," उषा ने बताया, "उस ने प्रतिज्ञा कर ली कि वह मुझ से ऐसीवैसी बातें नहीं करेगा. वहां कोई दूसरा अच्छा डाक्टर नहीं था जो मेरे पति को किसी अच्छे अस्पताल में भिजवाने का प्रबंध कर देता. सो, मैं ने सोचा कि वही ठीक रहेगा. और तब... कर्नल, क्या बताऊं, संयोगवश मुझे ज्ञात हो गया कि वह क्या कर रहा था." वह चुप हो गई और दूसरे ही क्षण नाटकीय ढंग से कहने लगी, "तुम्हें मालूम है उस ने क्या किया? उस ने अस्पताल की मेट्रन तथा नर्स आदि सभी से कह दिया कि मैं अपने पति को विष दे रही हूं."

"यह सरासर झूठ है," चित्रा एकाएक चिल्ला पड़ी.

चित्रा के पिता ने क्रोधपूर्ण दृष्टि से उस की ओर देखा. "प्रिये," उस ने दया भाव प्रकट करते हुए उषा का हाथ पकड़ लिया.

"क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि कोई भारतीय नारी इतनी नीच, इतनी अधम हो सकती है जो अपने पति को विष दे दे?" उषा फिर सिसकियां
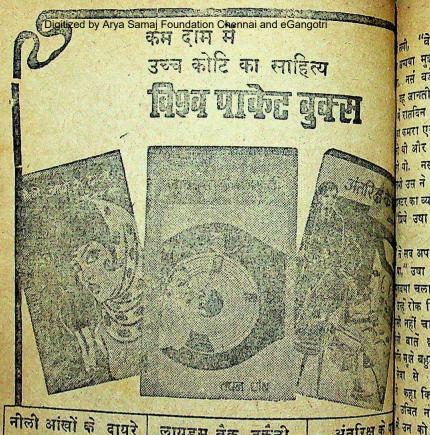
नीली आंखों के दायरे

आनंद सागर श्रेष्ठ

शौकत महल, जो बाहर से जितना बड़ा था उतना ही भीतर से भी विशाल और रहस्यपूर्ण था. फिर जब इस शौकत महल के मालिक की बड़े ही नाटकीय ढंग से हत्या कर दी गई तो महल का रहस्य और भी गहरा हो गया. आखिर यह हत्या किसने की? रहस्यों से भरपूर एक रोमांचक उपन्यास

रु. 3

लायड्स बैंक डकैती

तपन घोष

इंसान के हाथों होने वाले अपराधों की सच्ची कहानियों का संकलन, जिसकी जघन्यता दिल हिला कर रख देती है. कल्पना के जोर पर पेश किए जाने वाले अपराधों की मनगढ़ंत घटनाओं से कोसों दूर यह वास्तविक घटनाएं रहस्य रोमांच की काल्पनिक अपराध कथाओं से कहीं ज्यादा सनसनीखेज व रोचक हैं.

रु 3.

अंतरिक्ष के प[illegible]

मानव निर्मित हैरोकोल्ट-7 जिसने [illegible] अंतरिक्ष के पार मानव [illegible] का बीजारोपण [illegible] अकल्पनीय काम [illegible] उठाया और अपने [illegible] को कार्यरूप देने में [illegible] भी हो गया. लेकिन [illegible] शक्तिशाली 'सर्वज्ञ' [illegible] मानव के हाथों मात [illegible] पड़ी. आखिर था तो [illegible] कंप्यूटर ही.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम [illegible]

...ती, "बेचारी नर्स ने मुझे बता
...अन्यथा मुझे कभी भी पता न
... नर्स बड़े आश्चर्य में पड़ गई
...वह जानती थी कि मैं ने उन की
...रातदिन एक कर दिया था. मैं
...कमरा एक पल के लिए भी नहीं
...थी और अपना भोजन स्वयं ही
...थी. नर्स सभ्य तथा सुशिक्षित
...सी उस ने मुझे बता दिया. उस से
...टर का व्यवहार सहन नहीं हुआ."
...प्रिये उषा..."

...ने सब अपने पति को बता दिया
...था," उषा ने बताया, "वह डाक्टर
...मा चलाने को कह रहे थे, परंतु
...उन्हें रोक दिया. मैं लोगों में अपनी
...नहीं चाहती थी और अखबारों
...की बातें छपने से घबराती थी.
...मुझे बहुत प्यार करते थे. वह
...बा से बहुत प्रसन्न थे. मैं ने
... कहा कि ऐसे लोगों के बीच में
... उचित नहीं है और कुछ दिन
... उन को विमान द्वारा चंडीगढ़
...गई."

"...सत्यप्रकाश ने मुझे स्वयं बताया
..." चित्रा का मुंह तमतमा रहा था,
...अपने पति को धोखे से यहां ले
... क्योंकि तुम्हें भय था..."
"मैं जानती हूं. यह झूठी कहानी
...यही कहानी उस ने सब को बताई,"
...असीम धैर्य का परिचय दे रही थी.
... उन्हें विष दे कर मार देना
...थी और इसलिए उन्हें ले कर
... मुझे यह बात अभी तक मालूम
...थी अन्यथा मैं उस पर मुकदमा
...कर देती. वास्तव में कुछ ही
...बाद वह बिलासपुर से भाग
..., क्योंकि लोग उस के पीछे लग
... यह तो मुझ पर हत्या का अभियोग
...के समान था. वह ऐसा प्रकट
...रहा था जैसे कि उस ने कुछ किया
...ही." उषा ने ऊंची आवाज में कहा,
... यह कभी सोचने का प्रयत्न ही
...किया कि मैं अपने पति की हत्या

करने की कभी कल्पना तक नहीं कर सकती थी. इस के अतिरिक्त मेरा यह ध्येय भी नहीं हो सकता था, क्योंकि उन की मृत्यु के पश्चात तो मैं भिखारिन बन गई थी."

"तुम्हें अपने पति की मृत्यु से पहले यह ज्ञात नहीं था कि वह कर्ज ले कर काम चला रहा था," चित्रा ने तुरंत कहा, "तुम ने यह बात स्वयं अशरफअली नाम के व्यक्ति से होटल में कही थी."

"क्या डाक्टर सत्यप्रकाश ने तुम्हें यह बताया?" उषा को यह सुन कर नया झटका लगा था. वह तुरंत ही कर्नल जगमोहन की ओर मुड़ गई, "मेरे विचार में संसार की एक भी बात ऐसी नहीं है जो डाक्टर ने मेरे विरुद्ध नहीं कही. उस ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया कि मैं ने ही वे गुमनाम पत्र भेजे थे, जिन से उस का कारोबार चौपट हुआ. जब वह इस में असफल रहा तो उस ने दूसरे हथकंडे अपनाए. उस ने चित्रा को अशरफअली वाली कहानी बताई. चित्रा, मैं तुम्हें दोष नहीं दे रही हूं. मैं निश्चित रूप से कहती हूं कि यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होती तो मैं भी इन बातों पर विश्वास कर लेती. कुछ भी हो, तुम से मेरा पुराना परिचय नहीं है और मैं वह हो भी तो सकती हूं जो वह कह रहा है. वह बहुत झूठा व्यक्ति है. वह मुझ से विष की तरह घृणा करता है. वह पुलिस हेडक्वार्टर में भी गया था ताकि मेरे विरोध में उसे कोई प्रमाण मिल जाए. इस के बाद वह मेरी डेढ़ सौ मील दूर पीली कोठी में उसी रात्रि को पहुंच गया."

"तुम्हें यह अच्छी तरह मालूम है कि तुम ने ही उसे वहां भेजा था," चित्रा अपने को नियंत्रित न रख सकी.

"मैं ने भेजा? प्रिय चित्रा, मुझे उसे वहां भेजने से क्या लाभ हो सकता था?" उषा अब शांत थी, "जरा बुद्धि से काम लो, चित्रा. तुम मुझ से घृणा कर सकती हो, परंतु तुम्हें ऐसी [illegible] नहीं करनी चाहिए. क्या मैं इतनी मूर्ख हो

विश्व पाकेट बुक्स
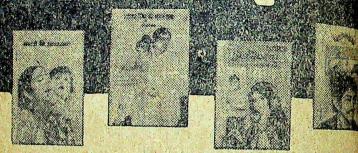
1—बच्चों की समस्याएं : संपादक विश्वनाथ
बच्चों के लालनपालन की नन्हीं समस्याओं का विश्लेषण रु. 3

2—भगवान विष्णु की भारत यात्रा : त्रि. पांडेय
भगवान विष्णु एक बार फिर भारत पधारे, मगर जब प्रणाम की जगह गालियां और पुलिस के डंडों की बौछार मिली तो बेचारे भगवान भागे बैकुंठ की ओर. एक तीखा व्यंग्य उपन्यास. रु. 4

3—अपने पराए : रा. श्याम सुंदर
ससुराल में जा कर लड़की के लिए अपने, पराए तथा पराए अपने हो जाते हैं. परंतु इस में कितनी सच्चाई है? रु. 3

4—परमाणुओं की लपट : विक्टर पाल
अकेले ही शत्रु सीमा में घुस कर देश के विरुद्ध रचे जा रहे षड्यंत्र का भंडाफोड़ करने वाले भारतीय सेना के युवा अफसर के साहस व वीरता की रोमांचक कहानी. रु. 4

आज ही अपने निकटतम पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001
सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

सकती हूं जो उस व्यक्ति को, जो मुझे मिटा देना चाहता है, अपनी कोठी में, अपने विरुद्ध कुछ कहने का अवसर देने के लिए भेज दूं?"

"तुम ने पीली कोठी में उसे इसलिए भेजा था क्योंकि तुम चाहती थीं कि मेरी हत्या हो..."

"चित्रा!" उस के पिता बोल उठे.

उषा ने उत्तर दिया, "चित्रा, तुम ने यह प्रतिज्ञा की थी कि तुम मेरे विरुद्ध कोई झूठी बात नहीं कहोगी, यदि मैं सच्ची बात बता दूं." वह तुरंत ही कर्नल जगमोहन की ओर मुड़ गई, "मैं यही कहना चाहती थी, कर्नल, उस ने बच्ची के मस्तिष्क में विष घोल दिया है. मेरे विरुद्ध यह प्रत्येक बात का विश्वास कर सकती है. मेरे विचार में यदि उस ने चित्रा को यह भी बताया हो कि मैं तुम्हारी या उस की हत्या करने का प्रयत्न कर रही हूं तो वह इस पर भी विश्वास कर लेगी. उस ने चित्रा को सिखा दिया है कि मैं राक्षसी हूं या फिर चुड़ैल हूं. मेरे लिए यह सब सहन करना बहुत कठिन है."

"चित्रा को ऐसी बातों पर विश्वास नहीं है, यह मैं जानता हूं," उस के पिता ने कहा, "मैं स्वयं भी इन पर विश्वास नहीं करता. फिर भी यदि वह ऐसा सोचती है तो मुझे उस की चिंता नहीं है."

"परंतु मुझे तो इस का बहुत दुख है," उषा ने कहा, "तुम्हें नहीं मालूम कि उस के कारण मैं ने कितने दुख उठाए हैं. मैं जहां भी गई और जब भी मुझे जरा सी शांति मिली, वहां तुरंत ही वही पुरानी बातें सुनाई देने लगीं. लोग मुझे देख कर आपस में खुसरपुसर करने लगते थे और मित्र मुझे देखते ही किनारा कर जाते थे. वे लोग मेरे मुंह पर तो कुछ नहीं कहते थे, पर पीठ पीछे बहुत कुछ सुनने में आता था. उन्होंने मुझे अपनी सफाई तक देने का अवसर नहीं दिया. चारों ओर अफवाहें उड़ती रहती थीं. इन बातों से मैं सदा ही [illegible] परेशान रहती थी."

"प्रिये, इन बातों को भूल जाओ," कर्नल जगमोहन ने कातर स्वर में कहा.

"कैसे भूल सकती हूं?" उषा ने रोते हुए कहा, "मैं भी चाहती हूं कि भूल जाऊं. कभीकभी मैं ऐसी निराशा अनुभव करने लगती हूं कि मेरी समझ में ही नहीं आता कि क्या करूं. कर्नल, मुझे झूठ बोलने पर बाध्य कर दिया गया था. मुझे तुम से भी झूठ बोलना पड़ा."

उस ने फिर सिसकियां भरनी आरंभ कर दी थीं. "मैं अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न नहीं कर रही हूं. मैं जानती हूं कि मैं ने भूल की है. परंतु, प्रिये, जब तुम मेरे जीवन में आए तो मेरे लिए यह विश्वास करना कठिन हो गया कि तुम भी स्थिर रह सकोगे या नहीं. मुझे ऐसा व्यक्ति चाहिए था जो मुझ पर विश्वास करे और जो मुझ से प्रेम करे, जिस के साथ रह कर मैं अपने को सुरक्षित समझूं. तुम मेरे मन की व्यथा नहीं समझ सकते, कर्नल, नहीं समझ सकते!"

"अब मुझ पर विश्वास रखो," कर्नल ने कुछ क्रोधित होते हुए कहा, "तुम मुझ पर विश्वास करो और इन सब बातों को भूल जाओ. उषा, इन्हें कूड़े के ढेर में फेंक दो. हम इन के विषय में कभी बात तक नहीं करेंगे. मैं शेष कहानी सुनने के लिए तैयार नहीं हूं. हम इस पर कभी सोचें भी नहीं और यदि कोई इस विषय में बोलने का प्रयत्न..." उस ने भौंहें तानते हुए चित्रा की ओर देखा. "वे तुम पर हाथ भी नहीं धर सकेंगे, इस का जिम्मा मैं लेता हूं. मेरी भुजाओं में अभी भी असीम बल है."

उषा ने रोते हुए कहा, "काश, ऐसा हो सकता!"

"होगा, अवश्य होगा," कर्नल ने कहा.

"तुम नहीं समझ रहे हो," उषा की वाणी में दृढ़ता थी, "मैं भी सोचती थी कि हमारा विवाह होगा. मैं [illegible] कि ऐसा कर के मैं सभी ओर से सुरक्षित रह सकूंगी.

परंतु चित्रा ने प्रकट कर दिया है कि यह मेरी भूल थी. उस ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मेरा छुटकारा नहीं हो सकेगा. मैं चाहे जहां चली जाऊं, मेरे साथ सदा यही होता रहेगा."

"मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि कुछ नहीं होगा."

"कर्नल, तुम नहीं जानते," उषा अब उत्साह से भर गई थी, "मैं बताती हूं. मुझे झूठ बोलना पड़ा, तुम तक से झूठ बोलना पड़ा. यह सर्वथा अनुचित था मैं यह जानती हूं. परंतु मैं इतनी... इतनी अधिक भयभीत थी कि क्या बताऊं. मुझे भय था कि यदि कभी तुम्हें इस का पता लग गया तो तुम भी अन्य व्यक्तियों के समान हो जाओगे. ओह, प्रिय, मैं अत्यधिक प्रसन्न थी. फिर भी मेरे मन में यही आशंका रहती थी कि यह प्रसन्नता अधिक दिनों तक स्थिर नहीं रहेगी."

"अवश्य स्थिर रहेगी," कर्नल ने दृढ़ता से कहा.

"तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो. यह चित्रा से पूछो कि तुम्हारे यहां आने से पहले इस ने मुझ से क्या कहा था."

"तुम ने क्या कहा था?" उस का चेहरा कठोर हो गया था और ऐसा प्रतीत होता था कि वह चित्रा पर हाथ छोड़ देगा.

चित्रा ने निर्भय हो कर उत्तर दिया, "मैं ने इस से कहा था कि आप उस का वास्तविक नाम जानते हैं. क्या आप जानते हैं कि इस का सही नाम शीला भाटिया है."

"तुम ने देखा? उस ने बच्ची के मस्तिष्क में यह बात भी भर दी है?"

"मैं नहीं जानता..." उस ने व्याकुल होते हुए कहा.

"नहीं जानते?" उषा ने तुरंत उत्तर दिया, "यह सच है. मेरा वास्तविक नाम शीला भाटिया है. मैं ने तुम से झूठ बोला, कर्नल. मुझे तुम से यह कहने का साहस ही नहीं हुआ. मैं बहुत अधिक भयभीत थी. मैं ने सोचा तुम ने कहानियां सुन ली होंगी. अब तुम्हें यह मालूम हो जाएगा कि मैं वही शीला भाटिया हूं जिसे हत्यारी माना जा रहा है. शायद तुम यह सोचो कि मैं झूठे नाम से अपना परिचय क्यों दे रही हूं इसलिए मैं भयभीत थी. मेरे सभी मित्र मुझ से पृथक हो चुके थे और ऐसा लगता था कि समस्त संसार में मेरे कहने के बावजूद भी कोई मुझ पर विश्वास नहीं करता."

"नहीं, प्रिये, ऐसा मत सोचो."

"मैं ने अपना नाम बदल कर एक सहेली का नाम रख लिया, जिस का नाम उषा था. मेरा विचार था कि इस से सारी बातें मिट्टी में दब जाएंगी और मैं नया जीवन आरंभ कर सकूंगी. पर अब..." उस ने विचित्र अभिनय करते हुए कर्नल जगमोहन द्वारा दी गई हीरे की अंगूठी अपनी उंगली से निकाल ली और कर्नल जगमोहन की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि चित्रा को यह भेद ज्ञात हो चुका है."

"यह क्या? मूर्ख मत बनो!" कर्नल ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा.

"मैं मूर्ख नहीं हूं," उषा उठ कर खड़ी हो गई और उस ने अपनी आंखें बंद कर लीं, "मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती, कर्नल."

—क्रमशः

अगले अंक में :

उषा राय अपनी योजना सफल होते देख कर मन ही मन बहुत खुश हो रही थी, लेकिन क्या उस की योजना सफल हो सकी? चित्रा के बारबार कहने पर भी कर्नल को उस की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था, लेकिन उन्हें वास्तविकता का पता कैसे चला?
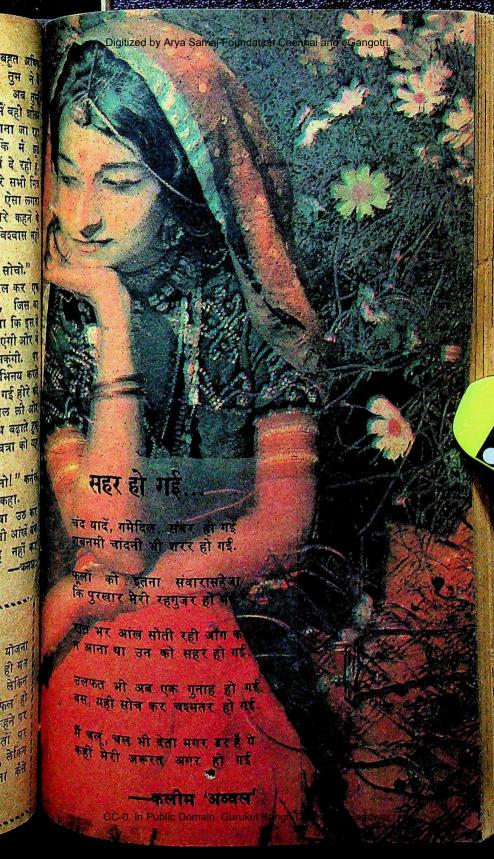
सहर हो गई...

चंद यादें, गमेदिल, [illegible] हो गई
शबनमी चांदनी भी शरर हो गई.

फूलों को इतना संवारासहेजा
कि पुरखार मेरी रहगुजर हो [illegible]

[illegible] भर आंख सोती रही जाग क[illegible]
न आना था उन को सहर हो गई.

उलफत भी अब एक गुनाह हो गई
बस, यही सोच कर चश्मतर हो गई.

मैं चलूं, चल भी देता मगर डर है ये
कहीं मेरी जरूरत अमर हो गई.

—कलीम 'अव्वल'

चित्रावली

● गहनों का अनोखा शौक : चौंक गए न? सोचते होंगे कि चित्र में क्या विशेषता है? न नाजुक बदन, न सुंदर मुख, लेकिन इस में भी आकर्षण है? एक नयापन है. ध्यान से देखिए, गला, कानों और हाथ को घेरे इन मोतियों को. मोती किसी बाजार से खरीद कर नहीं लाए गए हैं और ये साधारण ही हैं, बल्कि ये प्रशांत महासागर के गरम समुद्री भाग से ढूंढ़ढूंढ़ कर निकाले गए हैं. इस के साथ जुड़ा है ए. ग्रीमा का हार्दिक सुख और फैशन का शौक. प्लेटिनम एवं सोने में अद्भुत दस्तकारी कर के मोतियों के ये अनोखे गहने बनाने के संदर्भ में इन मोतियों की प्रशंसा की जाए या ब्रिटेन की प्रसिद्ध डिजाइनर एंड्रू ग्रीमा की?

शक्तिदायक टानिक : जी, हां, टानिक के नाम पर शीशीबोतलें मत ढूंढ़िए. बल्कि ये चारों अर्धनग्न सुंदरियां ही वह टानिक हैं, और उन के बीच बैठा है लाइट हेवीवेट वर्ल्ड चैंपियनशिप की उपाधि जीतने को उत्सुक ब्रिटेन का जान कांच. जान कांच ने शक्ति संचय करने का एक अनोखा उपाय ढूंढ़ निकाला है. उस का विचार है कि संगीत की धुन के साथ अर्धनग्न सुंदरियों के साथ सहवास से उसे प्रचुर शक्ति प्राप्त होगी और वह अपने प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने में सफल होगा.

कागज की नाव : उपरोक्त नाव कागज की ही है. इसे एसेक्स शहर (ब्रिटेन) के 'वाल्टर यूथ क्लब' के सदस्यों ने बनाया है. ब्रिटेन के प्रमुख दैनिक समाचारपत्र 'दी सन' की 1000 प्रतियों से बनाई गई यह नाव मस्ताने सदस्यों को फ्रिंटन से सात मील दूर क्लेकटन तक की जलयात्रा कराएगी. बच्चों की कागज की नाव 20वीं सदी की वास्तविकता बन गई.
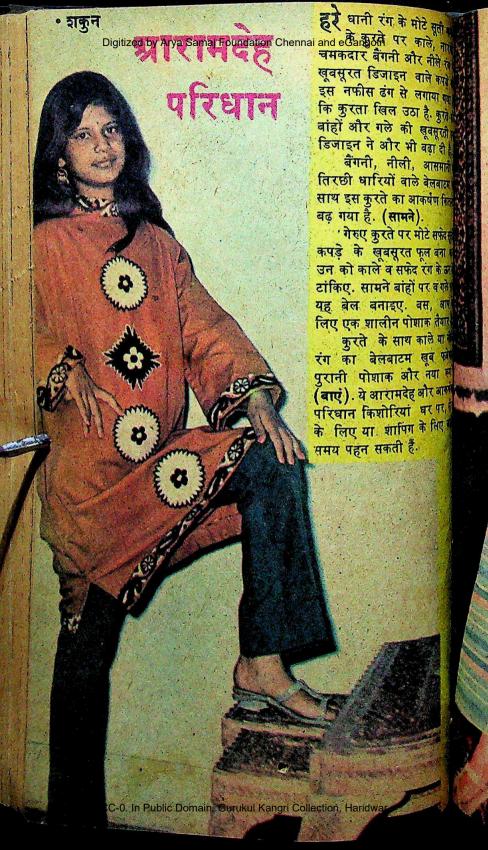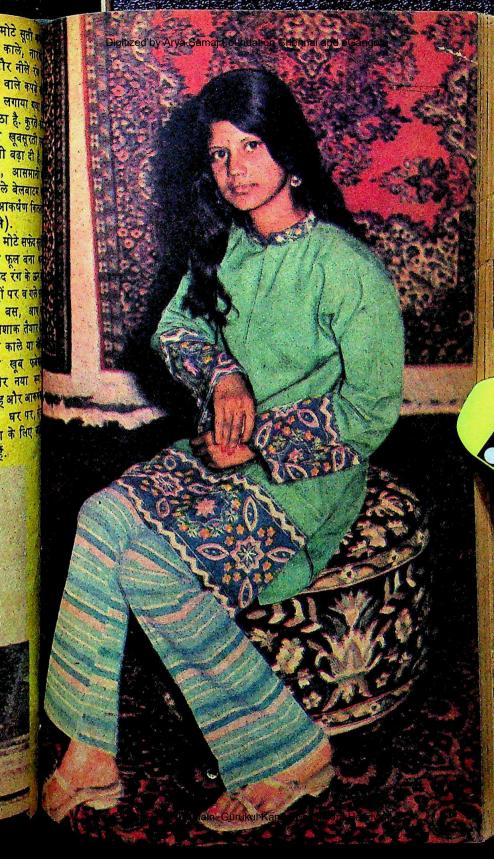
आरामदेह परिधान

हरे धानी रंग के मोटे सूती के कुरते पर काले, नारं चमकदार बैंगनी और नीले रं खूबसूरत डिजाइन वाले कपड़े इस नफीस ढंग से लगाया गया कि कुरता खिल उठा है. कुरते बांहों और गले की खूबसूरती डिजाइन ने और भी बढ़ा दी है.

बैंगनी, नीली, आसमानी तिरछी धारियों वाले बेलबाटम साथ इस कुरते का आकर्षण कि बढ़ गया है. (सामने).

'गेरुए कुरते पर मोटे सफेद कपड़े के खूबसूरत फूल बना उन को काले व सफेद रंग के टांकिए. सामने बांहों पर व गले यह बेल बनाइए. बस, आप लिए एक शालीन पोशाक तैयार

कुरते के साथ काले या रंग का बेलबाटम खूब पुरानी पोशाक और नया (बाएं). ये आरामदेह और आक परिधान किशोरियां घर पर, के लिए या शापिंग के लिए समय पहन सकती हैं.

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता : नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-55.

● मैं 29 वर्षीय सरकारी नौकर हूं. मेरी मां का पिछले 20 सालों से एक अन्य पुरुष से संबंध है. यह सब पिताजी की जानकारी में है, पर वह अपने सीधेपन या गरीबी के कारण चुप हैं. मैं जानता हूं कि मेरा भाई सगा भाई नहीं है. मुझे इस का भी गम नहीं, क्योंकि जमीनजायदाद या पैसे का झगड़ा नहीं. पर उसे पिताजी का प्यार मुझ से ज्यादा मिले, यह मुझे सहन नहीं होता. पिताजी गलतफहमी में हैं. क्या मैं मां का यह राज पिताजी पर खोल दूं? —क. ख. ग., आगरा

अपने पत्र में आप ने एक ओर लिखा है कि यह बात पिताजी की जानकारी में है, दूसरी ओर लिखते हैं, पिताजी को बता दूं? लगता है, आप के पिताजी नहीं आप ही गलतफहमी में हैं. बहरहाल, जो हो, आप को मातापिता के आपसी संबंधों में नहीं पड़ना चाहिए. अपने भाई को पिता का प्यार पाने से रोकने का भी आप को कोई हक नहीं. हां, आप अपने अच्छे स्वभाव व गुणों से पिताजी का मन जीतिए, वह आप को भी ज्यादा प्यार करने लगेंगे. भाई के साथ अंतरंग संबंध रखें या न रखें, आप की मरजी, पर मां का कसूर हो भी तो उस का दंड भाई को क्यों? आप अपना ही मन साफ रखने का प्रयत्न करें.

● मेरे चेहरे, होंठ व ठोडी पर बाल हैं, जो बहुत बुरे लगते हैं. इन का इलाज कहां होता है? मेरी गर्दन भी फूलती जा रही है. मैं विवाहित और कामकाजी महिला हूं. कृपया मेरी समस्या का हल बताइए. —सुमन भाटिया, दिल्ली

आप दिल्ली में रहती हैं. किसी ब्यूटी क्लीनिक में जा कर सौंदर्य चिकित्सा करा सकती हैं. इलैक्ट्रोलाइसिस ही इन बालों से छुटकारा पाने का स्थायी इलाज है. पता लिखा, टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर हम पता दे सकते हैं, पते छापते नहीं.

● मैं 30 वर्षीय शिक्षित बेरोजगार युवक हूं. तीन वर्ष पूर्व शादी हुई थी. दो सुं. लड़के हैं. पत्नी कद में औसत से छोटी है व उस के शरीर पर जले के बड़े बड़े दाग भी हैं. शुरू में इसे ले कर जरूर दुख हुआ था, बाद में मैं ने स्वयं को स्थिति के अनुरूप ढाल लिया व उसे प्यार करने लगा. अब भी दफ्तर के बाद अपना अधिकांश समय पत्नी व बच्चों के साथ ही बिताता हूं. पैसे की कमी नहीं है, पर पत्नी कोई भी काम ढंग से नहीं करती. मैं जितना सफाईपसंद हूं, वह उतनी ही फूहड़ है. पाक कला व सिलाईकढ़ाई सीखने को कहता हूं तो भी तैयार नहीं होती. कृपया बताएं, मैं क्या करूं कि मानसिक रूप से स्वस्थ हो सकूं. बच्चों की ऊंचाई भी कम लगती है. —विजय, इलाहाबाद

लगता है, चेतन रूप से पत्नी को स्वीकार करने के बाद अभी भी आप का अवचेतन मन उसे स्वीकार नहीं पा रहा. शायद तभी उस के दोष अधिक उभर कर फिर सामने आने लगे हैं. आप के बच्चे सुंदर हैं. इस से संतोष कर पत्नी के आंतरिक सौंदर्य को उभारने के लिए थोड़ी मेहनत कीजिए. बच्चों के भविष्य के लिए भी आप को अब निभाना ही है. घर के काम के लिए प्रशिक्षित होने के लिए किसी स्कूल या संस्था में जाना आवश्यक नहीं. आप उसे उस की सुघड़ सहेलियों के संपर्क में रखिए और सीखने के लिए प्रोत्साहित करते रहिए. पारिवारिक और महिला पत्रिकाएं भी ला कर दे सकते हैं.

● मेरे चेहरे पर चेचक के दाग होने से बदसूरत लगता हूं. बिना प्लास्टिक सर्जरी के इन्हें हटाने का कोई उपाय बताएं. —बबलू, आगरा

चिरौंजी घिस कर उस का लेप करें. यह प्रयोग दो महीनों तक दोहराएं. दाग कुछ हलके पड़ जाएंगे. पूरी तरह इन्हें ठीक नहीं किया जा सकता सिवा प्लास्टिक सर्जरी के.

● मैं 18 वर्षीय बी. काम. का छात्र हूं. गत वर्ष से मेरे स्तन उभरते आ रहे हैं, जिस से काफी शर्मिंदा होना पड़ता है. कृपया किसी ग्रंथि विशेषज्ञ का या संस्था का पता बताएं.
—क. ख. ग., नई दिल्ली

यदि आप के अन्य अंगों का शारीरिक विकास भी इसी अवधि में तेजी से हुआ है तो घबराने की कोई बात नहीं. कुछ समय में आप का शरीर स्वयं ही संतुलन में आ जाएगा. यदि शारीरिक विकास उस से पूर्व हो चुका है व अभी केवल यही समस्या उभरी है तो आप मेडिकल इंस्टीट्यूट या इरविन अस्पताल के 'इंडोक्राइनोलाजी' विभाग में दिखाइए.

● मेरी उम्र 18 वर्ष है, पर अभी तक लड़कियों का सा उभार नहीं आ पाया है. रंग सांवला है, सिर के बाल छोटे व शरीर दुबला. इसी कारण चिंतित हूं. क्या करूं?"
—क. ख. ग., कैथल

आप अपना सामान्य स्वास्थ्य सुधारिए. भोजन में अंडा, पनीर, दालें, दूध, फल व सब्जी की मात्रा बढ़ाइए. साथ में व्यायाम पर भी ध्यान दीजिए. इस से आप का रंग भी निखरेगा और शरीर भी भरेगा.

स्तनों के विकास के लिए ये विशेष उपाय भी कर सकती हैं : नहाने से पूर्व जैतून के तेल से गोलाई में मालिश, फिर फुहारों का स्नान. प्रति दिन सुबह जमीन में चटाई पर सीधे लेट कर दोनों हाथ अगलबगल फैलाइए. हाथों में एकएक मोटी किताब या ईंट पकड़िए. फिर इस वजन सहित हाथों को धीरेधीरे उठा कर छाती की ओर लाइए व वापस ले जाइए. पांच से दस बार रोज यह व्यायाम कुछ समय तक कीजिए. शरीर की बनावट और रंग के अनुसार सही वेशभूषा व मेकअप अपना कर भी आप अपनी सौंदर्य संबंधी कमियां कुछ सीमा तक छिपा सकती हैं.

● मेरी उम्र 16 वर्ष है. सहपाठियों में लोकप्रिय होना चाहता हूं, पर उन के सामने बोलते हुए तुतलाने लगता हूं. स्मरण शक्ति व आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए क्या करूं?
—क. ख. ग., बलागिर

अकेले में बाहर जा कर या घर में शीशे के सामने खूब बोलने का अभ्यास कीजिए. साथ ही सामान्य अध्ययन भी बढ़ाइए. मन से यह चिंता और हीन भावना निकाल दीजिए कि आप नहीं बोल सकते या आप को मात्र दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए ही बोलना है. सहज रहने व सामान्य ज्ञान बढ़ाने पर ही आत्मविश्वास बढ़ेगा और आप की जबान ठीक होगी. चिंता छोड़ने से स्मरण शक्ति भी सुधरेगी ही.

● मैं 16 वर्षीया छात्रा हूं. कद केवल 4 फुट 10 इंच है. वैसे सुंदर हूं, पर कद के मारे आत्महत्या करने को जी चाहता है.
—रे. रा., किरनपुर

कद की चिंता छोड़ कर अपने अन्य गुणों का विकास कीजिए. खड़ी धारी वाले कपड़े (बेल बाटम या साड़ी) पहनिए. बालों की शैली ऊंची रखिए. ऊंची एड़ी वाली चप्पल पहनिए. इन से कद की कमी कुछ हद तक पूरी की जा सकेगी. पर मुख्य बात है, हीन भावना दूर कर के स्वयं में आत्मविश्वास लाना. शरीर पर थोड़ी देर ही ध्यान जाता है, बाद में तो व्यक्तित्व के अन्य गुण ही आकर्षित करते हैं. पौष्टिक संतुलित भोजन व खेलकूद, व्यायाम पर भी ध्यान दीजिए.
—नीरजा ●

• कंचन

उपहार : आप के

आप के मित्र का जन्मदिन नजदीक है और आप अभी तक यह निर्णय
खरीदें, जिसे देख कर वह खुशी से झूम उठे. इस सुखद अवसर

के

ह निर्णय

द अक्सर

प्रिय मित्र के लिए
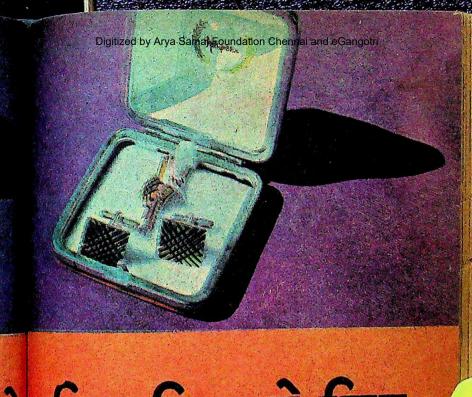
नहीं कर पा रहे हैं कि उसे कौन सा उपहार भेंट में दें तो आप ऐसा उपहार
र ये आकर्षक नमूने के कफलिंग्स और टाई पिंस कैसे रहेंगे?
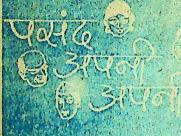
इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री प्रकाशचंद्र, भीलवाड़ा, हैं.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● टेलीफोन की घंटी बजी. डाक्टर साहब ने चोंगा उठाया, सुना और फिर उसे टेलीफोन पर रख कर हड़बड़ा कर बोले, ''मेरा 'विजिट' का बैग दो. अभीअभी फोन आया था. वह कह रहा था, तुम्हारे बिना मैं मर जाऊंगा.''

डाक्टर की लड़की शरमाते हुए बोली. ''तो रहने दीजिए, पिताजी. वह फोन मेरे लिए था.''

—प्रकाशचंद्र, भीलवाड़ा

● एक व्यक्ति दिल्ली में किसी बस स्टाप पर खड़ा आफिस जाने के लिए बस का इंतजार कर रहा था. एक महिला ने उस से पूछा, ''चांदनी चौक के लिए कौन सी बस जाएगी?''

उस ने उत्तर दिया, ''41 नंबर की.''

जब वह आफिस से लौटा तो वही महिला उसी बस स्टाप पर खड़ी थी. उस ने पूछा, ''आप को अभी तक बस नहीं मिली?''

महिला ने कहा, ''40 बसें तो गुजर गई हैं. अब अपनी ही बस आने वाली है.''

—रवींद्रकुमार सक्सेना, अलीगढ़

● अध्यापक : क्या तुम सिद्ध कर सकते हो कि बहुत से व्यक्ति मौत से नहीं डरते?

विद्यार्थी : जी, हां. यह जानते हुए भी कि 90 प्रतिशत व्यक्ति खाट पर मरते हैं, हर व्यक्ति खाट पर ही लेटता है.

● पहला : मुझे आप की पत्नी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ.

दूसरा : लेकिन आप को भ्रम कैसे हुआ कि मेरी पत्नी से मिलना सौभाग्य की बात है?

—जीतेंद्र अग्रवाल, उदयपुर

● एक बैंक क्लर्क ने लेखक बनने का निश्चय किया और पत्रपत्रिकाओं के संपादकों को अपनी रचनाएं भेजनी शुरू कर दीं. प्रत्येक रचना के साथ एक पत्र में लिखा होता, ''मुझे एक बैंक ने कैद कर रखा है. कृपया मुझे मुक्ति दिलवाएं.''

किसी तरह एक रचना उस बैंक के मैनेजर के हाथ लग गई. उस ने क्लर्क को उसी वक्त बुलवाया और कहा, ''आप के लिए एक बहुत अच्छी खबर है. आप इस बैंक के कैदी नहीं रह गए. बैंक आप को बिना किसी शर्त के मुक्त करता है.''

—अमरजीतकौर, सहारनपुर

● ब्रिटेन के एक मेडिकल कालिज के सूचनापट पर एक दिन प्रिंसीपल का नोटिस लगा : विद्यार्थी यह जान कर खुश होंगे कि महारानी ने मुझे अपना निजी डाक्टर नियुक्त किया है.

अगले दिन नोटिस के नीचे लिखा हुआ था : भगवान रानी की रक्षा करे.

—गुरमीतसिंह, नई दिल्ली

आरती का विवाह

(पृष्ठ 43 का शेषांश)

सिविल मैरिज के बारे में पूछा था."

निखिल ने कहा, "वह मेरी राय लेने के लिए मेरे पास आया था और मैं ने उसे तुम से बात करने के लिए कहा था. मैं ने उस से कहा कि मैं जन्मपत्रियों में विश्वास नहीं करता. मैं ने उस से यह भी कहा कि वह तुम्हें तैयार कर ले तथा आवश्यक कदम उठाए और फिर सिविल मैरिज कर ले."

"क्या तुम्हारी राय में हमारा ऐसा करना ठीक होगा?" आरती ने उत्सुकतापूर्वक पूछा.

"हां, ठीक होगा. ठीक क्यों नहीं होगा?" निखिल ने पूछा.

"इस में तो कोई संदेह नहीं कि मैं जन्मपत्रियों में विश्वास नहीं करती. लेकिन मम्मी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है और वह छोटीछोटी बातों से भी परेशान हो उठती हैं. मैं यह नहीं. . ."

"परवा मत करो," निखिल ने कहा, "वह उस से कहीं अधिक कठोर हैं, जितना कि तुम समझती हो. इस से उन्हें आघात तो पहुंचेगा लेकिन वह ठीक हो जाएंगी."

"पापा की क्या राय है?"

"बेचारे पापा! मेरा यह निश्चित मत है कि वह इसे गलत नहीं कहेंगे. यदि तुम्हें सुबोध पसंद है तो आगे बढ़ो और विवाह करो. नहीं तो, मैं नहीं जानता कि तुम्हारा विवाह कब तय हो सकेगा."

इस के 15 दिनों के बाद आरती का सुबोध के साथ विवाह हो गया. एक गवाह निखिल भी था. विवाह के पंजीकरण के तुरंत बाद आरती ने अपने मम्मी-पापा से बिदा लिए बिना सुबोध के घर के लिए प्रस्थान कर दिया. वह उन के सामने जाने का साहस नहीं कर पाई. लेकिन उस ने निखिल से उन्हें प्रसन्न कर लेने की प्रार्थना की.

कई महीने गुजर गए और आरती को यह चिंता सताने लगी कि उस के विवाह के प्रति पता नहीं क्या प्रतिक्रिया हुई होगी. उस ने निखिल को पत्र लिखा. उस ने उत्तर में लिखा कि मम्मी बहुत क्रुद्ध हुईं लेकिन उसे आशा है कि वह समय आने पर उसे क्षमा कर देंगी. उस ने आरती को यह नहीं बताया कि वह बीमार भी हैं.

निखिल ने पिता से बातचीत कर के उन्हें अपने विचारों से सहमत करा लिया. तब पिता और पुत्र ने अपने पंडित को बुलाया. जब उस ने आरती के सुबोध के साथ विवाह के बारे में सुना तो उस ने मुंह लटका लिया लेकिन कुछ समय तक सोचने के बाद उस ने कहा, "जो कुछ हो चुका है, उसे मिटाया नहीं जा सकता. लेकिन उलटे ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए पूजा करनी पड़ेगी."

"हम तैयार हैं," संतोषकुमार ने कहा.

"आप को दान के रूप में ढाई तोले सोना, ढाई मीटर पीला रेशमी कपड़ा, पांच किलो मिठाई और मेवे, पांच किलो घी और सौ किलो आटा देना चाहिए. इस के अतिरिक्त आप को सौ ब्राह्मणों को भोज भी देना चाहिए."

सरस्वती यह सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुईं. दान और पूजा करने का निश्चय किया गया तथा आरती और सुबोध को भी आमंत्रित किया गया.

जब सुबोध ने इस बारे में सुना तो उस ने कहा, "पंडित ने हमें यह सब पहले क्यों नहीं बताया? हम बिना किसी परेशानी के विवाह कर लेते."

आरती इस बात की संभावना से प्रसन्न थी कि अपने परिवार के साथ उस का समझौता हो जाएगा. ●

फरिश्ते या कातिल?

पारसमणि चित्रालय की फिल्म 'फरिश्ते या कातिल?' का निर्देशन स. म. अब्बास कर रहे हैं. फिल्म का संगीत कल्याणजी आनंदजी ने दिया है. फिल्म के मुख्य कलाकार शशि कपूर, रेखा [illegible] मेहता हैं.

(नीचे) 'फरिश्ते या कातिल?' में रेखा और कृष्ण मेहता, (दाएं) **लक्ष्मीछाया—वही पुरानी भूमिका.**
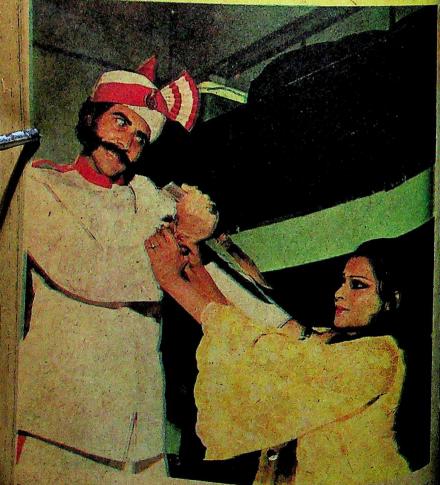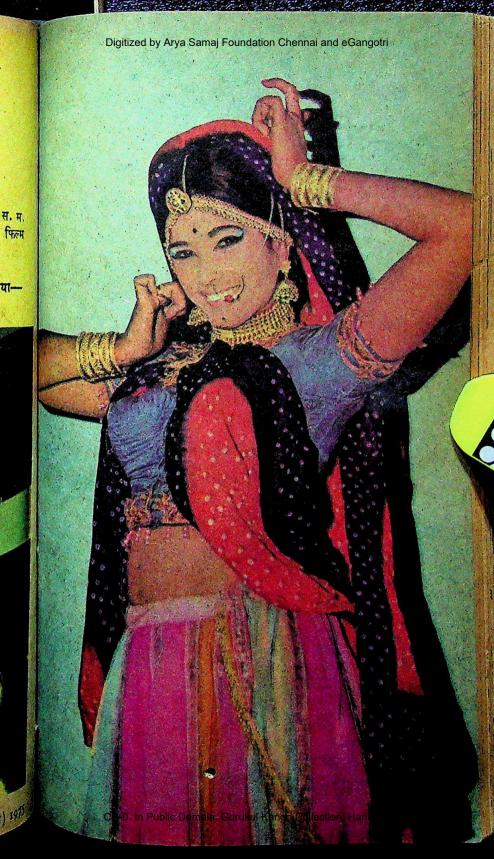
विश्व पाकेट बुक्स
की सात नई पुस्तकें
दिल्ली के आंसू उस ने एक दिन में
कत्ल कर के भारतभूमि
खून से लाल कर दिया. फिर भी
के पैर चूमते थे. आखिर किस लिए?
एक और पराजय दिशांग
भोलेभाले सैनिकों को चीनी जबरदस्ती
गुलाम बनाना चाहते थे. मगर
उस के साथियों ने उन का षड़यंत्र विफल कर
दिया. चीनी षड़यंत्रों की जानकारी देने वाला
एक रोमांचक उपन्यास.
स्त्री और पुरुष के एक लहर टूटी हुई
मात्विक प्रेम संबंधों की मार्मिक कहानी जो मन
को निराशा की अतुल गहराइयों से उबार कर
जीवन की सरसता के शिखर तक ला देती है.
उत्तरदान स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने
वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता
पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों
को उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.
ईसा से तीन हजार समय के उस पार
वर्ष पूर्व के भारत की कहानी जो उस समय की
सभ्यता की रोमांचक परतें खोलती जाती है.
लगातार तीन विमानों का मौत की घाटी में
अपहरण. और फिर...भारतीय चीनी गुप्तचरों
की मुठभेड़ की रहस्य से भरपूर रोमांचक कथा.
डाल से बिछुड़े ब्रिटेन में बसने वाले
भारतीयों की अपमानजनक जिंदगी के कैनवास
पर इन्सानियत के रंग में रंगी एक सच्ची तस्वीर.
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.
विश्वविजय प्रकाशन
प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12,
कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट.
आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55

● 4 नवंबर के पटना आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए 3 नवंबर को हाजीपुर से पटना जाने वाले छात्र आंदोलनकारियों को रोकने के लिए मजिस्ट्रेट विभिन्न मार्गों पर छानबीन कर रहे थे. इस पर पटना आने वाले लोगों ने अपने को कई जत्थों में बांट लिया. एक व्यक्ति को लकड़ी के एक स्ट्रेचर पर लिटा कर चार व्यक्ति उसे कंधों पर उठाए आगेआगे चलते. शेष उस के पीछे चल कर प्रतिबंधित स्थानों से निकल जाते.

जब ऐसी ही कई 'शवयात्राएं' निकलीं तो मजिस्ट्रेट को शक हुआ और उन्होंने 'शवों' की छानबीन करने का निश्चय किया. भेद खुलते ही सत्याग्रही इधरउधर भाग गए.

—प्रदीप, पटना (प्रेषक : विजयकुमार टेकरीवाल, सिंहेश्वर)

● पिछले वर्ष हम 15-16 छात्राएं सिटी बस से कालिज जाया करती थीं. उसी बस में एल. एल. बी. के लड़के भी जाते थे. लड़के कभी भी बस का टिकट नहीं लेते थे. जब भी कंडक्टर उन से टिकट के लिए पूछता, सभी अपनी जेबें झाड़ कर दिखा देते कि पैसे ही नहीं हैं. कंडक्टर ज्यादा कहता तो वे उसे धमकी दे देते, "क्यों, भैया, क्या कालिज रोड पर पहली बार आए हो?"

बेचारा डर कर चुप हो जाता. हम सभी मन ही मन बहुत झल्लाती थीं. एक दिन हम ने सोचा, 'हम लड़कों से क्यों पीछे रहें.' अतः हम ने तय किया कि हम लोग भी टिकट नहीं लेंगे. दूसरे दिन जब कंडक्टर ने हम लोगों से टिकट के लिए पैसे मांगे तो हम में से एक ने उसे सौ रुपए का नोट दे कर कहा, "बस में बैठी सब लड़कियों के टिकट दे दो."

सौ का नोट देख कर वह कुछ सकपकाया. फिर बोला, "टूटे पैसे दीजिए, मेरे पास इतनी रेजगारी नहीं है."

हम सब अपनी सफलता पर खुश थीं. हम ने कहा, "हमारे पास भी टूटे पैसे नहीं हैं, इसी से दे दीजिए."

कंडक्टर खड़ाखड़ा कुछ सोचने लगा. फिर वह हमें सौ का नोट लौटाने लगा तो लड़के ने उस से नोट मांगा और उस की रेजगारी कंडक्टर को दे दी. कंडक्टर ने हमें टिकट दे दिए. इस पर लड़के खूब हंसने लगे.

—शिल्पी, फैजाबाद

● हिंदी का पीरियड था और प्रोफेसर साहब व्याख्यान दे रहे थे. सहशिक्षा होने के कारण क्लास में काफी लड़कियां भी थीं जो कि अगले बेंचों पर बैठा करती थीं. पढ़ातेपढ़ाते अचानक उन की नजर एक हिप्पीनुमा लंबे बालों वाले एक लड़के पर पड़ गई. उसे देखते ही वह कुछ बिगड़ से गए और बोले, "एक हमारे समय का विद्यार्थी जीवन था, जब छात्र बिलकुल शिष्ट और सीधेसादे हुआ करते थे. पर आज के लड़कों को देखिए, लंबेलंबे बाल, बढ़े हुए नाखून और साथ ही ब्लाउज प्रिंट की कमीजें पहन कर पढ़ने आ जाते हैं. आखिर आप लोगों को ऐसी प्रेरणा मिली कहां से?"

"जी, आगे से," पीछे से किसी ने धीमे से कहा.

पूरी क्लास हंसी से गूंज उठी.

—प्रदीप बासकी, पटना ●
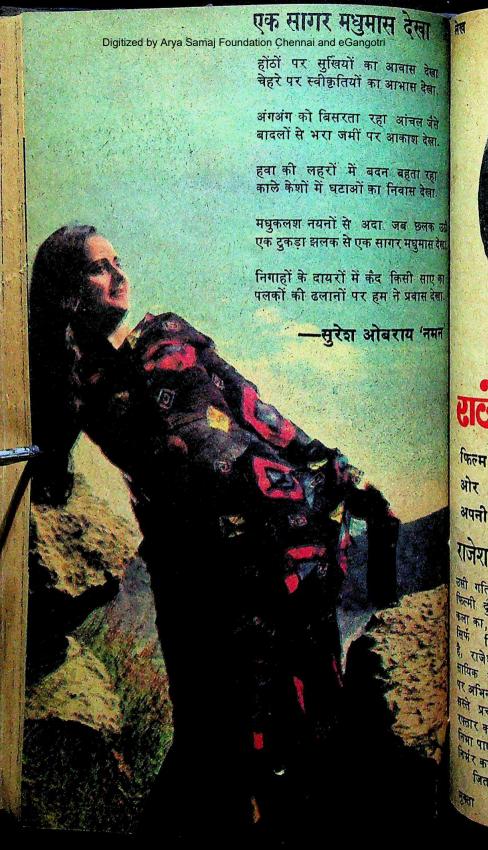
एक सागर मधुमास देखा

होंठों पर सुर्खियों का आवास देखा
चेहरे पर स्वीकृतियों का आभास देखा.

अंगअंग को बिसरता रहा आंचल जैसे
बादलों से भरा जमीं पर आकाश देखा.

हवा की लहरों में बदन बहता रहा
काले केशों में घटाओं का निवास देखा.

मधुकलश नयनों से अदा जब छलक उठी
एक टुकड़ा झलक से एक सागर मधुमास देखा.

निगाहों के दायरों में कैद किसी साए का
पलकों की ढलानों पर हम ने प्रवास देखा.

—सुरेश ओबराय 'नमन'

• गिरधारीलाल पाहवा

राजेश खन्ना की वापसी

फिल्म जगत में एकाएक उभर कर दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेने वाला अभिनेता राजेश खन्ना अपनी बिगड़ती इमेज को सुधारने में क्या सफल हो सकेगा?

राजेश खन्ना जिस तीव्र गति से हिंदी रजतपट पर चमका, उसी गति से नीचे आ गिरा. लेकिन फिल्मी दुनिया में, जहां प्रतिभा का, कला का, अभिनय क्षमता का मानदंड सिर्फ टिकट खिड़की की सफलता है, राजेश को चंद चित्रों की व्यावसायिक सफलता ने पुनः उठा दिया है. पर अभिनय पक्ष पर बल देने की अपेक्षा सस्ते प्रचार का भूखा राजेश वक्त की रफ्तार को समझते हुए इसे कहां तक निभा पाएगा, इसी पर उस का भविष्य निर्भर करता है.

जितनी संख्या में प्रति वर्ष फिल्मों का निर्माण होता है, उस अनुपात में यहां चेहरों का अभाव है. पर गुटबाजी, अभिनेत्रियों से अपनी जोड़ियां, व्यावसायिक सफलताएं या प्रचार की बदौलत जो कलाकार जमे हैं, उन में राजेश प्रमुख है. राजेश स्वयं को भाग्यशाली कलाकार या 'सुपर स्टार' कहना पसंद करता है. पर उसे चढ़ाने में कुछ फिल्मों की अप्रत्यक्ष कामयाबी का हाथ रहा है.

'आराधना' के सफल होते ही राजेश की मांग अनायास बढ़ गई. हालांकि इस सफलता के पीछे शक्ति सामंत, राहुलदेव बर्मन, किशोर की मधुर आवाज और शर्मिला टैगोर के परिपक्व अभिनय आदि

कई कारण थे लेकिन इस का लाभ मिला राजेश को. शर्मिला के साथ उस की जोड़ी बन गई और रोज नएनए प्रस्ताव आने लगे. राजेश ने अपनी मांग का पूरा फायदा उठाया. उस ने हर प्रस्ताव को स्वीकार कर 40 फिल्मों का ढेर अपने पास कर लिया. फिर अभिनय को फैक्ट्री समझ कर दिनरात दोदो, तीनतीन पारियों में काम करने लगा.

राजेश की अनायास मांग का असर अन्य अभिनेताओं पर पड़ा. मनोज, शशि कपूर, सुनील दत्त, जीतेंद्र आदि की मांग गिर गई. ये पुराने चेहरे गर्दिश में आ गए. निर्माताओं में भेड़चाल प्रचलित है. वे सब राजेश व शर्मिला की जोड़ी के पीछे दौड़ने लगे. पर 'अमर प्रेम' और 'सफर' दोएक अपवादों को छोड़ कर अधिकांश फिल्मों में राजेश का वही 'ग्लैमर ब्वाय' मार्का एक सा ही रोल था, जिसे देखतेदेखते दर्शक ऊब रहे थे. उधर सफलता के गर्व में राजेश अपनी कमजोरियों को नजरअंदाज करता गया और उस के इर्दगिर्द खुशामदियों की भीड़ एकत्रित होने लगी, जिन्हें फिल्मी भाषा में 'चमचा' कहा जाता है.

कोई नयापन नहीं

कलाकार की प्रतिभा को निखारने में निर्देशक, लेखक और पार्श्वगायक का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है. साधारण सी बात समझने में राजेश को काफी समय लगा. 'आराधना' की अपार सफलता में शक्ति सामंत, 'आनंद' में हृषिकेश मुखर्जी और 'दुश्मन' की कामयाबी के पीछे दुलाल गुहा, वीरेंद्र सिन्हा और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का हाथ था. लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचने के बाद जब उस की मांग कम होने लगी तो उस ने प्रचार के सस्ते हथकंडे अपनाने शुरू कर दिए, क्योंकि उभरते हुए कलाकार के लिए 20-25 फिल्मों में काम करने के लिए अनुबंध करना कोई उपलब्धि नहीं, उपलब्धि है सौंपे गए चरित्रों का गंभीरता से अध्ययन कर उन का निर्वाह करना. इस कसौटी पर राजेश खरा नहीं उतरा. 'दुश्मन' के बाद राजेश की असफल फिल्मों का जो सिलसिला शुरू हुआ तो दो वर्ष जारी रहा. 'महबूब की मेंहदी,' 'छोटी बहू,' 'बदनाम फरिश्ते,' 'मेरे जीवन साथी,' 'जोरू का गुलाम,' 'मालिक,' 'राजारानी' और 'हमशक्ल' ये सारी फिल्में असफल या औसत से नीचे रहीं. अभिनय कला के नाम पर कहीं लीक से हट कर उस ने कोई नयापन नहीं पेश किया. हर फिल्म में वही उछलकूद और घिसापिटा काम.

डिंपल के कारण

वर्षों प्रेयसी अंजू महेंद्र के साथ रहने और उसे बंगला बनवा देने के बावजूद राजेश ने बाबी (डिंपल कपाड़िया) से शादी रचा ली. उस ने अपनी शादी ही धूमधाम से नहीं की, उस का नियोजित प्रचार भी कराया. वैसे डिंपल उस के लिए भाग्यशाली साबित हुई. शादी के बाद गर्दिश में आए राजेश की चंद फिल्में टिकट खिड़की पर चल निकलीं और उसे नएनए अनुबंध मिलने लगे.

अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए राजेश ने शक्ति सामंत की भागीदारी में 'शक्तिराजा फिल्म्स' के नाम से वितरण संस्था खोल ली है और 'आशीर्वाद फिल्म्स' के नाम से निर्माण संस्था. उस का बंगला 'आशीर्वाद' पहले राजेंद्रकुमार के पास था. वह रजत जयंती कलाकार रहा. अब राजेश अभिनीत फिल्में रजत जयंती मनाती हैं, अतः वह उस बंगले को भाग्यशाली मानता है.

'आनंद' का सब को हंसाने वाला गंभीर रोगी 'बावर्ची' का हंसमुख बावर्ची और 'नमक हराम' का ट्रेड यूनियन नेता—इन भूमिकाओं में हृषिकेश मुखर्जी ने उस की प्रतिभा को निखारा. 'सफर' में असित सेन और 'आविष्कार' में बसु भट्टाचार्य ने उसे पिटीपिटाई बेजान कहानियों के भंवर से निकाल कर नई राह दिखाई. लेकिन 'स्टार' बनने के चक्कर में राजेश का झुकाव फार्मूले

फिल्म 'प्रेम कहानी' में राजेश खन्ना, मुमताज और शशि कपूर : राजेश की मांग अब फिर बढ़ने लगी है.

न हट सका. वही त्रिकोण-कहानियां—मारधाड़, बागबगीचों में दौड़धूप, सस्ता रोमांस, अंग प्रदर्शन, कारों की दौड़ या अदालत के कटघरे में खड़े कैदी के दायरे से राजेश बाहर न निकल सका.

इधर 'दाग,' 'आप की कसम' और 'रोटी' सफल फिल्में साबित हुईं, जब कि 'अजनबी' औसत रही. धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन और सुनील दत्त ही नहीं, मनोज और शशि कपूर की मांग आज राजेश की अपेक्षा ज्यादा है.

कभी हेमा मालिनी के साथ काम करने से इनकार करने वाला राजेश अब स्वयं उस की शरण में आ गया है. 'प्रेमनगर' की सफलता के बाद अब राजेश स्वयं अपने निर्माताओं से हेमा को लेने की सिफारिश करने लगा है क्योंकि उस की अभिनेत्रियों में मुमताज व राखी पुरानी पड़ गई हैं. शर्मिला से उस की जोड़ी टूट चुकी है और सायरा से उस की कभी बनी नहीं. निर्माता हेमा और धर्मेंद्र की जोड़ी को भाग्यशाली समझते हैं क्योंकि उन की कोई फिल्म अभी तक टिकट खिड़की पर असफल नहीं हुई. फिर हेमा और धर्मेंद्र का इतना गहरा रोमांस चल रहा है कि जो भी निर्माता उन के पास आता है वे एकदूसरे के नाम की सिफारिश करते हैं. 'प्रेमनगर' के दक्षिण भारतीय निर्माता भी अगली फिल्म के लिए धर्मेंद्र से अनुबंध कर रहे हैं.

अब इन अभिनेत्रियों के बाद जीनत, रेखा आदि के साथ अभी तक राजेश की जोड़ी नहीं जमी तो वह अपनी साली सिंपल कपाड़िया को फिल्मों में ले आया. डिंपल ने राजेश से शादी कर फिल्मों से संन्यास ग्रहण करने की घोषणा की तो सिंपल के फिल्मों में आने की चर्चा हुई. पर राजेश के निकटवर्ती सूत्रों

ने कहा, "सिंपल कभी फिल्मों में नहीं आएगी. वह 'सुपर स्टार' की साली है और 'काका' उसे किसी हीरो की बाहों में नहीं देख सकता."

लेकिन अब वही राजेश खन्ना प्रचार के चक्कर में अपनी साली को फिल्मों में ले आया है. शक्ति सामंत की फिल्म में राजेश के साथ मुख्य भूमिका सिंपल निभा रही है. यश चोपड़ा, जे. ओमप्रकाश और प्रकाश मेहरा भी उसे अपनी अगली फिल्मों के लिए अनुबंधित करना चाहते हैं, पर नायक की भूमिका किस को देंगे? राजेश को या ऋषि कपूर को? अपनी गिरती साख और लोकप्रियता को संभालने के लिए 'काका' ने सिंपल का आंचल पकड़ा है ताकि वह चर्चित रहे.

स्वभाव से 'काका' तुनकमिजाज है और जब उस की एकदो फिल्में सफल हो जाती हैं तो उस की तुनकमि बढ़ जाती है. वैसे निकट से गोरे राजेश में कोई ऐसा आकर्षण नहीं देख कर कोई रुक जाए. हां, हिप्पी बाल, आधुनिक ढंग का पहनावा हलकी सी बढ़ी हुई दाढ़ी में वह यह प्रभाव डालना चाहता है कि वह व्यस्त है.

इधर कहानी के प्रति वह सतर्क गया है. कहानी अच्छी हो और निर्दे जानामाना हो तो पारिश्रमिक के बारे 'काका' किसी स्तर पर समझौता लेता है, क्योंकि अब शायद वह यह सूस करने लगा है कि वह कहानी निर्देशक की बदौलत ही स्तर का अ नेता बन सकता है. उसे अपनी बरकरार रखनी है तो उसे इन दोनों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए.

"कुछ प्रेम दृश्य, कुछ खलनायक से मारधाड़ और कुछ हीरो हीरोइन पर प्रेम गीत फिल्मा कर मैं ने आधी फिल्म बना ली है, अब तुम्हें फिल्म की कहानी लिखनी है."

ब. न. न. मलैया

हत्याएं : सिद्धांत और व्यवहार

प्रारंभ से ही रोकने की लाख कोशिशों के बावजूद समाज में हत्याओं का सिलसिला चलता रहा है, लेकिन इन के मौलिक कारण क्या हैं?

युग और हर देश में हत्या का अपना आकर्षण रहा है, पर साथ ही इस से य को धक्का भी पहुंचता है; में भय और करुणा की भावनाएं भी लित होती हैं. फिर भी न तो इस अध्ययन किया गया है और न इस का विश्लेषण हुआ है.

जैसे यह नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य की हत्या कब होगी, उसी र यह भी नहीं बताया जा सकता है मनुष्य की मौत कब आ घेरेगी. अर्थात का भी मनुष्य के साथ वैसा ही चौंका वाला संबंध है, जैसा हत्या का.

मृत्यु या तो भूकंपों, तूफानों, सूखों बाढ़ों से प्राकृतिक ढंग से होती है मनुष्य की अपनी ही जल, थल और पर की जाने वाली गलतियों से, या फिर सब से अधिक युद्धों से. पर मौतों से मनुष्य इतना प्रभावित नहीं जितना तब होता है, जब कोई रास्ते से भटका हुआ व्यक्ति किसी व्यक्ति के जीवन को नष्ट कर देता है.

इस प्रकार मनुष्य का यह व्यवहार बड़ा ही विचित्र है. एक साधारण सी हत्या से उसे गहरा सदमा पहुंचता है तथा एक बहुत बड़ी प्राकृतिक आपदा से होने वाली जनहानि उसे जरा भी विचलित नहीं करती.

जब हम इस विचित्र व्यवहार का गहराई से अध्ययन करते हैं तो देखते हैं कि जब मृत्यु प्राकृतिक रूप से या मनुष्य की अपनी गलतियों से होती है तो हम चौंकते नहीं हैं क्योंकि उस के पीछे मनुष्य की अपनी कोई कुभावना, ईर्ष्या, गैर-कानूनी मनोवृत्ति या सामाजिक चुनौती नहीं होती. किंतु ठीक इस के विपरीत, हत्या से हमारे दिल व दिमाग को धक्का सा लगता है, क्योंकि वह हत्या इच्छा से की गई होती है, जो रोकी नहीं जा सकती तथा जिस की जड़ें मानव मस्तिष्क में अंदर तक चली गई होती हैं.

इसी लिए अपने साहित्य में हमें हत्याओं और अपराधों का विशद चित्रण देख कर कोई आश्चर्य नहीं होता. इतिहास भी हमें यही बताता है. मानवविज्ञान, मनोविज्ञान, जीवविज्ञान और समाजशास्त्र के क्षेत्र में शोध करने वालों ने इस का अच्छा अध्ययन किया है.

एक सामाजिक समस्या के रूप में हत्या के साथ जूरी के सदस्य, शासन करने वाले तथा कानून बनाने वाले जुड़े हुए हैं, जब कि साहित्य में उस का महत्त्व उस के उद्देश्य तथा उस के कारण मानव मस्तिष्क में होने वाले संघर्ष से है. लेकिन कानून उस के उद्देश्य को नकारता हुआ उस मनोवृत्ति पर अपना ध्यान केंद्रित करता है, जि वह मानवीय मूल्यों की कमी मानता है. समाजशास्त्री हत्या को एक सामाजिक अपराध मानते हुए उस का मूल कारण अपराधी के व्यक्तित्व को या उस के वातावरण को मानते हैं.

साहित्य का मूल : हत्याएं

विश्व में जितना भी साहित्य है—गद्य में, पद्य में या महाकाव्य, नाटक या उपन्यास के रूप में—वह मुख्यत: हत्याओं की कहानियों से भरा हुआ है.

एस्कीलिस, सोफोक्लीज, यूरीपाइडिज जैसे प्रसिद्ध नाटककारों की सर्वश्रेष्ठ कृतियों की मूलकथा हत्याओं से ही संबंधित है तथा एगमेनान, क्लाइटेमेंसट्रा, एलेक्ट्रा, ओडिपस और एफेजेनिया कुछ ऐसे हत्यारे हैं जिन्होंने अपनी व्यक्तिग[त] ... कमजोरी के कारण अपरा[ध] किए.

शेक्सपियर की अमर त्रासदियों ... दुखांत नाटकों में से 'हेमलेट', 'मैकबेथ', 'ओथेलो' और 'जूलियससीजर' हत्या प[र] ही आधारित हैं. इस के अलावा जरम[नी] के हेप्टमैन, रूस के चेखव, फ्रांस के रेसी[न] तथा अमरीका के ओ'नील ने अप[नी] कृतियों में सजीवता लाने के लिए हत्या[ओं] का प्रयोग किया है.

हत्याओं का वर्णन किस लिए?

अब सवाल उठता है कि साहित्य [में] हत्या को इतना महत्त्व क्यों दिया ग[या] है?

जब हम इस का उत्तर खोजते हैं [तो] वह हमें महान यूनानी दार्शनिक अर[स्तू] की पुस्तक 'पोयटिक्स' में मिल जाता है. उन के समय के लोग दुखांत नाटकों [को] पसंद करते थे. इस का कारण बताते हु[ए] अरस्तू ने कहा है कि यूनानी दुखांत नाटक का नायक हत्यारा होता है. वह ऐ[से] व्यक्ति का प्रतिरूप होता है जो भावों ... में या मानवीय सीमाओं के कारण कि[सी] की हत्या कर देता है और अंत में स्व[यं] भी मर जाता है.

हत्या के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के बा[रे] में अरस्तू का कथन है कि इस से व्यक्ति के दया और करुणा के भावों का विरे[चन] हो जाता है तथा दुखांत नाटकों का द[र्शक] भयानक भावनाओं से मुक्त हो कर अपन[ी] संपूर्ण शक्ति के साथ वास्तविक संसा[र] की समस्याओं का सामना करता है.

आधुनिक साहित्य : हत्याओं का पिटा[रा]

आधुनिक काल में भी गोर्की, ड्यूमा, डाले, दोस्तावस्की, स्टेनबेक और पो आ[दि] लेखकों ने अपराध, सेक्स और नश[ीले] पदार्थों पर आधारित उपन्यास लिखे ... जिन में बहुत सी हत्याएं हुई हैं. इन ... कुछ रोमांचकारी उपन्यास हैं तो कु[छ] जासूसी उपन्यास.

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज ...
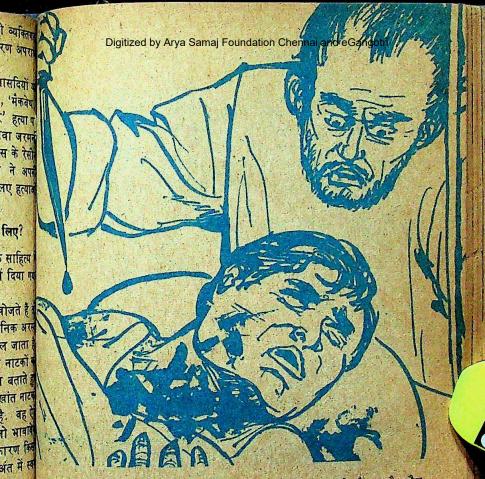
जब भावना को चोट पहुंचती है तो मस्तिष्क भी संतुलन खो बैठता है और व्यक्ति खून का प्यासा बन जाता है.

लोग हत्याओं के आकर्षण से मुक्त नहीं हो पाए हैं और उन का आकर्षण पहले से भी बढ़ गया है. इस का सब से ताजा उदाहरण है नार्मन काप्टे का उपन्यास 'इन कोल्ड ब्लड', जिस की कुछ ही समय में लाखों प्रतियां बिक गईं और लेखक इसी उपन्यास के बल पर लखपति बन गया.

सामाजिक दृष्टि से भी हत्याओं की रोकथाम, न्याय और सजा से संबंधित अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं. साथ ही हत्याओं पर अनेक प्रश्नचिह्न भी लग गए हैं. मनुष्य किसी की हत्या क्यों करता है? उस के मस्तिष्क में उस समय कैसे विचार होते हैं जब वह किसी की हत्या करता है, जब कि वह जानता है कि हत्या का मूल्य उसे अपने प्राण दे कर चुकाना होगा? वे कौन से ऐसे शारीरिक और मानसिक कारण हैं जिन के कारण वह ऐसा कदम उठाता है, जिसे वह पुनः दोहरा नहीं सकता?

ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो समयसमय पर उठते रहते हैं और शोध करने वाले इन का उत्तर खोजते रहते हैं. इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए जो शोधकार्य किया गया है, उस से इस अपराध के संबंध में कई सिद्धांत प्रकाश में आए हैं.

सब से पहला सिद्धांत आधा धार्मिक और आधा नीतिशास्त्र संबंधी है जो पूर्वी तथा पश्चिमी देशों में समान रूप से

प्रचलित रहा है.

इस सिद्धांत के अनुसार अपराधी और हत्यारा एक पापी के रूप में ही उत्पन्न होता है या उस पर किसी दुष्ट आत्मा का प्रभाव रहता है अथवा यह कुकर्म उस के पूर्वजन्म के पापों का फल होता है. इस सिद्धांत के अनुसार ऐसे व्यक्ति में आत्मा होती ही नहीं और यदि होती भी है तो नरक में दबी हुई होती है. इस का जीवंत उदाहरण आज भी देखा जा सकता है, जब एक जज अपने सिर पर काला कपड़ा रख कर बड़े दुख के साथ कहता है, "मैं तुम्हें गरदन से लटका कर फांसी देने की सजा सुनाता हूं, जब तक कि तुम मर न जाओ. ईश्वर तुम्हारी आत्मा को शांति दे."

पिछली एक शताब्दी में हुई विज्ञान की प्रगति ने लोगों का इस सिद्धांत पर से विश्वास हटा दिया है, जिस के फलस्वरूप एक नई व्याख्या सामने आई है.

जरमनी का सेजर लोंब्रोसो ऐसा पहला व्यक्ति था जिस ने इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया. उस के सिद्धांत के अनुसार हत्यारे या और कोई अन्य अपराध करने वाले के सिर या खोपड़ी का आकार, प्रकार और माप एक विशेष प्रकार का होता है तथा उस की मुखमुद्रा भी एक विशेष प्रकार की होती है. शंकु के आकार की खोपड़ी, पीछे की तरफ झुकती हुई भौंहें, तिरछे उगे हुए दांत या फिर केवल क्रूर दृष्टि ही किसी को अपराधी या हत्यारा घोषित कर देती है.

लेकिन यह सिद्धांत शीघ्र ही बेकार सिद्ध हो गया क्योंकि इस के कारण बहुत से शंकु के आकार के सिर वाले अच्छे व्यक्ति जेलों में भर दिए गए तथा भयानक शक्ल वाले आदमी ऊंचेऊंचे पदों पर काम करने लगे थे.

फ्रायड ने हत्याओं के कारणों को एक नया दृष्टिकोण दिया. उस के अनुसार मनुष्य की प्रत्येक क्रिया उस के मनोवैज्ञानिक जीवन का फल होती है. उस का मनोवैज्ञानिक जीवन उस की शारीरिक हीनता या श्रेष्ठता से प्रभावित रहता है तथा उस के अवचेतन में बैठा उस का विगत भी अपराध या हत्या का कारण बन सकता है.

फ्रायड के विचारों को संशोधित रूप में जनता के सामने रखा उस के शिष्य एडलर ने, जिस ने इन्हें 'कुंठाओं का सिद्धांत' नाम दिया. इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य का मस्तिष्क और शरीर, दोनों अलगअलग रहते हुए भी मिले रहते हैं और शरीर मस्तिष्क का एक साधन बन जाता है.

कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने अपराधों का संबंध व्यक्ति के कुछ विशेष लक्षणों या मनोवैज्ञानिक समस्याओं से माना है. इन के अनुसार मनुष्य की अपनी क्रियाएं तथा प्रतिक्रियाएं न केवल किसी वस्तु से प्रेरित होती हैं, बल्कि सीखी भी जा सकती हैं. ये उस व्यक्ति की अपनी बुद्धि पर आधारित होती हैं.

रोग की जड़ : शारीरिक कमजोरी

शरीरविज्ञान तथा नाड़ीविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधकार्य से कई चौंका देने वाली बातें सामने आई हैं. उस से सिद्ध किया गया है कि किसी भी मनुष्य का मानसिक स्वास्थ्य उस के शारीरिक स्वास्थ्य पर निर्भर होता है. व्यक्ति का अंतःस्राव उस में कई असमानताओं को जन्म देता है. 'थायोराइड' नाम की ग्रंथि के ठीक से काम करने पर कमजोर मनुष्य के शरीर का कायाकल्प हो जाता है, सुस्त व्यक्ति तेजतर्रार बन जाता है और इस के कारण स्त्री का पुरुष बन जाना कोई बड़ी बात नहीं है.

मस्तिष्क से अधिक काम लेने या नसों के कड़ी हो जाने से दिमाग में जो खून की कमी हो जाती है, उस से व्यक्ति उत्तेजनशील, संवेदनशील, हठी और भुलक्कड़ बन जाता है. नाड़ीवेत्ताओं का कथन है कि बचपन में या जवानी में अज्ञात रूप से या आंतरिक रूप से मानव मस्तिष्क को जो भावनात्मक चोट लगती है, उस से मनुष्य सनकी से ले कर पागल

हो जाता है. इस के अतिरिक्त उन यह भी दावा है कि आंतरिक मस्तिष्क किसी भी प्रकार लगी चोटें व्यक्ति अनेक प्रकार की दुर्बलताओं को जन्म देती हैं तथा उसे उन्मत्त, हत्यारा, हिंसक, शराबी, अनैतिक और शारीरिक भूख मिटाने के अयोग्य कर देती हैं.

मनोवैज्ञानिकों के पश्चात समाजशास्त्रियों का नंबर आता है. उन के अनुसार वातावरण के कुछ तत्त्व ही अपराधों के मूल कारण होते हैं जो मनुष्य को बदलते हैं. यही कारण है कि व्यक्ति का अपना सांस्कृतिक और शारीरिक वातावरण उसे बना या मिटा देता है. तभी तो अपराधों के मूल में व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार, उस का व्यक्तिगत द्वेष तथा उस की आकांक्षाएं उभरते हैं.

खोदा पहाड़ निकला चूहा

यद्यपि अपराधों से संबंधित ये सभी सिद्धांत मूल्यवान हैं तथा इन में विविधता है फिर भी ये संसार में हुई अधिकांश हत्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ हैं. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार हत्यारे के व्यक्तित्व में कुछ विशेष लक्षण होते हैं जिन से वह पहचाना जा सकता है, किंतु इन लक्षणों वाले हजारों व्यक्ति हैं जिन्होंने कभी एक भी हत्या नहीं की है. जब समाजशास्त्री यह कहते हैं कि व्यक्ति अपनी सामाजिक समस्याओं से तंग आ कर हत्या करता है तो सहसा उस पर विश्वास नहीं होता है क्योंकि संसार में ऐसे कितने ही व्यक्ति हैं जिन का सामाजिक जीवन नष्ट हो चुका है, पर वे किसी की हत्या करने के बजाए आत्महत्या का प्रयत्न करते पाए गए.

शारीरिक दोष, मानसिक विकार, नाड़ीसंस्थान की ख़राबी, मस्तिष्क की चोट, सामाजिक समस्या, नष्ट पारिवारिक जीवन, अशिक्षा और अत्यधिक भावुकता हत्याओं का कारण तब तक नहीं कहे जा सकते, जब तक संसार में ऐसे व्यक्ति हैं जो हर स्थिति में चुपचाप अपना कार्य करते रहते हैं.

यदि उपरोक्त सिद्धांत सत्य पर आधारित होते तो हत्या करने वालों में स्त्रियों और पुरुषों की संख्या बराबर होती, पर वास्तविकता ऐसी नहीं है. हत्या करने वालों में 90 प्रतिशत से भी अधिक पुरुष ही होते हैं.

हत्याओं से संबंधित ये सिद्धांत हमें यह नहीं बता पाए कि एक मनुष्य हत्यारा क्यों बन जाता है या हत्यारे के रूप में वह कैसे क्रियाकलाप करता है. इसी तरह मनोवैज्ञानिकों के बताए हुए विशेष लक्षण भी कसौटी पर खरे नहीं उतरते क्योंकि वे अपराधी होने के साथसाथ उन असंख्य लोगों में भी होते हैं जो मानवता की सेवा करते हैं और हत्यारे नहीं हैं.

एक अपराध विशेषज्ञ ने अपराधों के बारे में कहा है कि अपराध की तरह अपराध करने वालों में भी विविधता होती है, जैसे कि कमजोर अपराधी, स्वस्थ अपराधी, बुद्धिमान अपराधी और बुद्धि-

हत्या

एक हत्या से मनुष्य हत्यारा हो जाता है, लाखों की हत्या से वीर—अधिक संख्या पाप को धो देती है.

—पोर्टियस

हत्या के जीभ नहीं तो क्या, समय पर वह सिर पर चढ़ कर बोलती है.

—शेक्सपियर

हीन अपराधी. उसी के अनुसार उस के अपराध भी कमजोर, स्वस्थ, बुद्धियुक्त और बुद्धिहीन होते हैं और इन अपराधों के करने के ढंग भी कमजोर, स्वस्थ, बुद्धिपूर्ण और मूर्खतापूर्ण कहे जा सकते हैं.

यह कहना ठीक होगा कि ऊपर बताई गई बातों के कारण ही कानून जानने वाले और जज लोग इन सभी सिद्धांतों से प्रभावित नहीं होते.

पिछले कुछ दशकों से कानून इन सिद्धांतों के आधार पर व्यक्ति को अपराधी सिद्ध किए जाने को मान्यता नहीं देता. वह अपना ध्यान हत्या की उन परिस्थितियों पर केंद्रित करता है जिन में अपराधी ने वह हत्या की. जब कोई हत्या इच्छापूर्वक की गई सिद्ध हो जाती है तो न्याय उसे हत्या के अपराध में सजा दे देता है.

जो बातें मनुष्य को हत्या करने के लिए प्रेरित करती हैं, वे इतनी अधिक हैं कि उन का ठीकठीक परीक्षण नहीं किया जा सकता. मनुष्य अपने शत्रु के अतिरिक्त अपने मातापिता, भाईबहन तथा दूसरे संबंधियों की भी हत्या कर सकता है. कोई नशा करने वाला व्यक्ति कुछ ही रुपयों की पायजेब के लिए किसी बच्चे का गला दबा कर उसे मार सकता है. एक नाविक आभूषणों के लोभ में नदी पार कराते समय किसी औरत की जान ले सकता है. कोई बदमाश किसी लड़की पर बलात्कार कर के चाकू से उस की हत्या कर सकता है. यहां तक कि अगर कोई व्यक्ति किसी को गंदी गाली दे दे तो दूसरा व्यक्ति गाली देने वाले को गोली मार सकता है.

एक संदेहशील पति अपनी पत्नी को केवल इस संदेह में मार देता है कि उस का चरित्र ठीक नहीं है. एक संवेदनशील नवयुवक अपनी प्रेमिका की शादी दूसरे स्थान पर न होने देने के लिए उस की हत्या कर देता है. जब एक भतीजे को अपने चाचा की संपत्ति का उत्तराधिकारी बनने में सफलता नहीं मिलती है तो वह अपने चाचा की जान ले लेता है. एक भाई अपनी विधवा बहन के दुख से दुखी हो कर अपने जीजा के हत्यारे को गोली मार देता है. किसी गांव में दो दलों की लड़ाई में प्रत्येक दल के छ:छ: व्यक्ति मारे जाते हैं. कभीकभी एक औरत को पाने के लिए दो व्यक्ति आपस में लड़ मरते हैं.

इस प्रकार हम देखते हैं कि कभी हत्या का कारण भय, भावावेश और क्रोध होता है तो कभी सहानुभूति, करुणा और दया. अतः इन में बहुत ही विविधता होती है. फिर भी विशेषज्ञों ने इन का विश्लेषण और वर्गीकरण करने का प्रयास किया है.

पश्चिम में हत्या के मूल कारण शराब, औरत और दौलत बताए गए हैं. फारसी के एक सूत्र में हत्या की जड़ जर, जोरू और जमीन बताए गए हैं, जिस का अर्थ है धन, स्त्री और भूमि.

सारा खेल भावनाओं का

इन सब से अधिक सारग्राही मत भारतीय नीतिशास्त्र का है जिस में मनुष्य के सब से शक्तिशाली पांच शत्रुओं का वर्णन है : काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, और मनुष्य को सदा याद दिलाया गया है कि वह इन पर विजय प्राप्त करे. भारतीय ऋषियों को यह पता था कि मनुष्य के सभी क्रियाकलाप केवल इन्हीं भावनाओं को संतुष्ट करने के लिए ही होते हैं. उन का यह भी कहना था कि अपराधी चाहे कितना ही बड़ा चोर या हत्यारा क्यों न हो, वह वास्तव में उतना दुष्ट और दुराचारी नहीं होता जितना कोई स्वार्थी मनुष्य.

अब मूल प्रश्न यह रह जाता है कि क्या अपराधों के बारे में ऐसा कोई सिद्धांत है जो हत्याओं की व्याख्या कर सके और उन के कारणों पर प्रकाश डाल सके. इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिलता. तब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि क्या हम इन सिद्धांतों से ऐसी कुछ बातें सीख सकते हैं जिन से हत्याओं को रोका जा सके. इस का भी उत्तर नकारात्मक ही मिलता

है. तब एक प्रश्न और उठता है कि क्या इन सिद्धांतों के आधार पर क्या यह बता सकते हैं कि कोई व्यक्ति कब हत्या करता है. इस बार भी हमें हमेशा की तरह उत्तर मिलता है : 'नहीं.' तब आखिरी सवाल उठता है कि क्या हम इन से कुछ सीख सकते हैं? तब आशा के विपरीत हमें उत्तर मिलता है : 'हां'.

इन सिद्धांतों से हम अपराधी की सजा के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं. हत्याओं से संबंधित सभी सिद्धांत अपने समग्र रूप में यद्यपि कार्यसिद्ध हो चुके हैं, फिर भी इन से एक महत्त्वपूर्ण बात का पता चलता है और वह यह कि अपराधी और हत्यारे भी सामान्य मनुष्य की भांति साधारण स्त्रीपुरुष होते हैं. वे तब तक हर आदमी की तरह ईमानदार और कानूनों का पालन करने वाले होते हैं जब तक कि कोई ऐसी परिस्थिति न पैदा हो जाए जो उन्हें अपराधी या हत्यारा बनने के लिए मजबूर कर दे.

इस प्रकार अपराध की भावना सजा के योग्य नहीं होती, पर अपराधी को जेल इसलिए भेजा जाता है कि उसे और सजा न मिले. सच्चाई तो यह है कि उस की वास्तविक सजा तो तभी शुरू होती है, जब वह अपने मस्तक पर कलंक ले कर जेल से बाहर आता है. तब वह सपरिवार उस कलंक के साथ सुखी जीवन बिताने में स्वयं को असमर्थ पाता है. ●

मुख पृष्ठ पर...

अंजू गुप्ता

अंजू गुप्ता मेरठ की बी. ए. (प्रथम वर्ष) की छात्रा है. कुछ वर्ष पूर्व उस ने अपने विद्यालय में ही अपनी शिक्षिका की सहायता से गुड़िया बनाना सीखा और अब वह अपने कालिज तथा अपने मित्रों के बीच सब से अच्छी गुड़िया बनाने वाली के रूप में प्रसिद्ध है.

उसे अपनी गुड़िया के लिए कपड़े, बाल, आभूषण, मोती इत्यादि खुद ही बाजार से खरीदने पड़ते हैं. लगभग दो फुट ऊंची गुड़िया बनाने में उस का 25 से 100 रुपए तक का खर्च पड़ जाता है. वह गुड़िया बनाने की मुख्य रुचि के साथसाथ गायन, विशेषकर सुगम संगीत तथा खाना बनाने का भी शौक रखती है.

उस ने ढेर सारी गुड़ियां बना ली हैं, जिन का वह व्यक्तिगत प्रदर्शन करना चाहती है. वह अभी अपने कैरियर के बारे में कोई निर्णय नहीं ले सकी है, लेकिन ग्रेजुएट बनने के बाद गुड़िया निर्माण को वह व्यावसायिक रूप देने की इच्छुक है, जो वैवाहिक समझौते पर भी निर्भर करेगा. ●

हाल ही में सिक्किम को भारत का पड़ोसी सहराज्य घोषित किया गया है. सिक्किम की जनता ने लंबे संघर्ष के बाद जनतांत्रिक ढंग से सिक्किम में लोकतंत्र की स्थापना कराने में सफलता पाई और इस काम में वहां की युवा पीढ़ी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया. सिक्किम विधान सभा के आधे से अधिक सदस्य नौजवान हैं. इन युवकों में देश के विकास के लिए कुछ कर दिखाने की तमन्ना है और कुछ न कुछ करने के लिए वे कृतसंकल्प हैं. हाल ही में सिक्किम विधान सभा की सब से कम उम्र की और एकमात्र युवती विधायिका कुमारी हेमलता क्षेत्री और 25 वर्षीय युवक नेता विधायक श्री नरबहादुर खेतिवाड़ा ने युवकों के कल्याण से संबद्ध कुछ कार्यक्रम सरकार के सामने प्रस्तुत किए हैं.

विधायिका कुमारी हेमलता क्षेत्री ने एक भेंट में बताया, "28-29 वर्ग मील क्षेत्र में बसे सिक्किम राज्य की कुल जनसंख्या लगभग दो लाख है, जिस में से 60-70 हजार महिलाएं हैं. सर्वप्रथम मैं महिलाओं के लिए कल्याणकारी योजनाएं शुरू कराने का प्रयास करूंगी. नेपाली, लेपचा और भोटिया मूल की स्त्रियों में से भोटिया और लेपचा आज भी बहुत पिछड़ी दशा में हैं. यद्यपि वहां सहशिक्षा और उच्च शिक्षा की व्यवस्था है पर महिलाओं में जागृति का अभाव है. वे घरेलू और

सिक्किम की

एकमात्र युवती विधायिका कुमारी हेमलता क्षेत्री.

खेती संबंधी कामकाज में ही व्यस्त रहती हैं. उन्हें देशदुनिया से कोई मतलब नहीं है."

कुमारी हेमलता ने बताया, "यहां की स्त्रियों की सब से बड़ी कमजोरी धूम्रपान है. इसी लिए प्रायः लेपचा स्त्रियों को 'मेरी' कहा जाता है, जिस का अर्थ है 'दासी'. मद्यपान का स्त्रियों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है. अस्वास्थ्यकर दशाओं में रहने के कारण बच्चों और स्त्रियों का स्वास्थ्य स्तर बहुत नीचा है. अच्छी प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था का अभाव भी बड़ी समस्या है. अतः सिक्किम की स्त्रियों का जीवन स्तर ऊपर उठाने की प्रशासन के समक्ष गंभीर समस्या है. इस मामले में हम भारत की स्त्रियों को आदर्श मान कर काम शुरू करना चाहते हैं. पर हम कितना कर

पाते हैं यह सब आने वाले कल पर निर्भर है.''

हेमलता की योजना है कि सिक्किम की महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता के लिए प्रयास शुरू कराया जाए. दुनिया के दूसरे देशों में हो रहे सभ्यता के विकास की जानकारी न होने और आधुनिकता से काफी दूर होने के कारण उन में राजनीतिक जागरूकता का अभी अभाव है. पिछले चुनाव के बाद उन में कुछ जागरूकता जरूर आई है. वस्तुतः इस का कारण यह है कि उन्हें अब तक उचित सामाजिक मार्गदर्शन नहीं मिला था.

''सरकार के समक्ष आप सर्वप्रथम कौनकौन सी समस्याएं रख रही हैं?''

25 वर्षीय युवक नेता विधायक नरबहादुर खेतिवाड़ा.

युवा पीढ़ी

मेरा प्रश्न था.

कुमारी हेमलता ने बताया, ''मद्य निषेध, उच्च शिक्षा और लेपचा एवं अन्य पिछड़े वर्गों की महिलाओं को उन्नति के विशेष अवसर देने, हायर सेकंडरी स्तर तक तिब्बती भाषा पढ़ने की अनिवार्यता की समाप्ति, दस्तकारी की शिक्षा, छात्रवृत्ति देने तथा लोगों में बचत की आदत को प्रोत्साहित करने जैसे सवालों की ओर मैं ने सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है.''

सिक्किम की महारानी, चोग्याल की पत्नी श्रीमती होप कुक के बारे में धारणा के संबंध में हेमलता ने बताया, ''वह राज्यपरिवार की भद्र महिला थीं. उन से साधारण लोगों का संपर्क भी नहीं था, पर गत वर्ष चोग्याल विरोधी आंदोलन के बाद उन के अमरीका चले जाने की खबर से हर साधारण सिक्किमी महिला को आघात पहुंचा है, क्योंकि हमारे देश की महिलाएं सुखदुख, हर दशा में अपने पति का साथ देने में विश्वास करती हैं. उन का रहनसहन भारतीयों जैसा है.'' बातचीत के दौरान ही पता चला कि सिक्किम की महिलाएं और युवतियां भारतीय रीतिरिवाजों, वेशभूषा, बनारसी साड़ी आदि को बहुत पसंद करती हैं. भारत के प्रति वैसे भी उन लोगों के मन में अपार स्नेह है. आशा है, नई पीढ़ी इस स्नेह बंधन को और भी अधिक मजबूत करेगी.

कुमारी हेमलता क्षेत्री के पिता ने सन 1949 में सिक्किम में हुई राजनीतिक उथलपुथल में सक्रिय भाग लिया था. उस के पिता श्री डी. वी. तिवारी वर्तमान मुख्य मंत्री श्री दोरजी के अभिन्न
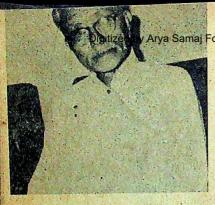
सिक्किम के मुख्य मंत्री काजी लेंडुप दोरजी.

मित्र हैं. पिता और श्री दोरजी से प्रेरणा प्राप्त कर हेमलता ने राजनीति में कदम रखा. पिछले चुनाव में वह गेजिंग चुनाव क्षेत्र से निर्वाचित हुई. हेमलता बी. ए. की छात्रा है और समाज सेवा में उस की विशेष रुचि है.

सिक्किम विधान सभा के नवयुवक सदस्य और मुख्य मंत्री काजी लेंडुप दोरजी के पुत्र श्री नरबहादुर खेतिवाड़ा से हुई बातचीत से पता चलता है कि हिमालय की गोद में बसे पर्वतीय प्रदेश सिक्किम में चुनाव के बाद से युवा वर्ग अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति अधिक जागरूक हुआ है. नरबहादुर ने बताया कि अब तक सिक्किम के नवयुवकों को, दुनिया में क्या हो रहा है, इस की पूरी जानकारी से प्रायः वंचित रखा जाता था. खुद सिक्किम में क्या हो रहा है, इस की उन्हें पूरी जानकारी नहीं थी. पर पिछले चुनावों में 'सुस्त' कहे जाने वाले इन युवकों ने गांवगांव, बस्ती-बस्ती में अन्याय और शोषण के विरुद्ध जेहाद छेड़ा था. युवकों के ही सहयोग से आज सिक्किम में लोकतंत्र की स्थापना हो सकी है.

युवा शक्ति के सदुपयोग की चर्चा करते हुए श्री नरबहादुर ने बताया कि अब युवकों के बहुमुखी विकास के लिए कार्यक्रम शुरू किए जाएंगे. रोजगारपूरक शिक्षा, रोजगार के अवसर, तकनीकी शिक्षा तथा विश्व भर के युवकों की गतिविधियों से सिक्किम के युवकों को जोड़ने की जरूरत है. युवाशक्ति के सहयोग से प्रदेश का पिछड़ापन दूर किया जा सकता है.

एक प्रश्न के उत्तर में नरबहादुर ने कहा, "भारत के युवकों से हमारा बहुत घनिष्ठ संबंध है. दोनों देशों के युवकों को और अधिक नजदीक लाने के लिए सांस्कृतिक आदानप्रदान की जरूरत है. एकदूसरे स्थान के लोग आपसी सहयोग से समस्याओं का हल ढूंढ़ सकते हैं. हमारे सामने बहुत सी विकास संबंधी कठिनाइयां हैं पर हमें पूरा विश्वास है कि भारत के युवा पीढ़ी के लोग जरूरत पड़ने पर हमारी मदद करेंगे. आर्थिक असमानता, पिछड़ेपन और अन्याय के विरुद्ध हमारा संघर्ष जारी है. जनता इस कार्य में युवकों का महत्त्व समझती है, तभी उस ने हमें चुन कर विधान सभा में भेजा है."

सिक्किम के युवक पिछड़ी दशा में

सदस्यों से हुई बातचीत से पता चला कि सिक्किम के युवक बहुत पिछड़ी हुई दशा में हैं. उन को रोजगार और शिक्षा के अवसर बहुत कम मिलते हैं. अधिकांश युवकयुवतियां या तो उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाते या फिर शिक्षा ग्रहण करने के बाद घरेलू कामकाज में ही जीवन बीत जाता है. उन्हें प्रगति का समुचित अवसर नहीं मिल पाता. पर उन्हें आशा है कि अब वे स्वयं अच्छा रोजगार व अच्छे अवसर प्राप्त कर सकेंगे.

सिक्किम विधान सभा के सभी 32 सदस्य पिछले दिनों अपनी यात्रा के सिलसिले में दिल्ली और आगरा होते हुए वाराणसी आए थे. वाराणसी से वे वापस सिक्किम चले गए. वाराणसी में हुई उक्त बातचीत से पता चलता है कि वहां के युवा वर्ग के लोग भविष्य के प्रति आशावान हैं और उन्हें भारतीय युवकों से सहयोग की पूरी उम्मीद भी है. ●

अहल्या-बाई होलकर

होलकर साम्राज्य की डावांडोल स्थिति पर अपनी प्रशासन कुशलता से काबू पा कर इंदौर को नया जीवन देने वाली अहल्याबाई को हम क्यों भूलते जा रहे हैं?

सन 1761 में पानीपत की लड़ाई के बाद मराठों की शक्ति का ह्रास हो चुका था. इस के पांच साल बाद महान मराठा शासक मल्हारराव होल्कर की मृत्यु हो गई. मराठा कुल का भविष्य बालक मल्लराव होल्कर पर ही निर्भर था, क्योंकि उस का पिता कुंदरराव होल्कर लड़ाई में मारा गया था. कुंदरराव होल्कर की पत्नी अहल्याबाई (जो एक लड़के और एक लड़की की मां थी) की उमर उस समय केवल 20 वर्ष ही थी.

अपने पुत्र मल्लराव होल्कर की ओर से राज्य करने के लिए अहल्याबाई ही होल्कर राज्य की संरक्षक शासिका बनी, लेकिन उन का लड़का भी पागल हो कर शीघ्र ही मर गया और वंश परंपरा से गद्दी का वारिस कोई न रहा. इंदौर राज्य उस पेशवा साम्राज्य का शक्तिशाली हिस्सा था, जिस की राजधानी पूना थी और जिसे उन्होंने लड़ कर जीता था.

मल्लराव की मृत्यु के बाद शोकमग्न रानी को सैनिकों और सेनाध्यक्षों ने सलामी दी और बड़े उत्साह के साथ उसे होल्कर राज्य की अधिकृत शासिका घोषित किया.

विषम परिस्थितियों में राजकाज चलाने या अपने अधीनस्थ लोगों से वफादारी के साथ सहायता प्राप्त करने में बहुत कम शासक सफल हुए हैं. पर अहल्याबाई ने यह कठिन कार्य कर दिखाया. छरहरी और सामान्य सुंदर रानी ने सफेद साड़ी और बिना जेवर सादी वेशभूषा अपना कर एक हिंदू विधवा का आदर्श पूरी तरह निभाया और इसी आदर्श ने इंदौर राज्य की युद्धप्रिय जनता का पथप्रदर्शन किया.

एक विधवा ऐसे शक्तिशाली राज्य की अधिष्ठात्री हो, यह बात तब पेशवा सम्राट के गले उतरने वाली न थी. उस ने रानी के लिए अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी चुन कर उसे गोद लेने के लिए कहा. मल्हारराव होल्कर के मित्र रघुनाथराव होल्कर ने पेशवा के इस प्रस्ताव का विरोध किया और अपनी ओर से एक

उत्तराधिकारी के लिए अन्य नाम सुझाया.

रानी पर दोहरा दबाव पड़ा. पर इन दोनों सुझावों के पीछे छिपे उद्देश्य को पहचान अहल्याबाई ने दोनों की बात मानने से इनकार कर दिया. उन के इस दृढ़ निश्चय को आसपास के अन्य मराठा राज्यों द्वारा समर्थन मिला, क्योंकि वे जानते थे, यदि रानी इस दमन का शिकार होती है तो यह सारे मराठा राज्यों को धीरेधीरे पेशवा के शासनाधीन करने की योजना का प्रथम चरण होगा. इस दृढ़तापूर्ण इनकार के कारण प्रथम कुछ वर्षों में रानी को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा. पर 1766 तक, जब कि रानी अभी 30 वर्ष की भी नहीं हुई थी, उन के राजगद्दी के अधिकार को स्वीकार कर लिया गया. उस के बाद तो उन के जीवनपर्यंत तक यह विरोध सिर नहीं उठा सका.

कुशल प्रशासन

एक शासिका के रूप में अपने कर्त्तव्य को सुचारु रूप से निभाने के लिए रानी ने तुकाराम होल्कर को सैनिक प्रशासक नियुक्त किया. यद्यपि यह नया सेनाधिकारी प्रौढ़ उमर का था, पर न तो विशेष प्रतिभावान था, न विशेष महत्त्वाकांक्षी ही, और होल्कर होते हुए भी मल्हारराव होल्कर से उस का कोई खून का रिश्ता न था. पर शीघ्र ही रानी को पता चल गया कि उस का चुनाव गलत न था. तुकाराम ने पूरी योग्यता, निष्ठा और विश्वसनीयता का परिचय दिया और अपनी सेवाओं के लिए शीघ्र ही विख्यात हो गया. उस के योग्य निर्देशन में युद्ध के लिए अच्छी नाकेबंदी करने वाले कई किलों का निर्माण हुआ और चुने हुए लड़ाकू सैनिकों की एक अच्छी सेना का गठन हुआ, जिस से रानी के प्रभुत्व की धाक जम गई.

सेना के मामलों को तसल्ली से निबटाने के बाद रानी ने प्रजा की आर्थिक स्थिति सुधारने पर अपना ध्यान केंद्रित किया. इंदौर नाम के कच्चे झोंपड़ों वाला गांव भावी राजधानी के लिए चुना गया. वहीं निवास कर अहल्याबाई ने उसे [illegible] समृद्ध और उन्नत नगर में बदल दिया. गांवों के उत्पादन शहर तक पहुंचाने के लिए और सेना की गतिविधियों की सुविधा के लिए शीघ्र ही सड़कों का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया.

आश्चर्यजनक कार्यक्षमता

सभी सुधार कार्य रानी की व्यक्तिगत देखरेख में होते थे. राज्य मामलों में ही उन की दिनचर्या का बड़ा भाग गुजरता था. न्याय प्रशासन देखने भी वह स्वयं पहुंच जाती थीं और राज्य की अर्थव्यवस्था पर भी पूरी निगाह रखती थीं. सुबह पूजापाठ व घरपरिवार की देखभाल के बाद दोपहर दो बजे से शाम छः बजे तक व रात्रि नौ बजे से ग्यारह बजे तक का सारा समय उन का राजकाज के लिए नियत था. उन के दुबलेपतले व्यक्तित्व व उन की कार्यक्षमता को देख सभी दंग रह जाते थे.

अन्य राज्यों के साथ सफल राजनीतिक संबंध स्थापित करने के लिए रानी के योग्य प्रतिनिधि भारत के लगभग हर राज्य में नियुक्त थे. उन के सुधार कार्यों का दूसरे राज्यों में बारीकी से अध्ययन किया जाता था और उन्हें एक आदर्श शासिका के रूप में देखा जाता था. तत्कालीन समाज में उन के मुकाबले का सफल शासक कोई और था भी नहीं, न ही किसी को इतना सम्मान मिला था. भारत के किसी अन्य हिस्से में प्रजा इतनी संतुष्ट व समृद्ध न थी, जितनी की अहल्याबाई होल्कर के राज्य में.

अपनी सच्चरित्रता और पवित्रता को ले कर भी वह महान कहलाती थीं. इतनी व्यस्तता के बीच भी उन की दिनचर्या का काफी समय प्रार्थना व धार्मिक क्रियाकलाप [illegible]तता था. बनारस का प्रसिद्ध विश्वेश्वर मंदिर उन्होंने ही बनवाया था.

राज्य की दिन प्रतिदिन होती समृद्धि के साथ ही रानी का कार्यभार भी बढ़ता गया, तो उन्होंने अपने विश्वस्त सैनिक

शासक तुकाराम को और अधिक अधिकार दे दिए. तुकाराम ने भी रानी के वफादार सेवक के नाते इन अधिकारों का अपने निजी हित में कभी दुरुपयोग नहीं किया और इसी कारण उस ने जनता से सारी सम्मान अर्जित किया.

30 साल तक लगातार स्वैच्छिक त्याग और कर्मठता का जीवन बिताते हुए राज्य व जनता की हितसाधना में रत रानी अहल्याबाई अब काफी थक चुकी थीं. उन का स्वास्थ्य गिरता गया और सन् 1795 में साठ साल की उमर में उन का देहावसान हो गया. किसी अन्य शासक के लिए शायद ही प्रजा ने इतना प्रेम जुटाया हो. रानी की मृत्यु पर जैसा शोक मनाया गया, शायद ही कभी मनाया गया हो. अहल्याबाई ने लोगों के दिलों पर भी राज शासन किया था. उन के बाद उन की वसीयत के अनुसार तुकाराम राजगद्दी पर आरूढ़ हुए. भारत की स्वाधीनता के बाद देशी रियासतों के विलय तक इंदौर राज्य का होल्कर राज्यवंश तुकाराम से ही चला.

सर जान मालकोलम के अनुसार, वह एक मध्यम दर्जे की दुबलीपतली महिला थीं. उन का रंग पक्का गेहुंआं था पर जीवन के अंत तक उन के चेहरे पर तेज था. वह हमेशा प्रसन्नचित्त दिखाई देती थीं. शायद ही कभी क्रोध करती हों. स्थिर मस्तिष्क की उस महिला की निर्णय क्षमता अद्भुत थी. जन कल्याण के कार्यों में निर्णय लेते कभी देर नहीं लगाती थी और अपनी प्रशंसा या चापलूसी के प्रलोभन में आ कर कभी निर्णय नहीं बदलती थीं.'

यद्यपि एक राज्याध्यक्ष के रूप में उन की उपलब्धियां अनेक थीं, पर अपने बच्चों का वियोग उन्हें हमेशा सालता रहा. शायद इसी दुख ने उन्हें दू[illegible] का दुख बांटने के लिए प्रेरित किया हो. [illegible]होंने कोई स्मारक नहीं छोड़ा, पर उन की कीर्ति, जन की श्रद्धा भरी याद और उन के राज्य की समृद्धि सिद्ध करती रही कि इस से बड़ा और कोई स्मारक नहीं हो सकता. ●

—हेमा

एक और इम्तिहान

प्रोफेसर आनंद सोच रहे थे कि शिकायत करने पर प्रिंसिपल लड़कों को डांटेंगे, लेकिन जब उन पर ही डांट पड़ने लगी तो वह हक्केबक्के रह गए...

(स्थान : एक विश्वविद्यालय का परीक्षा केंद्र. खुला हवादार कमरा. चारों ओर मेजकुरसियों की कतारें. छात्रछात्राएं उत्तरपुस्तिकाओं पर लिखने में व्यस्त हैं. प्रोफेसर आनंद एक कोने में खड़े हैं.)

अनिल : उफ, बला की गरमी है. (सिर को झटका देता है. बड़ेबड़े बाल आगेपीछे चले जाते हैं.)

प्रताप : यार, कोकाकोला मगवाएं.

अनिल : रहने दे, रहने दे. वह कुड़कुड़ाएगा. वैसे ही नाराज हो रहा है.

प्रताप : उस की चिंता मत करो. सर! (आवाज हाल में गूंज जाती है.)

प्रो. आनंद : कहिए, आप ने मुझे बुलाया?

प्रताप : सर, दो कोकाकोला मंगवा दीजिए और...

(चपरासी को, जो पानी ले कर इधर आता है, रोक कर) जा, दो कोकाकोला ले आ...और तू एक चाय पी लेना ...मेरा नाम ले देना. सोहनिया दे देगा.

प्रो. आनंद (गरम स्वर में) : आप सब को डिस्टर्ब मत कीजिए...यह परीक्षा केंद्र है.
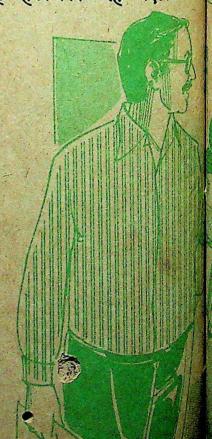
पात्र परिचय

(पात्र : अनिल, किशन, प्रताप, उस्मान, सुशीला, कांता आदि छात्रछात्राएं; प्रो. आनंद, प्राचार्य तथा चपरासी.)

किशन : ओह, सर, डोंट डिस्टर्ब ... आप शोर मत कीजिए.

प्रो. आनंद (चीखते हुए) : मैं बोल ...हूं? आप के ही तो साथी बोल रहे ...मैं तो आप के भले के लिए कह रहा ...आप मुझ से ही लड़ रहे हैं.

किशन (खड़ा हो कर) : हम आप ...लड़ रहे हैं? आप को यही दिखता है?

अनिल (सीट छोड़ते हुए) : हूं.... क्या ...ा, सर? आप चुपचाप अपनी जगह ...जाइए. आप को भी तो यहां रहना ...हां, उधर देखिए, कोई आप को बाहर ...ला रहा है.

(उस्मान का प्रवेश)

उस्मान : सर, ये कागज प्रताप को ...दीजिए.

प्रो. आनंद : कागज मैं दूंगा प्रताप ...? यह घर नहीं, परीक्षा केंद्र है.

उस्मान : आप जोर से क्यों बोल रहे हैं? यह सब किस से कह रहे हैं? मैं बहरा नहीं हूं...तो पेपर ही जरा बाहर ला दीजिए.

प्रो. आनंद : मैं यह करूंगा? नहीं, कभी नहीं. अभी प्रिंसिपल को बुलाता हूं.

अनिल : जा, बुला ले, बेवकूफ.

प्रो. आनंद : क्या कहा? मैं बेवकूफ हूं? आप सब को पकड़ूंगा. आप सब नकल करते हैं, ऊपर से लड़ते हैं. जानते हैं,
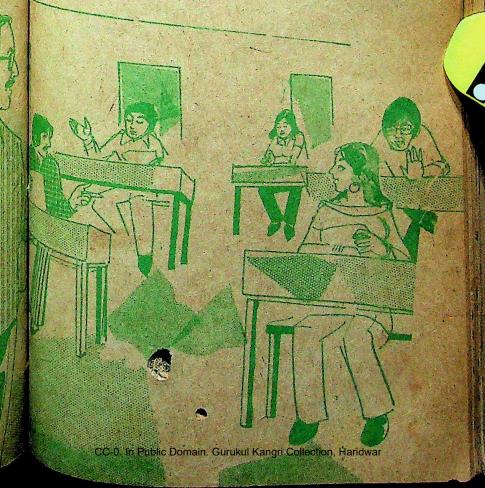
क्या होगा? तीनतीन साल के लिए सब का रेस्टीकेशन (परीक्षा से निष्कासन) होगा.

(चपरासी आता है.)

चपरासी : ये रही साहब, आप की बोतलें. (बोतलें मेज पर रखता है.)

अनिल : अरे, वह कहां है?

चपरासी : कौन?

अनिल : वही बुड्ढा.

चपरासी : साहब, चेंबर में हैं.

अनिल : जा बुला ला. यह ख्वाहमख्वाह अकड़ रहा है. सारा मूड आफ कर दिया. एकआध झापड़ रसीद कर दिया तो अभी अक्ल आ जाएगी.

प्रो. आनंद : क्या कहा, आप मुझे पीटेंगे? अपने गुरु पर हाथ उठाएंगे? (रुआंसे हो जाते हैं) जो आप की इच्छा हो, कीजिए.

(उस्मान का प्रवेश. ढेर सारी किताबें लिए हुए आता है.)

उस्मान : यह लो, यार. कागज भी लगा दिए हैं, ढूंढ़ने में दिक्कत नहीं होगी. (सब को मेज पर रखता है.) कर लो, प्यारे, फटाफट. सब की फर्स्ट क्लास आनी चाहिए. (हंसता है.)

अनिल : अब कुछ मूड बना, यार. कितना टाइम हो गया?

किशन : इस खूसट ने आधा घंटा बिगाड़ दिया. लगता है, यह बोर ही करता रहेगा.

सुशीला : सर! (कोने से आवाज लगाती है.)

प्रो. आनंद : कहिए.

सुशीला : सर, यह निर्गुण और सगुण में क्या भेद होता है? मैं तो भूल ही गई.

प्रो. आनंद : यह इम्तिहान है. आप ने क्या मजाक समझ रखा है इसे?

सुशीला : सर, मैं वह किताब उठा लूं?

प्रो. आनंद : आप नकल करेंगी, भारत की नारी हो कर? यह सीता, सावित्री और लक्ष्मीबाई का देश और आप...

सुशीला (बीच में टोकते हुए) : सर, आप बहुत अच्छे हैं, पर बोर मत कीजिए, प्लीज. (सीट से उठ कर किशन की मेज तक जाती है.) प्लीज, यह किताब ले लूं?

किशन : किताब? क्यों नहीं, मेरे पास तो अभी दो और हैं.

(प्रो. आनंद जलती हुई निगाहों से उधर देखते हैं; फिर कांता की मेज के पास ठहर जाते हैं.)

प्रो. आनंद : यह क्या हो रहा है? आप नकल कर रही हैं? (आंखें नचाते हुए) ओह, इतने कागज!

कांता (मुंह बनाते हुए) ओह. और वह सामने सत्यनारायण की कथा बंच रही है.

प्रताप : क्या डायलाग बोला है! वाह, मजा आ गया.. हम तुम एक कमरे में बंद हो. (अलाप लेता है)...यार, ये इम्तिहान होते ही क्यों हैं? क्यों नहीं अपनेआप पास कर देते? इस सत्यानाशी गरमी में ससुरों ने पसीना निकाल दिया है.

किशन : यार, जल्दी बता, यह महादेवी कौन हैं. भक्तिकाल में हुई हैं या रीतिकाल में?

प्रताप : यार, यह तो पता नहीं. हां, याद आया... मांगू दरशन देवी, तेरे द्वार खड़ा एक जोगी. यार यह पार्वती तो नहीं हैं?

किशन : बोर मत कर. अरे भाई, यह महादेवी कौन हैं? (इधरउधर देखता है.)

सुशीला : आधुनिक काल में हैं... एक मिनट (किताब उलटती है) पेज 105 पर हैं.

किशन : (तेजी से किताब खोलता है) : ओह, शुक्रिया. (मिल गईं महादेवी) ...महादेवी (गुनगुनाता है) महादेवजी की महादेवी...

(पूरी क्लास हंस पड़ती है.)

प्रो. आनंद : यह क्या हो रहा है? आप कुछ सोचिए तो सही.

(तेजी से चपरासी आता है.)

चपरासी : साहब राउंड पर आ...

(तेजी से बाहर निकल जाता है.)

प्रो. आनंद : अब आप अपनेअपने छिपा लीजिए--किताबें भी. साहब रहे हैं. किसी का कुछ हो गया तो... कमरे में तेजी से चक्कर लगाते हैं.)

(साहब तेजी से कमरे में प्रवेश करते हैं. पहली पंक्ति में चक्कर लगाते फिर अनिल की मेज के पास ठहर जाते हैं. सामने रखे हुए रामपुरी चाकू को देख कर चौंकते हैं.)

प्राचार्य : हैं...हैं...यह किस लिए, अनिल जी?

अनिल : सर, पैंसिल छीलने के लिए लाया था. बहुत टूटती है.

प्राचार्य : लेकिन आज तो हिंदी का परचा है.

अनिल : सर, आदत ही हो गई है, कापी जो ले रखी है. ध्यान ही नहीं रहा. वह तो यहां आ कर मालूम हुआ कि आज हिंदी का परचा है.

प्राचार्य (चौंकते हुए) : अरे, तुम ने टाइम टेबिल नोट नहीं किया था?

अनिल : किया तो था, पर वह याद नहीं रहा.

प्राचार्य : पेपर मुश्किल तो नहीं है?

अनिल : सब आप की दया है, अपने-आप आसान हो जाता है. (हंसता है.)

प्रो. आनंद (फुसफुसाते हुए) : यहां सब टीप रहे हैं और मुझे पीटने की धमकी दे रहे हैं.

प्राचार्य (चौंकते हुए) : टीप रहे हैं? क्या कर रहे हैं? मुझे तो कोई नहीं दिख रहा, इतने सीधे बच्चे हैं, आनंद साहब, कि आवाज तक बाहर नहीं आ रही है.

प्रो. आनंद : यह देखिए. हर मेज पर किताबें ही किताबें हैं.

प्राचार्य : कहां हैं? मुझे तो नहीं दिख रहीं.

प्रो. आनंद : वह देखिए, लड़कियों की मेज पर कागज.

प्राचार्य (झुंझलाते हुए) : कहां हैं? आप को कुछ जरूरत से ज्यादा ही दिखने लग गया है.

(पूरी क्लास तेजी से हंस पड़ती है.)

प्राचार्य (नाराज होते हुए) : हंसिए नहीं. आप, आनंद साहब, अपना काम कीजिए. मुझे और भी काम करने हैं. (बाहर निकल जाते हैं.)

(चपरासी का प्रवेश)

चपरासी : पानी...पानी...पानी. (ट्रे ले कर इधर से उधर जाता है.)

प्रो. आनंद : इधर लाना पानी.

चपरासी (हंसता हुआ) : लीजिए. मैं ने पहले ही आप से कहा था...चाय लाऊं?

प्रो. आनंद : चाय?

अनिल : जा ले आ. मेरा नाम लिखा देना.

किशन : चाय नहीं, कोका कोला ले आ, सर बहुत अच्छे हैं.

(चपरासी जाता है.)

(प्रो. आनंद चुपचाप कुरसी पर सिर टिका कर बैठ जाते हैं. दोनों हाथों से मुंह ढक लेते हैं.)

(उस्मान का प्रवेश)

उस्मान : और, भाई, मेरे लायक कोई सेवा. किसी को कोई दिक्कत तो नहीं हुई? यह तीन घंटे की मेहनत, यार, बदन तोड़ देती है.

(प्रो. आनंद आंखें खोलते हैं. निगाहें खिड़की से बाहर सामने सोते हुए सिपाही पर ठहर जाती हैं. फिर वह उस्मान की तरफ देखते हैं, जो उन की जगह कमरे में चक्कर लगा रहा है.)

(परदा गिरता है.)

किस जगह से...

वक्त थोड़ा और यह भी [illegible]
किस जगह से कीजिए शु[illegible]

—आरज़ू लखनवी

विश्वासघात

वह एक खंडहर इमारत की तीसरी मंजिल के कोने में एक छोटे से कमरे में गंदे और संकरे बिस्तर पर लेटी हुई थी और रात्रि के समय खिड़की के बाहर आकाश की ओर देख रही थी. दर्द के कारण उस का मुंह भिंच गया था और उस के माथे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं. वह धीरेधीरे कराह रही थी. उस ने दूसरे बिस्तर पर पड़ी एक अन्य मानवाकृति की ओर अपना सिर घुमाया. उसे थोड़ी सी यह आशा थी कि वह जाग जाएगा और उस को ढाढ़स बंधाने तथा उस का हाथ थामने के लिए आएगा...लेकिन वह सोता रहा.

'उस ने खुद को इस झंझट में किस प्रकार फंसा लिया?' उस ने स्वयं से पूछा. उस का मुंह कष्ट से विकृत हो गया था और वह गीली दीवारों के उखड़े हुए पेंट, छत में पड़ी दरारों और धूल से ढंके ऐसे पंखों की ओर देखती रही जिन्होंने काम करने से इनकार कर दिया था. समीप ही उस ने चुहिया की आवाज सुनी. कहीं दूर नल में से गिरती हुई पानी की बूंदों का स्वर सुनाई पड़ रहा था. संपूर्ण संसार सोया हुआ था, केवल वही जाग रही थी.

तीसरे पहर जिस डाक्टर ने उस की परीक्षा की थी, वह नीच और देखने में भद्दा था. उस ने कुछ उखड़ेउखड़े मन से सोचा कि उस ने शायद ठीक गर्भपात कराने में विशेष योग्यता प्राप्त की है. जांचपड़ताल के दौरान उस ने उसे तकलीफ पहुंचाई थी और जब वह दर्द से कराह उठी थी तो वह अपना तेल में पुता चेहरा उस के चेहरे के निकट ले आया था और उस ने एक कुटिल मुसकराहट के साथ, जिस से उस के पान से रंगे सारे दांत दिखाई पड़ने लगे थे, कहा था, "उस समय इतना कष्ट नहीं हुआ था?" उस के इस कथन को सुन कर वह इतना क्रुद्ध हुई थी कि यदि उसे उस की सहायता की जरूरत न होती तो वह उस को चांटा रसीद कर देती. राल्फ ने भी कुछ नहीं कहा था.

बाद में जब वह वस्त्र बदल रही थी तो उस ने डाक्टर को राल्फ से यह कहते हुए सुना कि वह अगले दिन सुबह गर्भपात को सरल बनाने के लिए उस की 'सर्विकल कैनाल' को नर्म बनाने के लिए एक विशेष प्रकार की चीज लैमिनेरिया टेंस लगाएगा और इस के लिए उसे रात्रि वहीं पर गुजारनी पड़ेगी. वह इस सब के बारे में जानती थी, क्योंकि वह और राल्फ दोनों चिकित्सा शास्त्र के छात्र थे.

डाक्टर ने औपचारिक रूप से यह भी बता दिया कि इस आपरेशन पर 1,000 रुपए व्यय होंगे. राल्फ को इस बात की पहले से आशा थी. लेकिन उसे इस बात की चिंता थी कि वह इतना अधिक धन कहां से जुटाएगा.

उस ने पुरातन पंथी लेकिन शीघ्र विश्वास कर लेने वाले मातापिता से यह बहाना बना दिया था कि वह आज की रात्रि अस्पताल में एमर्जेंसी ड्यूटी पर बिताएगी, लेकिन यहां पर वह यह कष्ट झेल रही थीं.

उस ने कुछ क्रोध के साथ राल्फ की ओर देखा. वह इतनी गहरी नींद में क्यों सो गया और सारा कष्ट केवल उसी पर क्यों आ पड़ा है? क्या कुछ उत्तरदायित्व उस का भी नहीं था?

यह ठीक है कि सब कुछ प्रसन्नता के साथ नहीं हुआ, लेकिन फिर भी उन के

रोमांस में काफी गहराई रही थी. केवल आठ मास पूर्व वह कालिज की एक सुखी और हंसमुख छात्रा थी. उसे दुनिया की बिलकुल भी परवा नहीं थी. इसी बीच अचानक बिजली की तरह वह आया और उसे अपनी मोटरसाइकिल पर बैठा लिया जो कि हरे और चमकते हुए सफेद रंग की थी और टेनिस कोर्ट के चारों ओर भयानक मोड़ लेती थीं. जब वह तेज आवाज के साथ वहां से अदृश्य होता था तो वह वहां खड़ी देखती रहती थी. उस ने उस को बहुत अधिक प्रभावित किया था. वह बाद में उस क्षण को अकसर याद किया करती थी—उस के कपड़े चमकदार सफेद होते थे, चश्मा गहरे रंग का, अच्छी किस्म के दस्ताने और भव्य आकृति. इस सब के साथ मई के उस गर्म और धूप भरे दिन वह अपनी हीरे की
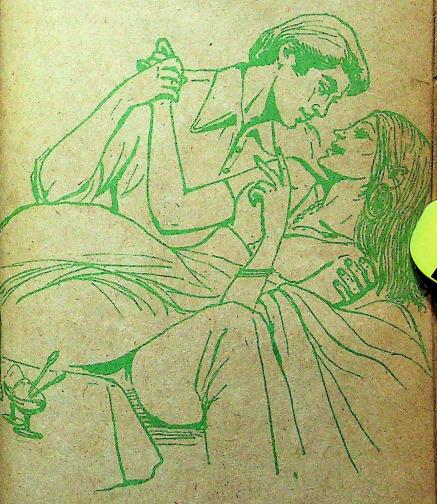
प्रिया राल्फ के [illegible]र कपड़े और मोटरसाइकिल की तेज रफ्तार [illegible] मोहित हो जाती... और एक दिन जब राल्फ ने उसे घूमने चलने का निमंत्रण दिया तो वह उसे मना न कर सकी. . .

तरह चमकती हरी मोटरसाइकिल पर सवार हुआ था.

अगले दिन जब वह अस्पताल के लान में प्रवेश कर रही थी तो वह उस के पास आया. "जरा सुनिए. क्या आप के पास कुछ समय है?" उस ने कहा.

उसे बड़ा आश्चर्य हुआ. वह शरमा गई और धीरे से उत्तर दिया, "हां."

"मैं केवल आप से माफी मांगना चाहता था. कल 'ग्रीन फ्लैश' जाते हुए मैं ने आप को और आप के मित्रों को कहीं डरा तो नहीं दिया?" उस के मुख पर कुछ परेशानी देख कर उस ने अपनी बात को और बढ़ाया, "यह मेरी मोटरसाइकिल है. आप इसे पसंद करती हैं?"

वह हंस पड़ी. इस साहसी, आकर्षक और गहरी आंखों वाले युवक के साथ वह कुछ खुल गई थी.

"मेरा नाम राल्फ है."

"मेरा, प्रिया," उस ने साहस करते हुए कहा और यह जान कर वह पुलकित हो उठी कि वह उस का नाम पहले से जानता है.

"प्रिया, आज की संध्या में काफी कैसी रहेगी?" उस ने पूछा. उस की आंखें उस का मूल्यांकन कर रही थीं. इस से पूर्व कि वह कोई बहाना ढूंढ़ती, वह यह कह कर चलता बना, "मैं तुम्हें पांच बजे लेडीज रूम के बाहर मिलूंगा."

उस का दिल तेजी से धड़क रहा था और उस की उंगलियों के सिरे बर्फ की तरह ठंडे हो गए थे. वह शीघ्रतापूर्वक वार्डों की ओर चल पड़ी. वह यह सोच रही थी कि जब वह संध्या के समय देर से घर लौटेगी तो अपने मातापिता के सामने क्या बहाना बनाएगी. वे अत्यंत कठोर थे और अपनी लड़की को लड़कों के साथ बाहर जाने की अनुमति नहीं देते थे.

उस दिन संध्या के समय वह उसे 'ग्रीन फ्लैश' ले गया. इस से पूर्व उस ने कभी मोटरसाइकिल की सवारी नहीं कि थी. इसलिए वह उस की पीली सीट पर पसर कर बैठ गई थी. लेकिन उस ने मोटरसाइकिल इतने धक्के के साथ स्टार्ट की कि उस का संतुलन लगभग बिगड़ गया, जिस से सहारा प्राप्त करने के लिए वह उस से जोर से चिपट गई. वह जोरजोर से हंसने लगा और अपनी कमर पर टिके उस के नाजुक हाथ को थपथपाने लगा. उस ने उस की प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो कर अपना सिर पीछे की ओर फेंका. जब मोटरसाइकिल तेजी के साथ चल रही थी, वह जोरों से मुसकरा रही थी और अपने बालों से टकराती हुई हवा का आनंद ले रही थी.

इस प्रकार उन दोनों का समय बहुत अच्छी तरह व्यतीत हुआ. प्रत्येक दिन संध्या के समय वे 'बर्नार्ड' में जाते. वह एक छोटा सा रेस्तोरां था. उस में वे मुख से मुख मिला कर बैठते और एकदूसरे का हाथ पकड़े रखते. कभीकभी वह उस को औषधि विज्ञान की शिक्षा देता, क्योंकि वह उस से दो वर्ष वरिष्ठ था. वह जीवन, अपनी आशाओं, प्रेम और सेक्स इत्यादि के बारे में बात करता. एक बार उस ने उसे यह कह कर छेड़ा कि वह बहुत सीधीसादी है. "अगर कोई लड़का—कोई भी लड़का—किसी लड़की से काफी पीने के लिए या अन्य किसी उद्देश्य से चलने के लिए कहे," उस ने धीरे से शरारत से मुसकराते हुए कहा, "तो उस का मतलब उस से कहीं अधिक होता है." वह सोचने लगी कि उस का क्या तात्पर्य है, लेकिन ऊपर से उस ने यह दिखाया कि वह उस की बात समझ गई है. नित्य प्रति शाम को 7 बजे वह उसे उस के घर पहुंचाने जाता. वह अपनी मोटरसाइकिल को थोड़ी दूरी पर खड़ा कर देता. वह तेजी के साथ अपने शयनकक्ष में घुस जाती और जब वह वहां से चलता तो [illegible]ड़की में से हाथ हिला कर उसे बिदा [illegible].

जीवन अत्यंत आमोदपूर्ण था. अपने छोटे से जीवन में उस ने प्रथम बार प्रेम किया था, और वह एक दिव्य उन्माद सा महसूस कर रही थी.

पहली मुलाकात में ही राल्फ ने उसे काफी पिलाई थी और वह भावविह्वल सी पीती चली गई थी...लेकिन क्या उसे पता था कि उस काफी को कितनी बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ेगी?

अपनी थोड़ी सी मित्रों के अतिरिक्त वह अपनी क्लास की किसी भी लड़की या लड़के से जानपहचान करने की कोशिश नहीं करती थी. उस के पास न तो इतना समय था और न उसे इस की आवश्यकता थी. अनेक बड़ीबड़ी लड़कियां उसे राल्फ से होशियार रहने के लिए कहती थीं. "तुम उस से बहुत अच्छी हो," वे कहतीं, "सावधान रहना! एक दिन वह तुम्हारा दिल तोड़ देगा." लेकिन अपने इस नए प्रेम में उसे संसार गुलाबी सपना सा प्रतीत होता था और वह 'सावधानी' संबंधी इन शब्दों को यह कह कर हंसी में उड़ा देती थी, "निश्चय ही उन्हें मुझ से ईर्ष्या है."

एक बार उन्होंने एक दिन जुहू बीच पर बिताने का निश्चय किया. कालिज और सभ्यता से दूर जाना और एक पूरा दिन अकेले राल्फ के साथ बिताना बहुत अच्छा प्रतीत हुआ. उन्होंने सुबह का समय समुद्र में तैरते हुए बिताया. लहरें उन के कोमल युवा शरीरों पर थपेड़े मार रही थीं और वे हाथ में हाथ पकड़े, उंगलियों में उंगलियां डाले ऊपर की ओर मेघरहित नीले आकाश की ओर देख रहे थे. ऐसा प्रतीत होता था मानो समय रुक गया है.

उन्होंने एक छोटे से गोआनी रेस्तोरां में खाना खाया. राल्फ ने एक 'शैक' किराए पर लिया क्योंकि [illegible] बहुत गर्म होता जा रहा था. 'शैक' के अंदर बहुत ठंड थी और वह अंधेरा था. छायाएं लंबी होने लगी थीं और बिस्तर बहुत स्वच्छ था. वह उन्हें आमंत्रित करता हुआ प्रतीत होता था.

"तुम सुस्ता क्यों नहीं लेतीं?" उस की दृष्टि का पीछा करते हुए राल्फ ने कहा.

"मैं अपनी 'बिकिनी' में से बाहर निकलना पसंद करूंगी," बाथरूम के दरवाजे की ओर इशारा करते हुए वह फुसफुसाई.

"बाद में," उस ने उसे धीरे से बिस्तर की ओर ले जाते हुए कहा.

"और आप?" उस की बड़ीबड़ी मस्ती भरी आंखें उस की साहसी काली आंखों में अत्यंत भोलेपन से देख रही थीं.

"अरे, बेबी, शर्माओ मत. आराम करो. मैं भी यहीं पर हूं," उस ने उस के कान में कहा और उसे अपनी बांहों में समेट कर बिस्तर पर लिटा दिया. वह उस को निरंतर चूमता रहा. उस के मृदु स्पर्श से उसे बड़ा आराम मिला. राल्फ की प्रशिक्षित उंगलियों ने उस की चोली को उस के कंधों पर से उतार दिया और उस ने अपने सिर को उस के स्तनों के बीच छिपा लिया.

मानो यह एक स्वप्न था. वह उस के स्पर्श और मधुर आवाज से अभिभूत हो गई. उस की सारी सावधानी गायब हो गई. आरंभ में वह कुछ झिझका, लेकिन बाद में वह खुल गया तथा अधिक कामुक हो उठा. प्रत्युत्तर में उस ने भी उस की इच्छाओं की पूर्ति की और दुनिया से दूर कहीं खो गई. वह आनंद की लहर के साथ बह कर मानो अनंत में विलीन हो गई. वह उस की दृढ़ बांहों में मानो हमेशा

के लिए आबद्ध हो कर अपने को सुरक्षित अनुभव करती थी.

बाद के महीनों में वह यह समझी कि जिस किसी ने भी यह कहा था कि सच्चे प्रेम का मार्ग कभी भी सरल नहीं होता, वह ठीक था. राल्फ उस से बहुत कुछ पाने की आशा करता था. वह यह बात भूल गई कि उसे अपने माता-पिता से भी जवाबदेही करनी पड़ेगी. वे शायद यह सोच रहे थे कि उन की प्रिया कालिज में परिश्रमपूर्वक अध्ययन कर रही है या पुस्तकालय में रुक जाती है अथवा दवाखाने में देरसवेर 'एमर्जेंसियां' अटेंड करती है.

वह अकसर स्वयं को राल्फ के लिए प्रतीक्षा करती पाती. उसे मिनट भी घंटों के समान प्रतीत होते. जब उस की सारी मित्र चली जातीं तो वह महिला कक्ष में अकेली बैठी रहती. वह एम. बी., बी. एस. फाइनल के लिए कार्य कर रही थी और सारे महत्त्वपूर्ण लेक्चरों में उपस्थित रहने का प्रयत्न कर रही थी. लेक्चर के समय उसे अपने कौमार्य के खो बैठने पर अत्यंत खेद होता और ऐसा प्रतीत होता मानो उस ने कोई अपराध किया है. जब सांत्वना प्राप्त करने के लिए वह राल्फ से इस बारे में बात करती, वह उस पर हंसता और कहता, "बेबी, यह सब करते हैं. अपने चारों ओर देखो. क्या तुम यह समझती हो कि ये इतनी लड़कियां सब कुमारी हैं?"

वह उसे अपने निकट खींच लेता और उस के सिर को अपने कंधों पर टिका कर भविष्य की योजना बनाता. वे भारत छोड़ देंगे. कनाडा चले जाएंगे तथा वहां पर विवाह कर लेंगे. वह अपने बूढ़े दादाजी से धन ले लेगा. एक बार कनाडा पहुंच जाने पर वे विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे—वह शल्य चिकित्सा में और प्रिया एनेस्थीसिया में. इस प्रकार वे हमेशा साथसाथ कार्य कर सकते हैं. बाद में बहुत समय बाद उन के बच्चे होंगे. "इसलिए तुम्हें यह पता होना चाहिए," उस के चेहरे को अपने हाथों में ले कर वह कहता, "कि तुम वस्तुत: कोई पाप नहीं कर रही हो. तुम एक दिन मुझ से विवाह करोगी ही, क्या यह बात गलत है बेबी?" इस पर वह मुसकराने लगती और लज्जा के साथ सिर हिलाने लगती.

"मेरा कभी किसी अन्य से विवाह करने का प्रश्न ही नहीं उठता," उस का यह उत्तर होता, "यदि मैं किसी अन्य से विवाह करूंगी तो वह तुम से धोखा होगा, और वह एक पाप होगा." यह कह कर वह चुप हो जाती और उस की आंखें दूर अनंत में कहीं देखती रहतीं. वह उस दिन का स्वप्न देखती रहती, जब दुनिया की आंखों में वह राल्फ की हो जाएगी. लेकिन ये केवल स्वप्न थे, स्वप्न मात्र.

और अब यहां पर वह इस छोटे से चूहे के बिल में आ फंसी थी. उसे ऐसा लगने लगा मानो उसे गर्भ रह गया है. दो मास पहले ही गुजर चुके थे. शुरूशुरू में तो उस ने परवा नहीं की, पर बाद में चिंतित हो उठी. ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसी बातें तो केवल किताबों और सिनेमाओं में होती हैं. उस ने सोचा कि यह उस की कल्पना मात्र है और इस बात को उस ने राल्फ से बताने का निश्चय किया, जो उस का भय निवारण कर सकता था. लेकिन उस ने उस के संदेह की पुष्टि की. राल्फ ने पहले ऐसा नहीं सोचा था, इसलिए वह क्रुद्ध हो उठा और गर्भपात पर बल देने लगा. शीघ्रतापूर्वक विवाह कर लेने का प्रश्न ही नहीं

करता था क्योंकि जैसा कि राल्फ बार-बार कह रहा था, उन्हें अपनी शिक्षा पूरी करनी थी. इस के अतिरिक्त, उन के मातापिता इस संबंध को कभी स्वीकार न करते क्योंकि वे दोनों भिन्नभिन्न जातियों के थे.

अगले दिन वह आपरेशन थिएटर में गई. उसे वे यही कहते थे. वह एक गंदा सा कमरा था, जिस में पुराने ढंग के उपकरण थे, जिन से शायद कभी भी काम नहीं लिया गया था. उसे तीन अजनबी व्यक्तियों के सम्मुख अपने वस्त्र उतारने पड़े. वे स्वयं को डाक्टर कह रहे थे. वह झिझक रही थी, लेकिन नर्स ने बलपूर्वक उस के वस्त्र उतार दिए और वह यह बड़बड़ा रही थी, "हमारे पास फालतू समय नहीं है."

शीघ्र ही सब निबट गया. राल्फ ने अपने दादाजी से रुपए ले कर डाक्टर को दिए. दो घंटे बाद, उस ने उसे उस के घर छोड़ दिया. सिरदर्द का बहाना बना-कर वह तुरंत अपने बिस्तर पर लेट गई.

उस ने रात घोर परेशानी में बिताई. अगले दिन सुबह तक उस का ताप-क्रम 104° फा. हो गया था. उस के सारे पेट में दर्द हो रहा था. उस के भयभीत मातापिता ने एक डाक्टर बुलाया, जिस ने तुरंत जांच की और बताया कि लड़की ने अभीअभी गर्भपात कराया है, जिस के बाद न तो उपयुक्त सावधानियां बरती गई हैं और न ही विषनाशक पदार्थों का उपयोग किया गया है. "यदि आप मुझे एक घंटे बाद बुलाते," डाक्टर ने किंकर्त्तव्य-विमूढ़ मातापिता से कहा, "तो आप की लड़की अब तक मर गई होती."

उसे तुरंत एक बड़े अस्पताल में एक प्राइवेट वार्ड में दाखिल कराया गया. अपने स्वप्नलोक में वह इंट्रावीनस इंजेक्शन देने के लिए उस के हाथ में कोई नस ढूंढ़ने का प्रयास करते राल्फ को देखती. उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि वह गर्भिणी कैसे हो गई. अगले कुछ दिन तक वह बहुत चिंतित रही. उस की चेतना पर जो हलकेहलके बादल छाए हुए थे, उस की चिंता उस में से मानो झांक रही थी. वह अपने मातापिता से क्या कहेगी? यदि उस ने सच्ची बात बता दी तो उन्हें कितना बड़ा धक्का पहुंचेगा. अभी तक उन्होंने उस से कुछ पूछने की कोशिश नहीं की थी. पिंजड़े में फड़फड़ाती हुई भयभीत चिड़ियां की भांति कोई रास्ता ढूंढ़ने का प्रयास करते हुए उस ने पिकनिक, नशीली दवाइयों और बलात्कार की एक कहानी गढ़ ली. उसे इस बात की चिंता थी कि क्या वे उस पर विश्वास करेंगे.

अस्पताल में अंतिम दिन एक सुंदर लड़की उसे देखने आई, "मैं उम्मीद करती हूं कि आप बुरा नहीं मानेंगी," उस ने मधुर स्वर में कहा, "राल्फ ने सोचा कि आप को किसी साथी की आवश्यकता होगी. वह 'ग्रीन फ्लैश' पर 'चेकअप' कर रहे हैं."

तुम्हारे दर के सिवा...

यहीं पै [illegible] गुजारी, यहीं पै मरने दो,
तुम्हारे [illegible] के सिवा और दर मैं क्या जानूं?
ऐसी तौ[illegible] तो मयख्वार ही रहना था 'असर'
दिल पै इक हाथ है इक हाथ में सागर टूटा.

—असर लखनवी.

"आप कौन हैं?" प्रिया ने पूछा.

"ओह, मैं लैला हूं. मैं ने हाल ही में कालिज में प्रवेश लिया है. राल्फ ने मुझे साथसाथ काफी पीने के लिए बुलाया था," उस ने अत्यंत मधुर स्वर में कहा.

प्रिया ने गुलाबी पोशाक पहने इस नीली आंखों और लाल बालों वाली लड़की की ओर गौर से देखा. वह यंत्रवत उस के साथ बातचीत करती रही. वह यह बात मानने को तैयार नहीं थी कि राल्फ की उस में भी रुचि हो सकती है. यद्यपि उस के मस्तिष्क में बहुत समय पूर्व राल्फ द्वारा कहे गए ये शब्द बारबार गूंज रहे थे : "यदि कोई लड़का आप से पूछे कि..."

राल्फ भी उसे देखने आया. उसे लगा मानो युगों के बाद वह आया है. जब वह उस के बिस्तर के निकट आया तो प्रिया की आंखें चमकने लगीं.

"क्या तुम ठीक हो, बेबी?" उस ने पूछा, "आज संध्या के समय तुम घर जा रही हो. जा रही हो न?" उस के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह लैला की ओर उन्मुख हुआ और बोला, "आओ, लैला, हमें देर हो जाएगी." प्रिया ने उन दोनों की आंखें मिलते हुए देखा. उस से उसे सब कुछ स्पष्ट हो गया.

जब उन्होंने जाते हुए दरवाजा बंद किया तो उस ने लैला को यह पूछते हुए सुना कि उसे क्या बीमारी है. राल्फ ने उत्तर दिया, "कुछ नहीं, एपेंडिसाइटिस!"

प्रिया किंकर्तव्यविमूढ़ हो कर बिस्तर पर लेट गई. उसे अपार कष्ट हुआ और वह निराशा अनुभव कर रही थी. उस का राल्फ उस के साथ ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है? वह न तो एक भी क्षण के लिए रुका और न उस का हाथ ही पकड़ा. उस की आंखें केवल लैला पर टिकी थीं. इतना साथसाथ रहने के बाद अब उसे उस की क्या बिलकुल भी चिंता नहीं थी? एपेंडिसाइटिस! ठीक है...

उसे यह बिलकुल निश्चित प्रतीत होने लगा कि राल्फ ने उसे हमेशा के लिए छोड़ दिया है. अब वह कभी उस का नहीं होगा, कभी नहीं. उस ने लैला को काफी पर बुलाया था और वह यह अच्छी तरह जानती थी कि इस का क्या परिणाम होगा.

तो वह इतना घृणित व्यक्ति था? पहले किसी लड़की के साथ मजा लूटना और तब उसे गंदे कपड़े की भांति फेंक देना! उस ने वास्तव में उस के प्रेम के युवा स्वप्न को तोड़ दिया था.

उसे हलकाहलका क्रोध आने लगा. उस के आंसू बहने लगे और वह निराशा अनुभव करने लगी. अच्छा, तो वह भी उस को दिखा देगी कि वह उस के लिए इतना आवश्यक नहीं था. वह भी दुनिया को दिखा देगी. वह परिश्रमपूर्वक अध्ययन करेगी और चिकित्सा जगत में अपना नाम पैदा करेगी. बीमारों और जरूरतमंदों की सहायता करेगी, जैसी कि उस के पिता ने तब से योजना बना रखी थी, जब से वह स्कूल गई थी.

यह सच है कि शुरूशुरू में राल्फ के बिना जीवन अत्यंत कठिन प्रतीत होगा. कालिज के लोग बातें करेंगे और प्रश्न पूछेंगे. लेकिन इस से क्या होता है? वे उस को और अधिक चोट नहीं पहुंचा सकेंगे. उस ने एकदो बातें सीख ली हैं और अब वह बहुत मुश्किल से ही किसी पुरुष पर विश्वास करेगी. लेकिन उस में एक बात ऐसी थी, जिसे कोई उस से नहीं छीन सकता था वह थी यशस्वी भविष्य, एक महान चिकित्सक या शल्य चिकित्सक का जीवन.

और तब उस ने उस समय अपने मातापिता की आवाज सुनी, जब वे उस के दरवाजे के समीप आए. वे उसे घर ले जाने के लिए आए थे. थोड़े ही दिनों में वे कितने बूढ़े लगने लगे थे—विशेष रूप से उस के पिता. यह सोच कर उसे पश्चात्ताप होने लगा. "उन के सम्मान को जो क्षति पहुंची है मैं उस की पूर्ति करूंगी.' मुसकराते हुए वह उठी और उन का अभिवादन करने के लिए चल पड़ी. कल कुछ और ही होगा. ●

दीपा (विद्या सिन्हा) और संजय (अमोल पालेकर) परस्पर प्रेम करते हैं और उन की सगाई हो चुकी है.

पखवाड़े की फिल्म

रजनीगंधा

मन्नू भंडारी की कहानी '[illegible] सच है' पर आधारित 'र[illegible]गंधा' की प्रमुख विशेषता यही है कि कहानी के पात्र आम जीवन में से लिए गए हैं और उन्हें अधिक से अधिक स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया गया है. उन में कृत्रिमता या बनावट नहीं आने दी गई. उन का प्रेम, दुखसुख, हास्य और क्रोध आदि भाव फिल्मी रूप न धारण कर बड़े ही सहज और स्वस्थ रूप में प्रकट हुए हैं. लगता है लेखक ने हमीं में से कुछ चरित्र लिए हैं और जैसे के तैसे परदे पर उतार

मुक्ता

दिए हैं.

फिल्म की कहानी आम बंबइया लीक से हट कर लिखी गई है. साथ ही फिल्म में सभी कलाकार भी नए हैं, जिन के अभिनय में मौलिकता एवं नयापन है और जिन पर किसी अन्य की छाप नहीं है. इन सब बातों से फिल्म में भी एक नयापन आ गया है, जो आम लीक पर बनी फिल्मों से तंग आए दर्शकों को अच्छा लग सकता है. साथ ही निर्देशक बासु चटर्जी ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि थोड़े बजट में भी अच्छी और सफल फिल्म बनाई जा सकती है.

फिल्म की अन्य विशेषता है कि इस में एक प्रेम कहानी ली गई है किंतु फिर भी कहीं सस्ता रोमांस नहीं है, अश्लीलता नहीं है. नायिका दीपा (विद्या सिन्हा) की सहेली इरा (राजिता ठाकुर) के कुछ संवाद जरूर अश्लीलता की ओर संकेत करते हैं, किंतु दो सहेलियों के पारस्परिक संवाद होने से उन में भी कामुकता की अपेक्षा हास्य का ही पुट आ गया है.

कहानी में केवल चार पात्र लिए गए हैं. नायिका दीपा (विद्या सिन्हा) पीएच. डी. कर रही है. उस का प्रेमी संजय (अमोल पालेकर) एक बैंक में नौकरी करता है. दोनों दिल्ली में रहते हैं. दीपा का कालिज का साथी और भूतपूर्व प्रेमी है नवीन (दिनेश ठाकुर), जो अब बंबई में रहता है. दीपा की एक सहेली है इरा (राजिता ठाकुर), जिस की शादी हो चुकी है और वह भी बंबई में रहती है. फिल्म की पूरी कहानी में केवल यही चार पात्र घूमफिर कर आते हैं. अन्य कोई एकाध गौण पात्र आया भी है तो केवल कुछ क्षणों के लिए. कई पात्रों का कहानी में अस्तित्व तो है पर उन्हें परदे पर नहीं आने दिया गया, जैसे इरा का पति आदि.

वास्तव में देखा जाए तो 'रजनीगंधा' की कहानी में कहानी का अंश ही बहुत कम है. केवल दीपा के जीवन के कुछ दिनों का अनुभव परदे पर उतार दिया गया है. कहानी की केंद्रबिंदु भी दीपा ही रही है. इस के चित्रित अनुभव के दौरान जो पात्र जितनी देर के लिए उस के जीवन में आता है, उस पात्र का केवल उतना ही चित्रण किया गया है.

फिल्म की कहानी में युवा दीपा के मन का संघर्ष चित्रित किया गया है. वह संजय से प्यार करती है और दोनों की सगाई हो चुकी है. संजय को अपनी पदोन्नति की चिंता है क्योंकि तभी वह शादी करेगा ताकि दंपति का जीवन सुख से गुजर सके. तभी नौकरी के इंटरव्यू के लिए दीपा को बंबई जाना पड़ता है, जहां वह अपनी सहेली इरा के पास ठहरती है. वहीं उस का भूतपूर्व प्रेमी नवीन उस के जीवन में दोबारा आता है. दीपा महसूस करती है कि वह संजय से नहीं, बल्कि नवीन से ही प्यार करती है. संजय से प्रेम कर के वह अपने को धोखा दे रही है. दिल्ली लौटने पर जब उस का संजय से मिलन होता है तो उस के निश्छल अंक में लिपट कर वह महसूस करती है कि नवीन का आकर्षण एक बहकावा था. वास्तविकता यही है— संजय का प्रेम. इस प्रकार 'रजनीगंधा' में एक युवा लड़की के मन के संघर्ष का विश्लेषण किया गया है.

फिल्म की इस कहानी में कोई विशेष उद्देश्य नहीं उठाया गया और न ही कोई समस्या उठाई गई है. केवल दीपा के मनोभावों का चित्रण किया गया है.

कहानी के चार पात्र हैं और चारों ही एकदम अलग प्रकृति के हैं. दीपा एक भावुक लड़की है. इस के भावों में दृढ़ता नहीं है. उस के दो प्रेमी हैं. वह जिस के भी संसर्ग में आती है, अपने को उसी के वश में समझने लगती है. उस का प्रेमी संजय एक आम युवक है, जिसे हर समय अपनी प्रोमोशन की पड़ी रहती है. प्रेमी हो कर [illegible] वह यथार्थ के धरातल पर अधिक [illegible]ण करता है और बैंक के वातावरण [illegible] अधिक प्रभावित है. अपनी प्रेमिका दीपा से मिल कर भी अधिकतर अपनी नौकरी और प्रोमोशन की बातों में उलझे रहना उस के चरित्र की विशे- [illegible] की गई है. इन्हीं बातों ने उसे

दीपा (विद्या सिन्हा) को एक कालिज में अध्यापिका की नौकरी के लिए बंबई जाना पड़ता है. वहां वह अपनी सहेली इरा (राजिता ठाकुर) के पास ठहरती है. मुद्दत के बाद मिलने के कारण दोनों में खूब दिल खोल कर बातें होती हैं.

एक निश्छल एवं निरीह प्रेमी बना दिया है. इरा विवाहिता युवती है और आजकल की नई पीढ़ी की लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है. बातबात में दीपा को 'यार' कह कर संबोधित करना उस के स्पष्टवादी एवं मुखर रूप को प्रकट करता है. दीपा के प्रेमी नवीन का चरित्र इन से बिलकुल अलग है. वह दीपा से प्रेम करता है, यह स्पष्ट है. लेकिन वह सब कुछ अपने अंदर छिपाए रखता है. अपनी वाणी तो क्या किसी साधारण से क्रियाकलाप से भी यह बात दीपा पर प्रकट होने नहीं देता. उस का आत्मनियंत्रण असीम है. कम पात्र होते हुए भी पात्रों की इस विविधता ने 'रजनीगंधा' को अपने आकर्षक रंगों में ही नहीं रंग दिया, बल्कि अनेक खट्टेमीठे रसों से भी भर दिया है.

फिल्म की केवल एक बात खलती है. फिल्म को प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप देने के चक्कर में निर्देशक बासु चटर्जी इतना अति तक उतर गया है, कि कई स्थलों पर यह स्वाभाविकता न केवल खलने लगती है, बल्कि बनावटी भी लगने लगती है. एक दृश्य में दीपा और संजय इंडिया गेट के किसी खुले रेस्टोरेंट में काफी पीने बैठते हैं, जहां बाद में दीपा को छोड़ कर वह अपने मित्रों में जा बैठता है. यहां दृश्य का पहला भाग प्राकृतिक न लग कर बनावटी सा लगता है, पर बाद के भाग में यह दोष दूर हो गया है और यह दृश्य भी संजय के चरित्रचित्रण में महत्त्वपूर्ण सहयोग दे गया है और सिद्ध कर गया है कि वह अपने बैंक के मित्रों और वहां के वातावरण में कितना खोया रहता है कि उसे अपनी प्रेमिका की भी सुधबुध नहीं रहती.

फिल्म में मुख्यत: निर्देशक बासु चटर्जी ही छाया हुआ है. नई कहानी और नए पात्र ले कर भी वह "रजनीगंधा" को बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत कर गया है. दीपा के मनोभावों को प्रकट करने के लिए उस ने बहुत अधिक 'फ्रीजों' का प्रयोग किया है. ये खलते भी हैं. कहानी की पटकथा और संवाद भी उसी ने लिखे हैं और दोनों प्रभावपूर्ण हैं.
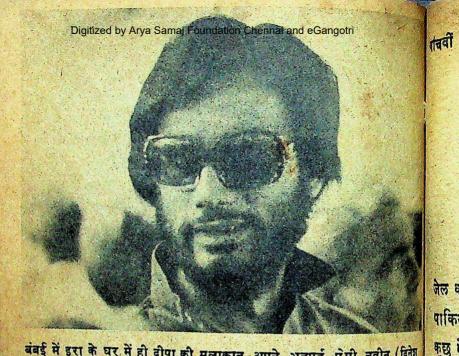
बंबई में इरा के घर में ही दीपा की मुलाकात अपने भूतपूर्व प्रेमी नवीन (दिनेश ठाकुर) से होती है. वह उस की ओर आकृष्ट होती है, पर दिल्ली लौट कर उसे दिल से निकाल देती है.

नए हो कर भी सभी कलाकारों का अभिनय प्रभावपूर्ण है. जो जिस रूप में आया है, उस में सफल रहा है. दीपा के रूप में विद्या सिन्हा पूर्णत: सफल रही है. उस में हमारी आम नायिकाओं का चुलबुलापन और ग्लैमर नहीं है. किंतु भावों को प्रकट करने की क्षमता है. संजय के रूप में अमोल पालेकर अधिक सफल न रह कर भी खलता नहीं है.

दिनेश ठाकुर को 'रजनीगंधा' में भी 'अनुभव' की सी ही भूमिका दोबारा निभानी पड़ी है. बासु चटर्जी की ही फिल्म 'अनुभव' में भी उस ने नायिका के भूतपूर्व प्रेमी की भूमिका निभाई थी और वही कहानी में महत्त्वपूर्ण मोड़ लाया था. अंतर केवल इतना है कि 'अनुभव' की नायिका विवाहिता थी और 'रजनीगंधा' की नायिका की अभी केवल सगाई ही हुई है. इरा के रूप में राजिता ठाकुर सदा की तरह छाई हुई है. वह अपने मुखर अभिनय के साथ सुंदरसलोने शरीर की भी दर्शकों पर छाप छोड़ जाती है.

फिल्म की एक अन्य विशेषता यह है कि इस में गीतों की भरमार नहीं है. योगेश के केवल दो गीत हैं. एक गीत मुकेश ने और दूसरा लता ने गाया है. सलिल चौधरी ने दोनों गीतों को मधुर धुनें दी हैं. फिल्म का पार्श्वसंगीत भी परिस्थितियों के अनुकूल रहा है. महाजन की फोटोग्राफी सुंदर है.

फिल्म के शीर्षक 'रजनीगंधा' का केवल इतना महत्त्व है कि दीपा का प्रेमी संजय उसे सदा रजनीगंधा के फूल भेंट करता है. अंत में वह नवीन को ठुकरा कर इन्हीं फूलों को अपना लेती है. इस प्रकार रजनीगंधा के फूल दीपा के प्रेम का पर्याय बन गए हैं. इस के साथ ही 'रजनीगंधा' शीर्षक फिल्म को एक साहित्यिक स्पर्श भी दे गया है. नाम के अनुरूप ही फिल्म को भी सिलोलाइड पर लिखी गई एक साहित्यिक कृति कहा जा सकता है. ●

जेल की गंदी कोठरी में अविनाश डर रहा था कि न जाने पाकिस्तानियों का अब क्या अत्याचार होगा, लेकिन तभी कुछ ऐसा हुआ कि वह जेल से निकल कर दूर चला गया...

आप पढ़ चुके हैं :

मम्मीपापा द्वारा पीटे जाने पर अविनाश घर छोड़ कर चला गया था. स्टेशन पर पहुंच कर वह बिना टिकट गाड़ी में बैठ गया था. लेकिन टिकट चैकर ने जब अगले स्टेशन पर उसे धक्का मार कर उतार दिया तो वह पटरियों के साथसाथ चलता हुआ कंटीले तारों की एक बाड़ से जा टकराया, और फौजी सिपाही उसे पकड़ कर ले गए. फौजी कैंप में अविनाश को हिंदुस्तानी जासूस समझा जाने लगा और उसे तरहतरह से यातनाएं दी गईं.

कमरे में सन्नाटा छाया हुआ था. तभी अविनाश ने सुना, उस के पीछे चश्मे वाला अफसर उस से कह रहा था, "यह तो मामूली सा खेल है, मियां, हमारे पास चीन की बनी हु[illegible] ऐसीऐसी मशीनें हैं जो आदमी की आं[illegible]में छिपा [illegible] भी खींच निकालती हैं. [illegible]तो, अब कुछ बताना है या फिर दू[illegible] नुसखा [illegible]."

अविनाश उस की बातें सुन ज[illegible]र [illegible] था लेकिन उस के पास उन का जवाब नहीं था. उस के मुंह का स्वाद [illegible]सैला हो रहा था. शायद कोई दांत टूट गया था और खून बह रहा था.

"कुचल दो इस कमीने को, यह हमारा गुस्सा नहीं जानता," अफसर ने हुक्म दिया. एक फौजी ने पलट कर एक जोरदार घूंसा अविनाश के मुंह पर जमाया और फिर उस के सधे हुए जोरदार घूंसे अविनाश के चेहरे पर बरसने लगे.

अविनाश के अंदर अब चीखने की ताकत भी बाकी नहीं रह गई थी. मार पड़ती रही और वह फिर बेहोश हो गया.

"ले जाओ इसे अब. आज इतनी ही कसरत काफी है," चश्मे वाले अफसर

ने कहा. फिर उस ने अपनी घड़ी पर नजर डाली और नाक पर रूमाल रख कर तेजी से कमरे से बाहर हो गया.

उस के बाद शुरू हुआ पाकिस्तानी तानाशाहों का क्रूर अत्याचार. कभी सुबह, कभी दोपहर को तो कभी रात को अविनाश की कोठरी का ताला खड़खड़ाता और उस के शरीर को कंधे पर लाद कर कोई फौजी उसे कमरा नंबर तीन में पहुंचा देता और हर बार वही घिसेपिटे सवाल उस के सुन्न पड़े कानों में टकराते, जिन का कोई जवाब उस के पास नहीं था.

बाहरी दुनिया से बेखबर अविनाश अधमरी हालत में अपनी कोठरी में पड़ा रहता. इन भीषण अत्याचारों को सहने की ताकत पता नहीं कहां से उस के अंदर आ गई थी. एक दिन दोपहर को सहसा अपनी कोठरी के आगे हल्लागुल्ला मचने से वह चौंक पड़ा. उस ने गरदन उठा कर देखा, बाहर अच्छीखासी भीड़ जमा थी. चीखपुकार, गालीगलौज से वातावरण गरम था. तभी उस की कोठरी का दरवाजा खुला और कई फौजियों ने भीड़ को डंडों, लातों और घूंसों की बौछार के बीच उस की कोठरी में ढकेल कर फिर बाहर से ताला बंद कर दिया. उस की छोटी सी कोठरी में अब तिल रखने की भी जगह बाकी नहीं थी.

कोलाहल में अविनाश को उन की कोई बात समझ में नहीं आ रही थी. तभी कैदियों ने सम्मिलित स्वर में नारे लगाने शुरू किए : "जय मुजीब," "जय बांगला देश," "आमार सोनार बांगला जिंदाबाद!"

सारा दिन इसी हल्लेगुल्ले के बीच कट गया. उन में से किसी ने भी अविनाश की ओर ध्यान नहीं दिया. लेकिन शाम होतेहोते कमरे में शांति छाने लगी, चीखते गले खामोश हो गए और सभी वहीं फर्श पर बैठ कर सुस्ताने लगे. इन लोगों के बवाल में आज अविनाश की ओर किसी का ध्यान नहीं गया था और वह भूखाप्यासा एक कोने में दुबका पड़ा था.

कोठरी में बैठे लोग अब धीमेधीमे आपस में बातें कर रहे थे. एक आदमी दीवार से टिकने के लिए पीछे सरका तो अविनाश से जा टकराया. अविनाश का स्पर्श पा कर वह बुरी तरह चौंक कर खड़ा हो गया और अंधेरे में आंखें फाड़ कर उस की ओर देखने लगा.

"कौन है, रे?" उस ने बंगला में पूछा. उस के दूसरे साथी भी अब तक अविनाश को देख चुके थे. उन में से एक ने टटोल कर अविनाश को सीधा कर दिया और दूसरे ने जेब में से माचिस निकाल कर जलाई, जिस की हलकी रोशनी में अविनाश का पीला चेहरा चमक उठा. ढेर सारे लोग उसे घेर कर खड़े हो गए और फिर जोरजोर से बातें करने लगे. अविनाश सहमा सा उसी तरह लेटा टिपटिप उन्हें देख रहा था. एक बुजुर्ग आदमी अविनाश के नजदीक आ बैठा और उस को टटोलने लगा.

"जिंदा है," उस ने चीख कर कहा. सभी क्षण भर को खामोश हो गए और अविनाश को घूर कर देखने लगे.

"कौन हो, भाई? बोलते क्यों नहीं?" उस बुजुर्ग आदमी ने नर्मी से पूछा. न जाने कितने दिनों बाद अविनाश के कानों में ममता भरी आवाज पड़ी थी. इतने दिनों से सूखा आंसुओं का स्रोत जैसे फूट पड़ा और वह हिचकहिचक कर रोने लगा.

कमरे में गहरा सन्नाटा छाया हुआ था और बुजुर्ग का कांपता हाथ धीरेधीरे उस के [illegible] को सहला रहा था. अविनाश के आंसू [illegible] गए थे. बुजुर्ग ने बड़ी ममता से [illegible] का सिर उठा कर अपनी गोद में रख लिया और उसे थपथपाने लगा.

"घबराओ नहीं, बच्चे. बताओ, तुम कौन हो, कैसे इन जालिमों के चंगुल में फंस गए?" बुजुर्ग ने नर्मी से पूछा.

बुजुर्ग ने अविनाश को सामने कर के कहा, "देखो, जमाल, इसे देखो. पाकिस्तानी फौज के जुल्म की जीतीजागती कहानी. इस पर जो भीषण अत्याचार हुए हैं, उन्हें तुम सुन न सकोगे."

अविनाश ने सिसकते हुए धीरेधीरे शुरू से आखिर तक अपनी आपबीती उन्हें सुना डाली. कमरे में मौजूद एकएक आदमी जैसे दम साधे उस की बात सुन रहा था. बुजुर्ग का हाथ अब भी उस के सिर पर रखा हुआ था.

"या खुदा," अविनाश के खामोश होने पर उन के मुंह से निकला, "नहीं, अब ज्यादा दिन नहीं, जुल्म का यह बवंडर ज्यादा नहीं टिक सकता. या अल्लाह, एक मासूम बच्चे के साथ ये जालिमाना हरकतें! खुदा सब देखता है, मेरे नूरेचश्म. घबराओ नहीं, अब तुम हमारे बीच हो, तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता. इंशाल्लाह, अब बहुत जल्दी अपने मांबाप से मिलोगे."

बुजुर्ग का दिल भर आया. उन्होंने अविनाश को अपनी गोद में लिटा लिया और वह धीरेधीरे दूसरे लोगों से बातें करने लगे. अविनाश को लगा कि लंबे समय के बाद उसे किसी की गोद में सिर रखने का मौका मिला है.

इसी तरह तीन दिन बीत गए मगर अविनाश को एक बार भी कमरा नंबर 3 में नहीं बुलाया गया. इस बीच वह इन लोगों से घुलमिल गया था.

आधी रात बीत चुकी थी. अविनाश गहरी नींद सोया पड़ा था. सहसा एक तेज आवाज से वह जाग उठा. उस कोठरी में बंद सभी लोग जाग गए थे और सीखचों से चिपके बाहर झांकने की कोशिश कर रहे थे, जहां से लोगों की चीखपुकार और गोलियों की तेज आवाज आ रही थी.

"हमला हो गया, दादा," एक नौजवान ने बुजुर्ग के हाथ पकड़ कर खुशी से चीखते हुए कहा और फिर पूरी ताकत से चिल्लाया, "जय बांगला!" नारों का दौर फिर शुरू हो गया और इस बार उन के गले से गला मिला कर अविनाश भी चीख रहा था.

बाहर लड़ाई चल रही थी. गोलियों की आवाज साफ सुनाई पड़ रही थी.

चारों तरफ अंधेरा छाया हुआ था. तभी सामने के बरामदे से कुछ फौजी दौड़ते हुए निकल गए.

भोर होने से पहले ही शोर धीमा होतेहोते थम गया, बंदूकें खामोश हो गईं. कोठरी में भी सन्नाटा फैल गया. तभी उन्होंने सुना, बाहर से एक जोरदार नारा बुलंद किया गया : "जय मुजीब!"

इस नारे ने जैसे कोठरी में बंद लोगों में प्राण फूंक दिए. वे उछलउछल कर नाचने लगे और नारे लगाने लगे. थोड़ी देर में इमारत के अंदर चहलपहल शुरू हो गई. तीनचार आदमी तेजी से उस ओर आए और उन्होंने कोठरी के सामने आ कर जोर से आवाज लगाई, "जय बांगला!"

"जय बांगला!" कोठरी में बंद लोगों के गले से जैसे ही यह उद्घोष उठा, ताले पर हथौड़े पड़ने लगे और कुछ ही देर में ताला टूट कर एक ओर जा गिरा. कोठरी में बंद सभी लोग दौड़ कर बाहर आ गए और बाहर खड़े लोगों से गले मिलने लगे.

अविनाश भी कोठरी से बाहर आ गया. थोड़ी देर वे लोग आपस में बातें करते रहे और फिर बाहर की ओर बढ़ने लगे. सहसा बुजुर्ग चौंक कर ठिठक गए और अविनाश को खींचते हुए बीच में ले आए, जहां अविनाश ने देखा कि तीनचार नौजवान फौजी वर्दी में खड़े हैं जिन्होंने उन्हें आजाद कराया था.

"देखो, जमाल, इसे देखो," बुजुर्ग ने अविनाश को सामने कर के कहा, "पाकिस्तानी फौज के जुल्म की जीतीजागती कहानी. मांबाप से रूठा यह बच्चा उन की निगाहों में भारत का जासूस बन गया. इस पर जो भीषण अत्याचार हुए हैं, उन्हें तुम सुन न सकोगे."

जमाल ने आगे बढ़ कर अविनाश को अपनी बांहों में भर लिया और बोला, "परवा मत करो, मेरे हिंदुस्तानी दोस्त. तुम पर पड़ी एकाएक मार का बदला हम ले कर रहेंगे, यह हमारी प्रतिज्ञा है. इस मुसीबत की घड़ी में तुम्हारा देश हमें जो मदद दे रहा है, वह हम भूल नहीं पाएंगे."

अपने देश के प्रति गर्व से अविनाश का सीना तन गया.

"जमाल, इसे अपने साथ ले चलो और मौका पाते ही जल्दी से जल्दी इसे कलकत्ता पहुंचा दो. इस के मांबाप परेशान होंगे," बुजुर्ग ने कहा.

"नहीं, मैं घर नहीं जाऊंगा," अविनाश ने धीमे किंतु दृढ़ स्वर में कहा.

बुजुर्ग ने अविनाश का कंधा पकड़ कर प्यार से कहा, "डरो मत, मेरे बच्चे. अब तुम्हारी मम्मी तुम से कभी नाराज नहीं होंगी. वह तुम्हारे बिना तड़प रही होंगी. तुम्हें उन के पास जरूर जाना चाहिए."

"नहीं, दादा, मैं डर नहीं रहा, मैं मम्मी से मिलूंगा और जरूर मिलूंगा. लेकिन अभी नहीं. जब तक मैं आप लोगों के साथ कंधा से कंधा मिला कर इन कसाइयों से इस जमीन को मुक्त नहीं करा लूंगा, तब तक मैं भारत लौट कर नहीं जाऊंगा."

अविनाश के दृढ़ स्वर ने सब को क्षण भर के लिए स्तब्ध कर दिया. इतना छोटा बच्चा और इतना बड़ा त्याग! बुजुर्ग ने लपक कर अविनाश को अपने सीने से लगा लिया, "जिओ, मेरे बच्चे. तुम भारत की जीतीजागती तसवीर हो, उस के अमन और इंसाफ का नमूना हो. हमें अपने इन नौजवानों पर नाज है जो अपनी आजादी के लिए जान की बाजी लगा रहे हैं. लेकिन उन से ज्यादा हमें तुम पर नाज है जो हमारे लिए इतनी बड़ी कुरबानी दे रहे हो."

फिर [illegible]ने जमाल की तरफ मुड़ कर कहा, "[illegible] बच्चे का खयाल रखना, जमाल. यह भारत की अमानत है. अब चलो, यहां से जल्दी निकल जाएं."

सभी जैसे उन के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे. उन के तेज कदम आगे बढ़ने लगे और उन के कदम से कदम मिला

बल रहा था अविनाश... नौजवानों के दिलों में आग लगी और उन्होंने अपना सुगठित संगठन बना लिया था, जिस का नेता था जमाल—वर्ष का उभरता नौजवान, चेहरे पर बढ़ी हुई दाढ़ी, बिखरे हुए बाल, बदन पर खाकी वर्दी और आंखों में तेज चमक, जैसे फूंक कर रख देना चाहता हो.

और जमाल के साथ अब था अविनाश—सुकुमार देह, गोरा रंग, खाकी फौजी कमीज और तमतमाता चेहरा. 12 वर्ष के इस बच्चे में न जाने कौन सी ताकत भर गई थी, कहां से इतना साहस आ गया था. सभी दंग थे.

घने जंगल में दलदल के बीच एक छोटी सी झोंपड़ी थी जो चारों तरफ से ताड़ के पेड़ों और झाड़ियों से इस तरह घिरी हुई थी कि पास से निकलने पर भी उस का पता लगाना कठिन था. इतने लंबेचौड़े दलदल को पार कर उस तक कैसे पहुंचा जाए, इसे बहुत थोड़े लोग ही जानते थे.

घनघोर काली रात थी. चारों तरफ गजब का सन्नाटा छाया हुआ था. दूर-दूर तक रोशनी का कोई चिह्न नहीं था. झोंपड़ी में दो कमरे थे—एक काफी बड़ा और एक छोटा सा. ऐसे समय में, जब कि चारों ओर गहरा अंधेरा छाया हुआ था, बड़े कमरे में लगभग 20 युवक जमीन पर चटाई बिछा कर बैठे हुए थे. कमरे में एक मोमबत्ती जल रही थी जिसे चारों ओर से इस तरह से ढंक दिया गया था कि रोशनी की हलकी किरण भी झोंपड़ी के बाहर न जा सके. सभी युवक घेरा बनाए बैठे थे. एक और जमाल दीवार से टिका बैठा हुआ था और उस के बगल में था अविनाश.

"दोस्तो," जमाल ने दृढ़ किंतु धीमे स्वर में कहना आरंभ किया, "मैं ने आगे का कार्यक्रम आप लोगों को पहले ही बता दिया है. अब हमें देखना है कि उस कार्यक्रम को कैसे पूरा किया जाए."

"अभी एक बहुत बड़ी कमी है हमारे संगठन में," एक नौजवान ने धीरे से कहा. वह फिर बोला, "हम ने लड़ाई की तैयारी तो कर ली है लेकिन हमारा अपना कोई जासूसी दल तैयार नहीं है. सभी जानते हैं कि हमारी ताकत इतनी नहीं है कि हम सीधे मैदान में कूद कर दुश्मन की फौज का सामना कर सकें. हमें गुरिल्ला युद्ध का सहारा लेना होगा और उस के लिए जरूरी है कि हमें समयसमय पर दुश्मन की कारररवाइयों की सच्ची सूचना मिलती रहे. इसलिए हमें अपना खुफिया दल बहुत जल्दी तैयार करना चाहिए."

जमाल गौर से उस नौजवान की बातें सुन रहा था. उस ने एक बार चारों ओर बैठे युवकों के चेहरों पर अपनी तीखी नजर दौड़ाई. वह कुछ देर सोचता रहा, फिर जैसे उस के दिमाग में हल निकल आया. वह बोला, "आप का सोचना एकदम सही है. लेकिन सब जानते हैं कि हमारी फौज में अभी सैनिकों की कितनी कमी है. इसलिए मेरा सुझाव है कि इस काम के लिए हम उन बच्चों को इस्तेमाल करें जिन के अंदर जोश उबाल खा रहा है. मैं कामरेड अविनाश को इस बानर सेना

...खबर भी न हो सकी...

तेरे करीब से गुजरा हूं इस तरह कि मुझे
खबर भी न हो सकी मैं कहां से गुजरा हूं.

—जगन्नाथ आजाद

का सेनापति [illegible] हूं और कैप्टन जावेद से प्रार्थना करता हूं कि वह इस काम में अविनाश की मदद करें."

बगल में बैठा अविनाश, जो बड़ी गंभीरता से सारी बातें सुन रहा था, सहसा अपना नाम सुन कर चौंक पड़ा. "क्या मैं इतना बड़ा काम कर सकता हूं?" उस ने जमाल से पूछा.

"जरूर," जमाल का जवाब था. फिर वह सरक कर मोमबत्ती के पास पहुंच गया और एक बड़ा नक्शा फैला कर सभी को आगे के कार्यक्रमों के बारे में समझाने लगा.

अविनाश अब पूरी तरह तैयार था. उसे मालूम था कि उसे कितना बड़ा काम सौंपा गया है, उस की जरा सी गलती से सैकड़ों की जानें जा सकती हैं. इस छोटी सी उमर में ही उस के अंदर गजब की हिम्मत और सूझबूझ आ गई थी. शुरू से ही वह एक बुद्धिमान लड़का था लेकिन घर में अपनी शक्ति खेलकूद में नष्ट कर रहा था. जब उसे पाकिस्तानी सेना का अत्याचार सहना पड़ा, जब उस ने इन जोश में उबलते नौजवानों को देखा, उस के अंदर दबी हुई प्रतिभा जाग पड़ी. देखते ही देखते उस ने गुप्तचरी के दांवपेंच सीख लिए और वह एक अच्छा नेता बन गया. उसी की आयु के सैकड़ों लड़कों को इस संगठन में भरती किया गया था, जिन का काम था पाकिस्तानी फौज की गतिविधियों पर नजर रखना और उन की सूचना मुक्तिवाहिनी तक पहुंचाना.

आज मुक्तिवाहिनी ने सिलहट पर कब्जा करने की योजना बनाई थी. अविनाश के साथी गुप्त रूप से इधरउधर बिखरे हुए थे और जानकारी इकट्ठी कर रहे थे. उन्हें शाम के पांच बजे गुप्त स्थान पर अविनाश को जानकारी देनी थी. सिलहट मिशन की बागडोर खुद जमाल ने संभाली हुई थी और वह बड़ी बेचैनी से गुप्त स्थान पर इधरउधर टहल रहा था. [illegible] ही अविनाश शांत, स्थिर मुद्रा में बैठा हुआ था.

धीरेधीरे कमरा छोटेछोटे लड़कों से भरने लगा. अविनाश फुरती से एकएक लड़के से बातें करने लगा. जमाल उस के पास खड़ा तेजी से अपनी नोट बुक में जरूरी जानकारी लिखता जा रहा था कि शत्रु के कितने सैनिक हैं, कहां उन का गोलाबारूद है, वे कहां अधिक सतर्क हैं, कहां ढीले हैं. एकएक कर लड़के जानकारी देते जा रहे थे और जमाल तेजी से लिखता जा रहा था. अविनाश उन पर सवालों की झड़ी लगाए हुए था.

अविनाश ने जमाल की ओर देखा. वह बहुत संतुष्ट नजर आ रहा था. उस ने कहा, "बहुत खूब. अब आप इन्हें इन का नया काम बता दें. मैं चलता हूं."

जमाल तेजी से बाहर निकल गया और अविनाश हर लड़के को उस के काम के विषय में बताने लगा. उस समय उसे देख कर कौन कह सकता था कि यह वही लड़का, अविनाश है जो एक दिन घड़ी तोड़ देने पर मार खा कर घर से भागा था.

मुक्तिवाहिनी खून की होली खेल रही थी. सीमित फौज और थोड़े से हथियारों के बल पर उस ने सिलहट, दिनाजपुर और कोमिल्ला पर अपना कब्जा कर लिया था. इस कब्जे को बनाए रखना बड़ा कठिन काम था. अतः उस ने निश्चय किया कि पाकिस्तानी फौज को बढ़ने से रोकने के लिए नदियों पर बने महत्त्वपूर्ण पु... को तोड़ दिया जाए.

गु... मीटिंग हो रही थी. पुलों को तोड़ने क... योजना बनाई जा रही थी. अविनाश काफी देर से शांत बैठा सब बातें सुन रहा था. सहसा वह तन कर बैठ गया और उस ने अपनी पतली लेकिन कठोर वाणी से सब का ध्यान अपनी ओर खींच लिया, "कमांडर,

...ल ने कहा, "मैं [illegible] चाहता हूं कि इस तरह का काम खुफिया संगठन द्वारा कराना ही अधिक अच्छा है. मैं चाहता हूं कि इस काम के लिए मेरे साथियों को लिया जाए."

ये छोटेछोटे लड़के क्या इस काम को कर सकेंगे? यही सवाल सब के दिमाग में था.

जमाल और उस के साथी थोड़ी देर खामोश रहे. फिर जमाल ने कहा, "कामरेड अविनाश, आप की बात सच है. लेकिन क्या आप और आप के साथी इस महत्त्वपूर्ण काम को सफलतापूर्वक करने की क्षमता रखते हैं?"

"निश्चय ही, कमांडर," अविनाश ने तत्परता से बिना झिझक उत्तर दिया.

निर्णय जमाल को लेना था. अंत में उस ने निर्णय ले ही लिया, "ठीक है, कामरेड अविनाश, यह काम आप के साथी ही करेंगे. आप अपने उन खास साथियों के नाम मुझे दे दीजिए जिन्हें आप इस काम के लिए उपयुक्त समझते हैं. बाकी की योजना बना कर मैं आप को सूचित करूंगा."

जो नाम अविनाश ने दिए उन में सब से पहला नाम उस का अपना था. उसे देख कर जमाल ने कहा, "कमांडर कभी आगे बढ़ कर खुद काम नहीं करते, मेरे भाई, क्योंकि उन पर संगठन की सारी जिम्मेदारी होती है."

अविनाश मन मसोस कर रह गया और उस ने भारी मन से अपने साथियों को गले लगा कर विदा किया.

एक ही रात को, एक ही समय, अलगअलग स्थानों से पांच छोटीछोटी नावें खामोशी से अंधेरे में छिपती हुई आगे बढ़ गईं जिन पर पांच बच्चे और पांच मुक्तिवाहिनी के सैनिक सवार थे. सभी को एक ही समय में पुलों को उड़ाना था.

रात भर अविनाश सो नहीं सका. उस का मन बेचैन था. वह अपने साथियों की सफलता की सूचना पाने को तड़प रहा था. क्या उस की योजना सफल होगी? क्या उस के साथी सकुशल वापस लौट सकेंगे? अविनाश के मन में यही सवाल चक्कर काट रहे थे.

अभी भोर की लाली फूटी ही थी कि बाहर से किसी के दौड़ कर आने की आवाज सुनाई दी. अविनाश उछल कर खड़ा हो गया. जमाल दौड़ता हुआ आया और उस ने लपक कर अविनाश को अपनी बांहों में भर कर एक जोर का चक्कर लगाया.

"बधाई, कामरेड," जमाल ने कहा, "आप कामयाब रहे."

"सच?" खुशी से अविनाश बोला, "क्या हम सारे पुल उड़ाने में सफल हो गए, कमांडर?"

"ऐसा ही समझो. चार पुल पूरी तरह से टूट गए हैं और पांचवां पुल इस बुरी तरह से ध्वस्त हुआ है कि उस को ठीक करने में कम से कम दो हफ्ते लगेंगे."

"और मेरे साथी?" अविनाश ने पूछा तो जमाल का जोश जैसे ठंडा पड़ गया. उस के चेहरे पर उदासी की लकीर खिंच गई. भर्राए गले से उस ने बताया, "अफसोस है, कामरेड, आप के 25 साथियों में से केवल नौ वापस आए हैं. बाकी सब शहीद हो गए हैं.

अत्याचारी

जब प्रजा सिद्धांत के लिए विद्रोह करती है तब राजा अपनी नीति से अत्याचारी हो जाता है.

—बर्क

मगर वे कुरबानी की जो मिसाल दे गए हैं, वह इतिहास में लिखी जाएगी."

अविनाश दर्द में डूब गया. उस की आंखें छलछला आईं. उस के 16 सब से खास साथी इस मिशन में शहीद हो गए थे. जमाल ने उस के कंधे को थपथपाया, "यह जंग है, कामरेड. यहां कुरबानी तो देनी ही पड़ती है. लेकिन हम लोग एक अच्छे काम के लिए जान दे रहे हैं."

अविनाश ने आंसू पोंछ लिए और वह जमाल से अपने साथियों की वीरता की कहानी सुनने लगा.

कामरेड अविनाश अब कैप्टन अविनाश के नाम से पुकारा जाने लगा था. पांच पुलों को तोड़ने के बाद उसे स्वयं जनरल उस्मान अली ने बुला कर गले से लगाया था और उसे कैप्टन का पद प्रदान किया था. अब अविनाश की चतुराई, तत्परता, सूझबूझ और वीरता का सभी लोहा मानने लगे थे. वह आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा था.

कैप्टन अविनाश अपने गुप्त स्थान पर बैठा विचारमग्न था. कितने माह गुजर गए उसे अपना घर छोड़े, कितना कष्ट सहा उस ने, कैसा जीवन है उस का, अब उसे क्या करना है?—एक साथ तमाम सवाल उस के दिमाग में आ रहे थे. आज उसे घर वालों की बहुत याद आ रही थी.

"कैप्टन!" सहसा किसी के पुकारने से उस की विचारधारा भंग हुई. सामने उस का साथी यूसुफ खड़ा था. उस का मुख उत्तेजना से लाल था, उस की सांस तेज थी. लगता था वह कोई बहुत महत्त्वपूर्ण खबर ले कर आया है. अविनाश ने उस की ओर देखा और कुछ बोलने का इशारा किया.

"भीषण समाचार है, कप्तान," यूसुफ ने हांफते हुए कहा, "अभी खबर मिली है कि पाकिस्तान में बंगबंधु पर गुप्त मुकदमा चलाया जा रहा है, उन्हें मार डालने की धमकियां दी गई हैं."

"क्या?" अविनाश उत्तेजना में खड़ा हो गया, "क्या वे सचमुच बंगबंधु को समाप्त करना चाहते हैं? नहीं यूसुफ, वे इतना साहस नहीं कर सकते. तुम बताओ, और क्या खबर लाए हो?"

"इंटरनेशनल होटल में आज टिक्का खां ने एक पार्टी दी है, काफी लोग वहां इकट्ठे होंगे. प्रेस वालों को भी बुलाया गया है. सुना है वह अपनी तमाम कमीनी हरकतों पर परदा डालने के लिए यह सब कुछ कर रहा है."

"बहुत खूब," अविनाश खुशी से बोला. यह 'बहुत खूब' कहना उस ने जमाल से सीखा था.

"यूसुफ, यह पार्टी पूरी नहीं होगी. भगवान की कसम, इस टिक्का खां की धज्जियां उड़ा दूंगा. पार्टी कितने बजे है?"

"दोपहर को एक बजे," यूसुफ ने जवाब दिया.

"बहुत खूब. अभी नौ बजे हैं. तुम फिर अपनी ड्यूटी पर जाओ और ठीक 11 बजे मुझे ताजी खबर देना. मैं तब तक इंतजार करता हूं."

यूसुफ ने सेल्यूट किया और भागता हुआ बाहर निकल गया. अविनाश भी अपनी झोंपड़ी से बाहर आया. यह इलाका उस के साथियों से भरा हुआ था. कहांकहां उस के साथी छिपे हुए हैं, यह केवल वही जानता था. पेड़ों की ऊंचीऊंची डालियों पर बैठे नन्हे बच्चे हर समय अपनी सतर्क दृष्टि चारों ओर रखते थे और खतरे का संकेत मिलते ही तुरंत सूचना दे देते थे. इस क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति उन की दृष्टि से बच कर प्रवेश नहीं कर सकता था.

—क्रमशः

अगले अंक में :

ढाका का इंटरनेशनल होटल टाइम बमों के धमाकों से हिल गया, लेकिन इस के पीछे हाथ किस का था?

अनोखी चमक

विजय द्वारा महीने में इतने रुपए मांगने पर प्रेमचंद परेशान हो उठे और एक दिन जब वह विजय के कमरे में पहुंचे तो उन्हें सारा रहस्य मालूम पड़ गया...

कहानी • रमेशचंद्र छबीला
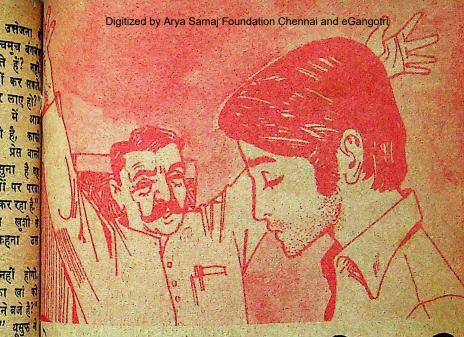
दोपहर का खाना खा कर प्रेमचंद आंगन में बिछी चारपाई पर लेट गए. जनवरी के महीने में धूप बहुत सुहावनी लग रही थी उन के अधेड़ शरीर को. दोपहर का भोजन कर के कुछ देर लेटना और रात को घूमना उन की पुरानी आदत थी.

कुछ देर बाद उन का नौकर शंभु आ गया. उस के हाथ में एक लिफाफा था. लिफाफा देते हुए उस ने कहा, ''विजय बाबू का पत्र आया है शहर से.''

प्रेमचंद ने लिफाफा ले कर एक तरफ से फाड़ डा[illegible] और पत्र निकाल कर पढ़ने लगे.

शंभु चला गया तो रसोईघर में से उन की पत्नी विमला निकट आ कर खड़ी हो गई और बोल उठी, ''क्या लिखा है?''

''अरे, लिखना क्या था? ढाक के वही तीन पात. जब पैसे की ज[illegible] होती है तो पत्र लिख देते है.''

''अब की बार भी पैसे [illegible]गाए हैं क्या?''

“और क्या, उस का दिमाग खराब है जो बिना मतलब [illegible] लिखेगा? दो सौ रुपए मंगाए हैं. किताबें लेनी हैं. समझ में नहीं आता कि बी. ए. के पहले साल में ही सैकड़ों रुपए की किताबें लग जाती हैं. इस महीने चार सौ रुपए तो भेज चुका हूं, दो सौ रुपए और चाहिए. हर महीने चारपांच सौ का खर्चा. सोचा था कि बी. ए. या एम. ए. करा दूंगा. परंतु लगता है, विजय के भाग्य में पढ़ना नहीं है. अभी जुलाई में वह शहर गया है. तब से ढाईतीन हजार रुपए भेज चुका हूं.”

“गांव और शहर के खर्च में जमीन-आसमान का अंतर होता है. और फिर आजकल महंगाई भी कितनी है. सौपचास का आता ही क्या है? पढ़ाई में खर्च होता ही है,” कहते हुए विमला को स्मरण हो आया कि विजय जब भी आता है, इधरउधर के बहाने बना कर सौ, सवा सौ रुपए उस से ले जाता है. इन रुपयों के बारे में उस ने कभी अपने पति से नहीं कहा.

“होता है, लेकिन इतना नहीं. खर्च करने को चाहे लाखों रुपए एक दिन में कर लो. कसबे के दूसरे लड़के भी तो शहर में पढ़ते हैं,” कह कर प्रेमचंद गंभीर मुद्रा में कुछ सोचने लगे.

राजपुर एक छोटा सा कसबा है. प्रेमचंद की एक जनरल मरचेंट की दुकान है. नौकर शंभु साथ में रहता है. विजय उन का बड़ा लड़का है जो इंटर तक पढ़ाई पूरी कर के शहर में बी. ए. करने चला गया है. छोटा लड़का नरेश अभी दसवीं में पढ़ रहा है.

“क्या सोच रहे हो?” पत्नी ने पूछा.

“सोच रहा हूं कि मुझे शहर जाना पड़ेगा, विजय के पास.”

“वहां जा कर क्या करोगे?”

“मुझे कुछ शक है.”

“कैसा शक?” पत्नी ने चकित हो क पूछा.

प्रेमचंद ने शून्य में ताकते हुए कहा, “विजय गलत सोसाइटी में फंस कर गलत रास्ते पर चल रहा है. तभी तो उसे हर महीने इतने रुपए चाहिए.”

“शायद ऐसा ही हो.”

“ठीक है. शाम को मैं जाऊंगा.”

प्रेमचंद विजय के कमरे तक पहुंचे तो रात्रि के नौ बज चुके थे. उन्होंने दरवाजा खटखटाया.

“कौन?” अंदर से आवाज आई.

“दरवाजा खोलो, विजय,” स्वर पहचान कर उन्होंने कहा.

दरवाजा खुला. विजय ने चौंकते हुए अभिवादन किया, “नमस्कार, पिताजी. इस समय अचानक ही...?”

“हां, बस, यों ही चला आया,” प्रेमचंद ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा.

कमरे में धुएं की दुर्गंध से वह जान गए कि विजय उस समय सिगरेट पी रहा था. उन्होंने कुरसी पर बैठते हुए एक कोने में सिगरेट के दोतीन अधजले टुकड़े भी देखे. उन्होंने पूछा, “तुम ने सिगरेट कब से शुरू कर दी है?”

उस का चेहरा फक से हो गया. शुष्क होंठों पर जीभ फेर कर वह बोला, “नहीं तो. ये टुकड़े. . .अभी एक दोस्त सिगरेट पी कर गया है, उसी ने फेंके थे.”

“अच्छा. . .” उन्होंने शांत स्वर में पूछा, “और पढ़ाई कैसी चल रही है?”

“ठीक है.”

“यहां आसपास कोई दवाइयों की दुकान भी है?”

“यहां तो नहीं है. घंटाघर जाना पड़ेगा. कुछ मंगाना था क्या?”

“हां, सिरदर्द की गोली मंगानी थी. बस में आते हुए हवा लग गई. सिर में बहुत दर्द हो रहा है,” प्रेमचंद ने माथे पर हाथ फेर कर कहा. विजय को बाहर भेजने का उन के पास यही एक उपाय था.

“[illegible]भी लाता हूं,” कह कर विजय बाहर [illegible] गया.

वि[illegible] के जाते ही उन्होंने सारे कमरे में दृष्टि डाली. सामने एक अलमारी थी जिस का दरवाजा बंद था और ताला लटक रहा था. चाबियों का गुच्छा विजय मेज पर ही छोड़ गया था. मेज पर कुछ पुस्तकें

...ब, सिगरेट और सोसाइटी ...भंवर में विजय उलझता ...जा रहा था, लेकिन उस ...र से वह कैसे निकल सका?

...थीं और एक टेबल लैंप था. कोने में ...पलंग था. पहनने के कुछ कपड़े ...यों पर और कुछ हैंगर में लटके ...थे.

...अलमारी का बंद ताला देख कर उन ...उत्सुकता बढ़ गई. उन्होंने अलमारी ...ली. देखते ही वह चौंक उठे. ऊपर ...ाने में रम की एक बोतल पड़ी थी. ...पुस्तकों के आगे ताश के दो पैकेट ...सिगरेट भी रखे हुए थे. एक छोटी प्लास्टिक की डब्बी में चरस रखी ...

यह सब देख कर उन की आंखें फटी ...गईं, दिमाग चकरा गया. उन्होंने ...स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ...इतना गिर जाएगा, पांचछः महीनों ...इतना बदल जाएगा.

वह धम्म से कुरसी पर बैठ गए. ...नियों को मेज पर टिका कर उन्होंने ...पकड़ लिया. इसी लिए विजय हर ...इतने रुपए मांगता है? क्या बाहर आ कर पढ़ने वाले सभी लड़के इसी ...र बिगड़ जाते हैं? विजय दलदल में ...चुका है. उसे इस दलदल से बाहर ...लना ही होगा. अच्छा हुआ जो ...यहां आ कर स्थिति का पता चल ...

उन्हें लगा कि सोचतेसोचते [illegible]स्तव ...न के सिर में दर्द होने लगा [illegible] अचानक ही कमरे में अंध[illegible]र छा ...लाइट चली गई थी. वह अंधकार ...हुए दरवाजे की ओर देखने लगे. ...कुछ देर बाद दरवाजे पर दो युवक ...ई दिए. उन में से एक ने कहा, ...! ...अरे यार, [illegible] गया है? [illegible]

वह उत्तर देने ही वाले थे कि एक विचार उन के मस्तिष्क में आया और वह मौन रहे.

"अबे, अंधेरे में क्या कर रहा है? मोमबत्ती तो जला ले," दूसरा बोला.

"यह साला हम से मजाक कर रहा है जो चुपचाप बैठा है," पहले ने कहा, "डियर विजय, बस, मुझे एक स्पेशल सिगरेट और इसे एक पैग पिला दे. बस, फिर चलते हैं मनोज के यहां. आज रात बहुत रंगीन है वहां. तेरा मूड हो तो चल. क्यों यहां बोर हो रहा है अकेला?"

"यार अशोक, माचिस तो निकाल. यह तो ऐसे बैठा है चुपचाप, जैसे इस का बाप मर गया हो."

"विनोद, उस बूढ़े को क्यों मारता है? साले, वह तो नोटों की मशीन है. जब विजय चाहता है, वह भेज देता है. बाप हो तो ऐसा हो," कहते हुए उस ने जेब में से माचिस निकाली.

माचिस में एक ही तीली थी जो रगड़ते ही जलने से पहले टूट गई. उस ने झुंझला कर एक गाली दी और कहा, "बेड़ा गरक! ले, बेटे विनोद, एक ही तीली थी, वह भी खत्म. लेकिन, यार, विजय ने कमाल कर दिया. अभी तक चुप है. क्या बात है? अरे, बोल तो सही, कहां है तू? कमरे में है भी या नहीं?"

वे दोनों कमरे में बढ़ने लगे.

प्रेमचंद अब भी मौन ही रहे. उन दोनों के वार्तालाप से उन के मस्तिष्क में उथलपुथल होने लगी.

तभी लाइट आ गई. कमरा प्रकाश से भर गया. दोनों ने उन की ओर देखा तो चकित से इधरउधर विजय को देखने लगे. विनोद ने पूछा, "विजय नहीं है?"

"वह बाहर गया है."

"आप?"

"मैं उस का पिता हूं. अभी गांव से आया हूं."

उन दोनों की सिट्टीपिट्टी गुम थी. उन्हें लगा कि पैरों तले से जमीन खिसक रही है. चेहरे [illegible] रंग आजा रहे थे.

अब क्या हो सकता है? मुंह से निकले तीर के समान उन के शब्द तो वापस आ नहीं सकते.

प्रेमचंद ने उन की ओर देख कर कहा, "अरे, तुम खड़े क्यों हो? बैठ जाओ ना."

वे चौंक उठे. जैसे उन का दम घुट रहा हो. एक ने थूक निगल कर कहा, "जी, विजय कितनी देर में आएगा?"

"बस, आने ही वाला है."

"अच्छा, हम चलते हैं. हम तो यों ही मजाक कर रहे थे. . .यों ही मजाक करते रहते हैं," दूसरा खिसियानी हंसी हंसता हुआ बोला.

प्रेमचंद की आंखों के सामने अलमारी में रखा हुआ सामान नाचने लग गया. उन के हृदय में दुख, क्रोध और घृणा की लहरें उठने लगीं. वह एक रहस्यमयी मुसकान मुसकरा उठे कि ये कल के छोकरे उन्हें मूर्ख बना रहे हैं. वह बोले, "कोई बात नहीं. मजाक का क्या बुरा मानना. मैं भी तो मजाक कर रहा था जो चुपचाप बैठा रहा. कुछ कहना है विजय से?"

"कुछ नहीं. हम तो वैसे ही आ गए थे." और वे दोनों तीर की तरह कमरे से बाहर निकल गए.

प्रेमचंद का मस्तिष्क घूम गया. क्या विजय इतनी सीमा पार कर चुका है? जिन वस्तुओं से उन्हें बचपन से अब तक घृणा रही है, उन सब को विजय ने अपना लिया है.

वह विचारों के तानेबाने में उलझे हुए थे कि विजय आ गया. उस ने सिरदर्द की गोली देते हुए कहा, "लीजिए, पिताजी. पानी से लेंगे या चाय बना दूं?"

"चायवाय रहने दे. पानी से ही ले लूंगा," प्रेमचंद ने कहा, "तेरे दो दोस्त आए थे—विनोद और अशोक. एक को शराब पीनी थी, दूसरा स्पेशल सिगरेट पीने आया था. कह रहे थे, मनोज के यहां कोई रंगीन प्रोग्राम है. तुझे बुलाने आए थे."

यह सुन कर विजय कांप उठा. 'विनोद और अशोक ने पिताजी को यह कैसे ब[ता] दिया?' 'वे दोनों बेशर्म हैं. कह दिया होगा. नीच...कुत्ते,' उस ने क्रोध में दांत पीसे. 'मिलेंगे तो देख लूंगा.'

परंतु अब क्या होगा? पिताजी को सब पता चल गया. कहीं इन्होंने अलमारी तो खोल कर नहीं देख ली? उस ने कनखियों से अलमारी की ओर देखा. फिर स्वयं को संयत करते हुए वह बोला, "वे यों ही आप से मजाक कर रहे होंगे. उन

"मैं कहां से दूंगा? अफसोस है विजय, मैं कुछ नहीं कर सकता,' नरेंद्र ने जब कहा तो विजय तिलमिला उठा.

की आदत ही ऐसी है. मजाक भी ऐसा करते हैं कि सुनने वाला विश्वास कर ले. आप ने भी विश्वास कर लिया होगा."

"तुम कहते हो तो विश्वास करूंगा," उन्होंने कहा, "वैसे मैं ने अलमारी देख ली है. इस में जो कुछ रखा है, वह भी मजाक है क्या? छः महीनों में तुम्हारा स्वास्थ्य आधा रह गया है. यह भी मजाक है क्या? अपना चेहरा तो देखो शीशे में. क्या ऐसा ही था शहर आने से पहले? रंग पीला पड़ गया है, गालों की हड्डियां निकल आई हैं. वहां आते हो तो बहाना बना देते हो कि हवापानी और होटल की रोटी माफिक नहीं आई."

विजय एक अपराधी के समान चुपचाप खड़ा था.

"यदि तुम यह सब करने के लिए यहां आए हो तो कल मेरे साथ चलो. मैं कसम खाता हूं कि गांव में तुम्हें किसी चीज की कमी न होने दूंगा. शराब, सिगरेट, चरस और जो भी तुम्हारी इच्छा होगी, सब मिल जाएगा. कई लड़के दस नंबरी हैं. उन्हीं में शामिल हो जाना वहां. तुम्हारी मां, जो तुम्हारे बिछोह में इतनी दुखी हो जाती है कि कभी-कभी खाना भी नहीं खाती, तुम्हारा यह पढ़ाईलिखाई के रूप भी देख लेगी.

यों हम से दूर रहते हो? पढ़लिख कर ना भी क्या है! नौकरी तो आज- मिलती नहीं. व्यर्थ में बेकारी बढ़ाने क्या लाभ? मेरे पास हराम का बहुत है. खूब उड़ाओ,'' प्रेमचंद ने एक ही में कहा.

विजय किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा रह गया. लगा कि किसी ने चौराहे पर खड़ा के उसे नंगा कर दिया है, पिता के उस के हृदय को छू रहे थे. उसे ग्लानि होने लगी.

प्रेमचंद ने उसे मौन देख कर ठंडे में समझाते हुए कहा, ''विजय बेटे, यहां आ कर गलत हाथों में पड़ गए इन्होंने तुम्हें पतन के मार्ग पर डाल है जहां केवल बरबादी है. जिन्हें अपने मित्र और साथी समझते हो, वे सब से खतरनाक दुश्मन हैं. दोस्त भी अपने दोस्त को पतन की ओर धकेलता. यदि कोई किसी बुरे काम जाता है तो दोस्त उसे उस से ता है. ऐसे दोस्त तो भाग्य को मिलते हैं. मुझे दुख है कि तुम गलत साइटी में पड़ कर अपना स्वास्थ्य, और धन बरबाद कर रहे हो.''

विजय जमीन में गड़ा जा रहा था. के हृदय में एक हूक सी उठी और नेत्र सजल हो गए. उस ने आंसू रोकने का भरसक प्रयत्न किया. नीचे का कांपता हुआ होंठ दांतों के नीचे दब कर ही रह गया.

उस ने रुंधे गले से इतना ही कहा, ''पिताजी, माफ कर दो...''

उसे रुलाई आ गई और वह रो पड़ा. प्रेमचंद ने उसे देखा. पश्चात्ताप के आंसू ही तो उन्हें चाहिए थे. वह जान गए थे कि विजय की हृदय की गहराइयों में जमी हुई बर्फ अब पिघल रही है. वह बोले, ''बेटे, तुम्हें दोस्त और दुश्मन की क्या जरूरत है? छात्र का सब से अच्छा मित्र तो उस की पुस्तकें होती हैं. तुम एक शरीफ खानदान के लड़के हो. यहां पढ़ने के लिए आए हो. क्या तुम ने कभी उन के बारे में सोचा है जो संसार को नएनए आविष्कार और अनोखी कृतियां दे कर देशी और विदेशी पुरस्कार प्राप्त करते हैं? वे भी कभी छात्र थे—होनहार और मेधावी छात्र. यदि वे भी तुम्हारी तरह गलत सोसाइटी में पड़ कर ऐब गले लगा लेते तो शायद उस स्थान तक कभी न पहुंच पाते.''

विजय ने आंसू पोंछ कर दृढ़ स्वर में कहा, ''पिताजी, अब तक जो हुआ, उस

की क्षमा दीजिए. अब आप को कभी शिकायत का मौका नहीं मिलेगा.''

''मुझे तुम से यही आशा थी, बेटे,'' प्रेमचंद ने कहा, ''तुम्हारे जितने भी साथी हैं, उन में से किसी से भी सौपचास रुपए मांगो. फिर देखो तेल और तेल की धार.''

''नहीं, पिताजी, अब मुझे किसी से कोई मतलब नहीं. मैं सिर्फ पढ़ूंगा.''

''वह तो ठीक है. परंतु किसी को परखने में हरज ही क्या है?'' प्रेमचंद मुसकराए, ''दुनिया का रंगढंग देखो... जाओ.''

विजय ने कमरे से बाहर निकलते ही घड़ी में समय देखा. दस बज रहे थे. ठंड बहुत हो रही थी. उस ने दोनों हाथ पेंट की जेबों में डाल लिए.

किस के पास जाए? पांचछः चेहरे उस के नेत्रों के सामने घूम गए. नरेंद्र...हां, नरेंद्र ही ठीक रहेगा.

उस ने एक रिक्शा वाले को शास्त्रीनगर चलने को कहा और रिक्शा में बैठ गया.

नरेंद्र उस का सहपाठी था. जुआ और शराब उस की विशेषताएं थीं. उसी ने उसे जुए और शराब में डाला था.

उसे स्मरण हो आया...

कालिज में दाखिला लिए उसे लगभग एक महीना हो चुका था. एक दिन वह कालिज के निकट ही एक रेस्तोरां में चाय पीने के लिए गया था. एक टेबल पर उसी की क्लास के तीन युवक बैठे थे. एक ने पुकार कर कहा, ''मिस्टर विजय, इधर...''

वह मुसकरा कर उस टेबल पर जा पहुंचा था और एक खाली कुरसी पर बैठ गया था. वह उन से बातें करना चाहता था, पर संकोचवश समझ नहीं पा रहा था कि क्या बात करे.

तभी एक ने परिचय कराया था, ''मुझे नरेंद्र कहते हैं. यह विनोद और यह अशोक हैं.''

चाय पीने के बाद वह बिल देने लगा था तो नरेंद्र ने उसे टोक दिया था, ''मिस्टर विजय, माना कि आप बड़े बाप के बेटे हैं, लेकिन हमें शर्मिंदा क्यों कर रहे हैं?''

''नहीं, नरेंद्र. ऐसी कोई बात नहीं है,'' उस ने कहा था.

बिल दे कर नरेंद्र ने विदा लेते हुए कहा था, ''ओ. के., मिस्टर विजय. शास्त्रीनगर में नं. 32 में अपना गरीबखाना है.''

''अच्छा, मैं आऊंगा कभी.''

''कभी क्यों? आज रात को आना.''

''जरूर,'' उस ने कहा था.

उसी रात को नौ बजे वह नरेंद्र के कमरे में पहुंच गया था. विनोद और अशोक भी वहीं थे. तीनों उसे देखते ही खिल उठे थे.

नरेंद्र ने कहा था, ''हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे.''

''इसी लिए तो आ गया हूं कि आप लोग इंतजार कर रहे होंगे,'' उस ने बैठते हुए कहा था.

''ताश खेलोगे क्या?''

''खेल लेंगे.''

''तो फ्लैश हो जाए,'' नरेंद्र ने कहा था.

पत्ते बांटे गए थे. बिना पत्ते उठाए ही नरेंद्र ने जेब से एक रुपया निकाल कर रखते हुए कहा, ''ब्लाइंड.''

विनोद और अशोक ने भी ऐसा ही किया था.

वह चौंक उठा था—जुआ? उस ने उन की ओर देख कर कहा था, ''यह तो जुआ है.''

''कौन कहता है इसे जुआ? यह तो दि[illegible] बहलाने का सब से अच्छा तरीक[illegible]''

[illegible]र मैं ने कभी जुआ नहीं खेला.''

''हम कब कहते हैं कि तुम ने खेला होगा. वह गांव था, वहां और यहां में बहुत अंतर है. सोसाइटी में तो लड़कियां भी यह खेल लेती हैं,'' नरेंद्र ने समझाया था.

"खेलती होंगी. मगर मैं नहीं खेलूंगा."

"नहीं खेलोगे तो न खेलो," विनोद ने कहा था, "तुम क्या जानो, सोसाइटी क्या होती है. तुम गंवार ही रहोगे. अभी तुम ने देखा ही क्या है यहां?"

'गंवार' शब्द उस के कानों में चुभता चला गया था. उस की कनपटी गरम होने लगी थी, शरीर में रक्त का संचार तीव्र हो गया था. शहरी बनने के लिए शायद यह आवश्यक है. और फिर, कभीकभार खेल लेने से वह जुआरी तो बन नहीं जाएगा. ठीक है, अब वह गांव से शहर आ ही गया है. उसे सोसाइटी में तो रहना ही है. अतः यह सब सीखना ही होगा. बहुत सोच कर विजय ने कहा था, "खेलूंगा कैसे? मुझे तो आता ही नहीं."

"हम किस मरज की दवा हैं?" नरेंद्र ने कहा था.

उस रात नरेंद्र ने उसे कई खेल सिखाए थे.

इसी प्रकार एक दिन शराब भी पिला दी थी. पहले सिगरेट और फिर चरस वाली स्पेशल सिगरेट की आदत भी डाल दी थी. अब ये सब चीजें उस के लिए साधारण हो गई थीं.

रिक्शा रुकते ही उसे झटका सा लगा. वह चौंका. रिक्शे वाले को पैसे दे और नरेंद्र के कमरे की तरफ बढ़ने लगा. कमरे की लाइट जल रही थी. वार्तालाप और कहकहे चल रहे थे.

दरवाजा खुलते ही वह अंदर प्रविष्ट हुआ. नरेंद्र और दो अन्य लड़के जुआ खेल रहे थे. तीनों के हाथों में पत्ते थे, सिगरेटें होंठों से लगी हुई थीं. चरस भरी होने के कारण कमरे में अनोखी दुर्गंध थी. मेज पर नोट रखे थे.

नरेंद्र ने कहा, "हैलो, विजय! आओ, बैठो."

"मैं एक बहुत जरूरी काम से आया हूं," विजय ने स्वर में उदासी लाते हुए कहा.

"अरे, यार, काम बाद में होता रहेगा, पहले दोचार कश लगा लो," नरेंद्र ने सिगरेट उस की ओर बढ़ा दी.

"मूड नहीं है."

"फिर किस चीज का मूड है? पीनी है क्या?"

"नहीं."

"समझा. नींद नहीं आ रही होगी. ये सर्दी की रातें ऐसी ही होती हैं. चलना है क्या?"

"ओह...नहीं, नरेंद्र, नहीं. इन से मेरा मन ऊब गया है," वह झुंझला उठा.

"फिर संन्यास ले ले, बेटे! तेरा जीवन तो व्यर्थ गया."

"मजाक छोड़ो, नरेंद्र. मेरी बात सुनो."

नरेंद्र ने उन दोनों से 'शो' करने को कहा. वह हार गया. जीतने वाला एक लड़का नोट समेटने लगा. लगभग दो सौ

अंदाज वोही समझे...

अंदाज वोही समझें मेरे दिल की आह का,
जख्मी जो हो चुका हो किसी की निगाह का.
—'दर्द'

सर काट कर लगाते हैं गरदन के साथ फिर,
कुछ रह गई है उन को हविस इम्तिहान की.
—दाग

रुपए की बाजी थी.

शुष्क होठों पर जीभ फेर कर नरेंद्र ने कहा, ''कहो, यार, क्या बात है?''

''मैं ने घर से रुपए मंगाए थे. आज पिताजी आ गए. उन्होंने कमरे की तलाशी ले ली. नाराज हो कर झगड़ने लगे. पैसे देने के लिए मना कर दिया. कल सुबह रेस्टोरेंट वाले का हिसाब करना है. यदि कल उस का बिल न दिया तो.. .तुम उस की आदत जानते ही हो. मुझे सौ रुपए चाहिए.''

''तुम उस से मेरा नाम ले देना, कुछ दिन रुक जाएगा,'' नरेंद्र ने सुझाव दिया.

''नाम नहीं, रुपए. . .मुझे रुपए चाहिए, नरेंद्र.''

नरेंद्र ने ढेर सा धुआं उस पर छोड़ते हुए कहा, ''देखते हो, यह बाजी अपने हाथ से चली गई. मेरे पास इस समय एक सौ बारह रुपए बचे हैं. यह बाजी खेल लेने दो. यदि जीत गया तो तुम भी ले लेना.''

''यदि हार गए तो?'' उस ने आशंका व्यक्त की.

''तुम्हारा दुर्भाग्य.''

खेल शुरू हुआ. नरेंद्र के पत्ते देख कर विजय को लगा कि वह जीत जाएगा. रुपए दांव पर लग गए. शो हुआ तो नरेंद्र हार गया.

नरेंद्र ने उस की ओर देख कर कहा, ''यार, विजय, तुम उन में से हो जो रोते हुए आते हैं और मरे हुए की खबर लाते हैं. किस्मत तुम्हारी खराब है और बेड़ा अपना गरक हो गया.''

''यदि तुम मुझे पहले ही दे देते तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाता? तुम्हें तो हारना ही था. तुम समझ लेते कि हार गए.''

''बहुत अच्छे. क्या तुम समझ सकते हो कि रुपए ले लिए?''

''अब क्या होगा, नरेंद्र? मुझे इन से ले दो. तुम एकदो दिनों में दे देना.''

''मैं कहां से दे दूंगा? मेरे पास क्या नोट छापने की मशीन है? अफसोस है, विजय, मैं कुछ नहीं कर सकता.''

''नरेंद्र,'' उस का स्वर गरम होने लगा, ''मुझे तुम से यह आशा नहीं थी. मैं ने तुम्हें तुम्हारी जरूरत पर कई बार रुपए दिए हैं. ढाई सौ रुपए तुम से अब भी लेने हैं. तुम किसी को गलत रास्ते पर डाल सकते हो परंतु गिरते हुए को उठाना तुम्हारे वश का नहीं है.''

''बहुत हो चुका. अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम यहां से चले जाओ,'' नरेंद्र ने क्रोध से कहा. वह हारा हुआ जुआरी था, जिसे क्रोध बहुत जल्दी आता है.

''हां, जा रहा हूं;'' विजय कमरे से निकलते हुए बोला, ''देख लिया तुम्हें भी आज.''

बाहर आ कर उस ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई. हर ओर निस्तब्धता थी. कहीं कोई रिक्शा या अन्य सवारी दिखाई नहीं दी.

वह पैदल ही चल दिया. क्रोध से उस का खून खौलने लगा. नरेंद्र, विनोद, अशोक, मनोज...सब एक थैली के चट्टेबट्टे हैं, जो नए युवा छात्र को अपने जाल में फंसा कर उस का रुपया ऐंठते हैं, मजे करते हैं.

उस के मुंह में कड़वाहट सी भर गई और उस ने सड़क पर थूक दिया.

उसे लगा कि वह उस पंछी की तरह है जो रात के अंधकार में भटक कर गलत साथियों में जा मिला था और प्रातः होते ही सूर्य की किरणों ने उसे उस की भूल से परिचित करा दिया था और वह फिर से अपने नीड़ की ओर उड़ चला था.

विचारों में डूबताउतरता वह अपने कमरे में प्रविष्ट हुआ.

प्रेमचंद उस का इंतजार कर रहे थे. उन्होंने अलमारी खोल कर शराब की बोतल, ताश, सिगरेटें और चरस निकाल ली.

प्रेमचंद उस की ओर देखते रहे. उस ने ताश के पत्ते फाड़ कर एक कोने में रख दिए, सिगरेटें तोड़मरोड़ कर

उन के ऊपर रख दीं. उस सब के ऊपर बस डाल कर शराब छिड़की और जेब में से माचिस नकाल कर आग लगा दी.

उस के नेत्रों में विजय की अनोखी चमक थी, चेहरे पर प्रसन्नता की रेखाएं.

इस प्रकार होली जला कर वह प्रेमचंद के निकट आ कर खड़ा हो गया. अब उस का सिर गर्व से ऊपर था. उस ने कहा, "आप ठीक कहते हैं, पिताजी. मैं गलत हाथों में पड़ गया था. अब मैं ने उन हाथों को काट दिया है. उन खतरनाक आस्तीन के सांपों को बहुत दूर छोड़ आया हूं. उन की मैं ने आप के सामने होली जला दी है. अब पुस्तकें ही मेरी मित्र हैं. अब आप को कभी मुझ से शिकायत नहीं होगी."

उस का दृढ़ स्वर सुन कर प्रेमचंद्र का हृदय गदगद हो गया. उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में कहा, "ठीक है, बेटे. अब मैं निश्चिंत रहूंगा," और बुराइयों की उस जलती हुई चिता की ओर देखा जो कमरे में दुर्गंध और धुआं फैला रही थी. ●
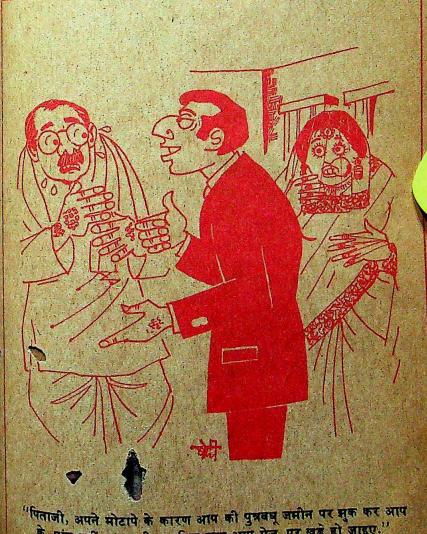
"पिताजी, अपने मोटापे के कारण आप की पुत्रवधू जमीन पर झुक कर आप के पांव नहीं छू सकती, इसलिए जरा आप मेज पर खड़े हो जाइए."

मद्रास विजय

वेस्टइंडीज से दो टैस्टों में पिछड़ने के बाद शृंखला में बराबरी पर आ जाने का करिश्मा भारतीय टैस्ट क्रिकेट के इतिहास में एक गौरवपूर्ण अध्याय के रूप में याद किया जाएगा. यह करिश्मा इसलिए और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया कि इस शृंखला से पूर्व भारत इंगलैंड के हाथों भी बुरी तरह पराजित हो चुका था. यद्यपि शृंखला का अंतिम दारोमदार बंबई की अनपरखी पिच पर था, लेकिन अतिथियों ने इसे जीत कर मेजबान टीम पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी.

इस जीत से एकदम इस निष्कर्ष पर कूद पड़ना कि भारतीय क्रिकेट की स्वयंभू विश्वविजेता पदवी पुनः स्थापित हो गई है, पूरी तरह मूर्खतापूर्ण बात होगी. बावजूद इस के कि भारतीय स्पिनर्स ने इन टैस्टों में सहज स्ट्रोक लगाने वाले कैरिबियन बल्लेबाजों को सहमसहम कर खेलने और इस प्रक्रिया में आउट होने पर विवश कर दिया, इस शृंखला में भारतीय बल्लेबाज भी कभी चैन न ले पाए. एकमात्र अपवाद विश्वनाथ को छोड़ कर कोई भी बल्लेबाज सभी पारियों में विश्वस्त खेल नहीं दिखा सका और किसी के खेलते समय यह आशा नहीं बंधती थी कि वह 50-100 रन तक टिक जाएगा. एकएक पारी में तो सुधीर नायक से ले कर घावरी तक सभी बल्लेबाज कुछ हद तक टिके, लेकिन कुल मिला कर किसी ने भी अनुभवी खिलाड़ी होने या राबर्टस, जूलियन, होल्डर आदि की गेंदों को आराम से खेलने का एहसास नहीं कराया. यह भारतीय बल्लेबाजी की वास्तविक तसवीर है और किसी भी टैस्ट के स्पिनर्स के न चलने पर यही तस्वीर भारतीय हार में बदल जाती है.

क्लाइव लायड : बंबई में भी देख लिया!

वेस्टइंडीज की हार का एकमात्र कारण उन का अपने तेज गेंदबाजों पर अत्यधिक भरोसा होना था. कप्तान लायड ने बल्लेबाजी की कीमत पर चारचार तेज गेंदबाजों को टीम में ठूंस दिया. वह यह भूल गया कि भारतीयों को डराने के लिए तो एक तेज गेंदबाज ही काफी है. इस कारण टीम में गेंदबाजी के पक्ष में गहरा असंतुलन कायम हो गया और एकदो अच्छे बल्लेबाजों के आउट होते ही सारी टीम लड़खड़ा गई. दूसरे, भारत की अंकुशपूर्ण सधी गेंदबाजी के कारण लायड, कालीचरण और रिचर्ड्स अपना सहज खेल न दिखा सके. अन्यथा अगर इन में

के बाद ?

मंसूरअली खां पटौदी : केवल नेतृत्व.

से एक जोड़ी भी जम जाए तो 150-200 रन बनाने की क्षमता रखती है.

भारतीय पक्ष का यह मानना कि स्थिति सदा ऐसी रहेगी, बड़ा खतरनाक होगा. इस आशंका का केवल एक उत्तर

विश्वनाथ : अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता.

है कि आप के पास अच्छे बल्लेबाजों की एक पूरी लाइन हो जाए, ताकि हर बार कम लीड ले कर एकएक रन का हिसाब न रखना पड़े. स्पिन आक्रमण का सीधा सा सिद्धांत है कि उन के पास दूसरी टीम को आउट करने के लिए अधिक रनों की लीड हो, ताकि वे बल्लेबाजों को हिट करने के लिए प्रेरित कर के और इस चक्कर में, आउट कर सकें. कम रन होने से गेंदबाज केवल बल्लेबाज को काबू में रखने की कोशिश में लगा रहता है. ज्यादा देर तक एक ही गेंदबाज के गेंद फेंकने पर उस के प्रभावहीन होने का भी खतरा बना रहता है. यदि दोचार विश्वसनीय बल्लेबाज हों तो यह खतरा स्वयंमेव समाप्त हो जाता है.

डेविस कप में हार

पिछले वर्ष फाइनल में पहुंच कर दक्षिण अफ्रीका को डेविस कप का राजनीतिक दान देने वाली भारतीय टीम इस बार पूर्वी क्षेत्र फाइनल में नहीं पहुंच सकी और न्यूजीलैंड के हाथों लखनऊ में बुरी तरह मात खा गई.

अमृतराज बंधुओं के मुकाबले किवीज के ओनी पारून और जैक फ्रेयरली की जोड़ी अधिक संघर्षशील और दमदार साबित हुई. मैच 5-5 सेट तक चले. इस से भारतीयों का मुकाबला करने की क्षमता का तो पता लगता है, लेकिन दोदो सेट आगे होने पर लगातार तीन सेट खो कर मैच हार जाना अधिक शर्मनाक बात है.

इधर विजय के खेल स्तर में गिरावट आई है और वह अब अंतर्राष्ट्रीय चोटी

...खिलाड़ियों में प्रमुख स्थान नहीं रखता. गत वर्ष बंबई में हुई ग्रैंड प्रिक्स प्रतियोगिता में भी वह इसी ओनी पारून के हाथों हारा था. इस के अलावा उस ने राष्ट्रीय मुकाबले में अपने भाई आनंद अमृतराज के हाथों बुरी तरह मात खाई थी. लेकिन इस मैच से विजय की स्तरहीनता तो स्पष्ट होती थी, पर इस के विपरीत आनंद का खेल बहुत अधिक सुधरा हो, यह सिद्ध नहीं होता था. यह अंतिम तथ्य आनंद-फ्रेयरली मैच से साफ हो गया.

न्यूजीलैंड के खिलाड़ियों को अब उच्चतम श्रेणी में गिना जाता है. पारून तीन बार विंबलडन क्वार्टर फाइनल में पहुंच चुका है. वह पेशेवर खिलाड़ियों की संख्या डब्लू. सी. टी. के भी पहले आठ में गिना जाता है. इसी प्रकार फ्रेयरली भी तेजी से अपना खेल सुधार रहा है. यह हार अमृतराज बंधुओं को अपने खेल के बारे में ईमानदारी से सोचने का मौका देगी.

फिर वही अफ्रीका, इसराइल

भारत सरकार ने छः फरवरी से कलकत्ता में होने वाली 33वीं विश्व टेबल टेनिस प्रतियोगिता में दक्षिण अफ्रीका और इसराइल को शामिल करने से इनकार कर दिया है.

उल्लेखनीय है कि भारतीय टेबल टेनिस संघ के आग्रह पर केपटाऊन ने मिश्रित टीम भेजना स्वीकार किया था. उधर भारत सरकार इसराइल से संबंध स्वीकार की दिशा में गंभीरता से सोच रही है. ऐसी स्थिति में यह मनाही कड़वाहट को जन्म देगी. दोनों देशों ने अंतर्राष्ट्रीय टेबल टेनिस संघ से भारत के विरुद्ध कदम उठाने की मांग की है. संघ के अध्यक्ष ने प्रधान मंत्री को तार भी भेजा है.

इधर भारतीय विदेश मंत्रालय के एक स्वनामधन्य अधिकारी ने वक्तव्य जारी किया है कि हर राष्ट्र का एक सामूहिक चरित्र होता है और उस चारित्रिक प्रतिबद्धता से खिलाड़ी अलग नहीं रह सकता. वह प्रतिबद्ध अधिकारी शायद यह भूल गया कि रोज बदलते हितों से प्रेरित विदेश नीति, कभी किसी देश के चरित्र का मानदंड नहीं होती. खेलों में राजनीति घुमाने वाली भारत सरकार को समय रहते चेतना चाहिए, अन्यथा उस का हुक्का-पानी बंद होते देर नहीं लगेगी.

राष्ट्रीय टेबल टेनिस स्पर्धा

इंदौर में 20 से 27 दिसंबर तक 36वीं राष्ट्रीय टेबल टेनिस स्पर्धा का आयोजन हुआ. इस स्पर्धा का महत्त्व इसलिए भी बढ़ गया था कि विश्व टेबल टेनिस प्रतियोगिता इस बार फरवरी में कलकत्ते में होनी है.

स्पर्धा दस दिन तक चली. इस में करीब 300 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया.

इस आयोजन पर करीब दो लाख रुपए का व्यय अनुमानित है. म. प्र. शासन ने तीस हजार रुपए का अनुदान दिया. 'ग्वालियर रेयान' ने इस आयोजन के लिए पंद्रह हजार रुपए की सहायता दी. अन्य दानदाताओं ने भी इस स्पर्धा के लिए सहायता दी.

महाराष्ट्र के विरुद्ध मध्य प्रदेश को जूनियर महिला चैंपियनशिप में इंदौर की रीता जैन ने विजय दिलाई. वह अपने दोनों एकल मैच जीतने के अलावा पुष्पा मिश्रा के साथ युगल मैच में भी विजेता

इंदौर में संपन्न 36वीं राष्ट्रीय टेबल टेनिस स्पर्द्धा में सफल कुमारी रीता जैन जूनियर गर्ल्स चैंपियनशिप का 'राजकुमारी चैलेंज कप' लेते हुए.

टेबल टैनिस स्पर्द्धा के मिक्स डबल्स के विजेता, उपविजेता सुहास कुलकर्णी, नैयरेह मौला, एम. ए. देसाई तथा शैलजा सालोखे.

रही और महाराष्ट्र 'ए' 3-1 से पराजित रहा. बाद में रीता जैन ने जूनियर गर्ल्स के अंतिम मुकाबले में प्रवेश किया और जैसी कि संभावना व्यक्त की जा रही थी, रीता ने आसानी से जूनियर गर्ल्स में 'राष्ट्रीय खिताब' पहली बार प्राप्त किया.

दिल्ली ने महाराष्ट्र को हरा कर पुरुषों की लीग चैंपियनशिप जीती. दूसरे स्थान पर भारतीय रेलवे टीम रही. पिछले वर्ष के विजेता महाराष्ट्र 'ए' टीम को तीसरे स्थान पर रह कर संतोष करना पड़ा.

राष्ट्रीय टेबल टैनिस के प्रथम दौर में कुछ अनपेक्षित तथा उलटफेर वाले नतीजे सामने आए. पुरुष तथा महिला विभाग में खेले गए मुकाबलों में राष्ट्रीय स्तर के अतुल पारिख को ग्रुप चौदह में उत्तर प्रदेश के एस. केड़े से तथा सातवें ग्रुप में सतीश चाचड़ से हार कर स्पर्धा से बाहर होना पड़ा. महिला विभाग में भूतपूर्व राष्ट्रीय विजेता मीना परांडे भी पराजित रहीं [illegible] से [illegible] उलटफेर किया भारतीय रेलवे के वि[illegible] मेनन ने देश के चोटी के खिलाड़ी महाराष्ट्र के नीरज बजाज को पराजित कर.

इस स्पर्धा के अंतिम दिन कर्नाटक के के. जयंत राष्ट्रीय चैंपियनशिप में विजेता रहे. उन्होंने मनजीत दुआ को हरा कर 'पुरुष एकल' का खिताब जीता. महिलाओं में महाराष्ट्र की शैलजा शालोखे महिलाओं में पहली बार राष्ट्रीय विजेता बनीं. 'जूनियर ब्वायज' में कर्नाटक के अरुणकुमार इस वर्ष भी विजेता रहे.

प्रतियोगिता के अंत में घोषित शीर्षक्रम

पुरुष : (1) मनजीत दुआ, (2) के. जयंत, (3) नीरज बजाज, (4) जी. जगन्नाथ, (5) सुधीर फड़के, (6) विकास मेनन, (7) एन. वी. अशोक, (8) बी. के. अरुणकुमार.

महिला : (1) शैलजा शालोखे (2) पी. वत्सला, (3) उषा सुंदरराज (4) नंदिनी कुलकर्णी, (5) वीनू भूषण (6) कलावती सीताराम, (7) किरण वदंकर. आवश्यक पूर्तियों के अभाव में इंद्र पुरी को क्रम नहीं दिया गया.

जूनियर ब्वायज : (1) अरुणकुमार (2) आर. हरी, (3) रमेश बाबू (4) प्रमोद पाटने, (5) अजय सिंघए (6) रोहित, (7) नितिन पुरी, (8) उमेश कर्णिक.

जूनियर गर्ल्स : (1) रीता जैन (2) लक्ष्मी करंत, (3) मनीषा रास्ते (4) मीता ओहोल, (5) सुनीता भोंसे (6) मोनालिसा बरुआ.

—विनय शैलावत

विश्व विद्यालयों के प्रांगण से

विश्वविद्यालय की .ोतिनीति

आजकल जीवाजी विश्वविद्यालय, म. प्र. के उन विश्वविद्यालयों में से एक है, जो छात्रों के प्रति अत्यधिक दयालुता का रुख अपनाए हुए है. आप एक बार किसी भी कक्षा की वार्षिक परीक्षा का फार्म भर दीजिए. यदि आप उक्त परीक्षा में किसी भी विषय में उत्तीर्ण नहीं होते, हर विषय में सिर्फ चार या पांच अंक आते हैं तो विश्वविद्यालय आप को पूरक प्रथम अवसर की अनुमति चारों विषयों में बैठने के लिए देता है. इस पूरक प्रथम अवसर की परीक्षा में यदि आप सिर्फ दो ही विषयों में उत्तीर्ण होते हैं तो फिर विश्वविद्यालय आप को पूरक द्वितीय अवसर की पात्रता भी देता है. इस परीक्षा में आप शेष दो विषयों में पास हो सकते हैं. आप को सिर्फ हर परीक्षा के लिए फीस भरनी है. आप कभी न कभी डिग्री के अधिकारी हो ही जाएंगे.

विश्वविद्यालय सिर्फ इतना ही दयालु नहीं है, वह आप को किसी भी कक्षा की परीक्षा में श्रेणी भी देता है, भले ही आप ने तीन बार में परीक्षा क्यों न उत्तीर्ण की हो. बस, इतना जरूरी है कि आप ने कुल पूर्णांक में से श्रेणी के लायक अंक अर्जित किए हों.

परीक्षा परिणामों में त्रुटियां

पिछले दिनों जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा घोषित एम. एससी. (वनस्पति विज्ञान) के परिणाम में त्रुटि नजर आई. प्रकाशित परिणाम के अनुसार एम. एससी. में सिर्फ चार छात्र उत्तीर्ण थे.

अनुत्तीर्ण छात्रों में से एक को अपनी मेहनत पर पूर्ण विश्वास था. वह विश्वविद्यालय गया और वहां उस ने अपने परिणाम को देखा. वह छात्र उक्त परीक्षा में सब से अधिक अंक ले कर उत्तीर्ण हुआ था, पर विश्वविद्यालय की गड़बड़ी से उस का रोल नंबर गलत हो गया था.

दूसरी तरफ जब चारों उत्तीर्ण छात्रों की अंक सूचियां उन के पास पहुंचीं तो उन में से एक अनुत्तीर्ण था.

—ऋषिकुमार श्रीवास्तव

छात्रों के जीवन से खिलवाड़

विश्वविद्यालय की गत वर्ष की बी. एससी. (रसायन शास्त्र) की परीक्षा में एन. ई. एस. महाविद्यालय व सिहोरा कालिज में हु[illegible]श्नपत्रों के मूल्यांकन में बहुत से छात्रों को शून्य अंक दे दिए गए. (शून्य अंक पाने वाले इन छात्रों के अन्य विषयों में प्रथम व द्वितीय श्रेणी के अंक थे.) छात्रों ने इस बात को जब कुलपति महोदय के समक्ष रखा तो कुलपति महोदय ने छात्रों को आश्वासन देते हुए कहा

मई (द्वितीय)

2 रुपए

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

1915175

अंतर्गत

के मर्वा-
सुरक्षित है,
टिकट लगा
नहीं) आना
बनाए लौटाई

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं-
विश्व पाकेट बुक्स

धुएं के बीच
चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से ल हांग भारत चला आया. मगर चीनियों ने उसे यहां भी आ दबोचा. तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की...एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निर्ममतापूर्ण कहानी.

मौत के आंसू
राजन मृदुला के साथ रंगरलियां मनाने अलकापुरी पहुंचा मगर वहां उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उस की लाश से हुई. हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा
पतिपत्नी की मुसकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा. क्या सचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबन्ध थे ? या राजेश ही लीला के गदराए जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे.

प्रतिशोध
एक जरमन सैनिक की सच्ची कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया.

आंख मिचौनी
एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग...निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?—शायद इन सब का योगफल.

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

आवरण : व. सत्यमूर्ति

...एक प्रति : 2.00 रुपए, एक वर्ष 40.00 रुपए, ...75.00 रुपए.
...म (समुद्री डाक से) : एक वर्ष 65.00 रुपए, ...130.00 रुपए.
...वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का ...
...प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, ...-55.

मई (द्वितीय) 1975
अंक 212

मुक्ता

युवकयुवतियों की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

बोहरा युवकयुवतियों का विवाह—पृष्ठ 29

संपादन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.
दिल्ली प्रेस समाचारपत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व गाजियाबाद में मुद्रित व प्रकाशित.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

CHAMPAK
Re 1
NOW a uniq
CHAMPAK
A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of
CARAVAN & WOMAN'S ERA
Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.
CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. CHAMPAK is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.

ft for your children

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Short Stories of **CHAMPAK** do not have princes or princesses as characters. They are either young children like the readers or animals which fascinate children.

Your children can remember its poems in a jiffy and recite them in classrooms or to your guests. Its jokes will entertain them. Its picture stories will amuse them for hours.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only
One Year Rs 10 only

Available from your nearest newspaper agent.
For subscription write to :

CHAMPAK
Delhi Press Building,
Jhandewala, New Delhi – 55.

ओरिएन्ट
ORIENT
मजबूत
बेआवाज
निर्भरयोग्य
डेस्क पंखा
ओरिएन्ट पंखे आधुनिक घरों, आफिसों व इमारतों की आवश्यकताओं के अनुरूप ही खूबसूरत डिजाइनों में मिलते हैं। आपकी जरूरतों के लिये सीलिंग, टेबल, डेस्क, स्टैण्ड, ऑल-परपज और एग्जास्ट पंखे उपलब्ध हैं। भारत के सबसे अधिक अनुभवी पंखा-निर्माता द्वारा निर्मित ओरिएन्ट पंखे देश-विदेश में क्वालिटी में अद्वितीय माने जाते हैं। सभी पंखों पर दो वर्ष की गारन्टी।
सबसे अधिक बिकनेवाला पंखा—ओरिएन्ट
सुपर डीलक्स टेबल पंखा
स्टैण्ड पंखा
डीलक्स टेबल पंखा
ऑल परपज पंखा
ओरिएन्ट
पंखा
विश्व विख्यात
ओरिएन्ट पंखा
ओरिएन्ट जनरल इन्डस्ट्रीज़ लि० ६, घोर बीबी लेन, कलकत्ता-१४
फैक्ट्री : कलकत्ता और फरीदाबाद
CC/01/73 HIN

"लक्स की नयी खुशबू ? कितनी प्यारी है !"

—रेखा

मोहक सुगंधवाले मृदुल लक्स को आप भी पसंद करेंगी. शुद्ध और सौम्य होने के कारण लक्स आपके रूप-लावण्य को रेखा की तरह ख़ूबसूरत और सुकोमल रखता है.

लक्स -
चित्र तारिकाओं का शुद्ध, सौम्य साबुन

हिन्दुस्तान लीवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

HT-HLL-8539

नीबू की कोमल ताज़गी !

जरा सोचिए तो त्वचा को नाजुक, मुलायम बनाने वाली एक ऐसी कोल्ड क्रीम के बारे में जिसमें मौजूद हो बिना चिपचिपाहट वाली नीबू की ताज़गी . . . पेश है अब, नई लेमन पाण्ड्स कोल्ड क्रीम।

इसमें गर्मियों के लिए सौंदर्य-तेलों का अनुकूल मिश्रण है. बिना चिपचिपाहट यह त्वचा को मुलायम कर देती है. कोमल नीबू के मुलायम स्पर्श से अपनी त्वचा संवारिए. यह एक ताज़गीदायक नया उत्पादन है।

पाण्ड्स लेमन कोल्ड क्रीम

त्वचा की कोमल ताज़गी के लिए

भारत में निर्माता चीज़ब्रो-पाण्ड्स इन्क. मद्रास ४४ (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में स्थापित) ट्रेडमार्क रजि.

लिंटास-CPC/LC. 1.77 HI

"वे पाँच दिन मैं लोगों से अलग-अलग रहा करती थी.
अब 'केयरफ़्री'* की बदौलत महीने के पूरे ३० दिन मेरे अपने हैं."
अब, वंडररैपयुक्त नया केयरफ़्री स्त्रियों को पूरा-पूरा आराम और पूरी-पूरी सुरक्षा देता है.
महीने के इन पाँच दिनों में स्त्रियों के शरीर को विशेष यत्न और सुरक्षा की जरूरत पड़ती है, और अब केयरफ़्री इसे बखूबी देता है.
केयरफ़्री की ऊपरी तह यानी कि वंडररैप सारी की सारी नमी को अपनी भीतरी तहों में सोख लेता है तथा आपकी त्वचा हमेशा सूखी रहती है और आप बहुत आराम महसूस करती हैं.
सिर्फ़ केयरफ़्री ऐसे उच्चशोषण शक्तिवाले पदार्थ से बनाया गया है कि नमी नैपकिन की भीतरी तहों द्वारा सोख ली जाती है. इस तरह नमी के एक ही जगह पर सोखे जाने का डर नहीं रहता.
सिर्फ़ सामने की सतह को छोड़ कर केयरफ़्री की बाकी तीनों सतहों पर (नीचे तथा अगल-बगल) एक नीला स्तर लगा रहता है, जिसके कारण आपके कपड़ों पर दाग पड़ने का कोई डर नहीं रहता.
केयरफ़्री को नष्ट करना भी बहुत आसान है क्योंकि इसे फ़्लश किया जा सकता है. इस तरह सफ़र करते समय जब आप घर से बाहर रहती हैं, यह आपके लिए वरदान स्वरूप है.
केयरफ़्री के आकार में समुचित परिवर्तन करके आप इसे अपने शरीर के सुविधानुसार बना ले सकती हैं. हर पैक के साथ एक केयरफ़्री बेल्ट आपको मुफ़्त मिलता है.
अब जा कर महीने के पूरे ३० दिन आपके अपने हैं!
अब नये छोटे पॉलिबैग में
इसके अलावा नफ़ासत पसंद महिलाओं के लिए नया लक्ज़री एडजस्टेबल बेल्ट अलग से बिक्री के लिए उपलब्ध है.
उन दुकानों से लीजिए जहां केयरफ़्री सैनिटरी नैपकिन बिकते हैं.
Carefree
SANITARY NAPKINS
WITH 3-WAY PROTECTIVE PLASTI-SHIELD
जॉन्सन ऐंड जॉन्सन* महिलाओं को पूरी-पूरी सुरक्षा देने के लिए
* Trade Mark © Johnson & Johnson India Ltd.

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं-

विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी. स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर... ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमानजनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?--असंभव. परिणाम क्या हुआ?... ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोलेभाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

शुक्र है, कुछ चीज़ें कभी नहीं बदलतीं!
मैंने अपनी ज़िंदगी में फ़ैशन को कई अँगड़ाइयाँ लेते देखा है। फ़ैशन के साथ कुछ परिवर्तन मुझे भी करने पड़े मगर जहाँ तक बढ़िया सिलाई का सवाल है, वह कभी नहीं बदली।
यही कारण है कि मुझे बिन्नी टेरीन मिश्रित कपड़ों पर नाज़ है। माना कि फ़ैशन की दुनिया में उन्होंने नये, आधुनिक और जवाँ विचारों का समावेश किया, नये शेड्स व डिज़ाइन बनाये। लेकिन उनके कपड़ों के मूल गुण, बिन्नी की उत्कृष्ट गुणवत्ता आज भी उसी ऊँचे दर्जे की है।
कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें बिन्नी भी कभी नहीं बदलना चाहेंगे!
बिन्नी 'टेरीन' मिश्रित कपड़े
फ़ैशनेबल फिर भी टिकाऊ — केवल बिन्नी ही की बुनावट का कमाल!
Interpub BB/53/75 Hin

रवींद्र साहित्य पर दस प्रतिशत छूट

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के बिना आप का घरेलू पुस्तकालय अधूरा है. विश्वविख्यात रवींद्र साहित्य अब हिंदी में भी सुलभ है. दक्ष अनुवादकों द्वारा तैयार रवींद्रनाथ की पुस्तकें अब बहुत ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हैं. ये पुस्तकें स्वयं पढ़ने तथा उपहार देने योग्य हैं. आज ही इन का आर्डर दीजिए.

रवींद्रनाथ की कहानियां
21 कहानियां, 403 पृष्ठ 8.00

रवींद्रनाथ के नाटक (प्रथम खंड)
'विसर्जन,' 'चित्रांगदा' और 'चिरकुमार सभा' का 305 पृष्ठ का संग्रह 8.00

रवींद्रनाथ के नाटक (द्वितीय खंड)
'राजा,' 'डाकघर,' 'मुक्तधारा' और 'रक्त करबी' का 286 पृष्ठ का संग्रह 8.00

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य
73 बालोपयोगी कहानियां, कविताएं व निबंध, 312 पृष्ठ 7.50

आंख की किरकिरी
प्रसिद्ध उपन्यास 'चोखेर बालि' का हिंदी रूपांतर, पृष्ठ 230 5.00

रवींद्रनाथ के निबंध (प्रथम खंड)
धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा ग्रामसुधार संबंधी चुने हुए निबंध. 15.00

रवींद्रनाथ के निबंध (द्वितीय खंड)
आत्मकथा, साहित्य समीक्षा, चारुलेख आदि विविध विधाओं के 45 प्रेरणाप्रद लेख, पृष्ठ 479. 12.00

रवींद्रनाथ की कविताएं
एक सौ एक चुनी हुई कविताओं का संग्रह, पृष्ठ 326 12.00

गोरा
उपन्यास, पृष्ठ 455 8.00

योगायोग
उपन्यास, पृष्ठ 252 6.00

डाक खर्च अतिरिक्त. वी. पी. पी. से मंगाने के लिए 5 रु. अग्रिम भेजें.

प्राप्ति स्थान—

दिल्ली बुक कंपनी,

12-एम, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

सर्वश्रेष्ठ उपन्यास पर 10,000 रुपए का पुरस्कार

मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को एक नई दिशा दी है और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर दिया है. इसी अभियान के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ मौलिक हिंदी उपन्यास पर 10,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा की जा रही है.

नियम एवं शर्तें :

1. उपन्यास सर्वथा मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होना चाहिए. प्रकाशित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.

2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्र निर्माण में सहायक होना चाहिए. कथानक उद्देश्यपूर्ण हो, मनोरंजक हो और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों को कुछ सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्त्तव्य निभाने की प्रेरणा दे सके. असफल प्रेम, जासूसी, तस्करी, मारधाड़, वेश्यावृत्ति आदि पर आधारित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.

3. पांडुलिपि फुलस्केप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर टाइप की हुई होनी चाहिए. शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से लंबे विवरण नहीं होने चाहिए.

4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने तक कहीं और विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए.

5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा.

6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारिश्रमिक दिया जा सकता है.

7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापीराइट) सरिता के पास सुरक्षित रहेंगे.

8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा.

9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी. फिर भी कार्यालय, किसी रचना के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को किसी तरह की हानि पहुंचने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा.

10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पर्याप्त डाक टिकट आने आवश्यक हैं अन्यथा उन्हें वापस नहीं किया जाएगा.

11. इस प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव नहीं होगा.

12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि वह लेखक की मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित, प्रसारित, प्रदर्शित नहीं हुई है तथा लेखक को रचना के विषय में सरिता संपादक मंडल का निर्णय स्वीकार होगा. पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है.

अपनी पांडुलिपियां 31 अक्तूबर, 1975 तक निम्न पते पर भेजें :

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,

दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

Interpub/SM/8/74 HN
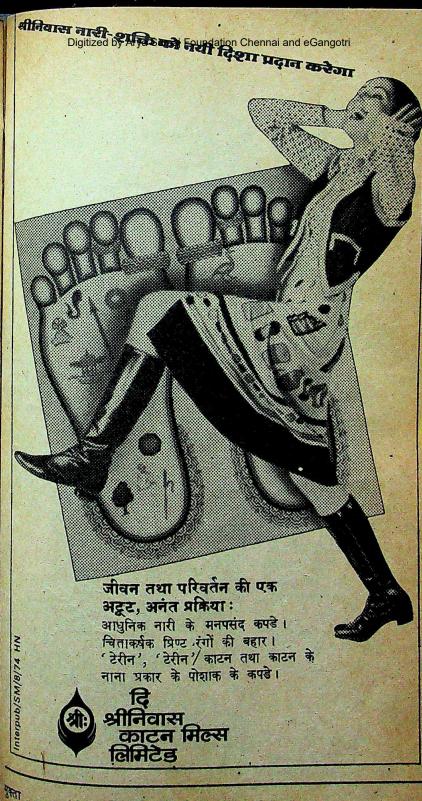
श्रीनिवास नारी-शक्ति को नयी दिशा प्रदान करेगा
जीवन तथा परिवर्तन की एक अटूट, अनंत प्रक्रिया :
आधुनिक नारी के मनपसंद कपडे।
चित्ताकर्षक प्रिण्ट रंगों की बहार।
'टेरीन', 'टेरीन'/ काटन तथा काटन के नाना प्रकार के पोशाक के कपडे।
श्री:
दि श्रीनिवास काटन मिल्स लिमिटेड
Interpub/SM/8/74 HN

साठे मॉल्टेक्स
इतने स्वादिष्ट हैं क्यों कि उनमें माल्ट है
ताज़ा, करारा व स्वाद में अनोखा
इस अनोखे स्वाद का कारण है मॉल्ट, जो इस बिस्कुट में भरपूर है। पचने में हलका यह बिस्कुट चाहे जितने भी खायें, और खाने को जी चाहता है। इसलिये कि इसमें मॉल्ट है!
उपहार में देने के लिए सुंदर पेकेट में और घर लेजाने के लिए खुला मिलता है।
IS:1011
ISI
आई. एस. आई मुहर वाले मॉल्टेक्स का मतलब है अच्छी किस्म की गारंटी वाले बिस्कुट
साठे मॉल्टेक्स बिस्कुट
SATHE MALTex BISCUITS
साठे बिस्कुट
heros-SBC-54-E

विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे अवसरों पर हिंदी के साथ जो मजाक हुआ, सो तो हुआ ही, उसे ले कर तथाकथित हिंदी प्रेमियों ने भी कई भ्रामक धारणाओं का प्रचार किया है और कई अनापशनाप बातें कही हैं. मुझे कुछ नहीं कहना पर मुक्ता के माध्यम से अपनी बात जरूर कहना चाहूंगा.

हिंदी एक समर्थ भाषा है और इसे अंगरेजी की बैसाखियों का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं है. लेकिन हमें इस से आगे बढ़ कर भी सोचना है.

यह बताना यहां अप्रासंगिक न होगा कि रोमन लिपि (अंगरेजी) में सिर्फ यंत्र-योग्यता का गुण है, बाकी दोष ही दोष हैं और देवनागरी (हिंदी) में वैज्ञानिकता है, पर यंत्रयोग्यता नहीं. इसे यंत्रसाध्य बनाने के लिए कई झमेले करने पड़ते हैं. देवनागरी के टंकणयंत्र में बड़े कुंजीपटल पर भी पूरे अक्षर नहीं आ पाते. इस पर भी स्थिर कुंजियों आदि का प्रबंध करना पड़ता है. छापेखाने में खोखली मुद्राएं (करन टाइप), मात्राओं, बिंदियों का जो झंझट है, इसे वे लोग बखूबी समझते हैं जो कंपोजिंग के बारे में थोड़ाबहुत भी जानते हैं. इस परिणाम पर पहुंच कर एक भारतीय विद्वान श्री ओमप्रकाश भाटिया 'अराज' ने 12-13 वर्ष के परिश्रम से संसार की सभी लिपियों का अध्ययन किया और सर्वश्रेष्ठ लिपि के 14 अनिवार्य गुणों की सूची बना कर विभिन्न लिपियों को इस कसौटी पर कसा. उन्होंने एक ऐसी लिपि प्रस्तुत करने की ठानी जो यंत्रयोग्य भी हो और शुद्ध, वैज्ञानिक व सुस्पष्ट भी. अंत में वह ऐसी ही 'अरा लिपि' प्रस्तुत करने में सफल हुए जो श्रेष्ठ लिपि के सभी गुणों को पूरा करती है.

सरकारी 'परिवर्द्धित देवनागरी' जैसे अधकचरे प्रयासों से यह आविष्कार बहुत श्रेष्ठ है, पर सरकार इसे मान्यता सिर्फ इसलिए नहीं देना चाहती कि कहीं किसी वर्ग के वोट खतरे में न पड़ जाएं. कुछ 'आचार्यों' ने बिना इस का अध्ययन किए ही इसे 'हिंदी पर कुठाराघात,' 'कम्युनिज्म से प्रेरित' आदि सिद्ध करने का प्रयत्न किया है. वे भूल जाते हैं कि समर्थ भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए समर्थ लिपि का होना भी जरूरी है और अरा लिपि समर्थ है. यह कहने का साहस मैं ने तभी किया है जब भाषा विज्ञान और लिपि विज्ञान के बहुत से विद्वानों ने इस की उपयोगिता स्वीकार की है.

इस पर भी सरकार की लापरवाही और हमारी उपेक्षा क्या दर्शाती है? क्या हम एक खारे कुएं का पानी सिर्फ इसी लिए पीते रहेंगे कि इसे हमारे दादा-परदादा ने खोदा था? रूढ़ियों से बाहर आ कर मेरी बात पर गंभीरता से सोचिए, फिर यदि कोई शंका उभरे तो मैं सहर्ष उस का समाधान प्रस्तुत करूंगा.

—प्रमोदकृष्ण खुराना 'पावन,' पिहोवा

✦

दिसंबर (द्वितीय) में 'संपादक के नाम' स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित श्रीमती उषा शाह की अज्ञेय के विचारों पर प्रतिक्रिया (स्वर्णिम वाक्य, सितंबर प्रथम) सच-

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही, आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55.

मुच विचारणीय है. आजकल की शीघ्रता से बदलती हुई मान्यताओं के साथसाथ पुराने बुजुर्गों को अपने दकियानूसी विचार बदलने की अत्यंत आवश्यकता है.

आज मांबाप अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा दिलाना चाहते हैं, उन्हें बड़े से बड़ा अफसर, डाक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते हैं तो केवल इसलिए कि वे शादी-ब्याह के बाजार में उन का मूल्य ज्यादा से ज्यादा लगा सकें. फिर चाहे इस सौदे में उन के बेटी या बेटे के अरमानों का खून क्यों न होता हो.

जो युवकयुवतियां विद्रोह कर के अपने मांबाप का दिल दुखाना नहीं चाहते, वे आत्महत्या कर के अपने आने वाले अंधकारमय कल के आने से पूर्व ही मुरझा जाते हैं. यह कदम जल्दबाजी का होता जरूर है और इस के लिए बाद में मांबाप पछताते भी हैं, पर युवा हृदय भावना के जोश में इतना अंधा होता है कि किस समय गुस्से और जोश में आ कर क्या कुछ कर बैठे, कहा नहीं जा सकता. इसी लिए हमारे बुजुर्ग समाज और युवा हृदयों के बीच एक समझौते की आवश्यकता है.

—अविनाश पाटील, नागपुर

✦

फरवरी (प्रथम) में 'ये लड़कियां' स्तंभ के अंतर्गत सुश्री सुषमा डफरिया का एक संस्मरण प्रकाशित हुआ है, जो वास्तव में मनगढ़ंत है.

जैसा कि सर्वविदित है रिजर्वेशन कराने के लिए संभावित यात्री की उमर और नाम का उल्लेख किया जाता है. जिस युवक ने सुषमाजी की सहेली की सहायता की थी, क्या वह उमर से यह भी अंदाज नहीं लगा पाया कि रिजर्वेशन उन की सहेली के लिए कराया जा रहा है या उन की माताजी के लिए? कम से कम इस ऊलजलूल संस्मरण को प्रकाशित करवाने से पहले वह रिजर्वेशन कराने के नियमों आदि का पता लगा लेतीं तो अधिक उचित होता.

—वीरेंद्रमोहन, जबलपुर

✦

जनवरी (द्वितीय) में प्रकाशित 'पश्चिमी आईने में भारतीय चेहरे' (लेख : रमाकांत 'आजाद') पढ़ा.

यह लेख भारत और पश्चिमी देशों के लोगों की भावनाओं में अंतर को स्पष्ट करता है. भारत में अशिक्षा है और पश्चिमी देश शिक्षित हैं. इसी लिए वहां के लोग कोई ऐसा काम नहीं करना चाहते, जिस से देश का सिर नीचा हो क्योंकि वहां सर्वप्रथम यही शिक्षा दी जाती है. लेकिन भारत में इस के सर्वथा विपरीत होता है. ब्रिटेन में नारी को समान अधिकार होने से वहां कोई भेदभाव नहीं है जिस से कारखानों और दफ्तरों में महिलाएं समान रूप से कार्य करती हैं. अगर भारत में भी महिलाओं को वैसे ही समान अधिकार दिए जाएं तो हमारा देश भी सभ्य और शिक्षित कहलाएगा.

—रामचंद्र बिश्नानी, बैरसिया ●

मुक्ता

जून (प्रथम) अंक के विशेष आकर्षण :

- **भारतीय मुसलमान**
  क्या राष्ट्रीय जीवनधारा से कटते जा रहे हैं?

- **विश्व कप हाकी**
  कुआलालंपुर में हुए हाकी मैच का हाल आप ने सुना होगा. लेकिन जरा रेडियो पीकिंग खोलिए.

- **फिलिपींस**
  भारत द्वारा उपेक्षित भारत का एक महत्त्वपूर्ण पड़ोसी देश

सावधान, इन विज्ञापनों से!
'ताकत' की दवाइयां बेचने वाले 'नीम हकीमों' के चक्कर में आप अपनी जिंदगी दांव पर न लगा दें?

- **कालिज क्लास रूम में**
  जरा चल कर देखिए कि वहां क्या होता है?

इन के अतिरिक्त अनेक हृदयस्पर्शी कहानियां, जगा देने वाले लेख, धारावाही उपन्यास, भावपूर्ण कविताएं, सभी स्थायी स्तंभ और विशेष रूप से लिखी गई सामग्री.

अपनी प्रति के लिए आज ही अखबार वाले से कह दें.

मुक्त विचार

युवतियों का अपहरण या...

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि युवतियों के अपहरण के अधिकांश मामलों में लड़कियां स्वयं अपनी इच्छा से ही घरों से भागती हैं. मातापिता या संरक्षक कुछ तो अपनी इज्जत बचाने के लिए और कुछ अपना उत्तरदायित्व दर्शाने मात्र के लिए पुलिस में अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराते हैं. बरामद होने पर अधिकतर लड़कियां दबाव के कारण ही अपहरण की बात करती हैं.

इस से जाहिर है कि अधिकांश मातापिता अपनी लड़कियों का विश्वास नहीं जीत पाते हैं.

वे लड़कियों को कई बार कठोरता व अनुशासन के ऐसे बनावटी वातावरण में रखते हैं कि लड़कियां निस्संकोच उन्हें अपनी सारी भावनाएं नहीं बता पाती हैं. तरुणावस्था में लड़कों के प्रति आकर्षण हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है. यदि मातापिता उदार हों तो वे लड़कियों को लड़कों से अपने संरक्षण में मिलने की छूट दे देते हैं, जिस से लड़कियों में अपराध भावना खत्म हो कर आत्मविश्वास पैदा हो जाता है.

इस के विपरीत कुछ मातापिता लड़कियों से जरूरत से ज्यादा कठोरता से पेश आते हैं और लड़के के नाम पर ही भड़क उठते हैं. ऐसी ही लड़कियां प्रायः घरों से भागती हैं, क्योंकि उन में दबाव के कारण विद्रोह की भावना पैदा हो जाती है.

यह एक कटु सत्य है कि स्वयं भागने वाली लड़कियों में से पांच प्रतिशत भी भागने वाले लड़कों के साथ घर नहीं जमा सकतीं. ऐसे लड़के स्वयं उच्छृंखल होते हैं और लड़कियों की भावनाओं का अनुचित लाभ उठाते हैं. ऐसे प्रेम प्रायः 20 वर्ष से कम की आयु में होते हैं. अतः लड़के बेरोजगार होते हैं. चुरा कर लाया गया पैसा जल्दी ही समाप्त हो जाता है और फिर लड़के लड़कियों को छोड़ भाग खड़े होते हैं.

हर मातापिता को चाहिए कि वे लड़कियों को तरुणावस्था में पैर रखते ही ऐसे मामलों के सभी पहलुओं को बतला दें ताकि समय पड़ने पर वे अपने मस्तिष्क से ज्यादा काम लें और दिल से कम. लड़कियों के स्कूलों और कालिजों में भी इस शिक्षा के विशेष लेक्चर आयोजित कराए जाने चाहिए. फिल्मों और अनैतिक साहित्य के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित करने का यही एक उपाय है.

डाकुओं पर फिल्म

चंबल के डाकुओं के जीवन और समस्याओं पर बंबई के एक निर्माता एक फिल्म बना रहे हैं, जिस में कुछ ऐसे डाकुओं को भी काम दिया गया है जो हाल ही में आत्मसमर्पण कर चुके हैं.

मध्य प्रदेश शासन ने फिल्म निर्माताओं को इस फिल्म को बनाने की अनुमति तो दी ही है, साथ में कुछ सुविधाएं भी दी हैं. लेकिन इस शर्त पर कि फिल्म में मध्य प्रदेश शासन या कर्मचारियों के विरुद्ध कोई बात न हो.

स्मरण रहे कि आत्मसमर्पण के तुरंत

बाद बहुत से डाकुओं ने बताया था कि उन के पुलिस व राजनीतिज्ञों से किस तरह के संबंध थे. सर्वोदयी कार्यकर्ताओं और शासन में भी इस बारे में बहुत से मतभेद थे. शासन आत्मसमर्पण का सारा का सारा श्रेय अपने सिर लेना चाहता था, जब कि सर्वोदय कार्यकर्ताओं के अनुसार इस में पहल और मुख्य कार्य श्री जयप्रकाश नारायण का था.

जेलों में भी आत्मसमर्पण करने वाले डाकुओं से काफी दुर्व्यवहार किया गया, क्योंकि डाकुओं के आत्मसमर्पण से बहुत से अधिकारियों की ऊपरी आय बंद हो गई थी.

ये सब बातें कहीं फिल्म में न आ जाएं, इसलिए सरकार ने पहले ही अपनी शर्तें रख दी थीं.

जो लोग फिल्मों व समाचारपत्रों के सरकारीकरण की मांग करते रहते हैं, उन्हें इस से कुछ समझना चाहिए. यहां सरकार न तो फिल्म बना रही थी और न ही पैसा लगा रही थी. फिर भी उस ने अपनी आलोचना न होने का इंतजाम पहले ही से कर लिया है. अब यदि सारी फिल्में सरकारी हों तब तो हर डायलाग में सरकार की प्रशंसा होगी, अधिकारियों को आसमान पर चढ़ाया जाएगा और भ्रष्टाचार और लालफीताशाही को छिपा दिया जाएगा, जैसे रूस, चीन, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया आदि कम्युनिस्ट देशों की फिल्मों में होता है. हमारे देश में सेंसर की टेढ़ी निगाहों के कारण सरकार और उस के कारनामों की तगड़ी आलोचना तो वैसे ही नहीं की जाती. फिर भी यदाकदा जो छींटाकशी चलती रहती है, सरकारीकरण के बाद तो वह भी बिलकुल लुप्त हो जाएगी और सारी फिल्मों में सरकार की वाहवाही होगी.

विदेश जाने वाले

पंजाब से हर साल सैकड़ों लोग इंगलैंड, अमरीका और कनाडा आदि जाते रहे हैं. अनपढ़, अशिक्षित परंतु अपने काम में माहिर बढ़इयों, मशीनों पर काम करने वालों आदि की वहां बहुत मांग रहती है और दूसरों से कम वेतन मिलने पर भी वहां ऐसे लोगों का जीवन स्तर यहां से कई गुना अच्छा हो जाता है.

अब कम्युनिस्ट देशों ने भी ऐसे कारीगरों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं और उन के दूतावास यहां से कुशल कारीगरों को एकत्र कर के भेजने लगे हैं.

अपने देश में नौकरी न मिले तो बाहर जा कर पैसा कमाने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती. परंतु आपत्ति तब होती है जब या तो अवांछनीय तत्व बाहर जाने लगते हैं या आतिथेय देशों में उन के साथ भेदभाव बरता जाता है.

हमारी सरकार की विदेश नीति इतनी लचर है कि हम संसार के किसी भी देश को (नेपाल, भूटान और अमरीका को छोड़ कर) कोई कठोर बात कहने से घबराते हैं, चाहे हमारे देशवासियों को कितना भी कष्ट क्यों न हो. ब्रिटिश गायना, युगांडा, केन्या आदि में भारतीय वंशजों से काफी भेदभाव बरता जाता है पर हमारी सरकार कुछ नहीं बोल पाती. ऐसी स्थिति में यदि कम्युनिस्ट देशों में भारतीयों को कल तंग किया जाने लगा तो क्या होगा?

पश्चिम के देशों में कोई न कोई समाचारपत्र या संस्था विदेशियों या असहाय व्यक्तियों के लिए आ खड़ी होती है पर कम्युनिस्ट देशों में तो सरकार विरोधी बात ही करना संभव नहीं है. चूंकि वहां सारे कारखाने सरकारी हैं, अतः जो मजदूर जाएंगे वे सरकारी नौकर होंगे और उन पर किसी भी अत्याचार की आलोचना सरकार की आलोचना होगी, जो संभव ही नहीं है.

इसलिए जरूरी है कि सरकार ऐसे लोगों को भेजने की अनुमति देने से पहले इन्हें बुलाने वाले देशों से तथा जाने वालों से पूरी जांचपड़ताल कर ले.

सरकार को जाने वालों के पूरे ब्योरों और बुलाने वाले देश से बराबरी के व्यवहार का आश्वासन ले लेना चाहिए.

उन्नति कर के उन के साथ बैठें और उन का [illegible] करें.

जब भी आदिवासियों के जीवन स्तर की बात की जाती है, कुछ समाजशास्त्री यह मांग करते हैं कि आदिवासियों के विशेष व्यक्तित्व को आधुनिकता की वेदी पर बलि नहीं चढ़ाया जाना चाहिए.

वे कहते हैं कि आदिवासियों के हजारों साल पुराने रीतिरिवाज हैं, जो आधुनिक सभ्यता के पहुंचते ही नष्ट हो जाएंगे. लेकिन साथ ही वे आदिवासियों की स्थिति के सुधार की बात भी करते हैं; आदिवासियों की अकाल मृत्यु, गरीबी, व कच्चे मकानों के प्रति भी आंसू बहाते हैं. ये दोनों बातें आपस में विरोधी हैं. या तो आदिवासी अपनी विशेषता कायम रख सकते हैं या आर्थिक उन्नति कर सकते हैं. दोनों ही बातें साथसाथ होना असंभव है.

आदिवासियों की आज मुख्य विशेषता उन का पिछड़ापन ही है. उन के पुराने रहनसहन, रीतिरिवाज, काम करने के सदियों पुराने ढंग, निरक्षरता आदि ही तो उन का विशिष्ट व्यक्तित्व बनाते हैं. यदि यह सब बनाए रखा गया तो आधुनिकता कैसे लाई जा सकती है?

किसी जनसमुदाय का विशेष पुराना, आदिकाल का व्यक्तित्व कायम रखने के लिए उन के विकास पर ध्यान न देना भारी भेदभावपूर्ण है. हमें कोई अधिकार नहीं कि हम अपने देश के कुछ लोगों को विज्ञान व तकनीक की नई जानकारी तथा बढ़ती समृद्धि से केवल इसलिए दूर रखें कि हम उन्हें संग्रहालय की चीजें बना कर रखना चाहते हैं. जब शहरों में रहने वाले करोड़ों लोग आज अपनी पुरानी आदतें छोड़ चुके हैं तथा पहले से अच्छा जीवन स्तर बिता रहे हैं तो इन आदिवासियों ने ही क्या कसूर किया है?

शायद इस मांग के पीछे हमारा पुराना पुरोहितवाद ही काम कर रहा है. हमारे ब्राह्मण नहीं चाहते कि ये आदिवासी, जो हिंदू धर्म के अनुसार शूद्र हैं,

योजना आयोग की स्कीम

योजना आयोग ने राज्य सरकारों को ऐसी स्कीमें बनाने की सलाह दी है, जिन में कम से कम सरकारी सहायता से अधिक से अधिक शिक्षित बेकारों को रोजगार मिल सके. योजना आयोग का विचार है कि शिक्षित इंजीनियरों और बेकारों को सरकारी नौकरी देने की बजाए उन्हें नए लघु उद्योग खोलने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए.

यह कह देना तो बहुत आसान है कि अपना लघु उद्योग खोल लो, हम पैसा देंगे, मशीन देंगे. लेकिन आप ने उन नियमों व कानूनों के बारे में भी कभी सोचा है जो हर नए उत्साही युवक का सारा जोश एक बार की टक्कर में ठंडा कर देते हैं? क्या योजना आयोग ने वे आंकड़े एकत्र किए हैं कि सरकारी इंस्पेक्टरों की फौज के कारण कितने युवक अपने धंधे बंद कर चुके हैं? लघु उद्योग खोलते ही हर उद्योगपति को इंस्पेक्टर घेर लेते हैं. बिजली, पानी, मकान, म्यूनिसिपल कानून, श्रम, एक्साइज, स्टेटिस्टिक, आय कर, बिक्री कर, प्रोविडेंट फंड, इंश्योरेंस आदि न जाने कितने कानून और इंस्पेक्टर हैं, जिन से निपटना होता है और यह हरेक के बस की बात नहीं होती.

बड़े उद्योगपति तो इन सब से निपट लेते हैं क्योंकि उन के पास पर्याप्त सहायकगण होते हैं. पर जहां एक ही व्यक्ति उत्पादन भी देखे, बिक्री भी देखे, कच्चा माल भी खरीदे और श्रमिकों से भी निपटे, वहां काम कैसे चल सकता है. घर की सारी पूंजी लगा कर उसे पता चलता है कि कारखाना तो नौकर लोग चला रहे हैं और वे स्वयं सरकारी दफ्तरों के चक्कर काट रहे हैं. लाभ होने का तो प्रश्न उठता ही नहीं. फिर भला युवक क्यों उद्योग लगाने को उत्सुक रहें?

बोहरा युवक-युवतियों का सामूहिक विवाह
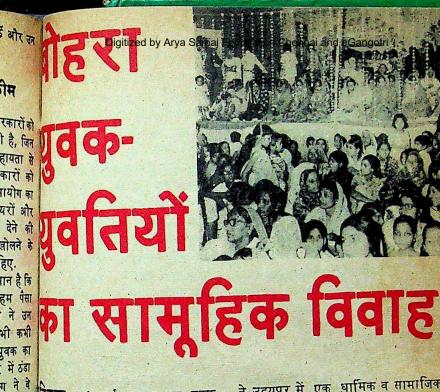
विवार, 16 मार्च, 1975. हर तरफ एक सा माहौल है, एक ही र्चा है. उदयपुर में जिधर देखो उधर ही र कोई भंडारी दर्शक मंडप की ओर बढ़ा ला जा रहा है. आज वहां पर भारतीय वा शक्ति के एक अंश ने रूढ़िवादिता खिलाफ जेहाद किया है. गत कुछ मय से जहां युवा शक्ति ने देश में राज-नैतिक चेतना को जन्म दिया है, इस वर्ग ने उदयपुर में एक धार्मिक व सामाजिक चेतना की शुरुआत की है. यह युवा शक्ति है दाऊदी बोहरा युवक समाज की, जो गत चार वर्षों से अपने धर्मगुरु के शिकंजों से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही है. 6 मार्च को बोहरा यूथ एसोसिएशन ने अपनी जमात के 168 युवकयुवतियों के सामूहिक निकाह का आयोजन किया. इन के विवाह गत चार वर्षों से धर्मगुरु

बोहरा युवकयुवतियों ने जो क्रांतिकारी कदम उठाया, उस ने रूढ़ियों और आडंबरों से ग्रस्त बोहरा समाज की नींव को हिला दिया...

लेख • रमेश शारदा
सरितामुक्ता विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

बहुत से दूल्हादुलहनों के मातापिता शादी में न आए. अतः संरक्षकों अथवा काजियों ने ही निकाह की रस्म अदा की.

की रजा (सहमति) न मिलने के कारण नहीं हो पाए थे.

दाऊदी बोहरा समाज एक शांतिप्रिय, समृद्ध संप्रदाय है, जिस की जनसंख्या भारत में लगभग सात लाख है. इन में से लगभग 15 हजार बोहरे उदयपुर में रहते हैं. इन के धर्मगुरु सैयदना डा. मुहम्मद बुरहानुद्दीन गलियाकोट में रहते हैं. एक लंबे अर्से से धर्मगुरु और समाज के प्रगतिशील तत्त्वों के बीच संघर्ष चला आ रहा है. इस संघर्ष का ही परिणाम था युवाओं का यह ऐतिहासिक कदम, जो रूढ़िवादिता एवं सामाजिक पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष का एक उदाहरण बन गया है. इस असंतोष की कहानी, उन्हीं की जबानी जानने के लिए मैं बोहरा यूथ एसोसिएशन के उत्साही सेक्रेटरी श्री आबिद हुसैन अदीब से मिला. वह बहुत व्यस्त थे. फिर भी काफी देर तक उन्होंने मुझे अपने संघर्ष की कहानी सुनाई.

सब से पहले सामूहिक विवाह के बारे में बताते हुए अदीब बोले, "ये शादियां हमारे धर्मगुरु द्वारा हमारे ऊपर लगाए गए प्रतिबंधों के खिलाफ संघर्ष की परिणति हैं. हमारे धर्मगुरु ने हमें एक ...पर से कठघरे में कैद कर रखा है. हमारी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई मायने नहीं है. जन्म से ले कर मृत्यु तक दाऊदी बोहरा अपने धर्मगुरु का गुलाम बना रहता है. उन की रजा के बिना शादी तो दूर, एक लाश तक को नहीं दफनाया जा सकता. सैयदना साहब की रजा से ही किसी दल को वोट मिल सकते हैं और कोई बोहरा चुनाव लड़ सकता है."

इस प्रकार से धर्मगुरु सैयदना साहब ने 'गवर्नमेंट विद इन ए गवर्नमेंट' (सरकार के अंदर एक और सरकार) की स्थिति बना रखी है. इस से बोहरा समाज प्रगति पथ पर अग्रसर राष्ट्रीय जीवनधारा से अलग हटा हुआ है. भारत के संविधान द्वारा प्रदत्त मूलभूत अधिकारों का भी दाऊदी बोहरों के लिए कोई अर्थ नहीं क्योंकि इन के समाज में सब कानून सैयदना साहब के चलते हैं. यदि कोई उन का विरोध करना चाहे तो उसे समाज से अलग कर दिया जाता है.

चोरी और सीनाजोरी

लेकिन आज का युवक इस यातना और मनमानी को कब तक सहन करता? जब बोहरा समाज के युवकों ने सैयदना साहब से थोड़ी आजादी की अपील की तो उन्हें बागी करार दे दिया गया. सैयदना साहब ने अपने समर्थकों द्वारा इन प्रगतिशील युवाओं को पिटवाया, उन के घर जलवा डाले, उन के परिवार के सदस्यों पर अत्याचार किए. बंबई, सूरत तथा उदयपुर में कई झगड़े हुए, आपस में खून बहाया गया. शर्मनाक बात तो यह है कि धर्मनिरपेक्ष भारत में ये अत्याचार पुलिस के सामने हुए और पुलिस चुपचाप बैठी रही, क्योंकि सैयदना समर्थकों के पास उन्हें चुप रखने की सामर्थ्य थी, साधन थे. 'चोरी और सीनाजोरी' की कहावत के अनुसार इन लोगों ने युवकों पर धारा 307 के अभियोग लगवा दिए. अभी भी लगभग 125 केस चल रहे हैं.

लेकिन उत्साह के धनी ये युवक जब

...स भी विचलित नहीं हुए तो ... साहब ने एक चाल चली. प्रत्येक युवकयुवती को विवाह से पूर्व ... लेना जरूरी है अर्थात सैयदना के प्रति पूर्णरूपेण निष्ठावान रहने ...ज्ञा लेनी होती है. इस प्रतिज्ञापत्र ...सार सैयदना बोहरों की जानमाल ...स लोक व परलोक के एकछत्र ...है. यदि कोई बोहरा उन का ...करता है तो सैयदना उस के घर ...न लगवा सकते हैं, उस की बीवी ...टवा सकते हैं, यानी उन का अमा... शासन है. जब इन युवकों ने इस ...र की प्रतिज्ञा लेने से मना कर दिया ...यदना ने युवकों को विवाह करने ...जा नहीं दी. गत तीनचार वर्षों से ...युवकयुवतियों के विवाह रुके पड़े थे. ...ना ने सोचा कि इस चाल से युवाओं ...थियार डालने ही पड़ेंगे.

प्रार्थना का असर नहीं

विवाह के लिए रजा दिलवाने हेतु ...युवकों ने बहुत प्रार्थना की. राजस्थान ...ार, राजस्थान के राज्यपाल, कर्नाटक ...राज्यपाल तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी सैयदना से अपील की, ... अप्रभावी रहीं. हार कर इन युवक-

युवतियों ने प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी से निवेदन किया. पहले तो वह बहुत सहानुभूतिपूर्वक इन के पक्ष को सुनती रहीं और सहायता करने का आश्वासन भी दिया, लेकिन जब उन के एक सहयोगी (श्री एफ. एच. मोहसिन), जो कि सैयदना के पक्ष के हैं, ने उन्हें यह बताया कि बोहरों के मत भी सैयदना की रजा से ही पड़ते हैं, तो इस को एक धार्मिक मामला बता कर टरका दिया गया. इन युवकों ने राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद से भी बातचीत की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला.

इन सब परिस्थितियों में बोहरा यूथ एसोसिएशन ने बिना सैयदना की रजा के ही इसलामी शरियत के अनुसार स्वयं इन विवाहों को संपन्न करने का निश्चय किया. इसलाम धर्म ने विश्व के अन्य महान धर्मों के समान प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता एवं सम्मान प्रदान किया है और निकाह करने का यह ऐतिहासिक निर्णय भी इसी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सम्मान के अनुकूल है.

लंबी प्रतीक्षा की अवधि समाप्त हुई : एक बोहरा दूल्हा व दुलहन.
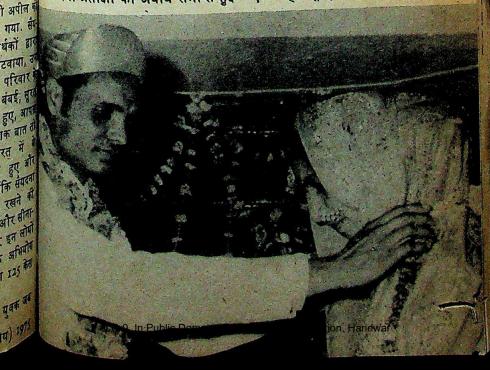
विवाह के बाद नव दंपतियों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई.

इस साहसिक कदम को जो समर्थन मिला, वह भी आशातीत ही है. भंडारी दर्शक मंडप, जहां 84 जोड़ों ने एकदूसरे के प्रति निष्ठावान रहने की कसमें लीं और नए जीवन में प्रवेश किया, दुलहन की भांति सजाया गया था. लगभग 10 हजार दर्शक इन निकाहों के साक्षी थे.

राजस्थान सरकार, पत्रकारों, विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं ने भी विवाह समारोह को एक स्वर से समर्थन दिया. लगभग सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने उपस्थित रह कर दूल्हादुलहनों को आशीर्वाद दिया. निकाह के बाद नवदंपतियों को एक जुलूस में घुमाया गया, जहां उदयपुर की जनता ने स्थानस्थान पर उन का स्वागत किया.

राष्ट्रधारा के अन्य वर्गों से सामंजस्य स्थापित करने की ओर भी बोहरा यूथ एसोसिएशन ने पूरा ध्यान रखा. यद्यपि बोहरे शिया मुसलमान हैं, लेकिन निकाह पढ़ाने के लिए शिया व सुन्नी दोनों संप्रदायों के काजियों को आमंत्रित किया गया. वरवधू को आशीर्वाद देने के लिए अन्य सभी धर्मों के प्रतिनिधि उपस्थित थे.

प्रगतिशीलता की ओर एक और कदम उल्लेखनीय है—'बोहरा यूथ' द्वारा आयोजित ईददीवाली मिलन. संयदना के विरोध के बावजूद धार्मिक सहिष्णुता एवं एकता की अभिवृद्धि करने के लिए प्रति वर्ष एक समारोह का आयोजन किया जाता है, जिस में हिंदू, मुसलमान सभी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं.

बोहरा युवक समाज की प्रगतिशीलता एवं क्रांति से कोई घर अछूता नहीं रहा है. यह संघर्ष नई पीढ़ी का पुरानी पीढ़ी

...प्रति, प्रगति की रूढ़िवादिता के प्रति घरघर में युवाओं तथा दकियानूसी विचार वालों का संघर्ष शुरू हो गया है. लेकिन इन के हौसले बुलंद हैं और राष्ट्रीय विचारधारा में अग्रसर होते हुए इन के कदम कभी पीछे नहीं हटेंगे.

जिन 168 युवकयुवतियों का विवाह हुआ है, उन्होंने अपने जीवन साथी स्वयं चुने थे. प्रत्येक युवकयुवती के परिवार वालों ने विवाह समारोह के लिए एकएक हजार रुपए दिए थे. कुछ दूल्हादुलहनों के मातापिता तो विवाह में सम्मिलित भी न हो पाए क्योंकि वे धर्मगुरु के समर्थक हैं. इस स्थिति में काजियों ने अथवा अन्य उपस्थित व्यक्तियों में से किसी ने निकाह की रस्म अदा की.

दुलहनों की सामान्यत: आयु 22 वर्ष थी. इन में से अधिकांश युवतियां गत तीनचार वर्षों से सैयदना की रजा की प्रतीक्षा कर रही थीं. दूल्हों में जहां 23 वर्ष के युवक थे, वहां एक 45 वर्षीय विधुर भी था.

ये विवाह इसलामी शरियत के अनुसार संपन्न हुए. केंद्रीय दाऊदी बोहरा संप्रदाय बोर्ड के अध्यक्ष नरीमन कांट्रेक्टर के अनुसार, "निकाह करने का निर्णय इसलाम की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और ... तो एक प्रकार का आशीर्वाद है, जिसे प्राप्त करने की प्रथा धर्मगुरुओं द्वारा थोपी गई है. बिना 'रजा' के विवाह कर के बोहरा युवाओं ने गुरु परंपरा द्वारा निर्देशित असम्माननीय शर्तों को चुनौती दी है. इस से विवाह की वैधता नहीं बदली."

निकाह संपन्न कराने के लिए दो काजी तो सुन्नी मुसलमानों के बुलाए गए थे. दाऊदी बोहरा काजी भी धर्मगुरु की बातों का विरोध करते हैं. उन में से एक ने तो धर्मगुरु सैयदना साहब को पढ़ाया भी है.

विवाह करने वाले युवकयुवतियों का शैक्षणिक स्तर काफी अच्छा है. युवकों में अधिकांश डाक्टर, लेक्चरार, वकील, इंजीनियर इत्यादि हैं. युवतियां भी उन से कम नहीं. प्राय: सभी युवतियां स्नातक हैं. उन में से कुछ डाक्टर हैं, कुछ लेक्चरार तो कुछ रिसर्च स्कालर. एक युवती जिस का विवाह दूल्हे की पगड़ी से हुआ, विधि की छात्रा है. उस का दूल्हा जो कि एग्रीकल्चरल इंजीनियर है और इराक में कार्यरत है, समय पर उपस्थित न हो सका. उस ने विवाह के लिए स्वीकृति पहले से ही भेज दी थी. ●

मुक्ता के लेखक

रमेश शारदा का जन्म 1 जून, 1953 को हुआ. आप ने राजस्थान बोर्ड की परीक्षा 90 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की और प्रदेश भर में द्वितीय रह कर रजत पदक प्राप्त किया. आजकल आप उदयपुर विश्वविद्यालय के कालिज आफ टेक्नालाजी एंड एग्रीकल्चरल इंजीनीयरिंग से बी. ई. (एग्री.) की अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहे हैं. पत्रकारिता में आप की विशेष रुचि है.

रमेश शारदा

शोध छात्र और उन के निर्देशक

हमारे देश में मौलिक अनुसंधान न होने का मुख्य कारण पैसे की कमी एवं नवीन उपकरणों का अभाव समझा जाता है. हाल ही में डा. हरगोविंद खुराना ने भी इसी बात पर जोर दिया कि नएनए उपकरणों एवं यंत्रों की कमी के कारण भारत में अनुसंधान हेतु उपयुक्त वातावरण नहीं है. यद्यपि इस कमी को नकारा नहीं जा सकता, फिर भी परिस्थितियां इतनी बुरी नहीं हैं जितनी कि सोची जाती हैं. काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. कालूलाल श्रीमाली ने कई बार अपने वक्तव्यों में कहा है कि अपने विश्वविद्यालय में शोध हेतु जितने संसाधन उपलब्ध हैं, उतने शायद ही विश्व के किसी अन्य विश्वविद्यालय में हों. श्रीमाली की यह बात अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है. अतः इस विषय के अन्य पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है.

यदि उपकरणों की कमी को ही मुख्य कारण मान लिया जाए तो प्रश्न उठता है कि क्या हमारे वैज्ञानिक उस स्तर के अनुसंधान प्रस्तुत कर रहे हैं, जिस स्तर के उपकरण उन के पास उपलब्ध हैं? उत्तर सीधा 'नहीं' में आता है. इस नहीं के क्या कारण हैं? कारण बहुत से हो सकते हैं. परंतु उन में से दो, जो निश्चय ही अन्य बहुत से कारणों की जड़ हैं, मुख्य हैं :

1. शोध छात्रों का अनिश्चित भविष्य,
2. शोध छात्र एवं उन के निर्देशकों का संबंध.

पीएच. डी. में प्रवेश हेतु प्रयासरत बहुत से विद्यार्थियों से मैं ने एक प्रश्न पूछा, "आप रिसर्च में क्यों आना चाहते हैं?" अधिकतर विद्यार्थियों ने यही जवाब दिया, "एम. एससी. के बल पर तो नौकरी मिलनी मुश्किल है. पीएच. डी. कर के शायद मिल जाए." कुछ के विचार थे, "समय पास करने के लिए अच्छा साधन है. पैसा भी मिलता रहेगा और इस बीच नौकरी के लिए भी प्रयास करते रहेंगे." ऐसे बहुत थोड़े विद्यार्थी मिले जिन्होंने कहा कि कुछ करने की तमन्ना है.

निर्देशकों के हाथों में कठ-पुतली बना आज का शोध छात्र विद्रोह तो करना चाहता है पर कर क्यों नहीं पाता?

लेख • विश्वनाथ मुद्गल

स्पष्ट है कि जब शोध करने वाले में अधिकांश का लक्ष्य ही शोध न हो तो क्या मौलिक कार्य करेंगे. पर क्या वे के लिए दोषी हैं? एक विद्यार्थी वर्ष निरंतर कठिन अध्ययन के उप-एम. एससी. उपाधि अर्जित करता है. वह किसी इंटर कालिज में साक्षात्कार हेतु जाता है तो उत्तर मिलता "आप तो एम. एससी. हैं. डिग्री कालिज में जाब पाते ही हमारा विद्यालय छोड़ देंगे." डिग्री कालिज में जाता है तो उत्तर मिलता है, "हमें तो पीएच. डी. टीचिंग एक्सपीरियंस वाला आदमी चाहिए." तो कहां जाएं? चलो भैया रिसर्च में.

गत वर्ष पूरे भारतवर्ष में ऐसे पदों की संख्या, जिन की नियुक्ति हेतु वनस्पति विज्ञान के एम. एससी. अभ्यर्थियों की आवश्यकता थी, .80 के आसपास होगी. जब कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन महाविद्यालयों से ही 70 से अधिक वनस्पति विज्ञान के एम. एससी. निकलते हैं. संपूर्ण

ऊपर बैठेगी. अतः इन में से अधिकांश, रुचि हो न हो, रिसर्च में आने को [illegible] हो जाते हैं.

जिन्होंने कुछ करने की तमन्ना से पीएच. डी. में प्रवेश लिया, ऐसे बहुत से शोध छात्रों से मैं प्रवेश के बाद मिलता रहा. मात्र तीन से छः महीने के मध्य ही हालचाल पूछने पर अधिकांश यही कहते, "कहां आ कर फंस गए!" कहने का तात्पर्य यह कि जो लोग वास्तव में शोध में रुचि रखते हैं, वे भी कुछ महीने में परेशान हो जाते हैं, औरों की तो बात ही क्या है.

हमारे यहां रिसर्च का कुछकुछ मृग मरीचिका जैसा स्वरूप होता जा रहा है. यह एक ऐसा तमाशा है जिस को बिना घुसे नहीं समझा जा सकता. कुछ छात्रों के अनुभव का सारांश यहां प्रस्तुत है.

लैब में घुसते ही अपने गाइड के निर्देशन में कार्य करने वाले विद्यार्थियों को नया छात्र दो ग्रुप में बंटा हुआ पाता है. दोनों ही उसे अपनीअपनी तरफ खींचना प्रारंभ करते हैं. एक की तरफ गाइड का अधिक सम्मान है, दूसरी तरफ कम. क्योंकि दूसरी तरफ वाले केवल काम से कुछ अधिक मतलब रखते हैं, जिस का उन्हें पर्याप्त दंड भी मिलता रहता है. नए विद्यार्थी को पहला ग्रुप सचेत कर देता है, "उन के साथ ज्यादा मत रहो, नहीं तो पांच साल तक भोगोगे." बेचारे विद्यार्थी को उसी ओर झुकना पड़ता है, जिस ओर वह गाइड का अधिक सम्मान पाता है. अब ये सीनियर उस को समझाते हैं, "उस अध्यापक के विद्यार्थी से बातें मत किया करो. उन से हमारे गाइड का संबंध ठीक नहीं है. उस के कमरे में मत जाओ. उस से कुछ सामान न लो, न दो. बास का टाइम टेबल यह है. बास के समय जरूर लैब में रहो. बाकी समय रहो न रहो. बास को ये बातें पसंद नहीं. उस वैज्ञानिक की प्रशंसा उन्हें अच्छी लगती है, उस की नहीं."

उस बेचारे विद्यार्थी को लगता है कि वह एक राजनैतिक अखाड़े में आ गया है. ऐसा अनुभव करने लगता है कि अच्छी से अच्छी बटरिंग ही अच्छी से अच्छी रिसर्च है.

रिसर्च में आने के पहले और उस के कुछ दिन बाद तक एक विद्यार्थी के मस्तिष्क में अपने गाइड के प्रति कितनी श्रद्धा रहती है, यह वह विद्यार्थी ही जानता है. अपने मातापिता से अधिक गाइड को समझता है. ऐसा होना भी चाहिए. एम. एससी. तक के विद्यार्थी से पूछा जाए कि तुम्हारा गुरु कौन है तो वह कुछ नहीं बता सकता. क्योंकि बहुत से हैं, किस-किस का नाम ले. परंतु प्रत्येक पीएच. डी. उपाधि प्राप्त व्यक्ति वृद्धावस्था तक इस प्रश्न के उत्तर में अपने रिसर्च के गाइड का नाम ही बताता है. यह कहना त्रुटिपूर्ण नहीं होगा कि प्राचीन समय में जो गुरुशिष्य संबंध शिक्षा के प्रारंभ से ही होता था, लगभग वैसा ही आज रिसर्च में होता है.

परंतु जैसेजैसे समय बीतता है, यह सम्मान और श्रद्धा मात्र दिखाने के लिए रह जाती है. आखिर कौन से कारण हैं जो उस की धारणा को बदलने पर मजबूर कर देते हैं और उत्साह से शोध हेतु आए विद्यार्थी को थोड़े से समय में ही एफ. आर. एस. (फ्रस्ट्रेटिड रिसर्च स्कालर) बना देते हैं? इस संबंध में कुछ ऐसे विद्यार्थियों के अनुभव जो पीएच. डी. कर चुके हैं, यहां प्रस्तुत हैं.

निर्देशक के पास समय का न होना

बहुत से प्रोफेसर तबके के निर्देशक, जिन के निर्देशन में कार्य करने वाले विद्यार्थियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है, अपने विद्यार्थियों को महीने में पांच मिनट भी बातें करने का समय नहीं देते. बेचारा विद्यार्थी कुछ क्षण बातें करने को, कुछ जानने को कि क्या करना है, रोज उन के चैंबर की तरफ ताकता है कि इन के कब खाली मिलें. ऐसा नहीं कि इन के पास समय नहीं होता. असल में उन्हें बेकार की फालतू बातों से फुरसत ही नहीं मिलती. वे हमेशा विभाग की राजनीति
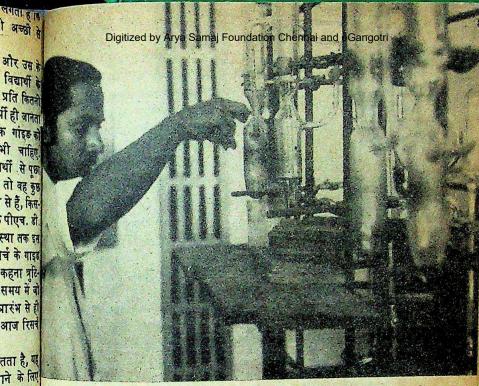
लेबोरेटरी में बिना चमचागीरी के काम करने का मौका बहुत कम मिलता है.

डूबे रहते हैं, जिस का मुख्य विषय ने विभाग की ही नहीं, वरन आसपास विभागों की भी हुई. एवं होने वाली युक्तियां होता है.

परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी नी मर्जी से एवं कुछ सहयोगी प्रवृत्ति छात्रों के सहयोग से कुछ काम करता ता है. परंतु जब उस के मस्तिष्क में प्रश्न चोट मारता है कि वह यह सब कर रहा है और इस के बाद क्या ना है, फ्रस्ट्रेशन शुरू हो जाता है.

ऐसेऐसे छात्र मिले जिन्हें काम की त तो और अपने विषय के बारे में ही पता था. उन्हें यही नहीं पता कि प्रबंध के लिए क्या और कितना करना है. यद्यपि दोदो, तीनतीन रिसर्च में बिता चुके हैं. यदि समस्या काम के बारे में वह गाइड से पूछता तो झाड़ पड़ती है, "अभी तक तुम्हें पना विषय ही नहीं मालूम? दो वर्ष से क्या कर रहे हो?"

कोई उन से पूछे कि क्या उन्होंने विद्यार्थी को कभी कार्य के विषय में बताया जो उसे पता होता. शायद उन के पास फुरसत नहीं है. परंतु इस बात का ध्यान रखने की फुरसत लगभग सभी के पास है कि आज वह विद्यार्थी नहीं आया. बिना कारण पूछे उसे डांट दिया जाता है, "मिस्टर, ऐसे नहीं चलेगा." उस की सफाई सुनने की फुरसत नहीं है.

दिल्ली के एक बहुत बड़े चिकित्सा संस्थान के एक विद्यार्थी ने डेढ़ वर्ष रिसर्च में रहने के बाद मुझे बताया कि इतने समय में वह अपने गाइड से केवल दो बार मिल सका है. एक बार शोध में प्रवेश लेते समय, इस के एक वर्ष बाद प्रगति पत्र पर हस्ताक्षर कराते समय. मुझे उस की यह बात असत्य भी नहीं लगी क्योंकि मैं जानता हूं कि उस का गाइड एक 'बिगशाट' है. इन 'बिगशाट'

का विषय न भी कहा जाए, यह बहुत ही कम है.

एक विद्यार्थी ने मुझे बताया कि दो वर्ष तक निरंतर शोध करने के उपरांत उस के गाइड ने उसे पहचानने से इनकार कर दिया. उस के गाइड एक विभाग के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के साथसाथ विश्वविद्यालय के कई अन्य पदों को भी कार्यकारी ढंग से सुशोभित करते रहते हैं. यहां तक कि वह 'एक्टिंग वाइस चांसलर' तक बनते रहते हैं. यह विद्यार्थी जब उन के पास हस्ताक्षर हेतु प्रगति पत्र ले कर गया तो अध्यक्ष महोदय ने कहा, "पहले अपने गाइड से फारवर्ड करा कर लाओ तब मैं अध्यक्ष के अधिकार से हस्ताक्षर करूंगा." विद्यार्थी के कहने पर कि "सर, आप ही तो मेरे गाइड हैं," एक जवाब और मिला, "कहां रहते हो? कभी लैब में दिखाई तो दिए नहीं." कोई उन से पूछे, क्या सालों से अध्यक्ष के चेंबर से उठ कर कभी वह लैब गए हैं?

निर्देशक का विद्यार्थी पर विश्वास न करना

अपनी ईमानदारी एवं अथक परिश्रम के उपरांत भी कुछ विद्यार्थियों को जब अपने निर्देशक के मनोनुकूल परिणाम नहीं मिलते तो उसे, आवारा और मूर्ख करार दे दिया जाता है. उसे धमकी दी जाती है कि यदि प्रयोग ठीक से नहीं करोगे तो लैब से निकाल दिए जाओगे. परंतु न जाने क्यों ये निर्देशक उन कारणों पर विचार नहीं करते, जिन के कारण प्रयोग परिणाम भिन्न आ रहे हैं. ऐसा भी होता है कि उन के मनचाहे परिणाम गलत होते हैं एवं विद्यार्थी के सही. चाहते हुए भी बेचारा कुछ सफाई दे नहीं पाता, डांट को चुपचाप सुनता है. सब इल्जाम अपने ऊपर जाड़े में रजाई की तरह ओढ़ लेता है.

वह जानता है, महसूस करता है कि बास की निगाह टेढ़ी होने का मतलब है अब तक किए हुए परिश्रम पर पानी फेर देना. वास्तव में निर्देशक के पास इतना एकाधिकार होता है कि वह यदि एक प्रगति पत्र खराब कर दे तो विद्यार्थी का पूरा कैरियर चौपट हो सकता है. इसी अधिकार के [illegible] बल पर कुछ निर्देशक विद्यार्थी पर बड़ा जुल्म ढाते हैं. यहां तक कि यदि घर में झगड़ कर आए हों तो उस का भी गुस्सा लैब में आ कर विद्यार्थियों पर उतारते हैं. कुछ तो स्कालरशिप के बिल पर हस्ताक्षर करते समय ऐसा व्यवहार जताते हैं जैसा कि यह पैसा उन की जेब से दिया जाता है.

अतः विद्यार्थी को बातबात पर यही बात ध्यान रखनी पड़ती है कि उस का बास नाराज न हो. विद्रोह की सोचता भी है तो बेचारे के गरीब मातापिता, छोटे भाईबहनों के आशान्वित चेहरे सामने आ जाते हैं. बास की नाराजगी का मतलब अंधेरा ही अंधेरा. अतः वह उसे खुश करने के तरीकों की खोज में रहता है. ऐसे आड़े समय में काम आते हैं उस के लैब के सीनियर साथी जो उस से कहते हैं, "तुम्हारा क्या बिगड़ता है वैसे ही रिजल्ट दिखाने में जैसे कि साहब चाहते हैं? इस तरह तुम कोई नई बात तो नहीं करोगे. सभी ऐसा ही करते हैं. हम ने भी ऐसा ही किया है. यह पीएच. डी. है, प्यारे.. जो न करवा दे!"

कोई अन्य विकल्प न पा कर, अपनी आत्मा की आवाज को अनसुना करते हुए वह गाइड को खुश करने के लिए मजबूर हो जाता है. यह शोध छात्र के जीवन में एक ऐसा दिन होता है जब उस के शोध का समस्त उत्साह दफन हो जाता है और ऐसा करने से जब वह गाइड को खुश पाता है तो इस का आदी हो जाता है. इस काम को रिसर्च स्कालर्स की भाषा में 'मैनिपुलेशन' कहते हैं, जिस का अर्थ हर एक शोध छात्र अच्छी तरह समझता है.

यह उस बात का मूल कारण है जो सदैव ही कही जाती है कि भारतीय अनुसंधानकर्ता, जो कुछ विदेशियों ने पहले किया है, उसी को तोड़मरोड़ कर दूसरे तरीके से प्रस्तुत करते रहते हैं. अधिकांश निर्देशकों के प्रयोगों का आधार पश्चिमी जगत के पूर्व प्रकाशित शोध पत्र होते हैं.

वे लगभग वैसे ही परिणाम चाहते हैं. इन सब बातों का दुष्परिणाम यह होता है कि अब विद्यार्थी केवल दिखाने के लिए कार्य करता है, जिसे समय एवं महंगेमहंगे रासायनिक पदार्थों का मात्र अपव्यय कहा जा सकता है.

विद्यार्थी लैब में प्राय: उसी समय मिलते हैं जब उस का गाइड लैब में होता है. अन्यथा वह या तो चाय की दुकान पर या इधरउधर घूमता पाया जाता है. गाइड के आने के समय तो लैब में सभी ऐसे व्यस्त नजर आते हैं जैसे कि नोबल पुरस्कार के लिए होड़ लगी हो. यदि कोई गाइड लैब से जाने के पांच मिनट बाद पुन: लैब में आता है तो या तो उसे ताला बंद मिलेगा या लैब का जो स्वरूप होगा, वह काफी हाउस से किसी मायने में कम नहीं होगा.

शोध में निर्देशकों की स्वार्थपरता

अधिकांश निर्देशक शोधकार्य ज्ञान पिपासा के कारण नहीं करते. लेक्चरार को रीडर एवं रीडर को प्रोफेसर के इंटरव्यू अकसर देने पड़ते हैं. इंटरव्यू में दो प्रश्न सामान्य रहते हैं. आप के कितने पब्लिकेशन हैं एवं आप के निर्देशन में कितने पीएच. डी. हो चुके हैं? मात्र इस मतलब के लिए क्या मौलिक शोध की कल्पना की जा सकती है.

परंतु फिर भी प्रोफेसर के अपेक्षाकृत लेक्चरार एवं रीडर अपने शोध छात्र की
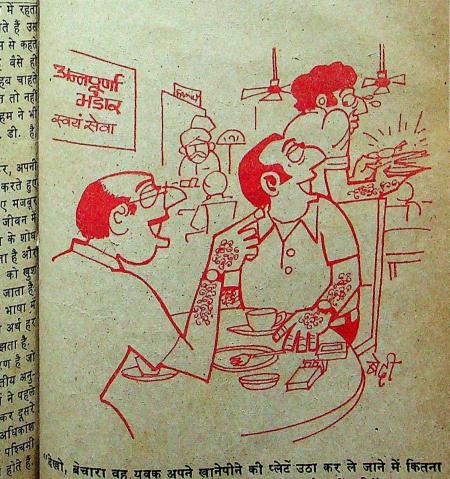
"देखो, बेचारा वह युवक अपने खानेपीने की प्लेटें उठा कर ले जाने में कितना शरमा रहा है. शायद, अभी उस की शादी नहीं हुई."

और अधिक ध्यान देते हैं, उन के पास समय भी अधिक होता है एवं उन्हें शोध-पत्र तथा पीएच. डी. की संख्या बढ़ाने की, स्वार्थ हेतु ही सही, जिज्ञासा तो रहती है. परंतु प्रोफेसर की अपेक्षा इन के निर्देशन में एक समय में बहुत कम छात्रों के प्रवेश की अनुमति दी जाती है. प्रोफेसर को तो उस से आगे कुछ बनना नहीं होता, अत: वह मनमानी करता है. फिर भी नए छात्र उस के नाम की ख्याति का लोभ संवरण नहीं कर पाते. वे सोचते हैं, बड़े आदमी हैं, शायद स्कालरशिप आसानी से मिल जाएगी एवं शोध के उपरांत कहीं नियुक्ति में भी कुछ न कुछ मदद करेंगे. सिर्फ शोध कार्य का विचार कम छात्रों में ही रहता है.

इन विषम परिस्थितियों में भी बहुत से ऐसे छात्र भी भरे पड़े हैं जो मात्र शोध के लिए ही पीएच. डी. में प्रवेश लेते हैं. परंतु निकम्मे गाइड के नीचे पड़ जाने के कारण उन की इच्छा मात्र इच्छा रह जाती है. इसी प्रकार बहुत से अच्छे निर्देशकों के नीचे निकम्मे शोध छात्रों के आ जाने के कारण वातावरण बिगड़ जाता है. फिर भी इस का अर्थ यह लेना कि अच्छा कार्य करने वालों का सर्वथा अभाव है, गलत होगा. यद्यपि यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं कि इन की संख्या उंगलियों पर गिनाई जा सकती है. इन के संबंध में एक बात और बता दूं कि इन की हालत बड़ी बुरी रहती है. कारण स्पष्ट है, कर्मनिष्ठ शोधरत व्यक्ति 'बटरिंग' विद्या से अनभिज्ञ रहता है. अत: वह जहां है वहीं पड़ा रहेगा, प्रगति नहीं हो सकती. यह बात और है कि उस के मौलिक शोध पत्रों का पश्चिमी जगत अपेक्षाकृत अधिक सम्मान करे एवं इस प्रकार हमारी राष्ट्रीय ख्याति बढ़े.

उपर्युक्त चर्चा जिन व्यक्तियों से संबंधित है, वे केवल हमारे राष्ट्र के बुद्धिजीवी वर्ग में से ही नहीं हैं बल्कि बुद्धिजीवियों में सर्वोच्च श्रेणी के हैं. जब इन्हीं का यह हाल है तो अन्य के विषय में क्या धारणा बनाई जाए?

• अलका उपाध्याय

गदर के समय का भारत

एक यूरोपीय पत्रकार की दृष्टि से...

1857 में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जब भारत ने पहली अंगड़ाई ली तो देश में पत्रकारिता शैशवावस्था में थी. ऐसा तो कोई भी समाचारपत्र न था जो अपना विशेष संवाददाता भेज कर युद्ध के समाचार संकलित करा अपने पत्र में प्रकाशित करता. अपर्याप्त साधन तथा निरंकुश अंगरेजी सत्ता का भय भी इस के प्रमुख कारण रहे होंगे. उस समय लंदन के अखबार 'दि टाइम्स' ने इस दिशा में पहल की और विलियम हावर्ड रसेल नामक संवाददाता को गदर का आंखों देखा हाल भेजने के लिए भारत रवाना किया. यह संवाददाता क्रीमिया की लड़ाई में भी गया था और वहां से युद्ध समाचार भेजने के लिए बहुचर्चित तथा प्रशंसित रहा था. 'दि टाइम्स' के मैनेजर मौबेर मोरिस ने 11 नवंबर, 1857 को रसेल के नाम एक पत्र भेजा :

"मैं ने सुना है कि अपने नए कार्य के प्रति आप पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं. विशेषकर उस शानदार काम की तुलना में जो क्रीमिया के रणक्षेत्र से आप ने प्रदर्शित किया था, आप का वर्तमान कार्य नगण्य सा है. दूसरी ओर मैं यह भी अनुभव करता हूं कि तुम्हारे जाने के बाद मुझे ऐसा लगने लगा है कि हमारा काम भी आप के बिना सुचारु रूप से नहीं चल सकेगा. यद्यपि चीन के बारे में हमें कोई चिंता नहीं है क्योंकि विनग्रेब कुक वहां से बड़ी कुशलता के साथ समाचार भेज रहे हैं. फिर भी भारत अभी खाली है और तब तक खाली रहेगा जब तक आप इसे नहीं भरेंगे. कहिए, क्या कहना है? यदि हम आप की पत्नी अथवा अन्य किसी भी व्यक्ति को देश में 600 पौंड वार्षिक दें और भारत में जो भी खर्चा आप को करना पड़े उस की पूर्ति कर दें तो क्या आप वहां जाने के लिए तैयार हो जाएंगे?

"इस संबंध में पूर्वसूचना देने पर अथवा स्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस शर्त में संशोधन भी किया जा सकता है."

रसेल इस के लिए तैयार हो गया. सैनिक विद्रोह के समय हो रही घटनाओं की खबरें भेजने के अलावा उसे यह भी जिम्मेदारी दी गई कि वह अंगरेज लोगों, स्त्रियों और बच्चों पर भारत में जो अमानुषिक अत्याचार किए गए हैं, उन की जांच करे और इस विद्रोह के माध्यम से भारत में अंगरेजी राज का पतन निकट लाने वाली स्थितियों की भी जांच करे. यह काम रसेल ने बड़ी निष्पक्षता के साथ संपादित किया. यद्यपि तत्कालीन अंगरेजों से इतनी अधिक उदारता और मानवता की आशा नहीं की जा सकती थी.

रसेल दिसंबर, 1857 में भारत आया.

तब तक दिल्ली पर अंगरेजों का दोबारा कब्जा हो चुका था, लेकिन अवध, रुहेलखंड और मध्य भारत पूरी तरह से विद्रोही सेनानियों के कब्जे में थे. लखनऊ पर अंगरेजी आक्रमण के समय तथा अवध और रुहेलखंड की कितनी ही लड़ाइयों में वह मौजूद था. अंगरेजों के साथ रहते हुए भी उस ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया.

पैनी नजर

पहले कुछ दिन तो वह कलकत्ते में क्लबों और डिनर का आनंद लेता रहा. तत्कालीन कलकत्ता और वहां अंगरेजों के ठाटबाट का हाल तो उस ने भेजा ही, किंतु उस की पैनी नजर जेल पर भी पड़ी. थोड़े दिन पहले कलकत्ता में रेलगाड़ी चलना शुरू हुई थी. उस में बैठ कर वह बर्दवान गया और इंस्पेक्टर जनरल माडब के साथ जेल देखने गया, जहां विद्रोही बंदी थे. पछेट का राजा भी जेल में है, यह जान कर उसे जिज्ञासा हुई और सींखचों के बाहर से ही उस ने बंदी राजा को देखा. इस बारे में रसेल लिखता है, "अपनी नंगी तलवारें ले कर संतरी पहरा दे रहे थे और एक लंबी कोठरी में एक मोटा नौजवान चटाई पर पालथी मारे बैठा था. चारपांच हिंदुस्तानी नौकर छाती पर हाथ बांधे उस के पीछे खड़े थे. चांदी के थाल और मिट्टी के सकोरों में कढ़ी और चावल की जूठन से पता चलता था कि राजा ने अभीअभी दोपहर का भोजन लिया है. वह अप्रसन्न नहीं लग रहा था. उस ने तिरछी दृष्टि से कुछ क्षुब्ध हो कर हमारी ओर देखा. शायद वह जानना चाहता था कि हम वहां क्यों आए हैं. मुझे बताया गया कि इस के भाग्य का फैसला अभी होने वाला है. निश्चय ही उसे फांसी मिलेगी. इस के बाद मैं जेल के जनाने वार्ड में गया. वहां सभी तरह के कैदी बंद हैं. चोरी के अपराध में पकड़ी गई एक लड़की अन्य खूंखार वृद्धा औरतों के साथ बंद थी, जिन्हें बच्चों को मारने और जहर देने के अपराध में पकड़ा गया था. मैं ने श्री माडब से कहा कि सभी प्रकार के बंदियों को एक साथ रखना कोई सभ्य तरीका नहीं है. श्री माडब ने कहा कि जल्दी ही जेलों की हालत सुधारी जाएगी."

रानीगंज पर रेल की लाइन खत्म हो जाती थी. अतः उस के बाद रसेल ने डाक गाड़ियों से यात्रा की. यह घोड़ागाड़ियां डाक तो ले ही जाती थीं, खास सवारियों को भी ले जाने का कार्य कर लेती थीं. अगले शहर में घोड़े और नौकर बदल जाते थे, किंतु गाड़ी में सवार व्यक्ति को इस का पता भी नहीं चलता था. डाक गाड़ी अनवरत रूप से चलती रहती थी. उसी में सोने, खाने आदि की व्यवस्था थी. इसी प्रकार वह बनारस आया और घाट, मंदिर, चर्च और कालिज देखने गया.

10 फरवरी, 1858 को वह इलाहाबाद पहुंचा. इलाहाबाद से कानपुर की ओर कुछ दूर तक रेल की पटरी बिछाई जा रही थी. रेल यात्रा अभी केवल अंगरेजों के लिए ही सुरक्षित थी. इस में बैठ कर वह खागा तक पहुंचा जो इलाहाबाद से 65 मील दूर था. यहां उस ने विद्रोह की पहली झलक देखी. इस संबंध में उस ने जो समाचार भेजा, वह इस प्रकार है :

"स्टेशन से कुछ ही दूर बाहर जाने पर सुनसान गांव नजर आते हैं. आग से जले हुए बंगले तथा अन्य सरकारी

बहादुरशाह जफर : मुगल वंश का अंतिम बादशाह.

तांत्या टोपे, जिस की गदर में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी.

इमारतें खंडहर बनी हैं. गांवों को देख कर लगता है कि उन के निवासी भाग गए हैं.''

घोड़ा गाड़ी से यात्रा

खागा नामक स्थान पर रेल लाइन खत्म हो जाती थी. उस के बाद रसेल ने फिर घोड़ा गाड़ी द्वारा यात्रा शुरू की और फतहपुर होते हुए कानपुर पहुंचा. यहां भी अंगरेजों का अधिकार हो चुका था. लेकिन आगरे से भाग कर आने वाले अंगरेज परिवार प्रति दिन शोचनीय अवस्था में दिखाई देते थे. रसेल लिखता है, ''आगरा में वे लगभग घेराबंदी की स्थिति में रह कर आए हैं. उन के लाने के लिए काफी सुरक्षा सैनिकों को तैनात करना पड़ा है क्योंकि सड़क पर हर कहीं विद्रोहियों की सशक्त टुकड़ियां जान की ग्राहक बनी घूमती रहती हैं. गंगा के पार कालपी तो शत्रु का गढ़ है ही, जहां हमारा आधिपत्य स्थापित हो गया है वहां भी विद्रोही हमला करते हैं.'' कानपुर से वह लखनऊ की ओर गया जहां अंगरेज सेनापति सर कोलिन कैंपबैल लखनऊ पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था. इस के लिए अन्य स्थानों से अंगरेजी सेना ने लखनऊ पर बड़ी मजबूत मोर्चाबंदी की थी. इस की चर्चा करते हुए 23 फरवरी, 1858 को रसेल ने लिखा, 'शत्रु ने बहुत होशियारी से कमान संभाली हुई है. रूमी दरवाजे का चार्ज अब्दुल्ला खां को दिया है, जिस ने एक हजार बंदूकधारी और तीन हजार सिपाही और तोपों के साथ रूमी दरवाजे को पहाड़ सा मजबूत बना दिया है. उसी के साथ राजा रामबख्श, मामू खां और फैजाबाद के मौलवी की फौजें हैं. इस सब की पृष्ठभूमि में नाना साहब हैं. तांत्या टोपे और शाहजादा फिरोजशाह मध्य भारत में तूफान मचाए हुए हैं, जिस से अंगरेजी फौजें वहीं उलझी रहें. मैं समझता हूं कि हिंदुस्तानी लोगों को इतनी समझ हमारी सेना ने ही दी है.

''मक्का से आया हुआ यह शाहजादा 'दीन...दीन' की आवाज से बड़े जोश के साथ अचानक हमला करता है. इस से हमारी फौजें बहुत परेशान हैं. शत्रु बहुत मजबूत है. भारी संख्या में सैनिक उस के साथ हैं और लखनऊ पर हमारी फौजों का कोई वश नहीं चलता. कई महीने यहां लड़ते हुए गुजर चुके हैं. गवर्नर जनरल ने घोषणा की है कि सारा भारत हमारे पूर्ण नियंत्रण में है और हमारी फौजों के प्रभाव में है. मुझे इस पर बड़ी हंसी आती है. सचाई तो यह है कि केवल हमारी संगीनों की छाया में ही हमारा प्रभाव रह गया है. लाट साहब का डेरा भी, जहां मैं इस समय ठहरा हुआ हूं, सुरक्षित स्थान नहीं है.''

रसेल प्रायः उन छावनियों में रहना पसंद करता जो मार्च कर रही होतीं. ऐसे ही एक कूच की चर्चा करते हुए 28 फरवरी को उस ने लिखा, ''आधी रात बीती होगी कि खलासियों और ऊंटों का शोर शुरू हो गया. पहले ही बिगुल पर मेरे नौकर साइमन ने चाय बना कर दी और एक मोमबत्ती के उजाले में मेरे जूते और ओवरकोट मुझे दिया. आज बहुत भयंकर सर्दी है. तंबू से बाहर उषा की लालिमा झलक रही है. मेरी चारपाई और बिस्तर ऊंट पर लादे जा चुके हैं. लीजिए, कूच शुरू हो गया. इन खुले मैदानों में, जहां

कोई सड़क नहीं, रास्ता कैसे मिलता है यही अचंभा है." दूसरे दिन एक दुर्घटना हुई. वह लिखता है, "अचानक आंधी और तूफान आने से मेरा खच्चर भाग निकला और मुझे एक छोटी सी नदी में गिरा गया. पानी इतना गहरा था कि आज इन पंक्तियों को लिखने वाले का अंत ही हो गया होता. गिरातेगिराते दुलत्ती भी झाड़ गया, जिस से मेरी टांगों में चोट आ गई. और कोई अंगरेज होता तो इसे विद्रोह की संज्ञा दे कर फांसी पर लटका देता, जैसा कि हर एक पेड़ पर लटकती हिंदुस्तानियों की लाशें आम बात हो गई हैं. उस के बाद क्या हुआ, मुझे पता नहीं, शायद कुछ सैनिकों ने मुझे खींच कर किनारे पर डाला और वे पूछ रहे थे, 'बड़े साहब आप मर गया है क्या?' बाद में मेरा खच्चर नवाबगंज से पहले बने पुल पर हाथ आया. अभी मैं संभल भी न पाया था कि स्टीवार्ड मेरे पास आए और बोले, 'सावधान हो जाओ, हम पर हमला होने वाला है.'

"'सचमुच, किधर से?'

"'ओह! कुछ पता नहीं. अभीअभी घसियारे यह खबर लाए हैं. सुन नहीं रहे गोलियों की आवाज?'

"'फिर करता क्या है? अगर वे हमला कर दें तो कैसे पता चलेगा कि वे शत्रु हैं या मित्र, सभी काले होंगे न?'

"'जो भी सफेद कपड़े पहने दिखाई दे उसे गोली मार दो. अगर वह घुड़सवार हो, तलवार हाथ में हो, फिर तो निश्चय ही विद्रोही होगा.'

"मगर यह बात गलत निकली. कोई हमला नहीं हुआ. 'दुश्मन आया,' सुन कर हमारी फौज में खलबली मच जाती है, यह कोई अच्छी बात नहीं."

बरेली के मोर्चों पर

लखनऊ के मोर्चे को छोड़ कर वह शाहजहांपुर हो कर बरेली के मोर्चों पर आ गया किंतु तराई के इस इलाके में वह बीमार पड़ गया. अतः उसे शिमला भेज दिया गया. मार्ग में दिल्ली पड़ती थी. कुछ दिनों वह दिल्ली में रुका और लाल किले में निष्कासित अंतिम मुगल बादशाह और उस की बेगमों को देखने गया जिन को केवल दो आने रोज गुजारे के लिए दिए जाते थे और बहुत अपमानित किया जाता था.

दिल्ली की खबर

दिल्ली से एक खबर में उस ने लिखा, "लाल किले की एक अंधेरी और लंबी कोठरी में एक घटिया चारपाई पर बुड्ढा बादशाह बैठा था. उस की कमर झुकी हुई थी और वह मलमल के गंदे कपड़े पहने था. सिर पर एक पतली खाल की टोपी थी. वह कुछ बीमार था और बार-बार एक बर्तन में खांसखांस कर उल्टियां कर रहा था. उसी कोठरी के दूसरे कोने में एक नौजवान लेटा हुआ था जो हमारे कदमों की आवाज सुन खड़ा हो गया था और बड़े अदब से सलाम कर रहा था. उस के पीछे पगड़ी पहने हुए चार नौकर खड़े थे. वह इस भूतपूर्व बादशाह का शाहजादा जुम्मांबख्त था. दूसरे दरवाजों पर पड़ी चिकों के अंदर से कुछ आंख हमें घूर रही थीं. बताया गया कि ये बेगमें हैं. मैं ने इस भूतपूर्व बादशाह के चेहरे पर तैमूर का कोई शेष प्रभाव खोजने की असफल कोशिश की. अगर वह स्वर्णाभूषणों तथा हीरेजवाहरात से मंडित होता और साथ में हाथी और घोड़ों की पलटन या तोपों की आवाज होती तो शायद मुझे इस खोज में सफलता मिलती."

रसेल का जन्म 1820 में डबलिन में हुआ था. पहले उस ने वकालत का पेशा अपनाया. मगर बाद में 'दि टाइम्स' अखबार का संवाददाता बन गया. क्रीमिया के युद्ध में संवाददाता का कार्य करने के साथ-साथ उस ने अमरीका में भी गृह युद्ध के समय संवाददाता का काम किया. इन्हीं कामों के लिए उसे 1895 में सर की उपाधि मिली. 1907 में अर्थात भारत के स्वातंत्र्य संग्राम के 50 वर्ष बाद उस का देहावसान हुआ. ●
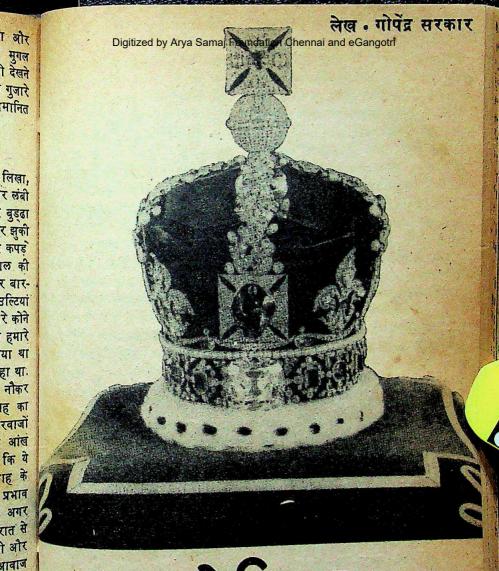
कोहिनूर

हीरों ने इतिहास बनाया और भूगोल बदला—इस संदर्भ में कोहिनूर की क्या भूमिका थी?

प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर, जो अब ब्रिटिश ताज की शोभा बढ़ा रहा है, अभी तक अपने निष्कर्षण के स्रोत को पक्की तौर पर जानने के सारे प्रयासों को व्यर्थ करता रहा है. यह विचार किया जाता है कि उसे [illegible] गोलकुंडा खान से निकाला गया था [illegible] गोदावरी क किनारे मछलीपट्टम के उत्तर [illegible] में स्थित है.

शायद यह विचार गलत न हो.

एक पौराणिक कहानी पर आधारित परंपरागत विश्वास के अनुसार यह दिव्य मणि 'समंतक' नामक हीरा है जिसे अपनी चमक सूर्य से प्राप्त हुई है और जो इस पृथ्वी पर सूर्यदेव द्वारा अपने भक्त सत्रजीत को उपहारस्वरूप आई.

इस हीरे का ऐतिहासिक रूप से प्राचीनतम जानकार स्वामी मालवा (उज्जैन) का राजा था. 1304 में उस ने इसे अलाउद्दीन खिलजी को दे दिया. इस के बाद वह क्रमशः विदेशी मूल के ऐसे राजवंशों के शासकों के हाथों में पड़ता गया जैसे गोरी, तुगलक, सैयद, लोदी और अंत में 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई के बाद मुगल. अत्यंत आश्चर्य की बात है कि इस बीच उसें भारत से बाहर कभी नहीं ले जाया गया, न ही उसे कोई विशेष नाम दिया गया.

5 मई, 1739 के दिन फारस का गड़रिया नादिरशाह देहली को लूटने के बाद लूट का मूल्यवान सामान ले कर चला. कहा जाता है कि देहली के तत्कालीन मुगल शासक मोहम्मदशाह ने सब घोड़े, ऊंट, हाथी, सिल्क, हाथीदांत और यहां तक कि दंतकथाओं में प्रसिद्ध 'मयूर राजगद्दी' भी, अपने खजाने की सारी मूल्यवान वस्तुओं के साथ, नादिरशाह को दे दी, ताकि वह उसे फिर सत्ता सौंप दे. लेकिन उस ने अत्यंत भव्य, बिना नाम के इस बहुत बड़े हीरे को अपनी पगड़ी में छिपाए रखा, लेकिन उस के हरम की एक स्त्री ने, जिस की उस के साथ पुरानी दुश्मनी थी, नादिरशाह को यह रहस्य बता दिया. नादिरशाह ने भी पराजित मुगल से यह महान हीरा प्राप्त करने के लिए बल प्रयोग नहीं किया. जब वह देहली छोड़ने वाला था तो उस ने अत्यंत चालाकी के साथ फारस और हिंदुस्तान के बीच भविष्य में निरंतर मैत्रीपूर्ण संबंधों के चिह्नस्वरूप मोहम्मदशाह से पगड़ियां बदलने का प्रस्ताव किया था.

इस प्रकार हीरे को कब्जे में कर लेने के पश्चात नादिरशाह ने उस की ओर अत्यंत लोभ से देखा और वह चिल्ला पड़ा, "कोहिनूर (प्रकाश का पर्वत)!" उस समय से इस हीरे का यही नाम पड़ गया. इस प्रकार यह कीमती हीरा अपने मूल निवास स्थान से अपनी पहली यात्रा पर बाहर निकला. वह 74 वर्षों तक बाहर रहा. इस दौरान वह दो शाही खजानों में रहा—एक तो फारस के और दूसरे, अफगानिस्तान के. इसे रखने वाले राजाओं में से एक की हत्या कर दी गई (1747 में नादिरशाह की), दो को अपदस्थ कर दिया गया, एक को जेल में अत्यधिक कष्ट दिए गए और एक को अंधा कर दिया गया. कोई आश्चर्य नहीं कि महारानी विक्टोरिया कुछ समय तक उसे स्वीकार करने में झिझकीं. 3 जुलाई, 1850 को ईस्ट इंडिया कंपनी के कोर्ट आफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन के द्वारा कोहिनूर उन्हें थोड़े से लोगों के सम्मुख औपचारिक रूप से भेंट किया गया.

घर को वापसी

कोहिनूर काबुल के भगोड़े राजा शाह शुजाअतमुल्क के साथ भारत वापस आया. जैसे ही वह कश्मीर पहुंचा, उसे जेल में बंद कर दिया गया. लेकिन उस की सब से प्रिय रानी वफा बेगम 1813 के आरंभ में हीरे के साथ उस के अगले मालिक महाराजा रणजीतसिंह महान (1780-1839) के राज्य में लाहौर भागने में सफल हो गई.

कहा जाता है कि बेगम ने यह धमकी दी कि यदि सिख सम्राट द्वारा उस हीरे को, जो उस के हाथों में झूल रहा था, उस से बलपूर्वक लेने का प्रयास किया गया तो वह हथौड़े से उस के टुकड़ेटुकड़े कर देगी. उस ने हीरा 1 जुलाई, 1813 को रणजीतसिंह को तभी दिया जब कि उन्होंने कशमीर में उस के पति और उस की सेना को मुक्त करा दिया.

महाराजा रणजीतसिंह ने हीरे को एक बाजूबंद में जड़वा लिया और अपने लाहौर महल में किए गए दरबार में शाह शुजाअतमुल्क को उपहारस्वरूप 1,25,000

सौंप दिए. वहां पर यह अद्वितीय हीरा सरदारों और जनता को दिखाया गया. अमृतसर में भी महाराजा रणजीतसिंह ने अनेक बार चमचमाते कोहिनूर को अपनी पगड़ी में लगा कर, सरदारों और सेवकों के साथ अपने हाथी पर शहर की प्रमुख गलियों में इधर से उधर परेड की.

भविष्य में अनिष्ट की चेतावनी से चिंतित हो कर रणजीतसिंह ने मरते समय यह इच्छा प्रकट की थी कि कोहिनूर को कृष्ण के चढ़ावे के रूप में पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर में भेज दिया जाना चाहिए. लेकिन गद्दी और खजाने पर उत्सुकतापूर्वक नजर जमाए शाही परिवार के शक्तिशाली सदस्यों में से प्रत्येक ने इस बात का प्रयत्न किया कि उन की इच्छा पर अमल न किया जाए.

रणजीतसिंह के सब से बड़े लड़के खड़कसिंह की मृत्यु दांवपेंच आरंभ होने का संकेत थी, जिस के परिणामस्वरूप खड़कसिंह के उत्तराधिकारी शेरसिंह और रणजीतसिंह के समय से कोहिनूर की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार शाही कोषाध्यक्ष बेलीराम की हत्या हो गई और अंत में रणजीतसिंह की सब से छोटी रानी चंदा (जिंदा) अपने नाबालिग लड़के दलीपसिंह को गद्दी पर बैठाने और कोहिनूर के साथसाथ शाही खजाने पर भी अधिकार करने में सफल हो गई.

जिस समय नाबालिग दलीप (4 सितंबर, 1838 को जन्म) गद्दी पर बैठा हुआ था, अंग्रेजों और सिखों के बीच एक के बाद एक दो युद्ध हुए, जिन में अंग्रेजों की विजय हुई. जब कि भैरोवाल (16 दिसंबर, 1846) की संधि से सिख राज ब्रिटिश संरक्षित राज्य बन गया और कोहिनूर महाराजा के ही पास बना रहा. लाहौर की दूसरी संधि (29 मार्च, 1849) से पंजाब को पूरी तरह ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया और यह घोषणा की गई, "कोहिनूर नामक हीरा लाहौर के महाराजा के द्वारा इंगलैंड की महारानी को समर्पित कर दिया जाएगा."

जब से कोहिनूर उस के अधिकार में आया और जब तक 6 अप्रैल, 1850 को इंगलैंड के लिए (भारत से बाहर उस की दूसरी यात्रा) उस की गुप्त यात्रा (जहां से वह फिर लौट कर नहीं आया?) आरंभ हुई, इस बीच भारत स्थित ब्रिटिश प्रशासन मंडल को बहुत अधिक परेशानी हुई. उस परेशानी का अंदाज भारत के तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर जनरल (लार्ड डलहौजी 1847-1856) द्वारा 16 मई, 1850 को लिखे गए एक निजी पत्र से लिए गए निम्नलिखित अंश से किया जा सकता है :

"कोहिनूर 6 अप्रैल को इंगलैंड की शाही सेना के संरक्षण (एच. एम. एस. मीडिया) में बंबई से चला. उस समय मैं आप को यह नहीं बता सका क्योंकि इस बात को पूरी तरह गुप्त रखा गया था, लेकिन मैं स्वयं उसे लाहौर से लाया था. भयवश मैं ने स्वयं उस का जिम्मा संभाल लिया, लेकिन मैं अपने सारे जीवन में उस समय से अधिक सुखी कभी नहीं हो पाया जितना कि उस समय हुआ, जब कि मैं ने उसे बंबई के खजाने में रख दिया. उसे मेरी कमर के चारों ओर बंधी एक पेटी में पहले एक बार सिला हुआ था और फिर दूसरी बार. पेटी का एक सिरा मेरे गले में पड़ी एक जंजीर से बंधा था. वह दिन में या रात में उस समय के अतिरिक्त कभी भी मुझ से अलग नहीं हुआ जब कि मैं डेरा [illegible]खां गया. उस समय मैं ने उसे [illegible] एक संदूक में ताले में बंद कर के [illegible] आ[illegible] रामसे (जो

अब उस के आंशिक रूप से जिम्मेदार हैं) के पास छोड़ दिया था और उन्हें यह पूरी हिदायत कर दी थी कि जब तक मैं वापस आऊं तब तक वह संदूक के ऊपर बैठे रहें. मेरा अहोभाग्य! उस से छुटकारा पा कर मुझे कितना आराम मिला.''

इस चिंता के पर्याप्त कारण भी थे. जब लार्ड डलहौजी इस हीरे को लाने के लिए लाहौर गए (दिसंबर 1849), उस से पूर्व लूट की एक घटना घट चुकी थी जिस से एक ब्रिटिश सैनिक संबद्ध था. उस ने लाहौर के तोशखाने (खजाने) को लगभग 20,000 रुपए की मूल्यवान वस्तुओं से वंचित कर दिया था. लुटेरों का वास्तविक उद्देश्य कोहिनूर को उड़ा ले जाना था. ब्रिटिश कोषाध्यक्ष डा. (बाद में सर) जान लोगिन के समय पर पहुंच जाने के कारण वह पूरा नहीं हो पाया.

प्रकृति

प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ हैं, परंतु उन से लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है.

—हरिऔध

डा. लोगिन उस समय अपदस्थ नाबालिग महाराजा के संरक्षक शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे थे. उन के असर से दलीप ने 1853 में इंगलैंड में ईसाई मत स्वीकार कर लिया और वह महारानी विक्टोरिया का अत्यंत कृपापात्र हो गया.

पूर्ण गोपनीयता

लूट के प्रयास के परिणामस्वरूप, ब्रिटिश राज के बड़ेबड़े लोग इस हीरे के बारे में पूर्ण गोपनीयता रखने लगे और ऐसा इतनी सफलता के साथ किया गया कि बंबई के [illegible] ब्रिटिश कार्यभारी अधिकारी [illegible] वाले का तनिक भी पता नहीं लगा कि वह इतनी सावधानी के साथ किस चीज की रक्षा कर रहे हैं. न ही इंगलैंड की शाही सेना (एच. एम. एस. मीडिया) के ब्रिटिश कप्तान को इस बात का ज्ञान हो पाया कि वह माल के रूप में जिस प्रेषण बक्स को ले जा रहे हैं उस के अंदर क्या है. यह माल कप्तान जेम्स रामसे और लेफ्टिनेंट कर्नल जे. मैकेसन द्वारा इंगलैंड के स्पिटहैड नामक बंदरगाह पर ले जाया जा रहा था.

2 जुलाई, 1850 को स्पिटहैड आने पर रामसे और मैकेसन ने कुशल तस्करों की भांति चुंगी अधिकारियों को झांसा दिया और अपना यह कीमती असबाब (कोहिनूर) बंदरगाह से सीधे इंडिया हाउस ले आए. अगले ही दिन, जब कि ईस्ट इंडिया कंपनी के चेयरमैन यह दुर्लभ हीरा महारानी को भेंट कर रहे थे, कोहिनूर के ये दोनों रक्षक 'आनरेबल कोर्ट आफ डायरेक्टर्स' को अपने काम की अधिकृत विज्ञप्ति लिखने में व्यस्त थे. उन्होंने लिखा है, ''जब हम ने स्पिटहैड में जहाज छोड़ा और एक छोटी सी नौका में बैठ गए, उस समय तेज हवा चल रही थी. अधिक सुरक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए और सीमा शुल्क कार्यालय में छानबीन तथा बंदी बनाए जाने से बचने के लिए हीरे को सिल्क के एक मजबूत रूमाल में लपेट दिया गया और हम में से एक (मैकेसन) की कमर के चारों ओर बांध दिया गया. जब हम इंडिया हाउस पहुंचे तब उसे फिर लोहे की छोटी सी मजबूत तिजोरी में स्थानांतरित कर दिया गया...''

यह उल्लेखनीय है कि कोहिनूर के ब्रिटिश ताज में जड़े जाने से पूर्व उस की चमक में वृद्धि के लिए उसे फिर से तराशा गया था. इस पर कंपनी के 80,000 रुपए व्यय हुए. तराशने का कार्य एम्सटर्डम के जौहरी हर वूरसांगेर द्वारा किया गया था और इस से हीरे का भार घट कर 106 कैरेट रह गया. 17वीं शताब्दी के मध्य के फ्रांसीसी यात्री तावेर्नियर के 279 कैरेट और लाहौर के

...व्यक्त बलाराम के 312 रत्ती (2/3 कैरेट से कुछ अधिक) के उल्लेख से यह बहुत कम है. 1851 में लंदन में उस को कुछ समय तक सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया गया. इस से पश्चिम में सनसनी फैल गई.

यह संभवतः कोई नहीं कह सकता कि अब खुली नीलामी से उसे कितनी अधिक कीमत पर बेचा जा सकता है. लेकिन यह एक रोचक कहानी है कि भूतकाल में इस हीरे का किस प्रकार मूल्यांकन किया गया.

जब पानीपत की लड़ाई के बाद शहजादा हुमायूं 1526 में हीरे के साथ आगरा आया तो वहां के जौहरियों ने उस की कीमत 'उस सारे क्षेत्र में नित्य प्रति ... आंकी. तावेर्नियर के अनुसार, जिसे बादशाह जहांगीर के द्वारा इस हीरे की सूक्ष्म परीक्षा करने की अनुमति प्रदान की गई थी, उस की कीमत 3,80,000 गिनी थी. अमृतसर के जौहरियों ने रणजीतसिंह से कहा था कि कोहिनूर की कीमत को आंका नहीं जा सकता. वफा बेगम का मूल्यांकन सर्वाधिक स्मरणीय है, ''यदि कोई बलिष्ठ व्यक्ति सब दिशाओं में से प्रत्येक—उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम—में चार पत्थर फेंके और पांचवां पत्थर ऊपर की ओर फेंके, और यदि उन के बीच के स्थान को सोने और हीरों से भर दिया जाए, तब भी उन की कीमत कोहिनूर के बराबर नहीं होगी.'' ●

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री विनोदकुमार, भरतपुर, हैं.

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● **नहीं लुट सकते...**

सुलतानगंज (भागलपुर). 4 मार्च की रात्रि में हावड़ादानापुर फास्ट पैसेंजर गाड़ी जब पूर्वी रेलवे के नाथनगर रेलवे स्टेशन से चली तो गाड़ी के एक डब्बे में छ:सात सशस्त्र डाकुओं के एक दल ने प्रवेश किया और रिवाल्वर दिखा कर यात्रियों की कलाई घड़ी, नगदी आदि लूटनी आरंभ कर दी.

उसी समय कुछ साहसी यात्रियों ने डाकुओं पर हमला शुरू कर दिया. कुछ देर तक डाकुओं और यात्रियों में जम कर युद्ध हुआ और अंत में डाकू दल हार कर अकबरनगर के आगे चलती गाड़ी से कूद गया. यात्रियों ने दो भगोड़े डाकुओं को माल के साथ पकड़ लिया और उन की देशी रिवाल्वर और एक कारतूस भी छीन ली.

—प्रदीप, पटना (प्रेषक : आमोदकुमार, जहानाबाद)

● **निहत्थे हैं तो क्या हुआ...**

टिहरी. पिछले दिनों श्री वीरेंद्रसिंह कंडारी नामक एक फौजी जवान ने अपने ग्राम गडोरा पट्टी धनपुर (गढ़वाल) में चार फुट छः इंच लंबे भयानक भालू को सिर्फ लाठी से मार डाला.

उक्त फौजी सिपाही अपने घर छुट्टी पर आया हुआ था और खेत में काम कर रहा था. उस के निकटवर्ती खेत में एक महिला काम कर रही थी. उसी क्षण उक्त खूंखार भालू ने झाड़ी से निकल कर उस पर हमला कर दिया. स्त्री चीख पड़ी. श्री कंडारी ने स्त्री के चीखने की आवाज सुनी और उन्होंने लाठी से भालू पर प्रहार किया. काफी देर तक फौजी जवान व भालू में संघर्ष हुआ. अंत में भालू धराशायी हो गया.

भालू ने इस से पूर्व कई अन्य महिलाओं पर झपटने का प्रयास किया था. स्थानीय व्यक्तियों ने प्रशासन से सिफारिश की है कि उक्त फौजी जवान को उस की वीरता के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : प्रकाश नाहटा, भाडनूं)

आए थे अस्पताल मगर...

● पंडारिया. गत दिनों ग्रामीणों पर खूंखार चीते के हमले को समीपस्थ ग्राम के एक ग्रामीण नवयुवक ने निहत्थे मुकाबला कर के नाकाम किया तथा चीते को मार डाला.

किसनगढ़ का निवासी श्री लेनूराम सतनामी अपनी चिकित्सा के लिए ग्राम खपरीकला के औषधालय में आया था. प्रातः पांच बजे एक खूंखार चीते ने ग्राम में प्रवेश कर के ग्रामीणों पर हमला कर दिया था, जिस से ग्रामीण भयभीत हो कर घरों में घुसने लगे [illegible] बीच लेनूराम खूंखार चीते से ग्रामीणों को बचाने के प्रयास में निहत्थे ही [illegible] टूट पड़ा तथा अनेक घाव लगने के बाद भी लगभग एक घंटा

युद्ध कर के उस ने चीते को गला दबा कर मार डाला.

—युगधर्म, रायपुर (प्रेषक : सतीशकुमार, भिलाई)

वीरांगना कहते हैं इस को

सपोटरा. हाल ही में क्षेत्र के प्रसिद्ध डाकू जयलाल मीणा का गिरोह निझौरा के निकट बरवासन की बनी में रात्रि को क़रीब 12 बजे दुर्गासिंह सूबेदार के फार्म पर पहुंचा.

सूबेदार के पालतू कुत्तों को इन की खबर लग गई और उन्होंने भौंकभौंक कर मालकिन को सचेत कर दिया. दुर्गासिंह की पत्नी अपने पति की राइफल उठा फार्म पर बने मकान पर जा चढ़ी. उस ने रात्रि में भी जयलाल को देखते ही जान लिया व राइफल तान कर कहा, "मरना हो तो इधर आना वरना इधर का मत करना."

जयलाल ने चुपचाप वहां से खिसकने में ही भला समझा और चला गया.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : विनोदकुमार, भरतपुर)

नहीं डूबने देंगे जब तक...

भोपाल. श्री देवकीनंदन उपाध्याय नामक 23 वर्षीय नवयुवक ने 28 मार्च संध्या को लगभग पांच बजे छोटे तालाब में खटलापुरा घाट के पास बंसला नामक महिला को पानी में डूबने से बचा लिया.

सूचना तथा प्रकाशन सचिवालय में कार्यरत श्री उपाध्याय जब अपनी ड्यूटी साइकिल पर वापस घर जा रहे थे तो खटलापुरा पर नहाते हुए कुछ बच्चों ने शोर मचाया कि एक महिला पानी में डूब रही है. तत्काल उपाध्याय ने अपनी साइकिल रोकी और पानी में कूद पड़े.

महिला तब तक काफी गहरे पानी में डूब चुकी थी. श्री उपाध्याय ने महिला के बाल पकड़े व उसे खींच कर किनारे पर लाए और तुरंत पुलिस स्टेशन पहुंच कर रिपोर्ट की. पुलिस ने आ कर महिला को टी. टी. नगर अस्पताल पहुंचाया जहां उसे उपचारार्थ भरती कर लिया गया.

—भास्कर, भोपाल (प्रेषक : प. म. जैन, भोपाल)

ताकें क्यों मुंह जब हाथ सलामत हैं

जैसलमेर. मार्च में जिले के सांगड़ ग्राम के नागरिकों ने ग्राम की मुख्य सड़क से मिलने वाले लगभग दो मील लंबे सड़क के हिस्से को श्रमदान से तैयार कर दिया.

इस हिस्से की हालत काफी दिनों से खस्ता थी जिस से जैसलमेर से बाड़मेर जाने वाली बसें गांव में न जा कर सीधी चली जाती थीं. इस से सांगड़वासियों को कष्ट का सामना करना पड़ रहा था. अब ग्रामवासियों ने इस हिस्से को बिना किसी सरकारी सहयोग के मुरडिया डाल कर बिलकुल तैयार कर दिया, जिस से यात्री बसों का पुन: सांगड़ आनाजाना शुरू कर दिया.

—राष्ट्रदूत, जयपुर (प्रेषक : अशोककुमार, बाड़मेर)

मेहनती कृषक

भोपाल. छतरपुर जिले के पनागर ग्राम के प्रगतिशील कृषक श्री भवानीदीन चौरासिया ने प्रति एकड़ 53 क्विंटल 65 किलोग्राम गेहूं उत्पादित कर के 1973-74 की अखिल भारतीय गेहूं फसल प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है.

श्री चौरासिया ने एक एकड़ क्षेत्र में 70 किलोग्राम 'मोती' गेहूं का बीज बोया और दिसंबर से मार्च तक छ: बार सिंचाई की थी.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : अरुणकुमार, आगरा) ●

हमारे पड़ोस में पंडित शिवशंकरजी का परिवार एक ऐसा परिवार है, जिस को महल्ले का बच्चाबच्चा जानता है. परिवार की सब से आकर्षक वस्तु अनिल और योगेश हैं. जब से अनिल की शादी की अनहोनी घटना इस परिवार में घटी है, तब से मोहल्ले वालों का इस ओर ध्यान और भी बढ़ गया है.

योगेश पंडितजी का बड़ा लड़का है. शरीर से स्वस्थ तथा चेहरे से सुंदर होने

अनिल के घर वाले पंडितजी को चकमा दे कर अपना

लेकिन पंडितजी भी पुराने खिलाड़ी थे, जो कम
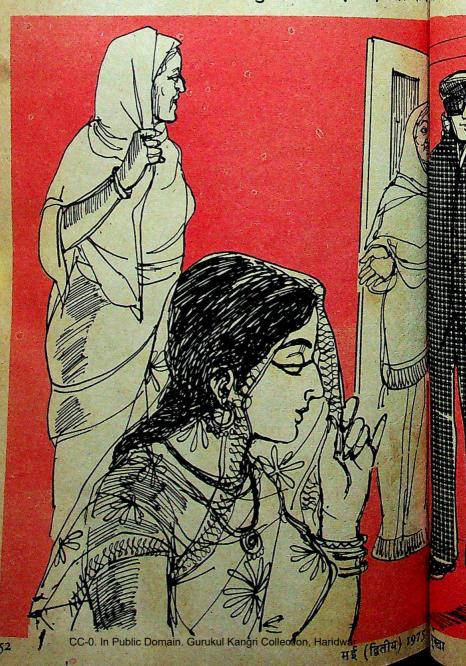
...परिवार में ...थ मेधावी भी है. उस ने हाई स्कूल,
...लों का इस ...की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण
...है. ...थीं. बी. ए. फाइनल में उस की फर्स्ट
...लड़का है ...त कुछ ही नंबरों से रुक गई थी.
...सुंदर होने बेचारा अनिल! यह पंडितजी का

...र अपना उल्लू सीधा करना चाहते थे,
...जो कम ...कमेबाज नहीं निकले...

कहानी • विष्णु विराट

दूसरे नंबर का लड़का है. योगेश देखने में जितना सुंदर है, उतना ही अनिल को कुरूप कहा जा सकता है. शरीर का रंग काला, बेडौल शक्ल, उस पर चेचक के धावे में एक आंख भी बुझ गई. चेहरे पर चांदतारे से खुदे हुए हैं. कुदरत ने उसे शक्ल के अनुरूप ही मेधा प्रदान की है. जैसेतैसे तीन साल में हाई स्कूल का दुर्ग तीसरी डिवीज़न के साथ फतह किया.

जिस समय योगेश बी. ए. प्रथम वर्ष में उत्तीर्ण हुआ था, उस समय जनाब सेकंड ईयर में रौनक बढ़ा रहे थे. घर में योगेश का बोलबाला था. लेकिन बेचारा अनिल...जैसे एक आंख के साथ उस का अस्तित्व ही बुझ गया था. योगेश की घर के बाहर भी चर्चा थी, लेकिन अनिल को कोई घास भी नहीं डालता था.

आगरा के कोई घी के थोक व्यापारी लाला जानकीवल्लभ, जो जाति से ब्राह्मण और वृत्ति से वणिक थे, एक दिन पंडितजी से मिलने आए. नीचे की बैठक में लगभग घंटे भर पंडितजी की उन से चर्चा चली,

लेकिन कुछ भी गंध बाहर वालों को नहीं मिल पा रही थी.

जब आगरा वाले घर से बिदा हो गए, तब पंडितजी ने योगेश की मां प्रभादेवी को बुला कर कहा, "अभी जो सज्जन आए थे, वह योगेश के लिए संबंध करने आए थे. इन की एकमात्र लड़की है, जो सुंदर और सुशील है. आठ हजार का दहेज है, सोनाचांदी अलग से. बोलो, क्या विचार है?"

प्रभादेवी ने ऊपर के कमरे से योगेश को आवाज दे कर बुलाया और कहा, "देख, योगेश, तेरे बाबू कह रहे हैं कि कोई आगरा वाले बामन हैं, उन का घी का व्यापार है, तेरी शादी अपनी लड़की से करना चाहते हैं. तेरे बाबूजी तो राजी हैं, लेकिन मेरा मन नहीं करता. मैं चाहती हूं कि कैसे भी पहले अनिल की शादी हो जाए. तेरी शादी तो कभी भी हो सकती है, लेकिन उस की शक्लसूरत से तो संबंधी ऐसे बिदकते हैं, जैसे बाजार में खुली छतरी देख कर गाय. आगरे वालों ने तेरे बाबू से कहा है कि वे इन के लड़के से अपनी लड़की की शादी करना चाहते हैं. हालांकि उन का इशारा तुम्हारी ही ओर है, लेकिन उन्होंने तुम्हारा नाम नहीं लिया. मैं चाहती हूं कि यदि हो सके तो अनिल को इन से भिड़ा दिया जाए. बोल, तेरा क्या विचार है?"

"तू ने तो मेरे मन की बात छीन ली, मां. तू कैसे भी यह रिश्ता तय कर ले, आगे की सब बात मुझ पर छोड़ दे," योगेश ने जोश के साथ कहा.

पंडितजी बड़ी सीधीसादी वृत्ति वाले आदमी हैं, उन्हें इन का चक्रव्यूह नहीं जंचा. उन्होंने इतना ही कहा, "देखो भई, मैं तो नहीं चाहता कि किसी भलेमानस के साथ आंखमिचौनी की जाए. अब तुम जानो, तुम्हारा काम. हां... वह आगरे वाले अपना पता दे गए हैं और कह गए हैं कि यदि चाहें तो लड़का-लड़की को देखने बुधवार को आ जाए."

बुधवार को प्रभादेवी योगेश के साथ आगरा जा पहुंचीं. योगेश का हुलिया देखने लायक था. उस ने सिर पर नेवी कैप लगा रखी थी, आंखों पर बड़ा सा हरे कांच का चश्मा लगा हुआ था, कोट के कालर उठे हुए थे और रहासहा चेहरा गुलूबंद से ढंका हुआ था. मां भी शाल वगैरा ओढ़े थीं.

जानकीवल्लभजी के घर में उन का हार्दिक स्वागत हुआ. कुछ देर तक जलपान चला. प्रभादेवी ने कन्या को देखने की इच्छा प्रकट की. जानकीवल्लभजी की धर्मपत्नी अलबेली इन्हें अन्य कमरे में ले गईं. वहीं बीच में एक तख्त बिछा हुआ था. एक लड़की अच्छे कपड़े पहने बैठी हुई गिलाफ काढ़ रही थी. उस ने प्रभादेवी को हाथ जोड़े. वह उस के पास गईं. योगेश ने जब उसे पहली बार देखा तो उस का मन भी अटक रहे बिजली के तार की तरह चकरमकर करने लगा, लेकिन उसे भान हुआ कि कहीं इस चकरमकर में फ्यूज ही न उड़ जाए और उस का बेचारा भाई अनिल चिरकौमार्य के व्रत में न उलझ कर रह जाए. उस ने बड़े ही नाटकीय ढंग से लड़की को कनखियों में तोला और जल्दी से बाहर निकल आया. थोड़ी देर में प्रभादवी भी बाहर आ गईं.

"ठीक है, हमें यह संबंध मंजूर है," प्रभादेवी ने अलबेली से समझदारी से कहा. तभी जानकीवल्लभजी ने कहा, "वह तो ठीक है, लेकिन आप अपने कुंवर साहब से भी तो पूछ लो, ऐसा न हो यह जनाब बाद में कह दें कि मेरी राय तो ली ही नहीं थी. तो हां...बेटे, मंजूर है न यह संबंध? भाई, आजकल जमाना पलट गया है, लड़का मांबाप की पालतू बकरी था, जहां चाहा बांध दिया. लेकिन अब दूसरी बात है. हां, तो भैया, आप भी अपनी मंजूरी दे जाओ तो हम निहाल हो जाएं?"

"हमारे घर की मर्यादा आजकल की तरह भ्रष्ट नहीं हुई है. जब हमारी

को बहू पसंद है, वह हम सब को भी पसंद है. नापसंदगी का सवाल ही नहीं उठता," योगेश ने चबाचबा कर सहमति प्रदान की.

घर लौटने पर मांबेटे में बहस हो गई. योगेश कह रहा था, "मैं ने तुम से पहले ही कहा था कि अनिल को ही साथ न ले जातीं. अब क्या होगा? यदि वे ऐन मौके पर उसे पहचान गए तो सारी इज्जत धूल में मिल जाएगी. इस पर मां ने उसे समझाया, "तू समझता ही नहीं है बात को. अरे, यदि पहली भेंट में ही अनिल को आगे कर देते तो वे बिदक जाते. तू ने देखा नहीं लड़की को? कितनी सुंदर है! वह ऐसे पड्डे के साथ बांधने वाली है क्या? क्या वे इस कठपुतले को अपना दामाद स्वीकार करते?"

"खैर, देखा जाएगा—होगा तो यह अनुचित, किंतु अनिल का उद्धार तो ऐसे ही होना है. दूसरा रास्ता भी तो नहीं है." योगेश ने कहा.

और शादी पक्की हो गई.

पक्की क्या हो गई, शादी का मुहूर्त भी निकल आया. उन दिनों योगेश की बी. ए. फाइनल की परीक्षा होने वाली थी. अनिल अभी इंटर में ही हाथपांव उछाल रहे थे. एक समय था जब अनिल और योगेश साथसाथ चौथी कक्षा में पढ़ते थे. योगेश दो साल बड़ा था, लेकिन पहला लड़का होने के कारण देर से स्कूल में दाखिल हुआ. अनिल ने हाथपैर संभाले ही थे कि उसे स्कूल में झोंक दिया. म्यूनिसिपलिटी के प्राइमरी स्कूल में दो रुपए की भेंट की तो कक्षा उत्तीर्ण हुए. फिर सारी कसर हाई स्कूल ने निकाल ली.

अब सवाल था शादी का. अनिल को दूल्हा बनाएंगे, यह तय था. सावधानी के लिए योगेश ने ससुरजी से साक्षात्कार में अपना नाम अनिल ही बतलाया था. कार्ड छप गए—'अनिल और अनुराधा का शुभ विवाह.' सभी संबंधी चमत्कृत थे कि योगेश बैठा रह गया और अनिल हाथ मार गया.

बरात के छंटे हुए 25 आदमी आगरा के लिए लक्जरी बस में रवाना हुए. आगरा में बस से उतरते ही उन का भव्य स्वागत हुआ. बस में से सब से पहले पंडित शिवशंकरजी उतरे, उन के पीछे ही अनिल निकला. अनिल की आंखों पर हरे रंग का चश्मा चढ़ा हुआ था. कपड़े भी अच्छे थे, लेकिन किसी ने उस की अधिक फिक्र नहीं की. काफी आदमी जब उतर चुके तब योगेश भी सावधानी से उतरा.वह भी हरे रंग का चश्मा पहने था. सब से आगे बढ़ कर लाला जानकीवल्लभ ने उन की अगवानी की, "आइए, आइए, कुंवर साहब, इधर आइए, इधर आइए."

योगेश कुछ घबड़ा सा गया. वह समझता था कि उसे कोई पहचानेगा नहीं, लेकिन यहां तो गड़बड़ हो गई. खैर,

एक पल को भी...

क्या इसी दिन के लिए हम ने दुआ मांगी थी,
कि खिजां से रहे महफूज गुलिस्तानें वतन.
क्या इसी दिन के लिए बांध के निकले थे कफन,
मौत को जान के हम खेल जवानाने वतन.
उन के दिल पर तुम्हें मालूम भी है क्या गुजरे,
एक पल को भी जो लौट आएं शहीदाने वतन.

—जगन्नाथ 'आज़ाद'

लड़के वालों ने समझा कि बड़ा भाई होने के कारण ही आदर हो रहा है.

रात को वरयात्रा निकलनी थी. सांझ से ही एक बंद कमरे में योगेश, अनिल और कुछ संबंधी सजासजी करकरा रहे थे. अनिल को चश्मा पहनाया गया, सेहरे की इतनी झालरें चेहरे पर डाली गईं कि मुखारविंद को किसी की झलक ही न मिले.

ठीक समय पर दूल्हा राजा कमरे से निकले. जैसेतैसे घोड़े पर चढ़ा कर उन्हें धर्मशाला से निकाला गया और बरात लड़की वालों के घर की तरफ चल दी.

सवारी जानकीवल्लभजी के घर पहुंची ही थी कि अचानक बिजली चली गई. गनीमत थी कि दोतीन गैस की लालटेन थीं. फिर भी हजारहजार पावर के बल्बों के बुझने पर सब कुछ फीका-फीका लग रहा था.

योगेश और प्रभादेवी इसे अपने हित में मानते थे कि बिजली रात भर न आए और आज की भांवरों का काम इसी अंधेरे में पूर्ण हो जाए.

जहां एक ओर योगेश और प्रभादेवी खुश थे, वहां दूसरी ओर अनिल का बुरा हाल था. एक ओर तो वैसे ही वह एक आंख का धनी था, उस पर हरे कांच का चश्मा, ऊपर से गिच्च मालाओं की झालर. दिखलाई दे तो कहां से? अब संयोग देखिए कि लाइट गुल हो गई. जो कुछ परछाइयां सी दीखती थीं, वे भी अंतर्धान हो गईं.

मामा के लड़के अनिरुद्ध ने दूल्हे राजा से कहा, "उतरिए, जनाब. आ गई आप की ससुराल. घोड़े की पीठ से अपना बोझ उतारिए और सामने वधू के समीप वाली कुरसी पर पधारिए."

देर का काम शैतान का, अनिलजी जल्दी में घोड़े से कूदे तो अनिरुद्ध के ऊपर आ पड़े. जैसेतैसे अनिरुद्ध ने उन्हें संभाला, "अरेअरे...यह क्या करते हो? जूते की ठोकर से मेरी नाक ही तोड़ डाली, जाइए, कुरसी पर शोभा पाइए."

अब अनिल की हालत तो बतलाई ही जा चुकी है. वह सुन तो सब रहे थे, लेकिन दिख तो कुछ भी नहीं रहा था. लाइट गुल होने से पहले उन्होंने हजार पावर के बल्ब में पासपास दो कुरसियां देखी थीं. उसी का बचाखुचा अनुमान ले कर सूत बांधते हुए ऐन दुलहन की कुरसी के आगे जा पहुंचे और यदि ठीक समय पर सद्बुद्धि वाले योगेश उन्हें पकड़ कर साथ वाली कुरसी पर न बैठाते तो इस में क्या संदेह था कि वे वधू से भरी कुरसी पर आरूढ़ हो जाते.

बहुत देर तक बिजली नहीं आई. सारा कार्य निर्विघ्न चलता रहा. फेरे पड़ने लगे. तभी योगेश और प्रभावती ने देखा कि वधू लंगड़ा कर चल रही है. खैर, होगी थोड़ी लंगड़ी तो होने दो, चलती तो है. मंडप में एक ही गैस की लालटेन थी, सो भी कुछ दूरी पर रखी हुई भकभक कर के वरवधू का स्तुतिगान कर रही थी.

येनकेन सारा कार्य निर्विघ्न हो गया. बरात वापस धर्मशाला जाने की तैयारी में थी, तभी वधू का भाई कैमरामैन को

लिए हुए आया, "जरा रुकिए आप ..." उस ने योगेश और अन्य बरा- तियों को रोका. वरवधू को समीप खड़ा कर के उस के आसपास उस ने सगे- संबंधियों को खड़ा किया. योगेश को भय था कि कहीं उसे कोई पहचान न ले, लेकिन लाइट के न होने से यह खतरा नहीं आ रहा था.

सब सगेसंबंधी वरवधू के आसपास खड़े हो गए. कैमरामैन ने क्लिक पुश किया, भक्क से उजाला हुआ और काम खत्म. यह घड़ी परीक्षा की घड़ी थी. क्योंकि उस समय वधू के भाई ने अनिल का सेहरा ऊपर उठा दिया था, वधू की लाज भी खोल दी गई थी. अब तो प्रकाश होने पर कोई भी उन्हें पहचान सकता था. लेकिन जिस समय फोटो खिंचा, उस समय वरवधू के सामने केवल कैमरामैन था, बकाया सगेसंबंधी तो वरवधू के आस- पास साइड में खड़े थे, इसी से रहस्यो- द्घाटन नहीं होने पाया. योगेश आदि जैसे ही वर को ले कर मंडप से बाहर निकले कि लाइट आ गई, लेकिन अब किसी प्रकार खटका नहीं था. सभी लोग राजीखुशी धर्मशाला पहुंच गए.

दूसरे दिन दोपहर को वधूगृह से बुलावा आया. अब सेहरे की जरूरत नहीं थी, सूटबूट पहन कर टोप लगा कर, चश्मा पहन कर दूल्हे राजा आगेआगे चले. द्वार पर लाला जानकीवल्लभजी खड़े थे. उन्हें देख कर एक बार फिर योगेश की सिट्टीपिट्टी गुम सी हुई, लेकिन न जाने क्यों अचानक जानकीवल्लभजी द्वार से हट गए.

मंडप में जा कर जैसे ही अनिल वधू के समीप वाले पट्टे पर खड़ा हुआ, वधू के बड़े भाई ने कहा, "आप नहीं, श्रीमान- जी, दूल्हे राजा को भेजिए."

अब तो योगेश की हवा खराब. तभी अनिल ने कुछ साहस दिखाते हुए कहा, "जनाब, मैं ही तो दूल्हा हूं."

"अबे हट बे खुत्तड़! यह क्या मजाक है?" उस ने आगे बढ़ कर अनिल का चश्मा उतार लिया. "अरे, यह कंची कोतवाल कौन है! कहां हो भई, योगेश. इधर आओ." उस ने योगेश को इधर- उधर तलाश किया. आखिर योगेश को सामने प्रकट होना पड़ा. उस ने बड़े ही दुर्बल स्वर में कहा, "क्या है, भाई साहब? आप जरा तमीज से पेश आइए. और जबान संभाल कर बोलना सीखिए. आप के सामने जो सज्जन खड़े हैं, यह ही वर हैं, और इन्हीं का नाम अनिल है."

यह क्या कौतूहल हो रहा है, यह जानने के लिए वधू ने अपना घूंघट हटा दिया.

"अरे, यह क्या? यह लड़की कौन है? यह तो वह लड़की नहीं, जो लड़की उस दिन दिखलाई गई थी. यह तो महा- गंदी लड़की है. हम ने उस दिन जो लड़की देखी थी, वह तो यह नहीं है. क्यों, मां?" योगेश ने प्रभादेवी को पास बुलाया.

तभी जानकीवल्लभजी सामने आए. उन्होंने योगेश और प्रभादेवी को साथ चलने को कहा. वे दोनों को ले कर ऊपर के कमरे में गए. वहां जा कर उन्होंने उन्हें समझाया, "देखो भाई, इस में गलती की बात नहीं है, हम ने जानबूझ कर लड़की बदली है. यह जो लड़की है, हमारे मामा के लड़के की लड़की है. तीन दिन पहले हमें आप के नेक इरादों का पता अनिरुद्ध से मिल गया था, जो टीका ले कर यहां आया था. इस ने लड़की को देख कर कहा, 'अरे वाह, कहां हमारे अनिलकुमार का चौखटा और कहां बेचारी यह!' आखिर हमें कुछ गंध आ गई और फिर अनिरुद्ध से सब जान लिया. वह बेचारा कुछ भी न समझ सका. जैसे तुम्हारे अनिल को कोई लड़की नहीं मिल रही थी, वैसे ही हमारी मंगो को कोई लड़का नहीं मिल रहा था. अब चाहो तो मेरी लड़की का आप के साथ संबंध हो सकता है."

योगेश और प्रभादेवी समझ गए कि उन की चालाकी चली नहीं. वे अनिल की शादी करा के सीधे घर की ओर भागे. ●

कहानी • मुकुल प्रभात केदार

अविनाश तीन दिन के टूर के बाद रात में देर से घर लौटा तो सनेह को ड्राइंग रूम में दीवान पर उदास और चिंतित बैठे देख कुछ घबरा सा गया. सनेह पति के बाहर से लौटने पर सदा प्रफुल्लित चेहरे के साथ द्वार पर पहुंच कर स्वागत करती थी. अस्वस्थ होने पर भी पति के आने पर एक बार वह अवश्य मुसकराती. परंतु आज वह अविनाश के पुकारने पर भी क्लांत हुई दीवान पर ही बैठी रही.

अविनाश का घबराना स्वाभाविक था. कुरसी खींच कर पत्नी के पास बैठते हुए कहा, "क्यों, सब कुशल तो हैं? कहीं से कोई अप्रिय समाचार तो नहीं आया?"

सनेह की माता के बीमार होने का पत्र कुछ ही दिन पूर्व मिला था. अविनाश को आशंका हुई, कहीं उन की दशा अधिक खराब न हो गई हो.

सनेह ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया. वस्तुत: वह भीतर ही भीतर भयभीत सी हुई अपने को बोलने में असमर्थ पा रही थी. अविनाश कुछ व्यग्र सा हो उठा और बोला, "सनेह, बताओ, बात क्या है?"

सनेह ने पीड़ा सी अनुभव करते हुए कहा, "बहुत बुरा समाचार है."

"आखिर कुछ बताओगी भी?" अविनाश अब अधीर सा हो चुका था.

सनेह ने कमरे में चारों तरफ दृष्टि घुमाई. जब किसी और के वहां न होने का उसे निश्चय हो गया तो पति के बहुत निकट हो कर भर्राई हुई आवाज में बोली, "किसी से शारीरिक संबंध हो जाने के परिणामस्वरूप रीता को दो मास से ऊपर का गर्भ ठहरा हुआ है. आज उस ने स्वयं ही घबरा कर रोतेरोते मुझ से बात की है."

"क्या कह रही हो, सनेह? ऐसा कैसे हो सकता है? रीता कभी ऐसा नहीं कर सकती. उस जैसी भोली और लज्जाशील लड़की से ऐसा कभी हो ही नहीं सकता." परंतु मन ही मन अविनाश आशंकित हो कर व्याकुलता अनुभव करने लगा था.
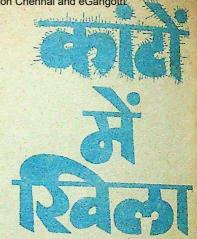
"नहीं, यह बात ठीक ही है. मैं ने अपनी तसल्ली कर ली है." सनेह के चेहरे पर भी चिंता की रेखाएं गहरी हो गई थीं.

सदा प्रसन्न और सहज रहने वाला अविनाश उबल पड़ा, "कहां है दुष्ट रीता? मैं अभी उस का गला घोंट कर उसे सदा के लिए समाप्त किए देता हूं. उस ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा." वह दूसरे कमरे में आ कर रीता को ढूंढ़ने लगा.

सनेह भी भागीभागी पीछे गई और अविनाश का हाथ पकड़ कर वापस ड्राइंग रूम में ले गई और बोली, "उस में उसी का दोष नहीं है. मैं ने सारी घटना सुन ली है. वह अपनी सहेली अर्चना के यहां प्राय: जाया करती है. अर्चना का उस से दो वर्ष बड़ा भाई है, जो बी. ए. में पढ़ रहा है. रीता उसे अच्छी तरह जानती है और कई बार वह रीता को सायंकाल देर हो जाने पर यहां घर तक छोड़ने भी आया है. लगता है, दोनों में घनिष्ठता बढ़ती रही और एकदूसरे को चाहने भी

लगे. एक दिन रीता अपनी सहेली के घर पहुंची तो सारा परिवार कहीं 'एट होम' में सम्मिलित होने के लिए गया हुआ था. केवल विनोद ही घर पर था. रीता ने चाहा घर लौट आए, परंतु विनोद ने उसे बातों में लगा कर रोक लिया. फिर दोनों जैसे प्यार की उमड़ती धारा में बह गए. फिर भी, रीता का कहना है, उस ने अंत तक प्रतिरोध किया. परंतु विनोद ने अपनी सौगंध देते हुए आत्महत्या कर लेने की धमकी दी और रीता भी विवेक खो बैठी. बाद में वह अत्यंत घबराई भी और मन ही मन पश्चात्ताप करती रही. परंतु शर्म के मारे उस ने किसी से बात नहीं की और न फिर उस की सहेली के घर ही गई. अब अपनी स्थिति की विवशता के कारण उसे सब कुछ मुझे बताना पड़ा..."

अविनाश श्वास रोके पत्नी का लंबा कथन सुन रहा था. एकाएक उस के क्रोध का निशाना विनोद की तरफ हो गया. उस की सांस तेज चलने लगी थी और नेत्र लाल हो रहे थे. पूरी चिल्लाहट के साथ बोला, "उस बदमाश का पता मुझे बताओ. मैं अभी उसे समाप्त करता हूं." कह कर वह तेजी से सोने के कमरे में गया और अलमारी में पड़ा अपना

क्षण भर की भावुकता के बाद जब रीता होश में आई तो उस की आंखों के आगे अंधेरा छा गया... मन में एक ही सवाल बारबार चोट कर रहा था—क्या विनोद उसे अपना लेगा?
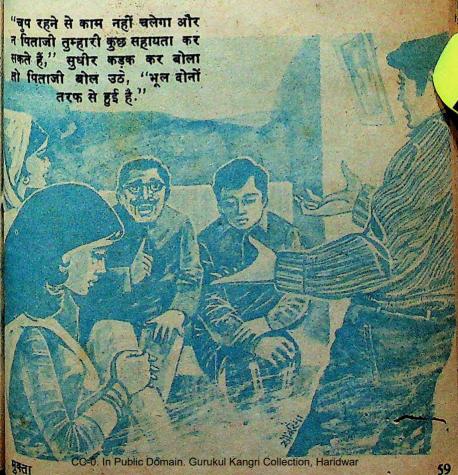
"चुप रहने से काम नहीं चलेगा और न पिताजी तुम्हारी कुछ सहायता कर सकते हैं," सुधीर कड़क कर बोला तो पिताजी बोल उठे, "भूल दोनों तरफ से हुई है."

रिवाल्वर निकाल लाया.

सनेह ने अनुभव किया, एक बड़ी दुर्घटना होने जा रही है. पति का रिवाल्वर वाला हाथ पकड़ कर बोली, "आप एकदम अपना संतुलन क्यों खो बैठे हैं? आप यह क्यों भूल जाते हैं कि जवानी दीवानी होती है और अपरिपक्व अवस्था में लड़केलड़कियों से ऐसी भूलें हो जाती हैं. आप ने स्वयं रीता को स्वतंत्रतापूर्वक घूमने और अपने कालिज के लड़कों के साथ इकट्ठे सिनेमा देखने तक की अनुमति दे रखी है."

"इस का यह अर्थ तो नहीं कि वह औचित्य की सीमा का उल्लंघन करने लगे और हमारी मानमर्यादा पर बट्टा लगाए," अविनाश बराबर लालपीला हो रहा था.

सनेह विचलित होने पर भी चेहरे पर शांत भाव ला कर बोली, "लगता है दोनों एकदूसरे को चाहते हैं, और एकांत में मिलने पर सुधबुध भूल गए."

"परंतु उन्हें क्या विदित नहीं कि वे अविवाहित हैं और इस प्रकार का यौन संबंध भयंकर परिणाम पैदा कर सकता है?" अविनाश के माथे पर पड़ी सिलवटों से पता चलता था कि वह मन ही मन विष घोल रहा है.

नारी में पुरुष की अपेक्षा प्रायः अधिक धैर्य और गंभीरता होती है. सनेह विशेष रूप से पति के स्वभाव को समझ कर वातावरण अनुकूल बनाने में पारंगत थी. बहुत ही सहज हो कर बोली, "आज चारों तरफ जिस प्रकार की सामान्य परिस्थितियां हैं, उन में जो भी हो जाए थोड़ा है. एक तरफ प्रेम और प्रणय के गीत सारासारा दिन आकाशवाणी पर सुनाई देते हैं, दूसरी ओर यही कुछ चित्रपटों पर सजीव रूप में प्रदर्शित किया जाता है. सिने अभिनेत्रियों में तो अधिक से अधिक नग्नता और सेक्स प्रदर्शन की मानो होड़ सी लगी रहती है. इस वातावरण में युवकयुवतियों में यौन भावनाओं के जागरित और प्रदीप्त होने में आश्चर्य की क्या बात है?" यह कह कर सनेह पति के मुख की तरफ देखने लगी.

सनेह की बातों में वजन था. अविनाश काफी नरम पड़ गया और पत्नी के निकट ही सोफे पर बैठ चिंतन में डूब गया. वह स्वयं स्वतंत्र विचारों और किसी हद तक रंगीले स्वभाव का था. अपने यौवन काल की मस्ती और उच्छृंखलता भरी अनेक घटनाएं उस के मनस्तल पर उभर आईं. उन घटनाओं से प्रायः उस की पत्नी भी अनभिज्ञ थी. रीता और विनोद का अपराध उस की दृष्टि में एकाएक कम हो गया. उसे अपनी मुट्ठी ढीली होती अनुभव हुई. रिवाल्वर पास पड़ी तिपाई पर रखते हुए बोला, "परंतु समस्या की विकटता तो बनी ही है. यह बताओ, अब होगा क्या?" अविनाश प्रश्न भरी दृष्टि से पत्नी की ओर देखने लगा.

"होना क्या है? आप विनोद के पिता से मिल कर सब स्थिति बता दें और रीता के रिश्ते की बात चला कर शीघ्र विवाह के लिए जोर डालें. प्रसव काल निकट आने पर विनोद और रीता दोनों किसी दूसरे स्थान पर कुछ महीनों के लिए चले जाएंगे और बच्चा होने तक वहीं रहेंगे." सनेह अनुमान लगा रही थी, जा कर कहने मात्र से ही रीता का रिश्ता स्वीकार हो कर शीघ्र विवाह हो जाना निश्चित है. उस ने जल्दी से पति को चाय पिलाई और उन्हें विनोद के घर भेज दिया.

पति को भेजने के बाद सनेह शांत हो कर जब बैठी, उस के मन को संशय डसने लगा. वह अपने से प्रश्न करने लगी, 'यदि उधर से इनकार हो जाए तब क्या होगा?' वह समय से परिचित थी और सुनती एवं देखती आ रही थी कि आजकल के युवक भावुकता और वासना के वशीभूत हो कर इस प्रकार पग उठा लेने के बाद अपना उत्तरदायित्व निभाने से साफ मुंह मोड़ लेते हैं. साथ ही ऐसी

रीता और विनोद के बीच

अगर सुधीर न आता तो रीता की जिंदगी किस किनारे लगती?

टनाएं हो जाने पर परिवार के बड़ेबूढ़ों को मना पाना तो और भी कठिन होता है. कई बरबाद हुई लड़कियों के मामले उसे याद हो आए और वह व्यग्रतापूर्वक पति की प्रतीक्षा करने लगी.

अविनाश घंटे भर में ही लौट आया. उस के मुरझाए चेहरे को निहार सनेह समझ गई और एक क्षण के लिए उसे कंपकंपी सी हुई. अविनाश ने बताया, "विनोद के पिता रिश्ते की बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं हुए. उन का कहना है कि विनोद ने ऐसा नहीं किया. यह असंभव है."

सनेह ने धीरज बनाए रखा और कहा, "आप एक बार रीता को ले कर विनोद से मिलें. वह इतना निष्ठुर नहीं हो सकता कि अपने कारण रीता की दशा करुण होती देख कर भी उसे अपनाने से इनकार कर दे."

अविनाश को वह सब व्यर्थ लगा और उस ने दोबारा जाना स्वीकार नहीं किया. सनेह फिर भी हार मानने के लिए तैयार नहीं हुई और उस ने अगले दिन स्वयं जाने का निश्चय किया.

रीता को कई दिनों से नींद नहीं आ रही थी. अगली सुबह जब मां ने उस से कहा कि सायंकाल विनोद से मिलने जाना है, तो वह बहुत विचलित सी हो गई. दिन भर वह अनेक प्रकार के विचारों से घिरी रही. विनोद उसे अच्छा लगा था, तभी वह उस से इतनी खुल गई थी. परंतु वह इतनी दूर तक जाने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी. इसी से बाद में उसे पश्चात्ताप भी हुआ. कई बार वह सोचती, विनोद का प्यार सच्चा है और स्थिति का पता लगने पर वह उसे अपनाने और तुरंत विवाह करने के लिए मान जाएगा. उस का हृदय कहता, वह विश्वासघात नहीं करेगा. कुछ आश्वस्त सी हो कर वह आंखें मूंद लेती.

परंतु कुछ क्षणों के बाद ही उसे विचार आता, यदि अपने पिता के दबाव में आ कर या अन्य किसी कारण से विनोद ने इनकार कर दिया, तो वह जीवित ही मर जाएगी. तब उसे बड़ी ग्लानि होने लगती और वह संतप्त सी हो कर छटपटा उठती.

दिन भर उस ने कुछ नहीं खाया और अपने कमरे में ही पड़ी रही. मां ने भी उसे तंग करना उचित नहीं समझा. शाम को जब सनेह ने पुत्री को चलने के लिए कहा तो इतना संकेत दे दिया कि यदि अवसर मिले तो विनोद से स्वयं बात करने का प्रयत्न करे. सनेह को विश्वास था कि रीता को इस स्थिति में अपने सामने देख कर विनोद का हृदय अवश्य पिघल जाएगा.

सनेह जब पुत्री के साथ विनोद के घर पहुंची तो काफी अंधेरा हो चुका था. वह जानबूझ कर रात के समय वहां पहुंची थी. विनोद और उस के पिता घर पर ही थे. मांबेटी को आया देख कर दोनों कुछ घबरा से गए.

सनेह ने विनोद के पिता से बात शुरू की थी कि उन का बड़ा लड़का सुबोध भीतर घुसा. अपने पिता और भाई के पास एक युवती और अधेड़ आयु की महिला को देख उसे कुछ आश्चर्य हुआ. उस की तीव्र बुद्धि ने कहा, अवश्य कोई गंभीर मामला है. युवती के करुण और विषादभरे मुखमंडल की ओर ध्यान जाने से उस की जिज्ञासा में और भी वृद्धि हुई. वह वहीं बैठ गया और पिता से पूछने लगा, "बात क्या है?"

सुबोध ने पिछले वर्ष ही वकालत पास की थी, परंतु प्रैक्टिस आरंभ कर देने पर भी उस का अधिक समय सार्वजनिक कार्यों में व्यतीत होता था. पिछले छः महीनों में ही वह नगर की अनेक लोकोपकारी और समाजसेवी संस्थाओं में

सक्रिय रूप से भाग लेने लगा था और इतने अल्पकाल में ही बहुत से लोगों का प्रिय और कृपापात्र बन गया था. परंतु कमाई की ओर अधिक ध्यान न देने के कारण पिता उसे निकम्मा और आवारा समझने लगे थे. सुबोध ने भी घर में अधिक रुचि रखनी छोड़ दी. वह दो समय खाने के लिए अवश्य पहुंचता और रात में अपने कमरे में सो जाता.

जब पिता कुछ भी नहीं बोले तो सुबोध ने महिला से कहा, "आप रात के समय इस युवती को ले कर यहां किस काम से आई हैं? कोई कठिनाई हो तो बताएं, शायद मैं कुछ सहायता कर सकूं."

पिता की घबराहट बढ़ गई. सोचने लगे, यदि विनोद की बात खुल गई तो सुबोध उसे आड़े हाथों लेगा और स्थिति संभालना कठिन हो जाएगा. वह कुछ नरम से हो कर बोले, "यह नवयुवती तृप्ता की सहेली है. दोनों साथ-साथ पढ़ती हैं. हमारे घर भी यह कई बार आ चुकी है. इस की माता चाहती हैं कि विनोद के लिए इस का रिश्ता स्वीकार कर लिया जाए."

सुबोध ने स्पष्ट भांप लिया कि उस के पिता कोई बात छिपा रहे हैं. युवती के नेत्रों में उमड़े आंसू भी मौन रूप से कुछ विशेष कह रहे थे. सुबोध युवती के निकट जा कर बोला, "जो बात है, निर्भय हो कर कहो. यहां मेरे रहते तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नहीं हो सकता."

रीता एकदम हाथों में मुंह छिपा कर सिसकियां भरने लगी. सुबोध को विश्वास हो गया, मामला सचमुच ही बहुत गंभीर है और उस के परिवार से संबंध रखता है.

सनेह की आंखों में से अश्रु ढलने लगे थे. उन्हें पोंछते हुए उस ने कुछ साहस बटोरा और कहा, "एक दिन रीता यहां आई थी और घर में केवल विनोद ही अकेला था. न जाने कैसे दोनों संयम खो बैठे और परिणामस्वरूप रीता को उसी दिन गर्भ ठहर गया. दो मास गुजर जाने के बाद अब उस ने मुझे बताया और मैं आज रीता को साथ ले कर भिक्षा मांगने आई हूं. बेटी की लाज और परिवार के सम्मान की रक्षा के लिए विनोद से रीता का हाथ स्थायी रूप से ग्रहण करने की प्रार्थना कर रही हूं."

पिता तुरंत जोर से चिल्ला कर बोले, "यह सब झूठ है और विनोद जैसे सरल स्वभाव लड़के को फांसने का प्रयत्न किया जा रहा है. दूसरे, मैं किसी हाल में भी शिक्षा पूर्ण हुए बिना विनोद को विवाह के बंधन में डालने के लिए तैयार नहीं हूं."

सुबोध आखिर वकील था और जमाने से भी भलीभांति परिचित था. मामले की तह तक पहुंचने में उसे तनिक भी देर न लगी. पिता की चिल्लाहट का भी उस पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ा. वह विनोद की तरफ मुड़ा और कहा, "तुम इस लड़की को जानते हो?"

विनोद ने अनुभव किया कि सशक्त व सुदृढ़ भाई के सम्मुख झूठ बोलना व्यर्थ

"उस बदमाश का पता बताओ, मैं अभी उसे समाप्त कर दूंगा," कहता हुआ अविनाश अलमारी से रिवाल्वर निकाल लाया.

उस ने सिर हिला कर स्वीकार किया.

सुबोध का दूसरा प्रश्न था, "क्या ...मास पूर्व इस से तुम यहां अकेले में ...ते थे?"

विनोद ने फिर स्वीकृति में सिर ...ला दिया.

सुबोध ने अपनी आवाज को कुछ ...चा करते हुए आगे पूछा, "क्या तुम ...नों का यौन संबंध हुआ था?"

विनोद मौन रहा और पिता की ...रफ देखने लगा.

सुबोध कड़क कर बोला, "चुप रहने ...े काम नहीं चलेगा और न पिताजी इस ...ं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकेंगे. तुम ...ुद जानते ही हो. बात को बढ़ाने से ...ोई लाभ नहीं. जो कुछ हुआ और किया, ...से स्वीकार करो."

विनोद का सिर झुक गया. पिता ...ोल उठे, "भूल दोनों तरफ से हुई है. ...केले विनोद का ही दोष नहीं था."

"ठीक है, पिताजी, दंड भी अकेले ...िनोद को ही नहीं भोगना पड़ रहा है. लड़की स्वयं अपनेआप को अर्पण करने के लिए [illegible] हो गई है, विनोद को कहें, उसे अंगीकार करे."

"यह कैसे हो सकता है? ऐसी लड़की को, जिसे कलंक लग चुका हो, हम अपने परिवार में कैसे ग्रहण कर सकते हैं?" पिता कुछ उग्र रूप धारण करते हुए दिखाई दिए.

सुबोध का पारा चढ़ गया, "नहीं, इस की बजाए एक निरपराध लड़की का शील भंग करने वाले अनाचारी बेटे को छाती से चिपटा कर घर में रखें और उस के आचरण पर गर्व अनुभव करें!" सुबोध काफी आवेश में आ गया था. उठते हुए बोला, "यदि इस लड़की को इस घर में सम्मान और सुरक्षा न मिली तो मेरा भी इस घर से कोई संबंध नहीं रहेगा." उस ने सनेह से कहा, "आप लोग अपने घर जाएं. मैं सब देख लूंगा."

सनेह और रीता दोनों सुबोध को अवाक निहार रही थीं. वह उठ कर कमरे से बाहर निकली तो सुबोध भी साथ ही बाहर तक गया और कुछ सोच कर बोला, "रात अधिक हो गई है, मैं आप को घर तक छोड़ आता हूं."

थोड़ी देर तक कोई कुछ न बोला. फिर सनेह ने ही मौन भंग किया और कहा, "बेटे, हमारी लाज तुम्हारे हाथ में है."

सुबोध ने नम्र हो कर कहा, "मांजी, आप निश्चित रहें, सब ठीक ही होगा."

घर आ गया. सनेह सुबोध को भी भीतर ले गई. पति से उस का परिचय कराया और विनोद के यहां का सब विवरण भी सुना दिया.

सुबोध को रीता के पिता का विषादभरा चेहरा देख कर बड़ा दुख हुआ. वह सोचने लगा, इन्हें बिना कोई अपराध किए ही दंड भोगना पड़ रहा है.

थोड़ी देर में बातोंबातों में ही सुबोध रीता के संबंध में बहुत कुछ जान गया. उस की स्वस्थ और सुडौल देह, तीखे

नयननक्श और गौर वर्ण को देख कर वह मन ही मन कह उठा, 'विनोद कितना भाग्यहीन है जो इस अमूल्य रत्न को ठुकरा रहा है.'

रात काफी ढल चुकी थी. अविनाश और सनेह को नमस्कार कर सुबोध वापस लौटने लगा तो उस की दृष्टि हाथ जोड़ कर खड़ी रीता की तरफ गई. उस के सुंदर मुखड़े पर छाई करुणा की झलक और नयनों की कोरों में अटके हुए अश्रु कण देख कर वह कुछ क्षण विचलित हुआ खड़ा रहा. उसे लगा, घायल हिरनी सहमी हुई उस से याचना कर रही है.

न्याय

हम प्रेम का दरिया बहा सकते हैं, पर न्याय के नाम पर नानी मर जाती है. —रस्किन

रात में शायद ही किसी को नींद आई होगी. परंतु एक ही परिस्थिति सब के लिए भिन्नभिन्न प्रभाव डाल रही थी. अविनाश और सनेह अभी भी आशा-निराशा के झूले में झूल रहे थे. स्वयं रीता के हृदय पटल पर सुबोध एक मुक्तिदाता के रूप में छाया हुआ उसे सांत्वना दे रहा था. विनोद के पिता चिंतित थे कि उन का लड़का सुबोध न जाने क्या कांड कर बैठे. विनोद कायर पुरुष की तरह, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसी उधेड़बुन में करवटें बदलता रहा. एक सुबोध था जो कहीं गहरे उतर कर दो परिवारों के कल्याण और एक पीड़ित युवती के उद्धार की बात शांत और ठंडे मन से विचार रहा था. पिछले पहर शीतल हवा के झोंकों से उसे झपकी आ गई. परंतु तब तक समस्या के समाधान का उसे स्पष्ट उद्बोधन हो चुका था.

प्रातःकाल उठते ही सुबोध पिता के सामने जा खड़ा हुआ और बिना किसी भूमिका के बोला, "विनोद और आप एक निर्दोष कन्या के प्रति जो अन्याय और अत्याचार करते आ रहे हैं, उस का, इस परिवार का अंग होने के नाते, मैं ने प्रायश्चित्त करने का निश्चय कर लिया है." कुछ रुक कर और पिता की तरफ देखते हुए उस ने ओज भरे स्वर में आगे कहा, "मैं स्वयं रीता को अपनाने जा रहा हूं."

पिता एकदम बौखला उठे, परंतु जब तक कुछ बोलते, सुबोध वहां से अदृश्य हो चुका था. पिता के सामने से ही नहीं, उस घर से भी, शायद सदा के लिए.

अपने संकल्प में अडिग सुबोध ने जब रीता के मातापिता के सामने प्रस्ताव रखा तो वह कुछ देर आश्चर्यचकित उसे देखते रहे, फिर गदगद कंठ से उसे आशीर्वाद देने लगे.

विवाह के बाद पहली रात ही जब सुबोध ने संकोच और लज्जा से झुकी रीता का मुख ऊपर उठाया तो कृतज्ञता से ओतप्रोत रीता के नेत्रों से अश्रुओं की अविरल धारा बह रही थी.

सुबोध कुछ विह्वल सा हो उठा. रीता का कोमल हाथ अपने हाथ में लेते हुए बड़ा भावुक हो कर बोला, "सच बताओ, रीता, यह सब तुम्हें अच्छा लगा है?"

"इतना अच्छा कि इस की सुखद अनुभूति में मेरे आंसू थमने में नहीं आते. लेकिन आप ने मुझ जैसी, कलंक लिए, लड़की को कैसे स्वीकार कर लिया इस की मैं कल्पना भी नहीं कर सकती." रीता की सजल पलकें और भी झुक गई.

"तुम्हें पा कर जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ है, उस के लिए मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूं. और फिर पराए कलंक की तुम्हारी बात भी बिलकुल निराधार है. वह भी तो मेरा अपना ही रक्त है. उस की रक्षा करना मेरा धर्म नहीं है क्या?" कहते हुए सुबोध ने रीता को अपनी भुजाओं में कस लिया.

रीता को लगा जैसे कांटों के बीच में खिले हुए एक सुंदर पुष्प की मीठी सुगंध से भीतर और बाहर महक उठा है.

पसंद अपनी अपनी

इस स्तंभ के लिए रोचक चुटकुले भेजिए. सर्वोत्तम चुटकुले पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री विजयकुमार, रुड़की, हैं.

भेजने का पता : पसंद अपनीअपनी, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● खट—खट—खट,

दरवाजा खुला. मकान मालकिन ने पूछा, "क्या है?"

"जी, वह आप की बिल्ली मेरी कार के नीचे आ कर मर गई है. उस की जगह मैं..."

"तो मेरा मुंह क्या देख रहे हो? उसे पकड़ो," कह कर उस ने बिल में भागते चूहे की ओर इशारा कर दिया. —विजेंद्रकुमार, जयपुर

● शिक्षक (गुस्से में) : क्यों, तुम अपने को शिक्षक समझते हो?

छात्र (घबरा कर) : नहीं, सर.

शिक्षक (उसी प्रकार) : तो मेरी अनुपस्थिति में गधे की तरह क्यों रेंकते हो? —सविता जैन, मेरठ छावनी

● मेले में एक घोषणा :

'कृपया ध्यान दें. किसी सज्जन की दाढ़ी, जो कि नई मालूम देती है, स्टाल नंबर 12 पर रह गई है. जिस किसी की भी हो, पहचान बता कर दुकानदार से ले ले.'

● एक विज्ञापन : 'आवश्यकता है एक ऐसे सेल्समैन की जो उठाईगीरों पर नजर रख सके. कम से कम पांच वर्ष का चोरी का अनुभव आवश्यक है.'

● "तीन ऐसे शब्द बोलो जिन में कुछ न कुछ अंदाज झलकता हो," कमांडर ने सिपाही से कहा.

"जी, तीरअंदाज, गोलअंदाज और नजरअंदाज." —सुरेंद्र विज, नई दिल्ली

● क्लर्क ने सनद लेने वाले विद्यार्थी से पूछा, "तुम्हें अपना रोल नंबर याद है?"

"जी हां, याद है," विद्यार्थी ने कहा.

क्लर्क ने फिर पूछा, "एनरोलमेंट नंबर?"

"जी हां, वह भी याद है," विद्यार्थी ने जवाब दिया.

क्लर्क ने पुनः मजाक में पूछा, "अपना नाम भी याद है?"

लड़के ने सहज भाव से कहा, "जी, नामकरण तो मेरा कालिज वालों ने किया ही नहीं था."

● "शीला बहन, तुम्हारी मैं ने जब चिट्ठी पढ़ी तो जी चाहा कि तुम्हारी पप्पी ले लूं, लिखाई बड़ी ही सुंदर थी," काफी दिनों बाद मिली अपनी सहेली से रीता बोली.

"न,न, ऐसा मत करना, क्योंकि चिट्ठी मैं ने नहीं, उन्होंने लिखी थी," शीला ने जवाब दिया, "मेरी हैंडराइटिंग साफ नहीं है न."

● घर के एकांत कोने में बैठी महिला को एक व्यक्ति गौर से देख रहा था. महिला अपनी ओर उसे इस प्रकार देख कर मुसकराई और उस से बोली, "मैं इस साड़ी में सुंदर लग रही हूं न?"

वह पुरुष मुसकराते हुए बोला, "जी हां, आप तो बहुत सुंदर लग रही हैं इस साड़ी में."

"यह साड़ी कैसी लग रही है मुझ पर?" स्त्री ने पुनः पूछा.

"जी, यह तो आप के सौंदर्य से घबरा कर आप से अलग हो जाना चाहती है," उस व्यक्ति ने प्रशंसा करते हुए कहा. —**विजयकुमार, रुड़की**

● पहली : लो, यह तेल की शीशी अपनी सिलाई की मशीन में डाल लेना ताकि शोर जरा कम करे.

दूसरी (गुस्से में) : ले जाओ, इसे तुम ही अपने रेडियो में डाल देना जो आधी रात तक हमारी नींद हराम करता है.

● "श्रीमानजी," युवक झिझकता हुआ अपनी प्रेमिका के पिता से बोला, "मैं आप से आप की लड़की का हाथ मांगने आया हूं."

"सिर्फ हाथ नहीं मिल सकता," उत्तर मिला, "मांगनी है तो पूरी लड़की मांगो." —**संतोष मित्तल, नई दिल्ली**

● एक बार एक शहर के बहुत प्रतिष्ठित और धनी व्यक्ति ने मामूली झगड़े के बीच अपने एक कर्मचारी का कत्ल कर दिया. मुकदमा अदालत में गया और उस व्यक्ति ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार कर लिया कि उस ने हत्या की है. पर उस के मित्रों ने उसे बचाने के लिए अपनी जान लड़ा दी. जब मुकदमे की सुनवाई समाप्त हुई तो जज ने जूरी से राय पूछी.

जूरी ने कहा, "यह व्यक्ति निर्दोष है."

"कारण?"

जूरी ने कहा, "हुजूर, हम इस आदमी को अच्छी तरह से जानते हैं. यह जिंदगी में कभी सच नहीं बोला." —**अशोककुमार, खंडवा**

● एक मुल्लाजी मसजिद पर खड़े हो कर बांग दे रहे थे. तभी वहां से एक देहाती निकला. मुल्ला के शब्दों को ठीक न समझ पाया तो चिल्ला कर बोला, "ऐ भाई, जब उतरते नहीं बनता था तो उस पर चढ़े क्यों? खुद गलती करते हो फिर खुदा को याद करते हो."

—**जयप्रकाश रतले, दमोह**

● एक किसान अपने खेत में पानी दे रहा था. उस के पास एक ट्रांजिस्टर पड़ा था. उस समय इंदौरभोपाल से खबरें प्रसारित हो रही थीं. पानी देतेदेते पानी मोड़ने वह आगे चला गया. जहां ट्रांजिस्टर रखा था वहां से अचानक वरहा (नाली) फूट गया. किसान दौड़ादौड़ा आया और एक डंडा ट्रांजिस्टर पर मार कर बोला, "इंदौर-भोपाल की खबरें दे रहा है, पर यहां जो वरहा (नाली) फूट गया, उस की खबर नहीं दे सकता?" —**उमा नाटेकर, श्योपुर कलां**

● "मैं ने तुम से कहा था न कि दूध उबलने के समय का ध्यान रखना? फिर भी तुम ने कोई ध्यान नहीं दिया," करोड़ीमल की पत्नी उस पर बिगड़ी.

"मैं ने ध्यान दिया था," करोड़ीमल ने शांति से कहा, "दूध ठीक 10 बज कर 28 मिनट पर उबला है." —**रामावतार, राजगढ़**

● "मैं तुम से विवाह नहीं कर सकती," प्रेमिका ने मजबूरी जताई.

"विवाह को मारो गोली, प्रेम तो कर सकती हो?" प्रेमी ने समझौते के स्वर में कहा.

"अवश्य, प्रेम करने में मुझे क्या एतराज हो सकता है?"

"मगर, कब?"

"विवाह के बाद," प्रेमिका ने कहा.

—**छवि थवाईत 'मनोज', रायगढ़** ●

...ड़ी हिम्मत कर के बच्चू हरखू चाचा के साथ महलसरा में चला तो गया, लेकिन वहां पहुंच कर उस ने क्या देखा?

आप पढ़ चुके हैं

पुरबिया हाट के नवाब नईमुद्दीन का महल 'रेनबो' लगभग दो सौ बेगमों से भरा था. उन पर वह बेशुमार दौलत लुटा रहा था और जवानी की खोज में हीरेसोने की भस्म खा रहा था. उल्फत बापू की सलाहपूर्ण आज्ञा से बच्चू एक दिन उसी महल में नौकरी करने के विचार से महल के दरवाजे पर पहुंच गया. लेकिन उस महल का विशाल दरवाजा, द्वार के दोनों ओर खड़े बंदूकधारी संतरियों और अन्य शानशौकत को देख कर वह अंदर घुसने की हिम्मत नहीं कर सका. वह इधरउधर घूमने लगा. तभी उसे बाग में काम करते हुए असद मियां से मुलाकात हुई, जिस की सहायता से वह हरखू चाचा से मिल सका.

...मैं हरखू चाचा ने किस अपराध का दंड देना चाहा, मैं नहीं जानता. ...स्मरण है तो बस, अपने मन की असंख्य ...कनों का कर्णबेधी शोर, जिस ने मेरा ...रा शरीर सुन्न कर दिया था. फिर भी ...ता है, मैं ने बलिदान के बकरे की तरह ... चाचा से अपने अपराध क्षमा कर देने की विनती अवश्य की थी, जिस पर वह बाघ की तरह गरज उठे थे, "अबे नामाकूल! तेरे भले को लिवाए लिए जा रहा हूं. पढ़नेलिखने में तेरा मन नहीं, सो बड़ा हो कर कहीं घास काटने का इरादा हो तो अलग बात है, वरना नवाब हुजूर की मेहरबानी से ही तेरा बेड़ा पार होगा.

चल जल्दी से, मखमल का अंगरखा और खासे का पायजामा चढ़ा कर ऊपर से शेरवानी पहन ले, जो पिछले ईद पर ईनाम मिले थे. तेरे लिए एक टोपी पहले ही खरीद कर बक्से में रख ली है.

हरखू चाचा के निर्णय पर अब विरोध की कोई संभावना न देख मुझे बड़े सरकार की पेशी की बाकायदा तैयारियां करनी पड़ीं. हाफ पैंट और कमीज पहनने वाला लड़का रियासती पहनावे से उसी तरह बिदकता था जिस तरह कोई तोता पिंजरे से. लेकिन आज्ञा के आगे सिर झुकाए पालन करने के अतिरिक्त रास्ता भी कौन सा हो सकता था? करीब आधे घंटे में ही सब कुछ कसकसा कर पिटे हुए कुत्ते की तरह हरखू चाचा के पीछेपीछे चल दिया.

नईम मंजिल के पिछवाड़ 'बहिश्त का फूल' नामक इमारत में बड़े सरकार का कयाम था. मुझे वहीं ले जाया गया. इस बड़ी और शानदार इमारत में अनगिनत कमरे थे जिन्हें मैं पहले कभी न देख पाया था, अतः भीतर घुसते ही नवाब से मिलने की बेकली, वहां की साजसज्जा और आन-बान देख दोगुनीतिगुनी बढ़ गई. पागलों की तरह कभी आदमकद शीशे में अपनी घबराई प्रतिच्छाया का दर्शन करता, और कभी दरवाजों पर लटके परदों की रंगी-नियों का जायजा लेता, अथवा छत पर तिकोने शीशे के झाड़फानूसों से आंखें चार करता आगे बढ़ता रहा. हरखू चाचा बताते जा रहे थे कि यह समय बड़े सरकार के खाने का है, इसलिए हम सीधे खाने के बड़े कमरे में जा रहे हैं.

सहसा मन में जिज्ञासा और उत्सुकता करवट लेने लगी. बड़े सरकार का भय उन भोज्य पदार्थों को प्रत्यक्ष देख पाने की तमन्ना में बुझ सा गया. जिन के बारे में हरखू चाचा अकसर मुझे बतलाया करते थे. बड़े सरकार का भोजन 'खासा' कहलाता था. इस में लगभग सौ, सवा सौ व्यंजन शामिल होते थे. कभीकभी जब भोजन की इच्छा भीतर जनानखाने में पत्नियों के साथ खाने की होती तब वहां दस्तरखान पर सभी बेगमें मौजूद हुआ करतीं. जब बाहर खाने बैठते तो खासे में खासखास दरबारी, दीवान, कुछ मेहमान, व वजीरवुजरा, सभी लोग शामिल होते थे. एक दिन बावर्चीखाने में ले जा कर हरखू चाचा ने तरहतरह के भोजनों के नाम गिनाए थे, जिन के बारे में पहले से कुछ नहीं जानता था. खासे में छोटी से ले कर बड़ी वस्तु तक परोसी जाती थी. सारा सामान मुंसरिम बावर्चीखाना की खास निगरानी में तैयार होता, फिर चखा जाता, और अंत में कसने (कपड़े) में बंद कर के सर्वे मोहर दस्तरखान पर लाया जाता, जहां खिदमतगार मोहरें देखनेभालने के बाद मुंसरिम के सामने खोल कर मेज पर सजाया करते. मैं जब इस शानदार खासे के बारे में सुनता तो उतावला हो जाया करता.

हम लोग खाने के बड़े कमरे में पहुंचे तो वहां खाना तो शुरू हो चुका था लेकिन किसी बात पर हंगामा मचा हुआ था. भीतर घुसते ही एक दीर्घकाय व्यक्ति को शेर जैसी गर्जना करते हुए सुना, जिस के सामने कई नौकर हाथ बांधे खड़ेखड़े कांप रहे थे. हरखू चाचा को जैसे ही निश्चय हुआ कि उन की गैरमौजूदगी में कोई गड़बड़ी हो गई है, मुझे एक कोने में चुप बैठे रहने की हिदायत दे कर मामला समझने के लिए चले गए. मैं एकटक उस प्रौढ़ नवाब को देखता रहा, जिस की चौड़ी शेर जैसी छाती और भारीभरकम कसा हुआ जिस्म मुझे रहरह कर कंपकंपा रहा था.

"कौन है, हरामी पिल्ला? मुंसरिम बावर्चीखाना...तू है, तू? अबे, बोलता क्यों नहीं नामाकूल...तू ही है मुंसरिम बावर्चीखाना?"

"हां, सरकार," थकी हुई आकृति वाला एक क्षीणकाय व्यक्ति कांपते हुए घिघिया कर बोला, "गुस्ताखी मुआफ. कोई गलती हुई है? सरकार के खाने में कोई कसर रही है?"

"तेरी जुबान को कीड़े पड़ें. हम से पूछता है खाने में कैसी कमी है? हरामखोर,

"कौन है, हरामी पिल्ला, बावर्चीखाना?" जब नवाब ने गरजते हुए कहा तो एक दुबलापतला व्यक्ति घिघियाते हुए बोला, "गुस्ताखी मुआफ...कोई गलती हुई है?"

...रा खासे पर नजर डाल."

"जी, सरकार, देख रहा हूं."

"अब बोल, क्याक्या पका है?"

बड़े सरकार के ऐसे सवालों का महत्त्व ...से उस दिन भले ही न पता हो लेकिन ...द में बखूबी पता चल गया. बड़े सरकार ...मेशा घुमाफिरा कर मुलाजिम को गलती ...का एहसास कराया करते, यानी, उसे ...क्कर में डाले रहते. बड़े लोगों की बड़ी ...तें होती हैं. जहां ज्यादा एहतियात की ...ाती है वहां छोटीमोटी गलती भी अक्षम्य ...नी रहती है. अतः उस वक्त मुंसरिम मानो ...मराज के सामने विनीत घबराया खड़ा ...पनी भूल का निदान खोज रहा था, ...ाज समझने पर दया आने लगती है.

...ादेश के पालन में तनिक सा भी ...लंब बड़े सरकार को स्वीकार न था. ...ुंसरिम सोचता ही रहा कि खानों के नाम ...ले अथवा चुप रहे कि बड़े सरकार के मुखश्री से एक भद्दी गाली उस के पिता महाराज के लिए निकली जिस पर आवाज का बायलर अपनेआप खुलने लगा.

"मुर्गमुसल्लम है सरकार, कबाब है, बाकरखानी है, शीरमाल है सरकार, फीरनी, गुलत्थी और सबनग है, बालाई की पूरी, मुतंजन, शीरबरज, कुंद कलिया, कोरमा और जर्दा भी है हुजूरे आला, दर शहिस्त और तंदूरी मुर्ग भी पकवाया गया है, आला हजरत, चपातियां और..."

"चुप, हरामखोर. खिचड़ी कहां है? अबे, कितनी बार कहा कि हम तुम्हारे बाप के गुलाम नहीं जो अपने खाने की फहरिस्त तुम्हारे पास अव्वल से भेजा करें, हमारे खासे पर हर खाना तैयार रहना चाहिए. आज से तेरी मुंसरिमी खत्म. दीवान साहब, तुम हमारे नए मुंसरिम का तकर्रुर करना."

"जो हुक्म सरकारे वाला."

मुंसरिम की हालत तब देखने योग्य थी,

लंबालंबा पैरों पर गिर कर मुअाफी तलब करने लगा. बड़े सरकार ने उसे और भी गालियां दीं और मुंह फिरा लिया. हार कर हरखू चाचा ने मुंसरिम अहमद मियां के कान में न जाने क्या मंत्र फूंका कि वह रोतारोता वहां से चला गया.

इस के बाद खासा आरंभ हुआ. पहले नवाब साहब ने मामूली तरीके से भोजन के लिए हाथ बढ़ाया, पश्चात दस्तरखान पर बैठे अन्य लोगों ने. कुछ ही देर बाद हंसी और ठहाकों का समां बंधा और मुंसरिम की गिड़गिड़ाहट से भीगने वाला वातावरण तरोताजा हो गया. खाने के समय नवाब हुजूर को खुश करने के लिए किसी भी व्यक्ति को हंसानेखिलखिलाने वाली किसी भी मजाक की बात कह देने का अधिकार हासिल था, चाहे उस में थोड़ी सी गुस्ताखी या बेअदबी ही क्यों न हो.

हरखू चाचा ने मुंसरिम के जाने के बाद बावर्चीखाने के खिदमतगारों से खाना परोसने का काम अपनी निगरानी में करवाया. मैं खड़ाखड़ा देख रहा था. तभी बड़े सरकार ने मुझे देखा और हरखू से पूछा, "क्यों बे हरखू, यह कौन खड़ा है वहां कोने में?"

हरखू चाचा ने मौका देखते ही मुझे आगे बढ़ा कर बड़े सरकार को बंदगी पेश करने की हिदायत दे कर जल्दीजल्दी जवाब दिया, "गुलाम है हुजूर का. पांवों की जूती है, सरकार. मैं ने अपने रिश्तेदार के आने की बाबत अर्ज किया था, आला हजरत. वही बिना मांबाप का बच्चा है."

"अच्छा, यही है वह. माशा अल्ला, माशा अल्ला. लगता तो जहीन है."

बड़े सरकार ने लापरवाही से गोश्त का एक टुकड़ा मुंह में डाल कर चबाते हुए इशारे से मुझे पास बुलाया. मैं कैसे आगे चला जाता, पैर ही काम नहीं कर रहे थे. जिस्म कांप रहा था. दीन दृष्टि से हरखू की तरफ देखा. उन्होंने संकेत दिया, तब विवश हो कर बड़े सरकार के खासे के बिलकुल पास आ पहुंचा.

"क्यों, कुछ पढ़ालिखा भी है?"

मैं ने जल्दीजल्दी इनकार में सिर हिलाया. हरखू चाचा ने जैसे ही देखा शायद मेरी मानसिक विक्षप्ति का अनुमान लगाए पास दौड़े और बड़े सरकार के आगे हाथ बांधे निवेदन करने लगे, "डर गया है, आला हजरत. आठवीं में पढ़ता था, जब यहां आया. अब पढ़ाईलिखाई बंद है इस की."

बड़े सरकार ने हड्डी चिचोड़ते हुए आहिस्ता से पूछा, "क्यों भला?"

हरखू चाचा ने क्या कहा मुझे याद नहीं, लेकिन इतना याद है कि इस सवाल पर मुझे बड़े नवाब की ओर से शंका सताने लगी कि कहीं यह बूढ़ा मुझे स्कूल में भेजने के लिए हुक्म न दे बैठे. स्कूली जिंदगी की ओर मेरी रुचि तब बिलकुल समाप्त हो चुकी थी और पढ़ने से मैं ने नमस्कार कर लेना ही तय किया था. अतः चुपचाप खड़ाखड़ा हरखू चाचा की ओर देखता रहा.

हरखू चाचा ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "आला हजरत, गरीब का लौंडा पढ़लिख के साहब कैसे बनेगा? उसे तो खिदमत का ठौर ही मिलना चाहिए. सरकारे वाला का सहारा मिल जाए तो किले में रह कर अपनेआप पढ़लिख लेगा. यही सोच कर हुजूर के सामने..."

"अबे, हम क्या करेंगे इस का? हमें लौंडे रखने का शौक नहीं है."

दस्तरखाने के सभी लोग नवाब की इस उक्ति पर जोर से हंसे, लेकिन हरखू वैसा ही गंभीर बना हुआ आगे बोला, "सरकार, खिदमत करता रहेगा. आज छोटा है तो कल बड़ा भी होगा. सरकार के हुक्म की देर है, यह दिन भर हुजूर की हुक्काबरदारी कर के अपना पेट पाल लेगा. मैं कब तक खिलाता रहूंगा, आला हजरत."

"क्या कहा," नवाब सहसा त्यौरियां बदलते हुए बोले, "तू अपने पास से खिला रहा है? कहां है मुंसरिम बावर्चीखाना,

बच्चू जब बेगम साहिबा से मिलने दीवानखाने में पहुंचा तो बेगम जालीदार पर्दे के सामने पहुंच गई.

क्या वह तुझे इस के लिए खाना नहीं दे रहा?"

हरखू चाचा जल्दी से बोले, "नहीं नहीं, सरकार मेरा यह मतलब नहीं है. खाता तो यह हुजूर के ही दाने है, मेरा मतलब कुछ और था. आला हजरत, आप जाने, इसे भी तो एक न एक दिन अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा."

"अबे, तो सीधेसीधे नौकरी के लिए कहता क्यों नहीं? जा, इसे नौकर रखा. यह हमारे भिंडीखाने के काम करेगा (भिंडीखाना यानी हुक्कातंबाकू का महकमा) वजीरे मुलाजमत, कहां हो तुम, सुन लिया न, आज से यह लौंडा हमारा मुलाजिम हुआ. अबे, ओ छोकरे, तेरा नाम क्या है?"

"ब....ब....च्चू."

"चू....चू... लाहौलविला, अब यह भी कोई नाम हुआ." नवाब कहते हुए फिर अपने वजीर दरबारियों को देखते हुए रहस्यमयी मुसकान मुसकराने लगे. फिर कुछ देर रुक कर हरखू से बोले, "इस का असली नाम बता."

हरखू ने स्पष्ट किया, "चंदरपरकास है सरकार."

बड़े नवाब बोले, "हां, यह हुआ न कुछ. मगर यह परकासबरकास हम से नहीं बोला जाएगा. हम चंदर कहेंगे, चंदर, जा, मुंसरिम भिंडीखाना को बता, आज हम मैनपुरी फर्शी पिएंगे खासे के बाद."

हरखू चाचा काम बनता हुआ देख अब मेरा हाथ पकड़े खाने के कमरे से बाहर निकल भिंडीखाने की तरफ चल दिए.

सरकार की हिदायतों का उल्लेख करने के बाद उन्होंने मेरा हाथ एक बूढ़े मगर बलिष्ठ व्यक्ति के हाथ में दे कर कहा, "सादिक पहलवान, यह है मेरा भतीजा. चंदर नाम है. अब तुम्हारे जिम्मे करता हूं. तुम्हीं इस के उस्ताद और तुम्हीं मांबाप. मुझे तो सारा दिन खिदमतगारी से फुरसत नहीं मिलती. इसलिए तुम्हारे पास ले आया हूं. चाहे मारो चाहे जिलाओ." और मेरी तरफ देखते हुए बोले, "सुन ले बे बच्चू, उलफत कभी होगा तेरा बाप. अब तू पहलवान सादिक का बेटा है. मारे चाहे जिलावे, मगर कभी मुंह से उफ न करना. क्या समझा. इन का हुक्म खुदा का हुक्म मानना. चल, जा कर भीतर काम देख."

फिर वे दोनों आपस म बड़ी देर तक कुछ बातें करते रहे जो मेरे पल्ले नहीं पड़ीं. मैं एक दूसरे कमरे में आ कर तख्त पर बैठा उन पहलवान के आने की बाट देख रहा था, जिन के साथ हरखू चाचा ने एक साथ सैकड़ों रिश्तेनाते खोज निकाले थे. यह तो सच है कि पहली दृष्टि में ही सादिक मियां मुझे भले लगे थे लेकिन न जाने क्यों मन तीव्र उत्सुकता से बहका बहका हो रहा था.

हरखू चाचा चले गए तो सादिक मियां ने आ कर फर्शी तैयार करने का पहला सबक देने से पहले मेरे कान जोर से उमेठे और कहा, "बेटे, मैं जितना प्यार करता हूं, उतना ही पीटता हूं. याद रख भिंडीखाने का हर काम खरगोश की तरह दौड़ कर करना पड़ेगा."

सादिक पहलवान से मेरा यही पहला परिचय था जो आगे चल कर दिनोंदिन उसी संबंध की पूर्ति करता रहा जिस के लिए हरखू चाचा विशेष हिदायतें दे गए थे. और कहना व्यर्थ है कि किले में अब मेरे एक के स्थान पर दो गहरे हमदर्द हो गए. एक सादिक मियां और दूसरे हरखू चाचा.

अगले चार वर्ष भिंडीखाने के हुक्काबरदार लौंडे के जीवन में आमूल परिवर्तन लाने वाले महत्त्वपूर्ण दिन कहे जा सकते हैं.

कब उस का बचपन नवयौवन की देहरी पर खड़ाखड़ा मुसकराता हुआ संसार को वितृष्ण दृष्टि से निहारने लगा, कब उस के कमजोर और चंचल मनोबल में स्थिरता समाने लगी, सभी आज याद करने पर भी याद नहीं होता. हां, इतना सच है कि बड़े सरकार के रोआब और क्रोध से परिचित हो जाने के बाद हुक्केबरदारी के साथसाथ उन के और अधिक निकट आने की कुशलता उत्पन्न करने का भी मोह अवश्य उत्पन्न हुआ, जिस के बल पर ही मैं ने भिंडीखाने से बदल कर अपने आप को तकियाखाने पहुंचा दिया.

परंतु सभी कुछ तो अकारण नहीं होता, मिठास के लिए शक्कर घोले बिना काम नहीं चलता. आधार न हो तो महल कैसे खड़े हो जाएंगे? एक कारण, एक आधार अवश्य था इस परिवर्तन का जो तब न सही, आज मुझे भलीभांति ज्ञात है.

भिंडीखाने पहुंच जाने के बाद भी मैं दोपहर बड़े सरकार को हुक्का पिलाने के [illegible] मिलते ही महलसरा

सामने वाले उस बगीचे में अवश्य जाता जहां किले का मेरा एकमात्र चित असद मियां मुझे मिला था. देहरादून की पढ़ाई के दौरान जबजब वह बिया हाट पहुंचता, हमारा एक न एक मिलना अवश्य हुआ करता.

एक दिन असद मियां किसी बड़े स्कूल में दाखिल होने जा रहे जहां साल के साल छुट्टी मिलने पर तकिया हाट लौटना संभव था. उन्होंने आम का एक और पौधा दे कर उसे वहीं लगाने की हिदायत देने के बाद हंसते ही पूछा था, "तुम मेरे खयाल से काफी समझदार लगते हो. चंदर, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि पढ़लिख कर किसी बड़े आदमी बन जाओ. देखते हो न जो पढ़तालिखता नहीं, छोटा बन कर दूसरों की खिदमत किया करता है. जब कि बड़ा आदमी बग्घियों में घूमता है. मैं चाहता हूं कि तुम किले में रहते हुए भी कुछ पढ़तेलिखते रहो."

मैं ने कहा, "आप के वालिद हुजूर की हुकाबरदारी करने वाला गुलाम पढ़लिख कर क्या करेगा, यह सोचे बिना ही आप ने इतना कुछ कहा है. लेकिन आप चाहते हैं तो आप की इच्छा पूरी जरूर करूंगा. न जाने क्यों आप की कोई बात टालने को दिल नहीं होता."

असद मियां ने हंसते हुए उत्तर दिया, "मुंह दिखाने के लिए ही कह रहे हो या सचमुच कुछ पढ़ोगे? मुझे तो शक है जैसे तुम अपनेआप को धोखा दे रहे हो?"

फूलों को महकाओ...

बेकैफ झकोले कांटों को
शादाब तो क्या कर पाएंगे,
जो फूल पड़े हैं राहों में
उन फूलों को महकाओ भी.
—कतील शिफाई

मैं हंस दिया, "अपनेआप को धोखा क्यों देने लगा भला, हां, आप को धोखा जरूर दे सकता हूं?"

उन्होंने रूखे शब्दों में कहा, "समझने की गलती है यह चंदर. कोई हमदर्द किसी अच्छी बात का आग्रह करता है, इस का मतलब यह नहीं कि उस का निरादर कर तुम उसे धोखा दोगे. यह धोखा तो तुम अपनेआप को दोगे."

बस, फिर वह चले गए थे. और उसी दिन न जाने किस प्रेरणावश मैं ने अपनी नियमित पढ़ाई का व्रत लिया था. भला हो सादिक पहलवान का जो खुद तो अंगूठा टेक बने रहे थे लेकिन जानते जरूर थे कि पढ़ाईलखाई खुदा की दी हुई नेमत है. एक बार किताबों से उलझा देख लेने पर उन्होंने कहा भी था, "ठीक है, बरखुरदार. पढ़ाईलिखाई ही काम आती है जिंदगी में. स्कूल न हुआ तो क्या हुआ, कितने लोग आप से आप पढ़ कर विद्वान हुए हैं. काम से वक्त निकाल लिया करो और मन लगा कर पढ़ा करो."

साल भर बाद असद मियां आए तो मैं ने उन्हें हिंदी में लिखी एक छोटी सी कथा दिखाई थी. देख कर वह कितना खुश हुए, बता नहीं सकता. पर बेचारे उर्दू जानते थे इसलिए पढ़ न पाए. अगले साल मैं ने गलतसलत अंगरेजी में उन्हें एक लेख दिखाया. इस पर उन्होंने मेरी पीठ ठोंकी. तीसरे साल जब वह कालेज पास कर के वापस लौटे तो मेरा बढ़ा हुआ अध्ययन उन की रुचि का विषय बन चुका था. अब वह किसी तरह अपने वालिद हुजूर को मेरी योग्यता का हाल बता कर तकियाखाने के स्थान पर कहीं अच्छी जगह लगवाना चाहते थे. मैं ने उन्हें ऐसा करने से रोकते हुए कहा, "मैं ने पढ़ा है कि जो पद अपनी बुद्धि और सावधानी से मिलता है, वही कायम रहता है. इसलिए आप सिफारिश न करें, मौका लगते ही मैं अपनेआप अपने लिए जगह खोज लूंगा."

पढ़ाई के लिए उन्हें जर्मनी भेजा गया नहीं कि वह दस साल बाद वापस

लौटे. तब तक मैं बहुत बदल चुका था.

तकियाखाने की [illegible] के समय मैं सतरहअट्ठारह के बीच का था इसलिए हर बात अच्छी तरह समझता था. हरखू चाचा ने बड़े सरकार को मेरे भविष्य के बारे में जैसा भी कहा था, वैसा ही स्वीकार किया गया था. तकियाखाने का बड़ा मुंसरिम अनोखेलाल बहुत जल्द निवृत्ति पाने वाला था. उस की जगह मुझे ही मुंसरिम बना दिया जाए, यही उन की योजना थी. मैं मन ही मन इस योजना पर सहमत होता या न होता लेकिन हरखू चाचा की बात काटने की हिम्मत कभी न कर सकता था. अतः जैसा वह कहते रहे, हमेशा उसी तरह करता रहा. तकियाखाने का चार्ज लेते समय मन में खुशी बिलकुल न थी, चूंकि आगे तरक्की के लिए अपनी योग्यता या कुशलता दिखाने का वहां कोई अवसर न मिल सकता था. लेकिन हरखू चाचा के मन की बात समझते हुए चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा.

तकियाखाने में सारे महल के ओढ़नेबिछाने का इंतजाम होता था. बड़े नवाब से ले कर छोटे और मंझले नवाब की रुचि और बेगमों के मनपसंद रंगों के लिहाफगद्दों की सारी जिम्मेदारी तकियाखाने के मुंसरिम की थी. किस बेगम के सोने के कमरे में कौन सा तकिया जाता है, मुलायम या सख्त, वह तकिया किस दिन बदला जाना होता है, बड़े सरकार की चादर नियमपूर्वक हर दिन नई बिछनी चाहिए, खास बेगम की रजाई में जरी का काम किस तरह का पसंद किया जाता है, असद मियां को हरा बिछावन भाता है, तकियाखाने का मुंसरिम हमेशा चौकन्ना रह कर इन बातों का ध्यान रखता है. इस के अलावा वही बड़े सरकार की मर्जी के अनुसार उन के रात के सोने का स्थान तय करता. अर्थात अपनी अनगिनत पत्नियों में से किस महाभागा का सौभाग्य संवारने का निश्चय किया है बड़े सरकार ने—उसी के यहां बिस्तर की, फूलों की सेज की व्यवस्था की जाती. इस नेक काम के कारण तकियाखाने का मुंसरिम महल में बेगम[illegible] से मिलनेजुलने का अधिकारी था अर्थात उस से परदा नहीं होता था. और जैसा बाद में मेरे अनुभव में आया, यह शानदार पद कई मायनों में बहुत महत्त्वपूर्ण, दिलचस्प और आय कराने वाला था.

जैसा बता चुका हूं, तकियाखाने में पहुंचने के बाद भी मेरा विद्याध्ययन बराबर जारी था. अब मुझे में काफी समझ आ चुकी थी, मैं अपना बुराभला समझता था. दिल्ली का संसार मुंशी उलफत राय की मौत के बाद बहुत पीछे जा चुका था और किले में ही किस्मत बनानासंवारना शेष रहा था. अतः हर घड़ी अपनी तरक्की का अवसर निकालने की जुगत में लगा रहता. हरखू चाचा के सदुपदेशों से मुझे निश्चय हो चुका था कि जो कर्मचारी बड़े सरकार की नाक का बाल बन कर रहे उसे किसी तरह की कमी नहीं रहती और यह नाक का बाल तभी बना जा सकता है जब सावधानी से अवसर की प्रतीक्षा करते हुए हर बड़ी और छोटी मुसीबत को ओढ़ने के लिए तत्पर रहा जाए.

अनोखेलाल बेचारे की निवृत्ति के कुछ ही दिन पहले की बात होगी. बड़े नवाब के शयन कक्ष में अचानक ही भूकंप आया. पृथ्वी स्खलन से नहीं आया था यह भूकंप बल्कि आया था बड़े सरकार के क्रोध से. उस दिन उन की सेज बिल्लौरी आंखों वाली एक संभ्रांत महिला की महलसरा में सजाई गई थी, जिसे वहां पहुंचे कठिनाई से सातआठ दिन व्यतीत हुए थे. करीब एक बजे का समय होगा कि हरखू चाचा दौड़े हुए हमारे पास तकियाखाने पहुंचे. उन दिनों नियमानुसार मैं अथवा अनोखेलाल, दोनों में से एक रात की ड्यूटी पर वहीं उपस्थित रहा करते थे.

मैं ने हरखू चाचा की घबराई आकृति देखते हुए कारण पूछा तो वह बोले, "गजब हो गया, बच्चू, बड़े सरकार को नींद नहीं आ रही. गुस्से से पागल हो रहे

हैं, बिल्कीस बेगम को भी कमरे से भगा दिया है. अनोखेलाल की पुकार रही है. भगवान जाने आज क्या होगा अनोखेलाल का. कहते हैं, उन के बिस्तर का तकिया बदल गया है."

"तकिया बदल गया है? मगर यह कैसे हो सकता है? तकिया तो मैं ने खुद जा कर रखा था उन के बिस्तर पर."

"क्या मालूम? लेकिन कहते हैं, मुलायम नहीं है. अनोखेलाल को बुलवाया है. मैं ने भेजा है आदमी उस के घर."

अनोखेलाल को आतेजाते दसबारह मिनट व्यतीत हुए. हरखू चाचा भी वापस लौट गए. मगर मैं परेशानी से इस मुसीबत का निदान सोचने लगा. तत्काल सारे किले के तकिए मंगवा लिए. तकियाखाने

> **दोषान्वेषण**
>
> दूसरों में दोष निकालना, दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता, जितना अपने को बचाता है.
>
> —स्वामी रामतीर्थ

के बाहर बारादरी में तकियों का ढेर लग गया. महलसरा से बराबर खबर पर खबर आ रही थी कि किस तरह बड़े नवाब का पारा आसमान को पहुंचा हुआ है और वह अनोखेलाल को कोड़ों से पिटवाने का हुक्म दे चुके हैं. अनोखेलाल यह सुनते ही सहमा हुआ रोने लगा. हमारी सभी सहानुभूतियां उस के साथ थीं चूंकि किले में गिनेचुने हिंदू कर्मचारी थे और वे आपस में एकदूसरे की सहायता करना अपना धर्म मानते थे. किसी तरह भी वह नवाब साहब के सामने जाने पर तैयार न होता था. हरखू चाचा कई बार आए और लौट गए. बड़े सरकार को अनोखेलाल के बारे में झूठा समाचार दिया कि वह किसी दोस्त के साथ कहीं चला गया है.

क्रोध शांत तो क्या होता, बड़े नवा गुस्से में न जाने क्याक्या बकते रहे.

आखिर मैं ने साहस से काम ले क कुछ कर दिखाने का फैसला किया. अनो लाल के आग्रह पर जलते हुए ज्वालामु में घुसने की तैयारी कर बैठा. मैं ने तु नौकरों पर तकियों का बोझ लदवाया औ सात नंबर की महलसरा के लिए रवा हुआ.

बड़े नवाब ने मुझे पहचानते ही अ बरसाना शुरू किया, "अबे ओ, नामाकू यह तेरी कारस्तानी मालूम होती हरामखोर...काम में यह लापरवा दिखाता है. बर्खास्त, भाग जा यहां से..

मैं ने हाथ जोड़ कर नम्र स्वर उत्तर दिया, "हुक्म सर आंखों पर हुजू अनवर, लेकिन गुस्ताखी मुआफ कु अर्ज करना..."

वह चीखते हुए बोले, "जवाब दे है, हरामी पिल्ले, बाल खिचवा लूं कोड़े मारमार कर के दम निकाल दूंगा.

मैं ने हिम्मत न हारते हुए दृढ़ श में कहा, "नाचीज गुलाम में जवाब देने जुर्रत क्यों कर हो सकती है. जरूर क गलती हुई है. मैं ने शायद तकिया बद दिया हो. अब सारे किले के तकिए ज कर के साथ लाया हूं. इजाजत मिले ठीक कर दूं. इस के बाद चाहे तो सरका मरवा दें, कोई हर्ज नहीं."

बड़े सरकार हैरानी से मुझे रहे थे. मैं जिस सहनशीलता औ संयम का परिचय दे कर उन का क्रो सहन कर रहा था, यह शायद नई ची रही हो उन के सामने. लेकिन अचान ही तो अपने मरतबे और आनबान त्याग नहीं हो सकता था उन से. मे उत्तर सुन कर झुंझलाए से कमरे में टहल हुए बोले, "हूं, तू समझता है कि मुझे अप तकिए की पहचान नहीं होगी. देख ज इतना सख्त होता है मेरा तकिया?"

मैं उन के बिस्तरे तक बढ़ा और ह फेरता हुआ तकिए को देखने लगा. मु जरा भी शक नहीं था कि तकिया वही र

का था. बड़े नवाब को न जाने किस लिए शक हो गया था. और जब शक हो जाए तो नींद कैसे आए? लेकिन अब उन के स्वर में सुलह के लक्षण देखते ही मैं ने अपने साथी नौकरों को जल्दीजल्दी सारे तकिए हुजूरे अनवर के सामने पेश करने की हिदायत दी. मेरे इस रवैये पर तो बड़े नवाब भौंचक्के से मुझे देखने लगे. मैं ने इस हिदायत से उन्हें अपना तकिया आप ही पहचान लेने का आदेश दिया था. लेकिन काम की तत्परता इतनी बरती गई कि उन्हें कुछ कहने का मौका न मिला और वह एकएक को देखते हुए ना में सिर हिला कर अपनी असहमति दिखाते रहे. कहना व्यर्थ है कि खाली दिमाग का ध्यान इस नए काम में व्यस्त हुआ तो क्रोध अपनेआप कम होने लगा.

इस बीच मैं ने और नौकर को बाहर भेजा. उस के कान में कुछ बुदबुदा दिया जिस पर वह चकित हो कर मुझे घूरता रहा. थोड़ी देर में वह कांपता हुआ नवाब हुजूर के सामने एक तकिया ले कर हाजिर हुआ. यह उसी नाप का था जिस नाप का नवाब हुजूर का अपना तकिया था. नवाब साहब ने उस तकिए पर हाथ फेरते हुए बारीक सी मुसकान बिखेरी और बोले, "हां, यही तकिया है हमारा. कहां मिला."

तकिया लाने वाला नौकर पीछे खिसक कर मुझे देखने लगा. मैं ने हाथ बांधे निवेदन किया, "गलती से तकियाखाने में ही पड़ा रह गया था. यह तकिया, हुजूर मुनासिब समझते हैं तो इसी को लगाया जाए."

"अबे बदतमीज, क्या यह कहना चाहता है कि यह तकिया भी हमारा नहीं?"

"गुस्ताखी मुआफ, तकिया तो हुजूर का वही है जो बिस्तरे पर लगा है. लेकिन सरकार चाहें तो..."

"कमीने, यह कैसे कहता है?"

"जान की अमान, सरकार, हाथ कंगन को आरसी क्या? हुक्म हो तो साबित कर दूं कि यह तकिया हुजूर का हो ही नहीं सकता."

"अच्छा, दिखा जरा."

मैं तो अवसर की तलाश कर ही रहा था. मैं ने तकिया उठा कर उस के बटन खोले और भीतर का मालमसाला निकालने लगा. ठीक मेरी हिदायतों के अनुसार मेरा साथी चारपांच गिलाफों के नीचे बहुत ही गंदा सड़ा हुआ एक तकिया दबा लाया था. जैसे ही नीचे का गूदड़ सामने आया बड़े नवाब ने उबकाई सी भरते हुए कहा, "लाहौलविला कूव्वत, इतना गंदा?"

मैं ने बिना अस्थिर हुए संयत और विनीत भाषा में कहा, "हां सरकार, आप का तकिया तो वही है जो बिस्तर पर लगा है."

मेरी इस दिलेरी को वहां मौजूद

मांगी थी मौत...

तंजौर. सरकारी अस्पताल में एक 35 वर्षीय व्यक्ति का आपरेशन कर के उस के पेट से पांच इंच लंबी हंसिया निकाली गई.

पेकिरी स्वामी नामक यह व्यक्ति आत्महत्या करने के विचार से हंसिया निगल गया था. दो दिन बाद उसे अस्पताल लाया गया. एक्स रे करने पर कुछ गड़बड़ नजर आई और उस का आपरेशन किया गया. हंसिया के घाव से उस के पेट को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं पहुंचा, पर पुलिस ने उस के विरुद्ध आत्महत्या करने के अपराध में मुकदमा दर्ज कर लिया.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : विजयकुमार, नई दिल्ली)

सभी लोग आश्चर्य और भय से देख रहे थे. किले के जीवन में शायद आज ही असामान्य रूप से किसी नौकर ने बड़े नवाब की जिद के सामने घुटने टेकने से इनकार करते हुए उन्हें उन की भूल का एहसास कराया था. अतः सभी की भयातुर दृष्टि नवाब साहब के अगले हुक्म पर लगी थी.

में तनिक भी भयभीत न हुआ था. नवाब साहब की वक्र दृष्टि का अर्थ खूब अच्छी तरह समझ रहा था. इसी समय में ने बिस्तर वाला तकिया भी उठाया और उसे खोल कर भीतर से सेमल का फूलों का ढेर बाहर निकाला. अब तो नवाब हुजूर को कहने का हौसला ही कैसे होता कि यह तकिया उन का नहीं. वह हमेशा सूखे सेमल के फूलों के तकिए पर ही होते थे.

बड़े सरकार ने अब हरखू चाचा की तरफ देखते हुए मुसकरा कर कहा, "यह तेरा भतीजा ही है न हरखू?" और अब हरखू ने चुपके से सिर हिलाया तो बोले, "वाकई जहीन है. हम समझ रहे थे कि हमारा तकिया बदल गया है. देखो तो, कहीं अगर साले अनोखे को मरवा डालते तो ख्वामख्वाह गुनाह हो जाता हम से. लौंडे ने बचा लिया. अच्छा जा, अब हम आराम से सो सकते हैं. बिल्कीस बेगम को खिदमत में भेज देना."

सब लोग खुशीखुशी लौट आए.

अनोखेलाल ने पूरा किस्सा सुना तो यकीन ही न कर सका. फिर जब यही बात अगले दिन किले के प्रमुख व्यक्तियों की जुबानी बारबार सुनी तो आ कर मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहने लगा, "तू तो फरिश्ता है, बेटे. नौकरी बचा ली तू ने."

में ने बस थोड़ा सा मुसकरा कर उन की बात का स्वागत किया.

में तो सोच भी नहीं सका कि तकिए वाली घटना से मेरा महत्त्व किले में अचानक ही कितनी ऊंचाई पर आ पहुंचा था. हरखू चाचा ने अवश्य इस बात और जाना होगा. इसलिए अब उन की आंखों का रूखापन बहुत कम हो चला और हर बार मिलने पर मेरी प्रशंसा किया करते. इतना ही बस होता तो बहुत नहीं था. लेकिन कुछ महीनों बाद ही अब एक दिन एक बूढ़े से व्यक्ति को लिए मेरे पास एक अनोखा प्रस्ताव ले कर आए तब तो मैं चकित रह गया.

वह साहब रियासत के शाही हकीम मुजफ्फर अली खां थे. हरखू चाचा उन की सिफारिश करने आए थे. बड़े सरकार आजकल हकीम साहब से बेहद नाराज हैं. अगर मनाया न गया तो क्या जाने कब नौकरी खत्म कर के घर का तालाब कर दें. हरखू चाचा चाहते थे कि उन का अकलमंद भतीजा हकीम साहब को कोई ऐसा उपाय सुझाए जिस से बड़े नवाब का गुस्सा कम हो सके.

उस वक्त में ने टाल दिया. लेकिन हकीम साहब को तो शायद मेरे अलावा अब कोई दूसरा सहारा ही नजर न आ रहा था. मुझे मन ही मन हंसी आती है. आज 19 साल के अपरिपक्व युवक का कितना महत्त्व हो गया था एक ही दुस्साहसी घटना से. अगले दिन और फिर उस के अगले दिन हकीम साहब मेरी खिदमत में हाजिर होते रहे. आखिर मुझे वचन देना पड़ा कि किसी दिन उन के मकान पर आ कर ही उन की समस्या सुन कर जो उचित हुआ जवाब दूंगा.

एक रोज में उन के मकान पर जा पहुंचा. किले के पास ही उन का दौलतखाना था. शाही हिकमत करने की वजह से पूरी रियासत में उन की योग्यता की चर्चा थी और उन के मतब पर सुबहशाम मरीजों की भीड़ लगी रहती थी. आयु होगी करीब पचास साल. दाढ़ी सफेद हो चुकी थी. शरीर भी दुबला था लेकिन थे शौकीन मिजाज. हर समय पान खाते और दाढ़ी व बालों पर मेहंदी लगाते. में पहुंचा तब मतब कर रहे थे. देखते ही मरीजों को छुट्टी कर दी और मुझे लिए अपने दीवानखाने में आ पहुंचे.

शरबत से खातिर करने के बाद उन्होंने पूरा किस्सा सुनाया. शायद बड़े नवाब की अंतरंग जिंदगी की झांकी मुझे उन के शब्दों में ही पहली बार देखने को मिली थी. बारबार शर्म से गड़ा जा रहा था, लेकिन हकीम साहब थे कि ऐसे बोल रहे थे जैसे वर्षों से किसी को सुनाने की ताक में रहे हों.

"बरखुरदार, लानत भेजता हूं इस शाही नौकरी पर. जी का जंजाल बन चुकी है मेरे लिए. उम्र के तकाजे को देखना नहीं चाहते बड़े सरकार और दवाइयों के बूते पर एय्याशियों के गर्त में डूबने को बेताब रहते हैं. बेचारा हकीम कहां से लौटा सकता है उन की जवानी? तुम तो जानते ही हो न प्यारे अजीज कि रोज सुबह नवाब हुजूर एक प्याला शरबत पीते हैं. वह शरबत कितना कीमती होता है, बस, मैं ही जानता हूं. लेकिन हर काम की हद होती है, भाई. कब तक शरबत काम देता रहेगा? नौकरी की खातिर हां में हां मिलाना जरूरी हो जाता है, इसलिए कभी कहता नहीं, लेकिन...मगर तकलीफ इस बात से नहीं है, न उन्होंने कभी कोई शिकायत की इस के बारे में. शिकायत की है अपने खाने के बारे में. खुदा बेहतर जानता है कि किसी भी भूखप्यास का जिम्मा किसी गरीब हकीम के कंधों पर कैसे डाला जा सकता है. बड़े नवाब साहब का फरमाना है कि फिलहाल उन की खुराक कम होने लगी है. यदि यह बीमारी दूर न हुई तो..."

मुझे हकीम साहब की मुसीबत का अंदाजा होते देर न लगी. बड़े नवाब को वहम की बीमारी थी जब भी कोई बात दिमाग में बैठ जाती, निकालना कठिन होता. किसी तरह अनुभव किया होगा उन्होंने कि खाना कम खाने लगे हैं. बस, समझो हकीम की आफत आई. जहां तक खुराक का सवाल है, हरखू चाचा की जुबानी सुनता रहता था कि इस उम्र में भी बड़े सरकार डट कर खाते थे. खासे की कोई चीज ऐसी न होती जो वह चखते न हों. कुछ इस की वजह यह भी थी कि जो वह छूते या खाते थे वही दस्तरखान पर बैठे अन्य लोग खा सकते थे. इस नियम की पाबंदी ने ही शायद उन्हें बहुभोगी बना दिया था. किसी दिन भले ही अजीर्ण या किसी अन्य कारणवश कम खाया होगा, लेकिन इस का परिणाम हकीम साहब के लिए घातक बने, यह बात समझ में न आई.

मैं ने कहा, "कम खाने की शिकायत तो मुनासिब नहीं नजर आती, हकीम साहब. शायद उन का वहम होगा. लेकिन इसे दूर किए बिना वाकई आप की खैर नहीं."

वह घिघियाते हुए कहने लगे, "यही तो मुसीबत है. कोई तरकीब समझ में नहीं आती. उन से कहें कैसे कि आप कम नहीं खाते. हरखू भाई ने तुम्हारी बड़ी तारीफ की, बेटे. बस, तुम्हीं कुछ करो."

मैं हंसता हुआ बोला, "सोचूंगा कुछ. लेकिन हकीम साहब, इनाम में नवाब साहब वाला एक प्याला शरबत हमें भी पिलाइएगा."

वह घबराए, "लाहौलविला, चंदर मियां, खुदा के वास्ते ऐसी बातें मत कहो. माशाअल्ला जवान हो अभी तो. यह आग तो बस नवाबों को ही पीना शोभा देती है. देखते नहीं, उन के यहां महलसरा में कितनी औरतें हैं. बखुदा सब दिखावे के चोंचले हैं. अब तुम से क्या छिपाना, अजीज, कि सैकड़ों प्याले पीने के बाद भी बड़े सरकार किसी काम के नहीं रहे हैं. तुम क्या जानो महलसरा में क्याक्या तमाशे होते हैं."

मैं इस तरह के विषय पर अधिक

धोखा

सब धोखों में प्रथम और सब से खराब अपनेआप को धोखा देना है. इस के आगे सब पाप सरल हो जाते हैं.

—बेली

(क)हने या सुनने की कल्पना कभी न रखता था, इसलिए जल्दीजल्दी प्रसंग बदल कर बोला, "आजकल तो नवाब हुजूर दोपहर का खाना बिल्कीस बेगम की महलसरा में ले रहे हैं?"

"हां, मगर इस से क्या होता है?"

"बिल्कीस बेगम अगर मदद करें तो बड़े सरकार का वहम दूर हो सकता है."

हकीम साहब उछल कर बोले, "अजी वह भी तो अपनी बच्ची है. मेरे साले की बेटी है, बरखुरदार. जो कहोगे करेगी."

मैं चलतेचलते कहने लगा, "तब ठीक है. आजकल में उन से मिलूंगा. भगवान ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा. आप किसी तरह बिल्कीस बेगम को खबर भेज दें कि मुझे मदद करने में गुरेज न करें."

तकिए वाली घटना के बाद अनोखेलाल लंबी छुट्टी ले गए थे, इसलिए मैं कार्यकारी मुंसरिम नियुक्त किया गया था. अतः मुझे भी महलसरा में हर कहीं आनेजाने की स्वतंत्रता थी. इस बात पर खास बेगम की तरफ से आपत्ति उठाई गई थी. लेकिन बड़े सरकार मेहरबान नजर आ रहे थे, इसलिए गौर न किया. जिस ने भी मेरी नाउम्री और महलसरा में जाने की आजादी को ले कर कुछ कहा, उसे बड़े सरकार ने चुटीला सा उत्तर दिया, "अमां एक तरफ कहते हो नाउम्र है, काम नहीं कर सकेगा और दूसरी तरफ कहते हो कि महलसरा में आजादी से घूमना ठीक नहीं. मैं कहता हूं कि वह काम भी ठीक करेगा और महलसरा में आजादी से घूमना भी नुकसानदेह नहीं होगा. अमां अभी तो बेचारा जानता भी नहीं कि जवानी के मायने क्या होते हैं." मैं ने बाद में यह उक्ति सुनी तो अपनेआप पर हंसी आई. नाई अब बाकायदा मेरी दाढ़ी बनाया करता था, इसलिए अपनी नाउम्री पर कैसे यकीन कर लेता. तथापि महलसरा में आनेजाने की स्वतंत्रता का कोई गलत लाभ उठाने की बात मेरे दिल में कभी न आई.

तीसरे दिन मैं सात नंबर महलसरा में बिल्कीस बेगम के यहां जा पहुंचा. बिल्लौरी आंखों की वजह से बड़े सरकार ने किसी

मानवता

ध्रुव सत्य है कि सर्वोच्च जाति का मानवता-परिपूर्ण प्राणी सदा उदार और सत्यप्रिय होता है.

—रस्किन

शादी में उन्हें देखा और पसंद किया था. यह वह जमाना था जब बड़े सरकार की रियासत में विलास का बाजार काफी गर्म था. कम से कम बड़े सरकार की इच्छा का निरादार कर सकने का साहस किसी में न था. पसंद करने के बाद बिल्कीस बेगम के वाल्देन के पास मुता का पैगाम पहुंचा होगा जिसे उन्होंने सिर पीट कर कबूला होगा, यह निश्चित था. कुछ लोग जानबूझ कर अपनी बेटियों को शाही हरम में भेजना गंवारा करते थे. इन्हें मैं अपनी बुद्धि से दलाल की उपाधि ही दे सकता हूं. जरा से ओहदे, इज्जत, नाम या पैसे के लिए यह सौदा ठीक अपनी बेटी की इज्जत के सौदे जैसा होता था. महलसराओं में इन बेगमात के वहां तक पहुंचने के पीछे ऐसे न जाने कितनी सौदेबाजियों की बातें प्रायः सुनाई देती थीं. तथापि यह इतने हलके स्वर में कही जाती थीं कि किसी को कानोंकान खबर न हो.

मेरी सूचना पा कर बिल्कीस बेगम ने मुझ से अपने दीवानखाने में मिलना स्वीकार किया. पहले मैं वहां आयागया तो था लेकिन कभी आमनेसामने बिल्कीस बेगम को देखने का अवसर न मिला था. उन की दासियों से ही मतलब की बातचीत कर के लौट आता था. आज जो पहुंचा तो दीवानखाने में एक कोने में जालीदार परदा लटका कर बिल्कीस बेगम मेरे सामने पहुंचीं. बारीक जाली से मुझे उन का संगमरमरी रंग और गठा हुआ मुलायम, सुडौल शरीर दिखाई दे रहा था. आयु का अनुमान करें हुए तो अपरिपक्व अवस्था में भी मेरे दि
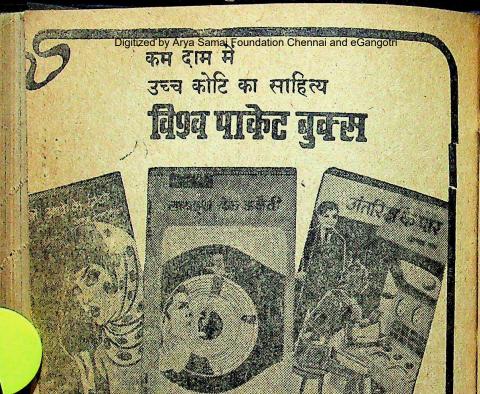
...आंखों के दायरे

आनंद सागर श्रेष्ठ

...ौकत महल, जो बाहर ...तना बड़ा था उतना ही ...से भी विशाल और ...पूर्ण था. फिर जब इस ...महल के मालिक की ...नाटकीय ढंग से हत्या ...गई तो महल का रहस्य ...ी गहरा हो गया. आखिर ...त्या किसने की? रहस्यों ...रपूर एक रोमांचक ...स

रु. 3

लायड्स बैंक डकैती

तपन घोष

ईसान के हाथों होने वाले अपराधों की सच्ची कहानियों का संकलन, जिसकी जघन्यता दिल हिला कर रख देती है. कल्पना के जोर पर पेश किए जाने वाले अपराधों की मनगढ़ंत घटनाओं से कोसों दूर यह वास्तविक घटनाएं रहस्य रोमांच की काल्पनिक अपराध कथाओं से कहीं ज्यादा सनसनी खेज व रोचक हैं.

रु 3.

अंतरिक्ष के पार

कैलाश शाह

मानव निर्मित कंप्यूटर हैरोकोल्ट-7 जिसने पृथ्वी की अंतरिक्ष के पार मानव सभ्यता का बीजारोपण करने के अकल्पनीय काम का बीड़ा उठाया और अपने सिद्धान्तों को कार्य रूप देने में वह सफल भी हो गया. लेकिन इस महान शक्तिशाली 'सर्वज्ञ' को भी मानव के हाथों मात खानी पड़ी. आखिर था तो वह एक कंप्यूटर ही.

रु 3

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

पर जैसे आरी चलने लगी थी. कुल मिला कर शायद वह अट्ठारह या उन्नीस की हो सकती थीं.

तकियाखाने के कर्मचारियों से परदे का रिवाज महलसरा में कहीं नहीं था. वहां भी जाता, आमनेसामने बैठ कर बातें होतीं. उन में प्रौढ़ भी थीं, युवा भी और कमसिन भी. बातें करते समय उन की चंचल आंखों में कैसा भाव रहा करता, मैं ने कभी महसूस करना आवश्यक न समझा. लेकिन बिल्कीस बेगम के सामने बैठा उन के हलके दबे स्वर और झिझकती बातों से लगा जैसे मुझ से बोलना उन के मन के विरुद्ध रहा हो.

मैं ने चंद शब्दों में हकीम साहब की पूरी कहानी सुनाई. हकीमजी मेरे मिलने से पहले ही बिल्कीस बेगम से मिल चुके थे. सुन कर बेगम ने पूछा, "आप मुझे क्या मदद करने को कहते हैं? फूफा भी मुझ से कह गए हैं. फरमाइए."

मैं ने बिल्कीस बेगम की मीठी आवाज का जायजा लेते हुए उत्तर दिया, "मैं ने एक तरकीब सोची है, बेगम हुजूर. बाहर मरदाने में खासे में उस पर अमल करना मुनासिब नहीं होगा. आप की इजाजत हो तो कहूं."

उन की अनुमति मिलने पर मैं ने अपनी तरकीब बयान की. परदे के पीछे से झांकती आंखों में आकुलता और भय छलक उठा. बहुत देर तक तो वह तर्क करती रहीं और तैयार न हुईं. लेकिन जब अंत में मैं ने तमाम जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेना मंजूर किया तो धीमे से बोलीं, "अच्छा मियां, जैसा कहते हैं करूंगी. लेकिन आप को बड़े नवाब के गुस्से का खौफ नहीं."

मैं ने आहिस्ता से कहा, "बेगम हुजूर, जब किसी की मदद करनी हो तो खतरा उठाना ही पड़ता है. लेकिन मुझे यकीन है कि बड़े नवाब इशारा समझ जाएंगे और आप से कुछ न कहेंगे."

दूसरेतीसरे दिन ही बिल्कीस बेगम ने मुझे बुलवा भेजा. आज भी परदा ज्यों का त्यों था. खवासनियां वहीं पास खड़ीखड़ी हमारी बात सुन रहे थे. उन की आवाज में खुशी और प्रशंसा का मिलाजुला भाव था. बोलीं, "आप ने तो वाकई कमाल किया. बात बन गई. बड़े सरकार ने आप का मतलब ताड़ लिया और हंसते हुए मुझ से तरकीब बताने वाले का नाम पूछा. मैं तो चुप रही लेकिन हकीम साहब ने आ कर बता दिया. उन्होंने हकीम साहब को तो मुआफ कर ही दिया, आप की भी बड़ी तारीफ की."

मुझे बिल्कीस बेगम की मीठी बातों में बड़ा आनंद आ रहा था. वह तमाम घटना ब्यौरेवार बताती चली गईं.

दोपहर के भोजन के समय उन्होंने बड़े सरकार से कहा था, "हकीम साहब ने सरकार की भूख बढ़ाने के लिए कुछ तजवीज नहीं किया, इजाजत हो तो मैं एक इलाज अर्ज करूं." नवाब साहब ने अनुमति दी तो आगे कहा, "मेरे मरहूम चाचा को भी यह बीमारी हुई थी. तब दिल्ली के एक हकीम ने उन्हें बताया था कि रोज दोपहर के खाने के वक्त नजदीक एक बड़ा बरतन रख कर तब खाना चाहिए. एक निवाला मुंह में रखा जाए और एक बरतन में डाला जाए. खाने के बाद जरा सी सौंफ मुंह में डाल ली जाए और उस का अर्क चूस कर उसी बरतन में थूक दिया जाए. चाचा मरहूम इसी इलाज से चारपांच दिन में ठीक हो गए थे."

बिल्कीस बेगम ने बताया कि पहले तो नवाब हुजूर इस तरकीब के लाभकारी होने पर शक करते रहे लेकिन बिल्लौरी आंखों वाली नई बेगम के आग्रह पर तैयार हो गए. उसी दिन एक बरतन पास रखवा कर बिल्कीस बेगम ने तरकीब पर अमल शुरू कर दिया. खाना खाने के बाद जब सौंफ थूकने के लिए बरतन का मुंह खोला गया तो बड़े सरकार चौंके. एकएक निवाला कर के उस में जितना सामान इकट्ठा हुआ था, यदि उतना ही उन्होंने खाया था तो फिर भूख कम कहने का साहस कौन करेगा. उ

...न तो कुछ नहीं बोले, लेकिन अगले दिन ...ब फिर बरतन के निवाले को देखा ...ो जोर से खिलखिला कर हंसे और ...ल्कीस की ठोड़ी पकड़ कर ऊपर उठाते ...ए बोले, "हम बड़े खुश हैं बेगम. कौन ...हता है कि हमारी भूख कम है? कितनी ...मदा तरकीब निकाली है तुम ने?"

...ल्कीस बेगम ने बाल कंधों पर से उतारते हुए कहा, "यह तर...ीब नहीं, इलाज है. मुझे हकीम साहब ने ...ताया था जो आप से कहते झिझक रहे थे."

बड़े सरकार ने आज्ञा दी, "कहां है ...कीम का बच्चा. हमारे सामने पेश करो. ...रामखोर ने हम से नहीं कहा."

हकीम साहब कांप रहे थे, जब बड़े ...रकार के सामने पहुंचे. लेकिन वहां तो ...ा ही दूसरा था. बड़े सरकार ने उन की ...कीब का मूल प्रेरक कौन था, जानना ...हा. हकीम साहब जान बचाने के ...ए तुरंत बता बैठे. चंदर का नाम सुनते ... नवाब हुजूर ने भयानक ठहाका लगाया ...र कहा, "हरखू का भतीजा? वाकई ...ब का होशियार है. अब वह हमारी ...स खिदमत में हरखू के साथ ही रहा ...रेगा. फरमान जारी किया जाए."

और इस घटना के साथ ही मेरे ...वन में एक नया परिवर्तन करवट लेने ...ा. मैं नवाब हुजूर का खास खिदमतगार ...ा दिया गया. मेरा ओहदा खास जमादार ... दिया गया. मेरी तनख्वाह में भी एक ...थ पांच रुपए बढ़ा दिए गए.

कालक्रम से रमजान शरीफ का महीना ... महीने के अंत में आता है. अर्थात ... का प्रसिद्ध त्यौहार चौदह सालों में ... वर्ष का चक्कर लगाता रहता है. उन ...ों तपती दोपहरी में जेठ के महीने ... रमजान शरीफ पड़े और फिर आई ... से अधिक अविस्मरणीय ईद. उस का ...रा दिए बिना आगे बढ़ जाना कथा ... साथ अन्याय सा हो जाएगा.

दोपहर का खासा बंद था. पूरे किले ... जीवन दोपहर भर ध्वस्त सा पड़ा ...ता. स्वयं बड़े सरकार और उन का पूरा परिवार रोजों का पाबंद रहा करता. तिस पर झुलसाने वाली धूप पड़ रही थी, इसलिए वे लोग दोपहर भर खसखस की टट्टियों में बंद छतपंखियों की हवा में आराम फरमाते अथवा सोए रहते. चारों ओर सन्नाटा छा जाता. हरखू चाचा अथवा मेरे अलावा शेष नौकर भी अपनेअपने क्वार्टरों में वापस चले जाते. बावर्चीखाना जरूर दिन भर काम में लगा रहता क्योंकि आम तौर पर इक्तियारी के कुछ देर बाद ही खासे का हुक्म आ जाता.

पुरबिया हाट की ईद तो मैं कभी भी न भुला सकूंगा. रियासती दौर में मानो पूरे शहर में विवाह जैसी उत्सुकता और तैयारी नजर आती थी. स्वयं बड़े सरकार इसे चाव से मनाते थे. तोशाखाना, फराशखाना, जवाहरखाना, कहीं भी चले जाइए, मालूम होगा जैसे किसी भारी जश्न की तैयारी की जा रही है. कहीं दर्जी कपड़े सी रहा है तो कहीं जूते बन रहे हैं तो कहीं सिवैयां बनाने वाले अपना कमाल दिखा रहे हैं. ईद के दिन किले के मैदान में आम दरबार की तैयारी के लिए कहीं कनातें नई हो रही हैं, कहीं शामियानों की सजावट का सामान किया जा रहा है तो कहीं बेगमात के लिए नए जवाहरातों की खरीद-फरोख्त की जा रही है. कहने का तात्पर्य यह कि हर साल ईद आती और पुरबिया हाट के खजाने में हजारों का रीता करती वापस लौट जाती. 'रेनबो' की दुनिया में हंसीखुशी का संसार करवटें लेने लगता जिस में बड़े सरकार खुद डूब से जाते.

—क्रमशः

अगले अंक में :

हमेशा जश्न मनाने वाले बड़े सरकार की सारी खुशियां हवा क्यों हो गईं? इस साल का ईद का त्योहार अविस्मरणीय क्यों हो गया?

● मेरी उमर 24 वर्ष है. दो बच्चे भी हैं. मेरे पति ने, जो सरकारी नौकरी में मुझे बिना बताए, परिस्थितिवश एक अन्य लड़की से कोर्ट मैरिज कर रखी है, जिस से अब एक पुत्र भी है. मैं शिकायत करती हूं तो कहते हैं, 'तुम भी साथ रह सकती हो.' पर मुझे यह मंजूर नहीं है. आप ही कोई परामर्श दें, क्या करना चाहिए?

—क. ख. ग., इटावा

आप के पति के साथ परिस्थिति कोई भी रही हो, वह एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह नहीं कर सकते. करें तो उन की सरकारी नौकरी भी जा सकती है और वह कानून की गिरफ्त में भी आ सकते हैं. इसलिए लगता नहीं उन्होंने कोर्ट मैरिज की हो. उस लड़की को न छोड़ सकने के कारण आप से ऐसा कह देते हों शायद. यदि यह सच है तो आप का अधिकार अपनी जगह कायम है और आप अपने अच्छे व्यवहार से उसे वापस पा सकती हैं.

यदि कोर्ट मैरिज की बात सच हो तो आप कानून का सहारा ले सकती हैं. दोनों स्थितियों में पति को पाने के लिए उन का विश्वास जीतना तो आप के लिए जरूरी है ही, अन्यथा कानूनी कारवाई से उन का दूसरा विवाह स्थगित करवा कर भी आप उन्हें पा नहीं सकेंगी. यदि यह संभव न हो तो इसी आधार पर स्वयं तलाक लेने के बारे में सोच सकती हैं. यद्यपि उस के बाद भी बच्चों के साथ जीवनयापन करने या दूसरा विवाह करने में आप को कठिनाई आएगी. इसलिए अच्छा होगा यदि आप इस बारे में पति के किसी समझदार बुजुर्ग रिश्तेदार की सलाह से चलें. साथ ही आप को शीघ्र आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़े होने की भी कोशिश करनी चाहिए.

● मैं हमेशा अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण होता रहा हूं, इस आशा व अपेक्षा से कि उच्च अधिकारी बन सकूं. पर उच्च जाति का होने के कारण न तो पढ़ाई में मुझे कोई सरकारी सहायता मिली, न किसी चुनाव प्रतियोगिता में चुना गया, न ही नौकरी के लिए 'सुरक्षित स्थान' पा सका हूं? क्या मैं अपनी जाति बदल सकता हूं? क्या किसी विदेशी सरकार की सहायता से अपनी आकांक्षाओं को साकार कर सकता हूं?

—क. ख. ग., घामपुर

आप की निराशा का कारण उच्च महत्वाकांक्षा है, जाति नहीं. एकदम उच्च अधिकारी बनने का स्वप्न न देख कर पहले छोटी नौकरी स्वीकार कर लीजिए व फिर अपनी योग्यता व मेहनत के बल पर तरक्की पाने की सोचिए. किसी 'शार्ट कट' से आगे जाने वाले प्रायः असफल ही रहते हैं. फिर जाति बदलने का मोह क्यों? पिछड़े वर्गों को प्राप्त यह सुविधा भी, हमारी राय में, अब आजादी के 27 साल बाद समाप्त होनी चाहिए. आप आर्थिक स्वार्थ के लिए अनुचित रास्ते से पिछड़े वर्ग में क्यों शामिल होना चाहते हैं?

विदेशी सहायता के लिए अपने विदेशी मित्रों और संबंधित दूतावासों से संपर्क कीजिए.

● कुछ समय पूर्व एक लड़के से मेरा प्रेम संबंध था. फिर वह यहां से चला गया. जाने से पूर्व मैं ने अपने अधिकांश प्रेमपत्र वापस ले लिए थे. फिर भी शायद कोई पत्र उस के पास हो. मुझे भय है, वह मेरा भविष्य बिगाड़ने में कहीं उन का उपयोग न करे. क्या मुझे मातापिता को यह बात बता देनी चाहिए? —क. ख. ग., मेरठ

यदि वह चुपचाप वहां से चला गया है और अरसे से आप का परस्पर कोई संबंध नहीं है तो आप इस बात को भूल जाइए. यदि जाते समय आप के द्वारा प्रेमपत्र वापस लिए जाने पर उस ने कोई बुरी उद्गार प्रकट किए हैं या धमकी दी है तो मातापिता को बता कर इस का समाधान निकालना ही ठीक होगा. —नीरजा ●

अद्भुत सादगी

यदि आप अपनी मनपसंद मैक्सी चाहती हैं तो इन में से कोई एक चुन लीजिए, जो आप के रंगरूप में निखार ला देगी. इन की चमकदमक से आप का कौमार्य खिल उठेगा. हां, यदि सही रंग के चुनाव में कोई दिक्कत हो तो आप हलका गुलाबी, गहरा काला या लाल रंग चुनिए. ये ऐसे आकर्षक रंग हैं कि आप की समस्या हल कर देंगे.

लीजिए,
मायें खिल
वी, गहरा
कर देंगे.

चित्रावली
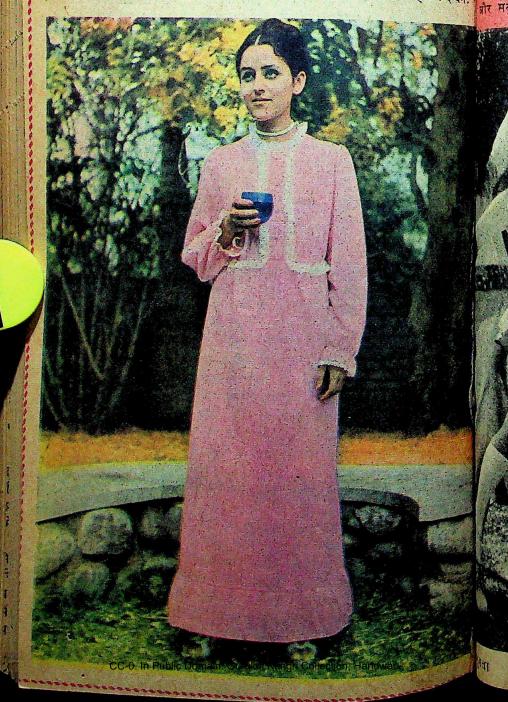
जी, यह कोई हसीनों की परेड नहीं है, बल्कि ये सब कनाडा के संगीतकार वोस परिवार के सदस्य हैं, जिन्होंने हाल ही में 'वाट ए डे' नामक अपने कार्यक्रम में दूरदराज से आए किशोरकिशोरियों का मन मोह लिया. इन 11 बहनभाइयों में सब से बड़ा और मुख्य गायक टिम वोस और सब से छोटा सात वर्षीय पाल है.
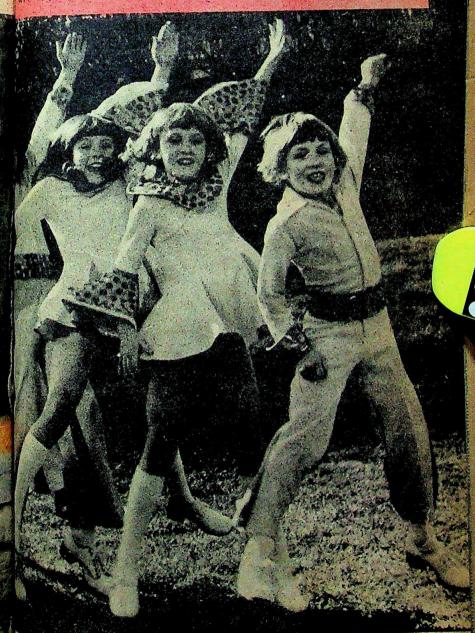
प्राचीनता में सौंदर्य

आज
ढके
पहन

हुआ

जुल

मुक्ता
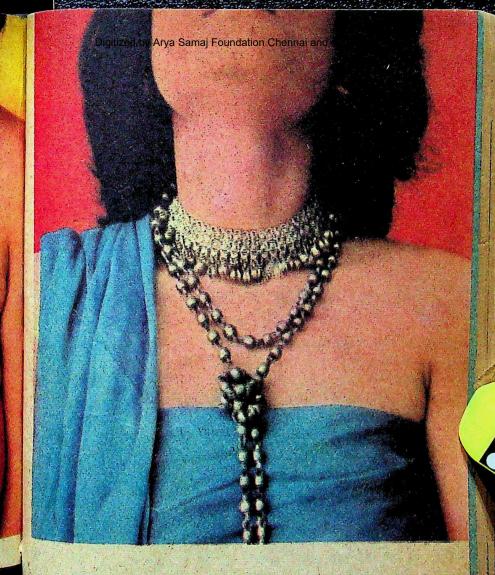
फैशन की दुनिया में पहले साधारण आभूषण पहनने का रिवाज था. किंतु आज उन की जगह प्राचीन शैली के भारी गहनों ने ले ली है. आप जब इन्हें बिना ढंके कंधों पर पहनेंगी तो यह आप के सौंदर्य को और भी बढ़ा देंगे तथा इस से आप के पहनने की सुरुचि भी जाहिर हो जाएगी.

गुलूबंद के साथसाथ गुंथी हुई माला या पुराने सिक्कों से बने नेकलेस में पिरोया हुआ हृदय के आकार का पेंडल सभी की नजरों को आप पर टिका देगा.

अगर रंगबिरंगी मणियों से गुंथे हुए चांदी के झुमकों के साथ उन्हीं से मिलती-जुलती एक अंगूठी भी हो तो बस, आप के व्यक्तित्व में निखार आ जाएगा.

केंस ने भारतीय फिल्में ठुकराईं

भारत की ओर से केंस फिल्म महोत्सव के लिए चार फिल्में सरकारी तौर पर भेजी गई थीं. अब पता चला है कि वहां की चुनाव समिति ने चारों फिल्में रद्द कर दी हैं.

प्रतियोगिता के लिए ऋत्विक घटक की फिल्म 'जुक्ति, टक्को आर गप्पो' (बंगाली) केवल एक फिल्म भेजी गई थी जिसे प्रतियोगिता में सम्मिलित होने से रोक दिया गया है. यह हमारी चुनाव समिति के मुंह पर एक करारी चपत है. हमारे यहां प्रतियोगिता में भेजते समय फिल्मों का स्तर नहीं देखा जाता, बल्कि पक्षपात से काम लिया जाता है. अपने देश में तो हम जैसी चाहें धांधली मचा सकते हैं, लेकिन दूसरे देश हमारी धांधलियां या मूर्खताएं क्यों बरदाश्त करें?

केंस चुनाव समिति ने हमें प्रतियोगिता में शामिल होने से रोक कर ही बस नहीं की. भारत ने निर्देशक सप्ताह में दिखाने के लिए गिरीश कर्नाड की फिल्म 'काडू' भेजी थी, केंस अधिकारियों ने इसे भी स्तर के अनुकूल नहीं पाया और अस्वीकृत कर दिया. यह भारतीय फिल्म महोत्सव निदेशालय के साथ भारतीय राष्ट्रीय पुरस्कार समिति के मुंह पर भी करारी चपत है. सरकार ने अभी पिछले ही वर्ष इस फिल्म को द्वितीय श्रेष्ठ फिल्म के लिए राष्ट्रपति का रजत पदक प्रदान किया था. स्मरण रहे, यह फिल्म भारतीय फिल्म महोत्सव में कोई पुरस्कार नहीं जीत सकी थी. इस से यह भी प्रकट होता है कि हमारी सरकार जिन फिल्मों को पुरस्कार देती है, उन की वास्तविकता कुछ और ही होती है.

केंस महोत्सव में फिल्म समीक्षक सप्ताह के अंतर्गत दिखाने के लिए मणि कौल की फिल्म 'दुविधा' भेजी गई थी. इसे भी अस्वीकृत कर दिया गया है. इसे पिछले वर्ष भी केंस में ही निर्देशक सप्ताह के अंतर्गत दिखाने के लिए भेजा गया था, और तब भी इसे अस्वीकृत कर दिया गया था. एक बार अस्वीकृत फिल्म को दोबारा भेजना हमारी चुनाव समिति की मूर्खता ही कहा जा सकता है. अगर इसे मूर्खता नहीं कहा जाए तो इस समिति में जरूर भ्रष्टाचार पनप रहा है.

इन के अतिरिक्त मणि कौल द्वारा निर्देशित एक लघु फिल्म 'द नोमाड पप्पेट्स' भेजी गई थी. इसे भी स्तर के अनुकूल न पा कर अस्वीकृत कर दिया गया है. भारत की ओर से भेजी गई सभी

(बाएं)

निगम के
कर विदे
जहां इन
किया ज
अधिकारि
तरह इस
ने इन फि
और पेनि
लिया है.
बेरहम ह

फांस
पूर्णत: ह
बिना सैंस
सूचना

(बाएं) फिल्म 'अजब तेरी सरकार' में जयश्री. टी., असरानी और पेंटल, (ऊपर) 'कानून' में अमिताभ बच्चन, वहीदा रहमान और आरती.

निगम के अधिकारी ये लचर फिल्में ले कर विदेशों के दौरों पर निकल जाते हैं, जहां इन फिल्मों के प्रदर्शन का प्रचार किया जाता है और सरकारी खर्च पर ये अधिकारी गुलछर्रे उड़ाते हैं. गत वर्षों की तरह इस बार भी निगम के अधिकारियों ने इन फिल्मों के प्रदर्शन के बहाने लंदन और पेरिस में पिकनिक का प्रोग्राम बना लिया है. मुफ्त का माल हो तो दिल बेरहम हो ही जाता है.

फ्रांस में सेंसर हटा

फ्रांस सरकार ने फिल्मों से सेंसर को पूर्णत: हटा लिया है. अब वहां पर फिल्में बिना सेंसर करवाए ही रिलीज की जा सकेंगी. विदेशों से आयात की गई फिल्में भी सेंसर से मुक्त होंगी. हां, टेलीविजन फिल्मों पर कुछ सीमा तक सेंसर की कैंची चल सकेगी.

'अजब तेरी सरकार'

'अजब तेरी सरकार' फिल्म का निर्देशन राजेंद्र भाटिया कर रहे हैं. फ़िल्म का संगीत लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने दिया है, गीत सीहिर के हैं तथा पिलगांवकर की कहानी की पटकथा सचिन भौमिक ने लिखी है. संवाद सरहदी ने लिखे हैं. फिल्म के मुख्य कलाकार नूतन, विनोद मेहरा; रीना राय और असरानी हैं. ●

ये लड़के

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : ये लड़के, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● लड़कियों के कामन रूम में लड़कियां बैठी बातें कर रही थीं. एक लड़की का कद काफी छोटा था. उस ने अपनी सहेलियों से कहा, "मैं कौन सा उपाय करूं जिस से मेरा कद बढ़ जाए?"

बाहर खड़े लड़कों के झुंड में से एक ने बरामदे पर आ कर कहा, "आप अपना नाम 'महंगाई' रख लें."

यह सुनते ही सारे लड़केलड़कियां तो हंसने लगे पर उस बेचारी की सूरत देखने लायक थी.

—अरुणकुमार, सहरसा

● एक बार हम छः लड़कियां फिल्म देखने गईं. सिनेमा हाल पहुंचने पर पता चला कि हाउस फुल हो चुका है. हम वापस आने को मुड़ी ही थीं कि काउंटर क्लर्क ने हमें पास बुला कर कहा, "अगर आप को चार टिकटें चाहिए तो मैं दे सकता हूं."

क्योंकि हम छः लड़कियां थीं, हम ने चार टिकटें लेने से मना कर दिया. इस पर वह बोला, "अगर मैं आप को छः टिकटें दे दूं तो?"

इतने में ही मेरी एक सहेली बीच में बोल पड़ी, "नेकी और पूछपूछ?"

उस का इतना कहना था कि उस ने हमें छः टिकट दे दिए और कहा, "फिर जरूरत पड़े तो बंदा हाजिर है. बस, अपनी पहचान बता दीजिएगा, 'नेकी और पूछपूछ.'"

अब हम में से जब भी कोई वहां जाती है तो अपनी पहचान बता कर टिकट ले लेती है और वह मिस्टर हमारे जाने और वापस आने की राह तकते हैं.

—अनीता भार्गव, नई दिल्ली

● बस में आठदस लड़के आपस में इस बात पर वादविवाद कर रहे थे कि एम. पी. से क्या बनता है.

एक लड़के ने कुछ सोच कर कहा, "मेंबर्स आफ पार्लियामेंट."

दूसरे ने कहा, "नहीं, मध्य प्रदेश."

इसी तरह बड़े जोर से बहस चल रही थी कि इतने में बस अगले स्टाप पर रुकी और एक छोटे से कद की सुंदर सी लड़की भी उसी बस पर चढ़ी. उसे देखते ही तीसरा लड़का तपाक से बोला, "मैं बताऊं, एम. पी. से बनता है 'पर्सनलिटी.'"

लड़की तो झेंप गई पर लड़कों ने एक जोरदार ठहाका लगा दिया.

—वीना कालड़ा, नई दिल्ली

● रसायनशास्त्र का पीरियड था. हमारी कक्षा के छात्र प्रायः इस पीरियड में बाहर गैलरी में देखते रहते थे. गैलरी में अकसर एम. एससी. की छात्राएं आती रहती थीं. दो लड़कियां गैलरी में हो कर जा रही थीं. प्रोफेसर साहब बोर्ड पर नोट्स लिख रहे थे. इतने में किसी छात्र ने खिड़की से पेन का ढक्कन उन लड़कियों पर

फेंका. वह ढक्कन एक लड़की के कंधे से टकरा कर गिर गया. वे लड़कियां बिना कुछ कहे सीधी चली गईं.

कुछ देर बाद वह छात्र ढक्कन उठाने के लिए कमरे से निकल कर गैलरी में आया. जैसे ही वह ढक्कन उठाने के लिए झुका, उस पर चाक के टुकड़ों व बालू की बौछार होने लगी. उस ने नजर उठा कर देखा तो वे ही दोनों लड़कियां अपनी और कई सहेलियों के साथ पास खड़ी हुई चाक आदि फेंक रही थीं. रेत उस के बालों व आंखों आदि में भर गई थी. इस पर वह लड़का ढक्कन वहीं छोड़ कर भाग गया. उसे भागते देख कर लड़कियों में एक जबरदस्त कहकहा लगा.

—रवींद्रकुमार, खरखौदा

● एक दिन हमारे अंगरेजी के अध्यापक हमें 'फारगैटिंग' पाठ्य पुस्तक का एक पाठ पढ़ा रहे थे. वह बता रहे थे कि मनुष्य क्या चीजें अधिक भूलता है और क्यों भूलता है?

उन्हीं दिनों हमारे प्रैक्टिकल समाप्त हो जाने के कारण आठ की जगह पांच पीरियड लगते थे. जब आठ पीरियड लगते थे तब उन अध्यापक के दिन में दो दिन पीरियड लगते थे, पर पांच पीरियड लगने के कारण एक ही पीरियड लगा करता था.

वह पाठ समाप्त कर चुके थे, पर अभी पीरियड लगने में कुछ देर थी. तभी उन्होंने पूछा, "क्या आज मेरा दूसरा पीरियड भी है?"

लड़कों ने कहा, "आजकल तो सिर्फ पांच पीरियड ही लगते हैं."

अध्यापक ने कहा, "ओह, सारी!"

"फारगैटिंग," तभी एक लड़का बोल उठा.

इतना सुनते ही कक्षा में एक जोरदार ठहाका लगा और वह शिक्षक भी हंसने लगे.

—पंकजकुमार, गाजियाबाद

● हमारे कालिज में प्रथम वर्ष में 'इंजीनियरिंग कम्युनिकेशन मेथड' का पीरियड प्रधानाचार्यजी लेते हैं. उन का पीरियड हफ्ते में सिर्फ एक ही बार होता है.

एक बार उन्होंने घर से एक आवेदनपत्र लिख कर लाने को दिया, जिस में सार्वजनिक निर्माण विभाग, लखनऊ के चीफ इंजीनियर को जूनियर इंजीनियर के पद के लिए आवेदन करना था.

अगले हफ्ते जैसे ही उन्होंने कक्षा में प्रवेश किया, एक छात्र उठा और उन के हाथ में टाइप किया हुआ एक कागज थमाते हुए कहने लगा, "सर, मेरे लिए चीफ इंजीनियर, लखनऊ से इंटरव्यू लेटर आया है. कृपया मुझे डिप्लोमा दे दीजिए.

प्रधानाचार्यजी ने आश्चर्य से कागज की ओर देखा तो वह अपनी हंसी को न रोक सके.

दरअसल छात्र ने आवेदनपत्र वास्तव में चीफ इंजीनियर को लखनऊ भेज दिया था और उसी का परिणाम यह पत्र था. यह जान कर प्रधानाचार्यजी के साथ-साथ अन्य छात्रों को भी हंसी आ गई.

—बिपिनचंद्र, नैनीताल

● पी. एन. रेड्डी नामक एक छात्र ने श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी कालिज में बी. एससी. की जाली अंक सूची के आधार पर एम. एससी. में प्रवेश लिया. बी. एससी. में प्रवेश भी उस ने प्री-यूनिवर्सिटी की जाली अंक सूची के आधार पर ही लिया था. उसे प्रति वर्ष 800 रुपए की छात्रवृत्ति भी मिलती रही.

पकड़े जाने पर उसे तीन वर्ष के कठोर कारावास का दंड दिया गया है.

—वीर अर्जुन, नई दिल्ली (प्रेषक : कुलदीपचंद, देहरादून) ●

याद आता प्यार पहला
बरसती है जब कभी
याद आता प्यार पहला,
और सोंधी गंध जब उड़ती
कसक उठती है रुपहली रात
जब महकती हर पसीने की लड़ी
तपन धरती की जवानी पर चढ़ी थी,
धूल अंधड़ में चमकती बिजलियों सी,
कौंधती है बादलों की प्यास पहली.
कौन मदहोश हवाओं से घिरी थी,
कौन जाने फिर कहां बिजली गिरी थी?
भाग कर भी भीग जाता हाय रे, मन,
खा गया तू जिंदगी में मात पहली.
कौन जाने उस कसक को जो न बोले,
कौन बहकी नींद का आंचल टटोले?
आह, पहले प्यार की वह बूंद ही थी
मिल न पाई आज तक सौगात पहली.
आज फिर अंधड़ उठे अधरात में,
आज फिर बादल घिरे किस बात में?
चीरती है प्यार का यह दामिनी सी,
हाय, बेसुध कर गई उच्छ्वास पहली.
हो गया पहलेपहल खामोश मौसम,
फिर हवाएं तेज, फिर तूफान का दम,
फिर मचलती रात की आंखें हुईं नम,
कह न पाई टीस जो थी, आज कह
—वीरा

जमीर
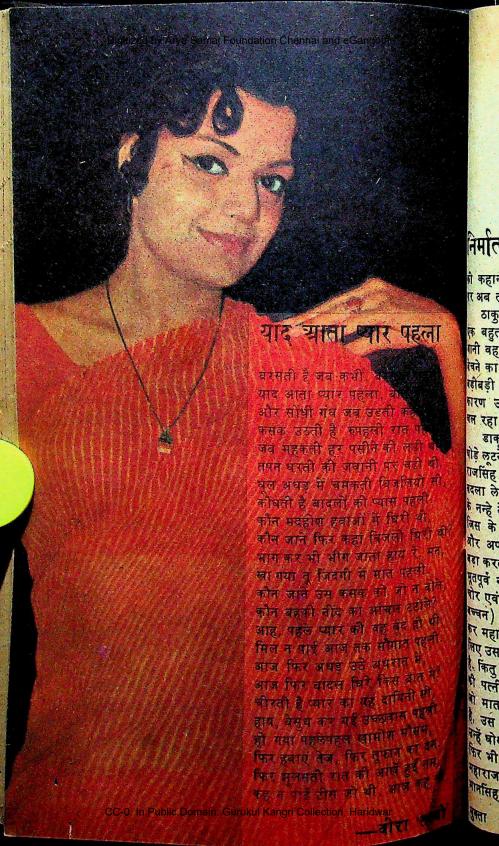
एक आम बंबइया फिल्म...

निर्माता बलदेवराज चोपड़ा ने 'जमीर' में बचपन में गायब हुए बच्चे की कहानी को आधार बनाया है, जिस पर अब तक अनेक फिल्में बन चुकी हैं.

ठाकुर महाराजसिंह (शम्मी कपूर) एक बहुत बड़े स्टड फार्म का मालिक है यानी वह घोड़ों को पालने, सिधाने और बेचने का व्यापार करता है. उस के घोड़े बड़ीबड़ी रेसों में प्रथम आते हैं, जिस कारण उस का घोड़ों का व्यापार खूब चल रहा है.

डाकू मानसिंह (मदन पुरी) का दल घोड़े लूटने आता है कि उस का बेटा महाराजसिंह की गोली से मारा जाता है. बदला लेने के लिए मानसिंह महाराजसिंह के नन्हे बेटे चिंपू को उठा ले जाता है, जिस के कंधे पर त्रिशूल का निशान था और अपने बेटे की तरह उसे पाल कर बड़ा करता है. उधर महाराजसिंह का एक भूतपूर्व नौकर रामसिंह (रमेशदेव) एक चोर एवं आवारा युवक बादल (अमिताभ बच्चन) के कंधे पर नकली त्रिशूल बना कर महाराजसिंह की दौलत हथियाने के लिए उस का नकली बेटा बना कर भेजता है. किंतु बादल को महाराजसिंह और उस की पत्नी रुक्मिणी (इंद्राणी मुखर्जी) से भी मातापिता का अथाह प्यार मिलता है. उस से उस का जमीर यानी आत्मा उन्हें धोखा देने की गवाही नहीं देती. किंतु फिर भी रहस्य खुल जाता है और बादल महाराजसिंह के असली बेटे सूरज को मानसिंह के चंगुल से छुड़ा कर उन के हवाले करता है.

जमीर की यह कहानी इतनी घिसीपिटी है कि फिल्म के आरंभ में ही जब नन्हे बच्चे के कंधे पर त्रिशूल का निशान दिखाया जाता है तो दर्शक पूरी कहानी का अंदाजा लगा लेता है. कहानी के अंदर भी कोई नई बात नहीं दिखाई जाती. केवल घोड़ों के कार्य कुछ नवीनता लिए हुए हैं. महाराजसिंह और बादल को बहुत ही निपुण घुड़सवार दिखाया है, लेकिन जब भी किसी खतरनाक घोड़े के साथ इन के दृश्य लिए गए हैं तो घोड़े और इन के क्लोज शाट्स अलगअलग फिल्मा कर जोड़ दिए गए हैं या दूर ले जा कर डबल से काम लिया गया है.

कहानी के कुछ सूत्र बहुत कमजोर हैं. महाराजसिंह का बेटा जब गुम होता है तो, और जब मिलता है तो, दोनों बार समाचारपत्रों में मुख्य सुर्खी के रूप में यही समाचार दिखाया है. ऐसा अंगरेजी और हिंदी दोनों भाषाओं के अखबारों में दिखाया है, जब कि यह खबर इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं थी. फिर जब भी कहानी को जरूरत पड़ी है, डाकू मानसिंह को अखबार पढ़ते दिखाया गया है जो बड़ा अजीब लगता है. फिल्म की कहानी और भी कई पक्षों से कमजोर है.

फिल्म के नायक बादल की भूमिका में अमिताभ बच्चन उपयुक्त रहा है. यह भूमिका कुछ खुरदरी है, जिसे अमिताभ ने बड़ी खूबी से निभाया है. उसे रोमांटिक भूमिका भी निभानी पड़ी है और गीत भी
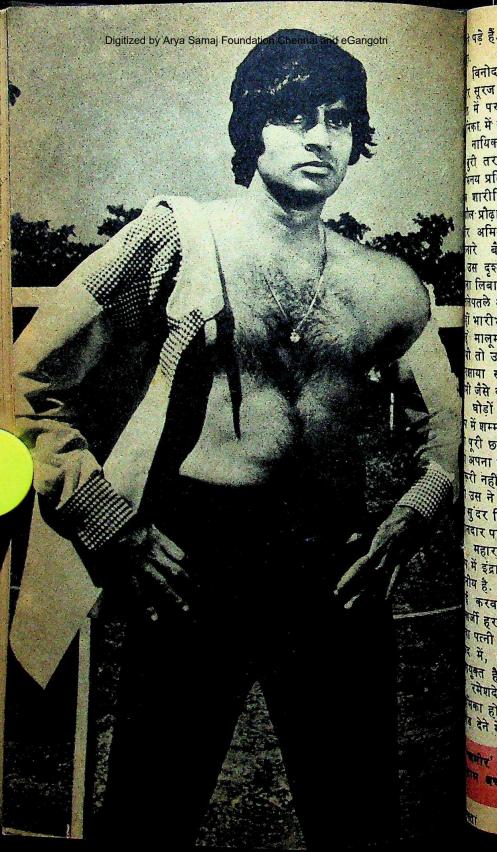
पड़े हैं. इन में भी वह असफल नहीं है.

विनोद खन्ना मेहमान कलाकार है सूरज की भूमिका में वह फिल्म के में परदे पर आता है. वह अपनी भूमिका में साधारण रहा है.

नायिका सायरा बानो स्मिता के रूप पूरी तरह असफल रही है. उस में अभिनय प्रतिभा तो पहले ही नहीं थी, शारीरिक रूप में भी वह अत्यंत प्रौढ़ा लगती है. एक दृश्य में वह अमिताभ एक झरने या नदी के किनारे बैठे पानी में कंकड़ फेंकते उस दृश्य में सायरा को बाजुओं के बिना लिबास पहनाया है. उस में उस के दुबलेपतले बाजू और उस के मुकाबले में भारीभरकम वक्ष व जिस्म बहुत ही मालूम देते हैं. समीप के शाट्स में तो उस का चेहरा एकदम मोटा या मुरझाया सा मालूम देने लगता है तो जैसे वह बुढ़िया हो गई हो.

घोड़ों के व्यापारी महाराजसिंह के रूप में शम्मी कपूर में अपने पिता पृथ्वीराज की पूरी छाप मालूम देती है. शम्मी कपूर का अपना एक अलग ही अंदाज है जो सभी नहीं सभी को पसंद आए, पर फिर भी उस ने कुछ भावुकतापूर्ण शाट बहुत सुंदर दिए हैं और वह फिल्म का एक जानदार पात्र है.

महाराजसिंह की पत्नी रुक्मिणी के रूप में इंद्राणी मुखर्जी का अभिनय उल्लेखनीय है. दुखसुख से मिश्रित यह भूमिका कई करवटें बदलती है और इंद्राणी मुखर्जी हर अंदाज में प्रभावित करती है. पत्नी के रूप में वह आकर्षक है तो बाद में, एक मां के रूप में भी वह उपयुक्त है. घरेलू नौकर रामसिंह के रूप में रमेशदेव साधारण है. साधारण सी भूमिका होते हुए भी कहानी को विशेष मोड़ देने में इस का विशेष महत्त्व है.

'ज़मीर' में बादल के रूप में अमिताभ बच्चन: हर भूमिका को चुनौती

डाकू नेता मानसिंह के रूप में मदन पुरी है. वह मेकअप से तो डाकू मालूम देता है, लेकिन अन्य किसी भी पक्ष से डाकू के अनुरूप नहीं रहा. महाराजसिंह के हाथों मानसिंह के बेटे की हत्या हो जाती है. बदला लेने के लिए मानसिंह उस के सोए हुए नन्हे बेटे चिंपू को उठा लाता है. शुरू में यह दृश्य दिखाया गया है. बाद में फ्लैश बैक में यह दृश्य फिर विस्तार से दिखाया गया है और व्यर्थ है.

सदा की तरह इस बार भी निर्माता चोपड़ा ने साहिर के गीत दिए हैं. लेकिन साहिर अब एक चला हुआ कारतूस है, उस के गीत किसी भी फिल्म की असफलता की गारंटी हैं. और 'जमीर' को भी ले डूबे हैं.

सपन चक्रवर्ती का संगीत साधारण है. धुनों की अपेक्षा उस का पार्श्व संगीत अधिक प्रभावपूर्ण है. फिल्म में गीत बुरी तरह ठूंस दिए गए हैं. कोई रोता है तो गाता है, हंसता है तो गाता है. कोई भी गीत फिल्म में वातावरण के अनुकूल नहीं रहा. फिल्म में से कई गीत काटे जा सकते हैं.

अख्तर उल ईमान के बेहद चुटीले, मनोरंजक व प्रभावशाली संवाद हैं, जिन के सहारे फिल्म पूर्णतः डूबने से बच गई है.

धर्म चोपड़ा की फोटोग्राफी साधारण है. फिल्म की पटकथा बी. आर. फिल्म्स कहानी विभाग द्वारा तैयार की गई है, जिस में लगता है, अनेक दिमाग लगे होंगे और कई मुल्लाओं ने मिल कर मुर्गी हलाल की होगी. प. ल. राज, गोपीकृष्ण और सरोज ने नृत्य दिए हैं और कोई भी नृत्य आकर्षक नहीं है.

'दास्तान' आदि फिल्मों की नाकामी के बाद निर्माता बलदेवराज चोपड़ा ने 'जमीर' बनाई है और इस के निर्देशन की जिम्मेदारी रवि चोपड़ा को सौंपी थी. लेकिन सभी पक्षों से कमजोर फिल्म 'जमीर' एक डूबते हुए व्यक्ति के लिए तिनके के सहारे से अधिक महत्त्व नहीं रखती. ●

राजा की अंतरिक्ष यात्रा :

खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया, जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी..........राजा ने निश्चय किया कि वह अपने साथियों को भी इस जगह लाएगा और एक नई दुनिया बसा कर स्वयं यहां का राजा बनेगा. क्या उसका यह सपना सच हो पाया? एक मनोरंजक और प्रेरणादायक बाल उपन्यास.

अज्ञात द्वीप :

'बाल कहानी प्रतियोगिता' में पुरस्कृत सात बालक व तीन बालिकाएं विमान द्वारा मिस्र जा रही थीं. तूफान में विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया मगर वे सभी बच निकले...... जिस द्वीप पर वे पहुंचे, वहां आदमी का चिन्ह तक न था. पास ही के एक अन्य द्वीप पर उन्हें एक खजाने के होने का पता चला, जिस की खोज में कुछ अंग्रेज डाकू आए हुए थे. छोटे बालकों की डाकुओं से मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज :

प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. कोई पता न चलने पर वैज्ञानिकों ने उन्हें लापता घोषित कर दिया. मगर उन का भतीजा दीपू इस निर्णय से संतुष्ट न था. और वह अपने मंगलवासी मित्र मिक के साथ उमेश चाचा को खोजने निकल पड़ा......उन्होंने उमेश चाचा को किस तरह ढूंढ़ा? इस खोज के दौरान उन्होंने अंतरिक्ष में क्याक्या देखा? बच्चों के लिए एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक उपन्यास.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आदेश के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

कलात्मक और उद्देश्यपूर्ण फिल्मों की बहुमुखी प्रतिभा

वणकुद्रे शांताराम

पांच दशक पूर्व किसी कलात्मक फिल्म की सफलता के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था. तब फिल्में निम्न श्रेणी के दायरे से निकल कर दूसरे दर्जे के व्यक्तियों को आकर्षित करने तो लगी थीं, परंतु उन का प्रभाव अपने प्रारंभिक चरण में ही था. निम्न व मध्यम श्रेणी के दर्शक मनोरंजन से दूर किसी फिल्म को स्वीकार करेंगे, इस की संभावना न के बराबर ही थी. तब फिल्मों में कला को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था और फिल्में केवल मनोरंजन प्रधान हुआ करती थीं. ऐसे समय में शांताराम ने न केवल उद्देश्यपूर्ण और कलात्मक फिल्मों का निर्माण करने का साहसिक कदम ही उठाया अपितु अपनी निर्देशन सूझबूझ से फिल्मों को इस रूप में प्रस्तुत किया कि दर्शक प्रभावित हुए बिना न रह सके.

निम्न स्तरीय मनोरंजन और व्यवसाय के बोझ तले दबी हिंदी फिल्मों को नए द्वार दिखाने वाले वी. शांताराम ने ही पहली बाल फिल्म का निर्माण किया था. प्रथम रंगीन फिल्म 'सैरंध्री' और केवल भारतीय तकनीशियनों की सहायता से भारत में बनी प्रथम रंगीन फिल्म 'झनक-झनक पायल बाजे' के निर्माण का श्रेय भी शांताराम को ही प्राप्त है. व्यवसाय पक्ष उन पर कभी हावी न रहा, इसलिए नएनए प्रयोग करने से वह नहीं चूके. 'उदयकाल' में क्रेन ट्राली का प्रयोग पहली बार किया गया था. 'अमृतमंथन' में क्लोज शाट का नया विचार भी शांताराम के मस्तिष्क का कमाल था. नए प्रयोगों के साथ वह उद्देश्य को भी समान महत्त्व देते थे. यही कारण है कि दर्शक उन की हर फिल्म से प्रभावित हुए. 'दहेज' फिल्म के प्रभाव के कारण बिहार सरकार दहेजबंदी कानून लागू करने के लिए विवश हो गई थी. जिन विषयों को छूने से अन्य निर्माता कतराते, उन्हीं विषयों पर आत्मविश्वास के साथ फिल्में बना कर शांताराम ने सफलता प्राप्त की.

पांच दशक तक भारतीय सिनेमा क्षितिज में ध्रुव तारे की तरह चमकने

वाले वी. शांताराम का पूरा नाम है—शांताराम राजाराम वणकुद्रे. फिल्मों में उन्हें लाने का श्रेय उन के मौसेरे भाई बाबूराव पेंढारकर को है. बाबूराव महाराष्ट्र फिल्म कंपनी में काम करते थे. वहीं पेंटर से सिफारिश कर के शांताराम को भी रखवा दिया. शुरू में शांताराम को वेतन नहीं मिलता था और उन्हें वे सब काम करने पड़ते जिन्हें करने से कई बार चपरासी भी इनकार कर देते हैं. महाराष्ट्र फिल्म कंपनी के फर्श धोते समय उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वह उत्तम और श्रेष्ठ फिल्मों के निर्मातानिर्देशक बन जाएंगे. तब उन पर एक ही भूत सवार रहता था—हर काम में दिलचस्पी.

सूक्ष्म दृष्टि

कैमरे से ले कर अभिनय तक के हर कलाकार पर वह बड़ी सूक्ष्म दृष्टि रखते और उन से कुछ न कुछ सीखने का प्रयत्न करते. धीरेधीरे उन्होंने कैमरामैन और निर्देशक के साथ काम करना शुरू किया और महीनों सहायक के रूप में कार्य करते रहे. सहायक के रूप में उन्होंने एकएक शाट के महत्त्व को समझा और प्रकाश व्यवस्था का गहराई से अध्ययन किया.

फिल्मों में काम करने का पहला अवसर उन्हें अभिनय क्षेत्र में मिला. बाबूराव पेंटर ने उन की लगन से प्रभावित हो कर 'सुरेखा हरण' में उन्हें भगवान कृष्ण की भूमिका सौंप दी. पेंटर के इस सहयोग को अपने सशक्त अभिनय से उन्होंने वरदान बना लिया और 'सुरेखा हरण' उन के जीवन में फिल्मों में प्रवेश के सभी रास्ते खोल गई.

इसी फिल्म को दो वर्ष बाद 'माया बाजार' के नाम से निर्मित किया गया था.

'सुरेखा हरण' के बाद अभिनय क्षेत्र में शांताराम को मान्यता मिलने लगी. 'सिंहगढ़,' 'शहालाशाह,' 'महारथी कर्ण,' 'बाजी देशपांडे,' 'मिडनाइट गर्ल' और 'मुरलीवाला' में वह अलगअलग रूप में पर्दे पर उभर कर दर्शकों को प्रभावित कर गए. इन सब फिल्मों में शांताराम के कुशल अभिनय को सराहा गया था.

सूदखोरों द्वारा किसानों के शोषण विषय पर प्रथम बार बाबूराव पेंटर ने 'सावकारी पाश' का निर्माण किया और किसान नायक की भूमिका शांताराम को सौंपी. यह फिल्म शांताराम के अभिनय जीवन की सर्वश्रेष्ठ फिल्म साबित हुई. भोले किसान के रूप में शांताराम के चेहरे के भाव संवाद की आवश्यकता को नकार गए थे. इस फिल्म में शांताराम को अभिनय के लिए अपने आलोचकों से भी प्रशंसा प्राप्त हुई थी.

लेकिन शांताराम की मंजिल कुछ और थी. वह अभिनय क्षेत्र नहीं, निर्देशन क्षेत्र में कुछ विशेष करने की इच्छा रखते थे. अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए उन्होंने पहली सीढ़ी चढ़ी—'नेताजी पालकर.' इस फिल्म का निर्माण बाबूराव पेंटर ने किया था. फिल्म का निर्देशन वह स्वयं करना चाहते थे. परंतु अचानक बीमार पड़ जाने के कारण उन्होंने यह कार्य शांताराम को सौंप दिया. इतने वर्षों से शांताराम को निर्देशन और संपादन की ट्रेनिंग देतेदेते पेंटर जान गए थे कि शांताराम उस स्थिति में पहुंच चुके हैं, जहां पर वह फिल्म का निर्देशन स्वयं कर सकते हैं. फिल्म के निर्माण का दायित्व शांताराम को सौंपने पर उन के कुछ हितचिंतकों ने उन के इस कदम को गलत बताया था. परंतु पेंटर ने बड़े विश्वास के साथ कहा था, "देख लेना, यह लड़का मुझ से भी अच्छा निर्देशक साबित होगा."

जब फिल्म बन कर तैयार हुई तो पेंटर का कथन शत प्रतिशत सही निकला. महाराष्ट्र फिल्म कंपनी की इस फिल्म ने बाक्स आफिस पर आशातीत सफलता प्राप्त की. पहली बार कृत्रिम प्रकाश के सहयोग से दिन में ही रात्रि दृश्य चित्रित किए गए थे. शांताराम की कल्पनाओं की उड़ान बहुत ऊंचाई तक उड़ी थी और दर्शकों को फिल्म देख कर हर्षमिश्रित सुखद आश्चर्य हुआ था.

'नेताजी पालकर' महाराष्ट्र फिल्म

कंपनी के लिए शांताराम के निदेशन में बनने वाली प्रथम और अंतिम फिल्म थी. वास्तव में कंपनी अपने कर्मचारियों को उचित पारिश्रमिक नहीं दे रही थी. उस समय शांताराम का वेतन मात्र 50 रुपए प्रति माह था. एकदो बार शांताराम ने वेतन बढ़ाने का अनुरोध किया भी परंतु नकारात्मक उत्तर ही मिला. इस से शांताराम बड़े क्षुब्ध हुए और अपने तीन साथियों स. फत्तेलाल, विष्णुपंत दामले और धायबर के साथ मिल कर नई योजना पर विचार किया और महाराष्ट्र फिल्म कंपनी को सदासदा के लिए नमस्कार कर दिया.

फिल्म कला के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए शांताराम और उन के सहयोगियों ने जून, 1929 को कोल्हापुर में 'प्रभात स्टुडियो' की नींव रखी. और प्रथम फिल्म 'गोपाल कृष्ण' का निर्माण शुरू किया गया. यह फिल्म कुछ ही महीने में तैयार कर ली गई. सफलता की दृष्टि से यह फिल्म सफल सिद्ध हुई और 'प्रभात' को 'गोपाल कृष्ण' के निर्माण काल में जिन आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा था, वे समस्याएं एकएक कर के समाप्त हो गईं. जहां पहले कोई फाइनेंसर कर्ज देने को तैयार नहीं था, वहीं अब कर्ज देने वाले आगेपीछे चक्कर लगाने लगे.

'गोपाल कृष्ण' में कला, व्यवसाय और उद्देश्य का समन्वय था. उन दिनों कठोर ब्रिटिश शासन के कारण जनता के हृदयों में आक्रोश ने जन्म लेना शुरू कर दिया था. ब्रिटिश सरकार काले लोगों पर मनचाहे जुल्म ढा रही थी. स्पष्ट रूप में शांताराम सरकार के इस क्रूर रूप को चित्रित नहीं कर सकते थे. परंतु अप्रत्यक्ष रूप में उन्होंने 'गोपाल कृष्ण' में कंस के अत्याचार को अंगरेजों के व्यवहार के प्रतीक रूप में लिया. इस फिल्म में बैलगाड़ियों की दौड़ का हृदयस्पर्शी चित्रण कर शांताराम ने अपने श्रेष्ठ निर्देशन का परिचय दिया था. बैलगाड़ियों के इस दृश्य को एक लंबे समय तक उसी तरह याद किया जाता रहा है, जिस तरह

बीमार अभिनेत्री : "मुझे अस्पताल ले जा रहे हो, वहां कई डाक्टर मेरा आपरेशन करने आएंगे, इसलिए मुझे जरा मेकअप तो कर लेने दो."

पिछले वर्षों में अंग्रेजी फिल्म 'बेनहूर' में रथों की दौड़ दर्शकों के मन-मस्तिष्क पर छाई रही है.

'प्रभात' के बैनर तले दो वर्षों में पांच फिल्मों का निर्देशन करने का शांताराम को अवसर मिला. इन पांच फिल्मों में बहुचर्चित फिल्म 'उदयकाल' भी शामिल है. शेष चार फिल्मों में 'खूनी खंजर' एक स्टंट फिल्म, 'रानी साहिबा' और 'बजरबट्टू' बाल फिल्में और 'चंद्रसेना एक सामाजिक फिल्म थीं, जिस में शराब के कुप्रभावों का सजीव चित्रण किया गया था. अंतिम फिल्म पर शांताराम की मजबूत पकड़ का ही कमाल था कि पौराणिक कथा पर आधारित इस फिल्म द्वारा उन्होंने कई व्यक्तियों को शराब त्याग देने के लिए विवश कर दिया था.

'उदयकाल' शांताराम के जीवन की महत्त्वपूर्ण फिल्म रही है, जिस में कई नए प्रयोग किए गए थे. पहली बार ट्रेन और ट्राली के शाट शांताराम के निर्देशन में फिलमाए गए. इस फिल्म का नाम शांताराम 'स्वराज्य तोरण' रखना चाहते थे, परंतु सेंसर बोर्ड ने न केवल फिल्म के कुछ दृश्यों पर ही आपत्ति प्रकट की अपितु फिल्म का नाम परिवर्तित करवा कर ही फिल्म को प्रदर्शन की अनुमति प्रदान की. इस फिल्म में छत्रपति शिवाजी की भूमिका में सशक्त अभिनय से प्राण फूंकने वाले भी शांताराम ही थे.

नए प्रयोग

उस के बाद बनने वाली फिल्मों में भी वह निरंतर नए प्रयोग करते रहे. यह वह समय था जब 'आलमआरा' प्रदर्शित हो चुकी थी और दर्शकों पर सवाक फिल्मों का जादू छा चुका था. 'आलमआरा' द्वारा जनता की फिल्मों में रुचि को शांताराम ने प्रथम रंगीन फिल्म 'सैरंध्री' का निर्माण कर के और अधिक विकसित कर के दिया. सैरंध्री भारत की प्रथम रंगीन फिल्म तो अवश्य थी; परंतु इस में रंगों का संयोजन विदेशी लेबोरेटरी में किया गया था. रंगों का संयोजन करते समय शांताराम रंगों के मनोविज्ञान के अज्ञान के कारण गलत रंगों का चुनाव कर बैठे, फलस्वरूप तकनीकी दृष्टि से समीक्षकों ने इसे फ्लाप फिल्म घोषित किया.

अपनी इस असफलता से शांताराम किंचित भी चिंतित नहीं हुए और अपनी गलती का एहसास कर के उन्होंने रंगों के बारे में बहुत कुछ जाना, सीखा. कुछ वर्षों बाद भारत में केवल भारतीय तकनीशियनों की सहायता से बनी पहली भारतीय रंगीन फिल्म 'झनकझनक पायल बाजे' का निर्माण कर भारतीय फिल्म उद्योग में तहलका मचा दिया. यह फिल्म बाक्स आफिस पर नए रिकार्ड स्थापित करने में सफल रही.

उन की अन्य चर्चित फिल्मों में 'अमृत मंथन,' 'देवदास,' 'आदमी' व 'पड़ोसी' का नाम आज भी याद किया जाता है. इन फिल्मों ने शांताराम के नाम के साथ 'अमर कलाकृतियों का निर्माता' जैसा प्रतिष्ठित विशेषण जुड़वा दिया था. 'अमृत मंथन' हिंदी और मराठी दो भाषाओं में बनाई गई थी, जिस में पहली बार क्लोजअप शाट लिए गए थे. इस फिल्म को दर्शकों ने बड़े उत्साह के साथ स्वीकारा था. रजत जयंती मनाने वाली यह प्रथम हिंदी फिल्म थी.

सामाजिक कुरीतियों और समस्याओं को चित्रित कर समाधान प्रस्तुत करने में शांताराम सदैव तत्पर रहे हैं. 'दुनिया न माने' वृद्ध के साथ विवाहित युवती की कहानी है जो वैवाहिक जीवन का सुख प्राप्त नहीं कर पाती. इस फिल्म को एक चुनौती के रूप में बनाया गया था. तब बड़ेबड़े सैट, आउटडोर शूटिंग तथा दर्जनों वाद्य यंत्रों के सहयोग से तैयार किए गए संगीत आदि का शाही व्यय फिल्म की सफलता के लिए आवश्यक समझा जाता था. इस के विपरीत शांताराम ने केवल तीन दीवारों का एक साधारण सैट लगाया और पूरी फिल्म की शूटिंग कर ली. संगीत के स्थान पर विभिन्न प्रकार की

ध्वनियों का संयोजन किया गया था. यह फिल्म भी व्यावसायिक सफलता की कसौटी पर खरी उतरी और रजत जयंती मना कर ही रही.

'पड़ोसी' का कथानक हिंदूमुसलिम एकता को ले कर बुना गया था. 'आदमी' में जनता में बनी पुलिस की क्रूर इमेज को तोड़ने का सफल प्रयत्न किया गया था. इस फिल्म से पहली बार जनता पुलिस के मानवीय भावों को जान पाई थी. इस से पहले पुलिस सिपाहियों को केवल कष्ट देने वाले सरकारी गुलाम ही समझा जाता था.

प्रेम में असफल रहने वाले व्यक्ति को ले कर उन्होंने 'देवदास' का निर्माण किया. फिल्म बाक्स आफिस पर तो सफल रही परंतु बाद में शांताराम ने अनुभव किया कि युवा वर्ग पर इस का अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा. 'देवदास' का निर्माण करने की गलती को बड़े दुख के साथ शांताराम ने स्वीकार किया था. 'देवदास' की भूमिका में सहगल ने अपने जीवन का उत्कृष्ट अभिनय किया था.

अमर कलाकृतियां

उपरोक्त फिल्मों के अलावा भी शांताराम को कई अन्य अमर कलाकृतियां बनाने का श्रेय प्राप्त है, जिन की याद आज भी पुराने फिल्म दर्शकों के हृदयों पर अंकित हैं. 'प्रभात' से अलग हो कर 'राजकमल' स्टुडियो की स्थापना करने के उद्देश्य से बनाई गई 'शंकुतला' ने न केवल बाक्स आफिस के पिछले सभी रिकार्ड तोड़े, साथ ही शांताराम को महान फिल्में बनाने वाले निर्मातानिर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित भी किया. यह फिल्म अमरीका में भी सफलता के साथ प्रदर्शित की गई थी. 'राम जोशी' में उन्होंने अपने गुरु बाबूराव पेंटर को सलाहकार निर्देशक के रूप में बुलवाया और फिल्म में निर्देशक के नाम पर पेंटर का नाम ही दिया. 'डा. कोटनीस की कहानी' और 'माली' को भी अच्छी सफलता मिली थी. कामवासना को केंद्र बना कर बनाई गई 'परबत पे अपना डेरा' भी एक नए विषय को समेटे हुए थी. देशद्रोहियों और भ्रष्टाचारियों को अपने पैर पसारते देख कर शांताराम के हृदय में उठते देशप्रेम ने उन्हें 'अपना देश' बनाने के लिए विवश किया. 'दहेज' में दहेज प्रथा पर करारी चोट की गई थी, जिस से प्रभावित हो कर बिहार विधान सभा ने दहेजबंदी कानून बनाया.

खतरों से जूझने वाले मजदूरों और पूंजीपतियों द्वारा उन के शोषण की कहानी पर 'सुरंग', विधवा का विवाह कर पुनः स्थापित होने की कथा पर 'सुबह का तारा', नेत्रहीन नायिका की प्रेम इच्छा के चित्रण से 'परछाईं' और जातपांत के भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में 'तीन बत्ती चार रास्ते' आदि फिल्मों का निर्माण कर के शांताराम ने भारतीय समाज को प्रकाश की नई किरणें दिखाईं. शास्त्रीय संगीत प्रधान 'झनकझनक पायल

तेरे हुस्न से लिपटी...

ये तेरे हुस्न से लिपटी हुई आलम की गर्द,
अपनी दो रोजा जवानी की शिकस्तों का शुमार.
चांदनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द,
दिल की बेसूद तड़प, जिस्म की मायूस पुकार.
चंद रोज और मेरी जान! चंद ही रोज!

—फैज

बाजे' शांताराम की संगीत के प्रति आस्था को प्रकट करने के साथसाथ दर्शक वर्ग में भी संगीतप्रेम के बीज बो गई. इस फिल्म की संगीत लहरियां वर्षों तक कानों में गूंजती रहीं. व्यावसायिक दृष्टि से यह शांताराम के जीवन की सर्वाधिक लोकप्रिय और सफल फिल्म थी.

अपराधियों की अपराध प्रवृत्ति को आत्मीयता के साथ छुड़ाने के विषय को ले कर 'दो आंखें बारह हाथ' का निर्माण भी शांताराम ने किया था. यह फिल्म हर दृष्टि से उत्तम फिल्म साबित हुई. अकेली इस फिल्म ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए थे.

अंतिम सफल फिल्म

'दो आंखें बारह हाथ' को शांताराम की अंतिम सफल फिल्म ही कहा जाएगा. यह बात नहीं है कि इस फिल्म के बाद उन के विचारों की उड़ान की ऊंचाइयों में कोई फर्क आया हो या उन की कलात्मक दृष्टि की रोशनी फीकी पड़ गई हो, परंतु इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि सफलता उन से रूठ गई थी. 'गीत गाया पत्थरों ने,' 'बूंद जो बन गई मोती' और 'जल बिन मछली, नृत्य बिन बिजली' कलात्मक फिल्में होते हुए भी बाक्स आफिस पर टिक न सकीं. इस बीच शांताराम के जीवन की फ्लाप फिल्म 'लड़की सहयात्री की' का निर्माण हुआ. पहले सप्ताह में हाथ खाली देख कर शांताराम ने डिस्ट्रीब्यूटर को उस की राशि वापस की और सिनेमाघरों से फिल्म को उतार लिया. उस दिन के बाद आज तक इस फिल्म का प्रदर्शन नहीं किया गया. आज भी यह फिल्म डब्बों में बंद पड़ी है.

अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

शांताराम की फिल्मों को कई राष्ट्रीयअंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है. 1936 में 'अमर ज्योति' को वेनिस फिल्म मेले में सम्मानित किया गया था. 1952 में मराठी की 'अमर भोपाली' को सर्वश्रेष्ठ रिकार्डिंग का पुरस्कार मिला था. 'दो आंखें बारह हाथ' तो उन के लिए एक साथ कई पुरस्कार बटोर लाई थी. वर्ष का राष्ट्रपति 'स्वर्ण पदक', बर्लिन मेले में सामाजिक समस्या के प्रभावशाली निर्वाह के लिए 'सिल्वर बियर' श्रेष्ठ, गंभीर एवं कलात्मक फिल्म और सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म आदि पुरस्कार अकेले इस चित्र ने प्राप्त किए थे.

बहुमुखी प्रतिभा

बहुमुखी प्रतिभा वाले शांताराम अपने सहयोगियों और नए कलाकारों को अवसर दे कर प्रोत्साहित करने में सदैव अग्रिम रहे हैं. 'खूनी खंजर' में नायक की भूमिका उन्होंने अपने सहायक मास्टर विट्ठल को सौंपी थी. 'अयोध्येचा राजा' में दुर्गा खोटे को और 'गीत गाया पत्थरों ने' में जितेंद्र को पहली बार पर्दे पर प्रस्तुत किया था. 'अमृत मंथन' में शांता आप्टे को प्रसिद्ध करवाने का श्रेय भी शांताराम को प्राप्त है. 'राजकमल' के बैनर तले बनने वाली कई फिल्मों का निर्देशन भी शांताराम ने अपने सहयोगियों को सौंप दिया था. 1946 में 'जीवन यात्रा' के लिए मास्टर विनायक, 1947 में 'अंधेरे की दुनिया' के लिए के. दाते, 1948 में 'वनवासी' के लिए चंद्रशेखर, 1956 में 'तूफान और दिया' तथा 1958 में 'मौसी' के लिए प्रभात-कुमार, 1960 में 'फूल और कलियां' के लिए राम गवाले और 'पलातक' के लिए तरुण मजूमदार को निर्देशन का अवसर दिया गया था. उन के विशाल हृदय के कारण उन के सहयोगी उन से सदैव प्रसन्न रहते थे.

नएनए प्रयोग करने में शांताराम को आंतरिक सुख प्राप्त होता है. अपने जीवन के 75 वर्ष पूरे कर लेने के बाद आज भी वह कहते हैं, "कोई अच्छा सा विषय मिल जाए तो एक फिल्म और बना लूं." देखना है उन की यह इच्छा कब तक पूरी होती है. ●

अनगिन रूप तुम्हारे...

जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं
तुम मेरे मन की रानी हो लेकिन ये बनजारे हैं.

तुम पर न्यौछावर हैं मेरे सपने सुरभित मधुवंती
अंगअंग रस भरा तुम्हारा रोमरोम है वासंती.
वंशी धुन फीकी लगती है सूने चांदसितारे हैं
जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं.

जैसे इंद्रधनुष वर्षा में प्राण गगन में छाई तुम
मेरे गीतों के आंगन में बदली बन लहराई तुम.
तुम ने खोले केश, यहां घन घिर आए कजरारे हैं
जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं.

तुम उमंग हो मेरे मन की प्रणय लगन की वेला हो
बिना तुम्हारे मुझे न भाए जग या जग का मेला हो.
रूपरूप में तुम प्रतिबिंबित अनगिन रूप तुम्हारे हैं
जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं.

रातों की तुम चपल चांदनी दिन की धूप सुहानी हो
हुआ न परिचय तुम से फिर भी तुम जानीपहचानी हो.
झूठे सब संबंध तुम्हीं से सारे रिश्ते हारे हैं
जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं.

सांससांस में मेरी तुम हो पलपल में आतीजाती
रहती हो दिनरात हृदय में जैसे दीपक में बाती.
तुम से ज्योतित दशों दिशाएं धरागगन उजियारे हैं
जैसी तुम, ऐसे ही मेरे सारे गीत कुंआरे हैं.

—बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

लेख • अजेयकुमार गोयल

क्या आप स्कूटर

इस के कुछ फायदे तो हैं ही, लेकिन इस

स्थानीय यातायात की समस्या केवल महानगरों एवं बड़े शहरों में ही होती है, अतः स्कूटर जैसी सवारी वहां काफी आरामदायक वस्तु है.

पर भारत में लोगों को होड़ करने में और अमीरी का दावा करने में बड़ा आनंद आता है, जिस का नतीजा यह है कि छोटे शहरों में जहां तीनचार मील के दायरे में पूरा शहर बसा होता है वहां भी लोग धड़ाधड़ स्कूटर बुक करा रहे हैं और अब तो स्कूटर ऊंचे स्तर का प्रतीक समझा जाने लगा है.

कुछ दिन हुए, मैं अपने पुराने कालिज में गया. कई प्रोफेसरों से मुलाकात हुई और पता चला कि प्रायः सभी ने कोई न कोई स्कूटर बुक करा रखा है. मुझे यह जान कर बड़ा दुख हुआ कि उन सभी लोगों को यह भ्रम है कि स्कूटर या और कोई इंजन सिर्फ तेल से चलता है.

स्कूटर कितनी महंगी सवारी है एवं उस के साथ कितने खर्चे जुड़े हुए हैं, यह तो किसी स्कूटर वाले से ही पूछिए. इस से पहले कि आप भी स्कूटर बुक कराएं, एक सरसरी नजर इधर भी डाल लें और जिन्हें अपना बुक किया हुआ स्कूटर खरीदना है वे भी एक बार फिर सोच लें, तो कुछ बुरा न रहेगा.

इस समय भारत का बना प्रत्येक स्कूटर लगभग पांच हजार रुपए में आता है. कोई भी कंपनी स्कूटर के साथ में पांव की चटाई, अतिरिक्त पहिया, प्लग, तार, शीशा, गद्दियां, कैरियर, कुंडी इत्यादि आवश्यक वस्तुएं भी नहीं देती है क्योंकि गरज तो खरीदार की ही होती है. खैर, आजकल ब्याज की सुरक्षित दर 12 प्रतिशत है. इस हिसाब से भी (अगर हम चक्रवृद्धि ब्याज के हिसाब से न भी लगाएं) हमें 50 रुपए प्रति मास का नुकसान ब्याज के रूप में होता है.

अब पेश है हिसाब तेल का. एक लिटर पैट्रोल की कीमत आजकल 3.74 रु. है. इस में 50 मिलीलिटर मोबिल आयल मिलाया जाता है जो 55 पैसे का होता है. इस प्रकार एक लिटर पैट्रोल का मिश्रण 4.29 रु. में तैयार होता है. प्रायः सभी भारतीय स्कूटर 35 किलोमीटर प्रति लिटर या इस से भी कम औसत देते हैं. अतः एक किलोमीटर का खर्च करीब-करीब 12 पैसे आया. औसतन यदि एक स्कूटर 20 किलोमीटर भी प्रति दिन चला तो 72 रु. प्रति मास का तेल का ही खर्च बैठा.

स्कूटर चूंकि तेज गति की एवं महंगी सवारी है, अतः इस का बीमा कराना भी आवश्यक होता है. यूं तो बीमा भी कई प्रकार का होता है, जैसे तृतीय व्यक्ति का, चोरी का, आग का, दंगे का, इत्यादि. पर प्रायः सभी

खरीद रहे हैं?

की परेशानियां भी तो जान लें...

लोग इन सभी संभावित खतरों का इकट्ठा बीमा करवा लेते हैं, जिसे व्यापक बीमा कहते हैं. यह करीब 175 रु. प्रति वर्ष में होता है यानी कि करीब 15 रु. प्रति मास बीमे का खर्च.

चूंकि आप सरकार की छाती को स्कूटर पर चढ़ कर रौंदते हैं, अतः इस कष्ट के लिए वह भी 43 रु. प्रति वर्ष सड़क कर या रोड टैक्स के रूप में लेती है. अतः लगभग 4 रु. महीने का यह टैक्स बैठता है.

स्टैंड वाले भी सरकार से कम नहीं. दो घंटे के स्कूटर खड़ा करने के पचास पैसे. अगर महीने में सिर्फ ऐसे मौके 12 भी लगाए जाएं तो छः रु. महीने का नुस्खा है.
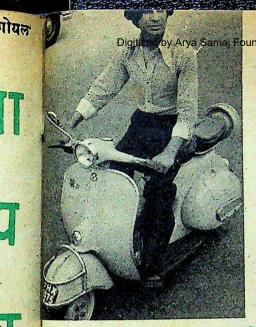
स्कूटर का बीमा हो या उसे स्टैंड पर खड़ा करें के लिए तालों का होना जरूरी है. ताले भी एक नहीं, बल्कि तीन—एक हैंडिल के लिए, एक टंकी के लिए और एक अतिरिक्त पहिए या स्टैपनी के लिए. अगर टंकी में ताला नहीं लगा है तो आप से जलने वाले लोग उस में सवा रुपए की पाव भर चीनी डाल कर 500-600 रु. का खर्च बैठा देंगे. स्टैपनी में ताला नहीं है तो उसे खोल कर ले जाएंगे. कारण? 'समाजवाद लाना है... मेरे पास तो टूटी साइकिल भी नहीं, और तू स्कूटर पर पैट्रोल फूंकता फिरे?'

अब पेश है कुछ जानलेवा और समयलेवा खर्चे, आदमी धोबी के कपड़े की तरह निचुड़ता है इन में.

एक हजार किलोमीटर चल चुकने पर गाड़ी की सर्विस अवश्य हो जानी चाहिए. साथ ही तेल का बदला जाना भी आवश्यक है. अब यदि दो महीनों में एक बार भी गाड़ी की सर्विस हुई तो आठदस रुपए तो सर्विस कराई के एवं 10 रु. का तेल बदला जाएगा. प्रायः हर सर्विस में गीयरों, ऐक्सीलेरेटर तथा स्पीडोमीटर के तारों में से एक न एक अवश्य मृतप्रायः अवस्था में होता है और एक तार साढ़े तीन, चार रुपए का पड़ता है. कुल मिला कर एक सर्विस करीब 25 रु. की अवश्य बैठ जाती है.

करीब 2000 किलोमीटर सेवा कर के प्लग भी फुंक जाता है एवं एक प्लग कुल 12 रु. का आता है.

पहिए में पंक्चर हो जाना भी मामूली बात है. अब सड़क पर ही उसे बदलने बैठ जाइए और अगर उसे बदलना नहीं आता तो शुरू कर दीजिए स्कूटर को

घसीटना. एक पंक्चर फकत डेढ़ रुपए में ठीक होता है एवं आग के लिए, खास कर गर्मी के मौसम में ट्यूब असुरक्षित हो जाती है.

पर मुश्किल तो उस समय बैठती है जब स्कूटर करीब एक वर्ष या पांचछ: हजार किलोमीटर चल चुकता है.

ओवरहालिंग

इस अवस्था में आ कर गाड़ी पूरी ओवरहालिंग मांगती है. गाड़ी 10-12 किलोमीटर की दूरी ही तय कर पाती है एक लिटर में.

गाड़ी के पिस्टन कतई जवाब दे चुकते हैं. नए पिस्टन पड़वाने में 150 रु. का खर्च तय समझिए.

जिन गाड़ियों में चेन होती है, उन की चेन भी हायपुकार मचाती है और 100 रु. का खर्च फिर सिर पर.

पांच हजार किलोमीटर पर क्लिच प्लेटें भी विद्रोह कर देती हैं एवं कई बार तो स्टील की प्लेटें भी खराब हो जाती हैं. अब 30-35 रु. यहां भी लगाइए.

शराब पीपी कर आदमी डाउन हो जाता है तो पैट्रोल पीपी कर कंप्रेशर. 30 रु. इस पर खर्च हो जाना कुछ ज्यादा नहीं.

दोतीन हजार किलोमीटर तक कार्बोरेटर में भी कचड़ा फंस ही जाता है या कोई वाशर कड़ा पड़ के बेकार हो जाता है. चारपांच रुपए और गए.

साइलेंसर में भी क़ार्बन जमा हो जाता है. अतः कंडों पर चिता बना कर फूंकने का खर्च केवल तीन रुपए कृपया धर दीजिए.

मैगनेट में लगा कंडेंसर भी आराम से फुंकता रहता है. स्कूटर झटके खाखा कर चलना शुरू कर देता है और 17-18 रु. के खर्च की भविष्यवाणी हो जाती है.

आप को साफ हवा खाने का अख्तियार है, स्कूटर को भी है. फिल्टर हवा को छान कर भेजता है. हर हजार किलोमीटर पर पैट्रोल में डुबो कर इसे स्नान कराना चाहिए. बपत कुल तीन रुपयों की. पांच हजार किलोमीटर पर इसे बदल देना चाहिए. खर्च सिर्फ 11 रु. करीब आठ महीनों में फिल्टर पर खर्च 23 रु. यानी कि करीब तीन रु. महीना.

पांच हजार किलोमीटर के बाद कब रिंग बैठ जाए, कब शाक ऐबजारबर्स बेकार हो जाएं, गीयर फंसने लगें, टायर घिस जाए, कवर फट जाए, ब्रेक शूज घिस जाएं, ड्रम में दरारें आ जाएं, इन सभी के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता. अतः कम से कम 100 रु. साल तो इन की खिदमत में भी.

200 रु. का खर्चा

इन सभी खर्चों का औसत निकाल कर प्रति मास का खर्च आता है 200 रुपए.

यह तो चर्चा रही धन की, क्यों न कुछ तन और मन की भी बात की जाए?

सम्मति

सम्मति बहुत से लोग लेते हैं, पर केवल बुद्धिमान ही उस से लाभ उठाते हैं.

—साइरस

प्रति वर्ष कई हजार लोग स्कूटर दुर्घटनाओं में या तो मारे जाते हैं या गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं. ट्रक या बस जैसी भारी गाड़ी की मामूली टक्कर भी स्कूटर को पचड़ा कर देती है. छोटे शहरों में सड़कें तंग होती हैं, 'एक रास्ता' यातायात नहीं होता और लोग सड़क पर चलने के नियमों का पालन करने में अपनी हेठी समझते हैं. सड़कें टूटीफूटी भी होती हैं तथा रात में प्रकाश की व्यवस्था बहुत कम होती है. ये सभी कारण दुर्घटनाओं को खुल कर बढ़ावा देते हैं.

कहीं किसी को कुछ जगह नीचे का

मकान रहने को नहीं मिल पाता. ऐसे में पहले तो किसी का भारीभरकम एहसान ले कर स्कूटर उन की शरण में भेज दीजिए और यदि ऐसे में, जैसा कि मेरे साथ दो बार हुआ, आप का पैट्रोल चुरने लगे या पुर्जे अपनेआप बदलने लगें, तो आप कुछ कह ही नहीं सकते वरना तनदनाता हुआ जवाब मिलेगा, "आप ने क्या हमें चोर समझ रखा है? ठीक है, अब से आप अपने स्कूटर को कहीं और रखें."

स्कूटर यातायात अधिकारी के दफ्तर की ठोकरें भी खूब खिलवाता है. लरनर्स और फिर पक्का लाइसेंस बनवाने और सड़क कर देने में ही इनसान कई बार नानी को याद करता है. यह विभाग अंन्य सरकारी विभागों से कम नहीं. एक वार्तालाप आप भी सुनें.

"बाबू जी, प्लीज."

"ओ हो, कहिए फटाफट."

"लाइसेंस फीस के 13 रु. जमा कर दीजिए."

"13 रु.? 32 रु. और लाइए."

"32 रु. और? वे किस चीज के?"

"दफ्तर के."

"आप जानते हैं, मैं पुलिस विभाग में हूं?"

"तो मैं क्या करूं? क्या आप दूध के धुले हैं?"

"यानी कि आप..."

"जाइएजाइए, धौंस किसी और को दीजिएगा. हर कोई अपना हक मांगता है, हम ही क्यों न मांगें? आप तो हमारे पेट पर लात मारना चाह रहे हैं."

ये यमदूत मिस्त्री

और सब से बुरा राग तो इन मिस्त्रियों का है. यमदूत होते हैं ये. एक बार भी गाड़ी इन के दर्शन कर आई तो बस बेभाव बिक जाती है. या तो ये आप का बहुमूल्य समय खराब करेंगे या आप का मुश्किल से कमाया धन. आप अपना स्कूटर ले कर जाते हैं :

"देखना, उस्ताद, क्या हो गया इस में?"

"हूं..." कह कर उस्तादजी बड़ी नजाकत से उठेंगे. सीधा हाथ ऐक्सीलेरेटर और उलटा पांव 'की' पर रख कर धड़ाधड़ आठदस किक लगा डालेंगे.

"फलां चीज खराब हो गई है. ले जाइएगा तीनचार घंटे में..."

अगर आप छोड़ कर चले गए तो वह पुर्जों में कोई न कोई हेरफेर कर ही देगा. अगर आप ने समय बेकार करना स्वीकार कर भी लिया तो भी वह अन्य कोई पुर्जा ढीला कर देगा या अपनी जगह से हिलाडुला देगा और आप चार दिन बाद फिर वहीं दिखेंगे.

जान का जंजाल

और कभीकभी तो यह स्कूटर जान का जंजाल भी बन जाता है. छः दिन बिता कर इतवार आया है. पति भी कुछ ज्यादा आराम चाहता है, पत्नी भी कुछ मनोरंजन, सैरसपाटे की इच्छुक है. पर स्कूटर तो इतवार को ही ठीक कराया जा सकता है. और कुल मिला कर छुट्टी का मजा ही किरकिरा हो जाता है.

अगर आप के पास स्कूटर है तो परिचित बंधुओं को भी एक समस्या समझिए. हर परिचित सोचता है कि अच्छा मौका है, स्कूटर चलाना सीख लो और वह ताना मार देता है, "यार, पैट्रोल की फिक्र मत करो, वह तो हम डलवाएंगे." पर कोई यह नहीं सोचता कि सवाल 15-20 रु. के पैट्रोल का नहीं, बल्कि नाजुक मशीनरी और रंग का है. घिर्री टूट जाए तो 600 रु. की चपत पड़ जाती है, जरा सा रंग खराब हो जाए तो 25-30 रु. कम से कम खर्च में आते हैं. पर आप ने टालना चाहा तो जवाब आएगा, "क्या साला जरा सा स्कूटर है, दिमाग ही नहीं ठिकाने..."

और बात भी सही है—200 रु. महीने का खर्च, समय की बरबादी, बेबात की झकझक, इन सब को अगर मध्यम श्रेणी का आदमी झेलता है तो उस का दिमाग वास्तव में ठिकाने नहीं है. ●

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. इस अंक के पुरस्कार विजेता श्री देवव्रत त्रिपाठी, ग्वालियर, हैं.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● गधे हैं तो क्या हुआ...

जयपुर. राजस्थान नहर परियोजना के निर्माण में सर्वाधिक योगदान गधों का रहेगा. नहर पर इस समय आठ हजार गधे मिट्टी ढोने का कार्य कर रहे हैं.

इस नहर की खुदाई के समय मिट्टी ढोने का काम केवल गधे ही आसानी से कर सकते हैं, अन्य पशुओं के बस की बात नहीं है. मिट्टी को दूर तक ले जाने के काम में यद्यपि रेगिस्तानी जहाज ऊंट का कार्य भी कम सराहनीय नहीं है, किंतु मिट्टी को गहराई से ऊंचाई तक लाने में वे भी गधों के सामने हार मान चुके हैं.

भूतपूर्व केंद्रीय सिंचाई एवं विद्युत राज्यमंत्री डाक्टर क. ल. राव ने एक बार सुझाव दिया था कि नहर के एक छोर पर गधे की प्रतिमा स्थापित की जाए.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : राजेश भेरवानी, जोधपुर)

● लो संभालो, मैं चला

ग्वालियर. पिछले दिनों नगर निगम प्रशासक के कमरे में एक कर्मचारी के बच्चे को ले कर प्रशासक तथा निगम के अन्य अधिकारी दिन भर परेशान रहे.

बताया जाता है, प्रशासक ने आदेश दिए थे कि बोर्ड कार्यालयों में लगे टेलीफोन का दुरुपयोग किया जाता है, अतः बिलों का भुगतान कर्मचारियों के वेतन से कटौती कर के किया जाए. इसी संदर्भ में मुरार स्थित क्षेत्र 65 के एक क्लर्क के वेतन से 22 रुपए काटने के आदेश दिए थे. उक्त कर्मचारी ने अपना वेतन नहीं लिया और यह कह कर बच्चा उन के दफ्तर में छोड़ गया कि उन के पास बच्चे को पालने की गुंजाइश नहीं है, उस का वेतन अकारण काट लिया जाता है.

प्रशासक तथा अन्य अधिकारियों ने उस कर्मचारी के बच्चे को वापस ले जाने का काफी आग्रह किया, किंतु वह कर्मचारी टस से मस नहीं हुआ और बच्चा छोड़ कर चला गया. वह बच्चा प्रशासक के कमरे में दिन भर रहा. सिर दर्द तब बना जब दफ्तर बंद होने का समय हो गया. शाम को जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी की पत्नी के मार्फत वह बच्चे को उस कर्मचारी के घर पहुंचाया गया तो मालूम हुआ कि वह कर्मचारी अपनी पत्नी के साथ कहीं बाहर चला गया है.

हार कर बच्चे को जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी के घर पर रखना पड़ा. उसे खसरा निकला हुआ था तथा वह ज्वर से पीड़ित था.

—भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक : देवव्रत त्रिपाठी, ग्वालियर)

● फायदा पहुंच का

विकास खंड नारायणगंज के अंतर्गत एक ग्रामीण शाला में इन दिनों एक किराए का शिक्षक काम कर रहा है. वास्तविक शिक्षक ने अपनी सुविधा के लिए उपरोक्त व्यक्ति को 45 रुपए माहवार पर लगा रखा है. वेतन लेने तथा दस्तखत करने के लिए ही कभीकभी वह वास्तविक शिक्षक (?) गांव में जाता है.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक: संतोष पटरथ, जबलपुर)

जबरा मारे, रोने न दे

जलगांव. जिले की चोपड़ा नगर परिषद के खिलाफ वहां के एक वकील ने कुछ दिन पहले मुकदमा दायर किया था, जिस में कहा गया था कि नगर परिषद शहर में गंदगी दूर करने के लिए कुछ भी उपाय नहीं करती. मजिस्ट्रेट ने वकील साहब की यह दलील स्वीकार कर के नगर परिषद को एक रुपया जुरमाना किया. महाराष्ट्र में किसी नगर परिषद पर जुरमाना होने का यह पहला अवसर था.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक : विजयकुमार, नागपुर)

• 'पूर्वज' भी चोर

हापुड़. निकटवर्ती ग्राम दादरी के पशुपालकों के लिए एक अनोखा चोर कुछ दिनों से भारी सिरदर्द बना हुआ है. वह चोर चुपचाप उन की गायभैंसों का दूध निकाल कर गायब हो जाता है.

एक दिन दो पड़ोसी पशु पालकों ने इस बात को ले कर एकदूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए कि वही चोरीछिपे उस की भैंस का दूध निकाल लेता है. खूब झगड़ होने के बाद अंत में दोनों ने निर्णय किया कि यदि वे दोनों ही चोर नहीं हैं तो फिर असली चोर का पता लगाया जाए. यह सोच कर दूध निकालने के समय से थोड़ी देर पूर्व वे निकट ही छिप गए तथा यह देख कर स्तब्ध रह गए कि एक बंदर ने आ कर दोनों भैंसों के 'लवारों' को खोल दिया तथा दूध पी कर दोनों लवारों को यथास्थान बांध कर वहां से भाग गया. **—वीर अर्जुन, नई दिल्ली (प्रेषक : विनोदकुमार, भरतपुर)**

• गिरते हैं शहसवार

लिल्ली (फ्रांस). एक 10 वर्षीय बालक एक बहुमंजिली इमारत की 10वीं मंजिल से लगभग 30 मीटर नीचे सड़क पर गिर कर भी स्वस्थ रहा. वह स्वयं उठा और फिर 10 वीं मंजिल स्थित अपने घर में चला गया.

यार्क लेक्लेर्को नामक इस बालक की कुशलता पर प्रत्यक्षदर्शियों को विश्वास नहीं हुआ और वे उसे उस की इच्छा के विपरीत अस्पताल ले गए. वहां डाक्टरों ने बताया कि बालक पूर्ण स्वस्थ है और अपने बिस्तर पर बैठा खाना खा रहा है.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक : गुलशनकुमार, जबलपुर)

• परदे में रहने दो

दारेस्सलाम. सरकारी 'डेली न्यूज' की खबर के अनुसार 'तागांनिक अफ्रीकी राष्ट्रीय यूनियन' की स्थानीय शाखा ने सार्वजनिक बसों में यात्रा करने वाली लड़कियों पर ऐसी पोशाक पहनने पर पाबंदी लगा दी है, जिस से उन की टांगें नजर आएं.

उक्त पत्र ने यह भी बताया कि जनवरी में ऊंची फ्राक पहनने वाली 31 लड़कियों को दल के सैनिकों ने पकड़ा और उन को राजधानी के बाहर जंगल साफ करने की सजा दी. **—मध्यप्रदेश, झांसी (प्रेषक : ऋषिकुमार, दतिया)**

• समझ हाथी की

मुजफ्फरनगर जिले के सरैया थानांतर्गत रामकुड़वा ग्राम में एक घर में सशस्त्र डाकुओं के एक बड़े गिरोह ने डाका डाला और अनेक महिलाओं सहित लगभग एक दर्जन व्यक्तियों को बुरी तरह घायल कर के नकदी, जेवर आदि कीमती सामान सहित 25 हजार रुपए लूट ले गए.

समाचार के अनुसार इस डाका कांड में एक पालतू हाथी ने कमाल कर दिखाया. घर वालों की चीख सुन कर एक पड़ोसी के दरवाजे पर बंधा हुआ हाथी उत्तेजित हो गया और जंजीर तोड़ कर तूफान की तरह अपराधियों की ओर दौड़ पड़ा. अपराधियों को जैसेतैसे भागना पड़ा. हाथी को दो गोलियां लगीं तथा उस ने एक डकैत से बंदूक छीन ली. **—जागरण, कानपुर (प्रेषक : मिथिलेश भदौरिया, कानपुर) •**

के

इकबाल की वजह से देश का जो नुकसान हुआ था, उस के लिए उसे कभी माफ नहीं किया जा सकता था, लेकिन उस ने देश के लिए ही अपनी खुशियों का गला क्यों घोंट दिया?

"**मिस्टर** इकबाल!"

"हां, साहब."

"यह सब कैसे हो गया?"

"मेरी खुद समझ में नहीं आ रहा है, साहब! मुझ से इतनी बड़ी गलती आज तक कभी नहीं हुई. बड़े से बड़ा उत्तरदायित्व मैं ने संभाला है, पर ऐसा कभी नहीं हुआ."

"यह मुझे पता है, इकबाल, तुम ने देश की बहुत सेवा की है और भारतचीन युद्ध में तथा भारत और पाकिस्तान के बीच हुए दोदो युद्धों में तुम ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है. तुम्हारी इन सेवाओं को देश कभी नहीं भूलेगा. पर यह तो सोचो कि तुम से जो गलती हो गई है, उस से देश के समय और पैसे की कितनी बरबादी होगी?"

"मैं वास्तव में बहुत शर्मिंदा हूं, साहब. अगर ऐसी गलती आइंदा हुई तो मैं इस्तीफा दे दूंगा."

"नहीं, इकबाल, देश तुम जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को खोना नहीं चाहता. पर अब तुम जरा सावधान रहना. तुम्हारी इस छोटी सी असावधानी के कारण अनेक योजनाओं को बदलना होगा."

"अच्छा, साहब, मैं बहुत होशियार रहूंगा."

"अब तुम जा सकते हो."

इकबाल केंद्रीय गुप्तचर विभाग में एक प्रमुख पद पर था. देश के लिए उस ने कई बार जीवन को बाजी पर लगा दिया था. विभाग उन की सेवाओं से पूर्ण संतुष्ट था. परंतु इस समय कुछ गुप्त फाइलें इकबाल के घर से गायब हो गई थीं. फाइलें इतनी महत्त्वपूर्ण थीं कि उन के खो जाने से देश की अनेक योजनाओं को एकदम बदलना पड़ा था. यही इकबाल से भयानक गलती हुई थी और इस गलती पर इकबाल बहुत उदास था. उपर्युक्त वार्ता उस के तथा उस के अधिकारी के मध्य हुई थी.

उदास मन लिए इकबाल घर आया. उस ने अपने व्यक्तिगत कमरे का एक गुप्तचर की भांति ही निरीक्षण किया. परंतु उसे ऐसा कोई स्थान नहीं दिखा जहां से गुप्त फाइलें चोरी जाने की संभावना हो सकती थी.

"क्या बात है, बेटे? कुछ परेशान नजर आ रहे हो," इकबाल के पिता ने उस के कमरे में प्रवेश करते हुए कहा.

दुश्मन

''अब्बा, मेरी जिंदगी भर की कमाई चली गई. मैं ने अपनी जिंदगी को दांव पर लगा कर देश की खिदमत की थी. पर अब एक ऐसी गलती हो गई है, जिस के लिए देश मुझे कभी माफ नहीं करेगा. मैं ने इस बात का सबूत देने की पूरी कोशिश की थी कि मुसलमान भी भारत के लिए अपनी जान की बाजी लगा देते हैं. पर सब बातों पर पानी फिर गया. मुझ से बहुत जरूरी फाइलें खो गई हैं,'' यह कहतेकहते इकबाल की आंखों में आंसू भर आए.

उस के पिता ने हिम्मत बंधाते हुए कहा, ''तसल्ली रखो, बेटा. जब तुम देश से इतना प्यार करते हो और तुम्हारा दिल साफ है तो देश तुम्हें माफ कर देगा.
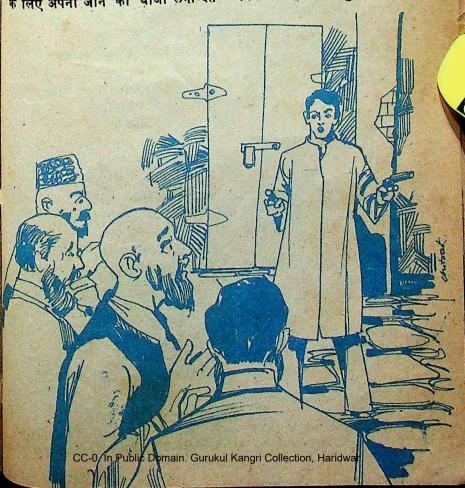
आइंदा होशियार रहना."

"अमा मजीद साहब, क्या घर में हो?" बाहर से किसी ने आवाज दी.

"अच्छा, चलता हूं, बेटा. शायद शफदर उल्लाह साहब आ गए हैं. दूसरे लोग भी आते होंगे. मैं बैठक में पहुंचता हूं. तुम अपनी चीजों को होशियारी से रखना. आखिर तुम एक बहुत ही जिम्मेदारी के ओहदे पर हो."

इकबाल के पिता अब्दुल मजीद बैठक में चले गए. इकबाल को अपने पिता पर बहुत नाज था. वह राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थे भारत-पाक के बीच हुए दोदो युद्धों में उन्होंने तथा उन के मित्रों ने राष्ट्रीयता का पूर्ण परिचय दिया था. उन्होंने तथा उन के मित्रों ने राष्ट्रीयता की भावना को जगाया था तथा देश की आर्थिक सहायता हेतु बहुत सा धन एकत्रित किया था.

इकबाल को अपने पिता तथा उन के मित्रों पर पूर्ण विश्वास था. परंतु फिर भी गुप्तचर होने के नाते उस ने छिप कर बातें सुननी चाहीं. उस ने बैठक की बातें गुप्त रूप से सुनीं. बैठक से राष्ट्रीयता से परिपूर्ण बातें सुनाई पड़ीं. इकबाल ने संतोष की सांस ली.

"मिस्टर इकबाल."

"हां साहब."

"तुम्हें याद है, कुछ समय पूर्व तुम से कुछ आवश्यक फाइलें खो गई थीं."

"उस घटना को मैं कैसे भूल सकता हूं, साहब. वह घटना तो मेरे दिल पर एक घाव छोड़ गई है, जिसे मैं जिंदगी भर नहीं मिटा पाऊंगा."

"मैं जानता हूं, इकबाल, तुम एक सच्चे देशभक्त हो. फाइलें खो जाने से तुम्हें अनेक प्रकार के विचार आते होंगे. कभी सोचते होगे कि मुसलमान होने के कारण सरकार और विभाग तुम पर संदेह कर रहे होंगे."

इकबाल अपने अधिकारी की बातें सुनता रहा. उस ने कोई उत्तर नहीं दिया.

"सुनो, इकबाल. मैं ने फाइलों का जिक्र इसलिए किया था, क्योंकि जो काम अब तुम्हें सौंपा जा रहा है, वह उन्हीं फाइलों से संबंधित है."

"क्या, साहब? उन्हीं फाइलों से संबंधित काम?" इकबाल ने आश्चर्य से पूछा.

"हां, योजना बदलने की बात सिर्फ मैं ने तुम से कही थी. देश के बड़ेबड़े अधिकारियों तक को इस बात की अभी सूचना नहीं दी गई है. इस का परिणाम हमारे पक्ष में अच्छा हुआ है."

"वह कैसे, साहब?"

"शत्रु देश ने फाइलों के आधार पर ही हमें हानि पहुंचाने की योजना बनाई है. इस संबंध में कार्य प्रारंभ हो चुका है. शत्रु देश का जासूस इस संबंध में इसी शहर में आ चुका है. मैं तुम्हें उस का फोटो दे रहा हूं. साथ में फाइल भी है. फाइल के आधार पर तुम्हें कार्य करना है."

"तो क्या खोई हुई फाइलें शत्रु देश तक पहुंच चुकी हैं."

"मिस्टर इकबाल, अब तुम्हें खोई हुई फाइलों को एकदम भूल जाना होगा, अन्यथा तुम कोई कार्य नहीं कर पाओगे. समझे?"

"समझ गया, साहब."

"अब तुम जा सकते हो."

"अच्छा, साहब."

इकबाल को केवल एक धुन लगी थी. वह शत्रु देश के जासूस को तो पकड़ना चाहता ही था, भारत में रह रहे उस के

साथियों को भी पकड़ना चाहता था. फाइल का उस ने अच्छी तरह अध्ययन कर लिया था. फाइल में विदेशी जासूस के संबंध में विस्तारपूर्वक लिखा था तथा भारत में रह रहे उस के सहयोगियों के सांकेतिक नाम लिखे थे. इकबाल ने विदेशी जासूस की खोज कर उस का पीछा करना प्रारंभ किया.

एक दिन इकबाल विदेशी जासूस का पीछा करते हुए चौंक उठा. वह जिस घर में प्रवेश कर रहा था, उस से इकबाल बखूबी परिचित था. इकबाल ने भी गुप्त रूप से उस घर में प्रवेश किया. घर की बैठक में अनेक व्यक्ति बैठे हुए थे.

"हां, तो, मिस्टर रामकुमार, आप ने काम कर लिया." उस बैठक में विदेशी जासूस की आवाज गूंजी. बैठक में प्रकाश नहीं किया गया था, यद्यपि संध्या हो चुकी थी.

"जी, जनाब," बैठक में स्वर गूंजा.

इकबाल मानो आसमान से गिरा. उस के मुख से आश्चर्य की चीख निकल गई होती, पर उस ने अपनेआप पर किसी तरह काबू कर लिया.

"मिस्टर शिवदयाल, मिस्टर नवलकिशोर, मिस्टर परशुराम, मुझे उम्मीद है कि आप लोगों ने भी अपनाअपना काम कर लिया होगा."

"जी हां, हम अपना काम निबटा चुके हैं," संयुक्त स्वर में उन्होंने उत्तर दिया.

"तब ठीक है. मैं आज शाम को ही अपने देश लौट जाऊंगा" विदेशी जासूस का स्वर गूंजा.

"अब तो तुम्हारी कब्र हिंदुस्तान में ही खुदेगी, जनाब!" बैठक में एक ओर से आवाज आई. बैठक में उपस्थित सभी व्यक्ति चौंक उठे. बैठक में प्रकाश फैल गया था. सब ने देखा कि इकबाल दोनों हाथों में रिवाल्वरें लिए खड़ा हुआ है.

"तुम?" एक आवाज आई.

"हां, मिस्टर रामकुमार, मैं यानी भारत के गुप्तचर विभाग का एक प्रमुख," इकबाल की आवाज गूंजी.

"होश में तो हो, मैं तुम्हारा बाप हूं अब्दुल मजीद और ये हैं शफदर उल्लाह, अली अहमद, रफीक अहमद."

"बेटे, बात को समझो. हम जो कुछ कर रहे हैं, मुसलमानों की भलाई के लिए कर रहे हैं. हम तो इस तरह इसलाम की खिदमत कर रहे हैं," शफदर उल्लाह ने कहा.

"क्या आप बता सकते हैं कि कुरान शरीफ में यह कहां लिखा हुआ है कि देश के साथ गद्दारी की जाए?" इकबाल ने प्रश्न किया और इस प्रश्न का उत्तर किसी से देते न बना.

"बेटे, यहां तुम्हारे बाप भी हैं और हम सब मुसलमान भी हैं. इस बात को यहीं खत्म कर दो, समझदारी इसी में है," अली अहमद ने कहा.

"जी नहीं, न तो यहां मुझे अपने अब्बा दिखाई दे रहे हैं और न ही मुसलमान दिखाई दे रहे हैं, यहां तो सब के सब देश के दुश्मन खड़े हुए हैं."

बंद होंठों में दफन हैं...

खुले किवाड़ों के बंद होंठों में दफन हैं बेहिसाब नग्में,
मगर तेरे साथ ने किसी गीत का कभी साथ भी दिया है?
खुले रहे हैं हजारों आगोश सुबह होने के बाद तक भी,
मगर तेरे हुस्न ने किसी दिल के हाथ में हाथ भी दिया है?

—कतील शिफाई

इकबाल को बातों में लगा देख कर विदेशी जासूस ने जेब में हाथ डाला परंतु एक धांय की आवाज के साथ वह पृथ्वी पर लोट गया. इकबाल की पिस्तौल की गोली उस के सीने में लगी थी.

"याद रखिए. किसी ने भी हिलने की कोशिश की तो मेरी पिस्तौल रियायत नहीं करेगी," इकबाल ने कहा. परंतु सभी के हाथ अपनीअपनी पतलूनों की जेबों की ओर खिसक रहे हैं, यह जान कर इकबाल की पिस्तौल पुनः भड़क उठी—धांय, धांय, धांय, धांय. चार बार गोली चलने की आवाज हुई और चार शरीर पृथ्वी पर लोटते दिखाई दिए.

"हैलो, साहब," कुछ देर बाद फोन पर इकबाल की आवाज गूंजी, "मैं ने विदेशी जासूस की कब्र हिंदुस्तान में ही खोद दी है और उस के साथियों को भी मौत के घाट उतार दिया है."

"शाबाश!" दूसरी ओर से सुनाई पड़ा, "क्या तुम उन में किसी का नाम बता सकते हो?"

"जी हां, मैं उन में से हरेक का नाम बता सकता हूं. मैं हर आदमी को पहचान गया हूं," इकबाल ने कहा.

"तब सब के नाम अलगअलग बता दो," अधिकारी की आवाज सुनाई दी.

"सब का एक ही नाम है, साहब. सब देश के दुश्मन हैं. इसलिए सब को देश का दुश्मन कहा जा सकता है." और यह कह कर इकबाल ने फोन बंद कर दिया. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा और पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खोए या नष्ट हो जाने का उत्तरदायी नहीं होगा.

रचनाएं इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छाया : द. स. ठाकुर, गुना.

मां ने शुभा को पराया और सुधीर को अपना समझा था, लेकिन एक दिन उस का यह भ्रम चूरचूर हो गया...

"शुभा...शुभा!" श्रीमती शर्मा की आवाज पूरे घर में गूंज गई.

"आई, मां." शुभा फूलदान में फूल सजातेसजाते ही कमरे में आ कर खड़ी हो गई थी.

"अरे, देख तो जा कर, रामदास ने बाहर वाला कमरा अच्छी तरह झाड़-पोंछ तो दिया है न. और हां, उस से कह देना कि मेहमानों के आते ही चाय का पानी चढ़ा दे."

"सारा इंतजाम हो गया है, मां. तुम चिंता मत करो," कहती हुई शुभा अंदर चली गई.

सुधीर का कंपीटीशन में चुनाव हो गया था आई. पी. एस. के पद के लिए. अपने पुत्र की इसी सफलता पर शर्मा दंपति ने अपने रिश्तेदारों और परिचितों को आमंत्रित किया था. निश्चित समय पर सभी मेहमान आ गए. शर्मा साहब और उन की पत्नी मेहमानों से बातचीत करने में व्यस्त हो गए और शुभा अंदर जलपान की व्यवस्था में लगी थी. भाग-दौड़ का सारा काम उसी के जिम्मे था. रामदास के साथ वह भी मेज पर खटाखट

परिवर्तन

सारा सामान सजाती जा रही थी. सारी व्यवस्था हो जाने पर श्रीमती शर्मा सब लोगों को ले कर अंदर आ गईं. खाना-पीना शुरू हो गया था.

"शुभा बेटी, केतली में थोड़ी गर्म चाय और डलवा ला," शर्मा साहब कह रहे थे.

"शुभा दीदी, पानी चाहिए," पड़ोस वाले माथुर साहब का राजू बोल पड़ा.

तभी शुभा की मां का स्वर सुनाई पड़ा, "गीता आंटी के लिए गरम समोसे मंगवा रही थीं वह." और शुभा प्रसन्न चित्त से काम में लगी रही. दौड़दौड़ कर सब की फ़रमाइश पूरी करती रही.

खानापीना हो जाने के बाद महिलाओं की मंडली अंदर वाले कमरे में ही जम गई थी. तभी श्रीमती मिश्रा ने आवाज दे कर शुभा को भी वहीं बुलवा लिया. "अरे शुभा, बहुत काम कर लिया, थक गई होगी. अब हमारे पास भी तो बैठो दो मिनट," कहती हुई कमला मौसी ने अपने पास ही उस के लिए कुरसी खींच दी. इधरउधर की बातें होती रहीं. तभी श्रीमती सहगल पूछ बैठीं, "अरे, मिसेज शर्मा, अब सुधीर की शादी कब कर रही हैं आप? हम ने सुना है, उस की सगाई तो पिछले साल ही हो गई थी. अब क्या देरी है? भगवान की दया से इतनी अच्छी जगह भी मिल गई है उसे."

"शादी तो सुधीर की इन्हीं गर्मियों में कर दूं, पर वह तैयार हो तब तो. उस की तो जिद है कि पहले शुभा की शादी हो. शुभा के लिए ही चिंता है. पता नहीं क्यों इस का संबंध कहीं तय हो ही नहीं पाता है. इतने बरसों से तो कोशिश में लगे हुए हैं. आप तो जानती ही हैं, लड़कियों की शादी आजकल एक समस्या है, उस पर भी लड़की अगर सांवली हो तो..." शुभा से वहां बैठा ही नहीं गया. काम का बहाना कर के वह दूसरे कमरे में खिसक आई. यहां भी मां का ऊंचा स्वर साफ सुनाई दे रहा था, "शुभा के लिए हम लोग कहांकहां नहीं भटके? भगवान जाने इस की शादी कहीं हो भी पाएगी या नहीं?" पता नहीं यह मां को क्या हो जाता है; क्यों सब के सामने मुझे इस तरह से जलील कर देती हैं? पगपग पर यह एहसास कि वह एक बोझ है इस परिवार पर. सांवली है, सुंदर नहीं है. क्या रंगरूप ही सब कुछ होता है? क्या आदमी के गुण कोई अहमियत नहीं रखते हैं? सोचतेसोचते शुभा का मन आहत हो उठा था.

"क्यों, बनारस वाले रिश्ते का क्या हुआ?" कमला मौसी पूछ रही थीं.

"होगा क्या? देखने आए तब तो यही कहा था कि लौट कर जवाब भेजेंगे और अब तक कोई जवाब ही नहीं आया है. कुछ समय बाद कोई बहाना कर देंगे. यही कानपुर वालों ने किया था. यही इलाहाबाद वाले कर चुके हैं."

मां का रुष्ट स्वर सुनती हुई शुभा के सामने सारी घटनाएं कौंध गईं. बार-बार सब के सामने अपनी नुमाइश करना और फिर अपमान के घूंट पी कर चुपचाप बैठ जाना. इस बार तो उस ने प्रण ही

कर लिया है, मां चाहे कुछ भी कहें, वह इस तरह से अपना प्रदर्शन नहीं करेगी. आखिर उस का भी तो कुछ स्वाभिमान है, अपनी इच्छाएं हैं. कब तक सब को कुचलती रहेगी? अपनेपराए सभी क्या उसे इसी तरह तोड़ते रहेंगे? और तो और, क्या मां भी...सोचतेसोचते उस का जी भर आया था.

एक सुधीर भैया भी तो हैं, शुरू से ही मां का सारा प्यार बटोर ले गए हैं. उन के मुंह से निकली हर एक मांग को मां ने हंसतेहंसते पूरा किया था. इसी अधिक लाड़प्यार ने ही शायद उन्हें कुछ जिद्दी सा भी बना दिया था. साथ ही कुछ उद्दंड भी. कभीकभी तो उसे ही उन का मां को ऊंचे स्वर में पलट कर जवाब दे जाना बुरा सा लग जाता था. पर मां—जो मां कभी किसी का जोर से बोलना भी सहन नहीं कर पातीं—वह उन की हर उचितअनुचित बात को बड़ी सहजता और सरलता से स्वीकार कर लेती थीं,...सोचतेसोचते शुभा की आंखें तरल हो आई थीं. उसे तो शुरू से ही ताड़ना मिली थी मां की...शायद लड़की होना ही उस का दोष था.

शुभा को याद आया, मां के इसी पक्षपातपूर्ण रवैए को देख कर छोटी बुआ ने उन्हें एक दिन टोक दिया था, "कमाल करती हो, भाभी, लेदे कर एक ही तो लड़की है तुम्हारी और उस के भी हरदम पीछे पड़ी रहती हो. अरे, जिन के तीनतीन चारचार लड़कियां होती हैं, वे भी उन्हें आंख का तारा बना कर रखते हैं. लड़का हो या लड़की, मांबाप के लिए, तो दोनों ही बराबर हैं. रही उस की शादी की बात, तो हो ही जाएगी. अभी इसी साल तो उस ने एम. ए. किया है. मुश्किल से बीसइक्कीस की है. आजकल तो बड़ी-बड़ी उमर में विवाह हो जाते हैं. मेरी तो ससुराल में भी शुभा के योग्य कोई वर नहीं है, नहीं तो मैं ही चट उस का संबंध कहीं करवा देती. ऐसी गुणी लड़की है, भाभी, पर तुम उस का मूल्य नहीं आंक सकी हो. पर आइंदा से मेरे सामने शुभा तुम्हारे लिए एक बोझ हो गई है, यह शब्द मत कहना." तब मां एक फीकी सी हंसी हंस कर रह गई थी. पर क्या ये बातें उन के ऊपर कुछ प्रभाव डाल सकेंगी, यही शुभा ने सोचा था. इसी बात को ले कर कितनी बार मां और पापा की झड़प हो जाती थी. पापा उस का पक्ष ले कर मां से बहस कर उठते थे और कहासुनी जब उग्र रूप ले लेती थी तब उस के ही मन को पीड़ा पहुंचती थी. हर बार वह पापा से कहती थी, "पापा, आप कुछ मत कहिए मां से. वह ऊपर से चाहे कुछ भी कह दें पर मुझे बहुत प्यार करती हैं...रही उन के स्वभाव की तेजी की बात तो उस की तो मैं अब आदी हो चुकी हूं. सच, मुझे कहीं कुछ बुरा नहीं लगता..." पापा उसे स्नेहसिक्त दृष्टि से देखते रह जाते थे. पापा का यही स्नेह उसे हर कठिन से कठिन घड़ी से उबार लाता था. इस के अभाव में शायद वह कभी की हीन भावना का शिकार हो गई होती.

एम. ए. करने के बाद उस ने कितना चाहा था कि नौकरी कर ले या पीएच. डी. करना शुरू कर दे. कुछ रचनात्मक काम में लगी रहेगी तो निरर्थक विचारों से भी छुटकारा मिल जाएगा. पापा तैयार भी थे, पर मां ने ही यह सब पसंद नहीं किया था. उन का विचार था कि और आगे पढ़ेगी तो फिर उस के लिए लड़का ढूंढ़ने में और अधिक कठिनाइयां आएंगी. अभी ही कौन कम दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है. शुभा के कालिज में आते ही उन्होंने उस के लिए रिश्ते देखना प्रारंभ कर दिया था. असफलता पर असफलताएं मिलती जाने पर स्वभाव में भी निराशा का भाव आ गया था. अब एम. ए. पास शुभा तो उन की दृष्टि में बड़ी उमर की और जरूरत से कहीं ज्यादा पढ़ीलिखी लड़की थी. बेटी के विवाह की चिंता ने उन के स्वास्थ्य पर भी असर डाला था और मां का गिरता हुआ स्वास्थ्य देख कर शुभा ने भी अपनी जिद छोड़ दी थी.

एक दिन काम करतेकरते ही उन्हें चक्कर आ गया था. काफी देर जब होश नहीं आया तब सब लोग चिंतित हो उठे थे. बाद में डाक्टर ने जांच करने के पश्चात उन्हें रक्तचाप की बीमारी बताई थी. अधिक चिंता और जरूरत से ज्यादा दौड़धूप के लिए भी उन्हें मना कर दिया गया था. शुभा तब कितनी चिंतित हो उठी थी. जो भी हो, मां से बढ़ कर तो और कोई वस्तु नहीं थी उस के लिए. पापा भी अकसर दूर पर बाहर ही रहते थे. इसी लिए मां की सारी देखभाल का काम भी उसी के जिम्मे था. दत्तचित्त से उन की देखभाल में वह संलग्न रहती थी.

सुधीर को ट्रेनिंग पर गए मुश्किल से डेढ़ महीना हुआ होगा कि श्रीमती शर्मा को फिर रक्तचाप का दौरा पड़ा. शर्मा साहब भी उस समय अपने कार्य के सिलसिले में बाहर गए हुए थे. फोन कर के शुभा ने फैमिली डाक्टर गुप्ता को बुलाया तो उन्होंने उन की गंभीर हालत देख कर उन्हें अस्पताल में भरती करने की सलाह दी. सारी दौड़धूप अकेली शुभा करती रही. मां को भरती करा के शर्माजी और सुधीर को तार दे दिया. शर्माजी तो उसी दिन आ गए थे, पर सुधीर दूसरे दिन आ पाया था.

श्रीमती शर्मा को अस्पताल में आए तीसरा दिन था. हालत पहले की अपेक्षा सुधार पर थी. गंभीर खतरा अब टल गया था. शुभा मां के लिए फलदवाइयां वगैरा ले कर कमरे में आई ही थी कि वह पूछ बैठीं, "शुभा, आज सुधीर नहीं आया?"

"सुधीर भैया...पता नहीं, शायद अपने दोस्त के साथ कहीं गए हुए हैं. आते ही होंगे," कहती हुई शुभा अंदर चली गई. श्रीमती शर्मा को न जाने क्यों इस बार सुधीर का व्यवहार कुछ अजीब सा लग रहा था. आते ही बजाए उन का हाल पूछने के, सांत्वना देने के, एक तरह से उन पर बरस ही पड़ा था, "मां, इस तरह से मुझे तार दे कर बुलाती रहीं तो

"मेरा सूट, जिसे मैं ने अपनी 25वीं वर्षगांठ पर सिलवाया था, निकाल दो. मुझे आज एक युवा कार्यक्रम में जाना है."

हो चुकी मेरी ट्रेनिंग पूरी. आखिर कुछ तो सोचा करो नयानया ज्वाइन किया है, छुट्टी भी कहां मिल पाती है. और यहां इतने लोग तो हैं तुम्हारी देखभाल के लिए," कहता हुआ भुनभुनाता चला गया था. उस के बाद मुश्किल से दो मिनट ही उन से बात की होगी, और दोस्तों से मिलने निकल गया था. आज सुबह से उस का कोई पता ही नहीं था, कल चला ही जाएगा. सोचती हुई श्रीमती शर्मा के सामने शुभा का चेहरा घूम गया. उन की सेवा में रातदिन एक करती हुई उन की बेटी. जीजान से उन की देखभाल करने वाली शुभा. जिस बेटी को वह कभी अपना स्नेह नहीं दे पाईं, वही रातरात भर जागती हुई उन के सिरहाने चिंतित सी बैठी रहती थी शुभा के बारे में विचार करते हुए आज उन का हृदय द्रवीभूत हो उठा था. तभी शुभा हाथ में मौसमी के रस का गिलास ले कर आ गई, "लो, मां, अब रस तो पी ही लो. मन अच्छा हो जाएगा. सुबह दूध भी तुम ने ठीक से नहीं पिया था. कुछ खाओगीपिओगी नहीं तो कमजोरी कैसे दूर होगी?" कहते हुए उस ने उन के सामने वाली छोटी सी मेज पर गिलास रख दिया.

"शुभा... मेरी बेटी..." कहते हुए श्रीमती शर्मा ने एकाएक उसे अपने गले से लगा लिया. मां के इस अप्रत्याशित व्यवहार को वह समझ पाती, इस के पहले ही उन के होंठ बुदबुदा उठे थे, "बेटी, आज एक भारी परदा मेरी आंखों के सामने से हट गया. जिस बेटे को मैं सदा से कलेजे का टुकड़ा समझती रही, उसे आज मेरी तनिक भी चिंता नहीं. नौकरी, कैरियर, दोस्त, सभी उस के लिए मुझ से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं. और जिस बेटी को उस के जन्म से ही पराया समझा वह..." कहतेकहते उन का गला भर्रा उठा था और स्वर डूब गया था. उन की बांहों में सिर छिपाए हुए शुभा को लग रहा था कि बरसों से मां के जिस प्यार के लिए वह तरसती रही, वह आज अनायास ही मिल गया है.

ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर आप को दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
भेजने का पता : ये लड़कियां, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

● एक दिन मैं और मेरी सखी बस में जा रही थीं. एक लड़के ने छेड़खानी शुरू कर दी और अंगरेजी में अंटशंट बोलने लगा. थोड़ी देर में हमें पता चल गया कि उसे अंगरेजी कम ही आती है. मेरी सहेली ने उस की बोलती बंद करने के विचार से फर्राटे की अंगरेजी में उसे डांट दिया. उस लड़के को कुछ और तो सूझा नहीं, कहने लगा, "हिंदी नहीं आती क्या? अंगरेज चले गए और अपनी अंगरेजी छोड़ गए."

मेरी सखी ने झट कहा, "अजी, हिंदी तो बहुत आती है, पर जब आप जैसे लोग सामने हों तो चली भी जाती है. आप जैसों से तो मैं इसी भाषा में बोलना पसंद करती हूं. हिंदी बोल कर अपनी मातृभाषा का अपमान नहीं करना चाहती."

अब तो सचमुच उस लड़के की बोलती बंद हो गई और बस ठहाके से गूंज उठी.

—सविता सैनी, दिल्ली

● एक बार मैं पंजाब रोडवेज की बस में चंडीगढ़ जा रहा था. बस में सब से आगे वाली सीट पर एक जवान लड़की बैठी थी, जिसे ड्राइवर बारबार देखे जा रहा था. ड्राइवर का ध्यान बंट जाने के कारण बस दोतीन बार दुर्घटनाग्रस्त होतेहोते बची.

ड्राइवर की इस हरकत से परेशान हो कर उस लड़की ने बस रुकवा ली और ड्राइवर के सामने खड़ी हो कर बोली, "पहले मुझे खूब अच्छी तरह जी भर कर देख लो फिर ध्यान से बस चलाने की कृपा करो. ऐसा न हो कि इन सवारियों की जान पर बन आए."

यह सुन कर ड्राइवर साहब ऐसे झेंपे कि उन्होंने पूरे रास्ते भर नजर ऊपर नहीं उठाई.

—सुरेंद्र ढींगरा, गाजियाबाद

● हमारी कक्षा में हम पांच लड़कियों का ग्रुप था, जिस में मैं और मेरी एक सहेली शरारत करने के लिए आगे की सीट पर बैठ जाती थीं.

एक दिन संस्कृत के पीरियड में हम दोनों आगे की सीट पर बैठी थीं कि बिना बात के हमें हंसी आ गई. प्राध्यापिका ने छात्राओं से पूछा, "इस तरह हंसने वाली लड़कियां कौन होती हैं?"

सभी लड़कियां हम से पहले ही तंग थीं, बोलीं, "जी, मूर्ख होती हैं." सुन कर प्राध्यापिका भी हंसने लगीं.

यह देख कर मेरी एक सहेली, जो कि पीछे सीट पर बैठी थी, बोली, "दीदी, इस समय तो आप भी यह बात हंस कर पूछ रही हैं."

उस का इतना कहना था कि प्राध्यापिका बेचारी से न हंसते बन रहा था, न रोते, और वह चुपचाप किताब बंद कर के कक्षा से बाहर चली गईं.

—कुमुद गर्ग, मथुरा ●

चाचा भी एक मनोरंजक संबंधी होता है और भारत में तो हम में से हरएक के बीसियों चाचा हैं. हमें उन की भीड़ की भीड़ मिल जाती है. लेकिन क्या इतने चाचा होना आवश्यक है? क्या हमें कोई कीमत अदा नहीं करनी पड़ती? क्या ये संबंध महंगे नहीं पड़ते?

हमारे पड़ोसी की छोटी सी लड़की कालिज में प्रथम वर्ष तक हमें चाचा और चाची कहा करती थी. इस के उपरांत वह अचानक औपचारिक ढंग से नमस्कार करने लगी.

क्या हम ने उसे कोई चोट पहुंचाई है जो एकाएक उस का व्यवहार बदल गया? बिलकुल भी नहीं. उस ने बताया कि उस की क्लास टीचर ने लड़कियों को निकट संबंधों के अतिरिक्त अन्य सब से 'श्री' और 'श्रीमती' कह कर बोलने का परामर्श दिया था. कक्षा ने उन की राय को मानने का निश्चय किया..

वह बहुत बुद्धिमान शिक्षिका थी. मेरी राय में अन्य शिक्षिकाओं को भी इतना ही बुद्धिमान होना चाहिए, विशेष रूप से भारत में, जहां पर ऐरेगैरे नत्थूखैरे सब को 'अंकल' कहने की आदत पड़ गई है.

एक विश्वासपात्र चाचा होना कोई समस्या नहीं. आदमी को केवल किसी मित्र या रिश्तेदार के साथ किसी परिवार में जा कर उस से परिचित होना पड़ता है. अगली बार उसे बिना किसी झिझक चाचा, मामा या कुछ और बना लिया जाता है. इस के अतिरिक्त उस के परिवार के सदस्य, यहां तक कि दूर के रिश्तेदार भी स्वयमेव उस के संबंधी बन जाते हैं.

अकसर चाचा लोग परेशानियों में भी फंस जाते हैं और इस रिश्ते के विचित्र परिणाम निकलते हैं. मैं एक ऐसी महिला को जानती हूं, जिन की अवस्था चालीस को पार कर गई है और जो एक बत्तीस वर्षीय युवक को चाचा कहती है. इस का कारण यह है कि उस युवक की पत्नी की बड़ी बहन के पति के बड़े भाई एक बार उन के पड़ोसी थे और वह उन्हें चाचा कहते थे. इस संबंध को वह उस पुराने संबंध के संदर्भ के साथ बड़ी धार्मिक गंभीरता और श्रद्धा से लेती हैं. संभवतः वह यह अनुभव करती हैं कि अन्यों के सम्मुख वह जब कभी भी किसी युवक को चाचा कहती हैं, उन की अवस्था कुछ कम हो जाती है. हर किसी को चाचाचाची कहने का यह एक अच्छा कारण है. उन के ऐसे बीसियों चाचा बनाना उन्हें बहुत अच्छा लगता है.

लेकिन चाचा बनाने की यह प्रथा इस प्रकार नहीं आरंभ हुई होगी. वह शायद संयुक्त परिवार प्रथा के जमाने में

मेरे

आरंभ हुई थी, जब कि परिवार में बहुत से चाचाचाची तथा नातेरिश्ते के भाई हुआ करते थे. वे सब अत्यंत औपचारिक, स्वतंत्र और मित्रवत हुआ करते थे.

विशेष रूप से चाचा उस समय भी सब को बहुत प्रिय हुआ करते थे और अब भी उतने ही प्रिय होते हैं, क्योंकि वे छेड़छाड़ और हासपरिहास करते हैं तथा परिवार का मनोरंजन करते हैं. वे बच्चों के साथ भी चुहल करतें हैं. वे बहुत मजाकिया होते हैं. बच्चे उन्हें बहुत पसंद करते हैं.

संयुक्त परिवार प्रथा के टूट जाने पर भी ये मजाकिया चाचा कम नहीं हुए. परिवार के मित्र और जानपहचान के लोग अब यह भूमिका अदा करने लगे हैं.

एक अच्छे चाचा के परिवार का दृश्य मनोरंजक हो उठता है, इस में बुरा भी क्या है? हां, कभीकभी कोई आस्तीन का सांप सिद्ध होता है और परिवार के विश्वास को ठेस पहुंचाता है. गैर जिम्मेदार चाचाओं की वजह से भतीजेभतीजियों को बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं.

यह ... ते हैं. ... इस प्रका... ता अत्यं... यों को

अभी ... लेकि... 'चाच... बहु...

चाचा मे... को छे...

यह ठीक है कि ऐसे लोग बहुत कम ते हैं. लेकिन हम उन्हें चुन कर अलग स प्रकार करें? इस प्रश्न का उत्तर ा अत्यंत कठिन है. युवकों और युव- यों को चाचा बनाने का इतना ज्यादा शौक है कि वे हर राह चलते को चाचा बना लेते हैं. वे अपनी चाचा मंडली में अजनबियों को शामिल कर लेते हैं और अपने परिवार की जानपहचान तक नहीं कराते. इस से अकसर निराशा, परेशानी और कटुता हाथ लगती है. इस का एक उदाहरण देती हूं. एक दिन मेरी कालिज जाने वाली भतीजी जल्दीजल्दी घर आई. वह बहुत उत्तेजित और क्रुद्ध थी.

"तुम्हें क्या चीज परेशान कर रही है, बेटी?" मैं ने उस से पूछा.

वह रो पड़ी और उस के आंसू निकल पड़े. बस में वह एक वयोवृद्ध व्यक्ति की

अभी और भी बन सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि 'चाचाओं' का यह झुंड बहुत महंगा पड़ेगा...

लेख • कावेरी सेठी

ाचा मौके का लाभ उठा कर अगर युवती को छेड़ भी दे तो कोई क्या कहेगा?
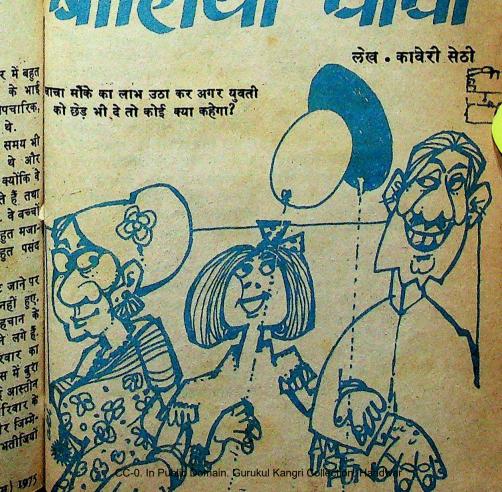
कभीकभी चाचा मुसीबत का कारण भी बन जाता है.

बग़ल में बैठी थी, जिस ने उसे छेड़ने का प्रयत्न किया था. उसे उस वृद्ध की इस हरकत पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. वह बारबार कह रही थी, मानो आत्म-प्रलाप कर रही हो, "उसे ऐसा करने का साहस कैसे हुआ? वह मेरे डैडी के बराबर हैं—नीच, नाली का कीड़ा!"

ख़ैर, छोड़िए. केवल अवस्था से किसी व्यक्ति की भावनाएं और कामनाएं नहीं दब जातीं. केवल अवस्था से ही कोई व्यक्ति स्वयं को नियंत्रण में रखने और भला आदमी बनने में समर्थ नहीं हो जाता. सज्जन चाचा होना इतना सरल नहीं है.

वस्तुतः गलती हमारे सामाजिक रुख और संस्कार में है. हमें अकसर केवल अवस्था के आधार पर बड़ों का आदर करना सिखाया जाता है. चाहे वे कैसे हों, हमें उन से प्रेम करना होता है, उन पर विश्वास करना पड़ता है और उन में श्रद्धा रखनी होती है. अमरीका में पांच वर्ष का बच्चा डेनिस विलसन दंपती को उन के नाम से पहले 'श्री' और 'श्रीमती' लगा कर संबोधित कर सकता है, लेकिन यहां पर ऐसा न करने पर वृद्ध लोग क्रुद्ध हो जाएंगे और बच्चे को दंड देने की व्यवस्था तक देंगे.

शायद इस आशा से कि इस प्रकार बच्चों को बहुत से हितैषी प्राप्त हो जाएंगे, मातापिता अकसर बच्चों को हर किसी को 'भाई साहब,' 'बहनजी,' 'चाचाजी,' इत्यादि कहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं. इस प्रकार के संबोधनों से कुछ लाभ जरूर हो सकता है और बच्चे एक सीमा तक अनिष्ट से बचे रहते हैं, लेकिन ताले केवल सज्जनों के लिए होते हैं, दुर्जनों के लिए नहीं. केवल संवेदनशील लोग ही बच्चों के इन संबोधनों को गंभीरता और ईमानदारी से लेते हैं.

निश्चय ही औपचारिकता से शैली की उन्मुक्तता खतरे में पड़ जाती है और हम मैत्रीपूर्ण ढंग से बात नहीं कर पाते. लेकिन इस में कोई संदेह नहीं कि इस प्रकार हम सचेत और सुरक्षित रहते हैं, थोड़ी सी दूरी बनी रहती है, जो भली ही है. इस के अतिरिक्त इस से आप का व्यक्तित्व प्रकट होता है और आप एक विशेष व्यक्ति हो जाते हैं. आप केवल भतीजी या भतीजे ही नहीं रह जाते, जिन के साथ चाचा लोग जब चाहे छेड़छाड़ और हासपरिहास कर लें. ●

जाब के अंगरेज गवर्नर पर गोली चलाने वाला वीर :

शहीद हरिकृष्ण

लेख • सुरजीत जोबन

न दिनों देश की राजनीतिक परिस्थितियां चरम सीमा पर पहुंच ी थीं. संसद बम कांड के प्रमुख अभित सरदार भगतसिंह को सुखदेव और जगुरु के साथ फांसी की सजा मिल ी थी. देश के नवयुवकों में प्रतिशोध ी भावना प्रति पल बढ़ती जा रही थी. ांधीजी का नमक आंदोलन भी चल रहा . महात्मा गांधी नवयुवकों से बारबार नुरोध कर रहे थे कि वे सभी हिंसक ारवाइयां बंद कर दें और असहयोग ांदोलन को सफल बनाएं. दूसरी ओर ांतिकारी दल टूट चुका था. क्रांतिकारी तिविधियां अब शांत सी हो गई थीं.

इन्हीं दिनों पंडित मोतीलाल नेहरू ी बीमारी की वजह से उन्हें पैरोल पर रहा कर दिया गया था. बाहर आ कर डित मोतीलालजी को स्वतंत्रता आंदोलन धीमा लगा. उन्होंने गणेशशंकर विद्यार्थी के माध्यम से चंद्रशेखर आजाद को 'कुछ करने' का संदेश भेजा. आजाद उन दिनों झांसी में गुप्त रूप से रह रहे थे. संदेश पा कर आजाद लाहौर चले गए. उन्होंने फिर से क्रांतिकारी गतिविधियों को तेज करने का निश्चय किया.

इस निर्णय के अंतर्गत भारत भर के अंगरेज उच्चाधिकारियों की हत्या करने की योजना बनाई गई. कुमारी वीना राय ने बंगाल पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल पर गोली चलाई. यू. पी. के इंसपेक्टर जनरल आफ पुलिस तथा गवर्नर पर भी हमले किए गए. पंजाब के गवर्नर सर जाफर डी. मेंटमरंसी की विश्वविद्यालय में दीक्षांत समारोह वाले दिन हत्या करने की योजना बनाई गई और इस कार्य के लिए उन्नीस वर्षीय युवक हरिकृष्ण को चुना गया.

हरिकृष्ण का जन्म मरदान जिले के गलादेर गांव में हुआ था. उस के पिता गुरदासमल को निशानेबाजी का शौक था और उन्होंने हरिकृष्ण को भी निशानेबाजी सिखाई. गवर्नर की हत्या करने के लिए और भी कई नाम प्रस्तावित हुए. पहले सावित्रीदेवी को इस कार्य के लिए चुना गया. लेकिन बाद में इस विचार से नहीं चुना गया कि कहीं लड़की होने के कारण उस का निशाना चूक न जाए. और भी प्रस्तावित नामों पर विचार करने के पश्चात हरिकृष्ण के पक्ष में ही निर्णय हुआ.

हरिकृष्ण का पता उस के दूर के भाई चमनलाल कपूर ने दिया था. चमनलाल कपूर के क्रांतिकारियों के साथ गुप्त संबंध थे. चमनलाल हरिकृष्ण को लाहौर ले आया. तभी शायद चमनलाल का इरादा बन गया कि वह स्वयं गवर्नर पर गोली चलाएगा. जब हरिकृष्ण ने चमनलाल के इस इरादे को सुना तो वह फूटफूट कर रोने लगा. उस ने कहा, "तुम मुझे एक अच्छे और नेक काम से हटा कर किसी कोने में फेंक देना चाहते हो. अगर यही करना था तो तुम मुझे लाहौर क्यों लाए थे?" खैर, हरिकृष्ण की निशानेबाजी को देखते हुए उसी को यह काम सौंपा गया. उस ने लाहौर में संतनगर

में एक साथी के मकान में ठहराया गया. बाद में यही साथी सरकारी गवाह बन गया था.

22 दिसंबर, 1930 का दिन था. हरिकृष्ण मोहम्मद यूसुफ के नाम से कनवोकेशन हाल में पहुंचा. उस ने एक मोटी सी पुस्तक पकड़ रखी थी. कौन जानता था कि इस पुस्तक के भीतर पिस्तौल रखने की जगह पृष्ठों को काट कर बनाई गई थी. गवर्नर की कुरसी के साथ सर राधाकृष्णन (स्वतंत्रता के बाद भारत के दूसरे राष्ट्रपति) की कुरसी थी. हरिकृष्ण के सामने उस का लक्ष्य था, पर राधाकृष्णन की वजह से वह गवर्नर पर गोली न चला सका. जब समारोह समाप्त हो गया तो हरिकृष्ण ने एक कुरसी पर खड़े हो कर गवर्नर को निशाना बनाया. लेकिन कुरसी हिलने से निशाना चूक गया. एक गोली गवर्नर की बांह में लगी और दूसरी पास से निकल गई. भगदड़ मच गई. एक अंगरेज स्त्री और पुलिस का एक व्यक्ति घायल हुआ. इस से पूर्व कि पिस्तौल में दोबारा गोली भरी जाती हरिकृष्ण को गिरफ्तार कर लिया गया. उस को लाहौर सेंट्रल जेल भेजा गया.

उस के जेल में आते ही सनसनी फैल गई जो स्वाभाविक थी. सरदार भगतसिंह भी इसी जेल में था. हरिकृष्ण ने भगतसिंह से मिलना चाहा पर सरकार एक ज्वालामुखी से दूसरे ज्वालामुखी को मिलने नहीं देना चाहती थी. इस के विरोध में हरिकृष्ण ने भूख हड़ताल कर दी. अंत में उस को सरदार भगतसिंह से मिलने दिया गया.

इस के बाद हरिकृष्ण को लाहौर के किले में लाया गया, जहां उस पर मनचाहे अत्याचार किए गए. सिपाहियों ने उस के सर को अनेक बार जेल की दीवारों पर दे मारा. जनवरी के महीने में उस को बर्फ की सिलों पर लिटा कर ऊपर भी बर्फ की सिलें रख दीं. यह अत्याचार 14 दिन तक जारी रहा, लेकिन हरिकृष्ण ने उफ न की. अंततः सेशन जज ने हरिकृष्ण को फांसी की सजा सुना दी. हाई कोर्ट ने यह सजा माफ कर दी, लेकिन पुलिस यह कैसे सहन कर सकती थी कि गवर्नर का हत्यारा छूट जाए? पुलिस की अपील पर फांसी की सजा बहाल रखी गई.

अंततः गवर्नर शूटिंग केस के अंतर्गत चमनलाल कपूर, दुर्गादास खन्ना और रणवीर को पकड़ लिया गया. चमनलाल को पुलिस ने नोशहरा छावनी में पकड़ा. लाहौर के जिस मकान में हरिकृष्ण को रखा गया था वह व्यक्ति सरकारी गवाह बन गया. उपरोक्त तीनों व्यक्तियों को सेशन जज ने फांसी की सजा दे दी. लेकिन बाद में तीनों को हाई कोर्ट ने बरी कर दिया.

हरिकृष्ण के पिता को भी पुलिस ने बड़ा तंग किया. एक बार तो अदालत में ही वे बेहोश हो गए. हरिकृष्ण को फांसी दिए जाने के 25 दिन पश्चात उस के पिता की मृत्यु हो गई. उन को अंतिम समय तक यह बात चुभती रही कि एक निशानेबाज का बेटा होने के कारण हरिकृष्ण का निशाना खाली चला गया.

9 जून 1931 को मियांवाली जेल में हरिकृष्ण को फांसी पर लटका दिया गया. फांसी पर चढ़ते समय हरिकृष्ण ने कहा, ''अफसोस है कि मेरा निशाना चूक गया. काश, एक और मौका दिया जाता! मैं अपनी साध तो पूरी कर लेता.''

और 'इनकलाब जिंदाबाद' के नारे के साथ हरिकृष्ण की देह निःशब्द हो गई.

'जासूस आप'—पहेली-14

फरवरी (प्रथम) 1975 का शुद्ध हल

इस बार पहेली का एक भी सही हल प्राप्त नहीं हुआ. कुछ प्रतियोगी एक सूत्र का ही हवाला दे पाए तो ने छःछः सूत्रों की ओर संकेत किया.

पहला सूत्र प्रत्यक्ष सूत्र है, जिस में मिस्टर रावत कहते हैं कि तथाकथित बंसीधर ने हाथ में दस्ताने पहने थे और बयान के अंतिम हिस्से में कहते हैं कि उस ने (बंसीधर ने) हाथ में अंगूठी पहनी हुई थी, जिस पर 'निर्मला' नाम खुदा हुआ था. पर उन के इस कथन के गलत होने के कई तर्क व कारण हैं. बंसीधर के दस्ताने उतारने का कोई जिक्र नहीं, न उस ने रुपए गिने, न दस्तखत किए. जब कि इन अवसरों पर उसे दस्ताने उतारने ही चाहिए थे.

बंसीधर लालाजी का विश्वासपात्र था तो मैनेजर उसे जानता ही होगा. यह दूसरा सूत्र है और पहले सूत्र जितना ही महत्वपूर्ण है. यदि वह बंसीधर को जानता होता तो उस की बाकी बातों—दस्ताने व अंगूठी वाले बयान में भी संदेह का लाभ दे कर आगे छानबीन जारी रखी जा सकती थी. लेकिन यदि वह बंसीधर को नहीं जानता होता तो वह बंसीधर का हुलिया बताने की बजाए कहता, 'बंसीधर आया था.' उसे यह कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि पौने एक बजे बंसीधर के हुलिए का एक आदमी दोबारा आया. यदि वह बंसीधर को नहीं जानता था तो उस की तसदीक करने के लिए कि वही बंसीधर है, उस ने क्या किया? यदि रावत का बयान सही है तो बंसीधर की हर हरकत संदेह उत्पन्न करती है. 12.10 पर फोन आना, 12.15 पर उस का हाजिर हो जाना. 5 मिनट के समय का ध्यान रखने वाले व्यक्ति के मन में यह विचार क्यों नहीं आया कि बंसीधर इतनी जल्दी दुकान से बैंक कैसे पहुंच गया? दूसरे, उस ने खड़ेखड़े ही लालाजी के फोन के बारे में पूछा. रुपए गिने नहीं. उन्हें ब्रीफ केस या बैग में नहीं रखा. दस्तखत नहीं किए. एक साथ इतनी बातें हो जाने पर उसे शक क्यों नहीं हुआ? बंसीधर और बैंक मैनेजर किसी तस्कर गिरोह के सदस्य तो थे नहीं कि सारा काम जल्दीजल्दी निबटाना हो. वे रुपए का लेनदेन बिलकुल कानूनी रूप से कर रहे थे. फिर जल्दी में बंसीधर था, न कि बैंक मैनेजर. इसलिए उस ने बिना पहचान व्यक्ति को रसीद लिए बिना रुपए क्योंकर दे दिए?

मैनेजर के बयान के अनुसार उसे बैंक में आतेजाते किसी व्यक्ति ने नहीं देखा. यह बयान उस ने बिना वहां आए लोगों या कर्मचारियों से पूछे अपनेआप कैसे दे दिया? किसी कर्मचारी या व्यक्ति से पूछने का संकेत कहानी में नहीं है, रावत के बयान में भी नहीं है. यह विशफुल थिंकिंग का परिणाम है.

मिस्टर रावत ने कहा है कि तथाकथित बंसीधर के बोलने में बंबइयापन था, पर उस ने सिर्फ दो ही वाक्य बोले थे, जिन के उच्चारण में तो फर्क हो सकता था, पर ढंग में नहीं. इसलिए मिस्टर रावत ही झूठ बोल रहे थे.

इस बार चूंकि सही हल किसी का भी नहीं था, इसलिए जिन प्रतियोगियों ने पहले दो सूत्रों का तर्कपूर्ण विश्लेषण कर के अन्य एक या दो कारण दिए हैं, उन को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया है. पुरस्कृत प्रतियोगी इस प्रकार हैं :

1. श्री पठनकुमार नत्थानी, नागपुर.
2. श्री रमेशकुमार नाथानी, कलकत्ता.
3. श्री निशिकांत मित्तल, करनाल.
4. डा. विद्याधर शर्मा, करनाल.

अर्दली आवाज लगाता है—'मुद्दई रोबिन हाजिर हो, मुद्दई रोबिन हाजिर हो. मुद्दालय रामनाथ शर्मा, प्रधानाध्यापक, राष्ट्रीय विद्यालय, हाजिर हो. मुद्दालय रामनाथ शर्मा...' वकील साहब हरिशचंद्र विजय हाजिर हों...एकएक कर के सभी अदालत में आते हैं.)

न्यायाधीश : आर्डर, आर्डर...मुद्दई रोबिन, आप ने परीक्षा में फेल कर दिए जाने पर अपने विद्यालय के प्रधानाध्यापक के विरुद्ध मुकदमा दायर किया है. आप किस आधार पर कहते हैं कि आप के साथ अन्याय हुआ है?

रोबिन : हुजूर, मैं ने तो सभी प्रश्नों के अपटुडेट उत्तर लिखे थे. मुझे पास हो जाने की पूरी उम्मीद थी. मैं समझता हूं कि मैं विद्यालय के अध्यापकों की प्रतिक्रियावादी विचारधारा का शिकार हुआ हूं. आशा है, आप मेरे साथ न्याय करेंगे.

न्यायाधीश : आप खातिर जमा रखें. यहां आप को न्याय अवश्य मिलेगा.

न्यायाधीश (मुद्दई के वकील से) : आप किस आधार पर कह रहे हैं कि आप के मुवक्किल के साथ अन्याय और पक्षपात हुआ है?

वकील : मी लार्ड, अदालत मुझे इजाजत दे कि मैं अपने मुवक्किल के प्रधानाध्यापक से जिरह कर सकूं और अपने मुवक्किल को बेगुनाह साबित कर सकूं.

न्यायाधीश : अदालत इजाजत देती है.

वकील (प्रधानाध्यापक से) : आप ने मेरे मुवक्किल को हिंदी, गणित, इतिहास तथा नागरिकशास्त्र में किस आधार पर फेल घोषित किया है?

प्रधानाध्यापक (न्यायाधीश से) : हुजूर, इस छात्र ने हिंदी का एक भी शब्द शुद्ध नहीं लिखा. फिर इसे कैसे पास कर दिया जाता?

वकील : मी लार्ड, गुस्ताखी माफ हो. प्रधानाध्यापक की इन गोलमोल बातों का कोई अर्थ नहीं. इसलिए मेरी दरख्वास्त है

कि वे कोई शब्द उदाहरण के बतौर बताएं.

प्रधानाध्यापक : ...और तो और, रात्रि जैसे सरल शब्द में भी इस छात्र ने बड़ी मात्रा लगाई है, जबकि इस में छोटी मात्रा लगती है.

वकील : मी लार्ड, मैं अदालत का

यदि एक क्विंटल गेहूं का ... कैसे हो सकता है, यह तभी ...

न्याय : स...

ध्यान इस तथ्य की ओर खींचना चाहूंगा कि यह परीक्षा दिसंबर के महीने में आयोजित की गई थी और कौन नहीं जानता कि दिसंबर के महीने में रात्रि बड़ी होती है. इसलिए रात्रि में बड़ी मात्रा लगाना सामयिक और भौगोलिक दृष्टि से बिलकुल ठीक था. मुझे सख्त अफ़सोस है कि आजकल के अध्यापक इतनी सामान्य ज्ञान भी नहीं समझते. ऐसे अध्यापकों से देश को प्रगति की दिशा में ले जाने की क्या आशा की जा सकती है?

न्यायाधीश : अदालत इस तर्क से इत्तेफाक करती है.

रोबिन (खुश हो कर) : अदालत

दाम 110 रुपया है तो चार क्विंटल का दाम 1000 रुपए
पता चलेगा जब आप समाजवादी न्यायालय का फैसला पढ़ेंगे.

: समाजवादी स्टाइल

त्यमेव जयते

एकांकी

•

श्यामलाल कौशिक

की जय हो, जय हो!

(अदालत में शोर हो जाता है. न्यायाधीश 'आर्डर, आर्डर' की आवाज लगाता है.)

न्यायाधीश : प्रधानाध्यापकजी, आप को हिंदी की परीक्षा के विषय में कुछ और कहना हो तो कहिए.

प्रधानाध्यापक : क्या अर्ज करूं, हुजूर? इस शब्द को छोड़ भी दें तो भी इस छात्र ने सभी मात्राओं का ऐसा झमेला किया है कि बड़ी और छोटी मात्रा के भेद का पता ही नहीं चलता.

वकील : मी लार्ड, कौन नहीं जानता कि हमारी सरकार देश में समाजवाद ले आई है. समाजवाद का मतलब है छोटेबड़े, ऊंचनीच का भेदभाव मिटाना. आज न केवल राजा और रंक, ब्राह्मण और मेहतर, काले और गोरे का भेद मिट गया है बल्कि गेहूं और बाजरा, भिंडी और अंगूर, शक्कर और रसगुल्ले भी एक भाव बिक रहे हैं. मी लार्ड, आप ही सोचिए कि हिंदी, जो देश की राष्ट्रभाषा है, उस में छोटीबड़ी मात्रा का भेद बनाए रखना न केवल पिछड़ेपन की ही निशानी है बल्कि देश के साथ धोखा है.

न्यायाधीश : बिलकुल दुरुस्त. छोटी-बड़ी मात्रा का भेद समाजवादी भारत में नहीं चल सकता.

रोबिन : भगवान अदालत को लंबी उम्र दे. (खुशी से नाचता है.)

(शोर होने पर न्यायाधीश 'आर्डर, आर्डर' कहता है और फिर शांति स्थापित हो जाती है.)

न्यायाधीश : प्रधानाध्यापकजी, फरमाइए, आप ने इस छात्र को गणित में किस आधार पर फेल किया है?

प्रधानाध्यापक : हुजूर, एक प्रश्न इस प्रकार था, 'मान लीजिए कि आप अनाज के व्यापारी हैं. यदि गेहूं का भाव 110 रुपए प्रति क्विटल हो तो 4 क्विंटल गेहूं का कितना मूल्य लोगे?' इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर था 440 रुपए, पर इस ने उत्तर लिखा 1,000 रुपए. अब हुजूर ही बताएं कि इतने सरल प्रश्न का भी इतना गलत उत्तर देने पर इसे अंक कैसे दे दिए जाते.

वकील : मी लार्ड, मेरे मुवक्किल को इस प्रश्न पर पूरे अंक मिलने चाहिए थे. क्योंकि 18 दिसंबर को जिस दिन यह प्रश्नपत्र हुआ, गेहूं का भाव प्रगति कर के 250 रुपए प्रति क्विंटल हो चुका था. हुजूर, पुराने भाव पर गेहूं बेच कर मेरे मुवक्किल को अपना दीवाला थोड़े ही निकालना था.

न्यायाधीश : लड़का काफी समझदार एवं प्रगतिशील प्रतीत होता है.

रोबिन : अदालत अमर रहे!

(शोर हो जाता है. न्यायाधीश 'आर्डर, आर्डर' कह कर शांति स्थापित करता है.)

न्यायाधीश : गणित की परीक्षा के विषय में आप कोई उदाहरण प्रस्तुत करना चाहें, तो करें.

प्रधानाध्यापक : एक प्रश्न था, 'यदि य=15 हो तो 6 य + 10 का मान ज्ञात करो.' इस प्रश्न का उत्तर होना चाहिए : 100, जबकि इस छात्र ने उत्तर लिखा : 75, जो एकदम गलत उत्तर था.

वकील : मी लार्ड, शिक्षा विभाग के नियमों के अनुसार जो परीक्षार्थी 75% प्रश्न ठीक करता है, उसे डिस्टिंक्शन दिया जाना चाहिए. अब अदालत स्वयं देख सकती है कि 100 के स्थान पर 75 लिखने पर शून्य अंक दे कर न केवल शिक्षा विभागीय नियमों का ही घोर उल्लंघन किया गया है बल्कि मेरे मुवक्किल को वक्त और पैसे के नुकसान के अतिरिक्त मानसिक आघात भी पहुंचाया गया है. इस के लिए प्रधानाध्यापक के विरुद्ध कानूनी चाराजोई की जानी चाहिए.

'न्यायाधीश : ठीक है, ऐसे दकियानूसी रवैए तथा प्रतिक्रियावादी विचारों का आधुनिक भारत में कोई स्थान नहीं रह गया है. अदालत अपने फैसले में इस का पूरापूरा ध्यान रखेगी. (प्रधानाध्यापक से) अब आप इतिहास के प्रश्नपत्र के बारे में अपनी सफाई पेश कीजिए.

प्रधानाध्यापक : हुजूर मैं, बतौर

उदाहरण के लिए प्रश्न की बात कहता हूं. प्रश्न था औरंगजेब की धार्मिक नीति के बारे में. कौन नहीं जानता कि औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था और न सिर्फ हिंदुओं और सिखों के साथ बल्कि शिया मुसलमानों के साथ भी भेदभाव एवं क्रूरता का व्यवहार करता था. परंतु इस छात्र ने बिलकुल उलटी बात लिख दी. इस ने लिखा कि औरंगजेब सभी धर्मों को समान मानता था और सभी का आदर करता था. अब हुजूर ही विचार करें कि इस प्रश्न पर अंक कैसे दे दिए जाते?

वकील : मी लार्ड, कौन नहीं जानता कि स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता की नीति को अपनाया गया है. हमारी सरकार चाहती है कि हिंदू, सिख, मुसलमान आदि का भेद मिट जाए. इस संबंध में हमारी सरकार जो कदम उठा रही है उन में इतिहास के पुनर्लेखन की बात भी शामिल है. ऐसी स्थिति में मेरे मुवक्किल ने इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ने के स्थान पर औरंगजेब को एक धर्मनिरपेक्ष सम्राट के रूप में चित्रित कर अपने प्रगतिशील एवं उदार विचारों का परिचय दिया है और हिंदूमुसलिम एकता की दिशा में एक ठोस कदम उठाया है. मुझ नाचीज की राय में उसे परीक्षा में तो पूर्ण अंक मिलने ही चाहिए, भारत सरकार को उसे किसी विशेष उपाधि से भी सम्मानित करना चाहिए और इतिहास पुनर्लेखन समिति का अध्यक्ष बना देना चाहिए.

न्यायाधीश : आप का तर्क काफी वजनदार और देशसेवा की भावना से ओतप्रोत प्रतीत होता है. ऐसे उदीयमान और स्वस्थ विचारों वाले नवयुवकों को निश्चय ही प्रोत्साहित किया जाना चाहिए.

रोबिन : हुजूर की जय हो!

(शोर हो जाता है. न्यायाधीश 'आर्डर, आर्डर' की आवाज लगाता है.)

न्यायाधीश : प्रधानाध्यापकजी, आप को नागरिकशास्त्र की परीक्षा के विषय में क्या कहना है? आप ने मुद्दई को किस

आधार पर फेल किया.

प्रधानाध्यापक : हुजूर, नागरिक शास्त्र की स्थिति तो बिलकुल स्पष्ट है. यह छात्र परीक्षा में बैठा ही नहीं इसलिए पास होने का प्रश्न ही नहीं उठता.

वकील : मी लार्ड, मैं इस तर्क से कतई इत्तफाक नहीं करता. मेरी राय में प्रधानाध्यापक जी ने जल्दी से काम लिया है और पूरे हालात पर गौर नहीं किया. मैं अदालत से पूरे वाकयात सुनाने की इजाजत चाहता हूं ताकि अपने मुवक्किल के साथ किए गए अन्याय का पर्दाफाश कर सकूं.

न्यायाधीश : अदालत इजाजत देती है.

वकील : मी लार्ड, हुआ यह कि नागरिकशास्त्र की परीक्षा के दिन मेरा मुवक्किल घर से स्कूल जाते हुए जैसे ही नगर के मुख्य बाजार में पहुंचा, उस ने देखा कि सभी दुकानें बंद हैं और एक जुलूस नारे लगा रहा है: 'इनक़लाब जिंदाबाद...तानाशाही नहीं चलेगी...नगर बंद!' बस देश के उदीयमान नागरिक के रूप में उसे अपने कर्त्तव्य का निश्चय करते देर नहीं लगी और स्कूल जाने के बजाए वह जुलूस में शरीक हो गया. उस ने माइक पर पहुंच कर नारा लगाया, 'हर जोरजुल्म की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है!' कौन नहीं जानता, मी लार्ड, कि हमारी शिक्षा प्रणाली का सब से बड़ा दोष यह है कि यह किताबी ज्ञान पर आधारित है, जो भावी जीवन में किसी काम नहीं आता.. मेरे मुवक्किल को ही क्या, देश के प्रत्येक होनहार नवयुवक को बड़े हो कर धरनों, हड़तालों तथा घेरावों में ही तो भाग लेना है. ऐसे हालात में मेरे मुवक्किल द्वारा किताबी ज्ञान पर व्यावहारिक पक्ष को तरजिह दिए जाने पर उसे फेल घोषित कर दिया जाना सरासर बेइंसाफी है. आज के शिक्षक एक ओर तो व्यावहारिक ज्ञान पर कोई ध्यान नहीं देते और दूसरी ओर अपने बलबूते पर इस दिशा में सक्रिय होने वाले छात्रों को फेल घोषित करते हैं. मैं समझता हूं कि ऐसे शिक्षकों के हाथों में अपनी भावी पीढ़ी को सौंप कर हम सिर्फ उन का भविष्य बिगाड़ रहे हैं.

(न्यायाधीश फैसला सुनाने के लिए खड़ा होता है.)

न्यायाधीश : अदालत इस मुकदमे के सभी पहलुओं पर गौर करने के बाद इस नतीजे पर पहुंची है कि मुद्दई रोबिन न केवल बेगुनाह है बल्कि एक महान देशभक्त भी है और वह राष्ट्रीय विद्यालय के अध्यापकों के प्रतिक्रियावादी विचारों का वाकई शिकार हुआ है. इसलिए अदालत उसे हिंदी, इतिहास तथा नागरिक शास्त्र में डिस्टिंक्शन के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण घोषित करती है और राष्ट्रीय विद्यालय के अध्यापकों को नियमों की अवहेलना करने, समाजवाद विरोधी विचार रखने, सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने और बेगुनाह रोबिन को जानबूझ कर मानसिक आघात पहुंचाने का अपराधी घोषित करती है. चूंकि यह पहला मौका है इसलिए अदालत अध्यापकों पर रहम करते हुए प्रत्येक पर केवल 500 रुपए जुर्माना करती है.. प्रधानाध्यापक पर भी 1000 रुपए का जुर्माना किया जाता है. प्रधानाध्यापक को यह भी हुक्म दिया जाता है कि वे एक माह के अंदर जुर्माने की रकम सरकारी खजाने में जमा कर के रसीद अदालत के सामने पेश करें. ●
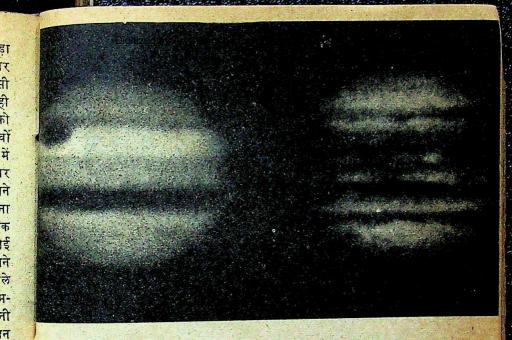
लेख • उत्सवकुमार चतुर्वेदी

वैज्ञानिक हलचल

बृहस्पति ग्रह पर जीवन

कैसा होगा?

जी हां, अब वैज्ञानिक लगभग निश्चित हो गए हैं कि बृहस्पति पर जीवन है, भले ही अत्यंत सूक्ष्म रूप में हो. ऐसी धारणा तो गत वर्ष पायनियर-10 से प्राप्त आंकड़ों से ही हो गई थी, लेकिन पायनियर-11 के भेजे गए आंकड़ों से उन की व्यापक पुष्टि भी हो गई. अब कोई तथ्य ऐसा नहीं है जिस के आधार पर इस महान ग्रह पर जीवन की उपस्थिति से इनकार किया जा सके. अप्रैल, 1973 में छोड़ा गया वह अमरीकी यान गत तीन दिसंबर को बृहस्पति के अत्यंत समीप से गुजरा (केवल 41,000 किलोमीटर दूर से) और जो चित्र तथा जानकारियां पृथ्वी पर प्रेषित कीं उन से बृहस्पति के बारे में हमारे ज्ञान में काफी वृद्धि हुई है.

बृहस्पति न केवल आकार में अन्य ग्रहों से बहुत बड़ा है, अपितु आदिकाल से ही अनेक वैज्ञानिक रहस्यों का केंद्र भी बना हुआ है. सामान्य ग्रहों से वह इतना भिन्न है कि कभीकभी तो वैज्ञानिक इसे ग्रह मानने से भी इनकार कर देते हैं. वह जितनी ऊर्जा सूर्य से प्राप्त करता है, उस से दो से तीन गुनी अधिक ब्रह्मांड में वितरित कर देता है. आज भी किसी के पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है कि बृहस्पति में इतनी ऊर्जा आती कहां से है? वैज्ञानिकों का विचार है कि बृहस्पति का भार यदि थोड़ा और होता तो वहां भी नाभिकीय संगलन (न्यूक्लीयर फ्यूजन)

शुरू हो जाता और वह ग्रह न रह कर सूर्य की ही तरह एक तारा बन जाता. कितनी विलक्षण बात होती तब—हम दोदो सूर्यों से प्रकाशित होते और शायद पृथ्वी पर रात होती ही नहीं.

पायनियर—११ ने अनेक पिछली मान्यताओं की पुष्टि की, अनेक के बारे में खामोश रहा तथा अनेक मान्यताओं को खंडित भी कर दिया. एक साल के ही समय में पायनियर १० और ११ से हमें इस ग्रह के बारे में काफी जानकारी मिली है. मुख्यमुख्य तथ्य निम्न हैं:—

१. यह जितनी ऊर्जा सूर्य से प्राप्त करता है, उस से दो से तीन गुना अधिक स्वयं ब्रह्मांड में बिखेर देता है.

२. इस के तल का ताप लगभग १३०° सी. है, जो दिनरात में अधिक बदलता नहीं.

३. बृहस्पति के उपग्रह 'ईओ' पर वायुमंडल है.

४. पृथ्वी की ही तरह बृहस्पति के चारों ओर भी इलेक्ट्रान और प्रोटान की विकिरण पेटियां हैं, लेकिन वे पृथ्वी की पेटियों की अपेक्षा कम से कम दस लाख गुना अधिक शक्तिशाली हैं. इन पेटियों को पार कर के ग्रह के पास जाने में यानों को बहुत खतरा रहता है.

५. बृहस्पति मुख्यतया हाइड्रोजन का बना है, जो सतह पर गैस अवस्था में है, लेकिन ग्रह के भीतर द्रव अवस्था में है. शायद बृहस्पति में कोई ठोस 'कोर' नहीं है, और यदि है भी तो अत्यंत छोटे आकार की है.

६. बृहस्पति पर मीथेन, अमोनिया, जलवाष्प, हीलियम के अलावा शायद अनेक कार्बनिक यौगिक भी हैं.

७. आदिकाल से अनेक रहस्यों का जन्मदाता बृहस्पति का 'लाल धब्बा' वास्तव में एक चक्रवात है जो सैकड़ों वर्षों से इस के वातावरण में चक्कर काट रहा है. यह ४०,००० किलोमीटर की लंबाई और १०,००० किलोमीटर की चौड़ाई में फैला हुआ है.

८. बृहस्पति का केंद्र अत्यंत गर्म है, और वहां का तापक्रम सूर्य की सतह से भी दो गुना अधिक हो सकता है. जैसेजैसे हम बृहस्पति के वायुमंडल (गैसों की ऊपरी सतह) में प्रवेश कर के केंद्र की ओर जाते हैं, तापक्रम बढ़ता जाता है.

९. बृहस्पति की उम्र ४.५ अरब साल है.

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि अवश्य ही बृहस्पति पर जीवन होगा, भले ही वह अत्यंत अविकसित अवस्था में हो. अनेक लोगों का विचार है कि बृहस्पति के जीव आकार में बहुत छोटे तथा अल्पायु होते होंगे.

सूर्य के धब्बे और उत्तरी गोलार्ध में गेहूं की उपज

वर्षा और प्राकृतिक आपदाओं से तो गेहूं की उपज का संबंध हो सकता है, लेकिन संसार में गेहूं की उपज का संबंध सूर्य के धब्बों से जोड़ना कहां की बुद्धिमानी है? लेकिन, साहब, जब आंकड़े बोल रहे हैं तो मानना ही पड़ेगा. सूर्य के धब्बों के साथ गेहूं की उपज के घटबढ़ का वर्षों से चला आ रहा संबंध मात्र संयोग भी तो नहीं कहा जा सकता

आइए, मुख्य विषय पर आने से पहले यह जान लें कि वे धब्बे क्या बला हैं? टेलिस्कोप से ध्यान से देखने पर सूर्य की सतह सब जगह समान रूप से चमकीली नहीं दिखाई देती, वरन अनेक स्थानों पर छोटेछोटे काले धब्बे नजर आते हैं. वास्तव में ये धब्बे नहीं हैं. बात सिर्फ इतनी है कि इन स्थानों का प्लाज्मा (इलेक्ट्रान विहीन तत्त्वों के नाभिक, जिन से सूर्य बना हुआ है) आसपास के प्लाज्मा की अपेक्षा कुछ ठंडा है, जो हमें चमक कम होने की वजह से धब्बे जैसा दिखाई देता है. सूर्य की तुलना में अत्यंत छोटे दिखने वाले ये धब्बे वास्तव में पृथ्वी से भी बड़े हैं. इन धब्बों में से प्रायः हजारों किलोमीटर ऊंची भयंकर ज्वालाएं उठती रहती हैं.

ये धब्बे सूर्य की सारी सतह पर समान रूप से वितरित नहीं हैं, अपितु कहीं कम हैं तो कहीं ज्यादा. चूंकि सूर्य भी अपनी

धुरी पर पृथ्वी की ही तरह घूमता है, अतः हमें सूर्य के वही धब्बे दिखेंगे, जो पृथ्वी की ओर होंगे, और उन की संख्या में परिवर्तन भी होता रहेगा. आप मानें, या न मानें पृथ्वी से दिखने वाले इन धब्बों का पृथ्वी के दोनों गोलार्धों में गेहूं की उपज पर प्रभाव पड़ता है. सूर्य में जिस साल जितने अधिक धब्बे दिखेंगे, गेहूं की पैदावार उत्तरी गोलार्ध में उतनी ही अधिक होगी और (आश्चर्य है) दक्षिणी गोलार्ध में उतनी ही कम होगी.

ब्रिटेन की अप्लेटन प्रयोगशाला के डा. जे. डब्लू. किंग तथा उन के सहयोगियों ने पिछले कई साल की दोनों गोलार्धों की गेहूं की उपज तथा उस साल दिखने वाले सूर्य के धब्बों की संख्या में बड़े रोचक संबंध बताए हैं. 1958 तथा 1968 में उत्तरी गोलार्ध में गेहूं की सब से अच्छी पैदावार हुई, जबकि 1957 तथा 1968 सब से अधिक सूर्य के धब्बों के वर्ष थे. लेकिन 1954 में, जब सूर्य में कम धब्बे दिखे, पैदावार भी बहुत कम हुई. किंतु दक्षिणी गोलार्ध में इस के विपरीत प्रभाव पड़ता है. अर्जनटीना में 1954 तथा 1964 में बहुत अच्छी फसलें हुईं. दोनों वर्ष कम धब्बों वाले थे. इसी तरह आस्ट्रेलिया में 1957 में गेहूं बहुत ही कम हुआ.

क्या इन धब्बों का पृथ्वी के मौसम से कोई घनिष्ठ संबंध है? अवश्य ही ऐसा तर्कसंगत लगता है. सब से बड़ा प्रमाण तो यही है कि दोनों गोलार्धों की स्थितियां विपरीत हैं. चूंकि एक गोलार्ध का मौसम दूसरे के विपरीत होता है, अतः यह निश्चित ही है कि यदि उत्तरी गोलार्ध का मौसम गेहूं के लिए अनुकूल होगा तो दक्षिणी गोलार्ध का उस के अनुकूल न होगा और शायद प्रतिकूल रहेगा. इस प्रकार डा. किंग इस निर्णय पर पहुंचे कि अवश्य ही सूर्य के धब्बे पृथ्वी के मौसम को प्रभावित करते हैं.

डा. किंग का कहना है कि इस दिशा में विस्तृत अध्ययन होना चाहिए क्योंकि इस से भविष्य में फसलों के उगाने की योजनाएं बनाने में बड़ी महत्त्वपूर्ण सहायता मिलेगी.

चाय : विष या अमृत?

बड़ेबूढ़े लाख नाकभौं सिकोड़ें और कहें, "जो चाय जाड़े में गर्मी पहुंचाती है,

जीतोड़ मेहनत के बाद चाय का एक प्याला सारी थकान दूर कर देता है.

अवश्य ही वह गर्मियों में स्वर्ग में पहुंचा देगी," लेकिन चाय का प्रयोग हमारे जीवन का आवश्यक अंग होता जा रहा है. पिछले कुछ दशकों में भारत में चाय का जितना प्रयोग बढ़ा है, शायद किसी अन्य चीज का उतना नहीं बढ़ा. अब तो चाय गांवगांव में पहुंच गई है.

और अब इस के प्रयोग के हिमायती लोगों के लिए एक खुशखबरी है. अन्य गुणों के अलावा अभी हाल ही में चाय के ऐसे गुण प्रकाश में आए हैं जिस से चाय की लोकप्रियता में और भी वृद्धि होगी. रूस के 'बोगो मोलेट फिजियोलोजिकल इंस्टीच्यूट' ने चूहों पर चाय का एक अपूर्व प्रयोग किया, अनेक चूहों को विकिरण से प्रभावित किया गया, जिस से वे 'रक्त कैंसर' से ग्रसित हो गए. अब इन्हें दो समूहों में बांट कर एक को चाय का एक तत्व 'कैंटेचिन' दिया गया और दूसरे समूह को उस के भाग्य पर छोड़ दिया गया. यह देख कर वैज्ञानिकों को सुखद आश्चर्य हुआ कि प्रथम वर्ग के चूहे क्रमशः स्वस्थ होते गए, जब कि दूसरे समूह का एक भी चूहा न बचा. इस प्रकार यह संभावना पुष्ट हो चली है कि कैंटेचिन से रक्त कैंसर का उपचार संभव है. चाय में कैंटेचिन, टेनिन, कैफीन के अलावा भी लगभग 130 तत्व पाए जाते हैं. बाद के प्रयोगों से सिद्ध हुआ कि इन सब का रक्त कैंसर पर सम्मिलित प्रभाव और भी हितकारी होता है. वह दिन शायद अब ज्यादा दूर नहीं जब चाय का रक्त कैंसर के इलाज में प्रयोग होगा.

मास्को की जीव अनुसंधानशाला के अनुसार कैंटेचिन विटामिन पी से गुणों में बहुत कुछ मिलताजुलता है, और यदि यह विटामिन सी के साथ दिया जाए तो और भी प्रभावकारी होता है. कितनी अच्छी बात है कि चाय में थोड़ी मात्रा में विटामिन 'सी' भी होता है.

और यह कैसे भूला जाए कि चाय मानसिक तनाव कम करती है और किसी सोचे गए काम को करने के लिए मूड बना देती है. लेकिन चाय में गुण ही गुण तो हैं नहीं. दुर्गुण भी हैं. कैफीन, जो चाय में प्रचुर मात्रा में होती है, का लगातार प्रयोग शरीर के लिए हानिप्रद होता है. यह शायद पाचनशक्ति को भी अव्यवस्थित कर देती है और यह भी क्यों भूला जाए कि हम अधिक चाय बचा कर अधिक विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं.

कूड़ेकरकट से पेट्रोलियम

पिछले अरबइसराइल युद्ध में अरब देशों द्वारा तेल को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने से सारा संसार कांप सा गया और सभी का ध्यान ऊर्जा के दूसरे साधनों की ओर गया. विकासशील देशों की तो बात ही छोड़िए, अमरीका जैसे आर्थिक दृष्टि से अत्यंत सपन्न राष्ट्र भी इस अस्त्र से बौखला गए और धमकी देने लगे कि यदि अरब देशों का यही रवैया कायम रहा तो वे तेल के लिए बल प्रयोग भी कर सकते हैं.

खैर, यह तो रही राजनीति की बात. अब आइए देखें कि वैज्ञानिक इस चुनौती का सामना कैसे कर रहे हैं?

यह तो निश्चित ही था कि इस धमकी से संसार के सभी विकासशील और विकसित राष्ट्र अपने तेल के खर्चे में कमी कर के ऊर्जा के दूसरे साधनों का विकास करेंगे. सूर्य ऊर्जा पर सब का ध्यान जाना स्वाभाविक ही था, लेकिन उस के व्यावहारिक प्रयोग में अभी बहुत देर है. अतः अनेक वैज्ञानिक सोचने लगे कि पृथ्वी पर गंदगी फैलाने वाले 'कार्बनिक' कूड़ाकरकट से तेल कैसे बनाएं? इस दिशा में उल्लेखनीय सफलता मिली है अमरीका के 'ब्यूरो आफ माइंस' को. यूं तो कोयले से तेल बनाने की विधि बहुत पहले से ही ज्ञात है, लेकिन वह अव्यावहारिक और खर्चीली है क्योंकि उस में हाइड्रोजन जैसी मूल्यवान गैस का प्रयोग होता है और बहुत इंधन लगता है. अब इस संस्थान ने एक ऐसी विधि विकसित कर ली है जिस से बिना किसी विशेष लागत के भूसी, कूड़ाकरकट, रद्दी अखबार और यहां तक कि

पशुओं और मनुष्यों से मिलने वाले कार्बनिक मलों से भी पेट्रोलियम तैयार हो सकेगा. यदि मान लिया जाए कि कुल उत्पादन का आधा तेल बनाने की प्रक्रिया में ऊर्जा हेतु खर्च हो जाएगा, तब भी वह विधि इतनी उपयोगी होगी कि सारे संसार के तेल की मांग आसानी से पूरी कर सकेगी.

इस विधि में सब से पहले कार्बनिक कूड़े को 350 से 500 डिग्री सेंटीग्रेड तक गर्म कर के 'चार' बना लिया जाएगा. 'चार' से मतलब उस काली राख से है जो लकड़ी आदि को आक्सीजन की अनुपस्थिति में गर्म करने से तैयार होती है.

सोडियम कार्बोनेट की उपस्थिति में इस 'चार' को पानी और कार्बन मोनो आक्साइड की उपस्थिति में अत्यंत उच्च दाब पर गर्म करने से पेट्रोलियम से ही मिलताजुलता एक तेल मिलता है जिस की कैलोरिक वैल्यू 18,000 सी. एच. यू प्रति किलो होती है. इस प्रकार यह तेल अत्यंत उत्तम कोटि का होता है.

लेकिन अभी इस तकनीक को और ज्यादा व्यावहारिक बनाना होगा. इस प्रक्रिया में 360 से 430 किलोग्राम प्रति वर्ग सेंटीमीटर के उच्च दाब की जरूरत होती है जिस को उत्पन्न करना काफी खर्चीला होता है. अभी भी वैज्ञानिक इस विधि में सुधार करने में लगे हुए हैं और आशा है कि जल्दी ही वे ऐसे 'उत्प्रेरकों' को खोज लेंगे, जिस से बिना इतने ऊंचे दाब के भी रासायनिक क्रिया आसानी से होने लगेगी.

इस विधि के सारे संसार में विकसित हो जाने के बाद अरब राष्ट्र किस बात की धमकी देंगे, यह उन सबों को अभी से सोचना चाहिए. ●

संवाददाता : कहिए जनाब, इन दिनों कुछ बुझेबुझे क्यों नजर आ रहे हैं?

कर्मचारी : बात ऐसी है कि सरकार आजकल हमारी मांगें फुर्ती से नहीं मानती.

संवाददाता : हो सकता है, आप की मांगें वाजिब न हों.

कर्मचारी : क्या बात करते हैं आप भी! वेतन बढ़ाने या अतिरिक्त महंगाई भत्ता देने की मांग भी कोई गैरवाजिब मांग है?

संवाददाता : हो सकता है, सरकार की आर्थिक स्थिति इस योग्य न हो कि वह यह अतिरिक्त बोझ वहन कर सके.

कर्मचारी : खूब कहा आप ने भी. सरकार के पास भी कभी पैसे की कमी हो सकती है? वह जब चाहे नोट छाप ले, जब चाहे टैक्स लगा ले.

संवाददाता : यह क्यों नहीं सोचते कि नोट छापने या टैक्स लगाने की भी एक सीमा है? और फिर इस का असर भी घूमफिर कर आप पर ही होता है. टैक्स आप लोगों को ही देने पड़ते हैं और मुद्रा स्फीति का फल भी आप सभी को ही भुगतना पड़ता है.

कर्मचारी : अजी, वह तो बाद की बात है. पहली बात यह है कि अपनी मांगें मनवा कर 'पे पैकेट' का भार हम कितना बढ़वा सकते हैं.

संवाददाता : चलो, कोई बात नहीं. पैसे बढ़वाने की बात तो समझ में आती है. मगर क्या आप ने यह भी सोचा है कि जितने पैसों की आप आकांक्षा करते हैं, उतना काम भी करते हैं?

कर्मचारी : इस में काम कमज्यादा

प्रश्न संवाददाता के उत्तर

पहले कामकाज बंद. फिर भी ताल...बेचारे सरकारी कर्म- के अलावा और दूसरा

करने की क्या बात है? जितना होता है कर ही लेते हैं.

संवाददाता : मतलब यह कि जितना कार्य आप के जिम्मे है, उसे ईमानदारी से पूरा करते हैं.

कर्मचारी : भाई, काम तो करते ही हैं. अब आप बाल की खाल क्यों निकाल रहे हैं?

संवाददाता : अच्छा, चलिए, छोड़िए. आप कार्यालय कब तक पहुंचते हैं?

कर्मचारी : यही कोई साढ़े दस-गयारह बजे.

संवाददाता : जहां तक मेरी जानकारी है, सही समय तो दस बजे का है. क्या इतने विलंब से पहुंचने पर आप के अधिकारी आप को टोकते नहीं?

सरकारी कर्मचारी के

सरकार न मानी तो हड़-

चारियों के पास वेतन बढ़वाने

काम ही क्या है?

कर्मचारी : अजी साहब, अव्वल तो वे खुद भी इसी समय आते हैं. और फिर यदि समय पर आ भी जाएं तो भला हमारा क्या बिगाड़ लेंगे? परमानेंट नौकरी है. एक्शन लेना आसान काम नहीं. और फिर किसकिस पर एक्शन लेंगे? सभी तो तकरीबन उसी समय आते हैं.

संवाददाता : क्या आप ने कभी सोचा है कि इस तरह विलंब से आने के कारण काम का कितना हर्ज होता है?

कर्मचारी : अजी, खूब कहा. सरकारी काम का क्या हर्ज होगा? आज नहीं होगा तो कल हो जाएगा. कोई पहाड़ तो टूट नहीं रहा है.

संवाददाता : खैर, छोड़िए. गयारह बजे दफ्तर आने के बाद लंच पर तो जाते ही होंगे?

कर्मचारी : हां, इतना जल्दी खाना खा कर आना संभव नहीं है. अतः खाना साथ ले आते हैं और लंच टाइम में कैंटीन में जा कर खा लेते हैं.

संवाददाता : लंच टाइम तो डेढ़ बजे से दो बजे तक होता है, मगर अकसर तो आप एक बजे से ही काम बंद कर देते हैं.

कर्मचारी : ठीक कहा आप ने. कागज-पत्तर संभाल कर अंदर रखने पड़ते हैं. फिर यारदोस्तों को भी साथ के लिए दूसरे सेक्सन में जा कर लेना होता है. अतः इस सब में समय चाहिए.

संवाददाता : बहुत खूब. मगर वापस तो आप ढाई बजे से पहले कभी नहीं आते.

कर्मचारी : ऐसा है कि लंच के बाद 15-20 मिनट की झपकी लेना आवश्यक हो जाता है. इसलिए थोड़ा लेट हो ही जाते हैं.

संवाददाता : इस के बाद तो आप पांच बजे तक काम में ही व्यस्त रहते होंगे?

कर्मचारी : अजी, ये दोस्त लोग कहां करने देते हैं. कभी कोई आ धमकता है, कभी कोई. जब 'चेप' ही हो जाता है तो चाय के लिए ले जाना पड़ता है और फिर इस के बदले में मैं भी कई बार जा कर उन के 'चेप' हो जाता हूं. दिन में दोतीन राऊंड चाय पिए बिना काम करने का उत्साह ही नहीं बनता.

संवाददाता : तब तो फिर दिन में दोएक बार पानसिगरेट के लिए भी उठते ही होंगे?

कर्मचारी : हां, अकसर मैं खुद ही उठ कर बाहर दुकान तक हो आता हूं. सोचता हूं, बिचारे चपरासी को क्यों इस काम के लिए कहा जाए. वह तो सरकारी काम के लिए है.

संवाददाता : वापसी के लिए आप ठीक पांच बजे तक उठ जाते हैं या काम पूरा करने के लिए इस के बाद भी रुकते हैं?

कर्मचारी : अजी हमें क्या ओवरटाइम मिलता है जो पांच बजे के बाद रुकें. वैसे भी ठीक पांच बजे ही उठें तब तो घर पहुंचने में काफी देर हो जाए. अतः साढ़े चार बजे ही बोरियाबिस्तर बांध लेते हैं.

संवाददाता : बहुत खूब, वाकई में बड़ी व्यस्त सी दिनचर्या है आप की. जब आप दिन भर इतना काम करते हैं तब तो वेतन जरूर बढ़ना चाहिए.

कर्मचारी : अब आए न आप सही राह पर. वेतन वृद्धि की मांग हमारी बिलकुल जायज है.

संवाददाता : तो फिर आप अपनी मांग मनवाने के लिए क्या करने की सोच रहे हैं?

कर्मचारी : करना क्या है? सीधी कार्यवाही करेंगे, 'वर्क टू रूल' शुरू कर देंगे.

संवाददाता : वर्क टू रूल...यानी की नियमानुसार काम शुरू कर देंगे? दस से पांच बजे तक काम करने का सरकारी नियम मान कर क्या वास्तव में इस अवधि में कार्य किया करेंगे?

कर्मचारी : एं, क्या कहा? अजी, छोड़िए. आप तो उलटा सोचते हैं. हमें तो बस यह मालूम है कि कामकाज बंद और आराम ही आराम. फिर भी कुछ न हुआ तो हड़ताल ही कर लेंगे. देखें, सरकार कैसे वेतन या भत्ता बढ़ाने से इनकार करती है.

संवाददाता : मतलब यह कि वेतन बढ़वाने के चक्कर में आप थोड़ाबहुत जो काम करते हैं वह भी बंद कर देंगे. वाह साहब, खूब चक्कर चला रहे हैं.

कर्मचारी : चक्करवक्कर अपन नहीं समझते. अपन तो इतना समझते हैं कि वेतन में वृद्धि होनी चाहिए. ●

लेख • अरनी राबर्ट्स

संबंधों को बिगाड़िए मत

संबंधों को बनाने के लिए क्याक्या न कीमत चुकानी पड़ती है. गलतफहमियों में पड़ कर क्या वे बिगड़ते जा रहे हैं?

मेरा एक मित्र है अशोक शर्मा. यूं तो वह मस्त है और व्यक्तित्व भी काफी प्रभावशाली है. काफी हद तक मिलनसार भी है वह, पर कमी है तो एक यह कि कभीकभी सोचेसमझे बिना ही उलटेसीधे निर्णय ले लेता है. काफी दिनों से वह मुझे एक लड़की के बारे में बहुत सी दिलचस्प बातें सुनाता आ रहा था. प्रशंसा भी बहुत करता था उस की वह. एक दिन आग्रह कर के मुझे वह अपने साथ ले गया उस लड़की से मिलवाने. उदयपुर के पार्क व्यू होटल में हम ने खाना भी खाया. मुझे वह लड़की बहुत अच्छी लगी—सुंदर और हंसमुख. बाद में उस ने पूछा, "क्या मैं उस लड़की से विवाह कर लूं? राबर्ट, मैं उस को बहुत चाहता हूं."

"जब उसे चाहते हो तो उस से विवाह करने में भला क्या हर्ज है? मुझे तो वह लड़की बेहद अच्छी लगी," मैं ने अपना निर्णय सुनाया.

"बस, यही करूंगा. मुझे मेरी मंजिल मिल गई." वह बेहद प्रसन्न था.

लगभग 15 दिन बाद वह मुंह लटकाए

हुए मेरे पास आ कर बैठ गया. मैं ने पूछा, "यह क्या गधे की तरह मुंह लटका रखा है तुम ने?"

"मैं ने उस से संबंध तोड़ दिए हैं, वह चीट है."

"कौन चीट है? किस से संबंध तोड़ दिए तुम ने?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"वही शीला जिस से मैं ने तुम्हें मिलवाया था."

"अरे, वह लड़की, जिस की तुम तारीफें करते थकते नहीं थे और विवाह करने का इरादा भी कर चुके थे?"

"विवाह करे मेरी जूती. मैं मूर्ख था जो उस की इतनी तारीफें करता था," तमतमाए हुए स्वर में उस ने कहा.

"पर बात तो कुछ बताओ जो तुम ने यह गंभीर निर्णय लिया."

"बात क्या बताऊं, मेरे किएकराए पर पानी फेर दिया उस ने, राबर्ट. कल मैं ने उसे एक और लड़के के साथ देख लिया. उन्होंने पहले रेस्तोरां में चाय पी. कुछ देर नेहरू पार्क में घूमते रहे. फिर वे 'चेटक' टाकीज में फिल्म देखने चले गए. बस, मैं ने उसे पत्र भेज दिया कि मेरे और उस के संबंध समाप्त."

"निरे मूर्ख हो तुम. बस, एक लड़के के साथ देख लिया तो जल के कबाब हो गए. हो सकता है वह लड़का उस का कजिन हो."

मेरे यह कहते ही वह चौंक पड़ा, "अरे, हां यार, वह कुछ दिन पहले बता भी रही थी कि दिल्ली से उस का एक कजिन एक इंटरव्यू के सिलसिले में आने वाला है. हो सकता है, वही हो. अब मैं क्या करूं?"

"जाओ, क्षमा मांगना और कान खोल के सुनो, शादी के बाद ऐसी मूर्खता मत करना."

वह खीसें निपोर कर चला गया. मेरा अनुमान सही था. वह उस लड़की का कजिन ही था जो इंटरव्यू के सिलसिले में उदयपुर आया था.

अशोक साहब की शादी हो चुकी है. वह उसी लड़की के साथ बहुत प्रसन्न हैं, वह एक अच्छी गृहिणी है और उन का जीवन बहुत सुखी है. कहां अशोकजी उस से संबंध तोड़ बैठे थे.

गिद्ध दृष्टि

एक हमारे मामाजी हैं, जिन्हें हमेशा यह डर रहता है कि कोई उन की लड़कियों की तरफ देख तो नहीं रहा है. उन की गली में या घर के आसपास कोई दोतीन बार दिख भी जाता है तो उन की हालत खराब हो जाती है. वह सोचने लगते हैं कि कोई उन की लड़की के लिए वहां आता है.

मामीजी के कहने पर मैं ने उन की लड़की प्रीति के लिए एक मास्टर को ट्यूशन पढ़ाने के लिए नियुक्त कर दिया. प्रीति हायर सेकेंडरी की परीक्षा दे रही थी. गणित में कुछ कमजोर थी. मास्टर काफी स्मार्ट था. हंसमुख स्वभाव का था. बस, पहले ही दिन से मामाजी के दिमाग में जाने क्या बात बैठ गई मास्टर को ले कर. जब तक मास्टर चला नहीं जाता, वह उसी कमरे में बैठ कर गिद्ध दृष्टि से उन दोनों को देखते रहते. मास्टर को यह प्रतिबंध अच्छा नहीं लगा. एक दिन उस ने कह ही दिया, "आप मुझे पढ़ाने दें और इसे पढ़ने दें. आप कहीं और बैठ जाएं. आप सामने होते हैं तो यह पढ़ नहीं पाती."

"यूं बोलो, मिस्टर कि मेरे सामने बैठे होने से तुम्हें बात करने का मौका नहीं मिल पाता."

मास्टर तमक कर खड़ा हो गया, "आप मेरे चरित्र पर आरोप लगा रहे हैं. यह मत भूलिए कि मैं यहां अपनी मर्जी से नहीं आया हूं, बुलाया गया तो ट्यूशन करने आया हूं. संभालिए अपनी लड़की, मैं चला."

बाद में मामाजी को बहुत दुख हुआ. मैं मिन्नतें कर के फिर उसी मास्टर को लाया. मामाजी ने अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी. तब कहीं जा के मामला ठीक हुआ. अब मास्टर से उन के इतने घनिष्ठ संबंध हैं कि कभी वह नहीं मिल पाता तो

मुझ से पूछ लेते हैं उस के बारे में.

कितने ही लोग हैं जो अच्छेखासे संबंधों की डोर क्षण भर में काट कर रख देते हैं, फिर बाद में पछताते हैं. संबंध कोई कच्चे धागे तो होते नहीं हैं कि जब चाहें बना लें, जोड़ लें, जब चाहें तोड़ लें. संबंधों के टूटने का अधिकतर कारण जो देखा गया है, वह है गलतफहमी. हम लोग कई बार बात को समझे बिना ही किसी व्यक्ति से उलझ पड़ते हैं और फिर संबंध खत्म. ऐसे भी उदाहरण देखने में आए हैं जहां वर्षों से दोस्ती चली आ रही है और किसी मामूली सी बात पर संबंध समाप्त हो जाते हैं. पता नहीं लोग इस प्रकार संबंध तोड़ कर चैन से कैसे रह पाते होंगे?

> **संशय**
>
> संशय बड़े घातक हैं. ये हमारी उत्पादक शक्ति को नष्ट कर देते हैं—हमारी अभिलाषा को पंगु और शक्तिहीन बना देते हैं.
>
> —स्वेट मार्डेन
>
> जहां जांचपड़ताल से इनकार कर दिया जाता है, वहां संशय गुप्त रास्ते से उपस्थित हो जाता है.
>
> —जोवेट

आपस के संबधों के बीच जब कटुता आ जाती है तो व्यक्ति का मानसिक तनाव तो बढ़ता ही है, साथ ही एक अजीब सा खालीपन उस के जीवन में उभर आता है. बहुत से कार्य जो उस के सहयोग से हो सकते थे, या होते थे, वे ठप्प हो जाते हैं. जहां भी आप जाते हैं दूसरे लोग आप से पूछते हैं—आप के ये मैत्रीपूर्ण संबंध सहसा ही कैसे टूट गए? आप ऐसी अजीब स्थिति में होते हैं कि किस-किस को जवाब दें. जिस ने ही अधिकतर लोग आप से व्यंग्य से पूछते हैं. उन्हें मखौल उड़ाने का एक अच्छा साधन मिल जाता है. आप की ख्याति और सम्मान को धक्का लगता है.

आप के किसी अपने मित्र या पड़ोसी से संबंध टूटने पर, आप के और उन के दोनों परिवारों में भी वैमनस्य की भावना आ जाती है. स्त्रियां जो पहले घंटों बैठ कर बातें करती थीं, एकदूसरे के कामों में सहायता करती थीं, वे अब एकदूसरे की बुराई करने लगती हैं. बच्चे जो साथ-साथ खेला करते थे, एकदूसरे के बगैर रह नहीं पाते थे, अब भी वैसा ही चाहते हैं. उन्हें सहसा ही आप में जो परिवर्तन आया है उसे देख कर आश्चर्य है. लेकिन आप नहीं चाहेंगे कि आप का बच्चा अब उन के बच्चों के साथ खेले. एक घुटन से भरे हुए आप दोनों परिवार जीते रहते हैं, और आप की पीठ पीछे अन्य लोग आप दोनों परिवारों का मजाक उड़ाते हैं.

विषाक्त जीवन

जीवन एक लंबा क्रम है. इस क्रम में आकर्षण और प्रवाह बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि हमारे अच्छे दोस्त और परिचित हों. हम सब सहयोग से आगे बढ़ते रहें और एकदूसरे के दुखदर्द को समझते रहें. आपसी संबंधों में दरार न पड़ने दें. जीवन को विषाक्त बना कर जीने से क्या लाभ?

अधिकतर संबंध जो बिगड़ते हैं वह गलतफहमी और सुनीसुनाई बातों के आधार पर. यदि आप कानों के कच्चे नहीं हैं तो संबंधों में दरार कभी नहीं पड़ेगी. वस्तुस्थिति को समझे बिना ही अपने मित्रों या सहयोगियों पर बिगड़ उठना गलत है. ऐसी स्थिति में आप से कोई संबंध बनाने के पक्ष में नहीं होगा. वे लोग जो आप के परिचित हैं, वे भी आप के इस व्यवहार की वजह से आप से कन्नी काटने लगेंगे. इसलिए उचित यही है कि जो संबंध आप बना रहे हैं या जो आप बना चुके हैं वे दृढ़तर बनें. तभी जीने का मजा है.

सुधीर जैकब

भारोत्तोलन में चमकता सितारा...
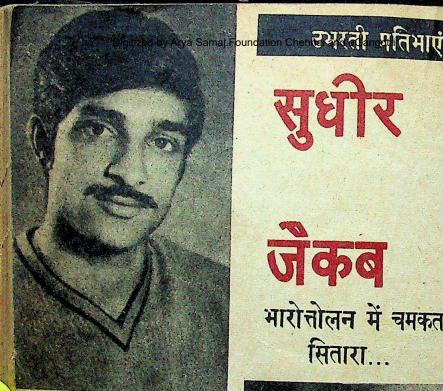
नागपुर के नामी पहलवान रह चुके श्री वास्टर जैकब के 23 वर्षीय पुत्र सुधीर जैकब इंदौर के ही नहीं, वरन प्रदेश के उन चमकते हुए खिलाड़ियों में से एक हैं, जिन के आगमन की प्रतीक्षा अंतर्राष्ट्रीय मंच बड़ी बेचैनी से कर रहा है. सुधीर ने कई प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले कर एवं उन में सफलता प्राप्त कर इंदौर को ही नहीं, सारे प्रदेश को गौरवान्वित किया. यदि सुधीर के घर को खिलाड़ियों का घर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. पिता के अलावा उन के बड़े भाई श्री सुशील जैकब पैदल विश्व यात्रा का साहस कर चुके हैं और छोटी बहन सीमा जैकब तेज साइकिल चालक है.

नया राष्ट्रीय रिकार्ड

भोपाल में संपन्न हुई शरीर सौष्ठव की राज्य स्पर्धा में सुधीर ने फ्लाइवेट विभाग में राष्ट्रीय रिकार्ड खंडित किया. लेकिन शरीर के वजन के आधार पर

उन्हें दूसरा स्थान ही मिल सका. किंतु दो कीर्तिमानों के कारण उन के गौरव में कोई कमी न आई. सुधीर ने कुल 187.5 किलो वजन इस स्पर्धा में उठाया.

इंदौर का गौरव बढ़ा

इस वर्ष राज्य स्पर्धा में इंदौर के गौरव को सुधीर जैकब ने राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया. वैसे सुधीर इस से पूर्व भी राष्ट्रीय स्पर्धा में कांस्य पदक जीत कर भारोत्तोलन के नक्शे में इंदौर के बिंदु को अंकित कर चुके हैं. फ्लाइवेट विभाग में 80 किलो 'स्नेच' का राष्ट्रीय रिकार्ड है. सुधीर ने गत वर्ष की राज्य स्पर्धा का 77 किलो का रिकार्ड खंडित कर राष्ट्रीय रिकार्ड (80 किलो) की बराबरी कर ली.
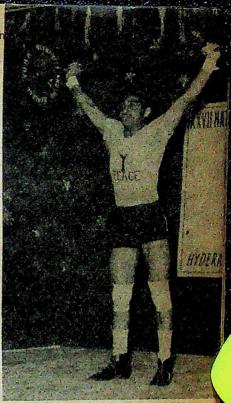
पटियाला में संपन्न राष्ट्रीय जूनियर वेटलिफ्टिंग बेस्ट फिजिक स्पर्धा में सुधीर ने अपने वजन विभाग में दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए. निश्चित ही सुधीर की यह विजय इंदौर के लिए एक उपलब्धि है. वेटलिफ्टिंग में सुधीर ने यह सफलता राष्ट्रीय कीर्तिमान के साथ प्राप्त की. जैकब ने इस राष्ट्रीय स्पर्धा में मध्य प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व किया था. उस ने फ्लाईवेट में 180 किलो वजन उठाया. इस स्पर्धा में सुधीर हालांकि राष्ट्रीय रिकार्ड तक नहीं पहुंच पाए किंतु फिर भी सर्वाधिक वजन उठा कर स्वर्ण पदक विजेता रहे.

भारोत्तोलन के अलावा दौड़कूद, कुश्ती, कबड्डी और शरीर सौष्ठव में भी सुधीर जैकब अपने महाविद्यालय के प्रतिनिधि खिलाड़ी रह चुके हैं. खेलने में इतना अधिक समय देने के बावजूद भी वह पढ़ने में कदापि पीछे नहीं हैं. वह अर्थशास्त्र एम. ए. के अंतिम वर्ष के तथा विधि के प्रथम वर्ष के छात्र हैं. ●

जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर

स्वर्ण पदक का घोटाला

सन 1974 की एल. एल. बी. फाइनल की परीक्षा में कुमारी चंद्रलेखा को प्रथम घोषित किया गया था. इस प्रकार चंद्रलेखा विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक की अधिकारिणी थी. एक अन्य छात्र अजय पुरोहित ने परिणाम घोषणा के पश्चात अपनी उत्तरपुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन कराया. पुनर्मूल्यांकन के बाद उस के प्राप्तांक चंद्रलेखा से अधिक हो गए. इसलिए स्वर्ण पदक का अधिकारी अब वह था. अपना स्वर्ण पदक छिनता देख कर चंद्रलेखा ने भी अपनी उत्तरपुस्तिकाओं की पुनः जांच करवानी चाही, लेकिन पुनः जांच का समय समाप्त हो चुका था. समय समाप्ति के पश्चात भी उपकुलपति ने विशेष आदेश द्वारा चंद्रलेखा

. गांधीजी द्वारा स्थापित शिक्षा मंडल, वर्धा के तत्वावधान में श्री कमल नयन बजाज की स्मृति में पिछले दिनों अखिल भारतीय वक्तव्य स्पर्धा का सफल आयोजन किया गया. वक्तव्य स्पर्धा का विषय था, 'वर्तमान आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में गांधी विचार का स्थान.' स्पर्धा में 40 विश्वविद्यालयों के युवा प्रतिनिधियों ने भाग लिया. टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज, बंबई के जान डिमेलो (बाएं) प्रथम, मद्रास विश्वविद्यालय के जेम्स मेलचीयर द्वितीय और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विनोद धवन तृतीय रहे. प्रथम प्रोत्साहन पुरस्कार पंजाब विश्वविद्यालय की नीना शर्मा (दाएं) को मिला.
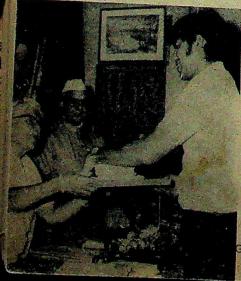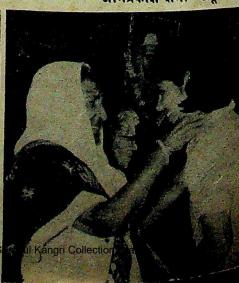
—ओमप्रकाश शर्मा 'बापू'

मार्च, 1975 में कृषि कालिज, पालमपुर में द्वितीय अंतः महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ. अधिकतर वक्ताओं ने 'श्री जयप्रकाश के आंदोलन' तथा 'उत्कोचग्रहण में बुराई ही क्या है' विषयों पर अपने विचार प्रकट किए. पिछले वर्ष के विजेता कृषि कालिज, सोलन ने इस बार भी चलविजयोपहार जीत लिया. (चित्र में, कृषि कालिज की टीम चल वैजयंती लेती हुई). व्यक्तिगत प्रथम पुरस्कार श्री प्रदीप शर्मा, द्वितीय श्री गुलाई तथा तृतीय श्री वीरेंद्र शर्मा को मिला. —सुधीरेंद्र शर्मा

को तीन विषयों में पुनः जांच की आज्ञा प्रदान की. आज्ञा मिलती क्यों नहीं, आखिर चंद्रलेखा भी तो राजस्थान उच्च न्यायालय के एक प्रमुख न्यायाधीश की पुत्री थी. चंद्रलेखा की उत्तरपुस्तिकाओं की पुनः जांच का परिणाम 'कोई परिवर्तन नहीं' घोषित हुआ. फिर भी चंद्रलेखा ने स्वर्ण पदक हेतु काफी दौड़धूप की. इस का परिणाम यह निकला कि विश्वविद्यालय ने चंद्रलेखा तथा अजय पुरोहित दोनों को ही स्वर्ण पदक देने चाहे. इस के विरोध में छात्र प्रतिनिधिमंडल उपकुलपति से मिला, पर उन की बातचीत का कोई लाभ न हुआ. अहिंसा का वातावरण फैला, पुलिस बुलाई गई, उपकुलपति प्रो. स. च. गोयल घायल भी हुए. विश्वविद्यालय ने अपना दीक्षांत समारोह रद्द कर दिया, कुछ छात्रों के निष्कासन आदेश निकले, कुछ पर मुकदमा चल रहा है. इस सब के बावजूद अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है.

—विनोदकुमार छाजेड़

मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ

अभूतपूर्व वादविवाद प्रतियोगिता

डी. ए. वी. कालिज, देहरादून में 31 मार्च को श्री शैलेंद्र मिश्रा स्मृति अखिल भारतीय वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ. इस वादविवाद प्रतियोगिता में सभी नियमों को ताक पर रख कर नई परंपराएं स्थापित की गईं. प्रतियोगिता के लिए दिए गए विषय के हिंदी तथा अंगरेजी स्वरूप में भिन्नता थी. पक्ष के वक्ता द्वारा प्रतियोगिता आरंभ करने की परिपाटी को छोड़ कर विषय के विपक्ष के वक्ता को प्रतियोगिता आरंभ करने के लिए आमंत्रित किया गया. इस पर आपत्ति के उत्तर में संयोजक ने कहा कि विषय के पक्ष को विपक्ष तथा विपक्ष को पक्ष समझ लिया जाए. इस के बाद भी वक्ता पुराने विषय के अनुसार पक्ष अथवा विपक्ष में निर्धारित मंच से बोलते रहे. के. एम. पी. कालिज, देहरादून की एक महिला प्रतियोगी को, जो बीच में वक्तव्य भूल जाने के कारण वापस लौट गई थी, दूसरी बार बोलने की अनुमति ही नहीं दी गई, अपितु नियमों की उपेक्षा कर के लिखित वक्तव्य सम्मुख रख कर भी बोलने दिया गया. उसे यह अवसर सभी प्रतियोगियों के बोलने के उपरांत दिया गया, जो इस वक्ता को मिली अनुचित सुविधा थी. 'दलगत दृष्टि' से देहरादून की इसी संस्था को प्रथम घोषित किए जाने के अतिरिक्त इस वक्ता को व्यक्तिगत पुरस्कार भी दिया गया. संस्था के प्रधानाचार्य ने अपने भाषण में इस प्रतियोगी को विशेष धन्यवाद दिया, प्रतियोगिता में भाग लेने के कारण तथा एक

मुक्ता

बाबा राघवदास मेडिकल कालिज, गोरखपुर की सांस्कृतिक संस्था द्वारा 22 अप्रैल सांयकाल आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजस्थानी ग्राम नृत्य, 'सफर के साथी' नाटिका, मीरा नृत्य, गिटार वादन, कुमायूंनी ग्राम्य नृत्य और गायन आदि के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए. रामदयाल दुबे द्वारा अभिनीत एकपात्रीय नाटिका भी सराही गई. मीरा नृत्य के एक दृश्य में अंजु रंगन व अंजली गर्ग (बाएं), इसी नृत्य के एक और दृश्य में बेलारानी ओरी और अंजु रंगन (दाएं). —विमलकुमार मोदी

प्रधानाचार्य की अभिभाव्या होने के कारण.

किसी भी प्रतियोगिता में ऐसी बातों का होना अशोभनीय है या तो इन संस्थाओं को ऐसे आयोजन करने ही नहीं चाहिए या उस में निर्धारित नियमों तथा सदन के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाला कोई कार्य नहीं करना चाहिए.

—दीपककुमार वर्मा

मगध विश्वविद्यालय, गया

रोग एवं गंदगी शिविर

मगध विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'युवा बनाम रोग एवं गंदगी शिविर' में अधिकांश महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया. इस शिविर का आयोजन गया जिले के निकटवर्ती ग्रामों तथा गया नगर के अनेक महल्लों में हुआ. छात्रों ने सड़कों, गलियों एवं नालियों की सफाई की. सफाई के अतिरिक्त निरक्षरों को शिक्षा, रोगियों को दवा आदि की पूर्ति के कार्यक्रम भी चलाए गए.

जनता सरकार का गठन

श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा नेतृत्व प्राप्त छात्र आंदोलन ने गया जिले में सर्वाधिक सफलता प्राप्त की है. जयप्रकाश ने निर्देशानुसार पिछले एक माह से अब तक संपूर्ण गया जिले में 75 प्रतिशत गांवों एवं प्रखंडों में जनता सरकार का गठन जनता प्रतिनिधियों तथा छात्रों के सहयोग से किया जा चुका है. जनता सरकार अनेक गांवों में कार्यारंभ कर चुकी है. —लाला अरुणकुमार सिन्हा •